



श्री सद्गुरुभ्योनमः

॥ रत्नसमुच्चय ॥

तथा

॥ रामविलास ॥

संग्रहकर्ता श्रीसाधुजीमहाराजके

पोत्र

उपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः

श्रीरामलालजी रुद्धिसारजीगणिः

—ॐॐ\*ॐॐ—

छपायके प्रगट कर्ता

शिष्य पं।क्षेमचंद चि।पेमचंद चि।अमरचंद

( इसका सर्व हक इन तीनोंका हे )

पुस्तक मिलणोका ठिकाणा

वीकानेर वडा उपासरे पास प।क्षेमचंद मुनि.

चि।पेमचंद अमरचंद विद्याशाला

मुवई विचले भोईवाडे श्रीचितामणजीके

मदिर मेहता पास

संवत् १९६० मिति आसो शुदी ९-तने १९०३

शांति सृधाकर प्रेस-मुवई.

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मुंबई पायथोनी पास शान्ति सुधाकर प्रेसमें

चीमनलाल सांकळचंद मारफतीयाने

मुद्रित कीया

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

## रत्नसमुच्चय मंगलाचरणं ॥

॥ अथ श्रीजिनायनमः ॥ अथ रत्नसमुच्चय ग्रंथ प्रारंभ ॥  
 तत्रादौ मंगलाचरणं ॥ आदिनार्थजिनंनत्वा, धर्मशीलंचसद्गुरुं ॥  
 गीर्वाणीहृदयेधृत्वा, लिखाभिरत्नसंचयं ॥ १ ॥ श्रेयार्थंनव्यजोवा  
 नां, तत्वामृतादिमेजनं, आवश्यकादिकृत्यं ॥ तपस्याविधिनिर्णय  
 ॥ २ ॥ द्वादशमासपर्वाणि, पौषधंदेववंदनं ॥ स्तोत्राणिस्तवनरम्य,  
 स्वाध्यायंगुरुवंदनं ॥ ३ ॥ इत्यादिवहुरत्नेन, धर्मरत्नसमुच्चय ॥  
 जातोयंकल्पकल्याणं, नित्यानंदश्रसंपदं ॥ ४ ॥

अथ ग्रथ सम्यक्कृतसंक्षेप गुरु प्रशस्ति ॥

श्रीमद्गौरजिनेदतीर्थतिलक.सद्भूतसंपन्निधिः, संजज्ञेसुगुरुः  
 सुधर्मगणनृत्तस्यान्वयेसर्वतः ॥ पुण्येचांद्रकुलेऽज्जवत्सुविहितेपक्षेत्  
 टाचारवान्, सेव्यशोभनधीमता सुमतिमानुद्योतनःसूरिराट् ॥ ५ ॥  
 आसीत्तत्पदंपंकजैकमधुक्रुत्श्रीवर्द्धमानान्निधिः, सूरिस्तस्यजिनेश्वर  
 ख्यगणनृज्जातोविनेयोत्तमः ॥ यःप्रापत्तन्नसिद्धिपंक्तिसरदि ।  
 १०८० । श्रीपत्तनेवादिनो, जित्वासद्विरुद्धंरुतीखरतरे त्पाख्यं  
 नृपादेर्मुखात् ॥ ६ ॥ तत्पट्टान्कमेश्रीमत्, सूरिःश्रीकुशलाज्नि  
 धः ॥ दादाविरुद्विरुपातः, पूज्यपादगुरुर्वरः ॥ ७ ॥ केमकीर्त्तिपु  
 ध्यायः, जातोसौसकलाग्रणीः ॥ शाखाविस्तारितायेन, केमवाटी  
 चिरंजयी ॥ ८ ॥ सुसाधुपदविक्रात, धर्मशीलबुधाग्रणीः ॥ पाठ  
 कानेकज्ञव्यानां, ज्ञानक्रियाप्रपालकाः ॥ ९ ॥ तच्चरणसमालोढा, नि  
 धानकुशलाज्निधिः ॥ धर्ममयसमाविस्था, स्तुवंतिबहुमानवाः ॥ १० ॥  
 उपाध्यायसदाचारा, वादीनामानंजका ॥ शास्त्रार्थंविजयंप्राप, सं  
 पदंयुक्तिवारिधिः ॥ ११ ॥ पाठकरुद्विसारेण, कृतोयंग्रंथसग्रहः ॥  
 स्वपरोपकृतेसम्पन्, प्रसिद्धंप्रापितंमया ॥ १२ ॥ सुशिष्यकेमचद्रेण,  
 प्रेमामरसवांधवैः ॥ श्रीसंघकृतसहायेन, सुबय्याशोसकाकारैः ॥ १३ ॥



यत्रेमुद्रापितसम्यग्, यत्राध्यक्षेणशोधित ॥ पठकपाठकेच्योवै, नि  
त्यश्रेयश्चमगलं ॥ १४ ॥ श्रीविक्रमपुरेरन्धे, वृहत्खरतरेगणे ॥ वृह  
दोपाश्रयेस्थाने, पुस्तकेदमिद्विष्यति ॥ १५ ॥

इस पुस्तकोंका सर्व रकम खरच तथा इसका लाज शुद्ध  
हमारे पोपपुत्र शिष्य प । श्रीहेमचंद्र चि । पेमचंद्र चि ।  
अमरचंद्रका हे हमने हमारा सर्व स्वजपासरा पुस्तक धनमात्रका  
मात्रक इन तीनोंकों किया हे, दूसरा किसीका दावा उजर नहीं ॥  
शुद्ध ॥

दसकत । ३० । श्रीरामलालगणि का खुद ॥



## ॥ रत्नसमुच्चय-रामविलास ॥

॥ स्वकुलप्रकाशक आचार्यपट्टावली ॥

शासननायक श्रीमहाग्रीरस्वामी, तत्पट्टे २ श्रीसुधर्मास्वा  
मी, तत्पट्टे श्रीजंबुस्वामी ३, तत्पट्टे ४ श्रीप्रज्ञवस्वामी, तत्पट्टे ५  
श्रीशच्यंजवसूरिः, तत्पट्टे ६ श्रीयशोज्ञानसूरिः, तत्पट्टे ७ श्रीसन्न  
तविजयस्वामी, तत्पट्टे ८ श्रीजज्ञाहुस्वामी, तत्पट्टे ९ श्रीशूलज  
स्वामी, तत्पट्टे १० श्रीआर्यमहागिरी, तत्पट्टे ११ लघुध्राता आ  
र्यसुहस्तिसूरजी ज्ञये सो वीरजगवानसे २३५ वरसे संप्रतिराजा  
तथा एवंतीमुकमालकू प्रतिगोधके धर्मका पहोत उद्योत क्रिया ११,  
तत्पट्टे १२ श्रीसुस्थितमूरी १ क्रोन सूरिमंत्रका जाप कीया तवसे  
कोटिकगद्य प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपट्ट १६ में श्रीवज्रस्वामी  
दश पूर्ववर वने प्रज्ञावीक विद्यासिद्ध ज्ञये इनोंसे वज्रशाखा प्रसि  
द्ध ज्ञई, तेमें १८ पट्टपर श्रीजिनचंङ्गसूरी हुये इनोंसे चंङ्गकुल  
प्रसिद्ध ज्ञया, इस तरे पट्टानुपाट जगवानसे ३८ में श्रीज्योतन  
सूरिः ज्ञये सो एक तो निजशिष्य उर दुसरा साधुजके ८३ अपणे  
विद्यार्थी शिष्योको आचार्यपद दिया तवसे ८४ गद्य ज्ञया, यह ८४  
गद्योके आचार्य वने प्रज्ञावीक धर्मोद्योतक ज्ञए, इन उद्योतनसूर  
जीके निजपाटवारी आनूजीतीर्थ प्रगटकर्ता विमलमंत्रो प्रतिबो  
धक ३९ पट्टे श्रीवर्द्धमानसूरिः ज्ञये, ४० पट्टे श्रीजिनेश्वरसूरिः ज्ञये  
सो अणदलपुरपट्टणमें दुर्लभराजाकी सन्नामें चेत्यवासियोंको शा  
स्वार्थमें जीतकर सं ॥ विक्रमके १०८० के वर्षमें पाटणके राजाने  
खरतर विजद दिया, अतिशयपणे खर-सूर्यकी तरे ज्ञानकरके ऊ  
लऊलायमान । अथवा क्रियाकरके अतिशयपणे कर ज्ञानसयुक  
जिसमें खर कहीये वने कगेर इस वास्ते खरतर विरुद्ध पाया,

कोटिकगञ्ज वज्रशाखा चंडकुल खरतर विरुद्ध एसें ४ जेद नवदी  
 क्तित शिष्यकू कहणा सरू जया, इनोके ४१ में पट्ट दिह्नीके वाद  
 साह प्रतिबोधक जीवहिंसा ठुमणेवाले श्रीमालमहतिव्याण गोत्र  
 प्रतिबोधक श्रीजिनचञ्जूरिजी जये, फेर इनोके पट्ट ४५ में इनोके  
 लघुभ्राता श्रीस्थजणातीर्थ उर नवागवृत्ति प्रगटकर्ता श्रीअन्नयदेव  
 सूरि जये, तत्पट्टे ४३ में अठारे हज़ार वागनीश्रावक प्रतिबोधक  
 श्रीजिनवज्जसूरि. युगप्रधान जये, तत्पट्टे ४४ में महा प्रजावीक  
 युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरि जये जिनोंने चितोर उर उज्जयणी  
 वज्जखंजसे साहीतीन बोटी विद्याभ्यासकी पुस्तक निकालके साथ  
 कर धावनवार चोसठ योगणी एक लाख तीस हज़ार घर राजन्य  
 वशीयोंको तथा ब्राह्मणोंको प्रतिबोध देकर उसवाल बणाया, उस  
 वखत तीनसे गोत्र स्थापन करा, पारख कोठारो लूणिया राखेचा  
 सावणमुखा ठाजेरु इत्यादिक, वह गोत्र नामके फेरफारसें इस वखत  
 सातसे करीब होगये हे, वह गुरूका गुण त्रिख नहीं सकते, वह  
 आज तक बने दादाजीके नामसें सर्व जगे प्रसिद्ध हे, तत्पट्टे ४५  
 में मणीधारी दिह्नीके वादसाहकूं प्रतिबोधक प्रनेक चमत्कार दि-  
 खलाके जैनधर्मका उद्योत करणेवाले श्रीजिनचञ्जूरिः जये जिनों  
 का दिह्नीके जरबजारमें दाग जया बना चमत्कार देख वादसाहा-  
 दिक लोक मानने पूजणे लगे, यह दूसरे दादाजी जये, अनुक्रमे  
 ५० में पट्टपर महाप्रजावीक कुशलसूरि जी जये, सो आचार्यपद  
 पायके धावनवीर चोसठयोगणीकू बसकर सयमें बनेर उपगार  
 किये, गूजरमल बोधरेकी जिदाज व्याख्यान वांचते हुये पखीरूप  
 उहां जाकर दरियावमें तिराई एसें परमोपकारी अंतमें फागुण  
 अमावशकों स्वर्गवास जये, फागुण सुदि १५ सोमवारको प्र-  
 दोय प्रथम दग्गण दिया, तिसपीठे जकबोकोका उपगार,

जगत् करणें लगे इस वास्ते श्रीसंघनें अपने आचार्यको इष्टैव समझके सर्व नगर गाममें चरणमूर्ति स्थंज स्थापन कर दादाजीके नामसे वंदन पूजन करणें लगे, सर्व जगे दादागुरुका जश प्रख्यात जया, प्रत्यक्ष परचा देणेवाले यह तीसरा दादाजी जये, इनोके पाटानुपाट ६१ में श्रीजिनचंडसूरि जये, जिनोने अकबर बादशाहकुं अनेक चमत्कार काजीकी टोपी तीन बकरीका वताणा इत्यादि दिखाकर अमारि उदघोषणा फिरवाई, सर्व वेपचारियोंकी हिडुस्थानमें रक्षा करवाई, क्रियाउद्धार कर पतितोंको गटा गह्वकी व्यवस्था करमचंद्र वठावतकी वीनतीसें सर्व समयानुसार बांधी, इनोके पट्ट ६२ में श्रीजिनसिंहसूरिः, इनोके पट्ट ६३ में श्रीजिन राजसूरिः इनोके समयमें आचार्य गद्य सागरचंडसूरिसें जया, इनोके पट्ट ६४ में श्रीजिनरत्नसूरिः इनोके समय रंगविजयसूरिसें रंगविजय गद्य जया, इनोके पट्ट ६५ में श्रीजिनचंडसूरि, इनोके पट्ट ६६ में श्रीजिनसुखसूरि, तत्पट्टे ६७ में श्रीजिनजक्तिसूरिजी जये, इनोके पट्ट ६८ में श्रीजिनलाजसूरिजी जये, इनोके पट्ट ६९ में श्रीजिनचंद्रसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७० में श्रीजिनदर्पसूरिजी जये, इनोके पट्ट ७१ में श्रीजिनतौजाग्यसूरिजी जये, इनोके समयमे महेंद्रसूरिजीसे ममोवरागद्य जया, इनोके ७२ में पट्ट श्रीजिनहससूरिजी जये, इनोके पट्ट ७३ में श्रीजिनचंद्रसूरि जये, इनोके पट्ट ७४ में श्रीजिनकीर्तिसूरिःजी वर्तमान विजयराज्यै ॥

॥ ग्रंथ संग्रहकर्ता कुल प्रकाशक पूज्यश्रेणी ॥

॥ दादासाहिव श्रीजिनकुशलसूरिः महाराजके शिष्य म-  
होपाध्याय श्रीकेमकीर्तिगणि. जीने जं । यु । प्र । ज । श्रीजि  
नपद्मसूरिःजीके वखतमें साधूलोक आचार्यमहाराजके पासमें ब-  
होत थोके रहे उर वनेर क्रियावंतोंको उर जगे चतुः

मांस करणे जेजेगये, थोमे व्होत र्हेथे सो ज्ञी गोचरी थंनिद्ध  
 जूमी चलेगयेथे उस वखत श्रीजीके पास फरुत श्रीउपाध्यायजी  
 ही बैठेथे, श्रीजीका थंनिलजूमीका हाथ धुलाणेकूं उठै, अपणे वि-  
 द्यापाठकजीका एना स्वरूप देख श्रीजीने कहा, पाठकजी आप  
 गिराजो समयका बना अपरजलीपणा हे सो गजमें साधू व्होत  
 कम होगये सो आप मेरे हाथ धुलाणे उठे, दादासाहिबके वखत  
 कैसेर ज्ञानवंत क्रियावंत जगतजीव हितकारी कैसेर पंढित वि-  
 द्यमान थे, अब यह गद्य कितदशाकू पोहचा हे, थोमा समुदाय,  
 जिसमें सुपात्र तो व्होतही थोमे हें, तब उपाध्यायजीने कहा म-  
 हाराज यह वृहज्ज खरतरमें किसी बातकी कमी नही रहेगी  
 अज्ञी गुस्देजकी कृपासें यतीर होजायमें, एसा कह दादासाहि  
 बका ध्यान करते उपाश्रयसें विहार कर वस्तीके बाहिर जा बैठे,  
 गुरूके ध्यानमें लीन जये, इतनेमें किसी राजाकी वरात व्याह क-  
 रणेकु जारहीथी, साभूमुनिराजकू बैठे देख पाशमें आके वंदन,  
 नमस्कार कर गुरूके सन्मुख बैठ गये, श्रीउपाध्यायजीने शातरश  
 का जसा वैराग्यमई उपदेश दिया सो उन पाचसें राजपूतोंने वि-  
 वारकी वाग ठोरे दीका ली, डादासाहिबने देवशक्तीसें सर्वोको  
 धर्मोपगरण वेप दीया, इन सर्वोको लेकर श्रीआचार्य पास आये,  
 सूरिभारने कहा, हेमाजी, धामकीधाम लेआये, उपाध्यायजीने  
 कहा तथास्तु, मेरे शंतानी हेमधाम नामहीसं प्रसिध रहे,  
 उस दिनसें वृहत्साखा हेमधाम विस्तारजावकू प्राप्त जई.  
 सायाकी उत्पत्ती सवत् विक्रम तेरेमेमें लीवाणची  
 जई, जो अब जोधपुरराज्यके आधीनमें प्रसिध  
 सायामें वनेउ विद्वान होते चलेआये जिनोके वनाय  
 प्रक्रमण काव्य न्याय टीका वगेरह विद्यमान हे, उन साख

में उपाध्याय श्रीनेममूर्तिजीऋषिः तत् शिष्य उ । श्रीकेममाप्ति  
 कजीऋषिः तत् शिष्य । पणित प्रवर्ग श्रीविनयनेद्रजिऋषिः तत्  
 शिष्य श्रीपं । प्र । लक्ष्मिर्षजिऋषि तत् शिष्य पं । प्र । श्रीधर्म  
 शीलजिऋषिः (श्रीसाधुजी) तच्छिष्य पं । प्र । श्रीकुशलनिधानजि  
 ऋषिः तच्छिष्योपाध्याय श्रीयुक्तिवारिधिः श्रीऋद्विसारगणित्स्संगृहीत  
 ग्लसमुञ्जय ग्रंथ तथा रामविज्ञाश तच्छिष्य पं । कृमासौजाग्यमुनिः  
 चि । पेमचंद चि । अमरचदकी तरफमें यह ग्रंथ सप्त जीवोंके उ-  
 पगारार्थ पढेके उपाया । श्रीवीकानेरमें सं । १७५७ की ज्येष्ठ  
 वदि पंचमी को जैन संस्कृत पाठशाला जैन बालकोंके पठनार्थ  
 स्थापन करी दे इसमें मदत देणवाले धर्मज्ञ पुरुषोंके नाम वीका-  
 नेरमें दिया ॥

४१ रु । श्रीनम्रसेठजी चांदमलजी ढढा.

११ रु । श्रीमगनमलजी मगलचव्वजी जावक.

११ रु । श्रीसदारामजी गोलठा.

११ रु । मानमलजी केसरचंदजी सांढ.

११ रु । श्रीचूनीलालजी गोलठा.

१० रु । श्रीराजरूपजी देवचदजी नाढटा.

३ रु । श्रीआसकरणजी वरढिया.

११ रु । श्रीबादरमलजी जसकरणजी रामपुरिया.

११ रु । श्रीसिरदारमलजी तातेढ.

२५ रु । श्रीमालचंद कनीराम आज़र मुनईवाला.

३ रु । श्रीवठराजजी नाढटा.

आगे जो विवेकी आवक इस पाठशालाके मदत देगे तो  
 ह्यानका अरुयनिधान पावेगे, जतीलोकोंके केइयक शिष्य जैनपं-  
 नित तत्वज्ञानी वण जायगे, जैनउपदेशक वधेगे, उर जो नही प-

दृते दे उनोंको हरतरे श्रावकलोक शिक्षा देकर पढाणेकु उद्यमवंत  
 करणा यह काम श्रावक मातपिता उर गुरुलोकोका हे, इस नही  
 पढणेके सबब जैनके ज्ञेपधारी उर ज्ञेपधारणीया अनेक कुर्मोंके  
 वश नरकके पात्र उर धर्मकू लजाते हे, क्यों की दशवी-  
 कालक सूत्रमे लिखा हे ( ॥ सूत्र पढम नाण तउ दया ॥ ) पढ-  
 ली सम्यग्ज्ञान होय तो फिर पीठै दया पाल सकता हे ॥ ज्ञा-  
 नीका जन्म सुधरता हे अज्ञानीका सर्वथा नही, वाजै गृहस्थ एसा  
 कहते हैं हमार जावे विगमे तो क्या उर सुखे तो क्या, हम नतो  
 इनोको गुरुकरके मानेंगे न अन्नवस्त्र देंगे, देंगेतो मानरहित कग-  
 लोकी तरे ॥ हम पढाणेकी क्यों कोसीस करें ॥ उत्तर ॥ यह स-  
 मजसे तो जैनधर्म अमावश चइताकूं प्राप्त होता हे, इस बुद्धिसे  
 जैनधर्ममें पूनमचइता कैसे उद्योत करें, श्राद्धविधी विवेकविलाशादि  
 श्रावकाचार ग्रथोंमें एसा लिखा हे धर्माचार्यके उचिताचरणमें ध-  
 र्मसे जृष्टजये धर्माचार्यकू फेर जिनधर्ममें थिर करे तो बदला ऊतरे,  
 दस बीस आदमी एऊठे होकर निद्या करणसे विगामका सुधार नही  
 होता, धर्ममें थिर करणेकी असली जरु विद्यावृद्धि हे, स्वज्ञाव कोई  
 किसीका नही मिटा सकता यह तो निश्चे हे, तथापि कारणसे  
 कार्य होता हे, कारण तो विद्या पढणा हे कार्य तो अठी क्रिया चोथा  
 पाचमा उषा सातमा गुणठाणा चढणेरूप हे ॥ ग्यानी सासोसास  
 करम करे सो नास ॥ इत्यादि वचन तीर्थंकरोका हे सो विचारणा.  
 प्रश्न । हम जतियोको धर्माचार्य नही मानते ? ॥ उत्तर ॥ कोइ  
 अपने पितासे पिताजाव न रके तो उसका क्या कोइ कर  
 हे लेइन् ससारमें बह लायकवदतो नही गिणाजाता, ए-  
 श्रीमाल श्रीमाल उसवाल पोरवालादि जैनवर्गके धर्माचार्य  
 ही हे, जतियोमें पढते हैं, धर्म सुणते हे, सामायक पोसा

पम्कमणा करते हे, मदिरोमें गायन पूजा चोपी आदि वाक्ते हे यह तो चलता उपगार हे, उर जतियोंके वनेरोनें तुमारे वने-  
 रोंकों थितामणी रत्न जेमा जैनधर्म दीया हे, यह उपगार सबमें  
 वना हे ॥ प्रश्न ॥ एतोंकों तो हम मानने हे लेकिन सुणाणे  
 पढाणेवाले तो कम उर र्म लजाणेवाले वदोत जिनोकों केसे  
 माने ? ॥ उत्तर ॥ सच्च हे, इस बातका निर्णय हमने आगे लिखा  
 हे सो वाचो, एक श्रावकका ॥ प्रश्न ॥ जतीलोक चेला क्यों  
 करते हैं इनोसें यथार्थ धर्म पलतानही ? ॥ उत्तर ॥ यथार्थ  
 धर्म तो यथाख्यात चारित्रकूं कहा हे सो तो वज्रपन्ननाराच सं-  
 ह्यान विच्छेद होतेइ गया, सामाप्रक वेदोपस्थापनी यह वेष रदा,  
 जिसमें ज्ञी उत्सर्ग उर अपवाद, सो उत्सर्ग तो लुप्त, अपवादकी  
 प्रवृत्ती, सरागमंजमी रहे, वीतगमसंजमी लुप्त, इत्यादिक कठिन मार्ग  
 सूत्रोंमें वाचणें योग्य गहरगया, आपसमें कपायकी चोकमीका व-  
 रतावा देखके मध्यस्थ हो के रहे, आरजत्यागकी इमेसा बुद्धि रखे  
 पंचमकालमें वोही साधू हे, जतियोंके चेला वणाणेमें इतना फायदा  
 हे—मिथ्यात्वकुलसें जैनकुलमें लाणा, खेती आदि गृहस्थाश्रम-  
 का पाप ज्ञानपढे बाद आपलेही ठेरुदेणा, केइयक इनोमें चोथा  
 पाचना ठवा सातमादि गुणवाणे चढणा, श्रावगवर्गका इस जव  
 परजव संवधी अनेक कार्योंका सधाणा, इत्यादि लाज परजीवकूं  
 सच्च धर्मकी श्रद्धा कराणेवाला तीर्थकर गोत्रकर्म बाधता है, थ्रोमेंमें  
 विचारणा ॥ प्रश्न—जिनोकूं पढाया नही उर गुरु मरे बाद गुरुके क-  
 माये धनसें पापारज करे तो वह पाप चलेका गुरुकूं जरूर लगे  
 या नही ? उत्तर—जिस मातापितानें मरणके वखत सर्व परिग्रह  
 वोसिराय दिया उनोकों पाप नही, उस परिग्रहसे करे जो पापारज  
 सो करणेवालेकू लगेगा, मातापिताकूं नही, यह जैनधर्मका



र्म है, मातापिता गुरु शुभ अनुष्ठान सिखलाते हे संतान वेसा करे तो जरूर शुभफल मिलै, जूआ चोरी आदि कुविसन गुरु सिखलाते नही इस वास्ते करै करावै अनुमोदे छसकू पाप लगे ॥

बांकाभेर घडे उपासरे पास जैनविद्याशालामें उ० । श्रीराम-लालजीगणि० प । क्षेमचंदजी मुनि पासै इतनी पुस्तकें मिलेगी.

	रु.	आ.
रत्नसमुच्चय	५	०
सोलेचाणक्य स्वरोदय ज्ञाषा	१	०
करुणावतीस। दादासाहिवपूजा	०	४
भूर्त्तिमंरुणका अदञ्जुत ग्रंथ सिद्धभूर्त्ति०	०	८
सर्वपूजामहोदधी खरतरगद्य तपगद्यकी	४	०
ध्रावकव्यवहारालंकार	१	८

## विज्ञापन.

॥ अथ वर्तमान आचार्योंके करणे योग्य कर्तव्य ॥

॥ प्रथम तो आचार्य जातिवत रूपवत नर विद्यावत सुशी-  
लही होणा चाहिये, चाहे आचार्यका शिष्य होय चाहे उक्त लक्ष-  
णवाला दुसरा कोई होवे, यह सर्व संघकी सम्मतीसँही होणा,  
फेर हमेंसा शास्त्रान्यासी होणा, वहोत प्रमादवत नहीं होणा, देश  
क्षेत्र काल ज्ञाव मुजब सदा गद्यकी सारसंज्ञालसँ जैनधर्मके दीप-  
क होणा, बेजा चलणसँ यतीयोंको दृष्टकणा, उनोके मन मुजब  
नही चलणे देणा, लांठित पुरुषकी संगत नहीं करणी, उन्नय  
काल प्रतिक्रमण करणा, अज्ञरुके त्यागी होणा, सूरिमंत्रका नित्य  
जाप करणा, देवदर्शन नर श्रापनाचार्यादि पन्थिलेहण करणा, जती  
जतणीकूं शुद्ध परंपरागम वेप नर संघ तारीफ करे एसे मार्गमें  
प्रवर्तणा, इस उपरांत जो आज्ञा न माने उसकूं गणादही करणा,  
स्वार्थके वश कसूरदारका पठपात न करणा, अथै सुशील पंथितो  
की सोदवत करणी, क्रमावत नी होणा, समय नी सोचणा, उ-  
पदेश करणमें हुसियार होणा, उपाध्याय वाचकादिपद योग्य नर  
पंथितकूं देणा, स्वार्थके वश मूर्ख नर अयोज्ञ नर बुद्धिहीन अव-  
स्थावृद्ध कलहकारकूं न देणा, अपणे२ गद्यके अधिष्ठापक क्षेत्रपा-  
ल मानज्जादिकके साहायसँ धर्मके उद्योत वास्ते मंत्र यंत्र तंत्रा-  
दिक विद्या लब्धिवलसँ संघमें परोपकारी अष्ट माहा प्रज्ञावोक  
होणा ॥ इति ॥

॥ अथ उपाध्याय कर्तव्य ॥

॥ सूत्र अर्थ अनेक शास्त्रोंके पढने नर पढाणेवाले होणा,  
वर्धमानविद्याका नित्य जाप करणा, रात्रीचोविहार नवकारसी

आदि तपके कर्त्ता, शिष्यादि वर्गकू सुविहित मार्गमें चलाणा, गद्य के घोरी आधारभूत साक्षात् आचार्य तुल्य शुभ्र अनुष्ठानके कर्त्ता होणा ॥ इति ॥

॥ वर्त्तमान त्यागीसाधुओंके कर्त्तव्य ॥

॥ गुजरातादि एकही देशमें सुखार्थी होके रहणा नही, जहां पुस्तकोंके जमार नही हे उहा पुस्तक लिखवाके जमार करवाणा, अपनी निश्रायें हजारो रूपेके पुस्तक लिखवाके श्रावकों पास लेणा यह साधुजका धर्म नही, फकत अपनेसें उठे उर नित्य पढिलेहण होय इतने मात्र पुस्तक रखणा, वाचनेकु चहीये तो ज्ञानजमारसें लेकर पीठा देणा, जहां चोमासा करे अथवा शेषाकालमें रहणा उस क्षेत्रमें जिसर वस्तुकी आवश्यकता होय सो उहा उपदेश दे के करवाकर उसही क्षेत्रके सबके सुप्रत करवादेणा, अथवा दुसरे क्षेत्रोंके समर्थ श्रावकोंसे करवाके जेजादेणा, गृहस्थोंसें वैयावद्य कराणी नही, वती योगवाइ इसकालमें इकेला विचरणा नही, अंधाबल घट जाय तो एक जगे रहणा, जती पंक्तियोंहीसे तो पहली ज्ञान पढे उर फेर रुतघ्नी होकर उनही एी पीठी हीलणा उर निद्या करणा यह योग्य नही, धर्मके आदि रक्षक उर बीजभूत जतीही हे क्योंकी जतियोंकेही प्रतिबोधक उसवाल पोरवाल उर श्रीमालादि श्रावक हैं, फेर इन जतियोंमेंसेंही हजारों त्यागी वैरागी इस पन्ते समयमेंनी होतेआए हे, तथा सत्यविजयजी जिनके शतानमें बुंटे-रायजी उर आत्मारामजी वगेरे जये हे, खरतर अमृतधर्मजी उपा-ध्यायजी कृमाकल्याणजी इयते पूर्वपुत्र्य इनके संतान धर्मानंदजी राजसागरजी सुखसागरजी वगेरे जये हैं उर विद्यमान समयमें मुनिराज शिवजीरामजी मोहणलालजी किरपाचंदजी ज्ञायचंदजी

वगेरे अनेक विचरते हैं सो तुम हम देखते हैं, इस वास्ते ज्ञान दर्शन चारित्र इन तीनोंकी जरू इन पुरुषोके जतीही हे इस वास्ते जतीयोका घराणा रत्नोकी खाण हे, खाणमें रत्न कालपाके निकलते हैं, जतीजी प्रमादी ठे गुणस्थानकमें केइयक वर्त्तते हे उर आजकलके साधूजी केइयक प्रमादी गुणस्थानवर्ती हे इस वास्ते केइयक तो ठाने दोष लगाते हे केइयक प्रगट, केइयक तो जतीयोमें ज्ञाव करके पंचम गुणघाणी हे केइयक चतुर्थ गुणघाणी, इसी तरे साधुके मुजबही शुभ ज्ञावसंयुक्त जतियोके ज्ञाव आश्री गुणघाणा समझणा, निश्चयसम्यक्त तो साधू एक आश्री तथा जती आश्री केवलीजगवान कह सकते हे तथापि जैनधर्ममें व्यवहार शुभ बलवान हे, लोचादि कायहेत तपके फल मनुष्य देव आश्री सुखकी अधिकताईके हे, देखो गुणस्थानकरुमारोद्दप्रकर्ण रत्नशेखरसूरि कृत ॥ कपायकी बहुलता आजकल साधुनमें ज्यादा देखणेमें आता हे, गणगवालोंने आपसमें द्वेष रखते हे, खरतर तथा तपोके ज्ञी देखणेमें आता हे, जब कपाय विद्यमान हे तो सिद्धिपद कसें सधेगा बलीहारी उनहीकी हे जिनोंने कपायकी चोक्नी त्यागी हे. किं बहुना ॥ इति ॥

॥ अब जतीलोकोका संक्षेप कर्त्तव्य ॥

॥ जाति ब्राह्मण वणिक राजपूत जाट वगेरे उत्तम जाती का चेला तीन चार वर्षकी अवस्थावाला होय सो लेणा यावत् बारे वर्ष तकका उपरात ऊमरवाला पढता नही उर वहीत ठोटा लेणेसें धाय रखणी होती हे उसकी पालभेट करणेकूं तब वहीतसे कमजात अपणी एवकूं विपाणेकूं निदा करतेहुये कलंक लगाते हे लेकिन न्यायवंत तो पूर्वापर विचारे विगर मूमेंसें वात नही निकालते मुखोंके कहणेसें सोना पीतल नही बणता, डटोंका स्वजा-

घड़ी होता है सां गुणमें उद्युण निकालते है, चर्तृहर लिखता हे-  
 सूरवीरकुं निर्दण्ड कहते हे गमखाणोवालेकुं मरोकम केते हे ब्रह्म-  
 चारीकू नामर्द इत्यादि अनेक दृष्टांत हे, खैर एसे चलेकू मुखपाठ  
 जैनधर्मका अवश्य कर्त्तव्य गुणाना निच फेर अकर वाचने सि-  
 खाणा अकर जमाणे बोलखा पाटी लिखाणी फेर कौश व्या-  
 करण काव्य न्याय ज्योतिष वैद्यक बुध्यानुसार सीखाकर जी-  
 वविचारादि पट्ट प्रकरण सूत्र सिद्धांतोकी व्याख्या सिखाणी, चोल-  
 पट्टा मुहपत्ती उघा नामा चेदर पागरणी स्वेत हमेसां रखणा, म-  
 स्तकके बाल केचीसें कतराणे या उस्तरेसें मुंजाणा, पादस्त्राण स्वे-  
 त बख ऊपर दियेहुये शीत उष्ण काटा वगेरे के उपसर्ग मरुधर  
 देश आश्री पहरणे दक्षिण पूर्वमें प्राये नही उहा एसा उपसर्ग  
 नही देश विरुधके कारण त्याज्य हे, प्रयचनसारोध्वार ग्रंथमें का-  
 रणविशेष साधुनंको पादस्त्राण पहरणेकी आज्ञा हे, पुस्तक लि-  
 खणा पातरे पाटी वगेरे रगणा मूत्रणा तिरपणीके मोरे वणाणे  
 माला वणाणी ठेकरे पढाणा मंत्रविद्यामे कुशलता रखणी सो ज्ञी  
 जिनधर्मके अन्यके नही, रातकू चोविहार नवकारसी पोरसी प्रमुख  
 यथाशक्ति तप करणा, दोनु बखन पनिकेमणा करणा, ठत्ती शक्ते  
 सच्चित्त त्यागणा, राजदमे लोकरुजमे एमे रस्ते नही चलणा, कुलम-  
 र्याद लोपणा नही, चिलमचुट्टा वगेरे जैनधर्मके कायदेके बरखि  
 लापनसा पीणेगलेभी सगत नही केठणा, कुविसनीयाके संगतसे  
 लठन लगता हे, आवक जो द्रव्य देवे सो सुकृतार्थ लगाणा तीर्थ-  
 यात्रा चेला जेणा उनोकू खिलाणा पिलाणा पन्तकों रुजगार देके  
 चलेको पढाणा, पुस्तक लिखाणा अत समय जीवराशी खमाय  
 पापोंकी गही सुकृतकी अनुमोदना कर सब बोसराके परजव सा-  
 धणा धर्मोपदेश देणा ॥ इति ॥

॥ अथ श्रावकोंका कर्त्तव्य ॥

॥ सुजन्मवाधी श्रावकोंके इक्कीस गुण सिद्धांतोंमें लिखा है, उस गुणोंकें धारणा चाहिये. गणानुसूत्रमें साधुजन्मी प्रतिपाल करणोंसे श्रावकोंकें मातापिता तुल्य जगवन्तने कहा है, बालक कमर जो करे तोजी मातापिता अपने शतानपर अंतरंगसे कच्ची द्वेष नहीं करते हैं, इसी तरे श्रावकोंकें साधुजन्मीसे वर्त्तना चाहिये, जेपवारीसाधुजन्में कोई तरेकी एव दीखवने तो एकात्ममें हितशिक्षा देके ठुमणा चाहिये, नहीं माने तो बालककू धमकावे जैसे धमकाणा चाहिये, इस उपरात सुधरते नहीं दीखेतो कर्मोंकी विचित्रता समझके एमोंकी संगत न करे, जैनधर्मकू लजावै, एसी एव कोइ नहीं होय उर शर रूके परवशता अथवा देश क्षेत्र काल ज्ञाव के कारणसे अपवादमार्गमें चलते होय उर गुणवान होयतो उस गुणकी कदरदानो नारायणरूपणकी तरे जरूर करणी, उर जिनधर्मकू लजावै एसा होयतो उहासें रुकसत करावेणा. जिनमदिर उर उपासरेकी आवंठ खरचकी सारसजाल जरूर करे, विनासजाल क्रिये बहोतसे मदिर उपासरेकी तजवीजे विगम रही है, जमार लोक खागये हे, उती शक्ते इस बातका खयाल हरतरेसें करे, अपना लरुका लरुकीयोकू संसारविद्या उर धर्मकी मजवूती करणेकू पम्किमणा चेत्यवदनादि श्रावकाचार उर जैनन्यायशास्त्री अहार वचपणसें सिखलाणा चाहीये देव गुरु उर वमर अकलवंतोही संगत करवाणी चहिये, विरादरीमें सनातन कुलमरजादसें जो विपरीत आचारणा करे उमकी देखदेख आप न करणा, वणे जहातक उणोंको जी शोकणा, विद्यमान अग्नेजी इडम लरुकोंकू सिखलावे तो पहली जैन न्यायसे हुसियार कर पीठे सिखलाणा क्योंकी इस अग्नेजी इडमकी ज्ञादा किताबोंके पढणसें पीठे नुसु

क सत्य सनातन दयार्थमका उपदेश लगणा मुसकिल होता है, जैनधर्मकी उन्नती पर कमर बाधणा उर अग्रेजीमें चोथे दरजे पास होकर हाल मुकाम जेपुरमे ढढा गुलाबचंदजीकों हम धन्यवाद देतें हैं इस वजें बेलासक पढे उर पढावै, जैनधर्मके कायदेकी मजबूती उर तारीफ़ जिसने समजा हे वोही जाणता हे उर लसनकूं मुसककी खुसवा कब लग सकती हे, जिनोंको सत्तारमें अच्ची बहोत जवभ्रमण करणा बाकी रहा हे उनोंकों जैनधर्म किसी तरे रुचता नही कोइ संका करेगा जैनधर्ममें पथ न्यारे२ हे मानेच्ची तो कोन सच्चा उर कोण जूठा ? ( उत्तर ) हे जव्य हमने पेस्तरही लिखा हे न्याय जो जैनका सात जगरूप हे उसकूं समजा उर बस्तुज पर घटातेही यथार्थ मार्ग मिल सकता हे ( प्रश्न ) इतनी बुद्धि उर परिश्रम तो करणेवाले थोने दें सो एसा न्याय पदके निश्चय करे सहजमें निश्चय कैसे होय ? ( उत्तर ) जो इतना नही समजो तो जो रूपजदेवजीसे लेकर आज दिनतक जो सनातन जैनधर्म चलता आया हे वोही जैनधर्म सच्चा हे बीच२ में अल्पज्ञोने अहकारके वस मनोकल्पित फदसे एक नय पकरके अपने२ मत खने किये हे, पटशास्त्री चौदेपूर्वधारी दशपूर्वधारी निर्युक्तीकार जगवान् जइन्द्राहुस्वामी उमास्वाती ज्ञाप्यकार जिनज्जगणी कृमाश्रमण इत्यादि पचागीकार जो समुद्र सरीपे बुद्धीके धणी उनोंने जिस बातका निश्चय किया वोही सच्चा जैनधर्म समजणा, श्रावगधर्मवालें पर वना उपगार रत्नप्रज्ञसूरि उर दादा श्रीजिनदत्तसूरि प्रमुख आचार्योंने किया हे सो केश्यक पापारंज की बातें तो इस जातीके कायदेसेही बंध होगई हे, जैसे मद्यका पोषा उर मासादि अजरु खाणा लेकिन आजकल कर्मके वस धीरे२ एसे उत्तम कुलमें निरबुद्धियोने अधोगतीकी समक बा-

धर्म पर मुस्तेद हुये सुणनेमें आते हे, चिंतामणीरत्न समान जैन धर्म पाय के निरजाग्यकी तरे क्यों हाथसे फेरते हो पीठे पठतावा होगा थोभे दिनकी जिदगानी हे, मदिरा पीणेमें वावन उगुण हे एसेंइ मांलमें देखो जैनतत्वादर्श ज्ञापाग्रंथ, यही चीज अठी होती तो तुमारे वन्देरे लाखों राजपूत इस चीजोंकों क्यों छोडते उर मुसलमीनोंकों ज्ञी धर्मकायदेसें इस बातकी सकत मनाई हे इत्यादि, किं बहुना ॥ जैनपाठशालाउ स्थापन करणी पढनेवालोंको अन्न वस्त्रादिसे सत्कार करणा चाहियै, जैनकोममे संप नही हे इसका मूल कारण विद्यारहितपणा है, पणित तो दुस्मन ज्ञी अठा होता है मूर्ख हितकारी, ज्ञी कामका नही, विद्यावान सब काम विचारकेह करता है मूर्खके] विनाकारण द्वैप उर अहंकारीपणा होता हे बाकी तो कवियोंने कहा हे—  
 दुहा ॥ सज्जन जाके सो नही, दुस्मन नही पचास ॥ जणनी जणके क्या किया, जार मरी नव मास ॥ १ ॥ श्रावक जितनी चीज अपणे उपजोगमे लेना हे सो सब उत्तम चीजका दान करता हे एक स्त्री वर्जके उस करके जन्मातरमें लक्ष्मीकी एश्वर्यता जोग कर संसारका पार पुन्यानुबधी पुन्यसें पाता हे मुक्तिपंथ जाते हुये जीवकू पुन्य बोलाठरूप हे, अन्न वस्त्र उपधी सज्या पात्रादिकसाधुनेंकों देवे, देवके निमत्त अष्टत्रय गहणे वस्त्र अनेक प्रकारकी पूजाउंसें दान करे, ग्यानके वास्ते पुस्तक पूठा वगेरे ऊजमणें दान करे, साधर्मों तथा जैनपणितोंकूं नगदद्रव्य वस्त्र जोजनादिक यथायोग्य दान करै, तीर्थकर जगवान ज्ञी संवत्सरी दान देत हे, दानधर्म मुख्य हे जगवतीजीमें ग्रहस्थका अजंगदार कहा हे, जगवतीसूत्रमें तीन गुरु कहे हे सिद्धपगुरु १ जो कारीगरी सिखलावे सो, कलागुरु २ जो लिखणा पढणादि ७२ कला सिखलावे सो, धर्मगुरु



३ सामायिक पम्कमणा नवतत्वादिक धर्मका उपदेश दे के मुक्ति पत्र बतलावे सो, इन तीनोंकी श्रावक यथायोग्य ज्ञात्री करे ॥ अब चञ्जगी लिखते हैं ॥ सम्यग्ज्ञानवत देसें विराधक । १ । कष्टरूप क्रियां करणेवाला देशे आराधक । २ । ज्ञान उर हियारहित मने- विराधक । ३ । ज्ञान उर सत्क्रियावंत सर्वे आराधक । ४ । ॥ इति पात्रगुरु निर्णय ॥ विशेष श्रावकोके कण्ठे योग्य कर्त्तव्य देखणां होय तो हमारा ठपाया श्रावग व्यवहारालंकार देखो ॥

॥ अथ मन्दिरके पूजारीयोके कर्त्तव्य ॥

मारवाममें प्राये जैनमन्दिर जोजगद्दी पूजते हैं उनमें इस वखत प्राये मिथ्यात्वी बहोत सम्यक्की बहोतही कम हे, गुजरातमें जो जोजक जैनमन्दिर पूजते हैं सो सब जैन हे जिनोको अन्य देशमें गवर्ष कहते हैं ( प्रश्न ) पूर्वोक्त जोजकोने जैनधर्म कबसे बोना हे ? ( उत्तर ) पहले श्रीशंभुदेवजीने जोगवशी स्थापना करे अपणे कुलके प्रोहित बनाये, पीछे भरतजीने ब्राह्मणवंश स्थापने करा, राजा सूर्यवंशने जोगवशीयोको पूज्य जाण जिनमन्दिरकी सारसजाल सौपी लेकिन जिनमन्दिरका चढापा मन्दिरके कूटपर धरायाजाताथा जैनधर्मी होणसे बलिदान जोगवशी नदी खोतये वो सत्र पंखी जानवर खायाकरते, इनोको अनेक तरेसे पर भहोछवे पर उव्य वस्त्र जोजनादिकसे राजा उर प्रजा सब सत्कार करतेये वो सब नवमे दशमे जगवानके अतरमे गिटेयाधर्मी होगये बाद कच्ची कोठ जैन कच्ची मिथ्यात्वी एसे होते चले प्राये, जब २४ से वर्ष पहले तुर्सायामें जैनधर्म फैला तब राजाके पुरोहित राज-पूतीके सग जोगवशी केर जैनधर्मी होगये तब राजा उपलब्धे प-मा वगेराने ज्ञात्री उर बहुमानता के सग जिनमन्दिरका पूजारी-पणी नभेर्मी ब्राह्मण जाण सुप्रत कीयागया, जिसके बाद विक्रम

संवेन वारेसेमें रामानुज साधवाचारी वगेरोंने विष्णु मंत्रदाय नि-  
 काली, उसही जनानेमें अनेक राजन्ववंशीयोंको दादा दत्तसूरजा  
 ने लाखों उत्सवाल फेर वणार्थे, तब राजवीथीने गुरुसं श्ररज की  
 इस दयाधर्मके प्रज्ञावसे निर्दयीपरी हम लोकोंमें होगा नही राज्य  
 तो सदा धिर रहणा नही आगे हम लोकोंका अहवाल क्या होगा,  
 गुस्ने कहा जो जिनमंदिरोकी जत्ती उर जतीगुरुकी सेवा अन्नक  
 त्यागादिक हमारा धरायाहुवा जैनधर्ममें जहीतक चलोगे तहां  
 तक पाटका भालक राजा उर सर्व थाटका भालक तुमलोक रहोगे  
 तथास्तु वरदान एसाइ जया, राजाउने अपणें जाई स्वजनवर्गी  
 उत्सवालोंकू प्रधान हारुम सेनापती आदि सर्वस्व अधिकार यथा-  
 योग्य सुप्रत क्रिया, तवसे २२ सौ रनवानोंमें उत्सवालोंका राज्या-  
 धिकार वणा तवसे उत्सवालोंने महरगानी रखके विष्णुमंदिर शि-  
 वालयादिकोका पूजारीपणा ज्ञा ज्ञोजकोंको सोंपा वह ज्ञोगवंशी  
 फेर पीठै धारेश मिथ्यात्वी वणवेठे, विद्याहीनता होणेतें सब तरे  
 की हीणता होगई आखिरकों लोक ब्राह्मण ज्ञोजकोंको कर्म कर  
 करके मानणे लगे पूज्यज्ञाव उगगवा, जो कर्त्ती ज्ञोजकलोक एसा  
 समजतें होंगे की हम तो अद्वयमेंही शैव वैष्णव थे ( उत्तर )  
 यह समजकी ज्ञल हे हम पहली लिखदिया हे जैनधर्मकी बहु-  
 लायतमें प्रजा जैन रही, बोयोंक अमल बोद्ध, शाख्यादिकोके अ-  
 मलमें लखे, इत्यादि बातें तवारीकोसें ज्ञा पाईजाती है लेकिन  
 जैनधर्म उर मिथ्याधर्म दोनों अनादि कालका हे इतना ज्ञोज-  
 कोंको जरूर समजशा चाहिये जो तुमलोक सदा मिथ्याधर्मों हो-  
 ते तो राजा उपलदेव पंमारात्रिक परमजेन तुमारा लागे उर बहु-  
 मान उत्सवंश पर कर्त्ती नही लगाते, मिथ्याधर्मियोंका जोर उत्स-  
 वाल जैनोपर कब लग सकताथा इतनेमेंही समजणा, पीठैसें

विष्णुमंदिरकी पूजा उर राजा वगेरोंकी देखोदेख संग दोष  
 लगा, उसवालोंने तिथि नहीं करी वध गया, इस तरेही बहो-  
 तसें उसवंशी जी खुतामदीसे डतरा धर्म धारलिया तुमकों क्या  
 कह सकतेथे, खैर इस बातोंसें हमारे कुठ मतलब नहीं मती  
 जैसी गती दे लेकिन अब हम आगे लिखते हैं उस पर अमल  
 करणा तुमारा फरज दे, लोकीक कहणावट जी दे “ जिसकी  
 खावे वाजरी जिसकी जरणी हाजरी ” उसमें हरज करणसें  
 निमकहराम कहलाता दे ॥ अतरगज्जकीसें जिनमंदिरमे जाऊ  
 देणा, वरतन मलणा, अगलूइणा धोके साफ रखणा, वस्त्रोंकी  
 शुद्धी अगकी शुद्धी विगर जिनमूर्चीका स्पर्श नहीं करणा, पूजा  
 एसी साफ करणी सो आसपास मैल जरा जी नही रहणे देणा,  
 दीपक जलाएमें टकणा वगेरे देकर जीवरक्षा करणी, जल शुद्ध  
 गणणे आदि पुष्पके जीवजंतु देखणे आदि पूजाकी सामग्री ब-  
 होतही विवेकसें रखणा, देवड्यकी चोरी नहीं करणी, इकमें  
 हरकत मालणा नहीं, देव उरें गुरूकी सेवा करणसें तुम्हें सेवगपद  
 मिला दे, जो जावसें करोगे तो जन्म सुखरेगा अगर कर्मोंके वश  
 जो श्रद्धा नहीं आवै तो जिसकी ब दौलत रोटी आदि सडकनों  
 रुपे पाते हो मरणे परणे मंदिर श्रीपूज्य उपासरे के जरीये तुमें  
 सडकनों रुपै आवक देते हैं वो सब देवगुरूका प्रताप समझ इन  
 दोनोंकी सेवा तन मनसें बजाया करो ॥ अलबिस्तरेण ॥

ऊपर ठ उपदेश मैंने लिखे हे कोइ कठोर छवज लिखा  
 होय तो माफी मागताहूं सरलजावसें लिखा हे द्वेषसें नहीं ॥

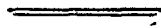
इस अथके ठापणेमे काना मात्रा ज्यादा या कम जो रह  
 गया होय तो सुगरके वाचे या गुरूमें शुद्ध करावेमें मैं मनशु  
 दिसैं सर्व सवसें दूमा मागताहूं सज्जन तो सदा गुणग्राहीही होते

हैं, उनोंका मैं सदा आज़ार मानताहूँ ॥ यत ॥ तथापिक्रियत  
ग्रंथ, संतियद्यपिडुर्जना ॥ नहिदृश्युन्नयास्त्रोको, दैन्यवानिहवर्त्तते ॥  
॥ १ ॥ अर्थ—ग्रंथ संग्रह तोज़ी करताहूँ यद्यपि डुरजन बहोत हे  
चोरोके रुसैं लोक कंगाल नही वण वेठते तेसे ? मेंने अपने  
हाथसे लिखकर मुंबइ जेजकर शिष्यवर्गोंके कहणेसे इसमें सं-  
ग्रह मेंने अनेक ग्रंथोंसे किया हे, बहोत चीजें पं । प्रं । श्रीअवी-  
रचंडजीमुनि.से लीहे, पुस्तक यह बहोतही रत्नरूप संघेय हे.  
रूपजेदेवजी का आदिशंकर । र । महावीरस्वामीका । म । इन दोनोंसे  
चला जो । राम । उनोंके मध्यवर्ती सब जगवंतोंके गुणोंका विलास  
इसवास्ते इस ग्रंथका रत्नसमुच्चय तथा रामविलास यथार्थ नाम हे ॥

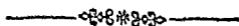
॥ परम मंगल श्रीदादाजीके काव्य सर्वईया ॥

दाशानुदाशाइवसर्वदेवा, यदीयपादाब्जतलेखुठति ॥ मरु-  
स्थलीकल्पतरु.सजीया, ज्जुगप्रधानोजिनदत्तसूरिः ॥ १ ॥ चिताम-  
णिः कल्पतरुर्वराको, कुर्वन्तिज्जव्याःकिमुकामगव्या ॥ प्रसीदतःश्री  
जिनदत्तसूरैः, सर्वेपदाहस्तिपदेप्रविष्टाः ॥ २ ॥ नोयोगीनचयोगिनी,  
नचधराधीशस्यनोशाकिनी ॥ नोवेत्ताल पिशाचराक्षसगणा, नोरो-  
गशोगोन्नयं नोमारीनचविग्रह, प्रचृतयः प्रीत्याप्रणत्पुञ्जकै ॥ य-  
स्तेश्रीजिनदत्तसूरि, गुरवोनामाकरध्यायति ॥ ३ ॥ ॥ अथ स-  
र्वईया ॥ वावन वीर किये अपने वश, चौसठ योगण पाय ल-  
गाई ॥ ऋण साण व्यंतर खेचर, जूतरूपेत पिशाच पुलाई ॥  
बीज तरुक्क करुक्क जटक्क, अटक्क रहै जु खटक्क न फाई ॥ कहे प्र-  
मसीह लयै कुण लीह, दीयै जिनदत्तकी एक डुहाई ॥ १ ॥ इति ॥  
राजै थुंज गौरगौर, एसो देव नही और ॥ दादौ दादौ नामसे, ज-  
गत्र जश गायो हे ॥ आपणेंही जाव आय, पूजै लस्क लोक पाय ॥  
प्यासनकू रानमाजि, पाणी आन पायो हे ॥ वाट घाट शत्रु दाट,

हाट, पुर पाटणमें ॥ देह गेह नेरमें, कुशल वरतायो हे ॥ धर्मसी-  
 ह ध्यान धरे, सेवका कुशल करे, साचों श्रीजिनकुशलसूरि, नाम चुं  
 कदायो हे ॥ १ ॥ कुशल अग उठरग, कुशल वणिजै व्यापारै, कु-  
 शल देव वेहरे, कुशल धन राजपुरारे ॥ पुन्य प्रसाथे कुशल कुशल  
 श्रीसघ जणीजै, वाहण आवै कुशल कुशल घर२ गाईजे ॥ जिन-  
 चंद्र सूरि पुहुपट्टधर नाम मत्र आरति टलै, श्रीजिनकुशल सूरि  
 पाय पूजता नव निधान लक्ष्मी मिले ॥ १ ॥ कुशल वहु सत्तार  
 कुशल सज्जन घर चाहै, कुशले मङ्गल माल लछि घर कुशले  
 आवै ॥ कुशलै धन वरसत कुशल धन धनरुपन्नो, कुशलै धोना  
 थट्ट कुशल पहरीय सुवन्नो ॥ एरमो नाम सदगुरुनणो कुशलै जग  
 रलियामणो, जट्टारक श्रीजिनकुशल सूरि नाम ग्रहणे करी घर२  
 होय वधामणो ॥ १ ॥



# रत्नसमुच्चयग्रंथस्यानुक्रमणिका.



ग्रंथोका नाम.	पृष्ठांक.
१ उकारं विंडसंयुक्तादि मंगलाचरण	१
७ स्वरवर्ण	२
३ वर्णव्यंजनमाला ...	५
४ शिक्षावाक्य .. ...	३
५ सधिसूत्र ...	४
६ हितोपदेश . ..	५
७ त्रिभु जिन नाम तोले सती नाम ...	७
॥ प्रतिक्रमण सूत्र प्रारंभ ॥	
८ नवकारमंत्र . ..	१०
९ प्रापनाचार्यजीकी तेरेपन्निरेहण .	१०
१० खमासमण ...	१०
११ सुगुरुने ज्ञाता सुखपुत्रा .	११
१२ मुहपत्ती पन्निरेहणके पञ्चीस बोल .	११
१३ थगकी पञ्चीम पन्निरेहण .	११
१४ सामायकका पञ्चखाण . ...	१२
१५ इरियावहि . ..	१३
१६ तस्तनत्तरी . . .	१३
१७ अन्नचूसत्तिण . . .	१३
१८ लोमस्त . . .	१४
१९ वेसणोसंदिस्ताउं . . .	१४

२०	राई प्रतिक्रमण विधि	.	१५
२१	सकलतीर्थनमस्कार	.	१५
२२	जकिचिनामति०		१५
२३	नमोत्रुण		१५
२४	जावति चेइआई		१६
२५	जावति केवि साहू	.	१६
२६	परमेष्टिनमस्कार		१६
२७	उपसर्गदरस्तोत्र		१६
२८	जयवीयराय	.	१७
२९	पन्तिकमण ठायवेका अवसर	.	१७
३०	सद्यस्तवि		१८
३१	इच्छामिगामि	.	१८
३२	वंदणवत्तियाए		१८
३३	पुरकरवरदी		१९
३४	सिद्धाणबुद्धाण		१९
३५	वेयावच्चगराणं		२०
३६	संभासाप्रमार्जन	.	२०
३७	सुगुरुवादणा	.	२०
३८	देवसिय आलोउ		२१
३९	रात्रि सवधी अतिचार आलोयण		२१
४०	अठारे पापस्थानक आलोयण		२२
४१	श्रावकवंदितासूत्र		२३
४२	वदितासूत्र पीठेकी विधि		२६
४३	अष्टुठिठमि	..	२६
४४	आपरिय उवझाए	..	२६

४५	ग्रावस्यरुकीमुहपत्ती	२७
४६	सकल तीर्थ नमस्कार	२७
४७	परसमय तिमरतरणि	२८
४८	संसारदावाकी स्तुति	२९
४९	काञ्जसगमें स्तुतिका पृथग् पाठ	२९
५०	अढाङ्गोसु हीवसमुद्दे	३०
५१	जयर त्रिजुवन० सीमंधर चैत्यवंदन	३१
५२	सीमंधर स्तवन ॥ श्रीसीमंधर साहिवा	३१
५३	सीमंधर स्तुतिकी एक गाथा महीमरण	३२
५४	सिद्धाचलजीका चैत्यवदन जयर नाञ्जिनरिंदनंद	३२
५५	सिद्धाचल स्तवन ॥ सिद्धाचलगिरि ज्ञेय्या रे	३२
५६	सिद्धाचलशुशु शेत्रुंजगिरिनमीये रुषजदेवपुमरीक	३३
५७	पन्विलेहण विधि	३३
५८	सामायक पारनेकी विधि	३४
५९	जयवं वसणजदो	३४
६०	संध्याकालसामायक विधि	३५
६१	देवसी पन्विकमण विधि	३६
६२	जयतिहुअण	३६
६३	जयमहायश	४०
६४	महावीर स्तुति॥मूरति मनमोहन कंचण को०	४०
६५	स्तुति कल्यां पीठेकी विधि	४१
६६	श्रुतदेवताकी स्तुति	४३
६७	हेत्रदेवताकी स्तुति	४३
६८	वरकनक	४३
६९	नमोस्तु वर्द्धमानाय	४४



७०	श्रीजिनविंश जुहारो रे न्नविका ॥ स्तवन	४४
७१	तिस पीठे काञ्जसग्न करणेकी विधि	४५
७२	थंजणापार्थनाथका चैत्यवंदन ॥ श्रीसेढी०	४६
७३	थंजणयद्विपासस्तामिणो	४६
७४	दादाजी श्रीजिनदत्तसूरिजी आराधना	४४
७५	दादाजी श्रीजिनकुशलसूरिजी आराधना	४७
७६	चञ्जसाय चैत्यवंदन	४७
७७	लघुज्ञातिस्तवन	४८
७८	कमलदल स्तुति	४९
७९	कल्याणकमला गेह ॥ स्तुति	४९
८०	सकलकुशलवल्ली ॥ स्तुति	५०
८१	सर्व जिन स्तुति ॥ दर्शनात् पुरि०	५०
८२	आदिजिन स्तुति ॥ सुवर्ण वर्षा गजराजगामिनं	५०
८३	सोलम जिनवर शातिनाथ स्तुति चैत्यवदन	५०
८४	प्रह शम प्रणामु ॥ नेमनाथ स्तुति चैत्यवंदन	५०
८५	पुरस्तादाणी पास नाह ॥ स्तुति चैत्यवदन	५१
८६	बदू जगदाधार ॥ महावीर स्तुति चैत्यवदन	५१
८७	अथ पाक्षिकादि प्रतिक्रमण विधि	५१
८८	वृद्धदत्तचार	५२
८९	अतिचारके पीठैकी विधि	६३
९०	जुवनदेवता स्तुति ॥ चतुर्वर्णाय संवाय	६४
९१	दस पञ्चस्काण	६५
९२	पञ्चखाणोकी आगार संख्या	६९
९३	पञ्चखाणके आमारोका अर्थ	६९
९४	साधू प्रतिक्रमण सूत्र चत्वारिमंगल	७२

९५	परकीसूत्र	..	७६
९६	अठपहरी पोसेकी विधि	.	९०
९७	पोसहरा पञ्चकाण .	.	९१
९८	चोवीस श्रंमिला करणेका पाठ	.	९२
९९	श्रंमिलाकहाकरणा ..	.	९३
१००	पांचे शक्रस्तवे देववंदण विधि ..	...	९३
१०१	पञ्चकाण पारणेकी विधि .	..	९५
१०२	राइ संघारा विधि .	.	९८
१०३	पोसहरा पारणेकी विधि	..	९९
१०४	दिन जग्यां पीठै पोसहरा लेणेकी विधि ...	...	१००
१०५	रात्री चोपुहरी पोसेकी विधि .	.	१०२
१०६	गणकमणें चंकमणे ..	..	१०३

॥ देववादेशमें अथवा प्रात काल संध्याकालके

प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

१०७	दूजकी शुइ ॥ मही मंरणं	.	१०३
१०८	पाचमीकी शुइ ॥ पंचानंतक०	.	१०४
१०९	आठमकी शुइ ॥ चोवीसे जिनवर	.	१०४
११०	मैानएकादशी स्तुति ॥ अरस्य प्र०	.	१०५
१११	पार्थजिन स्तुति ॥ ईडेकि चतुर्दशीकी	.	१०५
११२	निरुपम सुखदायक ॥ नवपद स्तुति .	.	१०६
११३	वलिर हूं ध्याऊं ॥ पजूषण स्तुति .	.	१०६
११४	सुर असुर वंदिय ॥ नेमजिन स्तुति	.	१०७
११५	पापायांपुर चारुः॥ दीपमालिका स्तुति	.	१०८

॥ शुई संग्रह ॥

११६	पंचविदेइ	वीसविहरमान स्तुति	१०८
-----	----------	-------------------	-----

११७	समदमोत्तम वस्तुमहापण ॥ पार्श्वस्तुति	१०९
११८	वरमुक्तियहार ॥ रुपज्ञस्तुति	१०९
११९	प्रणमु परमपुरुष ॥ रुपज्ञस्तुति	१०९
१२०	विश्वनायक लायक ॥ प्रजितजिन थुइ	११०
१२१	यदहिनमनादेव० वर्धमानस्तुति	११०
१२२	वीरवेन० वीरजिन थुइ	१११
१२३	मुरति मनमोहन० वीर थुई	१११
१२४	चक्रवीस जिन पचकळ्याणक स्तुति	१११
१२५	श्रीशैत्रंजमरुण आदिदेव ॥ सेत्रुज थुई	११२
१२६	गिरनार शिखरपर० नेमजिनस्तुति	११२
१२७	सुख समकितदायक० शीतलजिनथुई	११३
१२८	मिल चोविह सुरवर० समवसरणस्तुति	११३
१२९	सेत्रुजगिर नमियै ॥ चैत्रीपूनमस्तुति	११४
१३०	समरुं सुखदायक० नवपदस्तुति	११४
१३१	शिवसुख दाता ॥ वीसस्थानकस्तुति	११५
१३२	अरिहंत सिद्ध पवयण० वीसस्थानक थुई	११५
१३३	अनुपमगुण आगर० नवपद स्तुति	११६
१३४	विमलाचल मरुण जिनवर ॥ शेत्रंजय स्तुति	११६
१३५	शातिजिनेसर जगअलवेसर ॥ शातिनाथ थुइ	११७
१३६	मन सुध वंदो जावे ऋवियण ॥ सीमधर स्तुति	११८
१३७	पच अनत महत गुणाकर० पंचमी स्तुति	११८
१३८	अरनाथ जिनेश्वर दीक्षा ॥ अग्यारस स्तुति	११९
१३९	जयकारी जिनवर वासुपूज्य ॥ रोहणी स्तुति	११९
१४०	प्रथम तीर्थरु आदिजिनेश्वर ॥ परकी चौदश स्तुति	१२०

॥ अथ स्तोत्र संग्रह आदौ सप्त स्मरणानि ॥

१४१	अजित शांत स्तव प्रथम	१२०
१४२	उल्लासिक्रम ॥ द्वितीय स्तव लघुअजित शांति	१२५
१४३	नमिञ्जण ॥ तृतीय स्तव	१२६
१४४	तंजयन् ॥ गणधर स्तुति चतुर्थ स्तव	१२८
१४५	मयरद्वियं ॥ गुरुपारतंजय ॥ पंचम स्तव	१३०
१४६	सिग्धमवहरिञ्ज० षष्ठ स्मरण	१३१
१४७	उवसग्गदरं स्तोत्र ॥ सप्तम स्मरणं	१३२
१४८	ज्जक्कामर स्तोत्र	१३३
१४९	वन्दी शांति ॥ ज्ञोञ्जोञ्जव्या	१३७
१५०	जिनपंजर स्तोत्र	१४१
१५१	किकप्पत्तरु० वन्ना नवकार	१४२
१५२	तिजयपटुत्त ॥ अप्ततिजिन स्तोत्र	१४५
१५३	दोसावहारदरुको ॥ नवग्रह० पा०	१४६
१५४	जगद्गुरु नमस्कृत्य ॥ शांति स्तोत्र	१४६
१५५	कढ्याणमंदिर स्तोत्र	१४८
१५६	रूपिमंरुल स्तोत्र	१५२
१५७	लघुजिनसहस्रनाम	१५५
१५८	महिम्न स्तोत्र	१५८

॥ अथ गुटकर चैत्यवदन ॥

१५९	सिठो त्रिङ्गाय चक्की ॥ सेत्रंज चैत्यवंदन	१६२
१६०	श्रीसेढीतट मेरु धाम ॥ थज्जणापार्श्व चैत्यवंद०	१६२
१६१	वंदू जिनवर वीहरमान ॥ सीमंधरजिन चै०	१६३
१६२	पूरव देसे दीपतो ॥ शिखरगिरी चैत्यवंदन	१६३
१६३	प्रथम महेश्वर पद्मनाभ ॥ पद्मनाभजिन स्तुति	१६३

१६४	अवामावामार्द्धे ॥ पार्थ्व स्तुति ॥	१६३
१६५	अविरलशब्दघनोषा ॥ सरस्वती स्तुति .	१६३
१६६	दर्शन देवदेवस्य ॥ सर्वजिन वंदन स्तुति	१६४
१६७	ज्ञापामई दोहा ॥ वदनस्तुतिरूप ॥ इत्याजेहसुल	१६४
१६८	श्रीअरिहंत उदार काति ॥ नवपद चैत्यवदन	१६५

॥ अथ वना स्तवन सग्रह ॥

१६९	सुगण सनेही साजण श्रीसीमघर स्वामि	१६५
१७०	सफल सत्तार ॥ दूजका वना स्तवन	१६६
१७१	प्रणसुं श्रीगुरु पाय ॥ पंचमीका वना स्तवन	१६८
१७२	पंचमी तप तुमे करो रे प्राणी ॥ पंचमी लघु स्त	१७०
१७३	अमल कमल० अष्टमी लघु स्तवन	१७१
१७४	विमलजिन म्दारे तुमसु प्रीत ॥ विमलजिन स्त	१७२
१७५	समवसरण वैग जगवत ॥ मूनङ्ग्यारस स्त०	१७२
१७६	सारदमात नमू शिरनामी ॥ शातिनाथ स्तवन	१७३
१७७	चौरासी आसातनाका स्तवन	१७५
१७८	चोवीसजिन देहमान स्तवन	१७६
१७९	चोवीसजिन आशुप्रमाण स्तवन	१७७
१८०	त्रेसठ शलाकापुरुष स्तवन	१७८
१८१	श्रीविमलाचल शिरतिलो ॥ सत्रुज स्तवन,	१८०
१८२	सिध्याचल मरुणस्वामी रे ॥ सिध्याचल स्त०	१८१
१८३	जरज्जिनेगर दिनकर साहिव ॥ स्तवन	१८२
१८४	वीर सुणोमोरी वीनती ॥ अनावसका म. स्त.	१८३
१८५	चोवीस दंरुक स्तवन	१८५
१८६	इरियावही मिठामिडुकर संख्या स्तवन	१८८
१८७	पंच समवाय स्तवन	१९०

१८८	चौदे गुणगणा स्तवन	१९५
१८९	नव तत्व ज्ञापागर्भित स्तवन	१९९
१९०	दंरु रु ज्ञापागर्भित स्तवन	२०३
१९१	जीवविचार ज्ञापागर्भित स्तवन	२०६
१९२	सभवशरण विचारगर्भित स्तवन	२१०
१९३	सुण२ सेत्रुंजगिरिस्वामी ॥ ऊपन्नदेव स्त०	२१२
१९४	पान्जिनेसर जगतिलो ॥ दशमीका पार्श्वस्त०	२१३
१९५	मंगल कमला कंद ए ॥ अजित शांति स्त०	२१५
१९६	मुहपत्ती पन्निदेहण स्तवन	२१८
१९७	आलोयण दंरु स्तवन	२१९
१९८	नंदीश्वर ज्ञान जिनालय स्तवन	२२२
१९९	अटार्श्वीप वीस विहरमान स्तवन	२२३
२००	जात्रीनाज्ञाज्ञ आरूजीनी जात्रा करज्यो	२२७
२०१	सकल शाश्वता चैत्य नमस्कार स्तवन	२२८
२०२	ज्विजन पूजो रे शीतल जिनपती ॥ स्तवन	२३०
२०३	म्हारे धरमजिनंदमुं लागी पूरण प्रीत जो ॥ धर्म जिन स्तवन	२३१
२०४	राणपुरो रलियामणो ॥ राणपुरा स्तवन	२३२
२०५	समकित द्वार गुंजारे पेसता ॥ दर्शन, आ. स्त.	२३३
२०६	आदिजिनेसर अरज सुणीजै ॥ स्तवन	२३३
२०७	देवचंदजी कृत अजितजिन स्त० ज्ञानादिक गुण	२३४
२०८	बे कर जोमी वीनघूंजी ॥ आलोयण स्तवन ॥ आनदघनजी कृत स्तवन ॥	२३५
२०९	ऊपन्न जिनेसर प्रीतम माहरो	२३७
२१०	पश्चिमो निहालू रे बीजा जिनतणो रे	२३८

२११	शंभुदेव ते धुर सेवो सवे रे	२३९
२१२	अजिनदन जिन दरशन तरसिये	२३९
२१३	सुमति चरण कज आतम अरपणा	२४०
२१४	शीतल जिनपति ललित त्रिजगी	२४०
२१५	मनमो किमही न वाजे हो कुंभ्रु जिन-	२४१
॥ पार्श्वनाथजीके गेटे स्तवन प्रतिक्रमणके ॥		
२१६	श्रीशखेसर पास जिनेस जेठिये	२४२
२१७	मनमोहन माहाराज	२४२
२१८	जयकारी जिनराज	२४३
२१९	वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा	२४३
२२०	अरज सुणीजै अंतरजामी	२४४
२२१	प्यारी पासकी देखी मूरति०	२४४
२२२	श्रीचितामण पासजी	२४४
२२३	जीवन म्हारा तेवीसमा जिनरायरे	२४५
२२४	सुगण सनेही प्रजुजी अरज सुणीज्यो	२४६
२२५	मोरा पास जिनराज	२४६
२२६	जिनजी महिर करीने राज	२४७
२२७	तू मेरे मनमे प्रजु तु मेरे दिलमें	२४७
२२८	मार्ग देशक मोरुनो ॥ दीवाली निर्वाण स्त०	२४८
२२९	सैत्रुज रूपन समोसरघा ॥ तीर्थमाला स्त०	२४८
२३०	आज आपे चालो सहिया ॥ सिद्धाचल स्त०	२४९
२३१	महावीरस्वामीका पारणा	२५०
२३२	पद्मावती जीवरास खमाणा ॥ द्विवराणीपद्मा०	२५२
२३३	वाणी ब्रह्मा वादनी ॥ गोमीजीका वृध्दस्तवन	२५४
२३४	धम्मो मगल मुक्तिठ ॥ मगलीक	२५९

२३५	आत्मरक्षा स्तोत्र	..	२५९
२३६	सुखकारण ऋषियण ॥ नवकार वंद		२६०
२३७	सेवो पास संखेसरो मन सुधै		२६१
२३८	बोर जिनेसर केरो सीस		२६१
२३९	शोल सती वद ॥ आदिनाथ आदिदेई		२६२
२४०	गौतम स्तवन ॥ जय२ मंगल निधान		२६३
२४१	मुनिनेष वर्णन स्तवन		२६४
२४२	जवसे श्रद्धा शुद्ध जई ॥ अरिहंत स्तवनं		२६४
२४३	श्रावककी करणी ॥ श्रावक तुं उठे० ..		२६४
२४४	गौतमस्वामीका रास		२६६
२४५	सेत्रुंज रास ॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी		२७२
२४६	शिखरजीका रास		२८०
२४७	मुनिमालका		२९१
२४८	विघ्नंजिन स्तवन		२९५
	॥ अथ सिंज्ञायसग्रह माला ॥		
२४९	उपदेशमाला पोसह सिंज्ञाय ॥ जगचुमामणीजूज २९७		
२५०	राइ संयारा पोसह सिंज्ञाय ॥ निस्तिही०		३००
२५१	निदावारक सिंज्ञाय		३०१
२५२	शीतासती सिंज्ञाय ॥ जलजलती मीलती०		३०२
२५३	अनाथीरुपि सिंज्ञाय ॥ श्रेणिक रयवामी०		३०३
२५४	प्रतिक्रमण सिंज्ञाय ॥ कर पम्कमणो जावसुं		३०३
२५५	मागलिक सरणा चार		३०४
२५६	ढंढणरुपि सिंज्ञाय		३०५
२५७	श्रीजिन व ॥ धन्ना रुपीसिंज्ञाय		३०६
२५८	देव दाणव, कर्मसिंज्ञाय		३०७



२५९	सात व्यसन सिद्धाय	३०८
२६०	चेलणा सती सिद्धाय	३०९
२६१	वैराग्य सिद्धाय ॥ जूलो मन जमरा काइ जमे	३१०
२६२	बाहूबल सिद्धाय ॥ राजतणा अति लोञ्जीया	३११
२६३	अरणक मुनि सिद्धाय	३११
२६४	इलापूत्र सिद्धाय	३१२
२६५	मेयकुमार सिद्धाय	३१३
२६६	असिझाई निर्णय सिद्धाय	३१४
२६७	बावीसअन्नक सिद्धाय	३१५
२६८	गजसुकमाल सिद्धाय	३१६
२६९	प्रप्सचंड सिद्धाय	३१७
२७०	उतपति सिद्धाय	३१८
२७१	आत्मनिद्या	३२२
२७२	मंदिर जाणेकी उर दर्शन करणेकी विधि	३२७
२७३	चवदे नियम श्रावकके चितारणेकी विधि	३३१
२७४	श्रावकके बारे व्रत उच्चरावण विधि	३३४
२७५	वीसस्थानक लघु स्तवन देववदनमें कइणेका	३३८
२७६	चलोदेखोरी मधुवनको राव ॥ पार्श्वजिन स्त०	३३९
२७७	मेरो मन वस कर लीनो ॥ पार्श्वजिन स्तवन	३३९
२७८	सुणो सुजाण नेमजी ॥ स्तवन	३४०
२७९	नेमजिनदजीसें आखरली ॥ स्तवन	३४०
२८०	आज प्रभु तोरे चरण लागि	३४०
२८१	रात गई अब प्रात होन जयो	३४०
२८२	तुम विन दीनानाश्र दयानेव	३४१
२८३	जाव अर घन्य दिन० सिद्धावल स्तवन	३४१

३३०	महावीरस्वामी जन्मकल्याणक पर्व तीमरा	४५४
३३१	चैत्रीपूनम पर्वाधिकार पर्व ४ देववंदन वि०म०	४५४
३३२	चैत्रीपूनम स्तवन	४५६
३३३	नंदीश्वर तपस्या करण विधि	४५७
३३४	वैशाखमास पर्वाधिकार आखातीज	४५८
३३५	ज्येष्ठ कृष्ण १३ श्रीज्ञाति पर्वाधिकार	४५९
३३६	आषाढमास १४ पर्वाधिकार	४५९
३३७	श्रावणमासमें वृटकर तपस्याधिकार	४६०
३३८	ज्येष्ठमासमें पर्युपण पर्वाधिकार	४६५
३३९	आश्विनमासमें उली पर्वाधिकार	४६७
३४०	कार्तिकमासमें ४ पर्वाधिकार	४६७
३४१	दीपमाला गुणनो करण विधि	४६८
३४२	ग्यानपंचमी पर्वाधिकार	४६९
३४३	ग्यानपचमी देववंदन विधि	४६९
३४४	ग्यानका व्रता चैत्यवदन शुद्धि	४६९
३४५	श्रीप्राचारागसूत्र सिद्धाय	४७१
३४६	श्रीसुयगडागसूत्र सिद्धाय	४७२
३४७	श्रीगणागसूत्र सिद्धाय	४७२
३४८	श्रीसमवायांगसूत्र सिद्धाय	४७३
३४९	श्रीज्ञगवतीसूत्र सिद्धाय	४७४
३५०	श्रीज्ञातासूत्र सि०	४७५
३५१	श्रीनृपाशरुदशासूत्र सि०	४७६
३५२	श्रीअंतगरुदशासूत्र सि०	४७६
३५३	श्रीअणुत्तरोववाइ सूत्र सि०	४७७
३५४	श्रीप्रश्नवाक्यसूत्र सि०	४७७

## ॥ अथ सर्व तपस्या विधि ॥

३०७	सत्तरसयको गुणानो	३९९
३०८	सत्तरनय तप स्तवन	४०३
३०९	कम्मपयनी तप गुणानो	४०५
३१०	कम्मपयनी स्तवन	४०७
३११	नवकार तप स्तवन	४०९
३१२	नवकार तप विधि	४११
३१३	पंच कल्याणक तप स्तवन	४१२
३१४	ऋषिमंजल सुणणेकी पूजणेकी विधि	४१५
३१५	जगवंतके नव अंगपूजन डुहा	४१५
३१६	शिक्षाका डुहा ५	४१६
३१७	नवपदोका नव चैत्यवंदन, नव स्तवन तथा शुई.	४१७
३१८	शस्त्रतवद् चतुर्विंशति जिन स्तुति	४२५
३१९	नवपद वृद्ध स्तवन ॥ सुरमणी शम सहुमंत्र०	४२८
३२०	नवपद स्तवन ॥ तीरथनायक जिनवरू रे	४२९
३२१	नवपद ध्यान धरो रे जविका ॥ स्तवन	४३०
३२२	जीया चतुरसुजाण नव० स्तवन	४३०
३२३	जिन नित नमो नित नमो नमो ॥ स्तवन	४३०
३२४	नितप्रति प्रणामु ॥ नवपद धुई	४३०
३२५	अथ जैती सयुक्त नवपद उली करण विधि	४३१
३२६	अथ तपस्या ग्रहणकरणेकु गुरु पाश जाणेकी वि.	४४८
३२७	उलीकी संक्षेप कजमणा विधि	४४९

॥ अथ द्वादशमास पर्वाधिकार स्वरूप ॥

३२८	प्रथम चैत्रमास पर्वाधिकार प्रथम १ उलीतप	४५०
३२९	अष्टमपद उली करण विधि मन्त्रविविस्त द्वि.२	४५१

३३०	महावीरस्वामी जन्म-द्वयाणक पर्व तीसरा	४५४
३३१	चैत्रीपूजनम पर्वाधिकार पर्व ४ देवचंदन वि०स०	४५४
३३२	चैत्रीपूजनम स्तवन	४५६
३३३	नगेश्वर तपस्या करण विधि	४५७
३३४	वैशाखमास पर्वाधिकार आखातीज	४५८
३३५	ज्येष्ठ कृष्ण १३ श्रीशक्ति पर्वाधिकार	४५९
३३६	आषाढमास १४ पर्वाधिकार	४५९
३३७	श्रावणमासमें वृटकर तपस्याधिकार	४६०
३३८	ज्येष्ठमासमें पर्युपण पर्वाधिकार	४६५
३३९	आश्विनमासमें जुली पर्वाधिकार	४६७
३४०	कार्तिकमासमें ४ पर्वाधिकार	४६७
३४१	दीपमाला गुणनो करण विधि	४६८
३४२	ग्यानपंचमी पर्वाधिकार	४६९
३४३	ग्यानपंचमी देववदन विधि	४६९
३४४	ग्यानका व्रता चैत्यचंदन श्रुति	४६९
३४५	श्रीआचारागसूत्र सिद्धाय	४७१
३४६	श्रीसुयगडागसूत्र सिद्धाय	४७२
३४७	श्रीगणागसूत्र सिद्धाय	४७२
३४८	श्रीसमवायांगसूत्र सिद्धाय	४७३
३४९	श्रीजगवतीसूत्र सिद्धाय	४७४
३५०	श्रीज्ञातासूत्र सि०	४७५
३५१	श्रीनपाशकदशासूत्र सि०	४७६
३५२	श्रीअंतगरुदशासूत्र सि०	४७६
३५३	श्रीवैश्वानरसूत्र सि०	४७७
३५४	श्रीवैश्वानरसूत्र सि०	४७७

३५५	श्रीविपाकसूत्र सि०	४३८
३५६	अग्यारे अग वर्णन सि०	४३९
३५७	मेर रे मन मानी ज्ञान जरी ॥ ज्ञानका स्त०	४७९
३५८	श्रुत अतहि जलो ॥ जिनगमस्तवनं	४८०
३५९	कार्तिक चतुर्मास पर्वाधिकार	४८०
३६०	कार्तिक १५ पर्वाधिकार	४८०
३६१	सिद्धगिरि स्त० ते दिन क्यारे आवस्यै	४८२
३६२	नमो रे नमो सेत्रुंजगिरी ॥ स्तवन ॥	४८२
३६३	अग कुनाहो मोन अतिघणो ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८३
३६४	जात्रा निनाणूं करियै ॥ सिद्धगिरि स्त०	४८४
३६५	जाव धर धन्य दिन० सिद्धगिरि स्त०	४८५
३६६	मार्गशिरमास पर्वाधिकार मौनएकादशी	४८५
३६७	मौन ११ देहमे कट्याणक गुणानो	४८६
३६८	पौषमासे वदि १० पर्वाधिकार	४९०
३६९	माघमासे मेरुत्रयोदशी पर्वाधिकार	४९१
३७०	फाल्गुनमासे पर्वाधिकार	४९२
३७१	ब्रह्महोली जात्रहोली अधिकार	४९२
	॥ होली स्तवन संग्रह ४७ ॥	
३७२	होरी खेलिये नर बहुरन०	४९५
३७३	जय बोलो पाश जिनेशरको	४९६
३७४	मनुवनमें जाय मची होरी	४९६
३७५	यादव मन मेरो हर लियो रे . . .	४९६
३७६	इक सुणले नाथ अरज मोरी	४९६
३७७	सागरो मुखदाई जाकी विष . . .	४९७
३७८	नेना हरखाई आज तेरी सू० . . .	४९७

३७९	एसे फ्रागुण मस्त महीनें चलोरी	४९७
३८०	नेम स्यामसें कहियो मोरी	४९७
३८१	होरी खेखो रे नविक मन थिर करके	४९८
३८२	होरीके खेलइया तूं तो प्रभु०	४९८
३८३	वाके ममताने धूम मचाई	४९८
३८४	समकित विन जीव जगत नटक्यो	४९९
३८५	विसरे मत नाम प्रभुजीको	४९९
३८६	नेम निरंजन ध्यावो र	४९९
३८७	गढ गिरनारकी तलइटी	४९९
३८८	धन राजुल तेरो जागरी	५००
३८९	एमी होरी तो हो रही चंपानगरमें	५००
३९०	बलिहारी हु विमलाचल गिरकी	५००
३९१	एसे प्रभु नेमनाथ मेरे दिल बसिया	५०१
३९२	सत्तव जिन सुखकारी हो लाला	५०१
३९३	सारो सोरठ देश दिखावो रसिया	५०२
३९४	जिनराज जुहारो, क्या वेठे नव हारो रे	५०२
३९५	मनमोहन गजगतकी कामनी	५०३
३९६	रंग लग्यो गुरु ज्ञान	५०३
३९७	चिदानंद खेल फाग	५०३
३९८	होरी खेखो नेमसें धायर	५०४
३९९	मेरी घटकी गागरिया रंगसे नरी	५०४
४००	बावो रूपन वेठे अलवेसर	५०४
४०१	गिरराजकूं चंदना रे	५०४
४०२	दरशन सिखर गिरको	५०५
४०३	सिद्ध करखे	५०५

४०४	मौदे अपणे रंगमें रंगदे .	५०५
४०५	मेरे पारस प्रज्जुकीके रंगमरूपमें	५०५
४०६	रग मज्ज्यो जिनद्वार चालो खेतिये होरी	५०६
४०७	नेमजीसें कह्यो मोरी	५०६
४०८	माहाराजा तोरे मदिरमें वरसे रंग	५०६
४०९	तोरी अगिया वणी दे सुरग	५०६
४१०	चित्तामणि चित्त घ्यावो रे ..	५०६
४११	मत नारो पिचकारी रे	५०६
४१२	नेम मिले तो वाता कीजिये ..	५०७
४१३	आतमतत्व विचारो ज्ञानसें	५०८
४१४	लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी	५०८
४१५	दर्शन विन जीव ससार ज्जम्भ्यो	५०८
४१६	मत गोमो माने यूँही रे कोइ चूक बतावो	५०९
४१७	अटक्यो चित्त हमारो री जिनच०	५०९
४१८	मगल राजै गिरनार	५०९
४१९	मंगलकलश	५१०

### ॥ तपस्याविधि स्तवन संग्रह ॥

४२०	पांच कट्याणक टीप	५१०
४२१	पाच कट्याणक विधि	५१३
४२२	पखवासेको स्तवन	५१४
४२३	पखवासा तप विधि	५१६
४२४	दश पञ्चस्काण स्तवन	५१६
४२५	दश पञ्चस्काण तप विधि	५१९
४२६	वीश स्थानक तप स्तवन	५१९
४२७	वीश स्थानक तप करण विधि	५२१

४२८	वीश स्थानक गुणना उर काउसग्ग प्रमाण	५२७
४२९	वीश स्थानक मरुल पूजन विधि	५२८
४३०	रोहणी तप स्तवन ..	५२९
४३१	रोहणी तप विधि ..	५३०
४३२	उम्मासी तप स्तवन .	५३१
४३३	उम्मासी तप विधि ..	५३२
४३४	वारे मासी तप स्तवन ..	५३३
४३५	वारे मासी तप विधि	५३४
४३६	अर्वांस लब्धि स्तवन .	५३५
४३७	अर्वांस लब्धि तप विधि .	५३६
४३८	चौदे पूर्व स्तवन ..	५३७
४३९	चौदे पूर्व तप विधि .	५३८
४४०	तिलक तप स्तवन .	५३९
४४१	तिलक तप विधि	५४०
४४२	शोलिये तपका स्तवन .	५४१
४४३	शोलिये तपकी विधि	५४२
४४४	पैतालीश आगम तप विधि तथा गुणना	५४३
४४५	पैतालीश आगम स्तवन ..	५४४
४४६	इग्यारै गणधर तप विधि .	५४५
४४७	?? गणधर नाम गुणना	५४६
४४८	सर्व तपस्या गुरु पास ग्रहण करण विधि	५४७
४४९	सर्व तपस्या पारण विधि ..	५४८
४५०	उपधान तप स्तवन ..	५४९
४५१	संघ मालारोपण विधि	५५०
४५२	सधमालाकी ..	५५१
		५५२



२५३	उपधान तप नित्यकर्तव्यता	८५७
२५४	उपधान तप विधि	९९९
२५५	उपधान तप प्रवेश विधि	९६१
२५६	उपधान तप उत्क्षेप विधि	९६७
२५७	वाचना विधि:	९६३
२५८	तप सपूर्ण क्रिया निक्षेप विधि	९६३
४५९	परिपुत्रा विगय तप पारण विधि	९६३
४६०	कामाश्रमणादि प्रज्ञात सध्या परिलेहण विधि	९६४
२६१	उपधान तप विवरण गाथा	५६६
२६२	रूपिमंरुल मरुलपूजा विधि	९६६
२६३	शाक्तिक पूजा विधि.	८६८
२६४	पंचतीर्थी आरती	५७०
२६५	चक्रेश्वरी आरती	९७१
२६६	चोपरु खेलण सिझाय	५७५
२६७	सैत्रुज खेलण सिझाय	५७२
॥ राग रागणी सरस स्तवन संग्रह १०१ ॥		
२६८	दुक निजर महरटी क०	५७७
२६९	लोक चवदके पार किनारे	५७३
२७०	सखी सब बनठन	५७३
२७१	हो जिन तेमें दरशापर०	५७३
२७२	म्हारा रूपज्ज जिनदने ग०	५७३
२७३	मन लीनो हमारो जिन चरणारे	५७४
२७४	अजित२ जिन ध्यान	५७४
४७५	यह अरजी मोरी सहीया	५७४
२७६	मुजरो मानी लीजे हो गो०	५७४

४७३	तुं मेंना प्रजु इण दल वसणावे	...	५७४
४७४	हम जाणत हे तुम तारोगे	.	५७५
४७५	पंथीमा पंथ चलेगो		५७५
४७६	तेवोगमा जिनराज जोमे थारे कोण जुमेगो		५७६
४७७	केसें काज सरे माहाराजविन केसें०	.	५७६
४७८	राजरी बधाई वाजैवै	..	५७६
४७९	मोतनकीमाला जिनगल सोदे	.	५७६
४८०	रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय		५७६
४८१	हे माय वांकनी करमगति जाय न कही		५७६
४८२	म्हाने प्यारो लागेवे जी थारो उपदेश	.	५७६
४८३	मेरो पिया परसंग रमत हे	.. ...	५७७
४८४	वरपित वचन ऊरी०	.. ...	५७७
४८५	या घरीमें रंग०	... .	५७७
४८६	चिहुं नर बदरिया वरसे	.. .	५७७
४८७	मोरवा पपइया बोले		५७८
४८८	समऊ नर जीवण थारो	.	५७८
४८९	मत कर मान गुमान		५७८
४९०	निश दिन जोउं थारी वाटनी०	.	५७८
४९१	आज तो हमारे ज्ञाग्य वीरप्रजु आए हे		५७९
४९२	बावरो रे आज मनवो मेरो		५७९
४९३	रूपज विहारी थारीतो ठवि न्यारी हो		५७९
४९४	सुण मन होनहार न टरे रे		५७९
४९५	सहियोरी मिल चालो प्रजु पूजन काज		५८०
५००	मनवा ि ण गाय रे	.	५८०
५०१	चलो दे षवनको राव		

५०२' राखूं रे हमारा घटमें	५००
५०३ तेरे दरशको चाह लग्यो	५००
५०४ धारे मुखमारी हो वारी राज	५०१
५०५ एसी विध तेने पाई रे	५०१
५०६ मोहि अपणो कर जाणो प्र०	५०१
५०७ वीर प्रभु तेरी दोस्तीमें	५०१
५०८ ज्ञोर ज्ञयो प्रज जाग वावरे	५०७
५०९ जाग रे सज रैख विहाणी०	५०७
५१० सावरो सखूनो सखी	५०७
५११ आज रूपन्न घर आवै	५०३
५१२ अगण कलप फलधारी	५०३
५१३ ऊठेने मोरा आतमराम	५०३
५१४ ज्ञज मन नाजिनंदन देव	५०३
५१५ आवो नेम रह जावो सदन	५०४
५१६ कीरतीवाग मन प्रेम लाग	५०४
५१७ अधम जग काम ज्ञये अगीवान	५०४
५१८ प्रभु तेरी सूरतिया लागे ज्ञवी	५०५
५१९ आवो सही प्रब जाउं कहा	५०५
५२० घमोर पलर विनश निशदिन	५०५
५२१ सुमत्तानें क्या कर मारा रे	५०६
५२२ तुम तो ज्ञले विराजो जी ॥ शिखर गिरि स्त०	५०६
५२३ शिखर गिरिइ जुहारो ॥	५०६
५२४ सावरिया में दीठो दरश तिहारो "	५०७
५०५ त्रिभुवन नायक वीरजी ॥ पावापुरी स्तवन	५०७
५२६ निरख हीया हरख जरे ॥ चपापुरी स्तवन	५०८

५२७	मैं मुव देखयो गोमीपारसको	...	५८३
५२८	किरपा करो रे गोमीपाश जिनेसर	.	५८६
५२९	मुजरा साहिव मुजरा साहिव .	.	५८६
५३०	घट वाजै घनननन	..	५९०
५३१	निरंजन सांझ्यां रे	.	५९०
५३२	एसे सहर विच कोनसा दिवान हे	.	५९०
५३३	आय रहो दिलबागमें ..	.	५९०
५३४	रहोर रे यादव दो धनिया ..	.	५९०
५३५	विराजो बंगलामें ...	.	५९१
५३६	फिण देखा हमारा स्वामी	.	५९१
५३७	अवधू सो जोगी गुरु मेरा ..	.	५९१
५३८	अवधू एसो ज्ञान विचारी ..	.	५९१
५३९	इंसा तू मानसरोवर वासी .	...	५९२
५४०	वेरश नही आवै अवसर० .	.	५९२
५४१	ये जिनजोके पाये लाग रे	.	५९३
५४२	चित्तमें धरो रे प्यारे चित्तमें धरो	.	५९३
५४३	अवधू निरपक विरला कोई	.	५९३
५४४	चलया जरूर जाकु ताकुं केसा सोचणा	.	५९३
५४५	समज परी मोहे समज परी	.	५९४
५४६	जलाजी मेरो नेम चढयो गिरनार	.	५९४
५४७	रमना सफल जई मेंतो गुण० .	.	५९४
५४८	राजुन पुकारे नेम पिवा .	.	५९४
५४९	कोन किलीको मित	.	५९५
५५०	आदीसर जिनराज	.	५९५
५	गोमी गाईये मन रंग	.	५९५

५५२	हारे हूं तो मोह्यो रे लाल	५९५
५५३	प्रभुजी से लागो मारो नेह	५९६
५५४	खतरा दूर करणा ..	५९६
५५५	रे जीव जिनधर्म कीजीये	५९६
५५६	सोइर सारी रैन गमाई	५९७
५५७	चदा प्रभुजीसे ध्यान रे	५९७
५५८	ते शिवपुर गये रहे रे	५९७
५५९	म्हारे जले रे ऊगो वै दामो आजनो रे	५९७
५६०	धन२ ते दिवाली मारे आजनी रे	५९७
५६१	धन३ आजनो दिन रलियामणो रे	५९८
५६२	म्हारे आज आनंद वधामणा रे	५९८
५६३	सवालाख टकानी जाय एक घन्टी	५९७
५६४	आवोरने प्यारा नेम अस घर	५९९
५६५	मनमोहन पारस प्यारारे	६००
५६६	मेरे मन जावनकी ठवि नीकीजी	६००
५६७	सादिव सुगुण सुपारससे-	६००
५६८	सावरिया पासजी सुख दीजे	६००
५६९	तुम जजो रूपन प्रभु प्यारा जग०	६०१
॥ अश्र लावण्या संग्रह ३४ घन १० ॥		
५७०	अगरुदूर वजै चौधना	६०७
५७१	आखातीजकी लावणी	६०४
५७२	दीवालीकी लावणी	६०५
५७३	सीमधरजिन लावणी	६०६
५७४	अजीमगजमें सावलियाजीकी लावणी	६०७
५७५	नेमनाश्र मेरी अरज सुणीजे	६०८

५७६	तुम जपो मंत्र नवकार ॥ जिनदाशादि कृतधन	६०९
५७७	चख चेतन अब नठकर०	६१०
५७८	तुम जजो जिनेसर देव	६११
५७९	तुं कुमति कलेसण नार जगी क्युं केमे	६१२
५८०	तुम तजो जगतका खयाल	६१३
५८१	दे गया दगा दिलदार ॥ नेमजीकी लावणी	६१४
५८२	मुलक बीच मगसो पारसका	६१५
५८३	सुकुतकी बात तेरे हाथ, रती ना रही रे	६१६
५८४	तुम तज कर राजुल नार	६१७
५८५	आप समजका घर नहीं पाया	६१८
५८६	नमु२ में गुरु नियंत्रकूं	६१९
५८७	करू२ में ऐसे सदगुरु	६२०
५८८	तजू२ मे उन कुगुरुकूं	६२१
५८९	यो जिनदाश जूगे रे जूगे	६२२
५९०	जब तन दोस्ती हे इह मस्ती	६२३
५९१	अरज हमारी सुणो दीनपति	६२४
५९२	मुक्ति जाणेकी मिंगरी	६२५
५९३	अनुभव पद मिंगरी	६२६
५९४	नेमकी जान वणी ज्ञारी	६२७
५९५	नेमनाथजीका चोमासा ॥ ठाई घटा ग०	६२८
५९६	सुमति कुमतिका विवादरूप लावणी	६२९
५९७	सऊ शोखे सिणगार हुई हुसियार	६३०
६९८	चंदावदनी मुखसें कहती गिरनारीकुं०	६३१
६९९	कोइ देख्या रे हो सावजिया साहिव	६३२
६००	सुणजो व राव सदाशिव	६३३

६०१	केशरीयानाथजीकी माहात्मकी लावणी	६२९
६०२	पार्श्वप्रभु आरती लावणी	६३४
६०३	आदि जिनेस कीयो पारणो	६३६
६०४	अजितनाथजीकी लावणी	६३७
६०५	पिया मेरा गिरनार सिधाए ॥ ने० ला०	६३६
६०६	दीवाली स्तवन ॥ धन२ मंगल एह सकलदिन	६३७
६०७	मारे दीवाली थई आज प्रभु मुख जोवाने	६३७
६०८	पोटोश जी रूपन विहारी	६३८
६०९	कीजे मंगल च्यार आज घरण	६३८
६१०	सिद्धाचल गिर जेटो रे जविजन	६३८
६११	जगतमें नवपद जयकारी ॥ लावणी	६३९
६१२	ध्यान धरो नवपदका चेतन	६४०
६१३	चलो सखी जिन मंदिरमें जग नवपद	६४०
६१४	सांवरो लागे प्यारो प्रभु मनमोहनगारो ॥ होरी	६४१
६१५	आज सुरंग धन वरसत होरी	६४२
	॥ अथ वारे मासा ॥	
६१६	मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें	६४७
६१७	नेमनाथजीका वारेमासा	६४४
	॥ स्तोत्र टुटकर संस्कृतबध ८ ॥	
६१८	सकल मंगल केलि० शीतल० स्तोत्र	६४६
६१९	विशद गुण विचित्रं० पार्श्व० स्तोत्र	६४६
६२०	यस्य ज्ञान दया० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र ..	६४७
६२१	लक्ष्मी निदानं० पार्श्व० स्तोत्र	६४७
६२२	गोपीग्रामे० शंखेश्वरपार्श्व स्तोत्र	६४८
६२३	विशदसद्गुण० पार्श्व स्तोत्र	६४८

६२४	श्रीमत्पार्श्वजिनेश्व० पार्श्व स्तोत्र	६४९
६२५	आद्य श्रीरूपज्ञ० चतुर्विंश० स्तोत्र	६४९
६२६	मंगलाष्टक स्तोत्र . . . . .	६५०
६२७	परमात्मा स्तोत्र . . . . .	६५१
६२८	नमस्कार स्तोत्र '... ..	६५१

॥ अथ तपगच्छ सामाचारी ॥

६२९	पुण्य प्रकाश आलोचन स्तवन	६५२
६३०	जरहेसरनी सिद्धाय	६५९
६३१	मन्हजिणाणं सिद्धाय	६६०
६३२	सकल तीर्थ वंदना .. . . .	६६०
६३३	सकलार्हत्स्तोत्र . . . . .	६६१
६३४	शातिकर स्तोत्र . . . . .	६६३
६३५	सीमंधर चैत्यवंदन ॥ सीमंधर परमात्मा	६६४
६३६	श्रीसीमंधर जग धणी . . . . .	६६५
६३७	सिद्धगिरी चैत्यवंदन ॥ विमल केवल० .	६६६
६३८	श्रीशत्रुंजय सिद्धक्षेत्र	६६६
६३९	परमात्मा चैत्यवंदन० परमेश्वर परमात्मा	६६६
६४०	सुणो चंदाजी सीमं० सीमंधर स्तवन	६६६
६४१	आखर्नाथि में आज० सेत्रुजा स्तवन . . . . .	६६७
६४२	विमलाचल नित वंदिये ॥ स्तवन . . . . .	६६७
६४३	पंचतीर्थ संस्कृतवच स्तवन	६६८
६४४	नेम राजुल सिद्धाय ॥ पित्रजी२ नाम	६६८
६४५	आऊखो तूटाने साधो० सिद्धाय . . . . .	६६९
६४६	आदि देव अरिहंत नमूं ॥ पंचती० चैत्यवं०	६७०
६४७	उविध धर्म जिन उ० दूज चैत्यवदन . . . . .	६७०



६४८	त्रिगुणे वैठा वीर जिन ॥ ग्यानपचमी चैत्यवं०	६७०
६४९	महा सुदि आठमने० अष्टमी चैत्यवदन	६७१
६५०	शाशन नायक वीरजी० इग्यारश चैत्यवदन	६७७
६५१	सीमधर जिनवर स्तुति०	६७२
६५२	श्रीसीमधर देव सुहकर- ॥ श्रौय	६७२
६५३	दिन सकल मनोहर ॥ वीजनी श्रौय	६७३
६५४	श्रावण सुदि दिन पचमी ए ॥ पाचमनी श्रौय	६७३
६५५	मंगल आठ करी० आठमनी श्रौय	६७४
६५६	एकादशी अति रूवनी ॥ इग्यारश श्रौय	६७५
६५७	स्नातस्या प्रति० चवदशनी श्रौय	६७५
६५८	कल्याणकंदनी श्रौय	६७६
६५९	श्रीशत्रुजय गिरि तीरथ० श्रौय	६७६
६६०	महाविदेह क्षेत्रे सीमंधर स्वामी ॥ श्रौय	६७७
६६१	पंचेदिय संवरणो	६७७
६६२	सामाश्यवयजुतो ॥ सामायक पारवागाथा	६७८
६६३	सागरचढो ॥ पोसह पारवा गाथा	६७८
६६४	जगचितामणि चैत्यवदन,	६७८
६६५	अतीचारनी ८ गाथा	६७९
६६६	विशाललोचन स्तुति	६७९
६६७	सुयदेवया जगवई ॥ स्तुति	६८०
६६८	जीसे खिचे साहू ॥ क्षेत्रदे० स्तुति	६८०
६६९	सामायक लेवा विधि	६८०
६७०	सामायक पारवा विधि	६८१
६७१	द्वैशिक प्रतिक्रमण विधि	६८१
६७२	राई प्रतिक्रमण विधि	६८३

६७३	पस्की प्रतिक्रमण विधि .. ...	६८५
६७४	चञ्जमाशी प्रतिक्रमण विधि ...	६८७
६७५	संवत्सरी प्रतिक्रमण विधि .	६८७
६७६	पम्बिलेदण करवानी विधि ... .	६८७
६७७	पञ्चस्काण पारवानी विधि .. ..	६८८
६७८	पुरकलवइ विजयें जयो ॥ श्रीमंधर स्तवन	६८८
६७९	बीज तिथीनो स्तवन वनो ॥ प्रणमी शार०	६८९
६८०	पंघमी वृद्ध स्तवन ॥ सुत सिद्धारथ०	६९०
६८१	आठमनुं वृद्ध स्तवन ॥ मारे गम ध० .	६९६
६८२	एकादशी वृद्ध स्तवन ॥ जगपतिनायक०	६९८
६८३	माहाबोरस्वामीनु हालरियुं .	७०१
६८४	निदा म करज्यो कोईनी० सिझाय ...	७०३
६८५	देववादवानो विधि .	७०४
६८६	ज्ञानविमलजी कृत चञ्जमाशी देववंदन	७०४
	आदिनाथ चै० शोय स्तवन .	७०४
	अजितनाथ चैत्यवदन, शोय	७०५
	सन्नवनाथ, अजिनदन चैत्यवंदन शोय	७०६
	सुनतिनाथ, पद्मप्रज्ञ, सुपार्श्वनाथ चै० शोय	७०७
	चन्द्रप्रज्ञ, सुविधिनाथ, सितलनाथ चै० शो०	७०८
	श्रीश्रेयास, वासुपूज्य, विमलनाथ चै० शो०	७०९
	धर्मनाथ, शातिनाथ चै० शोय स्तवन	७१०
	कुशुनाथ, अरनाथ, मद्धिनाथ चै० शोय	७११
	मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ चै० शोय	७१३
	पार्श्वनाथ चैत्यवदन शोय स्तवन,	७१४
	स्वामी चैत्यवदन शोय	७१६

शाश्वता अशाश्वताजिन चैत्यवदन श्रौय	७१७
नीलक्री रायण तरु तले ॥ सिध्वाचल स्तवन	७२०
नेम निरजन देव के ॥ गिरनार स्तवन	७२०
आवो आवोने राज अर्घुदगिरी स्तवन	७२२
अष्टापदगिरी जात्रा करणकु ॥ अष्टा० स्तवन	७२२
समेतशिखरगिरी जेटीये रे ॥ शि० गि० स्त०	७२३
६८४ सत्तरजेदी जिन पू० पर्यूपण श्रौय	७२४
६८८ नेमनाथजी बारेमाशो ॥ शीयाले खाटू०	७२४
६८९ अपठरा करती आरती जिन आगे	७२६
६९० पहली तो समरुं हो० नेम राजेमती सिझाय	७०६
६९१ गोतमस्वामी पूठा करी ॥ मुक्ति वर्णन सिझाय	७२८
६९२ नेमनाथजीरो सिलोको	७२९
॥ अथ चोढालीया संग्रह ॥	
६९३ विजयसेठ विलयासेठानी चोढा०	७३१
६९४ इगुकार राजा जूगु प्रोहितरो चो०	७३३
६९५ दान शील तप ज्ञाव चाढालीयो	७३६
॥ अथ ठद संग्रह ॥	
६९६ सेवो वीरनें चित्तमा नित्य धारो०	७४३
६९७ नवकार ठंद ॥ वंठित पूरे विविधार०	७४५
६९८ घघरनीसाणी ॥ सुख संपति०	७४७
॥ दादा गुरुदेव स्तवन संग्रह ॥	
६९९ विलशै रुद्रि समृद्धि०	७५१
७०० वर लाठ विलाश० श्रीजिनदत्त०	७५२
७०१ रिसह जिनेसर० कुशलसूरि०	७५३
७०२ आयो सहु श्रीसघ	७५४

७०३	सदगुरुजी श्रे सांजलो	...	..	७५५
७०४	दादा चिरजीवो	..	...	७५६
७०५	गाजै जिनकुशल गमालै	..	..	७५६
७०६	सदाइ मेरे श्रीजिनकुशल गुरु	...	...	७५७
७०७	आयोश् जी समरंता दादो०	.	...	७५७
७०८	जाया जकिसूं पूर रहो रे	...	...	७५८
७०९	पूजो जवि हितसुं कुशल सूरिंद	.	.	७५८
७१०	आज करो रे उगाह श्रीजिनकुशल	...	...	७५८
७११	में निरख्या गुरु महाराज	..	..	७५९
७१२	चरणकी चरणकी वारीजा०	.	..	७५९
७१३	अब मोहि दरशाण दीजै कु०...	...	...	७६०
७१४	कुशल गुरु कुशल करो नरपूर	...	...	७६०
७१५	सदगुरु पूजण जावस्यां	...	.	७६०
७१६	श्रीसदगुरुजीसैं वीनती रे	...	...	७६१
७१७	सदगुरु दीनदयाल	...	...	७६१
७१८	सुगुरु मेरी बेनिया पार०	..	..	७६२
७१९	देख्या में दरश तिहारा	..	..	७६३
७२०	सदा सदाई कुशल सूरिंद०	.	.	७६३
७२१	जिनकुशल सूरिंद गुरु सदा नमो	.	.	७६४
७२२	उत्रपती थारे पाय नमें जी	...	...	७६४
७२३	सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी .	...	...	७६४
७२४	सदगुरुके चरण चित लाय२ .	...	...	७६५
७२५	होरी खेलो जविक सदगुरुके संग			७६५
७२६	गुरु पूज रचो रे सुज्ञानी	.	.	७६५
७२७	सदगुरुजीके द्वार मची होरी	..	.	७६६

७२८	कैसें अवसरमें गुरु रक्की लाजं	७६६
७२९	श्रीजिनकुशल सूरीतर साहिव	७६६
७३०	श्रीगणधर गुरु कुशल सूरिवके	७६६
७३१	कुशल गुरु देखके दरशाण	७६७
७३२	कुशल गुरु दरशन दीजे हो	७६७
७३३	पूजो जजो रे ज्ञाई	७६७
७३४	हूंतो अरज करु करजोमने	७६७
७३५	सागानेर विराजै	७६८
७३६	सदगुरुजी म्हारा लोवणी	७६८
७३७	मोरी सखी सहैदिया लोवणी	७६९
७३८	कामित कामगवी ॥ श्रीजिनचंद ० स्तवन	७७०
७३९	श्रीसोनाग्य सूरी स्तवन	७७०

॥ देशना वधावा संग्रह ॥

७४०	वीरजी दिये छे देशना रे	७७१
७४१	गुणनिधि श्रीजिनचंद मुणिया	७७१
७४२	श्रीजिनचंद सूरीसरु	७७२
७४३	एहवा सदगुरु वादिये	७७३
७४४	सुखकर स्वामी श्रीतीर्थकर रे	७७३
७४५	मोतीयने मेह वरसीयो	७७५
७४६	जिनशासन जयकारी ॥ गुहली	७७५
७४७	सुणिये सदगुरु देशना ए सहिया ॥ गुहली	७७६
७४८	सुगुरु म्हारा ज्याजनी पर तारो	७७७
७४९	वृद्धत् खरतर गद्य सुद्ध सिद्धत सामाचारी	७७८

॥ श्रीजिनाय नमः ॥ श्रीसद्गुरुभ्यो नमः ॥

## ॥ रत्नसमुच्चय ॥



### ॥ मंगलाचरण ॥



उँकारं विदुसंयुक्तं । नित्यं ध्यायन्ति योगिनः ॥

कामदं मोक्षदं चैव । ँकाराय नमोनमः ॥ १ ॥

### ॥ कवित ॥

उँकार उदार अगम्भ अपार । संसारमें सार पदारथनांमी ॥

सिद्धि समृद्धि सरूप अनूप । भयो सबही सिर नूप सुधामी ॥

मंत्रमें यंत्रमें ग्रंथके पंथमें । जाकुं कियो धुर अतरजांमी ॥

पंचही इष्ट वसे परमेष्ट । सदा भ्रमसी करे ताहि सलामी ॥ १ ॥

नमो निसदिस नमायके सोस । जपो जगदीश सही सुखदाता ॥

जाकी जगतमें कीरति जागत । भागतहे सब ईत असाता ॥

इंद्र नरिंद दिण्णिंद फुण्णिंद । नमाएहें वृंद आनंद विधाता ॥

धोरी धरम्मको धीर धराधर । ध्यान धरे भ्रमसी गुण ध्याता ॥२॥

### ॥ अथ गुरुमहिमा नमस्कार ॥

महिमा जिणकी महिमें १ । जिनदीनो महा इक ग्यान नगीनो ॥

दूर भग्यो भ्रम सो तम देखत । पूर जग्यो परकास नगीनो ॥

देतहि देतहि दूनो वधै । अरु खायोहि खूटत नाहि खजीनो ॥

एसो पसाय कियो गुरुराय । तिणें भ्रमसो पदपकज लीनो ॥३॥

अज्ञानतिमिरान्धानां । ज्ञानाअनशलाकया ॥

नेत्रमुन्मीलित येन । तस्मै श्रीगुरुवे नमः ॥ १ ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नम ॥ श्रीसारदायै नम ॥  
 सरस्वती महाभागे । वर दे कामरूपिणी ॥  
 विश्वरूपी विसालक्षी । दे विद्या परमेश्वरी ॥ १ ॥  
 सरस्वती मया दृष्टा । वीणा पुस्तक धारिणी ॥  
 हस वाहन संयुक्ता । विद्या दान वरप्रदा ॥ २ ॥

॥ दीर्घाक्षरं सरस्वती नमस्कार ॥

सिद्धारूपी साची देवा सारे जीकी नीकी सेवा ।  
 रागे आए लागे पाए जागे मोटी भाईहे ॥  
 चगी रगी वीणा वागे रागे सारे रागे गावे ।  
 हावे भावे सोभा पावे ग्याता जाकू गाईहे ॥  
 हसी केली चाली चाले पूजी वंदी पीडा टाले ।  
 लीलासेती लाले पाले सुद्धी बुद्धी दाईहे ॥  
 सोहे वानी नीकी वानी जाकुं ग्यानी प्राणी जाणी ।  
 एसी माता शाता दानी धर्मसीहें घ्याईहे ॥ १ ॥

॥ स्वर वर्ण ॥

अ आ इ इ उ ऊ ऋ ॠ नृ नृ ए ऐ ठ औ अं अः

॥ व्यजन वर्ण ॥

क ख ग घ ङ । च छ ज झ ञ । ट ठ ढ ण । त थ द  
 ध न । प फ ब भ म । य र ल व । श ष स ह । क । इ ॥ क  
 का कि की कु कू के कै को कौ क क ॥ कृ गृ तृ दृ ष्टृ जृ वृ मृ गृ  
 सृ ह्र ॥ क्य ख्य ग्य घ्य ज्य व्य व्य व्य व्य एय त्य द्य ध्य  
 न्य प्य ज्य म्य व्य व्य श्य प्य स्य ह्य क्ष्य ॥ क्र ग्र ब्र ज्व त्र प्र घ्र  
 ष्र ब्र श्र स्र ह्र ॥ क्ग्व एव त्व द्व न्व म्व स्त्व श्व ष्व स्व ॥ क्र श घ्र  
 त्र प्र ष्र श्र ष्ण ल क्षण ॥ कम गम धम चम एम झ नम दम पम स्म  
 ह्र दम । कर् खर् गर् धर् ॥ क्क र्क ग्ग ख्ख ड् । च्छ छ् छ् छ् छ्





कोऽर्थे पुत्रेण जातेन । यो न विद्वान् न ज्ञेयमान् ॥ १० ॥

उपदेशो हि मूर्खाणा । प्रकोपय न शातये ॥

पय पानञ्जगाना । केवलं विपवर्द्धनं ॥ ११ ॥

मातृवत्परदाराश्च । परद्रव्याणि लोष्टवत् ॥

श्रात्मवत्सर्वज्ञूतानि । विकृते धर्मबुद्धयः ॥ १२ ॥

॥ अथ सन्धिसूत्र ॥

॥ सिद्धोवर्णं समान्नायं तत्र चतुर्दशादौस्वरा दशसमाना-  
तेपाद्वाद्वावन्योऽन्यस्यसवर्णो पूर्वोह्रस्व परोदीर्घः स्वरोवर्णः वर्जो-  
नामी एकारादीनिसंध्यकराणि कादीनिव्यजनानि तेवर्गापचपच  
वर्गणाप्रथमद्वितियौ शपसश्चघोपा घोषवंतोऽन्ये अनुनासिका उ-  
न्नयनमा अनतरथा यरलवा उष्माण शपसहाः अ इतिवितर्ज-  
नीय क इतिजिह्वामूलीयः प इत्युपम्मानीय अ इत्यनुस्वार पूर्व-  
परयोरर्थोपलक्ष्यौपढम् अस्वरव्यजन परंवर्णनयेत् अनतिक्रमयन्  
विश्लेषयेत् लोकोपचारात्प्रदणसिद्धि इतिसंधोसूत्रतः प्रथमश्चरणा-  
समाप्त ॥

॥ हितोपदेशः ॥

अंहतोभगवतश्द्रमहिता । सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता ॥

आचार्या जिनशासनोन्नतिकरा । पूज्या उपाध्यायका ॥

श्रीसिद्धातसुपाठका मुनिवरा । स्तत्रयाराधका ॥

पचैते परमेष्ठिन प्रतिदिनं । कुर्वतु वो मगल ॥ १ ॥

अर्थ—(एते पंचपरमेष्ठिन प्रतिदिनं व युष्माकं मंगलं कुर्वतु)

यद्दजो पचपरमेष्ठिपदहे सो ह्येसा तुमञ्जव्यजीवोऽहू मगलकरो के-  
सेकहे पंचपरमेष्ठि (अहंतोभगवतश्द्रमहिता) प्रथम परमेष्ठि श्री  
अरिहंतदेव श्रावकर्मरूप अंतरंगवैरियोको ह्ये सो अरिहत कहीजे  
फेर श्री अरिहंत केसेहे, केवलज्ञान केवलदर्शन संयुक्तहे फेर अरि-  
हंतमाहाराज केसेहे जगवंतहे जगशब्दके अनेकार्थ कोपमें चौदे

अर्थदे ॥ सूर्य १ ज्ञान ७ महात्म ३ यश ४ वैराग्य ५ मुक्ति ६  
रूप ७ वीर्य ८ प्रयत्न ९ इच्छा १० श्री लक्ष्मी ११ धर्म १२ ऐश्वर्य  
१३ योनि १४ इन चवदे अर्थमेंसे दो अर्थकूं वर्जकर बाकी १५  
अर्थ अरिदंत जगवंतमेंदे एकतौ सूर्य १ दुसरी योनि २ यह दो  
टाकके फेर श्री अरिदंत जगवंत कैसेरुहें ( इंद्रमहिता ) चोसठ इ-  
द्रोंसे पूजनीक वारेगुणोंसे विराजमानहै सो वारे गुण एसेहें प्रथ-  
मतो अरिदंतमें अद्भुत रूप होताहै रोग उर पत्नीना उर मैलर-  
हित बना खसबोदार सरीर होताहै १ सासोश्वासमें कमलके  
फूल जेसी खसबो होतीहै २ लोही उर मास गठके दुध जेसा  
स्वेत होताहै ३ आहार नीडारकी विधि अदृश्य होतीहै अर्थात् चर्म  
चक्रुवालेको दिखाई नहीं देता ४ यह च्चार अतिशयगुण जन्मसेही  
होताहै उर बाकीके आठगुण केवलज्ञान उत्पन्न जये वाद होताहै अशो-  
कवृक्ष १ जगवानके सरीरसे वारेगुणा ऊचा होताहै जिसकी गाय  
वेठनेसे रोगसोकादिक दूर होताहै १ सुरपुष्पवृष्टिः देवतोके स-  
मूह गोमे पर्वत पंचरंगेफूलोंकी वरसात करे आकाससे गिरते सीधे  
गिरे । वीट नीचा रहे पाखनी ऊपर रहे २ । ( दिव्यध्वनि ) एक  
योजन तक देवता मनुष्य तिर्यच सब जीव अपणी १ ज्ञापामें  
यथावस्थित समझे एसा उनोंको मालम देवेके जगवान हमारी  
बोलीमेंही उपदेश दे रहेहें सोही बात सिद्धातोंमें कदाजीहै ॥  
गाथा ॥ एगाङ्गिराणो मे । सदेहदेहिणंसमंछिता ॥ त्रिदुअणमणु-  
सासंता । अरिहताहुंतिमेसरण १ । ३ ॥ श्वामर ४ जगवानके  
दोनों तरफ इद्र चम्बर ढोलता रहे ४ ॥ आसनञ्च ५ जगवतके वेठ-  
णकूं इंद्रादिक देव रचित फटिकरत्नका सिंहासन रहै ५ ॥ जामंरुलं  
६ जगवानके पिठानी भामंरुल रहे जिसे जव्यजीव जगवानके  
तरफ देखगके जगवंतके च्चारमुख व्यासंदितामें दीखाइदेवे भग-  
वान पूर्वदिशामें मुख - ७ उर तीन दिशामें जगवंतकी प्र-

७ श्रीसुपार्श्वनाथजी	८ श्रीचंद्राप्रभूजी
८ श्रीसुविघनाथजी	१० श्रीशीतलनाथजी
११ श्रीश्रेयासजी	१७ श्रीवासुपूज्यजी
१३ श्रीविमलनाथजी	१४ श्रीअनंतनाथजी
१५ श्रीधर्मनाथजी	१६ श्रीशातिनाथजी
१७ श्रीकुशुनाथजी	१८ श्रीअरनाथजी
१९ श्रीमह्निनाथजी	२० श्रीसुनिसुव्रतस्वामीजी
२१ श्रीनमिनाथजी	२२ श्रीनेमनाथजी
२३ श्रीपार्श्वनाथजी	२४ श्रीमहावीरस्वामीजी

अनागतचोवीसी ॥

१ श्रीपद्मनाभजी	२ श्रीसूरदेवजी
३ श्रीसुपार्श्वजी	४ श्रीश्वयंप्रभूजी
५ श्रीसर्वानुभूतिजी	६ श्रीदेवश्रुतजी
७ श्रीउदयप्रभुजी	८ श्रीपेटालजी
९ श्रीपोट्टिलप्रभूजी	१० श्रीशतकीर्तिदेवजी
११ श्रीसुव्रतनाथजी	१७ श्रीअममनाथजी
१३ श्रीनिष्कपायदेवजी	१४ श्रीनिष्पुलाकदेवजी
१५ श्रीनिर्ममनाथजी	१६ श्रीचित्रगुप्तनाथजी
१७ श्रीसमाधिनाथजी	१८ श्रीसवरनाथजी
१९ श्रीसोवरजी	२० श्रीविजयनाथजी
२२ श्रीमह्निप्रभूजी	२२ श्रीदेवप्रभूजी
२३ श्रीअनन्तप्रभूजी	२४ श्रीभद्रकरजी

॥ वीसविहरमाननामानि ॥

१ श्रीसिमधरजी	२ श्रीयुगमंवरजी
३ श्रीवाहूजी	४ श्रीसुवाहूजी
५ श्रीसुजातजी	६ श्रीस्वयंप्रभूजी

७ श्रीऋषभाननजी	८ श्रीअनन्तवीर्यजी
८ श्रीसूरप्रज्ञुजी	१० श्रीविमलजी
११ श्रीवज्रधरजी	१२ श्रीचंद्राननजी
१२ श्रीचंद्रवाहूजी	१४ श्रीभृजंगजी
१५ श्रीनेमप्रज्ञुजी	१६ श्रीईश्वरजी
१७ श्रीवयरसेनजी	१८ श्रीमहाभद्रजी
१९ श्रीदेवयशजी	२० श्रीअजितवीर्यजी,

॥ च्यारसाश्वतातीर्थकरनाम ॥

१ श्रीऋषभाननजी	२ श्रीचंद्राननजी
३ श्रीदारिदेयजी	४ श्रीवर्धमानजी

एते चत्वारनाम्ना जिना साश्वतैव ज्वन्ति ॥

॥ अथ सोले सतीनाम ॥

१ श्रीब्राह्मीजी	२ चंदनवालाजी
३ श्रीराजीमतीजी	४ श्रीद्रोपदीजी
५ श्रीकौशल्याजी	६ श्रीमृगावतीजी
७ श्रीसुलसाजी	८ श्रीगीताजी
९ श्रीसुभद्राजी	१० श्रीशिवाजी
११ श्रीकुंतीजी	१२ श्रीशीलवतीजी
१३ श्रीद्वंदंतीजी	१४ श्रीपुष्पचूलाजी
१५ श्रीप्रज्ञावतीजी	१६ श्रीपद्मावतीजी

इत्यादि बडी२ सतियोंको त्रिकाल२ वंदना ॥

॥ ॐ परमेश्वरिणे नमः ॥

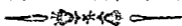
॥ अथवा ॥

॥ श्रीश्रावकस्य विधिसयुक्त देवसिराड् ॥

॥ प्रतिक्रमणादि सूत्रम् ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ प्राभातिक सामायिक विधिप्रारंभः ॥



॥ अथ नवकारमंत्रः ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ एमो  
आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवच्चायाणं ॥ ४ ॥ एमो लोए सव्वसा  
हूणं ॥ ५ ॥ एमो पंच एमकारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥  
७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसि ॥ ८ ॥ पढमं इवंइ मंगलं ॥ ९ ॥  
इति ॥ १ ॥ यह नवकार तीन बेर गुण के थापनाजीकी थापना  
करे, तब तेरे बोल चितवे, सो कहते हैं ॥

॥ अथ थापनाचार्यजीकी तेरे पढिलेहणा ॥

॥ शुद्ध स्वरूप धारु ॥ १ ॥ ज्ञान ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥  
चारित्र ॥ ३ ॥ सहित सदहणा शुद्धि ॥ १ ॥ प्ररूपणा शुद्धि ॥  
२ ॥ दर्शन शुद्धि ॥ ३ ॥ सहित पाच आचार पालुं ॥ १ ॥ प  
लावुं ॥ २ ॥ अनुमोडुं ॥ ३ ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचन गुप्ति ॥  
२ ॥ कायगुप्ति ॥ आदरुं ॥ ३ ॥ एवं तेरे बोल श्रीधर्मरत्नप्रकर-  
णसूत्रवृत्तिमें कहे हैं ॥ इति ॥ २ ॥

॥ पीठें गुरुजीके सामने अथवा थापनाचार्यजीके सामने  
खना हो के तीन खमासमण देवे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ समासमण ॥

इत्थामि खमासमणो वंदितुं जावषिजाए निसीहिआए म  
छएण वदामि ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ सुगुरुने शाता सुखपृष्ठा ॥

॥ इञ्कार जगवन् सुहराइ, सुहृदेवसी, सुख तप शरीर निरा  
 पाथ सुखसयम यात्रा निर्वहोठोजी ? स्वामी शाता ठेजी ? इति ॥  
 । ४ ॥ एम गुरुने कही नमस्कार करे, तेवोरें गुरु कहे दे-  
 वगुरु प्रसाद ॥

॥ पीठै नीचें बैठकें जिमणा हाथ नीचा करकें अष्टुठि  
 उंमि कहे पीठै खमासमण देकें इञ्जाकोरेण संदिस्तह जगवन्  
 सामायिक लेवा मुहपत्ती पन्लिलेहुं ? गुरु कहे, पन्लिलेह. पीठें इञ्  
 कही दूजी खमासमण देई मुहपत्ती पन्लिलेहे ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहणके पच्चीस बोल लिखते हैं ॥

सूत्र, अर्थ साचो सर्वहु ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥  
 मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरुं. यह चार बोल  
 मुहपत्ती खोलती विरीयां कहणां ॥

॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परि  
 हरु ॥ यह सात बोल प्रथम कहीजें ॥

॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥ ३ ॥ आदरुं ॥  
 ॥ कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिदरु ॥ ज्ञान  
 ॥ १ ॥ दर्शन ॥ २ ॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ यह नव पन्लिले-  
 हण भावे हाथे करीयें ॥

॥ ज्ञानविराधना ॥ १ ॥ दर्शनविराधना ॥ २ ॥ चारित्र-  
 विराधना ॥ ३ ॥ परिदरुं ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥ २ ॥  
 कायगुप्ति ॥ ३ ॥ आदरुं ॥ मनोदरु ॥ १ ॥ वचनदरु ॥ २ ॥ काय-  
 दरु ॥ ३ ॥ परिदरुं ॥ यह नव पन्लिलेहण जिमणे हाथसैं करणी  
 ॥ यह पच्चीश बोल मुहपत्तीके जानने ॥

॥ अब अगकी पच्चीश पडिलेहण लिखते हैं ॥

॥ रुष्णलेश्या ॥ १ ॥ नीललेश्या ॥ २ ॥ कापोतलेश्या  
 ॥ ३ ॥ ए तीनु नीलाने मस्तकें परिदरुं ॥

॥ रुद्धिगारव ॥ १ ॥ रसगारव ॥ २ ॥ शाता गारव ॥ ३ ॥

ए तीनुं मुखें परिहरुं ॥

॥ मायाशब्द ॥ १ ॥ नियाणाशब्द ॥ २ ॥ मिच्छादंसण-  
शब्द ॥ ३ ॥ ए तीन हीये परिहरुं ॥

॥ क्रोध ॥ १ ॥ मान ॥ २ ॥ ए दोय जिमणे खंजे परिहरुं ॥

॥ माया ॥ १ ॥ लोभ ॥ २ ॥ ए दोय मावे खंजे परिहरुं ॥

॥ हास्य ॥ १ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥ ३ ॥ ए तीन मावे

हाथे परिहरु ॥

॥ जय ॥ १ ॥ शोक ॥ २ ॥ दुगंठा ॥ ३ ॥ ए तीन

जिमणे हाथे परिहरु ॥

पृथ्वीकाय ॥ १ ॥ अग्निकाय ॥ २ ॥ तेजकाय ॥ ३ ॥ ए

तीन मावे पगे परिहरुं ॥

॥ वाठकाय ॥ १ ॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥

ए तीन जिमणे पगे परिहरुं ॥ इति मुद्दपत्ति परिहरेण संपूर्णा ॥ ५ ॥

॥ पीठे खमा होय के इच्छामि खमासमणका पाठ कहे के

इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ सामायिक सदिस्सावुं ? गुरु कहे

संदिस्सावेह ॥ पीठे इच्छ कहे के फेर खमासमण दे के इच्छा ॥

५ ॥ सामायिक ठाठ ? गुरु कहे ठाण्ह ॥

॥ पीठे इच्छं कही खमासमण देइ थोमो जुकी तीन नव-

कार गणी इच्छाकारेण सदिस्सह जगवन् पत्ताठ करी सामायिक

दंरुक उच्चरावोजी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठे करेमि ज्ञते

सामाश्यं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ॥

॥ अथ सामायिकनु पञ्चख्वाण ॥

॥ करेमि ज्ञते सामाश्यं, सावळं जोगं पञ्चख्वामि ॥ जाव

नियमं पञ्जुयात्तामि ॥ दुविहं ति विहेणं मणेशं वायाए काएण,

न करेमि, न कारवोम, तस्स जते पन्निक्कमामि निंदामि गरिहामि  
अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ पीठै खमासमण दे केँ इच्चाकारेण संदिस्सह जगवन्  
इरियावहियं पन्निक्कमामि ॥ गुरु कहे पन्निक्कमह. पीठैँ इच्चं कही ॥  
इच्चामि पन्निक्कमिउं इरियावहियाएइत्यादि पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्चाकारेण संदिस्सह जगवन् ॥ इरियावहियं पन्निक्कमा  
मि ॥ इच्चं इच्चामि पन्निक्कमिउं ॥ १ ॥ इरियावहियाए विराहणाए  
॥ २ ॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥ पाणाक्कमणे वीयक्कमणे हरियक्कमणे  
॥ उस्ता उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्करु संताणा संकमणे ॥ ४ ॥ जे  
मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥ एणिंदिया वेइंदिया तेइंदिया चउरिदि  
या पंचिदिया ॥ ६ ॥ अन्निहया वत्तिया लेसिया संघाइया संघट्टि  
या परिवाविया ॥ किलामिया उद्विया गणाउ षाणं संकामिया  
जीवियाउ ववरोविया ॥ तस्समिच्चामि उक्कनं ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरीकरणेणं ॥ पायञ्चित्त करणेणं ॥ विसोहीकरणेणं  
॥ विसल्लीकरणेणं ॥ पावाणं कम्माणं ॥ शिग्घाचणणाए ॥ वामि  
काउस्सगं ॥ ८ ॥

॥ अथ अन्नत्य उससिएणं ॥

॥ अन्नन्न उससिएणं नीससिएणं खासिएणं ठीएणं जंजाइएणं  
उम्भुएण वायनिसग्गेणं जमलिए पित्तमुच्चाए ॥ १ ॥ सुद्धुमेहिं अंगतंचा  
क्षेहि ॥ सुद्धुमेहिं खेवसंचालेहिं ॥ सुद्धुमेहिं दिण्ठिसंचालेहिं ॥ २ ॥ एव  
माइएहि आगारेहि ॥ अज्जग्गो अविराहिउ ॥ हुक्क मे काउस्सग्गो  
॥ ३ ॥ जाव अरिहंताण जगवताणं नमुक्कारेण न पारेमि ॥ ४ ॥  
तावकाय गणेषणं मोषेषणं जाणेषणं अप्पाणं वोत्तिरामि ॥ ५ ॥ इ

ति ॥ ए ॥ इहा चार

एक लोगस्सको



उगराणं, सयं संबुद्धाणं ॥ २ ॥ पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरि-  
सवरपुन्नीआण, पुरिसवरगंधहन्नीण ॥ ३ ॥ लोगुत्तमाण, लो-  
नाहाणं, लोगहिआण, लोगपईवाण, लोगपळोअगराण ॥ ४ ॥ अन्न-  
यदयाण, चख्खुदयाणं ॥ मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं  
॥ ५ ॥ धम्मदयाणं, धम्मदेसियाण ॥ धम्मनायगाण, धम्मसा-  
रहीणं, धम्मवरचान्नरतचक्कवट्ठीणं ॥ ६ ॥ अप्पन्निहय वरणाण  
दंसण धराण, विअट्ट उट्टमाण ॥७॥ जिणाणं जावयाण, तिन्नाणं  
तारयाण, बुद्धाण बोहवाण, मुत्ताणं मोअगाण ॥ ८ ॥ सब्बचूणं  
सब्बदरिसिण, सिव मयल मरुअ मपांत मख्खय मद्वावाह मपुणरा-  
वित्ति ॥ सिद्धि गइ नामधेयं ॥ ठाण संपत्ताणं, नमो जिणाणं,  
जिअ जयाणं ॥ ए ॥ जेअ अईया सिद्धा ॥ जेअ जविस्संति  
पागए काले ॥ सपइअवट्टमाणा ॥ सपे तिविहेण वंदामि ॥ १३ ॥

॥ अथ जावति चेइआइ ॥

॥ जावति चेइआइ ॥ उट्टेअ अहेअ तिरिअ लोएअ ॥ सद्वाइ  
ताइ वदे ॥ इहसतो तउ सताइ ॥ १ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ जावत केवि साहू ॥

॥ जगवन् जावंत केवि साहू ॥ जरहेरवय महाविदेहे अ ॥  
सवेसि तेसि पणउ ॥ तिविहेण तिदरु विरयाणं ॥ १ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ परमेष्ठिनमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्तिज्ञाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य ॥

॥ अथ उपसर्गहरस्तवन ॥

॥ उवसग्गहरं पास ॥ पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ विसह-  
रवित्तिन्नासं ॥ मगलकद्धाणआवास ॥ १ ॥ विसहरफुलिगमत्तं  
॥ कठे धारेइ जो सया मणुउ ॥ तस्स गहरेगमारी ॥ डुढ जरा  
जति उवसाम ॥ २ ॥ चिउठ दूरे मंतो ॥ तुअ पणामो वि बहु-  
फू लो होइ ॥ नरतिरिएसुवि जीवा ॥ पावति न डुख्व दोहग्गं ॥

॥३॥ नुह सम्मत्ते लडे ॥ चिंतामणि कप्पपायवपुहिए ॥ पावंति  
अविग्घेणं ॥ जीवा अवरामरं ठाणं ॥ ४ ॥ इअ संश्रुत्तं महायत्त  
॥ जत्तिअरनिअरेण हिअएण ॥ ता देव दिक्क वोहि ॥ जवे जवे  
पासजिणचंद ॥ ५ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ जयवीअराय ॥

॥ जय वीअराय जगगुरु ॥ होत्त ममं तुह पज्जावत्तं जयवं ॥  
जवनिव्वेत्तं मग्गा, एुसारिआ इत्त फलसिद्धी ॥ १ ॥ लोअविअरुद्धत्ता  
त्तं ॥ गुरुजणपूआ परत्तकरुणं च ॥ सुहगुरुजोगोत्तवय, एा सेवणा  
आत्तव मखंत्ता ॥ २ ॥ १७ ॥

॥ इत्यादि जयवीअराय पर्यंत चैत्यवंदन करे ॥ पीठें  
खमासमण दे के इच्छा ॥ १ ॥ रुसुमिणत्तुसुमिण राई पाय  
त्तित्त विसोहणत्तं कात्तस्तग्ग कर्त्तं ? गुरु कहे करेह पीठें इत्तं फह  
कर कुसुमिण दुसुमिण राई पायत्तित्त विसोहणत्तं करेमि कात्त  
स्तग्गं ॥ अत्तत्त उत्तसिएणं ॥ इत्यादि पाठ कहे के सोले नव  
कार अथवा चार लोअस्तका चंदेसु निम्मलयर पर्यंत चिंतन  
कर के कात्तस्तग्ग करे ॥ पीठें एमो अरिहताणं कह कर कात्त  
स्तग्ग पारीके मुखसें एक लोअस्तका पाठ प्रगट कहे, जो रात्तिमें  
गुण संबंधि मोटको दूषण लागो होवे तो कात्तस्तग्गमाहे ॥ सागर  
वरगंज्जीरा ॥ पर्यंत चिंतवे ॥ इति संप्रदाय ॥

॥ अथ पन्निक्कमणा ठायवेका अवसर हुवा ॥ जब खमासम  
ण देइ श्रीआचार्यजी मिश्र कहि के वादिये ॥ १ ॥ खमासमण  
देइ श्रीत्तपाध्यायजी मिश्र कहिके वादिये ॥ २ ॥ खमासमण देइ  
जंगम युगप्रधान वर्त्तमान जट्टारक श्रीपूज्वजीका नाम ले के वा  
दीये ॥ ३ ॥ खमासमण देइ के सर्व साधुजीकु वादिये ॥ ४ ॥ इत्त  
तरे चार खमासमणसें पन्निक्कमणा ठायी गोमालीये बैठ के मस्त  
क नमाय कर दोनु हा ॥ मुहमे दे कर ॥ सव्वस्त

॥ इत्यादि पाठ कहे, परंतु इच्छाकारेणसदिस्तह इच्छं इत्त माफक न कहे ॥

॥ अथ सवस्मवि ॥

॥ सवस्मवि देवसिथ्र डुचिंतिथ्र डुप्रासिय डुच्चिठिथ्र इच्छा कारेण संदिस्तह जगवन् इच्छं ॥ तस्त मिच्छामि डुक्कम् ॥ इति ॥ १८ ॥ सबेरका देवसिके ठिकाने राश्य ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठै नमुत्तुण कह के खमा होय के ॥ करेमि जंते सा माश्यं सावद्य जोग पच्चरकामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठै इ छामि काठस्तग्ग जो मे राइठं ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इच्छामिठामि ॥

॥ इच्छामि ठामि काठस्तग्ग ॥ जो मे देवसिठ अइथारो क ठ ॥ काइठ वाइठ माणसिठ ॥ उस्तुत्तो उम्मग्गो अकप्पो ॥ अक रणिज्जो ॥ डुच्चान्ठ ॥ डुविचितिठ अणाथारो ॥ अणिच्चिअधो ॥ अ सावगपाठग्गो ॥ नाणे तह दसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्ह गुत्तीणं ॥ चउन्ह कसायाणं ॥ पंचन्हमणुधयाण ॥ तिन्हं गु णधयाण ॥ चउन्हं सिरकावयाणं ॥ वारसवियस्त सावगधम्मस्त ॥ जं खंमिअं ज विराहिअ ॥ तस्त मिच्छा मि डुक्कम् ॥ इति ॥ इ हा देवसियके ठिकाने राश्य कहेना ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठै तस्तउत्तरी ० ॥ अन्नन्न उलसिएण कह कर चारित्रगु दि निमित्त चार नवकार अथवा एक लोगस्तका काठस्तग्ग करी पारि के दर्शन गुदि निमित्ते प्रगट लोगस्त कही सबलोए अरिहंत चेइआण ॥ करेमि काठस्तग्ग वंदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते है ॥

॥ अथ वदणवत्तिआए ॥

॥ वदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स म्माण वत्तिआए ॥ वोहिलान्न वत्तिआए ॥ निरुवत्तग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्वाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुपेहाए ॥ वढमाणी  
ए ठामि काउस्तगं ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

पीठें अन्नत्र० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्तका  
काउस्तग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुस्करवरी० ॥  
सुयस्त जगवत्त करेमि काउस्तगं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो  
लिखते है ॥

॥ अथ पुस्करवरी ॥

॥ पुस्करवरीवद्धे, धायइस्तमे अ जंबुदीवेअ ॥ जरदे रवय  
विदेहे, धम्माइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपम्लविद्ध, सणस्त  
सुरगणनरिंदमहिअस्त ॥ सीमाधरस्त वंदे, पफोमिअ मोहजाव  
स्त ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगवणासणस्त, कद्धाण पुख्वलवि  
सावसुदावहस्त ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्त, धम्मस्त सार  
मुवलप करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेत्तो पयत्त णमो जिणमए, नंदी  
सया संजमे ॥ देय नाग सुवन्न किन्नर गण, स्तपूअ जावच्चि ॥  
लोगो जत्त पइठिउ जगमिणं, तेलुक्कमच्चा सुरं ॥ धम्मो वद्धत्त सा  
सत्तं विजयत्त, धम्मत्तरं वद्धत्त ॥ ४ ॥ इति ॥ ११ ॥ सुयस्त ज  
गवत्त करेमि काउस्तगं वंदणवसिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर  
अन्नवूससिएणं कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्तका काउ  
स्तग करे. काउस्तगके माहे आजुया चार प्रहर चिंतवे. सो आ  
गे लिखेंगे. पीठें सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग सु-  
वगयाण, नमो सया सबसिद्धाणं ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं  
देवा पंजली नमं संति ॥ त देव देव महिअं, सिरसा वंदे महावी  
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्त वद्धमाणस्त ॥ सं  
सारसापरत्तं, तारेइ न्तरं न्तरिं वा ॥ ३ ॥ उज्जिन सेव सिद्धे,

॥ इत्यादि पाठ कहे, परंतु इच्छाकारेणसदिस्तह इच्छं इत्त माफक न कहे ॥

॥ अथ सधस्सवि ॥

॥ सधस्सवि देवसिअ उच्चित्तिअ उप्प्रासिय दुच्चिअ इच्छा कारेण सदिस्तह जगवन् इच्छं ॥ तस्त मिच्छामि दुक्कम् ॥ इति ॥ १८ ॥ सवेरका देवसिके ठिकाने राइयं ऐसा पाठ कहे ॥

॥ पीठे नमुत्तुण कह के खना होय के ॥ करेमि जंते सा माइयं सावच्च जोग पच्चरकामि ॥ इत्यादिक पाठ कहे ॥ पीठे इ छामि काउस्सग जो मे राइत्तं ॥ यह पाठ कहे ॥ सो लिखते हैं ॥

॥ अथ इच्छामिगामि ॥

॥ इच्छामि गामि काउस्सगं ॥ जो मे देवसित्त अइयारो क त्तं ॥ काइत्तं वाइत्तं माणसित्तं ॥ उस्सुत्तो उम्मग्गो अरुप्पो ॥ अक रणिको ॥ उच्चात्तं ॥ दुच्चित्तित्तं अणायारो ॥ अणित्तिअवो ॥ अ सावगपात्तग्गो ॥ नाणे तह दसणे चरित्ताचरित्ते ॥ सुए सामाइए ॥ तिन्ह गुत्तीणं ॥ चउन्ह कसायाण ॥ पचन्हमणुवयाणं ॥ तिन्हं गु णवयाण ॥ चउन्ह तिस्कावयाणं ॥ वारसवियस्स सावगधम्मस्स ॥ जं खंमिअं ज विराहिअ ॥ तस्त मिच्छा मि दुक्कम् ॥ इति ॥ इ हा देवसियके ठिकाने राइय कहेना ॥ इति ॥ १९ ॥

॥ पीठे तस्सत्तरी ० ॥ अन्नत्त उत्तसिएणं कह कर चारित्रशु ि निमित्त चार नवकार अथवा एक जोगस्सका काउस्सग करी पारि के दर्शन शुद्धि निमित्ते प्रगट जोगस्स कही सबलोए अरिहंत वेइयाणं ॥ करेमि काउस्सग वदण वत्तिआए ॥ इत्यादि कहना सो लिखते है ॥

॥ अथ वदणवत्तिआए ॥

॥ वंदणवत्तिआए, पूअण वत्तिआए ॥ सक्कार वत्तिआए, स म्माण वत्तिआए ॥ बोहिल्लान्न वत्तिआए ॥ निरुवत्तग्ग वत्तिआए

॥ १ ॥ सद्वाए मेहाए धीईए ॥ धारणाए अणुपेहाए ॥ वद्धमाणी  
ए ठामि कान्तस्तगं ॥ २ ॥ इति ॥ २० ॥

पीठें अन्नत्र० कही चार नवकार अथवा एक लोगस्तका  
कान्तस्तग करके पारके ज्ञानाचार शुद्धि निमित्त पुस्कारवरी० ॥  
सुयस्त जगवत्त करेमि कान्तस्तगं ॥ इत्यादि पाठ कहे, सो  
लिखते है ॥

॥ अथ पुस्कारवरी ॥

॥ पुस्कारवरीवद्धे, धायइसंभे अ जंबुदीवेअ ॥ नरहे रवय  
विदेहे, धम्माइगरे नमंतामि ॥ १ ॥ तमतिमिरपन्तविद्धं, सणस्त  
सुरगणनरिंदमहिअस्त ॥ सीमाधरस्त वंदे, पफ्फोनिअ मोहजाल  
स्त ॥ २ ॥ जाई जरामरण सोगपणासणस्त, कद्धाण पुख्खलवि  
सालसुहावहस्त ॥ को देवदाणव नरिंदगणच्चिअस्त, धम्मस्त सार  
मुवल्लभ करे पमायं ॥ ३ ॥ सिद्धेत्तो पयत्त एमो जिणमए, नंदी  
सया संजमे ॥ देयं नाग सुवन्न किन्नर गण, स्तम्मूअ ज्ञावच्चिए ॥  
लोगो जत्त पइठिंत्त जगमिणां, तेलुक्कमच्चा सुर ॥ धम्मो वद्धत्त सा  
सत्तं विजयत्त, धम्मुत्तरं वद्धत्त ॥ ४ ॥ इति ॥ २१ ॥ सुयस्त ज  
गवत्त करेमि कान्तस्तगं वंदणवत्तिआए० ॥ ए पाठ पूर्ण कह कर  
अन्नबूससिएण कह के आठ नवकार अथवा दो लोगस्तका कान्त  
स्तग करे. कान्तस्तगके माहे आजुणा चार प्रहर चितवे. सो आ  
गे लिखेंगे. पीठै सिद्धाणं बुद्धाणंका पाठ कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाण बुद्धाण, पारगयाणं परंपरगयाणं ॥ लोअग्ग मु-  
वगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाण ॥ १ ॥ जो देवाणवि देवो, जं  
देवा पंजली नमं संति ॥ तं देव देव महिअं, तिरसा वंदे महावी  
रं ॥ २ ॥ इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्त वद्धमाणस्त ॥ सं  
सारसापरत्तं, तारेइ नरं वा ॥ ३ ॥ उज्जिन

दिरका नाणं निसीद्व्या जरस ॥ तं धम्मचक्खवट्ठिं, अरिठ नेमि न  
 मंतामि ॥ ४ ॥ चत्तारि अट्ठ दत्त दो, यवंदिया जिणवरा चउवीसं  
 ॥ परमठ निच्छिअठा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु ॥ ५ ॥ इति ॥१७॥

॥ अथ वेयावच्चगराण ॥

॥ वेयावच्चगराण संतिगराणं ॥ सम्मद्विठि समादिगराणं ॥  
 इति ॥ करेमि काउस्तगं ॥ अन्नउण ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ पीठै संनासा प्रमाज्जन पूर्वक वैठ कें तीसरे आवस्तग सूत्र  
 वादणां निमित्तें मुहपत्ती पन्निहेहुं ? गुरु कहे पन्निहेद् ॥ मुहपत्ती  
 पन्निहेद्दे, पीठै वादणा दे तिनका विधि कहते है ॥

॥ अवग्रहके बाहिर उजा हुआ आधा नीचा नम कर  
 इच्छामि खमासमणो वदिउं जावणिज्जाए निसीद्वियाए अणुजा-  
 णद्द मे मिउग्गद्द इतना पाठ कह कर जूमि प्रमार्जन करता  
 हुआ निसीदि कह कें कठुक अवग्रहमें प्रवेश कर कें संनासा  
 प्रमाज्जन कर कें उक्कम्मे वेठ के नाथे हाथमें मुहपत्ती ले कें नावे  
 कानसें ले कें जिमणा कान पर्यंत निह्त्तारु पूंजी, मुहपत्ती आगे  
 रख कें तिसके मध्य जागमें गुरुचरणकी कटपना कर कें ॥ अहो  
 कायं इत्यादि आवर्त्त कर कें कठुक नीचा नम कर मस्तकें अजलि  
 कर कें गुरु सन्मुख दृष्टि स्थापन कर कें ॥ खमणिज्जो जे किलामो  
 ॥ इत्यादि पाठ कहे, पीठै फेर ॥ जत्ता जे ॥ इत्यादि आवर्त्तन कर  
 कें खमा होके पीठै पगसें जूमि पूंजता हुआ अवग्रहसें बाहिर  
 निकलके स्वस्थान पर आवे उहा आवस्तिपाए ॥ इत्यादि पाठ  
 सर्व कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ सुगुरुवादणां ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वदिउं, जावणिज्जाए [

॥ अणुजाणद्द मे मिउग्गद्द निसीदि ॥ अहो  
 खमणिज्जो जे किलामो ॥ अत्थक्किन्नताणं उह

वश्कंतो जत्ता ज्ञे जवणिङ्गं च ज्ञे, स्वामेमि खमासमणो ॥ देव-  
 निग्र वश्कम्मं आवसिआए, पन्निक्कमामि खमासमणाणं ॥ देव-  
 सिआए, आसायणाए ॥ तिच्चीसन्नयराए जं किंचि मिच्चाए, मण-  
 डुक्कणाए, वयडुक्कणाए कायडुक्कणाए कोहाए, माणाए, मायाए, लो-  
 ज्ञाए, सब्बकालिआए, सब्ब मिच्चोवयाराए, सब्बधम्माडुक्कमणाए ॥  
 आसायणाए जो मे अड्ढारो कत्तं, तस्स खमासमणो पन्निक्कमामि ॥  
 निदामि गरिहामि अप्पाण वोत्तिरामि, ॥ ? ॥ दूजी वारके वादणें  
 आवसिआए ए पद न कहेना, अने राइयें राइत्तं वश्कंतो, तथा  
 चत्तमासीयें चत्तमासीत्तं वश्कंतो, परकीयें परको वश्कंतो, संबच्च-  
 रीयेसंबच्चरीत्तं वश्कंतो ॥ एसीत्तरेपाठकहेना ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ देवसियं आलोउं ॥

॥ इच्चाकारेण सदस्सिद्ध जगवन् देवसियं आलोउं इच्चं ॥ आ-  
 लोएमि, जो मेण ॥ इति ॥ २५ ॥ देवसियके ठिकाने राइयं कहेना ॥

॥ पीठै रात्रि संबंधि अतिचार गुरु समदु आलोवे, सो क-  
 हेते है ॥

॥ अथ आलोयण लिख्यते ॥

॥ आज्ञुणा चार प्रहर दिवसमें जे में जीव विराध्या होय  
 ॥ सात लाख पृथिवीकाय ॥ सात लाख अप्पकाय ॥ सात लाख  
 तेजकाय ॥ सात लाख वाजकाय ॥ दस लाख प्रत्येक वनस्पति-  
 काय ॥ चत्तदे लाख साधारण वनस्पतिकाय ॥ दोय लाख वेइं-  
 द्रिय ॥ दोय लाख तेंद्रिय ॥ दोय लाख चौरिंद्रिय ॥ चार लाख  
 देवता ॥ चार लाख नारकी ॥ चार लाख तिर्धच पंचेंद्रिय ॥ चत्तदे  
 लाख मनुष्य ॥ एवं चार गतिके चौराशी लाख जीवायोनिमें,  
 माहारे जीवें जे कोइ जीव हएयो होय, हणाव्यो होय, हणता  
 प्रत्ये ज्ञो जाणयो होय, ते सबेहुं मन वचन कायार्थे करी मिच्चा  
 मि डुक्कं ॥ इति ॥ २६ ॥



॥ अथ अदारे पापम्यानक आलोउं ॥

॥ प्राणातिपात ॥ १ ॥ मृपावाद ॥ २ ॥ अदत्तादान ॥ ३ ॥  
 मैथुन ॥ ४ ॥ परिग्रह ॥ ५ ॥ क्रोध ॥ ६ ॥ मान ॥ ७ ॥ माया  
 ॥ ८ ॥ लोभ ॥ ९ ॥ राग ॥ १० ॥ द्वेष ॥ ११ ॥ कलह ॥ १२ ॥  
 ॥ अज्ञास्वयान ॥ १३ ॥ पैशुन्य ॥ १४ ॥ रति ॥ अरति ॥ १५ ॥  
 परपरिवाद ॥ १६ ॥ मायामृपावाद ॥ १७ ॥ मिथ्यात्वशब्द  
 ॥ १८ ॥ ए अदारे पापस्त्रानक सेव्या होय, सेवराव्या होय,  
 सेवना प्रत्ये जला जाण्या होय, ते सबे हुं मनें, वचनें, कायार्ये  
 की तस्त मित्रा मि डुकरं ॥

॥ ज्ञान, दर्शन, चरित्र, पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नव  
 करवाली, देव गुरु धर्मकी आशानना करी होय ॥ पन्नरे कर्मादा  
 नोकी आसेवना करी होय ॥ राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, ज्ञत  
 कथा करी होय, और जो कोई पाप पर निंदा कीतुं होय, कराव्यु  
 होय, करता अनुमोद्यु होय सो सर्व मन वचन, कायार्ये करके, दि  
 वत अतिचार आलोयणे कर के पन्किमणामे आलोउ ॥ तस्त  
 मित्रा मि डुकरु ॥ इति आलोयणं ॥ इहा प्रजातके पन्किमणामे  
 दिवसके ठिकाने रात्रिका पाठ कहेना ॥ इति ॥ २८ ॥

॥ पीठें सबस्तवि राश्यं ॥ इत्यादि पाठ कहे. तिहां  
 इच्छाका० ॥ ज० ए पद कहनेसें आलोया हुआ अतिचारका प्रा-  
 यचित्त मागे ॥ गुरु कहे पन्किमह ॥ पीठें इच्छं तस्त मित्रामि  
 डुकरं कह के संमाना प्रमार्जन कर के आसन पर बैठे के जि-  
 मणा गोमा उवा रख के मावा गोमा नीचे कर के ऐसे कहे कि  
 जगवन्! सूत्र जणुं? तव गुरु कहे जणेह ॥ पीठें इच्छं कहि के तीन  
 नवकार श्रु तीन वार करेमि जते ॥ जण के इच्छामि पन्कि  
 मित्रं जो मे गच्छ इत्यादि कह कर ॥ त निदे तव गरिहामि

पर्यंत वंदिता सूत्र कहे. सो लिखते है ॥ पीठें खना हो के अष्टुदि  
उमि आराहणाए इत्यादि संपूर्ण कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रावक वंदितासूत्र ॥

॥ वंदितु सब सिद्धे, धम्मायरिए अ सबसाहू अ ॥ इच्छामि  
पम्किमिउं, सावगधम्माइआरस्त ॥ १ ॥ जो मे वयाइआरो,  
भाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥ सुहुमो अ वायरो वा, तं निदे  
तं च गरिहामि ॥ २ ॥ डुविहे परिग्गहंमि, सावळे बहुविद्धे  
अ आरंजे ॥ कारावणे अ करणे, पम्किमे देवसियं सबं ॥ ३ ॥  
जं वल्लमिदिएहिं, चउहि कसाएहि अप्पसत्तेहि ॥ रागेण व दोसेण  
व, तं निदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥ आगमणे निग्गमणे, ठाणे चं  
कमणे अणाज्जेगे ॥ अज्जिउगे अ निउगे, पम्किमे ॥ ५ ॥ सका  
कंख विगिञ्जा, पसंस तह संश्रवोकुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्त इआरे,  
पम्किमे ॥ ६ ॥ उक्काय समारंजे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा  
॥ अत्तणाय परछा, उज्जयछा चेव तं निदे ॥ ७ ॥ पंचएहमणुव्व-  
याणं, गुणव्वयाण च तिएह मइयारे ॥ सिस्काणं च चउसहं, पम्कि-  
मे ॥ ८ ॥ पढमे अणुव्वयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउं ॥  
आयरिअ मप्पसत्ते, इउ पमायप्पसंगेणं ॥ ९ ॥ वह वंध उविञ्जेए,  
अइ जारे जत्त पाण वुञ्जेए ॥ पढम वयस्त इआरे, पम्किमे ॥  
१० ॥ वीए अणुव्वयमि, परिथुलगअलिअ वयण विरईउं ॥ आया-  
रिअमप्पसत्ते, इउ पमायप्पसंगेणं ॥ ११ ॥ सहसा रहस्त ठारे,  
मोसुवएसे अ कूरुलेहे अ ॥ वीयं वयस्त इआरे, पम्किमे ॥  
१२ ॥ तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउं ॥ आयरिअ  
मप्पसत्ते, इउ पमायप्पसंगेणं ॥ १३ ॥ तेनाहरुप्पउगे, तप्पमिहूवे  
विरुह गमणे अ ॥ कूरुतुल कूरुमाणे, पम्किमे ॥ १४ ॥ चउत्ते  
अणुव्वयंमि, निच्च परदारगमण विरईउं ॥ आयरिअ मप्पसत्ते, इउ  
पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥ अपरिग्गहिआ इत्तर, अरांग वीवाह तिउव्व

अगुरागे ॥ चञ्च वयस्स इप्रारे, पन्किक्कमे० ॥ १६ ॥ इत्तो अणुव्वए  
 पं, चममि आयरिअ मप्पसत्तंमि ॥ परिमाण परिच्छेए, इत्त पमायप्पसं  
 गेण ॥ १७ ॥ धण घन्न खित्त वट्टू, रूप्प सुवत्ते अ कुविअ परि-  
 माणे ॥ दुपए चत्तप्पयंमि, पन्किक्कमे० ॥ १८ ॥ गमणस्स य परि-  
 माणे, दिसासु वट्टु अहेअ तिरियं च ॥ बुद्धिसइअतरद्धा, पढमंमि  
 गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥ मज्झंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ  
 गंधमत्ते अ ॥ उवत्तो ग पग्गिज्जेगे, वोयमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥ सच्चित्ते  
 पन्निवदे ॥ अपोल दुप्पोलिअ च आहारे ॥ तुत्तोसहि ज्ञस्सकणया,  
 पन्किक्कमे० ॥ २१ ॥ इगाली वणसान्नी, ज्ञान्ना फोनी सुवज्जए  
 कम्मं ॥ वाणिज्जं चैव द, त लख रस केस वित्तवित्तय ॥ २२ ॥  
 एव खु जतपिच्चण, कम्मं निच्चवणं च दवदारणं ॥ सरदद्द तलाव  
 सोमं, असई पोसच वज्जिज्जा ॥ २३ ॥ सत्तग्गि मत्तल जंतग, तथा  
 कठे मंत मूल जेसज्जे ॥ दिन्ने दवाविएवा, पन्किक्कमे० ॥ २४ ॥  
 न्हाणू वट्टण वत्तग, विलेवणे सदब्ब रसगघे ॥ वत्तासण आत्तरणे,  
 पन्किक्कमे० ॥ २५ ॥ कदप्पे कुक्कइए, मोहरि अहिगरण जोग अइ-  
 रिन्ने ॥ दम्मि अण्णाए, तइयमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥ तिविहे  
 दुप्पणिहाणे, प्रणवणणे तथा सइ विद्दुणे, ॥ सामाइअ वित्तहकए,  
 पढमे सिस्कावए निंदे ॥ २७ ॥ आणवणे पेसवणे, सदे रूवे अ  
 पुग्गलखेवे ॥ देसावगा सियमि, वीए सिस्कावए निंदे ॥ २८ ॥  
 सथा रुच्चारविही, पमाय तह चैव ज्ञोयणात्तोए ॥ पोसह विद्दि  
 विवरीए, तइए सिस्कावए निंदे ॥ २९ ॥ सच्चित्ते निस्किवणे, पि-  
 हिणे ववएस मच्चरे चैव ॥ कालाइक्कम दाणे, चत्तडे सिस्कावए  
 निंदे ॥ ३० ॥ सुहिए सअ डहिए सुअ, जामे असंजएसु अणुकंपा  
 ॥ रागेणव दोसणव, तंनिंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥ सादूसु  
 सविज्जागो, न कड तव चरण करण जुत्तेसु ॥ सत्ते फासु अ दाणे,

तं निंदे तं च गरिहामि ॥३१॥ इहलोए परलोए, जीविअ मरणे अ  
 आसंत पन्नेगे ॥ पंचविहो अइयारो, मा मच्च हुज्ज मरणते ॥३३॥  
 काएण काइअस्स, पन्निक्कमे वाइअस्स वायाए ॥ मणसा माणसि-  
 अस्स, सव्वस्स वयाइयारस्स ॥ ३४ ॥ वंदणवय तिरकागा,  
 रवेसु सन्ना कसाय दंसेसु ॥ गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइयारो  
 अ त निंदे ॥ ३५ ॥ सम्महिंठ जीवो, जइ विहुपावं समायेरे  
 किंचि ॥ अप्पोसि होइ वंथो, जेण न निदंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥  
 तं पिहुसपन्निक्कमण, सप्परिआवं सन्नत्तरगुणं च ॥ खिप्पं उवसामेइ,  
 चाहिच्च सुत्तिस्किन्नं विज्जो ॥ ३७ ॥ जहा विसं कुछगयं, मंत मल  
 विसारया ॥ विज्जा दणंति मंतेहि, तो तं ह्वइ निद्विसं ॥ ३८ ॥  
 एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलोयंतो अ निंदंतो,  
 खिप्पं इणइ सुत्तावत्तं ॥ ३९ ॥ कय पावोवि मणुस्सो, आलोइअ  
 निंदिय गुरुसगासे ॥ होइ अइरेग लहुत्तं, उहरिअ जरुव जारवहो  
 ॥ ४० ॥ आवस्स एण एएण, सावत्तं जइवि वदुरत्तं होइ ॥  
 डुक्काण मंत किरिअ, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥ आलो-  
 अणा बहुविदा, नयसंजरिआ पन्निक्कमणकाले ॥ मूल गुण उत्तर-  
 गुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥ तस्स धम्मस्स केवलि  
 पन्नत्तस्स ॥ अप्पुच्छिन्मि आरा, इणाए विरत्तमि विराइणाए ॥  
 तिविहेण पन्निक्कतो, वदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥ जावंति  
 चेइयाइं० ॥ ४४ ॥ जावंत केवि सादू० ॥ ४५ ॥ चिर संचिय  
 पाव पणासणीइ, जवसयसइस्स महणाए ॥ चउवीस जिण वि-  
 णिग्गय कदाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥ मम मंगल मरिहंता,  
 सिद्धा साहु सुअ च धम्मो अ ॥ सम्महिंठो देवा, दितु समादि च  
 बोदि च ॥ ४७ ॥ पन्निस्सिद्धाणं करणे, किञ्चाण मकरणे पन्निक्क-  
 मणे ॥ असइहणे अ तहा विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥ खा-  
 मेमि सव्व जीवे, सव्वे मे ॥ मित्तीमे सव्व जूएसु, वेरं

मङ्गल न केणइ ॥ ४ए ॥ एव मह आलोइअ, निंदिअ गरहिअ उगं-  
 विअ सम्मं ॥ तिविहेण पम्कितो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ५०  
 ॥ इति ॥ २ए ॥ इहा प्रजातके पम्किमणमै देवसिके ठीकाने राइयं  
 कइना ॥

॥ पीठें दो वादणा देकर अवग्रहमांदिअकोज कहे ॥ इछा-  
 का० ॥ सं० ॥ ज० ॥ अमुठिंमि अघ्नितर ॥ राइय खामेमि ?  
 गुरु कहे खामेइ ॥ संभासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली वैठ के, बे  
 वाइ पडिलेहि ॥ मुहपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ  
 गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अप्पत्तियं ॥ इत्यादि  
 सपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अमुठिं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्तइ जगवन् अमुठिंमि अघ्नितर देव-  
 सिंभ खामेउं ॥ इछं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं जत्ते  
 पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अतर  
 ज्ञासाए उवरिज्ञासाए ॥ जं किंचि ॥ मङ्गविणाय परिहीण सुहु-  
 मंवा वायर वा ॥ तुप्पे जाणइ अहं न जाणामि ॥ तस्त मिछामि  
 डुक्कं ॥ इति ॥

॥ इहा गुरु पण मिछामि डुक्कं कहे. पीठें बे वांदणा देई  
 जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसैं अवग्रह बाहिर आय कें आय-  
 रिय उवजाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ आयरिय उवजाए ॥

॥ आयरिअ उवजाए, सीसे साइमीए कुलगणे अ ॥ जे  
 मे कया कसाया, सबे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्त समण  
 संघस्त, जगवन् अजलिं करिअ सीसे ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि  
 सबस्त अइयंपि ॥ २ ॥ सबस्त जीवरासिस्त, ज्ञावन् धम्मो निदिअ  
 निअ चित्तो ॥ सब खमावइत्ता खमामि सबस्त अइयंपि ॥ ३ ॥

पीठें करेमि जंतें इच्छामि ठामि कान्तस्सग्गं तस्सुत्तरी० ॥  
श्रीमहावीर स्वामी ठमासि तप चिंतवणा निमित्तं करेमि कान्त-  
स्सग्गं अन्नञ्जू० ॥ कहि कें कान्तस्सग्ग करे, कान्तस्सग्गमें श्रीवीर-  
कृत ठम्मासी तप चिंतवन करे ॥ चौवीश नवकार अथवा ठ  
सोगस्सका कान्तस्सग्ग करे, कान्तस्सग्ग पारिकें प्रगटलोगस्स कहे ॥

॥ ठेठे आवश्यककी मुहपत्ती पन्डिलेहुं ? गुरु कहे पन्डिलेहु  
॥ मुहपत्ती पन्डिलेही बे वादणा देई सकल तीर्थनाम लक्ष नम-  
स्कार करे, सो लिखे हैं.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्वयंभवा वृत्तम् ॥

॥ सद्भक्त्या देवलोके रविशशिञ्जवने, अंतराणां निकाये,  
नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणां विमाने ॥ पाताले पन्न-  
गेंद्रे स्फुटमणिकरणे ध्वस्तसाद्राधकारे, श्रीमन्तीर्थकराणां प्रतिदि-  
वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे  
कुमुले हस्तिदंते, वस्कारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैषधे नीलवंते ॥  
शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ७ ॥  
श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्बुदे पावके वा, सम्मेते तारके  
वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमल-  
गिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेढपाटे क्षि-  
तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे  
धिराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च ज्योटे ॥ श्री०  
॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयनि निषधे मेखले पिष्टले वा,  
नेपाले नाहले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले  
कोशले वा धिगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥  
अंगे वगे कर्लिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलंगे, गौमे चौमे मुरंमे  
वरतरद्रविमे उद्रियाणे च पौमे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविरुकवलये

मङ्गलं न केणइ ॥ ४ए ॥ एव मह आलोइअ, निदिअ गरहिअ डुगं  
 ठिअ सम्मं ॥ तिविहेण पक्कतो, वंदामि जिणे चउवीस ॥ ५०  
 ॥ इति ॥ २ए ॥ इहा प्रजातके पक्कमणमें देवसिके ठीकाने राइयं  
 कहना ॥

॥ पीठें दो वादणा देकर अवग्रहमाहित्यकोज कहे ॥ इछा  
 का० ॥ स० ॥ ज० ॥ अणुठिंमि अण्णितर ॥ राइयं खामेमि  
 गुरु कहे खामेइ ॥ संजासा प्रमार्जन पूर्वक गोमाली बैठ के, वे  
 वाइ पडिलेहि ॥ मुइपत्ती वामहाथसूं मुखें देई, दक्षिण हाथ  
 गुरु सामो करी ॥ नीचो नम्यो थको जंकिंचि अण्णितियं ॥ इत्यादि  
 संपूर्ण कहे ॥

॥ अथ अणुठिं ॥

॥ इछाकारेण संदिस्सइ जगवन् अणुठिंमि अण्णितर देव-  
 सिद्ध खामेणं ॥ इच्छं खामेमि देवसियं जंकिंचि अण्णितियं जत्ते  
 पाणे विणए वेआवच्चे आलावे संलावे उच्चासणे ॥ समासणे अंतर  
 जासाए उवरिजासाए ॥ ज किंचि ॥ मङ्गविणय परिहीण सुहु-  
 मंवा धायर वा ॥ तुप्पे जाणइ अइ न जाणामि ॥ तस्स मिच्छामि  
 डुक्कं ॥ इति ॥

॥ इहा गुरु पण मिच्छामि डुक्कं कहे. पीठें वे वादणा देई  
 जूमि प्रमार्जन करता हुआ पगसैं अवग्रह धाहिर आय केँ आय-  
 रिय उवजाए इत्यादि तीन गाथा कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ आयरिय उवजाए ॥

॥ आयरिअ उवजाए, सीसे साइमीए कुलणो अ ॥ जे  
 मे कया कसाया, सबे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥ सबस्स समण  
 संघस्स, जगवन् अजलिं करिअ सीसे ॥ सबं खमावइत्ता, खमामि  
 सबस्स अइयंपि ॥ २ ॥ सबस्स जीवरासिस्स, जावन् धम्मो निदिअ  
 निअ चित्तो ॥ सब खमावइत्ता, खमामि सबस्स अइयंपि ॥ ३ ॥

पीठें करेमि जंते इच्छामि ठामि कान्तस्सगं तस्सुत्तरी० ॥  
 श्रीमहावीर स्वामी ठमासि तप चिंतवणा निमित्त करेमि कान्त-  
 स्सगं अन्नचू० ॥ कहि कें कान्तस्सग करे, कान्तस्सगमें श्रीवीर-  
 क्त ठम्मासी तप चितवन करे ॥ चोवीश नवकार अथवा ठ  
 षोगस्तका कान्तस्सग करे, कान्तस्सग पारिकें प्रगट लोगस्त कदे ॥

॥ ठे आवश्यककी मुहपत्ती पम्हिलेहुं ? गुरु कहे पम्हिलेहु  
 ॥ मुहपत्ती पम्हिलेही बे वांदणा देई सकल तीर्थनाम लइ नम-  
 स्कार करे, सो लिखे डें.

॥ अथ सकल तीर्थ नमस्कार ॥

॥ स्वधरा वृत्तम् ॥

॥ सङ्गत्या देवलोके रविशशिञ्जवने, अंतराणा निकाये,  
 नक्षत्राणां निवासे प्रदग्णपटले तारकाणा विमाने ॥ पाताले पन्न-  
 गेद्रे स्फुटमणिफिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे, श्रीमतीर्थकराणा प्रतिदि-  
 वसमहं तत्र चैत्यानि वंदे ॥ १ ॥ वैताढ्ये मेरुशृंगे रुचकगिरिवरे  
 कुंभले हस्तिदंते, वरकारे कूटनंदीश्वरकनकगिरौ नैपथे नीलवते ॥  
 शैले चैत्रे विचित्रे यमकगिरिवरे चक्रवाले हिमाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ७ ॥  
 श्रीशैले विंध्यशृंगे विमलगिरिवरे ह्यर्वुदे पावके वा, सम्मते तारके  
 वा कुलगिरिशिखरेऽष्टापदे स्वर्णशैले ॥ सह्याद्रौ वैजयंते विमल-  
 गिरिवरे गुर्जरे रोहणाद्रौ ॥ श्रीम० ॥ ३ ॥ आघाटे मेदपाटे क्षि-  
 तितटमुकुटे चित्रकूटे त्रिकूटे, लाटे नाटे च धाटे विटपिघनतटे हेमकूटे  
 विराटे ॥ कर्णाटे हेमकूटे विकटतरकटे चक्रकूटे च जोटे ॥ श्री०  
 ॥ ४ ॥ श्रीमाले मालवे वा मलयिनि निपथे मेखले पिञ्जले वा,  
 नेपाले नाइले वा कुवलयतिलके सिंहले केरले वा ॥ माहाले  
 कोशले वा धिगलितसलिले जंगले वा ढमाले ॥ श्रीम० ॥ ५ ॥  
 अंगे वंगे कर्लिंगे सुगतजनपदे सत्प्रयागे तिलगे, गौमे चोमे मुरंमे  
 वरतरद्रविमे उद्रियाणे च पौमे ॥ आर्द्रे माद्रे पुलिंद्रे द्रविमुकवलये



कैं ॥ एक नवकारका काउस्तग्न करे ॥ पारि कैं नमोऽर्हत्सिद्धां  
कही ॥ एक शुईनी गाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ महीमरुण पुससोवन्न देहं, जणाणदण केवलन्नाणगेहं ॥  
महाणवल्ल्ही बहुबुद्धिरायं, सुसेवाम सीमंधरं तिञ्जरायं ॥ १ ॥ इम  
होज धिरता हुवे तो, श्रीसिद्धाचलजीका चैत्यवदन करे, सो  
लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय नाञ्जि नरिंद, नंद सिद्धाचल मंरुण ॥ जय जय  
प्रथम जिणंद चंद, जव उ ख विहरुण ॥ जय जय साध सुरिंद विंद,  
वंदिय परमेसर ॥ जय जय जगदानद कंद, श्रीरिपञ्ज जिणोसर ॥  
अमृतसम जिन घर्मनो ए, दायक जगमें जाण ॥ तुज पद पकज  
प्रीति धर, निशिदिन नमत कळयाण ॥ १ ॥ जं किंचि नामतिञ्ज०  
॥ एमोत्रुण ॥ जावंति चेइआइ० ॥ जावत केवि साहू० ॥ एमो-  
ऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुञ्च्य तक कहि कैं श्री सिद्धाचल-  
जीका स्तवन कहे, सो लिखते है ॥ ३ए ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवनम् ॥

॥ सिद्धाचल गिरि ज्ञेव्या रे ॥ धन्य ज्ञाग्य हमारां ॥ विम-  
लाचलगिरि० ॥ एह गिरिवरनो महिमा महोठो, कहेतां न आवे  
पारा ॥ रायण रूख समोसर्था स्वामी, पूर्व नवाणूं वारा रे ॥ ध०  
॥ १ ॥ मूलनायक श्रीश्रादिजिनेश्वर, चोमुख प्रतिमा चार ॥ अष्ट  
द्रव्यसैं पूजो ज्ञावें, समकित मूल आधारारे ॥ ध० ॥ २ ॥ दूर  
देशथी हु इहा आयो, श्रवण सुनी गुण तोरा ॥ पतित उदारण  
विरुद तुमारा, एह तीरथ जग सारा रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ ज्ञाव  
जक्तिं प्रजू गुण गावे, अपना जन्म सघारा ॥ जात्रा करि  
ज्विलन शुञ्ज ज्ञावें, नरक तिर्यच गति वारा रे ॥ ध० ॥ ४ ॥  
सवत अदारे ज्यासी मास आयाडे, वदि आठम जोमवारा ॥

प्रभुके चरण परतापसिद्धमें, कुमारतन प्रभु प्यारा रे ॥ ध० ॥५॥

॥ पीठें जयवीरराय० ॥ वंदणवत्तियाए० ॥ अन्नचू० ॥ कहिकें  
एक नवकारकाकानुस्सगग करी ॥ पारिकें नमोऽर्हस्तिदा० ॥ कहिकें ॥

॥ शेत्रुंजगिरि नमियें, रूपजदेव पुंररीक ॥ शुभ तपनो  
महिमा, सुणि गुरु मुख निरवीक ॥ शुद्ध मन उपवासें, विधिगुं  
चैत्यवंदनाक ॥ करियें जिन आगल, टालो वचन अलीक ॥ १ ॥  
इति ॥ ४१ ॥ पीठें फुरस्तद होवे तो पन्डिलेहण करे, सो लिखते है ॥

॥ अथ पडिलेहण ॥

॥ स्वमासमण देई इच्छाकारेण सद्विस्तह जगवन् ॥ पन्डि-  
लेहण सद्विस्तानं ? गुरु कहे. संद्विस्ताएह ॥ बीजे स्वमासमणें ॥  
॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्डिलेहण करुं ? गुरु कहे, करेह ॥  
पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्डिलेहे ॥ इमहीज दोइ स्वमासमणे  
अंग पन्डिलेहण संद्विस्तानं ॥ अंगपन्डिलेहण करुं, कहीके धोतियुं  
कणदोरो पन्डिलेहि कें ॥ स्वमासमण देई इच्छाकार जगवन् पसाउ  
करी पन्डिलेहण पन्डिलेहावो जी. एम कही ॥ आपनाचार्य  
पन्डिलेह ररके, अने जो गुर्गादिक आपनाचार्य पन्डिलेहे, तो  
पण स्वमासमण देई आग्या मागे, पीठें स्वमासमण देई  
॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ मुहपत्ती पन्डिलेहु ? गुरु कहे पन्डिलेहेह  
॥ पीठें इच्छं कही ॥ मुहपत्ती पन्डिलेहि ॥ दोय स्वमासमणें ॥ इ-  
च्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उहि पन्डिलेहण संद्विस्तानं ॥ उही पन्डि-  
लेहण करुं ॥ एम कही कवल वस्त्रादि पन्डिलेहे ॥ पीठें पोपध-  
शाला प्रमार्जी काजो, विधिगुं परठवी स्वमासमण देई इरियावही  
पन्डिकमे ॥ ए मूलविधि जाणवो ॥ इतनी स्थिरता न होवे, तोत्ती  
दृष्टिपन्डिलेहण तो अवश्य करणी ॥ प्रवन्ती प्राये एही करते दि-  
खते है ॥

॥ अब सामायिक पारणेका विधि कहे हैं ॥

॥ पीठें सामायिक पारे ॥ एक स्वमासमण देई ॥ मुहपत्ती  
पन्विलेहे ॥ फिर स्वमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ ज० ॥ सामायिक  
पारु ॥ गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीठै यथाशक्ति कही वली स्वमा-  
समण देई कहे. इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ सामायिक पारेमि ॥  
गुरु कहे थायारो न मोत्तवो ॥ पीठें तहत्ति कही, अर्द्ध नमि ऊजो  
थको, तीन नवकार गुणो नीचा गोमालीयें बेसी मत्तक नमावो  
॥ जयवं दसस्रजदो ॥ इत्यादिगाथा कहे, सो लिखते है ॥

॥ अथ भयव दसस्रजदो ॥

॥ जयव दसस्र जदो, सुदसणो थूलिजद वपरोय ॥ सफली  
कयगिहचाया, साहू एह विहा हुती ॥ १ ॥ साहूण वदणेषां, ना-  
सइ पाव असकिया जावा ॥ फासु अदाणे निज्जर, अजिगहो  
नाण माईणं ॥ २ ॥ वज्जमज्जो मूढमणो, कित्ति य मित्तिपि सज्जरइ  
जीवो ॥ जं च न संज्जरामि अहं, मिच्छामि पुक्कमं तस्स ॥ ३ ॥  
जं जं मणेण चित्ति य, मसुह वायाइ जासिय किचि ॥ असुहं काएण  
कयं, मिच्छामि पुक्कम तस्स ॥ ४ ॥ सामाइय पोसहसं, धियस्स  
जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधवो, सेसो संसार फलहेऊ  
॥५॥ सामायिक विधें लीजु विधें कीधु, विधि करता अविधि आशा-  
तना लगी होय. दश मनका, दश वचनका, बारह कायाका, बत्तीस  
दूषणमाहि जो कोइ दूषणलगा होय, सो सहु मन कर, वचन  
कर, कांयार्थें करी मिच्छामि पुक्कम ॥ इति सामायिक पोसह  
पारवानी गाथा ॥

॥ अथवा पहिला सामायिक पारी कें, पीठै पन्विलेहण करे.  
इहा यथायोग्य अवसरें गुरुकूं मुहराइ पूठै ॥

दूमरा स्वमासमण देवे, श्रीजिनपति सूरिजीकी सामाचारीमें  
एसें कह्यो हे ॥ इति सामायिक पारणविधि ॥

॥ अथ संध्याकाल सामायिक विधिर्लिख्यते ॥

॥ पितले पहोरे धर्मशाला प्रमाजी वस्त्रादिक पन्डितेहे. जो अवेरो आयो हुवे, तो दृष्टिपन्डितेहण करे ॥ पीठे गुरु आगें अथवा थापनाचार्यजी आगें आबी जूमि प्रमाजी आसण वाम पास मूकी खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक मुहपत्ती पन्डितेहुं ? गुरु कहे पन्डितेहेह, इच्छं कही ॥ फिर खमासमण देई मुहपत्ती पन्डितेहे ॥ पीठे खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक संदिस्तां ? गुरु कहे संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक ठां ? गुरु कहे, ठाएह ॥ इच्छं कही फिर खमासमण देई ॥ अर्द्धावनत थई तीन नवकार गुणी कहे. इच्छकार जगवन् ! पसाठ करी सामायिक दंरुक उच्चरावो जी ॥ गुरु कहे उच्चरावेमो ॥ पीठे करेमि जंतें सामाय्यं ॥ इत्यादि सामायिक सूत्र गुरु वचन अनुज्ञापण करतो थको तीन वार उच्चरी खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ इरियावहिय पन्डिकमामि ? गुरु कहे पन्डिकमेह ॥ पीठे इच्छं कही ॥ इच्छामि पन्डिकमिं ॥ इरियावहियाइ इत्यादि पाठसैं इरियावहियं पन्डिकमी ॥ एक लोगस्तका काउस्तग करी, एमो अरिहंताण कही, काउस्तग पारी मुखें प्रगट लोगस्त कही, नीचें बैठ कें मुहपत्ती पन्डितेहि वादणा देई कहे. इच्छाकार जगवन् ! पसाठ करी पञ्चस्काण करावोजी. पीठे गुरु, दिवस चरिम पञ्चस्काण करावे ॥ गुरु अज्ञावें थापनाचार्य समके अथवा स्वमुखें, अथवा वनेरा साधर्मी मुखें पञ्चस्के ॥ अने जो तिविहार उपवास कीधो हुवे, तो मुहपत्ती पन्डितेहि पञ्चस्काण करे ॥ वादणा न देवे, अने जो चउबिहार उपवास हुवे, तो पञ्चस्काण करयुं ठे नही ॥ ते माटें मुहपत्ती नाहिं पन्डितेहे ॥ ए विस्तार विधि है ॥ पीठे एक खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज० ॥ सिद्धाय संदिस्तां ? गुरु कहे, सदिस्तावेह. पंठै इह कही  
 वली खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिद्धाय करु ?  
 गुरु कहे करेह ॥ पीठै इह कही ॥ खमासमण देई ॥ उजो थको  
 मधुर स्वरें आठ नवकारनी सिद्धाय करे ॥ पीठै खमासमण देई  
 ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वेत्तणुं सदिस्तां ? गुरु० सदिस्तावेह  
 ॥ फिर खमासमण देई इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ वेत्तणुं गानं ?  
 गुरु कहे, गाएह ॥ पीठै इह कही जो शीत कालादि हुवे तो  
 खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पांगरणुं सदिस्तां ?  
 गुरु कहे, संदिस्तावेह ॥ फिर खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ पांगरणु पन्निघात ? गुरु कहे पन्निघाएह ॥ पीठै इह  
 कही शुभ ध्यान करे ॥ इति सध्यासामायिक विधि ॥

॥ अथ देवसि पन्निक्कमण विधि लिख्यते ॥

॥ प्रथम त्रण खमासमण देई ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥  
 चैत्यवदन करुं ? गुरु कहे करेह, पीठै इह कही ॥ जय तिहुअण कहे  
 ॥ जिसमें परकी तथा चत्रमामी तथा तवचरीके रोज तीस गाथा  
 कहेनी ॥ और दिनोमें तो पाच गाथा पहेलेकी, और दोय गाथा  
 पिठामीकी, एवं सात गाथा कहेनेकी प्रवृत्ति देखणेमें आवे है.  
 अथ जयतिहुअण लिखते है ॥

॥ अथ जयतिहुअण लिख्यते ॥

॥ जय तिहुअण वरकप्परुस्क जय जिण धनं तरि, जय  
 तिहुअण कल्लाणकोस डुरिअकरि केसरि ॥ तिहुअण जण अविं-  
 धियाण चुवणत्तय सामिअ, कुशसुद्धाइ जिणेस पास थंजणय  
 पुरिअ ॥ १ ॥ तइ समरत लद्धति जत्तिवर पुत्त कलत्तहिं, धस सुवन्न  
 हिरणण पुण्ण जणत्तुजहिरज्जहि ॥ पिस्काहि मुक्क असंखसुरं क तुह  
 पासयत्ताइण, इय तिहुअण वरकप्परुस्क सुरं कहि कुण मद्धजिण ॥  
 २ ॥ जरज्जकर परिजुत्त वसणहुठ सुकुण्णि, अस्सुकोणखण्णखुण्ण

निरसद्विअसूखिण ॥ तुह जिण सरपरसायणेण लहु हुंति पुणसव,  
 जय धसंतरि पास महवि तुहुं रोगहरो जव ॥ ३ ॥ विजाजोइत  
 मततंसिदिअ अपयत्तिण, जुवणपुअ अठविह सिदि सिद्धइ तुह  
 नामिण ॥ तुह नामिण अपवित्तठेवि जण होइ पवित्तन, तं नि-  
 हुअण कछ्वाणकोत तुह पास निरुत्तन ॥ ४ ॥ खुद पवत्तइ संत  
 तंत जंताइ विसुत्तइ, चरथिरगरलंगहुग्गखग्गरिन्नवंग्गविगंजइ ॥  
 उत्रियसन्न अणत्त पठ निधारइ दय करि, डुरिअई हरन सुपासदेव  
 डुरिअक्करिकेसरि ॥ ५ ॥ तुह आणाथनेइ नीमदप्पुहर सुरवर,  
 रकस जरक फणिंद विंद चोरानलजलहर ॥ जलथजचारिन्नदखुद  
 पसुजोइणि जोइअ, इयतिहुअणअविलघिआण जय पास सुसामिअ  
 ॥ ६ ॥ पत्रिअ अन्न अणत्तदिअत्तत्तिप्रर निप्रर, रोमंचं चिअचारु-  
 काय किस्सरनरसुरवर ॥ असुत्तेवहि कमकमलजुअल परकालिअ  
 कलिमलु, सो जुवणत्तयसामि पास महमदन्न रिन्नवलु ॥ ७ ॥ जय  
 जोइअमणकमलत्तसलत्तय पंजरकुंजर, तिहुअणजण आणदचंद  
 जुवणत्तयदिणयर ॥ जय मइमेशिण वारिवाह जयजंतुपिआमह,  
 थंनणयदिअ पासनाह नाहत्तणकुणमह ॥ ८ ॥ बहु विहवणुअवणु  
 सुणु वसिंत्तवपसहि, मुक्कधम्मुकामत्तकाम नर नियनियसेत्तहि ॥  
 जं ज्ञायइ बहु दरिणत्त बहु नाम पसिद्ध, सो जोइ अमण  
 कमलत्तसलसुह पास पवद्ध ॥ ९ ॥ जयविप्रल रणज्जणरदसण  
 अरहरिअ सररीय, तरलिअ नयणविसणुसुणुगग्गिरगिरकरुणय ॥  
 तइंसदसत्तिसरंति हुंति नरनासिअ गुरुदर, महविक्कविसक्कमइ पास  
 जय पंजरकुंजर ॥ १० ॥ पइपासविविअसंतत्तित्तपत्तंतपवित्तिय,  
 वाहपवाहपवूढरूढ उहदाहसुपुलइय ॥ मण्णूहिंमण्णसत्तण पुसअ-  
 प्पाणंसुरनर, इय तिहुअण आणदचद जय पास जिणेसर ॥ ११ ॥  
 तुह कछ्वाणमहेसुयंटेकारवपि छिअ, वद्धरमद्धमहत्तत्तिसुरवरग-  
 जुत्तिअ ॥ हद्धुप्फलिअ पवत्तयंति जेवणेहिमदूसव, इय तिहुअण

आणंदचंद्र जय पाससुहुप्रव ॥ १२ ॥ निम्नल केवल किरणनिय-  
 र, वेदुरिअ तमपहयर, दसिअ सयलपयत्रवित्रिअ पहाअर ॥ क-  
 लिकलुसिअ जण धूअलोयलोयणहअगोयर, तिमिरइ निरुहर  
 पासनाह नुवणत्तय दिणयर ॥ १३ ॥ तुह समरणजलवरिससित्त  
 माणव मइ मेइणि, अवरारसरुहुमन्नवोह कंदलदलइरेणि ॥ जायइ-  
 फलअरअरिय हरिय उहदाह अणोवम, इयमइ मेइणि वारिवाह  
 दिसिपास मइ मम ॥ १४ ॥ कय अविकल कल्लाणवद्धिअन्नूरि-  
 यउहवणुं, दाविअसगपवग्गमग्ग डुग्गइग्ग वारणुं ॥ जय जतुह-  
 जणएणत्तुअजणियहियावहु, रम्म धम्म सो जयअ पास जय  
 जतु पिआमह ॥ १५ ॥ नूवणारसनिवास दरिअपरदरिसणदेवय,  
 जोइ णेपूअणखित्तवाल खुदासुर पसुवय ॥ तुह उत्तठ सुनठ सुठ  
 अ विसवुलचिठहि, इय तिहुअण वणसिह पास पावाइ पणासहिं  
 ॥ १६ ॥ फणिफणफारफुरतरयण कर रजिअ नहयल, फलिणी  
 कदलदलतमाळ निद्धुप्पलसामल ॥ कमठासुर उवसग्गवग्ग सस-  
 ग्गअग्गजिअ, जय पच्चकजिणेस पास थंअणय पुरठिअ ॥ १७ ॥  
 महमणतरलपमाणेय वायाविसठलु, नियतणुरवि अविणयसहाव  
 आलसविहिलंधलु ॥ तुहमाहप्पपमाणेव कारुसपवत्तअ, इयम-  
 इमाअवहीरपासपाळ हिविलवंतअ ॥ १८ ॥ किंकिक्किप्पिअणोयकलु-  
 णुकिंकिवनजंपिअ, कि वनचिठिअठिठेवदीणयमविलंअिअ ॥ का-  
 सुनकिय, निप्पल्ललद्धुअहोहिउहत्तइं, तहविन पत्तअताण किपि पइं  
 पहु परिचत्तइ ॥ १९ ॥ तुहु सामिह तुहुं माय वप्प तुहु  
 मित्तपियकरु, तुहु गइ तुहुं मइ तुहिज ताण तुहुं गुरु खेमकरु  
 ॥ इअ उहअरअरिअवराअ राअलनिअग्गअ, लीणअ तुह कमक-  
 मल सरणजिणपलहि चग्गअ ॥ २० ॥ पइकिविकयनीरोय-  
 लोयकिविपाविअसुहसय, किविमइमंतमहंतकेवि किपिसाहियसि-  
 वपय ॥ किवि गजिअरिअवग्गकेविजसयवलिअ नूअल, मइ अवही-

रहिकेणपास सरणागयवञ्जल ॥ ११ ॥ पञ्चवयारनिरीहनाहनिप्यस  
 पयोअण, तुहुं जिण पासपरोवयार करुणिकपरायण ॥ सत्तुमित्त सम  
 चित्तचित्तिनयनिंदयसममण, मा अवहीरिअजुग्गउविमइं पासनिरं-  
 जण ॥ १२ ॥ इउं बहुविहउदत्तगत्तुहुं उहनासणपरु, इउं  
 सुयणहकरुणिकगण तुहुं निरुकरुणाकरु ॥ इउंजिण पासअसामि-  
 सालु तुहुं तिहुअणसामिअ, जं अवहीरहि मइं ऊखंतइय पासन  
 सोहिअ ॥ १३ ॥ जुग्गाजुग्ग विजागनाहनहुजोअणतुहसम, जव-  
 णुवयारसु हावजाव करुणारससत्तम ॥ समविसमइ णिघण नएउ  
 जुविदाहुसमंतउ, इय उहवंधव पासनाह मइं पाळ शुणंतउ ॥  
 १४ ॥ नयदीणहदीणयमुएवि अणविकिविजुग्गय, जं जोइयउव-  
 याकरइउवयारसमुजाय ॥ दीणह दीणनिदीणजेणतुहनाहिण-  
 चत्तउ, तो जुग्गअहमेव पासपाळहिमइ चंगउ ॥ १५ ॥ अहअ-  
 णविजुग्गयविसेसकिविमएहि दीणह, जं पासविउवयाकरुइ  
 तुहनाह समगह ॥ सुच्चिअकिल कद्धाणुजेण जिण तुम्ह पसीयह,  
 कि अणुण तंचेव देव मामइअवहीरह ॥ १६ ॥ तुह पण नहु  
 होइ विहल जिणजाणउ कि पुण, इउं उरिक्क निरुसत्तचत्तउकह  
 उस्सुयमण ॥ तं मसउ निमित्तेण एण एउविक्कउ लप्रइ, सच्च जं  
 उरिक्कयवसेण किं उंवरु पच्चइ ॥ १७ ॥ तिहुअणसामिअ पासनाह  
 मइ अप्पपयासिउ, किक्कउ जं नियरूवसरिसुनमुणुंवहु जंपिउ ॥  
 अणु ए जिणजगुहसमोविदस्कितादयासउ, जइअवगिहासि  
 तुंहिअहहकिहोइसहयासउ ॥ १८ ॥ जइ तुहरूविणकिणविपेअ  
 पाइणवेलविउ, तउजाणुजिणपास तुम्ह इउअंगीकरिअउ ॥ इयम-  
 हइअजिअ जं न होइ सातुहउंहावण, रकंतह नियकेत्तिणे य जु-  
 क्कइअवहीरण ॥ १९ ॥ एवमहारिहजत्तदेवइयन्हवणामहूसउ, जं  
 अणविय गुणगंहण तुम्ह मुणिजणअणिसिउ ॥ इय मइं पसि-  
 यसुपासनाहअणायपुरिअ, इय मुणिनरसिअ अजयदेव विणवइ



॥ पीठै संभासा प्रमार्ज्जन पूर्वक वैठ के तीसरे आवश्यक सूत्र वादणा मुहपत्ती पन्निखेहु ? गुरु कहे पन्निखेदेह पीठै मुहपत्ती पन्निखेहि के वादणा देवे पीठै अवग्रहमादिज उन्नो थको इच्छा० ॥ स० ॥ ज० ॥ देवसिय आलोउ, एसा कहे तब गुरु कहे आलोएह, पीठै इच्छ आलोएमि० ॥ यह पाठ कहे के अतिचार आलोवे, पीठै सबस्सवि देवसिय इत्यादिथी मानाने इच्छाकारेण संदिस्सह पर्यत कहे, तब गुरु पन्निक्कमह, यह पाठ कहे ॥

॥ पीठै इच्छ तस्स मिच्छामि उक्कम कहि के संभासा प्रमार्ज्जि प्रमार्जित जूमिये आसन पर वैठ के जगवन् ! सूत्र जणु एसा कहे, तब गुरु कहे जणेह, पीठै इच्छ कही तीन नवकार गणी, तीन करेमि जंते जणाने इच्छामि पन्निक्कमिज जो मे देवसिउ इत्यादि कही एक श्रावक वंदित्तु कहे दूसरा सब सुने, पीठै खमा हो कर अणुठिन्निमि आराहणाए इत्यादि सपूर्ण पाठ कही, दो वादणा देवे, अरु अवग्रहमादिज खमा हुवा इच्छा० ॥ स० ॥ ज० ॥ अणुठिन्निमि अणितर देवसिय खामेज ? गुरु कहे, खामेह ॥

॥ पीठै इच्छ खामेमि देवसियं कहि के गोमालीये वैठ के वाम हाथे मुहपत्ती मुखे धर के दक्षिण हाथ गुरु सन्मुख कर के सर्व पाठ कहे, पीठै विधिसेंती दो वादणा दे कर आयसिय उवद्याय इत्यादि त्रण गाथा कहिके करेमि जंते सामाइयं इच्छामि ठामि कान्त्सग्ग इत्यादि कही चारित्र गुदि निमित्ते करेमि कान्त्सग्गं अन्नञ्जू० ॥ कहि के आठ नवकार अथवा दो लोगस्सका कान्त्सग्ग करी पारि के पीठै दर्शनगुदि निमित्ते प्रगट लोगस्स कही सघलोए अरिहंत चेइयाणं ॥ वदणावत्ति० अन्नञ्जू० ॥ कहि के एक लोगस्सका कान्त्सग्ग करी पारि के ज्ञान गुदि निमित्ते पुस्कारवरदीवहे कहि के सुयस्स जगवत्त० ॥ वदणावत्ति० ॥ अन्नञ्जू०

॥ कहि केँ एक लो-स्तका कान्दस्तग करे. पीठेँ पारि केँ सिद्धाणं बुद्धाणं कहि केँ वेयावच्चगराणं न कहे. पीठेँ सुयदेवयाए करेमि कान्दस्तगं अन्नबू ॥ कही एक नवकारनो कान्दस्तग करे. पीठेँ गुरुका योग न होवे तो एक श्रावक कान्दस्तग पारिकेँ एमो अर्हत्सिद्धा ० कहि केँ श्रुत देवताकी स्तुति कहे. गुरु हुवे तो गुरु कहे. और दूजा सर्व स्तुति सुण केँ कान्दस्तग पारे. अब श्रुतदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रुतदेवताकी स्तुति ॥

॥ सुवर्णशालिनी दयाद्, द्वादशागो जिनोद्भवां ॥ श्रुतदेवी सदा मह्य, मशेषश्रुतसंपदम् ॥ १ ॥ पीठेँ खित्तदेवयाए, करेमि कान्दस्तगं ॥ अन्नबू ॥ कहि केँ, एक नवकार चिंतवी पूर्वली परेँ क्षेत्रदेवताकी स्तुति कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ क्षेत्रदेवताको स्तुति ॥

॥ यासां क्षेत्रगताः संति, साधव. श्रावकादयः ॥ जिनाज्ञां साधयंतस्ता, रक्षतु क्षेत्रदेवता ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ पीठेँ खना हुवा एक नवकार कही, संनासा प्रमार्जिं उरुभूवैठ केँ ठेठे आवश्यककी मुहपत्ता पन्डिलेहुं? गुरु कहे पन्डिलेदेह.

॥ पीठेँ मुहपत्तो पन्डिलेही विधिगुं दो वादणा देइ उँ वरकनक कहे, सो लिखते हैं.

॥ अथ वरकनक प्रारंभ ॥

॥ उँ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगय मोहं ॥ सित्तरि सयं जिणाणं, सद्दामर पूइयं वंदे ॥ स्वाहा ॥ १ ॥ उँ नवणयय वाण मंतर, जोइसत्रासविमाण वासीय ॥ जे केवि छुब्देवा, ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १ ॥ पञ्चस्काण नहि लिखा होय तो करे ॥ सामायिक चोइसठो पन्डिकमणा, वादणा, कान्द-

स्सग्ग, पञ्चकाण, ठ आवश्यक साधता फानो, मात्रा, उंओ अ  
धिको अकर उंचो नीचो कह्यो होय, ते सर्वे मन, वचन, कायार्थे  
करी मिच्छामि दुक्कम् ॥ इच्छामो अणुसिद्धिं ॥ कही बैठे प ठे गुरु  
एक स्तुति कहा पीठे श्रावक समस्त, मस्तके अजलि करिके एमो  
खमासमणण ॥ एमोऽर्हत्सिद्धा ॥ कही ॥ एमोऽस्तु वर्धमानाय ०  
इत्यादि तीन स्तुति कहे. श्राविका एमो खमासमणण, कही स-  
सारदावाकी स्तुति कहे

॥ अथ नमोऽस्तु वर्धमानाय ॥

॥ नमोऽस्तु वर्धमानाय, स्पर्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावा-  
समोक्काय, परोक्काय कुतीर्थिनाम् ॥ १ ॥ येपा विकचारविदराज्या,  
ज्याय क्रमकमलावलिं दधत्या ॥ सदृशैरिति सगत प्रशस्य, कश्चित्त  
सतु शिवाय ते जिनेन्द्रा. ॥ २ ॥ कपायतापादितजतुनिर्वृतिं, क-  
रोतियो जैनमुखाबुदोक्त. ॥ स शुक्रमासोन्नववृष्टि साज्जो, ददातु  
तुष्टिं मयि विस्तरोगिराम् ॥ ३ ॥ श्वसितसुरज्जिगथा लोढञ्जुङ्ग, कुरङ्गं,  
मुखश शैनमजस्र विन्नती या विन्नति ॥ विकच कमलमूञ्जे. साऽ  
स्त्वचित्यप्रज्ञावा, सकलसुखविधात्री प्राणज्जाजां श्रुताङ्गी ॥ ४ ॥ ॥ ॥

॥ यह तीन गाथा कहि के पीठे एमोऽणु ० कह के एक  
श्रावक खमासमण देई कहे - इच्छाका ० ॥ स ० ॥ ज ० ॥ स्तवन  
जणुं ? दूसरा खमासमण देई कहे ॥ इच्छा ० ॥ स ० ॥ ज ० ॥ स्त-  
वनजणु स्तवन साज्जलु ? गुरु कहे, जणेह साज्जलेह पीठे आसन  
पर बैठ के नमोऽर्हत्सिद्धा ० ॥ कहि के वमो स्तवन कहे, सो लि-  
खते है ॥

॥ अथ श्री चिंतामणि पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ जविका श्रोजिनधिव जुदारो, आतम परम आधारो रे  
॥ ज ० ॥ श्री ० ॥ जिनप्रतिमा जिन सारखी जाणो, न करो शका

काई ॥ आगम वाणाने अनुमारे, राखो प्रीति सवाई रे ॥ ज०  
 श्री० ॥ १ ॥ जे जिनविव स्वरूप न जाणे, ते कर्हये किम जाणे  
 ॥ जूला तेह अज्ञाने ज रया, नहिं तिहा तत्प पिठाणे रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ ७ ॥ अबरु श्रावक श्रेणिक राजा, रावणप्रमुख अनेक  
 ॥ विविधपरें जिन जगति करंता, पाम्या धर्म विवेक रे ॥ ज० ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ जिन प्रतिमा बहु जगते जाता, होय निश्चय उप-  
 गार ॥ परमारथ गुण प्रगटे पूण, जो जो आर्द्र कुमार रे ॥ ज०  
 ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनप्रतिमा आकारें जलचर, ठे बहु जलधि  
 मजार ॥ ते देखी बहुला मत्स्यादिक, पाम्या विरतिप्रकार रे ॥  
 ज० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ पाचमा अंगें जिनप्रतिमानो, प्रगटपर्णे  
 अधिकार ॥ सूरियाज मुर जिनवर पूज्या, राय पसेणी मजार  
 रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ दशमें अंगें अहिंसा दाखी, जिन पूज्या  
 जिनराज ॥ एहवा आगम अरथ मरोमी, करिये केम अकाज रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ७ ॥ समकितधारी सतीय द्रौपदी, जिन  
 पूज्या मन रंगें ॥ जो जो एहनो अरथ विचारी, ठे ज्ञाता अंगें रे  
 ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ८ ॥ विजयसुरें जिम जिनवर पूजा, कीधी  
 चित्त थिर राखी ॥ द्रव्य जाव विहुं जेदे कीनी, लीवाजिगम ते  
 साखी रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ९ ॥ इत्यादिक बहु आगम साखें,  
 कोइ शका मति करजो ॥ जिनप्रतिमा देखी नित नवली, प्रेम  
 घणो चित्त धरजो रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ १० ॥ चितामणि प्रभु  
 पास पसायें, सरधा होजो सवाई ॥ श्रीजिनवाज मगुरु उपदेशें,  
 श्रीजिनचंद्र सवाई रे ॥ ज० ॥ श्री० ॥ ॥ ११ ॥ इति श्रीचिता-  
 मणि पार्श्वजिन स्तवनम् ॥

॥ पाँचै तीन स्वमासमणें आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु वादी,  
 अद्वाइजेमु रुहना, फेर स्वमासमणे ॥ इच्छाकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥

देवसि पायश्चित्त विग्रह निमित्त काञ्चस्तग्ग करुं? गुरु कहे, करेह.  
पीठे इच्च कहि केँ देवसि पायश्चित्त विग्रह निमित्त करेमि काञ्च-  
स्तग्ग अन्नहूण ॥ कहि शोले नवकार अथवा चार लोगस्तका काञ्च-  
स्तग्ग करे, पारी केँ लोगस्त कहे

॥ प.ठै खमासमण दे कर इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ खु-  
होवहव उभावणत्त करेमि काञ्चस्तग्ग ॥ अन्नहूण ॥ इत्यादि कहा.  
शोले नवकार अथवा चार लोगस्तका काञ्चस्तग्ग करे, पारि केँ  
प्रगट लोगस्त कहे पीठे खमासमण देई ॥ सज्जाय संदिस्ताउ फेर  
खमासमण देई सज्जाय करुं? तीन नवकार गुणीजे. पीठे खमा-  
समण देई केँ ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ जगवन् चैत्यवदन करुं जी ॥  
ऐसा कह कर अज्ञाणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवदन करे, सो लिखते हैं ॥

॥ अथ श्रीर्यभणा पार्श्वनाथजीका चैत्यवदन ॥

॥ श्रीतेढीतटिनीतटे पुरवरे श्रीस्तजने स्वर्गिरौ, श्रीपूज्या-  
न्नयदेवसूरिविबुधाधीशैः समारोपित ॥ संसिक्त स्तुतिर्जिर्जलै शिव  
फल स्फूर्जत्फलापह्वव, पार्श्व कल्पतरु समे प्रथयता नित्य मनो-  
चांठितम् ॥ १ ॥ आधि व्याधिहरो देवो, जीरावह्नीशिरोमणि ॥  
पार्श्वनाथो जगन्नाथो, नित्यनाथो नृणा श्रिये ॥ इति ॥

॥ पीठे नमोऽनुसै लेकेँ जयवीरराय सुधी कहे ॥ पीठे  
खमासमणपूर्वक मस्तक नमावी 'सिरि अज्ञाणयद्विय पास सामिणो०'  
इत्यादि दोय गाथा कहे, सो लिखते हे

॥ अथ श्रीर्यभणयद्वियपाससामिणो ॥

॥ श्री अज्ञाणयद्वियपाससामिणो सेस तिष्ठसामीण ॥ तिष्ठ  
समुन्नय कारणं, सुरासुराण च सधेसि ॥ १ ॥ एत मह सरणत्त,  
काञ्चस्तग्ग करेमि सत्तीए ॥ जतीए गुण सुद्वियस्त, संघस्त समुन्नय  
निमित्तं ॥ २ ॥ इति ॥

॥ श्रीशंजना पार्थनाथजी आराधवा निमित्त करेमि काउ-  
स्तगं ॥ पीठे खेहे दो के वंदणव० ॥ अन्न० ॥ कही चार लोग-  
स्तका काउस्तग करि के पीठे पारी प्रगट लोगस्त कही के ॥  
श्रीखरतरगञ्ज सिणगारदारजंगम युगप्रधान जट्टारक दादाजी श्री  
जिनदत्त सूरिजी चारित्र चूमामणीजी आराधवा निमित्त करेमि  
काउस्तगं ॥ अन्नचू० कहि के, एक लोगस्तका काउस्तग करे,  
पीठे प्रगट लोगस्त कह के

॥ श्रीखरतरगञ्ज सिणगारदार जंगमयुग प्रधान जट्टारक दा-  
दाजी श्रीजिन कुशल सूरिजी चारित्र चूमामणिजी आराधवा निमित्त  
करेमि काउस्तगं ॥ अन्नचू० कहि के एक लोगस्तका काउस्तग  
करे. पीठे प्रगट लोगस्त कहि धैठ के भावो गोमो उंचो करि के  
खमासमण देई के, इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करुं जी.  
ऐसे कहि के चैत्यवंदन करे.

॥ अथ चउकसाय ॥

॥ चउकसाय पद्मिद्धूर्ण, उऊय मयण बाण मुसुमूरण  
॥ सरस पियंगु वन्नु गय गामिउ, जयउ पास चुवणत्तय सामिउ  
॥ १ ॥ जसु तणु कंति कमप्पसिणिद्धउ, सोहइ फणमणि किरणा  
विद्धउ ॥ नंनव जलहर तन्निद्धय लंठिय, सो जिणु पासु पयष्ठय  
वंठिय ॥ २ ॥

॥ अर्हन्तो जगवंत इन्द्रमहिताः सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता, आ-  
चार्या जिनशासनोन्नतिकरा पूज्या उपाध्यायका ॥ श्रीसिद्धातसु-  
पाठका मुनिवरा रत्नत्रयाराधका, पंचैते परमेष्ठिन. प्रतिदिन  
कुर्वतु वो मंगलम् ॥ १ ॥

॥ पीठे नमुचूणसे ले के जयवीधराय पर्यंत कहि के पस्की,  
चउम्मासी अरु सवछरीके रोज तो बनी शाति सुणे, परंतु और

दिनोमें ठोटी शांति गुण, मो लिखते हैं

॥ अथ लघुशांतिस्तवः ॥

॥ शांति शांतिनिशात, शांतं शांताशिव नमस्कृत्य ॥ स्तोतुं  
शांतिनिमित्त, मंत्रपदै शांतये स्तौमि ॥ १ ॥ उमिति निश्चतव-  
चसे, नमो नमो जगवतेऽर्हते पूजाम् ॥ शांति जिनाय जयवते,  
यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥ २ ॥ सकलातिशेपकमहा, सपत्ति-  
समन्विनाय शश्याय ॥ त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनम शांतिदेवाय  
॥ ३ ॥ सर्वामरसुसमूह, स्वामिकसपूजिताय निजिताय ॥ ज्ञुवन-  
जनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥ सर्वदुरितौघना-  
शन, कराय सर्वाशिवप्रशमनाय ॥ दुष्ट ग्रह ज्ञूतपिशाच, शाकि-  
नीना प्रमथनाय ॥ ५ ॥ यस्येति नाम मंत्र, प्रधानवाक्योपयोग-  
कृततोपा ॥ विजया कुरुते जनहित, मित च नुता नमत त शांतिम्  
॥ ६ ॥ जवतु नमस्ते जगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥  
अपराजिते जगत्या, जयतीति जयावहे जवति ॥ ७ ॥ सर्वस्यापि  
च सघस्य, जद्र कळ्याण मंगलप्रददे ॥ साधूना च सदा शिव, सुतु-  
ष्टिपुष्टिप्रदे जीर्या ॥ ८ ॥ ज्ञयाना कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि !  
सत्त्वानाम् ॥ अज्ञय प्रदाननिरते, नमोस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यम् ॥  
९ ॥ ज्ञकाना जन्तूना, शुजावहे नित्यमुद्यते देवि ! ॥ सम्यग्दृ-  
ष्टीना धृति, रति मति बुद्धि प्रदानाय ॥ १० ॥ जिनशासननिरताना,  
शांतिनतानां च जगति जनतानाम् ॥ श्रोसपक्वैर्चि यज्ञो, वर्द्धिनि !  
जय देवि विजयस्व ॥ ११ ॥ सखिलानल विपविपधर, दुष्ट ग्रह राज  
रोगरणजयत ॥ राक्षस रिपुगण मारो, चौरेतिश्वापदादिज्य ॥ १२  
॥ प्रथरक्षरक्ष सुशिव, करु कुरु शांति च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टि  
कुरु कुरु पुष्टि, कुरु कुरु स्वस्ति च कुरु कुरु त्व ॥ १३ ॥ जग-  
वति गुणवति शिवशांति, तुष्टि पुष्टिस्वस्तिह कुरुकुरु जनानाम् ॥

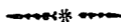
उ मेति नमो नमो ह्यौ, ह्यौ हूँ हूँ. यः कः ह्यौ फट् फट् स्वाहा ॥ १४ ॥  
 एवं यन्नामाकर, पुरस्मरं संस्तुता जया देवी ॥ कुरुते शांतिं नमता,  
 नमो नमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥ इति पूर्वसूरि दर्शित, मंत्रपद-  
 विदर्शित. स्तव शांते ॥ मल्लिलादिजय विनाशी, शात्यादिकरश्च  
 जक्तिमताम् ॥ १६ ॥ यश्चैनं पठति सदा, शृणोति ज्ञावयति वा  
 यथायोग्यम् ॥ स हि शांतिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥  
 उपसर्गा. क्यं याति, विद्यते विघ्नवद्भयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति,  
 पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ १८ ॥ सर्वमंगल मागढ्यं, सर्व कल्याण  
 कारणम् ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैन जयति शासनम् ॥ १९ ॥ इति ॥

॥ पीठे चौराकका अथवा बीजलीका चादणा पन्ना होय तो  
 इरियावहि० तस्मुत्तरी० अन्नहू० कहि कै, एक लोगस्तका कान-  
 स्सग करे, पीठे प्रगट लोगस्त कही पूर्वली परे सामायिक पारे,  
 पीठे एक स्तवन दादाजीको कहे ॥ इति देवतो पम्कमण  
 विधिः संपूर्णः ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

॥ कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्जसमगौरी ॥  
 कमले स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेवता सौख्यम् ॥ १ ॥ ज्ञाना-  
 दिगुणयुतानां, स्वाध्यायध्यानसयमरतानाम् ॥ विदधातु च्चुवनदेवी,  
 शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥ २ ॥ यस्या क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः  
 साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्रदेवता नित्यं, ज्ञूयान्नः सुखदायिनी ॥  
 ३ ॥ इति क्षेत्रदेवता स्तुति ॥

॥ कल्याणकमला गेह, नीलदेहं महासहं ॥ नवखंभान्निघं  
 पार्श्वं, सदा व्यायामि मानसे ॥





॥ अथ छुटक चैत्यवदनस्तुतिलिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्रीपार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ सकलकुशलवद्भ्यो, पुष्करावर्त्तमेघो, डुरिततिमिरज्जानुः,  
कल्पवृक्षोपमान. ॥ ज्वजलनिधिपोत सर्वसंपत्तिहेतु, स ज्वतु  
सतत व, श्रेयसे श्रीपार्श्वदेवः ॥ १ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन ॥

॥ अथ जिनस्तुति ॥

॥ दर्शनादुरितध्वसो, वदनादिञ्चितप्रद ॥ पूजानात्पूरकः  
श्रीणा, जिन साक्षात्सुरद्रुम ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ आदिजिन स्तुति ॥

॥ सुवर्णवर्ण गजराजगामिन, प्रलववाहु सुविशाललोचनम्  
॥ नरामरेंद्रै. स्तुतपादपकज, नमामि जक्त्या रूपज्ञ जिनोत्तमम् ॥  
३ ॥ इति आदिजिनस्तुति

॥ अथ शातिजिन स्तुति ॥

॥ सोलम जिनवर शातिनाथ, सेवो शिर नामी ॥ कचन  
वरण शरीर कापि, अतिशय अज्जिरामी ॥ अचिरा अगज विश्व-  
सेन, नरपति कलचद ॥ मृगलठन धर पद कमल, सेवे सुरनरवृद  
॥ जुगमा अमृत लेहवी ए, जास अखरित आण ॥ एक मने  
आराधता, लदिये कोमि कड्याण ॥ ४ ॥ श्रीशातिनाथस्तुति ॥

॥ अथ नेमिनाथस्तुति ॥

॥ प्रह सम प्रणमं नेमिनाथ, जिनवर जयवत ॥ यादव-  
कुल अवतस हस, उत्तम गुणवत ॥ समुद्रविजय शिवा देरी  
जास, मति राहित उदार ॥ सुंदर श्याम शरीर ज्योति, सोहे  
सुखकार ॥ गढ गिरनारे जिण तह्यु ए, अमृत पद अज्जिराम ॥  
तास क्कमा कड्याण मुनि, निशिदिन नमत कड्याण ॥ ५ ॥ इति  
धीनेमिनाथ ०

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ पुरसादाणी पास नाह, नमिये मन रग ॥ नील वरण  
अश्वमेन नद, निरमल नि शरु ॥ कामित् पूरण कल्प साख, वामा-  
सुत सार ॥ श्रीगोप्ती पुर स्वामि नाम, जपिये निरवार ॥ त्रिज्जु-  
वनपति त्रेवीशमो ए, अमृत सम जनु वाण ॥ ध्यान धरंता  
एहनु, प्रगटे परम कळवाण ॥ ६ ॥ इति पार्श्वनाथ स्तुतिः ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुतिः ॥

॥ वंदूं जगदाधार सार, शिव सपात्ते कारण ॥ जन्म जरा  
मरणादि रूप, जव ताप निवारण ॥ श्रीसिद्धारथ तात मात,  
त्रिशला तनुजात ॥ सोवन वरण शरीर वीर, त्रिज्जुवन विख्यात  
॥ अमृतरूपे राजतो ए, चोवीशमो जिनराय ॥ कृमाप्रमुख कळवाण  
मुणि, आपो करि सुयसाय ॥ ७ ॥ इति श्री महावीर ॥

॥ अथ पाक्षिकादि पद्धिक्रमणविधिर्लिख्यते ॥

॥ तिहा प्रथम वंदितु सूत्र पर्यंत दैवमिक पद्धिक्रमी ॥ १ ॥  
खमाममण देई देवसी आलोश्य पद्धिक्रता ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ पद्धिय मुहपत्तो प.रुलेहु ? चन्मासीएं चन्मासियं मुह-  
पत्ती, सचचरीये सवचरी मुहपत्ती पद्धिलेहु ? एम कहे पीठे गुरु  
कहे, पद्धिलेहेह ॥ पीठे इच्छ कहे, दूत्री खमाममण देई, मुहपत्ती  
पद्धिलेही, वाढणा देई, तिहा पद्धिक्रमे पद्धिक्रतो ॥ चन्मासी  
पद्धि ॥ चन्मासीच वद्धिक्रतो सवचरीमे सवचरो वद्धिक्रतो. एम  
यथायोगे कहे ॥ पीठे गुरु कहे पुण्यवंतो देवसीने स्थानके पा-  
स्त्रिक ॥ चन्मासिक सांवचरिक जणजो ठीक जयणा करजो  
मधुर स्वरे पद्धिक्रमजो, खासे सो विवरा शुद्ध खासजो मांरुलमे  
सावचेत रहेजो, पीठे सघलाही तहत्ति कहे ॥ पीठे ऊठी ॥  
इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सवुद्धा खामणेण ॥ अष्टुच्छिमि अष्टि-

तर पस्क्रियं ॥ ३ ॥ स्वामेजं ? गुरु कहे, स्वामेद ॥ पीठै मस्तके  
 अजलि करतो अको, इच्च स्वामेमि पस्क्रिय ॥ ३ ॥ कही, गोमालीयें  
 वेसी मस्तक नमावी दक्षिण हाथ गुरु साहामो करो, मुहपती  
 मुखें देई ॥ पस्क्रियें पनरसद्गु दिवसाण पनरसद्गु राईण ज किचि-  
 अप्पत्तिय ॥ इत्यादि सर्व पाठ कहे. चउमासें चउद्गु मासाण अ-  
 षद्गु परकाण वीसोत्तरसो राडदियाण जं किचि अप्पत्तिय ॥ इत्यादि  
 कहे. संवछरीयें डुवालसद्गु मासाणं चउवीसद्गु परकाणं तिनितय-  
 सठिराईदियाणं ॥ ज किचि अप्पत्तियं इत्यादि कहे ॥ तेवारे गुरु  
 पण मिच्छामि डुक्कडं कहे ॥ तिहा वीय साधु उचरता हुवे तो पा-  
 खियें तीन, चउमासीयें पाच, संवछरीये सात साधुने खमावे ॥  
 ॥ पीठें उठी अवग्रहमाहि रह्यो कहे ॥ इच्छा० ॥ स० ॥ ज० ॥  
 पस्क्रियं आलोवुं ? गुरु कहे आलोएह ॥ पीठै इच्च आलोएमि, जो  
 मि पस्क्रिउ ॥ ३ ॥ अश्यारोकउ, इत्यादि सूत्र जणी ॥ सक्षेपे  
 अथवा विस्तारें पाखी चउमानी संवछरी, अतिचार आलोवे, सो  
 लिखते है ॥

### ॥ अथ वृहदतिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणमि दसणमिय, चरणमि तवेय तहय विरियमि ॥  
 आयरणं आयारो, इअ एसो पचहामणिओ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार १,  
 दर्शनाचार २, चारित्रार ३ तपाचार ४, वीर्याचार ५ एव पाच  
 विधि आचारमाहि जिको अतिचार पक्ष दिवसमाहि सूक्ष्म, वादर,  
 जाणता अणजाणतां हुओ होई, ते सहू मन, वचन, कायाइ करी  
 मिच्छामि डुक्कड ॥

॥ अथ ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥

॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वजण

अत्य तदुभय, अष्टविधो नाण मायारो ॥ १ ॥ ज्ञान-कालवेला-  
 मांदि पढिउं गुणिउं नही, अकाले पढिउ, विनय हीन बहुमान  
 हीन उपधान हीन श्री उपाध्यायकने नही पढिउं, अथवा अनेरा-  
 कने पढिउं अनेरो गुरु कह्यो व्यंजन अर्थ तदुभय कूडो पढ्यो, देव  
 चांदणे पढिक्कमणे सिध्दाय करतां, पढतां, गुणतां, कूडो अक्षर काने  
 मात्रे अधिको ओछो आगल पाछल भण्यो, सूत्र अर्थ कूडा भण्णा,  
 भणीने वोसायो, तपोधन तणे धर्मे काजो अण ऊधरे दांडो अण-  
 पडिलेही, वसती अणसोधी, असिध्दाई अणोज्ञा कालवेलामाहि  
 दर्शवैकालिक प्रमुख सिद्धात भण्यो गुण्यो, योग वह्यां पखें भण्यो  
 ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणो, कवली, नवकरवाली, सांपडा  
 सापडो वही दस्तरी ओलीया कागल प्रमुखप्रते आशातना दुई,  
 पग लागो थूक लागो ओसासे मूक्यो कने छता आहार नोहार  
 कीधो, ज्ञानद्रव्य भक्षण भक्षण उपेक्षण कीधो, प्रज्ञापरार्थे विणाश्यो  
 विणसतो उवेख्यो, छती शकें सार सभाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रते  
 मद्यर वह्यो, अवज्ञा आशातना कीधी, कोई प्रते भणतां गुणता  
 प्रदेष मत्सर अतराय अपवात कीधो मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधि-  
 ज्ञान, मन पर्यवज्ञान, केवलज्ञान ए पाच ज्ञानतणी असद्वहणा  
 क्कोधी, कोई तोतडो वोवडो हस्यो, वितक्यो आपणा जाणपणा  
 तणो गर्व चित्तव्यो, अष्टविध ज्ञानाचार विषड्डं जिको अतिचार  
 पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, वादर, जाणता, अजाणतां, हुवो होय, ते  
 सहु मन वचन कायाइ करी मि० ॥

॥ दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥

॥ निस्संकिय निक्कखिअ, निधितिगिच्चा अमूढदिद्धो अ ॥  
 उववूह यिरोकरणे, वच्चल पभावणे अह ॥ १ ॥ देव गुरु धर्म तणे  
 त्रिषे निशकपणो न कीधो तथा एकांत निश्चय धर्मो नही,

सघलाइ मत भला छे, पहवी श्रद्धा कीयी, परमसयधिया फलतणे विषे नि सदेह बुद्धि धग नही चारित्रिया साधु साववो तणा मल-मलीन गात्र देखी दुगच्छ उपजावो, मिथ्यास्वीतणो पूजा प्रभावना देखो, मृदृष्टिपणो कीधो, सधमाह गुणवततणो अनुपबृंहगा अस्थिरी करण अवात्सल्य अप्रीति अभक्ति चितवो सधमाहे थिगेकर-रण वात्मल्य शक्ति छते प्रभावना न कीधो, देवद्रव्य विनाशिउ, विणसतु उवेसीउ, छतो शक्ते सार सभाल न कीधो, साधर्मिकशुं कलह कर्म कीधु, जिन भवन तणो चोराशी आशातना कीधी, गुरुप्रते तेत्रीश आशातना कीधी, अप्रीतवस्त्रे देवपूजा कीधी, तिहुं ठाम पासं देवपूजा, वासकूपी कलश तणो ठवको लागो, मुसतणो वाफ लागी, ठवणारिय हाथथको पडीओ, पडिलेहवो वीसारयो, नवकरवालोनें पग लागो, दर्शनाचार विपर्ययो जिको अतिचार० ३

॥ चारित्राचारना आठ अतिचार ॥

॥ पणिहाणजोगजुत्तो, पंचहि समिईहि तिडि गुत्तोहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविडो हाइ नायवा ॥ १ ॥ डरियासभितो १, भासासमितो २, एषणारगितो ३, आयाणभडमचनिस्रेणणासमितो ४, उचारपासवणखेलजलसचाणपारिष्ठावणोयासभितो ५ मनोगुप्ति १, वचनगुप्ति २, कायगुप्ति ३, ए पच समिती तीन गुप्ति, रुडी पें पाली नही ॥ साधु तणें सदैव श्रावक तणे पोसह पडिकमणे लीवे अष्टविध चारित्राचार विपर्ययो जिको अतिचार० ॥ २ ॥

॥ विरोपत श्रावकतणें वमें श्रीसम्यक्त्वमूल वारह व्रत श्री सम्यक्व्रतणा पांच अतिचार —संका कख विगिछा, पसस तह संयवो कुलिगीसु ॥ सका - श्रीअरिहत तणी बल अतिशय ज्ञान लक्ष्मी गाभीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा चारित्रियाना चारित्र जिनवचन तणो सदेह कीधो आकाक्षा ब्रह्मा विष्णु महेश्वर क्षेत्र-

पाल गोगो गोत्रदेवता ग्रह पूज्या विणाइग हनुमंत इत्येवमादिक  
 ग्राम गोत्र देश नगर जूजूआ देव देराना प्रभाव देखी रोगें आ-  
 तर्के इहलोक परलोकार्थे पूज्या मान्या, बोद्ध साख्यादिक सन्यासी  
 भरडा भगत लिंगिया योगा दरवेश अनेराई दर्शनियानो कष्ट मत्र  
 चमत्कार देखी, परमार्य जाण्या विण मूल्या, अनुमोद्या, कुरास्र  
 शोक्यां मगण्यां-शराव संवत्सरी होलो बलेव माहीपूनिम अंजो-

त्रीज विणायगचोथ नागपाचम झूलाच्छ  
 उम नउली नवम अहवदसम व्रत इग्यारस व-  
 जनतचौदश आदित्यवार उत्तरायण नवोदद,  
 कीधा, पिपल पाणो घाल्यां घलाव्यां घर  
 दी समुद्र कुडमें पुण्य हेतु स्नान कीधां, दान  
 र माहमास नवरात्रि नाहिया, अजाणना  
 व्रतोलां कीधा, कराव्यां विचिकिडा -धर्म-  
 सदेह कीधो जिण अरिहंत धर्मना आगर  
 मोक्षमार्ग दातार देवाधिदेव बुद्धें शुद्ध भावें  
 , महात्माना भात पाणो तणो दुगंछा कीधी,  
 वारित्रिया ऊपरे अभाव हुआ मिथ्यात्वी तणो  
 वा कीधो, प्रीति भाडो, दाक्षिणलगे तेहनो धर्म  
 तविधे अनेरो जिको अतिचार पक्ष दिवसमाहि  
 ना अजाणतां हुआ होय, ते सहू मन, वचन,  
 मे० ॥ १ ॥

।णातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार वहं  
 भारे भत्तपाण बुझेए ॥ द्विपद चउपद प्रतें  
 प्रहार घाल्यो, गाढे वधन वांच्यां, घणे भारे  
 कर्म कीधा. चारा पाणी तणी वेला सार सं-

नियम जे कोई अजाणे भागे, एक गमा सकोडी बीजी गमा  
वधारी, विम्भति लगे अथक भूमि गया, पाठवणी आधी  
मोकली ॥ छठे दिग्ब्रत वि० ॥ ६ ॥

॥ सातमे भांगोपभोग परिमाण ब्रत ॥ जेहना भोजन  
आश्री पाच अतिचार अने करमहूनी पन्नरे, एव वीश अतिचार ॥  
सञ्चित पडिये, अपोल दुष्पल्य च आहार० सञ्चित तणे नियम  
लीधे अधिक सञ्चित लीधु, तथा सञ्चित मली वस्तु अपक्काहार  
दुपक्काहार तुष्टौपधि तणु भक्षण कीधु होला उवी पहुक काकडी  
भड्यां कीधा, सुल्या धान प्रसुस भक्षण कीधा ॥ सञ्चित दव्व  
विगई, पाणह तनोलवच्च कुसुमेसु ॥ वाइण सयण विलेवण,  
घम दिसि ण्हाण भत्तेसु ॥ १ ॥ ए चवदे नियम दिन प्रते सभार्या  
सक्षेप्या नहिं, लेई नियम भाग्या वावीस अभक्ष, वत्तीस  
अनंतऋयमाहि आदु मूला गाजर पींडालू स्रण सेलरां काची  
आवली गोल्हां खाधा, चोमासा प्रसुसमाहे वासी कठोलनी  
रोटी खाधी. त्रिहु दिवसनु दही लीधु, मधु महुडा माखण  
माठी वैगण पीलू पीचू पपोटा पीपी विष हीम करहा घोल  
वडा अणजाण्या फल टीवरु अथाणु आमणवेर काचुं मीठु, तिल  
सससस काचा कोठिवडा खाधां, रात्रिभोजन कीधुं, लगवगती  
वेलार्ये व्यालू कीधु, दिवस उग्या विण शिराव्या तथा पन्नरे कर्मा-  
दान इंगालिकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडीकम्मे दंत  
वाणिज्ये, लस्क वाणिज्ये, रस वाणिज्ये, केश वाणिज्ये, विष वाणिज्ये,  
जत पीलणकम्मे, निछंछणकम्मे, दवगिगदावणया, सर दह तलाव  
सोसणया, असई पोसणया, ए पाच वाणिज्य पांच कर्म, पाच  
सामान्य, महारभ लीहाला कराव्या. इंटवाह नीवाह पचाव्या.  
धाणी चणा पक्कान्न करी वेच्या. दासी माखण तपाव्या, अगीठा

कीधा कराव्या. तिलादिक सचीया, फागुण मास उपरांत राख्या, कूकडा सूडा प्रमुख पोष्या, अनेरुं जे कांडे बहु सावद्य कठोर कर्मादिक समाचर्यु ॥ सातमा भोगोपभोग व्रत विषइओ० ॥

॥ आठमा अनर्थ दंड विरमणव्रतना पांच अतिचार ॥ कंदपे कुकुइए० ॥ कदर्प लगे विटनी परें हास्य कुतूहल मुखादि अग कुचेष्टा कीधी, मूरसपणा लगे कुणहोने असवद्ध वास्य बोल्या. खाडा कटारो कुमि कुहाडा रथ ऊखल मूसल अगन घरटी आदिक सज करी मेल्या, माग्या आप्या, कणक वस्तु ढोर लेवराव्यां, अनेरो कांड पापोपदेश दीयो, अवोल नाहण, दांतण, पगधोअण पाणी तेल अधिक आप्यां, हीडोले हीच्या, राजकथा देशकथा भक्तकथा स्त्रीकथा पराइ वात कीधी, आर्त्त रौद्र ध्यान ध्यायां, कर्कश वचन बोल्या, करडका मोड्या, सभेडा लाया, भेसा सांड कूकडा, मिढा श्वानादि जूझतां कलह करता जोया, खाधी लगे अदेखाई चिंतवो माटी मीठुं कण कपासिया काजविण चांप्या, तेह उपर बयठा, आले वनस्पति खुदो, छास पाणी विरस तेल गुल आम्लवेतरस बेरजादिक तणां भाजन उघाडां मूक्यां ते माहि कीडो कथुआ माखी उंदर गिरोलो प्रमुख जीव विणठा, सूडा प्रमुख जीव क्रीडा हेंतें बांधी राख्या, घणी निद्रा कीधी, राग द्वेष लगे एकने रुद्धि परिवार वाळी एकने मृत्युहाणि विमासी आठमा अनर्थ दंडव्रतवि० ॥

॥ नवमा सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुष्पणिहाणे सामायिक लीधे मन आहट दोहट चितव्यु, वचन सावद्य बोल्युं, काय अण पडिलेह्यु हलाव्यु, छती वेलाइं सामायिक न लीधु, सामायिक लई उघाडे मुस बोल्या, ऊव आवी कीधी, बीज दीवा तणी उजाही लागी कण कपासोया माटी मीठु नील फूल



हरिकान्यना संघट्ट हुआ, पुरुष तिर्यचना संघट्ट हुआ, तथा स्त्री तिर्यची आभडी, मुहपत्तोयो संघट्टी, सामायिक अण प्रउ पारिउ पारतुं वीसारिउ, नवमे सामायिक व्रतविपइयो० ॥

॥ दशमे देशावकाशिक व्रतें पाच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे० ॥ आणवणप्पओगे पेसवणप्पओगे सहाणुवाइ रूवाणुवाइ वहिया पुग्गल स्केवे ॥ नियमित भूमिकामाहिवाहिर थकी फाइ अणाव्यु, आप कन्हाथी वाहिर मोकल्या, साद करी रूप देखाडी काकरी नाखी आपणपणुल्लतु जणाव्यु ॥ दशमे देशावकासिग व्रतविपइयो० ॥ १० ॥

॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतें पांच अतिचार ॥ सथारुच्चार विही, पमाय तह चेव भोअणा सोए० ॥ पोसह लीये सथारा तणी भूमि वाहिरला थंडिलां दिवसे शोध्या पडिलेह्या नहीं, मातरु अणपडिलेहुं वावरिउ, अणपुजी भूमिकाइ परठविउ, परठवतां चिन्तवणा न कीधी, अणुजाणहजस्सुग्गहो न कह्यो परठव्या पुठें वार त्रण घोसिरामि वोसिरामि न कह्यु पोसहशालामाहि पइसता नीसरतां निस्सही आवस्सही कहेवी घोसारी, पृथ्वीकाय, अप्पकाय तेऊकाय चाउकाय वनस्पतिकाय त्रसकाय तणा संघट्ट परिताप उपद्रव हुआ, सथारा पोरसि तणो विधि भणवो वीसारिओ पोरमिमाहि उघ्या, अविधि सथारु पाथरुं, काल वेलायें पडिकमणुं न कीधु, पारणादिक तणी चिता निपजावी, कालवेला देव वादवा वीसारिया, पोसह असूरो लीयो, सवागे पारोयो, पर्व तिथि आवी पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमे पोषधोपवास व्रतविपइयो० ॥

॥ वारमे अतिथि सविभागव्रते पाच अतिचार ॥ सच्चित्ते निस्सवणे० ॥ सच्चित्तवस्तु हेठे ऊपरि यके महातमा व्रतें असूझतु दान दीधुं, अदेवा तणी बुद्धें सूझतु फेडी असूझतुं कीतुं, देवा

तणी बुद्धे असूझतु फेडी सूझतु कीधु, आपणु फेडी परायुं कीधुं, विहरवा वेला टलि गया असुग फरी महातमा तेज्या, मन्त्ररलगे दान दीधुं, गुणवत आवे भगति न साचवी, छती शक्ति साध-  
र्मिक वात्सल्य न कीधु, अनेराइ धर्म क्षेत्र सीदाता छती शक्तें उद्धर्या नही ॥ वारमं अतिथि संविभाग व्रतविषयो० ॥

॥ संलेहणा तणा पाच अतिचार इहलोए परलोए० ॥  
इहलोका ससप्पन्गे परलोगाससप्पन्गे जीविआससप्पन्गे मरणा ससप्पन्गे कामभोगाससप्पन्गे इहलोक मनुप्यभव मान महत्व लोक तणी सेवा ठडुराई बलदेव वासुदेव चक्रवर्ति पद वांछया. परलोक इद्र अहमिद्र देवाधिदेव पदवी वाळी, सुख आव्ये जीव वा तणी वाळा कीधी, दुःख आव्ये मरवातणी वांछा कीधी, कामभोग तणी इच्छा कीधी ॥ सलेहणाव्रतवि० ॥

॥ तपाचार वारभेदे ॥ छ अभ्यंतर, छ बाहिर, अणसणमू णोयरिया, अणसण कधीयें उपवाम, ते पर्वतियि छती शक्त कीधु नही ऊणोदरी ते पाच सात कवल ऊणा रह्या नही. द्रव्य सक्षेप विगय प्रमुख परमाण कीधु नही आत्तनादिक काय किलेश न कीधो, संलीणता अंगोपांग सकोच्यां नही, नवकारसी पोरसी गठसी मूठसी साढपोरसि पुरिमद्ध एकासणो बेआसणो नीवी आंबिल प्रमुख पच्चस्काण पारवा वीसार्था. बेसता नवकार भण्यो नही, ऊठतां दिवसचरिम न कीधुं, नीवी आंबिल उपवासादिक तप करी काचुपाणी पीधुं, वमन थयु ॥ बाह्य तपव्रत विषयो० ॥

॥ अभ्यतर तप॥ पायञ्चित विणओ० गुरुकने मन सुद्धें आलोयणा लीधी नही, गुरुदत्त प्रायञ्चित तप लेखा शुद्ध पुह-  
चाडयु नहीं, देव गुरु संघ साहम्मो प्रते विनय साचव्यो नही, वा-  
चना पृथना परावर्तना अनुप्रेक्षा धर्मकथा लक्षण पंचविध, सिज्जाय

कीधी नहीं, धर्मध्यान शुद्धध्यान ध्यायुं नहीं, कर्म क्षय निमित्त  
लोगस्त दस वीसनोकाउस्तग्ग न कीयो ॥ अभ्यतरतप विषइयो ॥

॥ वीर्याचारना तीन अतिचार ॥ अणगूहिय बलविरीओ,  
परिक्कमड जो जहुत ठणेषु ॥ जुजइअ जहा थाम, नायबो वीरि-  
यायारो ॥ १ ॥ पढवे गुणवे विनय वेयावच्च देवपूजा सामायिक  
दान शील तप भावना प्रमुख धर्म कृत्यतणे विषे मन वचन  
कायतणु छतु बल वीर्य गोपव्यु, रूडा पचाङ्ग खमासमण न दीधा,  
वेठा पडिक्कमणु कीधु ॥ वीर्याचारव्रत विषइयो ॥

॥ नाणाइ अइ अइ वय, समसलेहण पण पनर कम्पेसु ॥  
वारस तवविरिअ तिग, चउवीस सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाण  
करणे ॥

॥ जिनप्रतिषिद्धवावीस अभक्ष्य वत्तीत अनत काय बहुबीज  
भक्षण महाआरभ महापरिग्रहादिक क्रोधा, नित्यकृत्य देवपूजा  
सामायिकादिक तथा तीर्थ यात्रादिक न क्रोधा, जोवाजीवादि वि-  
चार सद्विद्या नहीं, आपणी कुमति लगे उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी,  
प्राणातिपात १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह  
५, क्रोध ६, मान ७, माया ८, लोभ ९, राग १०, द्वेष ११,  
कलह १२, अभ्याख्यान १३, परपरिवाद १४, पैशून्य १५, अर-  
तिरति १६, मायामृषावाद १७, मिथ्यात्वरात्य १८ ए अदारह  
पापस्थानकमाहि जे काइ कीयो कराव्यो अनुमोद्यो ॥ एव प्रकारे  
श्रावक धर्मे श्रा सम्यक्तत्व मूल वारह व्रत चोवीसा सो अतिचार  
माहि जि को कोइ अतिचार पक्ष दिवतमाहि सूक्ष्म बादर जाणता  
अजाणतां दुवो होय ते सहू मन वचन कायार्थे कगे मिद्यामि दु-  
क्कड ॥ इति श्रीश्रावकोंके वारह व्रतका अतिचार सपूर्ण ॥

॥ पीठें सद्यस्त्वपि पश्चिम ॥ इत्यादि इच्छाकारेण संदिस्तद्  
 पर्यंत कहे. तेवारे गुरु कहे. चन्द्रेण पश्चिमह, चन्द्रमासे ठठेण  
 पश्चिमह संवहरार्ये अठमेण पश्चिमह इच्छं तस्त्विच्छामि इच्छमं  
 कही छादशावर्त्त वादणा देवे. पीठें इच्छाकारेण संदिस्तद् जगवन्,  
 देवसिय आलोश्यं पश्चिमता ॥ १ ॥ पत्तेयखामणेणं, अष्टुठिठिमि  
 अप्रितरपश्चिमं ॥ २ ॥ स्वामेऊ ? गुरु कहे स्वा० ॥ पीठें इच्छं स्वामेमि  
 पश्चिमं ॥ ३ ॥ इत्यादि पाठ सर्व पूर्व कहे, तिम कही मिच्छामि  
 इच्छमं देई खमाये, पीठें वे वादणा देई. जगवन् ! देवसिय आलोश्यं  
 पश्चिमता पश्चिम ॥ ३ ॥ पश्चिममायह ? गुरु कहे सम्मं पश्चिमह पीठें  
 इच्छ कही करेमि जते सामाश्यं ॥ इच्छामि ठामि काउस्तगं जो मे पश्चिम  
 ॥ ३ ॥ इत्यादि कही, तस्सुत्तरी० अन्नबू० ॥ कही ॥ काउस्तग करे, गुरु,  
 पाखीसूत्र कहे, ते साजले, अने गुरुथको जूदा पश्चिमता हुवे, तो  
 एक आवक खमामण देई कहे. जगवन् ! सूत्र जगु ? गुरु कहे,  
 जणेह. एते वचन मनमें थारी ॥ इच्छ कही, उजो थको, हाथ जोमी  
 सुहपत्ती मुखें देई, तीन नवकार कही, मधुर स्वरें सूत्रार्थ मनमें  
 चितवतो वंदेत्तु सूत्र गुणे बीजा आवक करेमि ज ते० इच्छ मि  
 ठामि काउस्तग तस्सुत्तरी० अन्नबू० कही काउस्तगमें रह्या  
 सुणे सूत्रप्राते एमो अ रेहंतालं कही काउस्तग पारी, उजा  
 थका तीन नवकार गुणी वेसे पीठें ॥ ३ ॥ नवकार ॥ ३ ॥ करेमि  
 जं ते कही, इच्छामि पश्चिमिच्छ जो मे पश्चिम ॥ ३ ॥ इत्यादि  
 कही, वंदित्तु सूत्र गुणे, पश्चिममे देवसिय सधं ॥ एहने ठिकारें  
 पश्चिममे पश्चिम, चन्द्रमासिय सवहरियं सधं कहे. पीठें ऊठी, अष्टु-  
 ठिठिमि थाराहणाए इत्यादि पूर्ण जणी, खमासमण देई इच्छा०  
 ॥ स० ॥ ज० ॥ मूलगुण उत्तरगुण अतिचार विशुद्धि निमित्तं,  
 काउस्तग करू ? गुरु कहे करेह. पीठें इच्छं कही, करेमि जते

सामा० इष्टामिं ठामिं कान्तस्तग्ग तस्मु० अन्ननू० इत्यादि कही,  
 पाखीये वार लोगस्त चन्मास्तिये वीस लोगस्त लवचरीयें चालीस  
 लोगस्तनो कान्तस्तग्ग के, एरु नवकार ऊपर, कान्तस्तग्ग करी  
 पारी लोगस्त कहे वेसी मुहुपत्ती पम्जिहेही, वे वादणा देई इष्टा०  
 ॥ स० ॥ ज० ॥ समाप्ति खामणेण ॥ अष्टुष्टिप्रोमि अष्टितर प  
 स्त्रिय ॥ ३ ॥ स्वामेज्ज ? गुरु कहे स्वामेह पीठे इष्ट स्वामेमि प-  
 स्त्रिय ॥ इत्यादि पाठ पूर्व कहे तिम कहे, पीठे इष्टाका० ॥  
 सं०॥ज०॥पाखी॥३॥ स्वामणा खामू ? गुरु कहे, पुण्यवंतो चार वेर  
 स्वमात्तमण देई तीन तीन नवकार कही, पाखी ॥ ३ ॥ समाप्त  
 स्वामणा स्वामेह, पीठे श्रावक एरु स्वमात्तमण देई. मस्तक नीचु  
 नमावी, तीन नवकार गुणे, इम चार वार कहे, पीठे गुरु कहे  
 निष्ठारग पारगाहोह पीठे श्रावक कहे. इष्ट इष्टामि अणुसठिं कही,  
 गुरु कहे, पुण्यवंतो पाग्धीने लेखे, एरु उपवास अथवा दोय आ-  
 श्वित अथवा तीन नीची, अथवा चार एकासणा, अथवा वे  
 हजार सज्जाय करी, एक उपवासनी पेंठे पूरज्यो, पाखीनें स्थानके  
 देवसिक जणजो एम चन्मासे ए सर्व डुगुणो कहणो, लवचरीयें  
 त्रिगुणो कहणो पीठे जिणें तप कीधो हुवे ते पइठियं कहे, न  
 कीधो हुवे ते तदत्ति कहे ॥ पीठे वे वादणा देई, अष्टुष्टिप्रोमि अ-  
 ष्टितर देवसिय स्वामेमि इत्यादि कहे पीठे वे वादणा देई आय  
 रिय नवप्राए० तीन गाथा कहे, इम आगे सर्व विधि देवसिक  
 पढिक्कमणानी करे, पण इतरो विशेष है. श्रुतदेवतानो कान्तस्तग्ग  
 करी स्तुति कहे. पीठे जण देवयाए करेमि कान्तस्तग्ग. इत्यादि  
 विधे जवनदेवताको कान्तस्तग्ग करी स्तुति कहे, सो लिखते है.

॥ अथ भुवनदेवता स्तुति ॥

॥ चतुर्वर्णाय संघाय, देवी ज्जुवनवासिनी ॥ निहत्य डुरि-  
 तान्येषा, करोतु सुखमकथम् ॥ १ ॥

॥ क्षेत्रदेवतानो काउस्तग्ग करे, तथा तीने पर्वे वडा स्तवन, अजितशाति कहणी, लघु स्तवन उपसर्गहर स्तोत्र कहणो, तथा पक्कमणो पूरो हुवा पीठे एक श्रावक गुर्वाज्ञायें, नमोऽर्हत्सि-  
द्दा० कही, वडी शातिका स्तोत्र कहे, धोजा सर्व सुणे, जिनने रात्रि पोसह न हुवे, ते पोसह सामायिक पारी साजले ॥ इति पाक्षिकादि तीन पडिक्कमणविधि ॥

॥ अथ दस पञ्चख्वाणविचार लिख्यते ॥

॥ तिहा प्रथम चउदे नियम संजारे, सो इस तरे पञ्चख्वाण करे ॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं मुंसहियं पञ्चख्वाइ चउधिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्सण्णान्जोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेण सवसमाहिवत्तियागारेणं विगइउ पञ्चस्काइ. अस्सण्णान्जोगेणं सहसागारेणं लेवालेवणं गिद्धित्तंसिठेण उखिखत्तविवेगेण पनुच्चमस्किण्णं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं देसावगासियं जोगपरिजोगं पञ्चस्काइ अस्सण्णान्जोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरइ ॥ इति नवकारसी पञ्चस्काण ॥ १ ॥

॥ तथा जो श्रावक नियम संजारे नहिं, सो विगइका उर देसावगासिकका आगार न पञ्चस्के. निकेवल नवकारसी आटिक पञ्चस्काण करे. सो लिखते हैं ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहियं पञ्चस्काइ ॥ चउधिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्न० ॥ सह० वोसिरामि ॥ इति नवकारसी पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ २ ॥

॥ पोरसी मुठसी पञ्चस्कामि, उग्गए सूरे चउधिहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अस्सण्ण० ॥ सहसा० ॥ पण्णस्काणं दिसा मोहणं ॥ साहुवयणेणं सन्न० विगइउ पञ्चस्काणं दिसाणि तर्जनी

परं कद्वया ॥ इति पोरिसी पञ्चस्काण ॥ २ ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ इत माफक साठ पोरसीका पञ्चस्काण जाणना. इतना विशेष है, पोरसिं पञ्चस्काइके ठिकाने इहां साठपोरसिं पञ्चस्काइ कद्वयां ॥ इति साठ पोरसिपञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ६ ॥

॥ सूरे उग्गए पुरिमठ अवठ वा पञ्चस्काइ, चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० ॥ सह० ॥ पठ० ॥ दिसामो० ॥ साहु ॥ मह० ॥ सब० ॥ विगइउ पञ्चस्काइ इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति पुरिमठपञ्चस्काण ॥ ३ ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ पोरसि साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ, उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पठ० दिसामो० साहु० सब० एकासणं विआसणं वा पञ्चस्काइ. उविहं तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेण आउठणपत्तारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारि० मह० सब० देसावगासियं० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ४ ॥ इति एकासणं विआसणं पञ्चस्काण ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ पोरसि साठ पोरसि वा पञ्चस्काइ उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण० सह० पठ० दिसामो० साहु० सब० एकासणं एगठणं पञ्चस्काइ उविहं तिविहं चउविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह० सागारिआगारेणं गुरुअप्पुठाणेणं पारिठव० मह० सब० देसाव० इत्यादि पूर्ववत् ॥ ५ ॥ इति एकलठणं पञ्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसिं साठ पोरसिं वा पञ्चस्काइ. उग्गए सूरे चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं सा० अण० सह० पठ० दिसामो० साहु० सब० आयविल पञ्चस्काइ अणउ० सह० लेवालेवेणं गिहउसंतिठेणं उरिक्कविवेगेणं पारिठव० मह० सब० एकासणं पञ्चस्काइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण० सह०

सागारिआगाणेणं आउट्टणपसरिणं गुरुअप्पुवाणेणं पारिडा० मद्द०  
सव्व० वोत्तिरइ ॥ ६ ॥ इति आधिल पच्चस्काण ॥ आगार ॥ ७ ॥

॥ पोरसि साह पोरसिं वा पच्चख्वाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि  
आहारं असणं पाण खाइम साइमं अण्ण० सह० पच्च० दिसा०  
साहु० सव्व० ॥ निव्विगइयं पच्चख्वामि. अण्ण० सह० लेवालेवेणं  
गिहउसंसिठेण उख्खित्तविवेणेणं पमुच्चमख्खिएण पारि० मद्द० सव्व०  
एकासणं पच्चख्वाइ. तिव्विहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अण्ण०  
सह० सागा० आउट्ट० गुरु० पा० मद्द० सव्व० देसावगासियं  
जोगपरिजोगं पच्चख्वामि. अण्ण० सह० मद्द० सव्व० वोत्तिरामि  
॥ इति नीवी पच्चख्वाण ॥ आगार ॥ ८ ॥

॥ सूरे उग्गए अप्पत्तठ पच्चख्वामि. चउव्विहंपि आहारं असणं  
पाण खाइमं साइमं अण्ण० सह० मद्द० सव्व० देसावगासिय  
जोगपरिजोगं पच्चख्वामि. अण्ण० सह० म० सव्व० वोत्तिरामि ॥  
इति चउव्विहार उपवात्त पच्चख्वाण ॥ ९ ॥

॥ सूरे उग्गए अप्पत्तठ पच्चख्वामि. तिव्विहंपि आहारं असणं  
खाइमं साइमं अ० सह० पाणहार पोरसिं साह पोरसि पुरिमह  
अवद्धं वा पच्चख्वाइ अण्ण० सह० पच्च० दिसा० साहु० सव्व  
देसावगासियं जोगपरिजोगं पच्चख्वामि. अ० स० म० सव्व० वो-  
त्तिरामि ॥ इति तिव्विहार उपवात्त पच्चख्वाण ॥

॥ पोरसि साहु पोरसिं पुरिमहुं अवद्धं वा पच्चस्कामि. उग्गए  
सूरे चउव्विहंपि आहार असणं पाणं खाइमं साइम अ० सह०  
पच्च० दिसा० साहु० सव्व० एकासणं एगवाणं दत्तिय पच्चख्वामि.  
तिव्विहं चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अण्ण० सह०  
सागा० गुरु० मद्द० सव्व० विगइत्त पच्चख्वामि इत्यादि पूर्ववत्.  
देसावगासिय इत्यादि पूर्ववत् ॥ इति दत्तिपच्चख्वाण ॥ १० ॥



॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वाइ, चन्नव्विदंपि आहारं असणं पाणं  
खाइमं साइमं अण्णं सह० मह० सव्व० वोत्तिरइ ॥ इति दिव-  
सचरिम पञ्चख्वाण ॥ १० ॥

॥ दिवसचरिमं पञ्चख्वामि डुविहंपि आहारं असणं खाइमं  
अण्णं सह० मह० सव्व० वोत्तिरामि, देसावगासिय पूर्ववत् ॥ इति  
दिवसचरिम डुविहार पञ्चख्वाण ॥ ११ ॥

॥ पाणहार दिवसचरिम पञ्चख्वामि अन्नं सह० मह०  
सव्व० वोत्तिरामि ॥ इति पाणहार उपवासरो पञ्चख्वाण ॥ १२ ॥

॥ जवचरिम पञ्चख्वाइ तिविदपि चन्नव्विदपि आहार असणं  
पाण खाइमं साइमं अन्नं सह० मह० सव्व० वोत्तिरइ ॥ आगार  
॥ ४ ॥ जवचरिम, दो आगारकाजी होय ॥ इति जवचरिम पञ्चखाण ॥

॥ तथा इमहिज गंठिहि मुठिहि अंगुठसहि प्रमुख अ-  
ज्जिग्रह पञ्चख्वाणकेजी ए चार आगार, अन्नं सह० मह० सव्व०  
वोत्तिरइ ॥ पाचमो चोलपट्टागारेण सो साधुकों होय ॥ इति अ-  
ज्जिग्रह पञ्चख्वाण ॥

॥ अहर्णं जते तुह्माण समीवे देसावगासियं पञ्चख्वामि  
दधन्नं खित्तन्नं कालन्नं जावन्नं दव्वन्नं देसावगासियं खित्तन्नं उच्च  
वा अण्णत्तवा कालन्नं मुहुत्तधारणाप्रमाणं जावनियमं पञ्चख्वामि  
जावन्नं जावगहेण न गहिज्जामि ठलेण न ठलिज्जामि अण्णेण-  
केवि रायकेण वा एसो परिणामो न पन्निवज्जइ ता अज्जिग्रह  
अण्णत्तवाज्जेणं सहस्सागारेण महत्तरागारेण सव्वसमाहिवत्तिया-  
गारेणं वोत्तिरइ ॥ इति देसावगासी पञ्चख्वाण ॥

॥ तथा साधु पञ्चखाण करे तव देसावगासी नही पञ्चखे  
अरु तिविहार उपवासमें आविलमें नीवीमें एकासण प्रमुखमें  
पाणस्तकाठ आगार पञ्चखे सो दिखावे है, पाणस्त लेबानेण वा

अलेवनेण वा अछेण वा बहुलेण वा ससिञ्जेण वा असिञ्जेण वा  
चोसिरइ ॥

॥ अथ पञ्चखाण आगार संख्या ॥

॥ दोषेव नमुक्कारो आगार उच्च हुंति पोरसिए ॥ सत्तेवत्त  
पुरमिद्धे, एणासणंमि अछेव ॥ १ ॥ सत्ते गढाणस्सत्त, अछेवय आ-  
चंखिलंमि आगारा ॥ पंच वयज्जाढे, उप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥  
पंच चत्तरो अज्जिगहे, निवीए अठनवय आगारा ॥ अप्पावरणे पं-  
चत्त, इवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥ इति आगार संख्या ॥

॥ अथ पञ्चखाणके आगारोका अर्थ लिख्यते ॥

॥ उग्गएसूरे नमुक्कार सहिय पञ्चखाण चत्तधिहंपि आहारं ॥  
अर्थः—इहां गुरु कहे पञ्चखाणइ. शिष्य कहे पञ्चखाणमि पञ्चखाणइका  
अर्थ सब जगे अंगीकार वाची जाणना. जेते सूरज उदय हुआ  
पीठे नवकारसी व्रत अंगीकार करूं. यह पञ्चखाण मुहुर्त्त कहते  
दो घन्टी काल उपरात जहा तक नवकार गुणकर पाखूं नहीं तहा  
तक चत्तधि० च्यारोंही आहारका त्यागरूप व्रत अंगीकार करूं. सो  
च्यार प्रकारका आहार इत्त मुजब दे. असन कहते अन्न, चावल,  
गहू, मुंग, चणा, ज्वार, वगेरे सब अनाज सात गदूं जबकूं आवि  
लेकर सब तरेका आटा सब तरेका साग तरकारी लहूं वगेरे सब  
तरेका पकवान सूरणादिक सब तरेका कद दूध दही रोटी राव  
घाट सब पतली उर नरम वस्तु हींग वेसण सूफ लूण सेंधवादिक  
इत्यादिक सब असणमाहि जाणना ॥१॥ पाणं इसका अर्थ आच्छण  
जबोदक तुपोदक तंडुलोदक गरमपाणी शुद्धोदक कहते सब अप्प-  
काय ॥२॥ खाइमं कहते खादिम सूखनी नाखेर खजूर द्राख सेक्या  
अनाज आवा केला काकनी अखरोट खारक विदाम वगेरह सब  
जातका मेवा सब जातका फल खादम जाणना ॥३॥ साइमं कहते

स्वादिम तंबोल सूठि मिरच पींपर हरमे वहेना आवजा तुलठी कसेजा  
 काथा मोलेठी तज तमालपत्र इलायची लोंग वायविरुंग अजमा  
 अजमोद कुलिजन कवावचीणी कचूर नागरमोथा काटासेलिया  
 कुंजटिआ पानसुपारी पोहकरमूल जवासाकीजरु वावची वावल-  
 ठाल धवठाळि खेजमेकीठाळि खयरसार यह सब स्वादिम वस्तु  
 जाणना ॥ ४ ॥ अब अनाहार चीजे कहतेहैं नींवकीठाळि जरु  
 पान सिली गोमूत्र गिलोय चिरायता अतीस कूमेकीठाळि चंदन-  
 कीराख रोहिणीकीठाळि पींपलामूल वच धमासा रींगणी एलिया  
 चिरमी कयर वोरकीजरु इत्यादिक अनाहार चीज इच्छा मुजब गो-  
 रुणा यह जो इच्छाविना अनिष्टपणे लेवे तंव ता अनाहारहे अगर जो  
 इच्छा सयुक्त लेवे तो आहारका दूपण लगे पञ्चख्वाणका अर्थ जाणे  
 विगर जो पञ्चख्वाण करे सो अथा पञ्चख्वाणहे इस वास्ते सकेप  
 मात्र आगारोंका अर्थ लिखतेहे जिस पञ्चख्वाणमें जितना आगार  
 होय सो रखकर हमारे पञ्चख्वाणहे अन्नघणाजोगेणं कहिये अना-  
 जोग टालके किया जो पञ्चख्वाण, अत्यंत जूल जायेलें कोइनी  
 चीज जूलके मुमे मालकी होय लेकिन जाणे बाद तत्काल उत्ती  
 वखत पीठा नाख देवे तो पञ्चख्वाणमें जग नहीं उर जाणे बाद  
 जकण करे तो पञ्चख्वाण निश्चे जग होय ॥१॥ पञ्चकालेण कहते  
 कालकी प्रचन्नता आकाशमें गर्द ऊरती होय आकाशमें बदल  
 गये होय तेसेइ पहासकीनुट आजावे सूरज नहीं दीखे तव ज-  
 रमसु पञ्चख्वाणका वखत पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत  
 जग नहीं ॥२॥ दिसामोहेणं कहता दिसा जूलकर पूरवकू पञ्चिम  
 जाणकर पञ्चखाणका काल पूरा हुये विगर जोजन कर लेवे तो  
 व्रत जग नहीं ॥३॥ सदस्तागारेणं कहता सदसात्कार वदोत उताव  
 लके योगसे अथवा अकस्मात् विलोवते तोलते धी वगेरेका गीटा

मूँमें गिर जाय तो व्रत जंग नही ॥४॥ साहूवयणेशं कइतां साधूके  
 चचनसें जग्घांमा पोरसीआदिक जरम संयुक्त सुणकर पञ्चस्काणका  
 काल पूरा हुवा जाणकर जोजन करे तो व्रत जंग नही ॥५॥ सब  
 समाद्वितियागारेणं कइतां पञ्चस्काणका काल पूरा होणसें पइली  
 अकस्मात् गूलादिक रोग उपजे उसकरके परणामोंकी धिरता रहे  
 नही आर्त्तरौद्र ध्यान होय तब उसका रोग मिटाणे वास्ते ओपधादिक  
 पश्य देवे वा आप लेये तो पञ्चस्काण जंग नही ६ महत्तरागारेणं  
 कइता पञ्चस्काणसें जितनी निर्जरा होय उस निर्जरासें ज्यादा  
 निर्जराका कारण अथवा हरकिस्तीसें वण नही आवे एसा जो चैत्य  
 संघादिकका प्रयोजन होणसें पञ्चस्काणका काल पूरण जये विगर  
 ही जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नही ७ सागारीआगारेणं कइतां  
 गृहस्थ देखतां साधू जोजन करे नही एसी जिनराजकी आज्ञा  
 हे इस वास्ते कोइ साधूने एकासणादिक पञ्चस्काण कर जोजन  
 करणे वेगहे उस देखत कोइ गृहस्थ साधू पास चला आवे तब  
 साधू उस ठिकाणसें उठकर उर ठिकाणे जाकर जोजन करे तो  
 व्रत जंग नही उर गृहस्थकूं इसमें एसा आगार हे जिस पुरुषकी  
 निजर लगती होय तो उस पुरुषके आणसें एकासणेवाला उठकर उर  
 ठिकाणे जाकर जोजन करेतो व्रत जंग नही ॥ ८ ॥ आउट्टणपसारेणं  
 कइता पग प्रमुख एकठा करणसें अथवा पसारणसें थोमासा आसन  
 चल जाय तो व्रत जंग नही ॥९॥ गुरु अष्टुवाणेश कइता आपका गुरु  
 आणसें तथा आपसें कोइ वना पुरुष आणसें विनयके वास्ते जोजन  
 करता एकाशनादिकमे आसन ठोम खमा हो जावे तोजी व्रत जंग  
 नही ॥१०॥ पारिषावणियागारेणं कइता सब पञ्चस्काणमें यह आगार  
 साधुकाहे, जिस आहारके परठणसें बहुत जीवकी विराधना होती  
 जाणकर गुरु कहे यह आहार परठो मत सरस आहार हे तब

एकाग्रनादि व्रतधारी साधू गुरुके आज्ञासें दुसरी वखतजी आहार करे तो व्रत जंग नहीं ॥११॥ लेवालेवेण कहतां जोजन करणेका थाल प्रमुख ज्ञाजन उसके अवर घृतादिक विगय द्रव्यका असलगाजयाहे उसकू हाथ वगेरेमें पूठ माला उस परजी किंचित्त्वे मालम सालगारहे उसमें आयंबिलादि व्रतवाला जोजन कर लेवे तो व्रत जंग नहीं ॥१२॥ उरिक्तविवेगेण कहता आयंबिलादि पञ्चस्वखणमें नही खाणे योग्यजा विगय द्रव्य प्रमुख उसका फरस खाणें योग्य द्रव्यसें हो गया होय वो चीज खाणेमें आवे तो व्रत जंग नहीं लेकीन् जो विगय आदि देकर पतला द्रव्य सो हाथसें उगाय सके नहीं ऐसे द्रव्यसें फरस हुआ होय तो उसके खाणेसें व्रत जंग नहीं ॥१३॥ गिहत्थससिष्ठेण कहता जोजन पुरपे जिससेती एत्ती कुरुवी आदि देकर ज्ञाजन विगय प्रमुख द्रव्यसें वेमालम खरनी होय प्रत्यक्ष निजरसें कदाचित्मालम न होय तब जो उसही वासणसें जोजन पुरसे तोजी व्रत जंग नहीं १४ पडुअमुखिवणं कहतां सर्वथा लूखी रोटी खाखरा प्रमुख द्रव्य किंचित्मात्र घृतादिकसें वेमालम चौपणमें आयाहे लेकिन घृतादिकका स्वाद नही मालम देता हे तो नीवी पञ्चस्वखणमें उस द्रव्यकू खाणेमें आवे तो व्रत जंग नहीं उर जो धारविगय लेवे तो व्रत जंग होय ॥ १५ ॥ इति पनरे पञ्चस्वखणका आगारार्थ सपूर्ण ॥

॥ अथ साधू प्रतिक्रमणसूत्र लिख्यते ॥

॥ चत्वारिमगल अरिहतामगल सिद्धामगल साहूमंगल केवलपसातो धम्मोमगल १ चत्वारिगुत्तमा अरिहतालोगुत्तमा सिद्धालोगुत्तमा साहूलोगुत्तमा केवलपसातो धम्मोलोगुत्तमो २ चत्वारिसरणं पव्वज्जामि अरिहतेसरणं पव्वज्जामि सिद्धेसरणं पव्वज्जामि साहूसरणं पव्वज्जामि केवलपसात्तं धम्मसरणपव्वज्जामि ३ इत्थामि पन्निक्कमिउं



ए परिग्गहसणाए पन्किक्कमामि चउहिं विगहाहिं इच्चिकहाए जत्त-  
 फहाए देसकहाए रायऊहाए पन्किक्कमामि चउहिं जाणेहि अट्टेण  
 जाणेणं रुहेणजाणेण धम्मेषंजाणेणं सुक्केणजाणेण पन्किक्कमामि  
 पचहिं किरियाहिं काइयाए अद्दिगरणियाए पाउ नियाए पारताद-  
 णीआए पाणायवायकिरियाए पन्किक्कमामि पचहिं कामगुणेहि  
 सदेणं रूवेणं रसेण गंधेण फासेणं पन्किक्कमामि पचहिं महघाएहिं  
 पाणाइवायाउविरमण मुसावायाउवेरमण अदिन्नादाणाउवेरमण  
 मेहुणाउवेरमण परिग्गहाउवेरमण पन्किक्कमामि पचहिं समिईहिं  
 इरिआसमिईए ज्ञासासमिईए एसणासमिईए आयाणज्जमत्तनि  
 खेवणासमिईए उच्चारपासवण खेजज्जसघाणपारिघावणियासमि-  
 ईए पन्किक्कमामि ठहिं जीवनिकाएहिं पुढविकाएण आउकाएण  
 तेउकाएण वाउकाएणं वणस्सईकाएण तस्सकाएणं पन्किक्कमामि  
 ठहिं लेसाहिं किन्दलेसाए नीललेसाए काउलेसाए तेउलेसाए प-  
 उमलेसाए सुक्कलेसाए पन्किक्कमामि सत्ताहिं जयघाणेहिं अठहिं म-  
 यघाणेहिं नवहिं वज्जचेरगुत्तीहिं दसविहे समणधम्मे एगारसहिं  
 उवासगपन्निमाहिं वारसहिं जिस्कुपन्निमाहिं तेरसहिं किरियाघा-  
 णेहिं चउहालहिं जूयगामेहिं पसरसहिं परमाइम्मिणहिं सोलसएहिं  
 गाहाहिं सतरसविहे अत्तंजमे अठारसविहे अब्बे इगुणवीसाए ना-  
 यच्चयणेहिं वीसाए असमाहिंघाणेहिं इकवीसाए सबलेहिं धावीसाए  
 परीसहेहिं तेवीसाए सुयगरुज्जयणेहिं चउवीसाए अरिहतेहिं पचवी-  
 साए जावणाहिं ठव्वीसाए दसाकप्पववहाराण उदेसणकालेणं सत्ता  
 वीसाए अणगारगुणेहिं अठवीसाए आयाणपकप्पेहिं एगुणतीसाए  
 पावसुअप्पसंगेहिं तीसाए मोहणीअघाणेहिं इगतीसाए सिद्धाङ्गुणेहिं  
 वत्तीसाए जोगसगदेहिं तित्तीसाए आसायणाए अरिदत्ताण आसाय-  
 णाए सिद्धाणआसायणाए आयरिआणआसायणाए उवञ्चायाणआ-

सायणाए साहूषंआ० साहूणीणंआ० सावयाणंआ० सावियाणंआ० दे  
 वाणआसाय० देवीणंआ० इहलोगस्तआ० परलोगस्तआ० केवलिपन्न-  
 त्तस्तधम्मस्तआ० सदेवमणुआसुरस्तलोगस्तआ० सव्वपाणञ्जूअजी-  
 वसत्ताणंआ० कालस्तआ० सुअस्तआ० सुयदेवयाएआसा० वायणा  
 रिअस्तआ० जवाइहं वच्चामेलिअ हीनकरिअ अच्चरिअं पयदीणं  
 विणयहीणं जोगहीणं घोसदीणं सुहुदिन्नं, डुहुपमिच्चियं अकालेक-  
 न्तसज्जात्तं कालेनकन्तसज्जात्तं असज्जाइए सज्जाइयं सज्जाइए नसज्जा-  
 इय तस्त मिच्चामि डुक्कम एमो चत्तवीसाए तित्थयराणं उत्तजाइ-  
 माहावीरपक्कवसाणाणं इणमेव निग्गंथं पावयणं सच्चं अणुत्तरं के-  
 वलियं पणिपुणं नेआत्तयं संसुद्धं सल्लगत्तणं सिद्धिमगं मुत्तिमगं  
 निज्जाणमगं निव्वाणमगं अवित्तहमविसंधि सव्वडुक्कपहीणमगं  
 इत्थद्वियाजीवा सिच्चंति वुच्चंति मुच्चंति परिनिघायंति सव्वडुक्खाणा-  
 मंतंकरंति तंयम्म सदहामि पत्तियामि रोएमि फासेमि पालेमि अ-  
 णुपालेमि तंधम्मं सदहतो पत्तिअंतो रोअंतो फासंतो पालितो अणु-  
 पालितो तस्त धम्मस्त केवलिपन्नत्तस्त अप्पुट्ठिमि आराहणाए  
 चिरत्तमि विराइणाए अत्तंजमं परिआणामि संजम उवसंपज्जामि  
 अवत्तं परिआणामि वंत्तउवसंपज्जामि अकप्पं परिआणामि कप्पं  
 उवसंपज्जामि अत्ताणं परिआणामि नाणं उवसंपज्जामि अकिरिअं  
 परिआणामि किरिअं उवसंपज्जामि मिच्चत्त परिआणामि सम्मत्तं  
 उवसंपज्जामि अवोहिं परिआणामि वोहि उवसंपज्जामि अमगं प-  
 रिआणामि मगं उवसंपज्जामि जं संत्तरामि जं च न संत्तरामि जं  
 पक्कमामि ज च न पक्कमामि तस्त सव्वस्त देवसिअस्त  
 अइयारस्त पक्कमामि समणोहं संजय विरय पणिदय पच्चख्वाय  
 पावकम्मे अनियाणो दिदिसंपन्नो मायामोसविवज्जित्तं अट्ठाइक्केसु  
 दीवसमुदेसु पन्नरसकम्मञ्जूमीसु ॥ जावंतिकेविसाहू, रयहरणगुच्च



परिगृहधारं ॥ पंचमहद्वयधारा, अघार सहस्त सीलिंगधारा ॥  
 अरखयायार चरिता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थएणवंदामि ॥  
 स्वामेमि सव्वजीवे, सव्वे जीवा खमंतुमे ॥ मिति मे सव्व भूएसु,  
 वेरं मच्च नेकेणई ॥१॥ एवमइ आलोइय, नंदिअ गरहिय पुअच्चियं  
 सन्मं ॥ तिदिहेण पजिक्तो, वदामि जिणेचउवीसं ॥३॥ इतिश्री  
 साधू प्रतिक्रमणसूत्र समाप्तं ॥

### ॥ अथ पस्खी सूत्र लिख्यते ॥

॥ तिअंकरे अतिअे अतिअसिद्धेय तिअसिद्धेअ ॥ सिद्धेयजि-  
 णेयरिसी, महरिसि नाण च वदामि ॥ १ ॥ जेयइमणुणरयणसायर,  
 अविरातिऊण तिअिससारा ॥ ते मंगलं करिता, अहमविआराहणा-  
 भिसुहो ॥ २ ॥ मम मगलमरिहता, सिद्धा साहू सुय च धम्मोय ॥  
 एतंती सुत्ती सुत्ती, अज्जवया महवं चैव ॥ ३ ॥ लोमंमि संजया जं  
 करति, परम रिसि देसियमुपार ॥ अहमवि उवडित्त, महव्वय उ-  
 च्चारण काउं ॥ ४ ॥ संकित्त महव्वय उच्चारणा महव्वय उच्चारणा  
 पचविहा पन्नत्ता राई भोयण वेरमणउठ्ठा तजहा सव्वानं पाणाइ-  
 वायाओ वेरमण सव्वानं मूसावायाउं वेरमण सव्वानं अदिन्नादाणाउं  
 वेरमण सव्वानं मेहुणाउं वेरमणं सव्वानं परिगगहाउं वेरमणं सव्वानं-  
 राइभोयणाउं वेरमण तत्थ खलु पढमे भते महव्वण पाणाइवायाउं-  
 वेरमण सव्व भते पाणाइवाय पचखामि से सुहुभ वा वायरं वा तसं  
 वा वावरं वा नेवसय पाणे अइवाएजा नेवनेहि पाणे अइवायाविजा  
 पाणे अइवायतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाप् तिविहं तिविहेणं  
 अणुणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्ननसमणु  
 जाणामि तस्स भते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि  
 से पाणाइवायाए चउव्वहे पन्नते तंजहा दव्वउं खित्तउं कालउं  
 आवउं दव्वउं पाणाइवाए उसुजीवनिकाएसु खित्तउं पाणा

इवाए सयल्लोए कालञ्जणं पाणाइवाए दियावा राञ्जवा भावञ्जणं  
 पाणाइवाए रागेण वा दोस्सेण वा जंपिगमए इमस्स धम्मस्स केवलि  
 पन्नत्तस्स अहिंसा लख्खणस्स सत्ताहिउियस्स विणयमूलस्स खती-  
 पहाणस्स अहिरणसोवसियस्स उवसगप्पभवस्स नव वंभवेर गुत्तरस  
 अप्पयमाणस्स भिखावितियस्स कुल्लीरावलस्स निरग्गिसरणस्स  
 संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहिचस्स निवियारस्स निव्वि-  
 त्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असनिहिसंचयस्स अविंसवाइयस्स  
 संसारपारगामियस्स निघाण गमण पज्जदसाणफलस्स पुव्वि अन्नाण  
 याए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाणं रा-  
 गदोस पडिवद्धयाए वालयाए मोहयाए मदयाए किड्डयाए तिगारव-  
 गरुयाए चउक्कसान्ठवगएण पचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए साया-  
 सोख्ख मणुपालयतेण इहं वा भवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु पाणाइ-  
 वाञ्ज कञ्जवा कारिञ्जवा कीरंत्तेवा परेहि समणुन्नाञ्ज त निदामि ग-  
 रिहामि तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएण अइयं निदामि प-  
 ड्डपन्न संवरेमि सव्व पाणाइवायं जावजीवाए अणिस्सिञ्जहि नेव  
 सयपाणे अइवाएज्जा नेवन्नेहि पाणे अइवायाविज्जा पाणे अइवा-  
 यंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसखिसयं सिद्धसखिखयं  
 साहुसस्मियं देवसस्मियं अप्पसस्मियं एवं हवइ भिक्खूवा भिक्खू-  
 णीवा संजयविरय पडिहय पन्नस्काय पावकम्मए दियावा राञ्जवा एगोवा  
 परिसाणञ्जवा लुत्तेवा जागरमाणेवा एस खल्लु पाणाइवायस्सवेरमणे  
 हिएसुहे खमेनिस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सवेसि पाणाण  
 सव्वेसि भूयाण सवेसि जीवाणं सवेसि सत्ताण अटुक्कणयाए अ-  
 सोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुहवणयाए महत्ते महागुणे महाणभावे महापुरिसाणु-  
 चिन्ने परमरिसिदेसिए पसत्ते तं दुक्कस्कायाए कम्मस्कायाए मोहस्का

याए मोहिलाभाए संसारुत्तारणाए चिक्कड्डु उवसंपज्जिन्नाण विडरामि  
 पढमे भते महव्वए उवड्डिन्निमि सव्वात्त पाणाइवायात्तवेरमणं ॥ १ ॥  
 अहावरेदोच्चेभते महव्वए मुसावायात्तवेरमण सव्व भते मुसावार्य  
 पच्चस्कामि से कोहावा लोहावा भयावा हासावा नेवसय मुसवाइच्चा  
 नेवन्नेहिं मुसवायाविच्चा मुसंवायंतेवि अन्नेनसमणुजाणमि  
 जावजीवाए तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं न क-  
 रेमि न कारवेमि करतंपि अन्नंसमणुजाणामि तस्स भंते पडि-  
 क्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि से मुसावाए चउ-  
 व्विहे पन्नत्ते तंजहा दव्वत्त खित्तत्त कालत्त भावत्त दव्वत्तणं मुसा-  
 वाए सव्वदव्वेसु सित्तत्तणं मुसावाए लोएवा अलोएवा कालत्तण  
 मुसावाए दियावा रात्तवा भावओणं मुसावाए रागेणवा  
 दोसेणवा जपियमए इमस्स घम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालूक्क  
 णस्स सच्चाहिडियस्स विणय मूलस्स खतीपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नि  
 यस्स उवसमप्पभवस्स नव वभचेर गुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिरका-  
 वित्थिस्स कुक्कीसबलस्स निरग्गिसरणस्स सपरकालियस्स चत्तदो-  
 सस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स निव्वित्तीलरकणस्स पचमहव्व-  
 यजुत्तस्स असनिहिसचियस्स अविस्सनाइयस्स ससारपारगामियस्स  
 निव्व्वाणगमणपज्जवसाणफलस्स पुव्विअन्नाणयाए असव्वणयाए अ-  
 चोहिए अणभिगमेणं अभिगमेणवा पमाएण रागदोसपडिवद्वयाए  
 बालयाए मोहयाए मंदयाए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसात्तवग  
 एण पंचेदियवसट्टेणं पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयतेण इहं  
 वाभवे अन्नेसुवा भवग्गहणेसु मुसावाओ भासिओवा भासाविओवा  
 भासिजंतो वा पेरेहि समणुत्ताओ तं निंदामि गरिहामि तिविहं तिवि  
 हेणं मणेण वायाए काएण अइय निंदामि पडिपन्न संवरेमि अणागयं  
 पच्चस्कामि सव्व मुसावाय जावजीवाए अणिस्सिउहिं नेवसयसुसंवइ

द्या नेवन्नेहिं मुसंवायाविद्धा मुसंवायंतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तंजहा  
 अरिहंतसखिखय सिद्धसखिखय साहूसखिय देवसखियं अप्पसखियं  
 एवं हवइ भिखुव्वा भिखुणोवा संजयविरयपडिहय पच्चखलाय पा-  
 वकम्मे दियावा राउवा एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा  
 एस खलु मुसावायस्सवेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए  
 पारगामिए सव्वेसि पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसि जीवाणं स-  
 व्वेसि सत्ताणं अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पण-  
 याए अपोडणयाए अपरियावणयाए अणुहवणयाए महत्ते महागुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसियपसत्ते तं दुख्खखायाए  
 कम्मखायाए मोहखायाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उव-  
 संपजत्ताणं विहरामि दोखे भंते महव्वए उवड्डिउमि सव्वानं मुसा-  
 वायाओवेरमणं २ अहावरे तच्चे भंते महव्वए अदिन्नादाणाउवेरमणं  
 सव्वं भते अदिन्नादाणं पच्चखलामि से गामेवा नगरेवा रत्तेवा अप्पंवा  
 बहुवा अणुवा थूलंवा चित्तमंतवा अचित्तमत्तंवा नेवसय अदिन्नं  
 गिण्हिज्जा नेवन्नेहिं अदिन्न गिण्ह्याविज्जा अदिन्न गिण्हतेवि अन्न-  
 समणुजाणामि जावज्जीवाए तिविह तिविहेणं मणेण वायाए काएणं  
 न करेमि न कारवेमि करंतपि अन्नंनसमणुजाणामि जावज्जीवाए  
 तस्स भंते पडिक्कमामि निदामि गरिहामि अप्पाण वोसिरामि से  
 अदिन्नादाणे चउव्विहे पन्नते तंजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भा-  
 वओ दव्वओण अदिन्नादाणे गहणद्वारणिच्चेसु दव्वेसु खित्तओणं  
 अदिन्नादाणे गामेवा नगरेवा रत्तेवा कालओण अदिन्नादाणे दियावा  
 राओवा भावओण अदिन्नादाणे रागेणवा दोसेणवा जंपियमए इ-  
 म्मस्स धम्मस्स केवलपन्नत्तस्स अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिडियस्स वि-  
 णयमूलस्स खंतिप्पहाणस्स अहिरन्नसुवन्नियस्स ७ मव-  
 नववंभचेर युत्तस्स

निरगिगतरणस्त संपखत्तालियस्त चत्तदोसस्त गुणगादियस्त नि  
 विव्यारस्त निव्वित्तोलखणस्त पंचमहव्वयजुत्तस्त असंनिदिसवि  
 यस्त अविस्वाइयस्त ससाग्पारगामियस्त निव्वाणगमणपजवसाय  
 फलस्त पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोदिए अणभिगमेण  
 अभिगमेणवा पमाण गगदोसपडिवदयाए वालयाए मोहयाए  
 मंदयाए किट्टयाए तिगारखगरुयाए चउक्कत्ताउवगणं पंचेदियवसेट्टेव  
 पडिपुन्नभारियाए सायासुक्कमणुपालयतेण इहंवाभवेअत्रेसुवा भवग  
 हणेसु अदिन्नादाण गहियंवा गाहावियंवा विप्पतंवा परेहिसमणुन्ना  
 ओ तं निदामि गरिहामि तिविह तिविहेण मणेणं चायाए काणं अ  
 इय निदामि पडुप्पन्नसयरेमि अणागय पच्चरकामि सब अदिन्नास  
 ण जावज्जोवाए अणिसिआंहं नेवसय अदिन्न गिण्हिजा नेवन्नेहि  
 अदिन्न गिन्नाविद्या अदिन्नगिन्नतेवि अन्ननसमणुजाणामि तंवा  
 अरिहतसरिखय सिद्धसस्किय साहूसस्किय देवसस्किय अप्पसस्कि  
 एव हवड भिखूवा भिरखुणीवा सजयदिसच पडिदियपच्चन्वाय पा  
 कम्मे दिचावा राओवा एगओवा परित्तानओवा सुत्तेवा जागरा  
 णेवा एस खलु अदिन्नादाणत्तवेरमणे हिण्णुहे खमे निस्सेसिए आ  
 णुगामिए पारगामिए सव्वेसि पाणाणं सव्वेसि भूदाण सव्वेसि  
 जीवाण सव्वेसि सत्ताण अदुखणयाए असोयणयाय अजूरणयाय  
 अतिप्पणयाय अपीडणाय अपरियावणियाय अणुहव्वणयाय यदं  
 महागुणे महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिय पत्तं  
 दुक्ककयाय कम्मकयाय मोहस्सगाय दोहिलाभाय संसारुत्तारणा  
 त्तिरुट्टु उवसपज्जत्ताण विहरामि तच्चे भते महव्वए अहुत्तिओमि स  
 व्वाओ अदिन्नादाणाओवेरमण ॥ ३ ॥ अहादरे चउत्थे भंते क  
 व्वए मेहुणाओवेरमण सब भते मेहुणं पच्चखत्तामि से दिषवा क  
 णुसंवा तिरिखखजोणियवा नेवसयं मेहुणंसेविद्या नेवन्नेहि

सेवाविद्या मेहुणंसेवतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावजीवाए तिविहं  
 तिविहेण मणेण वायाए काएणं न करेमि न कारवेमि करतपि अ-  
 न्नंनसमणुजाणामि तस्स भंते पडिकामामि निंदामि गरिहामि ।  
 अप्पाण वोसिरामि से मेहुणे चउधिहे पन्नत्ते तंजहा दव्वओ खित्तओ  
 कालओ भावओ दव्वओणं मेहुणे रूवेसुवा रूवसहगएसुवा खित्त-  
 ओणं मेहुणे उट्ठलोएवा अहोलोएवा तिरियलोएवा कालओणं मे-  
 हुणे दियावा राओवा भावओणं मेहुणे रागेणवा दोसेणवा जंपि-  
 यमए इमस्स धम्मस्स केवल्लिपन्नत्तस्स अहिंसालखणस्स सच्चा-  
 हिद्वियस्स विणयमूलस्स खंतिपहाणस्स अहिरत्तसोवन्नियस्स उव-  
 समप्पभवस्स नववभचेरयुत्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खाविच्चियस्स  
 कुख्खीसवलस्स निरग्गिसरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण-  
 गाहियस्स निव्वत्तीलख्खणस्स पंचमहव्वयजुत्तस्स असंनिहिसच्चिय-  
 स्स अविसंवाइयस्स ससारपारगामिस्स निव्वाणगमणपच्चावमाण-  
 फलस्स पुव्विअन्नाणयाए असवणयाए अवोहिए अणभिगमेणं अ-  
 भिगमेणवा पमाणं रागदोसपडिबद्धयाए बालयाए मोहयाए मंद-  
 याए किम्भयाए तिगारवगरुयाए चउक्कसाओवगएणं पंचेंदियवसट्टेणं  
 पडिपुन्नभारियाए सायासोख्खमणुपालयतेणं इहवाभवे अन्नेसुवा  
 भवग्गहणेषु मेहुणसेवियवा सेवावियंवा सेविच्चतोवा परेहि समणु-  
 न्नाओ तनिदामि गरिहामि तिविहं तिविहेणं मणेण वायाए का-  
 एण अइय निदामि पडुप्पन्नसवरोमि अणागय पच्चख्खामि सव्वमेहुणं  
 जावजीवाए अणिस्सिओह नेवसयमेहुणसेविद्या नेवन्नेहिमेहुणंसे-  
 वाविजा मेहु गसेवतेवि अन्नंनसमणुजाणामि तजहा अरिहतसख्खि-  
 य सिद्धसख्खिय साहुसख्खिय देवसख्खियं अप्पसख्खियं एव हव-  
 इभिख्खूवा भिख्खुणीवा संजयविरयपडिहयपच्चस्कायपावकम्मे दि-  
 यावा राओवा एगओवा परिसागओवा सुत्तेवा जागरमाणेवा

एतत्तु मेदुणस्तवेरमणे द्विएसुहे स्वमे निस्तेसिए आणुगामिए पार-  
 गामिए सव्वेसिंपाणाणं सव्वेसिंभूयाणं सव्वेसिजोवाण सव्वेसिं-  
 सत्ताण अदुख्खणयाए असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए  
 अपोढणयाए अपरियावणियाए अणुह्वणयाए महत्ते महायुणे  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्ने परमरिसिदेसिएपसत्ते तंदुख्खस्वयाए  
 कम्मस्वयाए मोहस्वयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए त्तिकट्टु उव-  
 संपज्जित्ताणं विहरामि चउत्थे भंते महव्वए उवडिओमि सव्वाओ-  
 मेदुणाओवेरमणं ४ अहावरेपचमे भते महव्वए परिग्गहाओ वेरमणं  
 सव्व भंते परिग्गहं पच्चख्खामि से अप्पवा वड्ढवा अणुंवा थूलंवा चित्त-  
 मतवा अचित्तमंतवा नेवसयं, परिग्गह परिगिण्हिज्जा नेवन्नेहिपरिग्गहं  
 परिगिण्हाविद्धा परिग्गहंपरिगिन्नतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जा-  
 वज्जीवाए तिविहं तिविहेण मणेण वायाए काएण नकरेमि नकार-  
 वेमि करंतपि अन्नसमणुजाणामि तस्स भते पडिक्कमामि  
 निंदामि गरिहामि अप्पाणवोसिरामि से परिग्गहे चउव्विहेपसत्ते  
 तजहा दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ दव्वणं परिग्गहे सच्चि  
 चाचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओण परिग्गहे गामेसुवा नगरेसुवा रन्ने-  
 सुवा कालओण परिग्गहे दियावा राओवा भावओण परिग्गहे  
 अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेणवा जपियमए इमस्स धम्मस्स  
 केवलिपन्नत्तस अहिंसालख्खणस्स सच्चाहिट्ठियस्स विणयमूलस्स  
 खंतिपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उवसमप्पभवस्स नववभचेरगु-  
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स कुख्खीसवलस्स निरग्गि-  
 सरणस्स संपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुणगाहियस्स निव्वियारस्स  
 निव्वित्तीलख्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स अविसवाइयस्स ससारपा-  
 रगामियस्स निब्बाण गमण पच्चवसाणफलस्स पुर्विअन्नाणयाए अस-  
 वणयाए अबोहिए अणभिगमेण अभिगमेणवा पमाणं राग-

दोस पड्विद्धयाए षालयाए मोहयाए मंदयाए किर्रयाए तिगारव-  
 गरुयाए चउक्कसाञ्जवगणं पंचेदियवसट्टेणं पड्विपुन्नभारियाए साया-  
 सोक्कमणुपालयतेणं इहंवाभवे अन्नेसुवा भवरगहणेसु परिग्गहो ग-  
 हिउवा गाहाविउवा विप्पतोवा पोरिंसमणुत्ताठ तंनिदामिग्गरि-  
 हामि तिविहं तिविहेणं मणेणं षायाए काएणं अइयंनिदामि पडुप्प-  
 न्नसंवरोमि अणागयंपच्चत्कामि सहंपरिग्गहं जावज्जीवाए अणिसि-  
 उहिं नेवसयंपरिगिण्हिजा नेवन्नेहिंपरिग्गहंपरिगिण्हविष्ठा परिग्गहं-  
 परिगिण्हंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि तंजहा अरिहंतसत्कियं सिद्ध-  
 सत्कियं साहुसत्कियं देवसत्कियं अप्पसत्कियं एवंहवइभिरुवूवा भि-  
 रुरुणीवा संजयविरयपडिहय पच्चक्काय पाक्कम्मे दियावा राउवा  
 एगउवा परिसागउवा सुत्तेवा जागरमाणेवा एसखलुपरित्यहस्स-  
 वेरमणे हिएसुहे खमे निस्सेसिए आणुगामिए पारगामिए सब्बेसिं  
 पाष्णाणं सब्बेसिंभूयाणं सब्बेसिंजीवाणं सब्बेसिंसत्ताणं अदुरुखणयाए  
 असोयणयाए अजूरणयाए अतिप्पणयाए अपीडणयाए अपरियाव-  
 णियाए अणुद्ववणयाए महत्थे यद्दागुणे यद्दाणुथावे यद्दापुरिसाणुचिन्ने  
 परमरिसिदेसियपसञ्जे तदुस्सरक्कयाए कम्मस्क्कयाए बोहिलाभाए सं-  
 सारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसंपज्जिताणं विहरामि पंचमे भंते महत्थे  
 उवड्डिउमि सत्ताठपरिग्गहाउवेरमणं ५ अहावरेउठ्ठे भंते इहव्वए रा-  
 इभोयणाउवेरमणं सब्बं भंते राईभोयणं पच्चत्कामि सेअसणंवा पाणंवा  
 खाइमंवा साइमंवा नेवसयंराइंभुंजिजा नेवन्नेहिंराइंभुंजाविष्ठा राइंभुं-  
 जंतेवि अन्नेनसमणुजाणामि जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं मणेणं  
 वायाए काएणं न करोमि न कारवेमि करंतंपि अन्नंसमणुजाणामि  
 तस्स भते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणंवासिरामि से राई-  
 भोयणे चउबिहेपसत्ते तंजहा दत्तं खित्तं कालं भावं दव्वंउणं  
 राईभोयणे असणेवा पाणेवा खाइमेवा साइमेवा खित्तंउणं राईभोयणे,



एतत्सुमेदुणस्तवेरमणे हि एसुहे र  
 गामिए सव्वेसिपाणाणं सव्वेसि  
 सत्ताण अदुख्खणयाए असोया  
 अपीढणयाए अपरियावणिया  
 महाणुभावे महापुरिसाणुचिन्  
 कम्मख्खयाए मोहखयाए वो  
 सपज्जिन्ताणं विहरामि चउत्  
 मेदुणाओवेरमण ४ अहावो  
 सव्व भंते परिग्गहं पच्चख्खा  
 मतवा अचित्तमंतवा नेवसय  
 परिगिण्हाविच्चा परिग्गहंपरि  
 वजीवाए तिविह तिविहेणं म  
 वेमि करतपि अन्ननसमणु  
 निंदामि गरिहामि  
 तजहा दव्वओ खित्तओ काल  
 ताचित्तमीसेसु दव्वेसुखित्तओषा प  
 सुवा कालओषा परिग्गहे दियावा  
 अपग्घेवा महग्घेवा रागेणवा दोसेण  
 केवल्लिपन्नत्तस अहिंसालख्खणस्स ६  
 खंतपहाणस्स अहिरन्नसोवन्नियस्स उद  
 त्तस्स अप्पयमाणस्स भिख्खावित्तियस्स ६  
 सरणस्स सपख्खालियस्स चत्तदोसस्स गुण  
 निव्विन्तीलख्खणस्स पचमहव्वयजुत्तस्स अ  
 रगामियस्स निव्वान गमण पच्चवसाणफला  
 वणयाए अबोहिण अणभिगमेण अभिगं

देसिप्पसत्थे तंदुख्खस्खयाए कम्मस्खयाए मोहस्खयाए वोहिलाभाए  
 संसारुत्तारणाए तिकट्ट उवसंपज्जित्ताणं विहरामि छठ्ठे भते महघप्  
 उवट्ठिओमिसव्वाओ राईभोयणाओ वेरमण ॥ ६ ॥ इव्वेइयाइं पंच-  
 महव्वयाइं राईभोयणवेरमणछट्ठाइं अत्तहियट्ठाइ उवसंपज्जित्ताणंविह-  
 रामि अप्पसत्थायजेयोगा परिणामायदारुणा पाणाड्वायस्सवेरमणे  
 एसबुत्ते अइक्कमे ॥ १ ॥ तिब्बरागायजाभासा तिब्बदोसातद्देवय  
 मुसावायस्सवेरमणे एसबुत्तेअइक्कमे ॥ २ ॥ उग्गाहंअजाइत्ता अव-  
 दिन्नेवउग्गहे अदिन्नादाणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइक्कमे ॥ ३ ॥ सहा-  
 रूवारसागंधा फासाणचत्तिआरणा मेहुणस्सवेरमणे एसबुत्ते अइ-  
 क्कमे ॥ ४ ॥ इच्चापुच्चायगेहीय कंखालोभेअदारुणे परिग्गहस्सवेरमणे  
 एसबुत्तेअइक्कमे ॥ ५ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 धम्मे पढमवयमणुरख्खे विरियामोपाणाड्वायाओ ॥ ६ ॥ दंसणना-  
 णचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 अलियवयणाओ ॥ ७ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमण-  
 धम्मे तइयंवयमणुरख्खे विरियामोअदिन्नादाणाओ ॥ ८ ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विरि-  
 यामोमेहुणाओ ॥ ९ ॥ दंसणनाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसम-  
 णधम्मे पंचमंवयमणुरख्खे विरियामोपरिग्गहाओ ॥ १० ॥ दंसण-  
 नाणचरित्ते अविराहित्ताठिओसमणधम्मे छट्ठंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 राईभोयणाओ ॥ ११ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमण-  
 धम्मे पढमवयमणुरख्खे विरियामोपाणाड्वायाओ ॥ १२ ॥ आलियवि-  
 हारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणधम्मे वीयंवयमणुरख्खे विरियामो-  
 अलियवयणाओ ॥ १३ ॥ आलियविहारसमिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणधम्मे  
 तइयंवयमणुरख्खे विरियामो अदिन्नादाणाओ ॥ १४ ॥ आलियविहार-  
 समिओ जुत्तोयुत्तोठिओसमणधम्मे चउत्थंवयमणुरख्खे विरियामोमेहु-

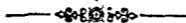
णाठ ॥ १५ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तोयुत्तोठिञ्चसमणधम्मं पंच-  
 मवयमणुरस्के विरयामो परिग्गहाञ् ॥ १६ ॥ आलियविहारस-  
 मिञ् जुत्तोयुत्तोठिञ्चसमणधम्मं छव्ववयमणुरस्के विरयामोराईभोयणा  
 ञ् ॥ १७ ॥ आलियविहारसमिञ् जुत्तोयुत्तोठिञ्चसमणधम्मं तिविहे-  
 णपडिक्कतो रस्कासिमहव्वएपच ॥ १८ ॥ सावज्जजोगमेगं मिञ्चत्तं  
 एगमेवअन्नाण परिवज्जतोयुत्तो रस्कासिमहव्वएपंच ॥ १९ ॥ अण-  
 वधजोगमेग सम्मत्तएगमेवमाणतु उवसंपन्नोजुत्तो रस्कासिमहव्वए-  
 पच ॥ २० ॥ दोचेवरागदोसे दोन्नियझाणाइअट्टस्सुइं परिवच्चंतो-  
 युत्तो रस्कासिमहव्वएपच ॥ २१ ॥ दुविहंचरित्तधम्मं दोन्नियझाणाइ-  
 धम्मसुक्काइ उवसपन्नोजुत्तो रस्कासिमहव्वएपच ॥ २२ ॥ किण्हा-  
 नीलाकाञ् तिनियलेसाञ्अप्पसत्थाञ् परिवच्चंतोयुत्तो रस्कासि-  
 महव्वएपच ॥ २३ ॥ तेउपम्हासुक्का तिनियलेसाउसुप्पसत्थाञ् उव-  
 सपन्नोजुत्तो रस्कासिमहव्वएपच ॥ २४ ॥ मणसामणसच्चविञ्  
 चायासच्चेणकरणसच्चेण तिविहेणविसच्चविञ् रस्कासिमहव्वएपंच  
 ॥ २५ ॥ चत्तारियदुहसिज्जा चउरोसत्तातहाकसायाय परिवच्चंतो  
 युत्तो रस्कासिमहव्वएपच ॥ २६ ॥ चत्तारियसुहसिज्जा चउव्विहं-  
 सवरसमाहिंच उवसंपन्नोजुत्तो रस्कासिमहव्वएपच ॥ २७ ॥  
 पचेवयकामगुणे पंचेवयअण्हवेमहादोसे परिवच्चंतोयुत्तो रस्कासिम-  
 हव्वएपच ॥ २८ ॥ पंचेदियसवरणं तहेवपंचविहमेवसच्चायं उवसंप-  
 न्नोजुत्तो रस्कासिमहव्वएपच ॥ २९ ॥ छज्जीवनिकायवहिं छप्पिय-  
 भासाञ्अप्पसत्थाञ् परिवज्जंतोयुत्तो रस्कासिमहव्वएपच ॥ ३० ॥  
 छबिहमाप्पितरिय वज्जापियछबिहतवोकम्म उवसपन्नोजुत्तो रस्कासि-  
 महव्वएपंच ॥ ३१ ॥ सत्तभयघाणाइं सत्तविहचेवनाणविघ्नगा परिव-  
 च्तोयुत्तो रस्कासिमहव्वएपंच ॥ ३२ ॥ पिंढेसणपाणेसण उग्गहं-  
 सच्चिक्यामहव्वयणा उवसपन्नोजुत्तो रस्कासिमहव्वएपच ॥ ३३ ॥

अहमयष्टाणां अह्यकम्माइतेसिबंधिच परिवर्धंतोगुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ३४ ॥ अहयपवयणमाया दिट्ठाअव्विहनिट्ठिअणेहिं उवसं  
 पन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३५ ॥ नवपावनियाणां संसार-  
 ञ्चानवविहाजीवा परिवर्धंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३६ ॥ न  
 वबंधेचरगुत्तो दुनवविहबंधंभेचरपडिसुद्धं उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिम  
 हव्वएपंच ॥ ३७ ॥ उवघायंचदसविहं असंवरंतहयसंकिलेसंच परि  
 वजंतोगुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३८ ॥ चित्तसमाहिणणा दस  
 चेवदसाउसमणधम्मंच उवसंपन्नोजुत्तो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ३९ ॥  
 आसायणंचसव्वं तिगुणं एकारसंविजंतो परिवर्जंतोगुत्तो रक्खामि  
 महव्वएपंच ॥ ४० ॥ एवंपतिदंडविरत्त तिगरणसुद्धोतिसद्धनिसल्लो ति  
 विहेण पडिकंतो रक्खामिमहव्वएपंच ॥ ४१ ॥ इच्चेयंमहव्वयउच्चारणं  
 थिरत्त सद्भुद्धरणं धिइवलंसत्त साहणणेपावनिवारणं निकायणा  
 भावविसोही पडागाहरण निजूहणा राहणा गुणाणं संवरजोगो प  
 सद्भुद्धाणो वउत्तया जुत्तया नाणे परमणे उत्तमणे एसखलुत्तित्यं  
 कोहि रइरागदोस महणेहिं देसित्त पवयणस्ससारो छज्जीवनिकाय  
 संजमं उवइसित्त तिच्छुक्क सक्कयंठाणं अश्रुवगया नमोज्जुते सिद्धबुद्ध  
 मुत्तनीरय निस्संग माणभूरण गुणरयण सायर मणत्त मप्पमेय न  
 मोज्जुते महय महावीरवद्धमाणस्स नमोत्थुतेअरहत्त नमोत्थुते भग  
 वत्त त्तिक्कट्टु इच्चेसा खलुमहव्वयउच्चारणाकया इच्चांमोसुत्तकित्तणं  
 काउं नमोतेसिंखमासमणाणं जेहिंइमंवाइय छव्विहमावस्सय भग  
 वंत तंजहा सामाइयं चउवीसत्त वंदणयं पडिकमण काउसगो पच्च  
 रक्खाण सव्वेहिं विएयमि छव्विहे आवस्सए भगवते ससुत्ते सअच्चे  
 सग्गथे सत्तिजुत्तीए ससगहणीए जेगुणावा भावावा अरहतेहिं भ  
 गवतेहिं पन्नत्तावा परुवियावा तेभावे सद्धहामो पत्तियामो रोएमो  
 फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्धहतेहिं पत्तियतेहिं रोयतेहि

फासतेहि पालतेहि अणुपालतेहि अतोपख्वस्स अंतोचउमामीए अतो  
 सवच्चरस्स जवाइयं पढिय परिअट्टियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपालियं  
 तंदुख्वख्वयाए कम्मख्वयाए मोहखयाए वोहिलाभाए ससारुत्ता  
 रणाए त्तिकट्टु उवसपज्जिन्नाण विहरामि अतोपख्वस्स जंनवाइय नप  
 ढिय नपरिअट्टियं नपुच्चिय नाणुपेहिय नाणुपालिय संतेवले सतेवी  
 रिए सतेपु रिसक्कारपरिकमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरि  
 हामो विउट्टेमो विमोहेमो अकरणयाए अण्णुमो अहारिहं तवोकम्मं  
 पायच्चित्तपडिवच्चामो तस्समिच्चामिदुक्कडं नमोतेसिखमासमणाण जे  
 हिइमंवाइय अंगवाहिरिय उक्कालिय भगवतं तंजहा दसवेयालिय  
 कप्पियाकप्पियं चुल्लकप्पसुय महाकप्पसुयं उववाइय रायप्पसेणीयं  
 जीवाभिगमो पन्नवणा महापन्नवणा नदीअणुयोगदाराइ देविंद  
 थुत्तं तदुलवेयालिय चदा विच्चय पमायप्पमाय वीयरगसुय विहार  
 कप्पो चरणविसोही आउरपच्चख्खाणं महापच्चख्खाणं सव्वेहिंपिए  
 यमि अगवाहिरिए उक्कालिए भगवते ससुत्ते सअत्ते सगंगंये सन्नि  
 जुत्तीए ससंगहणीए जेयुणावा भावावा अरिहतेहिं भगवतेहिं प  
 न्नत्तावा परुवियावा तेभावे सहहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो  
 पालेमो अणुपालेमो तेभावेसहहतेहिं पत्तियतेहि रोयंतेहि फासतेहि  
 अणुपालतेण अतोपख्वस्स जवाइय पढिय परिअट्टियं पुच्चियं अणु  
 पेहियं अणुपालियं तदुख्वख्वयाए कम्मख्वयाए मोहसयाए वोहि  
 लाभाए ससारुत्तारणाए त्तिकट्टु उवसपज्जिन्नाणविहरामि अंतोप  
 ख्वस्स जंनवाइयं नपढिय नपरिअट्टियं नपुच्चिय नाणुपेहिय नाणुपा  
 लिय संतेवले सतेवीरिए सतेपुरिमक्कारपरिकमे तस्स आलोएमो प  
 डिक्कमामो निंदामो गरिहामो वउट्टेमोविमोहेमो अकरणयाए अण्णु  
 मो आहारिहं तवोकम्म पायच्चित्त पडिवच्चामो तस्समिच्चामिदुक्कडं न  
 मोतेसि खमासमणाण जेहिइमंवाइय अगवाहिरिय उक्कालिय भगवतं

तंजहा उत्तरच्च यणाइं दसाञ्च कप्पोववहारो इसिभासियाइं महानिसीहं  
 जंबुद्वीपपन्नत्तो सूरपन्नत्तो चदपन्नत्तो दीवसागरपन्नत्तो खुड्डियाविमा  
 णपविभत्तो महलियाविमाणपविभत्तो अंगचूलिया वंगचूलिया वि  
 वाहचूलिया अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेसमणोववाए  
 वेलधरोववाए देविंदोववाए उट्टाणसुए समुट्टाणसुए नागपरियाव  
 लियाञ्च निरयावलियाञ्च कप्पियाञ्च कप्पवडिसयाञ्च पुप्फियाञ्च पुप्फञ्च  
 लियाञ्च वह्लोदसाञ्च आसीविसभावणाञ्च दिठ्ठीविसभावणाञ्च चारणसु  
 मिणभावणाञ्च महासुमिणभावणाञ्च तेअग्गिनिसग्गाणं सव्वेहपिएयं  
 मि अगवाहिए उक्कालिए भगवते ससुत्ते सअत्थे सग्गथे सन्निजुत्तीए  
 ससंगहणीए जे गुणावा भावावा अरिहंतेहि भगवंतेहि पन्नत्तावा परूवि  
 यावा तेभावेसद्दहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो  
 ते भावे सद्दहंतेहि पत्तियतेहिं रोयतेहि फासंतेहि पालंतेहि अणुपालंतेहिं  
 अंतोपरूखस्स जंवाइयं पढिय परियट्टियं पुच्चियं अणुपेहियं अणुपा  
 लिय तदुखखखायाए कम्मखखायाए मोहखखायाए बोहिलाभाए सं  
 सारुत्तारणाए त्तिकट्ट उवसपज्जित्ताणं विहरामि अंतोपरूखस्स जन  
 वाइयं नपढियं नपरियट्टियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालिय संते  
 बले सतेवीरिए सतेपुरिसक्कारपरिक्रमे तस्स आलोएमो पडिक्कमामो  
 निदामो गरिहामो विउट्टेमो विसोहंमो अकरणयाए अणुठ्ठेमो अहारिहं  
 तवोकम्मं पायच्चित्तपडिवज्जामो तस्स मिट्ठाभिदुक्कड नमोतेसिलमास  
 मणाण जेहिहंमंवाइय दुवालसंगंगणिपिडग भगवंतं तंजहा आयारो  
 सूयगडो ढणो समवाञ्च विवाहपन्नत्तो नायाधम्मकहाञ्च उवासगद  
 साञ्च अतगडदसाञ्च अणुत्तरोववाइअदसाञ्च पएहावागरणं विवाग  
 सुयं दिठ्ठिवाञ्च सुदिठ्ठिसुहाञ्च सव्वेहि पिएयंमि दुवालसगे गणिपिडगे  
 भगवंते ससुत्ते सअत्थे सग्गथे सन्निजुत्तीए ससंगहणीए जे गुणा  
 वा भावावा अरिहंतेहि भगवतेहि पन्नत्तावा परूवियावा तेभावे स

द्वहामो पत्तियामो रोएमो फासेमो पालेमो अणुपालेमो तेभावे सद्  
 इतेहिं पत्तियंतेहिं रोयंतेहिं फासतेहिं पालंतेहिं अणुपालतेहिं अंतो  
 पख्वस्स जवाइयं पडिय परियट्टिय पुच्चियं अणुपेहियं अणुपालियं त  
 दुख्खकयाएकम्मख्खयाए मोहख्खयाए बोहिलाभाए संसारुत्तारणाए  
 त्तिकट्ट उवसंपजत्ताणं विहरामि अंतोपख्वस्स जनवाइयं नपडियं नप  
 रियट्टियं नपुच्चियं नाणुपेहियं नाणुपालियं संतेवले सतेवीरिए संतेपुरिस  
 क्कारपरिकमे तस्सआलोएमो पडिक्कमामो निंदामो गरिहामो विउट्टेमो  
 विसोहेमो अकरणयाए अण्णुहेमो अहारिह तवोकम्मं पायच्चित्त पडिव  
 जामो तस्समिञ्चामिदुक्कडं नमोतेसिंखमासमणाणजेहिंइमंवाइय दुवाल  
 संगं गणिपिडग भगवत्त सम्मकाएण फासति पालति पूरति तीरति किट्टं  
 ति सम्मंआणाए आराहति अहंचनाराहेमि तस्समिञ्चामिदुक्कड ॥ सुयं  
 देवया भगवई, नाणावरणीयकम्मसघायं ॥ तेसिंखवेउसययं, जेसि  
 सुयसागरेभत्तीः ? इति पाक्षिकसूत्र समाप्त ॥



॥ अय अणुपुहरी पोसह विधि लिख्यते ॥ १

॥ रात्रिनी पाठली घन्टियें निद्रा दूर करीने, पंचपरमेष्ठि स्म-  
 रण करी, गृहघिता परिहरी, पर्व दिवसथकी प्रथम दिवसें पन्नि-  
 लेही राख्या, जे पोसहना उपगरण, ते लेई, पोसहशालायें थाप-  
 नाचार्य समीपें, अथवा गुरुनो संयोग हुवे तो गुरुनी पासें आवी,  
 जूमि प्रमार्जी एक खमासमण देई, इरियावदि पडिक्कमि पीठें ख-  
 मासमण देई, ॥ इञ्चाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह मुहपत्ती पन्नि-  
 लेहुं ? गुरु कहे, पन्नि लेहेह इञ्च कही खमासमण देई, मुहपत्ती  
 पन्नि लेहे पीठें उन्नोःथई, खमासमण देई इञ्चाका० ॥ सं० ॥ ज०  
 ॥ पोसह सदिस्तानं ? गुरु कहे, संदिस्तावेह, पीठें इञ्च कही, ख-  
 मासमण देई. इञ्चाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह ठाठं ? गुरु कहे

ठाएह, पीठें इच्छं कही खमासमण देई उजो थई, आधो शरीर  
 नमावी मुखें मुहपत्ती देई, मधुरस्वरें तीन नवकार गुणी कहे. इ-  
 च्छकार जगवन् पसाउ करी, पोसह वंरुक उच्चरावो ? गुरु कहे उ-  
 च्छरावेमो ॥ पीठें करेमि जंते पोसहं ॥ इहांसिं ले के अष्पाणं वो-  
 सिरामि ॥ तक कहे. अत्र पोसहका पञ्चख्वाण लीये, सो लिखते हैं.

॥ अथ पोसहका पञ्चकाण प्रारंभः ॥

॥ करेमि जं ते पोसहं, आहार पोसहं, वेसउं सबउं वा,  
 सरीरसकार पोसहं, सबउं वंरुघेर पोसहं, सबउं अबावार पोसहं,  
 सबउं चउविहे पोसहे, सावळं जोंगं पञ्चख्वामि, जावदिवसं अडी-  
 रतिं वा पञ्जुवातामि, डुविहं तिविहेणं मणेण वायाए काएणं, जं  
 करेमि न कारवेमि, तस्त जं ते पक्कनामि भिंदांमि, गरिदांमि  
 अष्पाणं वोसिरामि.

॥ ए पाठ तीन वार गुरुवचन अनुज्ञापण करतो उच्चं ॥  
 पीठें एक खमासमणें ॥ इच्छाकाण ॥ सं० ॥ ज० ॥ मामाधिक  
 मुहपत्ती पक्किलेहु ? गुरु कहे, पक्किलेहेह बीजी खमासमण देई  
 मुहपत्ती पक्किलेहे. पीठें दोय खमासमणें सामायिक संदिस्ताउं ?  
 सामायिक ठाउं ? कही, खमासमण देई. अर्धावनतगात्र उजो थई  
 तीन नवकार, गुनी तीन करेमि जंते उच्चरी दोय खमासमणें वे-  
 सणो संदिस्ताउं ? वेसणो ठाउं ? कही, पीठें दोय खमासमणें मि-  
 श्राय संदिस्ताउं ? सिश्राय करुं ? कही खमासमण देई उजो थई,  
 आठ नवकारनो सिश्राय करे. शीतादि परितहं उच्चं जनाममणें.  
 पागरणुं संदिस्ताउं ? पागरणुं पक्किलेहु ? कहे, इन्हें सामायिक  
 विधि पूर्व कह्यो वे. तिमहीज करवो, पण इतना विज्ञान वे. पक्किले  
 इरियावही पक्किलेहु वे, तेमाटे इहां सामायिक देई उजो थई.  
 पीठें इरियावही नही पक्किलेहु ॥ पीठें इन्हें देई उजो थई.



सूधी करी कुसुमिण डुस्तमिण कात्रस्तग्न करे, पीठें पन्निक्कमण-  
वेलासीम सिद्धाय ध्यान करे. पीठै पूर्वोक्त रीतें पन्निक्कमण करे,  
पण इतरो विशेष के चारे शुईयें देव वाद्या पीठै खमासमण देई  
कहे ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ बहुवेले संदिस्तात्र ? गुरु कहे,  
संदिस्तावेह पीठें इच्छं कही खमासमण देइ कहे इच्छाका० ॥  
स० ॥ ज० ॥ बहुवेले करु ? गुरु कहे, करेइ ॥ पीठै इच्छ कही,  
तीन खमासमणें श्री आचार्यजी मिश्र १, श्रीउपाध्यायजी मिश्र  
२, श्रीजे सर्वसाधु वादी, कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं इत्यादि नम-  
स्कार जणे, जो पन्निक्कमणवेला नाहिं हुवे, तो सीमधरस्वामीनुं  
चैत्यवंदनादि करी, सिद्धाय करे. इवे पन्निक्कमण वेला पन्निक्कमण  
करे. ते विधिपूर्वें आ ग्रंथना ३३ पृष्ठा लिख्यो ठे तो पण सक्के  
पें फेर लखीयें ठैयें दोय खमासमणें, इच्छाका० ॥ स० ॥ ज०  
॥ पन्निक्कमण करुं ? कही मुद्दपत्ती पन्निक्कमण. पीठै दोय खमा-  
समणें अंग पन्निक्कमण संदिस्तात्र ? अग पन्निक्कमण करुं ?  
कहे. पीठें गुरुवचनें इच्छं कही धोतियो कणदोरो पन्निक्कमण  
वस्त्र पहरेरी, खमासमण देई, इच्छ करुं जगवन् ! पसात्र करी, प-  
न्निक्कमण करावो जी ॥ एम कही, स्थापनाचार्य पन्निक्कमण स्थापे,  
अने जो गुर्वादिक स्थापनाचार्य पन्निक्कमण, तो पण खमासमण देई  
उक्त रीतें आग्या मागे पीठें खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ स०  
॥ ज० ॥ उपधि मुद्दपत्ती पन्निक्कमण ? गुरु कहे, पन्निक्कमण.  
पीठै इच्छ कही, मुद्दपत्ती पन्निक्कमण दोय खमासमणे ॥ इच्छाका०  
॥ स० ॥ ज० ॥ उही पन्निक्कमण संदिस्तात्र ? गुरु कहे, संदिस्ता  
वेइ उही पन्निक्कमण करुं ? गुरु कहे, करेइ.

॥ अथ २४ थंडिला पडिलेहणपाठ लिख्यते ॥

॥ आगाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणेहिंयासे ॥ १ ॥ आ-

गाढे मध्ये उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ २ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ३ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ ४ ॥ आगाढे मध्ये पासवणे अणहियासे ॥ ५ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ ६ ॥ आगाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ७ ॥ आगाढे मध्ये उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ८ ॥ आगाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ ९ ॥ आगाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ १० ॥ आगाढे मध्ये पासवणे अहियासे ॥ ११ ॥ आगाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ १२ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १३ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १४ ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे ॥ १५ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अणहियासे ॥ १६ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणे अणहियासे ॥ १७ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अणहियासे ॥ १८ ॥ अणागाढे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ १९ ॥ अणागाढे मध्ये उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २० ॥ अणागाढे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे ॥ २१ ॥ अणागाढे आसन्ने पासवणे अहियासे ॥ २२ ॥ अणागाढे मध्ये पासवणे अहियासे ॥ २३ ॥ अणागाढे दूरे पासवणे अहियासे ॥ २४ ॥ ए अंमिलपन्निरेहण पाठ कह्या ॥

॥ यहं चोवीस थंडिलां कहां कहां करनां ? सो लिखते हैं.

॥ ६ अंमिला इय्याके दोनुं तरफ दहिणे पासे ३, वाम पासे ३, पन्निरेहे ॥ ६ अंमिला दरवजेके चीतर पासे दहिणे ३, वामे ३ पन्निरेहे ॥ ६ अंमिला दरवजेके बाहर दोनु पासे पन्निरेहे ॥ ६ अंमिला जिहा उच्चार प्रस्त्रवणकी जगा होवे, ते दोनुं तरफ पन्निरेहे ॥ इति २४ अंमिलां पन्निरेहणविधि संपूर्ण ॥

पीठे इच्छं कही, कवज वस्त्रादि पन्निरेही, पोसह शाला प्र

मार्जी काजो विधिगुं पाठवो, एक खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे इहा आचार दिनकरमे कह्यो ते दोय खमासमणें इच्च का० ॥ स० ॥ ज० ॥ वसती सदिस्ताजं ? वसती पन्तिकेहु ? कही वसती मात्रो प्रमुख प्रमार्जे, इत्यादि पण विधिप्रपा प्रमुखमें न कह्यो ॥

॥ दवे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ सिधाय संदिस्ताज ? गुरु कदे, संदिस्तावेद बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सिधाय करु ? गुरु कदे करेद, पीठें इच्च कही नवकार एक कथन पूर्वक उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करी, नवकार एक कही धर्मध्यान करे, जणे, गुणे, वखाण सुणे, इम करता पूर्ण पदुर दिन चढ्या उग्याडा पोरिती अथवा, बहुपन्निपुन्ना पोरिती कही, खमासमण देई, इरियावही पन्तिकमी दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ स० ॥ ज० ॥ पन्तिकेहण करु ? गुरु वचनें इच्च कही, मुहपत्ती पन्तिकेही पान जोजन पात्र पन्तिकेही राखे, पीठें सिधाय ध्यान करे ॥

॥ इवे कालवेलायें आवस्तही पूर्वक देइरे जई पाचे शक्र स्तवें देववादण विधि दो प्रकारसें लिखते है ॥

॥ तीन प्रदक्षिणा देई. तीन वार नमस्कार करी, जूमि प्रमार्जी, पुरुष हुवे तो प्रजुजीके दक्षिण पासें बेसे, स्त्री हुवे तो वाम पासें बेसे, पीठें ॥ इच्छाका० स० ॥ ज० ॥ चैत्यवंदन करु ? इच्च कही, चैत्यवंदन कहे पीठें नमोजुण कहे खमासमण देई इरियावही पन्तिकमे, एक लोगस्तनो काउस्तग करे, मुखें लोगस्त कहे, संमासा प्रमार्जी बेसे, तीन तथा चार तथा पाच आदि देई नमस्कार कहे, "जं किंचि नाम तिच्च" इत्यादि कही पीठें नमोजुण कहे, उजो अई अरिहंत बेईयाणं करेमि काउस्तगं वदणवत्ती ॥

अन्नबू० कही, एक नवकारनो काठस्तग करे. पारी एक थुईकी गाथा कहे ॥ पीठें लोगस्त० सबलोए अरि० वंदणव० अन्नबू० कही. एक नव० पारी वृरी० थुईकी गाथा कहे पीठें पुस्करवरवी० सुअस्त जग० वंदण० अन्नबू० कही एक नवकार० पारी तीसरो थुईकी गा० पीठें सिद्धाणं बुद्धाणं० वेपावच्चगराणं० अन्नबू० इत्यादि कथन पूर्वक चौथी थुईकी गाथा कहे कर, बैठके नमोबूणं कहे. फेर अरिहंतचेई० कहे. इती तरे चार थुईये देव वांवी बैठे ॥ नमोबूणं कहे. नमोऽर्हस्तिद्वाचार्योपाध्याय इत्यादि कही पीठें स्तवन कहे. पीठें जयवीरराय कही. नमोबूणं सबवे तिविद्देषां वंदामि पर्यंत कहे ॥ एम पाचे शक्रस्तव देववंदन विधि जाणवो ॥

॥ ए विधि प्रवचनसारोक्षर प्रमुख ग्रंथमें कह्यो ठे. तथा चैत्यवंदन वृद्धनाप्यमें एम कह्यो ठे ॥ नमस्कार कथन पूर्वक शक्रस्तव कही, इरियावही प्रतिक्रमणादि करें; वली नमस्कार कथनपूर्वक शक्रस्तव कही दोय वार चार थुईसे देव वांवे फेर शक्रस्तव कही " जावंति चेश्याइं " गाथा जणी खमासमण पूर्वक जावंति के० बीजी गाथा कही, स्तवन कहे. वली नमोबूणं कही जयवीरराय कहे ॥ इति देववंदन विधि ॥

॥ पीठें निस्तही पूर्वक पौसदशाला माहे आर्वी, इरियावही पम्किमे. पीठें सिद्धाय ध्यान करे, जो तिविद्दार उपवास कियो हुवे, तो पञ्चखाण वेला पूर्ण हुवा जल पीणेकू पञ्चकाण पारे ॥

॥ हवे पञ्चखाण पारणेका विधि लिखते हें ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पम्किमे फिर एक खमासमण ॥ इच्छा० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पञ्चखाण पारवा मुहपत्ती पम्कि लेहुं १ गुरु कहे, पम्किलेहेह ॥ पीठें इच्छं कही खमासमण देई, मुहपत्ती पम्किलेहे. खमासमण देई, इच्छाका० ॥

ज्ञ० ॥ पाणहार अमुक पञ्चख्वाण पारु ? गुरु कहे, पुणोवि का यवो पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई इच्छाका० ॥ सं० ॥

ज्ञ०-पाणहार पारु ? गुरु कहे, आहारो न मोत्तवो. पीठें तद्वत्ति कही, अमुक पञ्चख्वाण चउविहार कर्यो, एम एक नवकार गुणी पञ्चख्वाण फासियं, पालिय, सोदियं, तीरिय, किट्टिय, आरादियं, जं च न आरादियं, तस्त मिच्छामि उक्कमं, कही ॥ चैत्यवंदन करे. क्षणमात्र सिद्धाय करी यथासंज्ञवें अतिधिसविज्ञाग करी पाणीपीवे ॥

॥ तथा उपधानवाही हुवे, तो पोरिस्ती प्रमुख पञ्चख्वाण पारी आहार करे पीठे आसण वैठो थकोहीज दिवस चरिम पञ्चख्वाणे, पीठे इरियावही पन्किमी चैत्यवंदन करे, ए चैत्यवदन आहार सवरण निमित्तें ठे ॥ इति पञ्चख्वाण पारणोका विधि ॥

॥ पीठे जो व हिर्नूमि जावणो हुवे, तो आवस्सही कही उपयोगी धको, निर्जीव अमिले जई, अणुजाणह जस्सुगहो कही पूर्व, उत्तर, सूर्य, ग्रामादिकने पूंठि अण देई, मलमूत्र परिठवे, प्राशुकजलें शुद्ध धई तीन वार वोसिरामि, एहवु कहिवे करी मल मूत्र वोसिरावी, पोसहशालाये निस्सही पूर्वक पेसी इरियावही पन्किमे खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ गमणा गमण आलोयहं ? गुरु कहे, आलोएह पीठे इच्च कही गमणाग मण आलोवे ॥ ते इम आवस्सही करी, प्राशुक वेशें जई, संना सा पूजी, अमिलो पमिलेही, उच्चार प्रश्रवण वोसिरावी, निस्सही करी, पोसहशाळाये आव्यो ॥ आवंति जंतेहिं जं खंभियं, जं विरा दियं, तस्त मिच्छा मि उक्कम, एम कही वेसे. पीठें पमिलेहण वेला सीम सिद्धाय ध्यान करे ॥

॥ हवे पाठले पदुरे इरियावही पन्किमी खमासमण देई कहे, इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पमिलेहण करु ? गुरु कहे करेह.

इष्टं कही दूजे खमासमणे इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसहशाखा  
 प्रमार्जु ? गुरु कहे, प्रमार्जह. पीठे इष्टं कही, मुहपत्ती पन्डितेही  
 दोय खमासमणें अंग पन्डितेहण संदिस्तानं ? अंग पन्डितेहण कं ?  
 कहे. पीठे गुरु वचनें इष्टं कही मुहपत्ती पन्डितेही दंमासलो इच्छाका०  
 प्रमुखले प्रमार्जी पोसहशाला प्रमार्जे. पीठे काजो गुरु इष्टं कहे  
 एकार्ते विखरतो परठयो इरियावही पन्डिकमी, खमासमण कहे  
 कहे ॥ इच्छाकार जगवन् पतान करी पन्डितेहणा पन्डितेहणें ?  
 पीठे स्थापनाचार्य पन्डितेही स्थापे. गुरुमणीपें अग्रवा श्रावण  
 समीपें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पन्डितेहुं ?  
 गुरु कहे, पन्डितेहेह. पीठे इष्टं कही खमासमणें ?  
 मुहपत्ती पन्डितेहे. पीठे दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ सिधाय संदिस्तानं ? सिधाय कं ? उक्त रीते इच्छाकार  
 ध्याय करी तिविहार उपवास कीधो हुवे तो गुरु मुखें पन्डितेहण  
 पञ्चके ॥ उपधानवाही प्रमुख आहार कीधो हुवे तो गुरु मुखें  
 दोय देई, पञ्चकाण करे. पीठे एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ उपधि थंमिला पन्डितेहण संदिस्तानं ? उक्त रीते  
 मासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उपधि थंमिला पन्डितेहणें ?  
 गुरु वचनें इष्टं कही, दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥  
 ॥ वेसणो संदिस्तानं वेसणो ठानं ? कही वेसणें पन्डितेहणें ?  
 पन्डितेहे. पुजणी हुवे, तो ते पण मुहपत्तीशुं पन्डितेहणें ? उक्त रीते  
 ठे तेमाटे सर्व पाठो कनिपट्टो धोतीयो कनिपट्टो पन्डितेहणें ? उक्त रीते  
 नवाही प्रमुख जोजन कीधो हुवे तो कनिपट्टो पन्डितेहणें ? उक्त रीते  
 वस्त्र कंबलादि पन्डितेहे. ए विशेष ठे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥  
 सिधाय ध्यान करे. पीठे जो चतुदश हुवे, तो पावो

संबन्धरी पन्धिक्रमणो करे तिहा देवस्ती पन्धिक्रमणो पूर्वे लिख्यो  
ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसिर्य आलो  
एमि इत्यादि देवस्ती आलोयां पीठे " ठाणे कमणे चंकमणे " इ  
त्यादि पाठ कहे. खुद्दोवद्दव कान्तस्सग कियां पीठे दोय खमासम  
णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिधाय संदिस्ताजं ? सिधाय करुं?  
कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिधाय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पन्धिक्रमणविधि थामे एही ' पुस्तकमे  
लिख गर्ये है वहासें जान लेना

॥ हवे पन्धिक्रमणो हुवा पीठे साधुको वेयांवच्च करी पोरती  
सीम सिधाय ध्यान करे जो लवुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसक्त  
कहेतो थको, जूमि प्रमार्जे अम्लि स्थानके जई, देहशका निवारे  
प्रश्रवण बोसिरावी, स्वस्थानके आवे जगवन् । बहु पन्दिपुत्रा पो  
रती एम कही खमासमण देई इरियावही पन्धिक्रमे, पीठे राई  
सथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई सथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइ सथारा  
मुहपत्ती पन्दिहेहु ? गुरु कहे, पडिलेहंह पीठे छ कही, खमास  
मण देई मुहपत्ती पन्दिहेदे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
ज० ॥ राइ सथारो सदिस्ताज ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०  
॥ ज० राई सथारो ठावु ? पीठे गुरु वचनें इच्छं कही, चन्द्रकसाय  
पन्दिमन्त्रुत्तरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीरराय सूधी  
चैत्यवदन करे, जूमि प्रमार्जी, सथारो उत्तर पट्टो पाथरे, पीठे  
शरीर प्रमार्जी निस्तही निस्तही एम कही मथारे बेसी, तीन  
नवकार तीन करैमि जते ऊचरी ॥ एमो खमासमणाणं, गोयमा  
ईण महामुणीणं, 'अणुजाणह जिण्डिका अणुजाणह परम गुरु'

इत्यादि राइ संथारा गाथा जखी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे, निद्रा नावे जा सोम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवानो फेर तो शरीर संथारो प्रमार्जी फेर, जो देह शंकायें छे, तो पूर्वोक्त विधे देहशका निवारी, इरियावही पन्किमे ॥ पीठें जघन्ये पण तीन गाथानी सिधाय करी सोवे ॥ इति राइ संथारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पदोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पन्किमे. खमासमण देई कुसुमिण इस्तुमिण काउस्तग करी, पूर्वोक्त विधे सामायिक लेवे, इडा इरियावही न पन्किमे. पीठें दोयखमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार गुणी, पन्किमण वेला सीम सिधाय करे. पन्किमण वेला दुवां पन्किमणो पूर्वली परे करे, पण इतरो विशेष ठे, के राइ आलोया पीठें सथारा उवणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पन्किमणो करी पन्किमेदण वेलायें पूर्वोक्त विधे पन्किमेदण करी, धर्मशाला पूंजी काजो ऊररी इरियावही पन्किमे. दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. पीठें पोसह पारे ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पन्किमेदे. फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं ? गुरु कहे, आयारो न मोत्तवो. पीठें तदति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उजो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पन्किमेदे, पीठें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारु ? गुरु कहे पुणोवि कायवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयु ? गुरु कहे आ-



सर्वञ्चरी पन्धिक्रमणो करे तिहा देवसी पन्धिक्रमणो पूर्वे लिख्यो  
 ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसियं आलो  
 एमि इत्यादि देवसी आलोयां पीठें “ गणो कमणो चंकमणो ” इ  
 त्यादि पाठ कहे. खुदोवह्व काञ्चस्तग कियों पीठें दोय खमासम  
 णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिध्याय संदिस्ताञं ? सिध्याय करु!  
 कही बैठो थको तीन नवकार प्रमुख सिध्याय करै ॥ इति ॥

॥ पाक्षिकादि तीन पन्धिक्रमणविधि आगें एही पुस्तकमें  
 लिखे गये है वहासैं जान लेना.

॥ हवे पन्धिक्रमणो हुवा पीठें साधुको बेयावञ्च करी पोरसी  
 सीम सिध्याय ध्यान करे जो लघुनीति प्रमुख करवी हुवे, आसंज्ञ  
 कहेतो थको, जूमि प्रमार्जे अमिल स्थानकें जई, देहशंका निवारे  
 प्रश्रवण बोसिरावी, स्वस्थानकें आवे जगवन् ! बहु पन्दिपुत्रा पो  
 रसी एम कही खमासमण देई इरियावही पन्धिक्रमे, पीठें राई  
 सथारा विधि करे ॥

॥ हवे राई सथारा विधि कहे छे ॥

॥ खमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइ संधारा  
 मुहपत्ती पन्दिदेहु ? गुरु कहे, पडिलेहेह पीठें इच्छ कही, खमास  
 मण देई मुहपत्ती पन्दिदेहे एक खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ राइ सथारो संदिस्ताञं ? बीजे खमासमणें ॥ इच्छाका० सं०  
 ॥ ज० राई सथारो ठावु ? पीठें गुरु वधनें इच्छ कही, चञ्चकसाय  
 पन्दिमन्त्रुद्वरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक जयवीरराय सूधी  
 चैत्यवदन करे जूमि प्रमार्जी, सथारो उत्तर पट्टो पाथरे, पीठें  
 शरीर प्रमार्जी निस्तही निस्तही एम कही सथारे बेसी, तीन  
 नवकार तीन करेमि जते ऊञ्चरी ॥ एमो खमासमणाणं, गोयमा  
 ईण महामुणीण, अणुजाणह जिडिजां अणुजाणह परमे गुरु

इत्यादि राइ संघारा गाथा ज्ञानी, वाम हाथ सिराणें देई सोवे. निद्रा नावे जा सीम मुनिवर चरित्र चिंतवे, पसवानो फेर तो शरीर संघारो प्रमार्जी फेर, जो देह शंकायें छेउ, तो पूर्वोक्त विधें देहशका निवारी, इरियावही पन्तिकमे ॥ पीठें जघन्यें पण तीन गाथानी सिधाय करी सोवे ॥ इति राइ संघारा विधि कह्यो ॥

॥ हवे रात्रिने पाठिले पहोर ऊठी, नवकारादि गुणी, इरियावही पन्तिकमे. खमासमण देई कुसुमिण डुस्तुमिण काजस्तगग करी, पूर्वोक्त विधें सामायिक लेवे, इहा इरियावही न पन्तिकमे, पीठें दोयखमासमणें सिधाय संदिस्तावी आठ नवकार गुणी, पन्तिकमण वेला सीम सिधाय करे. पन्तिकमण वेला हुवा पन्तिकमणो पूर्ववी परें करे, पण इतरो विशेष ठे, के राइ आलोयां पीठें संघारा उवळणकी इत्यादि पाठ कहे. एम संपूर्ण पन्तिकमणो करी पन्तिकेहण वेलायें पूर्वोक्त विधें पन्तिकेहण करी, धर्मशाला पूंजी, काजो ऊहरी इरियावही पन्तिकमे. दोय खमासमणें सिधाय संदिस्तावी, उपदेशमाला प्रमुख सिधाय करे. पीठें पोसह पारे. ॥

॥ अथ पोसहपारणेका विधि लिखते हैं ॥

॥ खमासमण देई मुहपत्ती पन्तिकेहे फेर खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारुं ? गुरु कहे, पुणोवि कायवो. पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ पोसह पारयुं ? गुरु कहे, आचारो न मोत्तवो. पीठें तद्वत्ति कहे. खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उजो थको तीन नवकार गुणी, खमासमण देई, मुहपत्ती पन्तिकेहे, पीठें खमासमण देई कहे ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सामायिक पारुं ? गुरु कहे पुणोवि कायवो, पीठें यथाशक्ति कही, खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ सामायिक पारयुं ? गुरु कहे आ-

संबन्धरी पन्धिक्रमणो करे तिहा देवसी पन्धिक्रमणो पूर्वे लिख्यं  
 ठे, तिमहज करे, पण इतरो विशेष ठे ॥ इच्छा० ॥ देवसिधं आस  
 एमि इत्यादि देवसी आलोया पीठें “ गणो कमणे चंकमणे ”  
 त्यादि पाठ कहे. खुदोवद्व काउस्तग किया पीठें दोय स्वम  
 णें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० सिध्याय संदिस्ताउं ? तिध्या  
 कही बैगे थको तीन नवकार प्रमुख सिध्याय करै ॥ -

॥ पाठिकादि तीन पन्धिक्रमणविधि आगें एही  
 लिख गये है वहासैं जान लेना

॥ हवे पन्धिक्रमणो हुवा पीठें साधुको वेयावच्च  
 सीम सिध्याय ध्यान करे जो लघुनीति प्रमुख करवी  
 कहेतो थको, जूमि प्रमार्जे थन्दि स्थानकें जई, देह  
 प्रश्रवण वोसिरावी, स्वस्थानकें आवे जगवन् । व  
 रसी एम कही स्वमासमण देई इरियावही पन्दि  
 सधारा विधि करे ॥

॥ हवे राई संधारा विधि कहे छे ॥

॥ स्वमासमण देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज०  
 मुहपत्ती पन्दिदेहु ? गुरु कहे, पदिलेहह पीठें  
 मण देई मुहपत्ती पन्दिदे. एक स्वमासमणें ॥  
 ज० ॥ राई सधारो सदिस्ताउं ? बीजे स्वमासमणें  
 ॥ ज० राई सधारो ठावु ? पीठें गुरु वधनें इच्छा  
 पन्दिमन्त्रुन्नूरण इत्यादि नमस्कार कथन पूर्वक  
 चैत्यवंदन करे, जूमि प्रमार्जी, संधारो उत्तर  
 शरीर प्रमार्जी निस्तही निस्तही एम कही  
 नवकार तीन करेमि जते उच्चरी ॥ एमो स्व  
 ईशं महामुणीशं, अणुजापाह जिञ्जिआ अ

देई ॥ इच्छाका० सं० ॥ ज० ॥ राइय आलोउं १५५५ कहे, आ-  
लोएह, पीठें राई आलोवे, फेर एक खमासमण देई ॥ इच्छाका०  
॥ सं० ज० ॥ अश्रुद्विजमि अश्रितर, राईयं खामेमि ? गुरु कहे  
खामेह. पीठें सब पाठ कहे, राई खामे, पहिला पन्तिकमणामें न-  
वकारसी पञ्चख्यो थो तेमाठें पीठें गुरु साखें पञ्चस्काण उपवासनो  
करे. पीठें दोय खमासमणें बहुवेळें संदिस्तावे ॥ ए तीन प्रकार-  
का विकल्प जाणनां. हवे पन्तिकेहण तो पूर्वे करी ठे, तो पण  
आदेश मागवो. ते एम खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज०  
॥ पन्तिकेहण संदिस्ताउ ? वीजे खमासमणें पन्तिकेहण करुं ?  
कही मुहपत्ती पन्तिकेहे. पीठें इमहीज दोय खमासमणें अंग पन्-  
तिकेहण संदिस्तावी मुहपत्ती पन्तिकेहे. पीठें वली खमासमण देई  
इच्छकार जगवन् ! पसाउ करी पन्तिकेहण पन्तिकेहावो जी. एम  
कहे, पीठें एक खमासमण देई ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥ ज० ॥ उ  
पधि मुहपत्ति पन्तिकेहुं ? कही कोई वख अणपन्तिकेह्यो राख्यो  
हुवे, तो पन्तिकेहे. नहीं तो वली आसण पन्तिकेहे. दोय खमास  
मणें सिध्दाय संदिस्तावी उपदेशमाला प्रमुख सिध्दाय करे आगें  
सर्व क्रिया पूर्वे अठ पुहरी पोसहमें लिखी है. तिमहीज जाणवी,  
पण इहा अठ पुहरी पोसह तो पाठली रातें वली सामायिक न  
लेवे. जिणें दिवस संवंधी चउ पुहरो पोसह लीगो हुवे, ते पाठले  
पुहर पञ्चस्काण किया, पं.ठै दोय खमासमणें उंदी पन्तिकेहण सं-  
दिस्ताउ ? उंदी पन्तिकेहण करु ? कहे, पण अंमिला पद न कहे.  
अने अंमिला नहीं पन्तिकेहे. यह नि केवल दिन संवंधी पोसह अ-  
दण करणेंमें विशेष विधिही, सो बतार्ई ॥ इति दिनसंवंधी पोसह  
अदणविधि ॥

यारो न मोतव्वो पीठें तहत्ति कदी खमासमण देई अर्धावनत गात्रें उज्जो थको हाथ जोळ्या- मुद्दपत्ती मुखें दिया थका तीन न चकार गुणी सन्नासा पन्डिलेहे. गोमालाये वेसी मस्तक नमावी, “ जयव दसन्नज्जदो ” इत्यादि ज्ञावनारूप गाथा कहे. पीठें पोस-हना उपगरण संवरी, देहरे जई देव जुहारे घरे आवी आहार निष्पन्न हुवो देखी साधु समीपें आवे, अतिथि संविज्ञागव्रत सा-चवण निमित्तें साधु जणी निमंत्रणा करी, घरे ले जावे, साधु पण शुद्ध आहार लेई, स्वस्थानकें आवे, तिवार पीठें साधुनें जे आहार दीधो, तेहनोहीज शेष आहार आप करे ॥ इति आठ पुहरी पोसह ग्रहण पारण विधि ॥

॥ हवे दिन ऊग्या पीठें पोसह ले, तेहनो विधि कहे छे ॥

॥ घरथकी निश्चित अई धर्मस्थानकें आवी, सर्व उपगरण पन्डिलेही, कचरो विधिगुं परठवी इरियावही पन्डिकमे. खमास-मण पूर्वक आग्या मागी, पोसह मुद्दपत्ती पन्डिलेहे, आगे पोसह ग्रहणका विधि पूर्वें लिखा है तिमहिज जाणवो. पण दिवस पो-सहदीज करणो हुवे, तो पोसह दंरुक उच्चरता जावदिवसं पञ्जु-वासासि, एहवो पाठ कहे. अने जो अठपुहरी करवो हुवे, तो जाव अहोरत्तिं पञ्जुवासासि एहवो पाठ कहे पीठें सामायिक विधि सर्व करी चैत्यवदन कुसुमिणाडुस्तमिण काठस्तग करी पन्डिकमणो करी दोय खमासमणें बहुवेळ संदिस्तावे १, अने जो पूर्वें पन्डिकमणो गुरु साथें करयो हुवे, तो पन्डिकमणानें अर्तें पन्डिलेही शरव्या जे वस्त्र, ते पहेरी पोसह सामायिक सर्व विधि करी दोय खमासमणें बहुवेळ संदिस्तावे १, तथा जो गुरुसं जूवो पन्डिक-मणो करयो हुवे, तो गुरुपासं आधी पोसह सामायिक सर्व विधि करी, आठोण खामणादि निमित्तें मुद्दपत्ती पन्डिलेही बे वादणां

पन्डितेहण संदिस्तावी, मुहपत्ती पन्डितेहे, फेर धे खमासमण वैई, उही थंमिला पन्डितेहण संदिस्तावी जो थरणपडिलेह्यो उपगरण हुवे तो पन्डितेहे, जो सर्व उपगरण पन्डितेह्या हुवे, तो पण था नक जून्यता टालवा जणी वली आसण पडिलेही, पडिकमण वे ला सीम सिध्दाय ध्यान करे, पीठें उच्चार प्रथवणना १४ थडिला पडिलेही पडिकमणो करे, तथा पावली रातें वली सामायिक न लेवे, इतनां निकेयल रात्रिसंबधि पोसह लेवाना विरुध्य जाणवा ॥ इति रात्रि पोसहविधि संपूर्णः ॥

॥ अथ ठाणेकमणे चंकमणे लिख्यते ॥

॥ ठाणेकमणे चंकमणे आउते थणउते ॥ हरियकायसंघटे धीयकायसंघटे थावरकायसंघटे उपपइयासंघटे सबस्तवि देवसिअ, डुच्चितिय डुप्रासिय डुच्चिठिय ॥ इच्छाकारेण संदिस्तह, इच्छं तस्त मिच्छा मि डुक्कं ॥ १ ॥ संथाराउवटणकी, आउटणकी, परिअट्टण की, पसारणकी, उपपइयासंघट्टणकी, अच्चरुकविसयकायकी, सबस्म विराइअ, डुच्चितिय, डुप्रासिय, डुच्चिठिय, इच्छाकारेण संदिस्तह, इच्छं तस्त मिच्छा मि डुक्कं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ देवांदणमें अथवा प्रातःकाल संध्याकालके  
प्रतिक्रमणमें कहनेकी स्तुति ॥

॥ तत्र प्रथम बीजकी स्तुति ॥

॥ महीमंरुणं पुन्नसोवन्नदेहं, जणाणंदणं केवलज्जाणगेहं ॥  
मदानंद जह्णी बहु बुद्धियं, सुसेवामि सीमंधर तिञ्जरायं ॥ १ ॥  
पुरा तारगा जेह जीवाण जाया, जवस्संति ते सब ज्जाण ताया  
॥ तदा सपयं जे जिणा वट्टमाणा, सुहं दित्तु ते मे तिलोयप्पहा-  
णा ॥ २ ॥ डुरुत्तार संसार कुट्टार पोय, कज्जका वली पंकरकाल,

॥ अथ शीघ्र सर्वाधि चउपुहरी पोसहनो विधि कहे हैं ॥

॥ तिहां जिणे प्रथम चउ पुहरी दिवस पोसो ऊचरयो है.  
 पीठें संध्यानी पन्विलेहण करता रात्रि पोसहनो जाव थयो, तो  
 पञ्चस्काण किया पीठें दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पन्विलेही  
 तीन नवकार गुणी तीन वार पोसह दंरुक उचरे. तिहां जाव  
 रत्ति पञ्जुवासामि एम पाठ उचरे, पीठें सामायिक विधि पूर्व  
 लिख्यो तिम करे पण सामायिक ऊचरया पीठें दोय खमासमणें  
 सिध्याय सदिस्तावी आठ नवकार कही बेसणो सदिस्तावी, पाग  
 रणो सदिस्तावी, पीठें दोय खमासमणें ॥ इच्छाका० ॥ सं० ॥  
 ज० ॥ उही थमिला पन्विलेहण सदिस्ताउं उही थमिला पन्विले  
 हण करुं? गुरु कहे, करेह इच्छं कही उपधि पन्विलेहे. आगे सर्व  
 क्रिया पूर्व लिखी तिम जाणवी. तथा जे श्रावक उपवासी तो  
 व्यग्रपणें दिवसें पोसह न करी शक्यो, ते रात्रि पोसहनो जाव  
 थये, पाठले पदुर धर्मस्थानकें आवे जो वसती प्रमार्जी हुवे, तो  
 सरयो, नही तो वसती प्रमार्जी, काजो परिठवी सर्व उपकरण  
 पन्विलेही इरियावही पन्विकमे. पीठें चउविदार पञ्चस्काण करी  
 दोय खमासमणें पोसह मुहपत्ती पन्विलेही दोय खमासमण देई  
 पोसह सदिस्तावे फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन  
 वार पोसह दंरुक उचरे. तिहा दिवसेसरत्ति पञ्जुवासामि कहे सं  
 ध्या हुवे, तो रत्ति पञ्जुवासामि कहे पीठें विहु खमासमणें सामा  
 यिक मुहपत्ती पन्विलेहे दोय खमासमण देई, सामायिक सदि  
 स्तावे. फेर खमासमण देई, तीन नवकार गुणी, तीन करेमि जते  
 उचरे. दोय खमासमण देई सिध्याय सदिस्तावी, आठ नवकार  
 कहे. फेर दो खमासमण देई, बेसणो सदिस्तावी सीतादिकें बे  
 खमासमण देई, पागरणु सदिस्तावे पीठें बे खमासमण देई, अग

गणधर मुनि परिवार ॥ ऋषियणने तारे, देई धरम उपदेश ॥ दूध  
साकरथी पण, वाणी अधिक विशेष ॥ ३ ॥ पोसो पडिकमणुं, कं  
रिये व्रत पञ्चक्काण ॥ आठम तप करतां, आठ करमनी हाण ॥  
आठ मंगल थाये, दिन दिन कोडि कळयाण ॥ जिनसूखसूरि कहे,  
इम जीवत जनम प्रमाण ॥ इति अष्टमी स्तुति ॥

॥ अथ मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अरस्य प्रव्रज्या नमिजिनपतेर्ज्ञानमतुलं, तथा मध्येर्जन्म  
व्रतमपमलं केवलमलं ॥ बलकैकादश्यां सदसि लसद्ब्रह्ममहसि,  
क्षितौ कळयाणानां कृपति विपदः पंचकमदः ॥ १ ॥ सुपर्वेद्रप्रेण्या  
गमनगमनैर्भूमिवलयं, सदा स्वर्गत्येवाहमहमिकया यत्र सलयं ॥  
जिनानामप्यापुः कृणमतिमुखं नारकसदः, क्षितौ ॥ २ ॥ जिना  
एवं यानि प्रणिजगद्गुरात्मीयसमये, फलं यत्कर्तुणामिति च विदि  
तं शुद्धसमये ॥ अनिष्टारिष्टानां क्षितिरनुजवेयुर्वहुमुदः, क्षि० ॥ ३ ॥  
सुराः सेंद्राः सर्वे सकलजिनचंद्रप्रमुदिता, स्तथा च ज्योतिष्काखि  
लजवननाथाः समुदिताः ॥ तपो यत्कर्तुणां विदधति सुखं विस्मि  
तहृदः, क्षितौ ॥ ४ ॥ इति मौनैकादशीस्तुतिः ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तुति ॥ हरिगीत च्छंद ॥

॥ ईईकि धपमप, धुधुमि धोंधों, ध्रसकिधर, धपधोरवं ॥  
दोंदोंकि दों दों, दाग्ढिदि दाग्ढिदिकि, द्रमकि द्रण रण, द्रेणर्व ॥  
ऊजिऊँकि ऊँऊँ, ऊणणरणरण, निजकि निजजन, रंजनं ॥ सुर  
शैल शिखरे, ऋवतु सुखदं, पार्श्वजिनपतिमज्जनं ॥ १ ॥ कटरेगिनि  
शौगिनि, किटति गिगुरुदाधुधुकि घुटनट, पाटवं ॥ गुणगुणण गुणगण,  
रणकि णोंणों, गुणणगुणगण, गौरवं ॥ ऊजि ऊँकि ऊँऊँ, ऊणण, र  
णरण, निजकि निजजन, सज्जना ॥ कलयंति कमला, कलितक  
लमल, मुकलमीश, महेजिना ॥ २ ॥ ठकि वूँकि वूँवूँ, ठईँठ व



तोर्य ॥ मणोवेठिये सुमंदारकप्प, जिणंदागमं वंदिमो सुमहा  
 ॥ ३ ॥ विकोसे जिणदाणणंजोजलीणा, कळारूव लावण सोद्ध  
 पीणा ॥ वहं तस्त चित्तमि णिच्चं पि जाणं, सिरी जारई देदि  
 सुद्धाण ॥ ४ ॥ इति श्रीसीमंधरजीनी स्तुति ॥ १ ॥

॥ अथ पंचमी स्तुतिः ॥

॥ पंचानंतकसुप्रपंचपरमानंदप्रदानकर्म, पंचानुत्तरसीमदिः  
 पदवीवश्याय मन्त्रोत्तमम् ॥ येन प्रोज्ज्वलपचमीवरतपो व्याहा  
 तत्कारिणां, श्रीपचाननलांठनः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रिय  
 ॥ १ ॥ ये पचाश्रवरोधसाधनपरा पचप्रमादीहराः, पंचाणुव्रतपच  
 सुव्रतविधिप्रज्ञापनासादराः ॥ कृत्वा पचरूपीकनिर्जयमद्यो प्राप्ता  
 गतिं पंचमीं, तेऽमी संतु सुपचमीव्रतचृतां तीर्थकरा शकरा ॥२॥  
 पचाचारधुरीणपंचमगणाधेशेन संसूत्रित, पचज्ञानविचारसारकलितं  
 पंचेषुपचत्वदम् ॥ दीपाञ्ज गुरुपचमारतिमिरेष्वेकादशी रोहिणी,  
 पचम्यादिफलप्रकाशनपटु ध्यायामि जैनागमम् ॥ ३ ॥ पंचानां  
 परमेष्ठिना स्थिरतया श्रीपचमेरुश्रियां, जक्तानां जविनां गृहेषु व-  
 द्दुशो या पंचदिव्य व्यधात् ॥ प्रह्लो पंचजने मनोमतकृतौ स्वारत्न  
 पञ्चालिका, पचम्यादितपोवता जवतु सा सिद्धायिका त्रायिका  
 ॥ ४ ॥ इति श्रीज्ञानपंचमीस्तुतिः ॥

॥ अथ अष्टमीस्तुति ॥

॥ चणवीसे जिनवर, प्रणमं हु नितभेव ॥ आठम दिन करिये,  
 चद्रप्रज्जुनी सेव ॥ मूरति मन मोहे, जाणे पूनिम चंद ॥ दीगां  
 दुःख जाये, पामे परमानद ॥ १ ॥ मिलि चोसठ इद्र, पूजे प्रज्जु  
 जीना पाय ॥ इद्राणी अपचर, फर जोडी गुण गाय ॥ नंदीश्वर  
 द्वीपे मिलि सुरवरनी फोड ॥ अष्टाइ महोच्चव, करता होडाहोड  
 ॥ २ ॥ शेष्रुजा शिखरे, जाणी लाज अपार ॥ चणमार्ले रहिया,

सण, दारुणां धरमनी शीर ॥ आपाढ चौमासें हूंती दिन पंचास,  
 पन्निक्कमण संवच्छरी करिये अण उपवास ॥ १ ॥ षष्ठवीशे जिनवर  
 पूजा सत्तर प्रकार, करिये जले जावे जरिये पुण्य जंमार ॥ वलि  
 चैत्व प्रवासें फिरतां जान्न अनंत, इम परव पजूसण सहुमें महि  
 मावंत ॥ २ ॥ पुस्तक पूजावी नव वांचनाये वचाय, श्रीकल्प  
 सूत्र जिहां सुणता पाप पुलाय ॥ प्रतिदिन परजावना धूप अणर  
 ठकेव, इम जवियण प्राणी परव पजूसण सेव ॥ ३ ॥ वलि सा  
 इम्मीवच्छल करिये वारंवार, केइ जावना जावे केइ तपसी शी-  
 लधार ॥ अरुदीइ पजूसण एम सेवत आणंद, सुयदेवी सांनिध  
 कहे जिनजान्न सूरिंद ॥ ४ ॥ इति श्रीपर्यूपणप० ॥

॥ अथ नेमनाथजीकी स्तुति ॥

॥ सुर असुर वंदिय पाय पंकज मयणामल्लअहोन्नितं, धन  
 सघनश्याम शरीर सुदर शंख लंठन शोन्नितं ॥ शिवादेवि नंदन  
 त्रिजग वंदन जविक कमल दिनेश्वरं, गिरनार गिरिवर शिखर  
 वंदूं नेमिनाथ जिनेश्वरम् ॥ १ ॥ अष्टापदे श्रीआदिजिनवर  
 वीर जिन पावापुरे, वासुपूज्य चंपापुरिय सीधा नेम रेवय  
 गिरिवरे ॥ समेतशिखरे वीस जिनवर मुगति पहुता मुनिवरू,  
 षष्ठवीस जिणवर तेह वंदूं सयल संघे सुखकरू ॥ २ ॥ इग्यार  
 अंग उपांग वारे वश पयना जाणिये, ठ छेद अंध प्रसन्न अर्था  
 चार मूल वखाणिये ॥ अनुयोग द्वार उदार नंदीसूत्र जिन  
 मत गाइये, एइ वृत्ति चूर्णी जाण्य पेंतालीश आगम ध्याइये  
 ॥ ३ ॥ डहुं विसैवालक दोय जेइने सदा जवियण सुखकरू,  
 डख हरे अंधा लुख सुंदर डरिय दोहग अपहरू ॥ गिरनार मंरुण  
 नेमि जिनवर चरणपंकज सेविये, श्रीसंघ सहुनें सदा मंगल करो  
 अंधा देविये ॥ ४ ॥ इति गिरनारमंरुण श्रीनेमि० ॥

हिंकि, गहिंपद्म, ताड्यते ॥ तल्लोकि लोलो, त्रैवि त्रैपिनि, मेदिनि  
 नि, वाद्यते ॥ ॐ ॐ कि ॐ ॐ, धुंगि धुंगिनि, धोंगिधोंगिनि, स्व  
 रवे ॥ जिनमतमनंतं, महिम तनुतां, नमति सुरनर, मुञ्चवे ॥ ३॥  
 पुदाकि पुदां, पुपुद्दि पुदां पुपुद्दि दोंदों, अंधरे ॥ चाचपट चचपट,  
 रणकि ऐणैरणण मँमँ, मँवरे ॥ तिद्दा सरगमपधुनि, निधपमगरस,  
 सस ससस सुर, सेवता ॥ जिननाट्यरगे, कुशलमुनि शं, विदातु  
 शासन, देवता ॥ ४ ॥ इति श्रीजिनकुशलसूरिजीकृत पार्श्वजिन ० ॥

॥ अथ आंबिलकी स्तुति ॥

॥ निरुपम सुखदायक जगनायक लायक शिवगति गामी  
 जी, करुणासागर निजगुण आगर गुञ्ज समता रस धामी जी ॥  
 श्रीसिद्धचक्र शिरोमणि जिनवर ध्यावे जे मन रगें जी, ते मानव  
 श्रीपालतणी पेंर पामे सुख सुर सगेंजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध आचारिज  
 पाठक, साधु महा गुणवंता जी ॥ दरिसण नाण चरण तप उत्तम,  
 नवपद जग जयवंता जी ॥ एहनु ध्यान धरतां लहिबें, अविच्य  
 पद अविनाशी जी, ते सयला जिननायक नमियें, जियें ए नीनि  
 प्रकाशी जी ॥ २ ॥ आसूमास मनोहर तिम बलि, चैत्रक मा  
 लगीशें जी ॥ उजवाली सातमथी करियें, नव आंबिल नव दिव  
 जी ॥ तेर सहस बलि गुणियें गुणणुं, नवपद केरो सारो जी  
 इण परि निर्मल तप आदरियें, आगम साख उदारो जी ॥ ३ ॥  
 विमल कमलदललोपण सुदर, श्रीचक्रेसरि देवी जी ॥ नवपद  
 बक अविजन केरां, विघ्न हरो सुर सेवी जी ॥ श्रीस्वरतर गञ्ज  
 यक सदगुरु, श्रीजिनभक्ति मुनिंदा जी ॥ तासु पसायें इण  
 पञ्चणे, श्रीजिनलाज सूरिंदा जी ॥ ४ ॥ इति श्रीनवपद ० ॥

॥ अथ पञ्जूसणकी स्तुति ॥

॥ बलि बलि हु ध्यावु गांजें जिनवर वीर, जिनपद

## ॥ पार्श्वजिन स्तुतिः ॥

समदमोत्तमवस्तुमहापण । सकलकेवलनिर्मलसद्गुणं ॥ न  
 गरजेतलमेरविभ्रूपणं । ऋजति पार्श्वजिनं गतदूपणं ॥ १ ॥ सुरनरे  
 श्वरनम्रपदांबुजाः । स्मरमहीरुद्धं गमंतं गजाः ॥ सकलतीर्थकराः सुख  
 कारका । इह जयंतु जगज्जनतारकाः ॥ २ ॥ श्रयति यः सुकृती जि  
 नशासनं । विपुलमंगलकेलिविज्ञासनं ॥ प्रबलपुन्यरमोदयधारिका ।  
 फलति तस्य मनोरथमालिका ॥ ३ ॥ विकटसंकटकोटिविनाशिनी ।  
 जिनमताश्रितसौख्यविकाशिनी ॥ नरनरेश्वरकिन्नरसेविता । जयतु  
 सा जिनसासणदेवता ॥ ४ ॥

## ॥ अथ ऋषभदेवस्तुति प्रतिपदाकी ॥

॥ वरमुत्तियहारमुतारगणं । वरचित्तकलत्तसुपत्तधणं ॥ पंकव  
 ष्पयदेवगणं । सिरिश्रुद्युय वदूं आदिजिणं ॥ १ ॥ तियलोयनमंसि  
 यपायजुआ घणमोहमहीरुद्धमत्तगया ॥ परिपालिश्रनिच्चलजीवदया ।  
 मम हुंति जिनागमसुरक्तया ॥ २ ॥ पणयंगिमहातमरोरहरं । क  
 द्धाणपयोरुद्धवृद्धिकरं ॥ सुद्धमग्गकुमग्गपयासकरं । पणमामि जि  
 नागममन्धिकरं ॥ ३ ॥ सिरिंदसमुज्जलगायलया । सुद्धाणविणम्मि  
 यएगलया ॥ असुरिंदसुरेदसुरप्पणया । मम वाणि सुद्धाणि कुणेसुस  
 या ॥ ४ ॥ इति ऋषभदेवस्तुतिप्रतिपदाकी ॥

## ॥ अथ आदिजिन प्रतिपदा स्तुति ॥

॥ प्रणमूं परम पुरुषपरमेस्तर, परमात्मपद धारीजी । प्रथम  
 जिनेस्तर प्रथम नरेस्तर, प्रथम परम उपगारी जी ॥ योगीस्तर जिन  
 राज जगतगुरु, सहजानंद स्वरूपोजी । ऋषभजिनेस्तर लोकदिने  
 स्तर, आतमसंपद भूपोजी ॥ १ ॥ पाच ऋरत्त वलि पाचे एरवत,  
 पंच विदेह मज्जारोजी । काल अतीत अनंता जिनवर, पाम्या सिव  
 पद सारोजी ॥ वलिय अनागत काल अनंता, आस्थे इणाही प्रका

॥ अथ दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ पापाया पुरि चारुपष्ठतपसा पर्येकपर्यासनः, द्दमापालप्र  
 जुहस्तपालविपुलश्रीशुक्लशालामनु ॥ गोसे कार्तिकदर्शनागकरणे  
 तूर्यारकाते शुभे, स्वातौ यः शिवमाप पापरहित संस्तौमि वीरप्र  
 जुम् ॥ १ ॥ यज्ञर्जागमनोद्भव व्रतवरज्ञानाकरातिरूपे, सजूयाशु  
 सुपर्वसंततिरहो चक्रे महस्तत् कृणात् ॥ श्रीमन्नाजिनवादिबोरच  
 रमास्ते श्रीजिनाधीश्वरा, सघायानधचेतसे विदधता श्रेयांस्यने  
 नांसि च ॥ २ ॥ अर्थात्पर्वमिदं जगाद् जिनप श्रीवर्द्धमानान्निघ,  
 स्तत्पश्चाद्गणनायका विरचसाचक्रुस्तरा सूत्रत ॥ श्रीमतीर्थसमर्थने  
 कसमये सम्यग्दृशा जूस्पृशा, जूयाज्जावुककारकप्रवचनं चेतश्चम  
 त्कारि यत् ॥ ३ ॥ श्रीतीर्थाधिप तीर्थज्ञावनपरा सिद्धान्तिका देव  
 ता, चंचच्चक्रधरा सुरासुरनता पायादपायादसौ ॥ अर्हन् श्रीजिन  
 चङ्गीस्तुमतिनो ज्ञव्यात्मन प्राणिनो, या चक्रेऽवमकष्टदस्तिनिधने  
 शार्दूलविक्रीणितम् ॥ ४ ॥ इति दीपमालिकास्तुतिः ॥

॥ अथ थुइसग्रह लिख्यते ॥

॥ अय वीसविहरमानकी स्तुति ॥

पंचविदेहविपे विहरंता । वीस जिनेसर जग जयवंता ॥ चरण-  
 कमटा तसु नामूं सीस । अर्हनि स समरूं ते जगदीस ॥ १ ॥ पं  
 च मेरुपासे ऊलकता । सोहे वीस महा गजदंता ॥ तिण ऊपर ठे  
 जिनहर वीस । ते जिनवर प्रणमूं निसदीस ॥ २ ॥ गणाहर कहिय  
 डुवालस अग । धानक वीस ज्ञण्या तिहा चंग ॥ तिण ऊपर जे  
 थाणे रंग । ते नर पाभे सुक्क अजंग ॥ ३ ॥ जिनसासनदेवी च  
 ठवीस । पूरे मुऊ मनतणी जगीस ॥ सघतणा जे विघन निवारे ।  
 तिहुअण जः नन वंठिय सारे ॥ ४ ॥

सूत्रतः ॥ गणाधिपास्तीर्णसमर्धनकण्ठे । तदंगिनामस्तुमतंनुमुक्तये ॥  
३ ॥ शक्र सुरासुरवरैस्तदहृदेवताभिः । सर्वज्ञशासनसुखायसमुद्यता  
भिः ॥ श्रीवर्द्धमानजिनदत्तमतप्रवृत्तान् । ज्ञव्यान् जनान्नयतु नित्य  
ममङ्गलेभ्य ॥ ४ ॥ इतिमहावीरस्तुति श्रणोज्जारी ॥

॥ अथ लघ्वी स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ वीर देवं निन्द्यं वंदे ? जैना पादा युष्मान् पातु १ जैनं  
वाक्यं ज्ञूयाद्भूतै ३ सिद्धा देवी दद्यात्सौख्यं ॥ ४ ॥ इति लघ्वी  
स्त्रीछंदसि वीर स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री वीरजिन स्तुति ॥

॥ मूरति मनमोहन कंचन कोमल काय, सिद्धारथ नंदन  
त्रिसलादेवी सुमाय ॥ मृगनायक लंठन सात हाथ तनु मान, दि  
नश् सुखदायक स्वामि श्रीवर्द्धमान ॥ १ ॥ सुर नरवर किन्नर वं-  
दित पद अरविद, कामित जरपूरण अजिनव सुरतरुंद ॥ जवि  
यणने तारे प्रवहणसम निसदीत, चोवीसे जिनवर प्रणमुं विसवा  
वीस ॥ २ ॥ अरथे करि आगम ज्ञारख्या श्रीजगवंत, गणधर ते  
गूण्या गुणनिधि ज्ञान अनंत ॥ सुरगुरु पिण महिमा कद न सके  
एकात, समरुं सुखदायक मन सुध सूत्र सिद्धांत ॥ ३ ॥ सिद्धाधि  
का देवी वारे विघन विशेष, सहू सकट चूरे पूरे आस अशेष ॥  
अह्निसि कर जोरुी सेवे सुरनर इंद, जपे गुणगण इम श्रीजिन  
लाज सूरिद ॥ ४ ॥ इति वीरजिन स्तुति ॥

॥ अथ श्रीचतुर्विंशति जिनानां पंचकल्याणक स्तुतिः ॥

॥ नात्रेयं संज्ञवं त, अजियसुविदय, नंदणं सुवयवा ॥ सु  
प्पासं पञ्चमनाहं, सुविघशसिपहुं, सीयलं वासुपूज्यं ॥ श्रेयासं ध  
र्मेशातिं, विमलअरिजिनं, मल्लिकुंधुं अणंतं, नेमिं पासं च वीरं,  
नमिमविनमिसौ, पच कट्याण एसु ॥ १ ॥ गम्भे हाणेषु जम्भे,

रोजी । संप्रति काले वीस विदेहे, वंडु बहु सुखकारोजी ॥ २ ॥  
 अरथे श्रीजिनराज वखाएया, गूण्या श्रीगणधारोजी । अंग डुवालत  
 अतिसे उत्तम, अरथ विविध विस्तारोजी ॥ गुण परजय नय अग  
 प्रमाणे, जिहा पटङ्ग्य विचारोजी । ते आगम मन श्रुद्द आराध्या,  
 तूटे कर्मविकारोजी ॥ ३ ॥ सुदर रूप अनूपम सोहे, श्री चक्रेसरिदे  
 वोजी । श्रीजिनसासन सानिध करणी द्यो, वठित नित सेवीजी  
 ॥ कळ्याण कारण जेहनी सेवा, सध सकल सुख कंदाजी । श्रीजि  
 नचंद मुणिंद पसाथे, कहे जिनहर्ष सुरिंदाजी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अजितनाथ स्तुति ॥

विश्वनायक लायक जितशत्रु विजया नंद । पयजुग नित प्र  
 णमे देव अने देविठ ॥ ज्वलहरी गहरी सध मन धरी अमंद ।  
 श्रीसूरतसहिरे वदो अजितजिनइ ॥ १ ॥ आठ प्रातीहारज अति  
 ज्ञाय बलि चोतीस । दिखरंजन देसन तेहना गुणपेंतीस ॥ अगणि  
 त रुद्धिारी आचारीमा ईस । एह गुणना धारक वंडु जिन चोवी  
 स ॥ २ ॥ सुद्द अरथ अनोपम जिन ज्ञापित सिद्धत । स्वाद्वादन  
 यादिक हेतुयुक्ति नवि ज्ञात ॥ पापकरदमपाणी सदगतिनी सह  
 नाणी । सुणिये नित जविका आगमकेरी वाणी ॥ ३ ॥ सासणानी  
 साची देवी सानिधकारी । डु खकष्टनिवारण सेवीजे सुखकारी ॥  
 साचे मन समरे ते सुख लाज अपारी । जिनलाज पर्यपे होज्यो  
 जयशकारी ॥ ४ ॥ इति अजितनाथस्तुति ॥

॥ अथ श्रीमहावीर स्तुति अणोज्ञारी ॥

॥ यदंहीनमतादेव । देहिन सति सुस्थिताः ॥ तस्मै नमोस्तु  
 वीराय ॥ सर्वविघ्नविघातिने ॥ १ ॥ सुरपतिनतचरणयुगान् । नाज्जे  
 यजिनादिजिनपति ॥ नौमि यद्दचनपालनपरा । जलाजलिददतु ड स्के  
 ञ्य ॥ २ ॥ वदति वृदारुणायतो जिना । सदर्थतो यद्दचयंति

उद्धास ॥ २ ॥ जिणवर मुख हूँती सुणि त्रिपदी ततकाल । ग  
 णधारक गूँण्या छादश अंग विशाल ॥ नयजग पदारथ सत्त  
 नव तत्त । नवियणने तारे सायर जिम बोद्धित्य ॥ ३ ॥ चक्केस  
 रि अंवा पञ्चमादेवि प्रत्यह । श्रीसंघ मनोरथ पूरे वामुरवृद्ध ॥ ध्या  
 वे सुख पावे श्रीजिनलाज सूरिस । जिनवर सुप्रसादे आस फले  
 सुजगीस ॥ ४ ॥ इतिनेमजिनस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तुतिः ॥

॥ सुख समकितदायक कामित सुरतस्कंद । दृढरथ नृप रा  
 णी नंदोकेरो नंद ॥ नद्विलपुर स्वामी फेरे नवना फंद । चित चो  
 खे नमिये श्रीशीतलजिनचद ॥ १ ॥ अतीत अनागत दुआ होस्ये अ  
 नंत । संप्रति काले जे क्षेत्र विदेह विचरंत ॥ त्रिहु नवणे ठवणा  
 सासय असासय हुत । ते सगला त्रिकरण प्रणामु श्रोअरिहंत ॥ २  
 ॥ कालिक उत्कालिक अंग अनंग पविठ । नयजंग निरक्षेपा स्या  
 द्वाढ मितसिठ ॥ नविविन उपगारी ज्ञारी जिन उपदेश । श्रुत  
 श्रवणे सुणतां नासे कोरि कलेश ॥ ३ ॥ ब्रह्मजह असोका सा  
 सन सुरि सुविचार । संघ सानिधकारी निरमल समकित धार ॥  
 चिंता डुख चूरे पूरे मनह जगीस । ध्यान तेहनो धरिये कहे जिन  
 लाजसूरिस ॥ ४ ॥ इति श्रीशीतलजिनस्तुतिः ॥

॥ अथ समवसरणविचारगर्भित स्तुतिः ॥

॥ मित्त चोविह सुरवर विरचे त्रिगमो सार । अढी गात्र  
 उंचो पिहुलो जोयण पार ॥ विच कनकसिंहासन पदमासन सुख  
 कार । श्रीतीरथनायक वैसै चोमुखधार ॥ १ ॥ तीन उत्र सिरो  
 वर चामर ढोले इंद । देवउंडुजि वाजे ज्ञाजे कुमति फंद ॥ ज्ञा  
 मंदल पृठे ऊलके जाण दिनद । तिहुअण जन नवि मन मोहे  
 सयल जिनंद ॥ २ ॥ इत्य ज्ञाव सुठवणा नाम निक्षेपा अ्यार ।



वय गहणखणे, केवले लोयकाले, पञ्चाणिद्याणठाणे, पगवण समए,  
 संश्रुआ जावसार ॥ देवेहिं दाणवेहि, जवणवणसए, वितरे किंन्न  
 रेहिं, । तं मझं दिंतु मोस्कं, सयलजिनवरा, पंच कड्याण एसु ॥१॥ हेऊं  
 तित्थंकराणं, जमिहअणुवमं, जावतित्थंकरंतं । सधन्नूणं च पासा,  
 अहमविनियमा, जायए सबकाल ॥ अन्नुन्नप्पत्तिएहिं, नियगममदणं,  
 बीयअंकूररूवं । अद्यावाह जिणाणं, जयउ पवयणं, पंच कड्याण एसु  
 ॥३॥ गोरीगधारकाली, नरवरमहिपी, हंससंगोरिद्वडा । सबन्नामाणमं  
 वा, वरकमलकरा, रोहिणीउत्तअंवा ॥ पन्नत्ती उत्तपन्नमा, धणउत्तर  
 एई, खित्तगेहाइवासा । सतिं सधे कुणतु, गहणसईया, पंच क  
 ड्याण एसु ॥४॥ इतिश्रीचतुर्विंशतिजिनानांपंचकड्याणकस्तुति ॥

॥ अथ श्रीशत्रुजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुजमंरुण आदिदेव । हू अहनिस समरुं तास सेव  
 ॥ रायणतल पगलां प्रज्जुतणा । पूजि सफल फूल सोदामणा ॥१॥  
 तेवीस तीर्थेकर समवसरथा । विमलाचल ऊपर गुण नरथा ॥ गिरि  
 करुणे आया नेमनाथ । ते जिनवर मेलो मुगतिसाथ ॥२॥ सोदम  
 सांमी उपदिस्था । जंवुणघरने मन वस्था ॥ पुरुरगिरि महिमा  
 जे मांइ । ते आगम समरु मनउवाह ॥ ३ ॥ चकेसरि गोमुख क  
 वरुयक । मन ववित पूरण कळपवृद्ध ॥ सिद्धक्षेत्रसिद्धरे सहदेव  
 ता । जणे नंदिसूरि तुम पाय सेवता ॥३॥ इतिश्रीसत्रुजयस्तुति ॥

॥ अथ नेमजिन स्तुतिः ॥

॥ गिरनार सिखरपर नेमनाथ सुपहाण । दीक्षा, वर केवल  
 ज्ञान अने निरवांण ॥ जसु तीन कड्याणक सुखकर सुरतरुकंद । तसु  
 ज्ञवियण प्रणमो पाययुगलअरविंद ॥ १ ॥ अद्यावय चंपा पावापुर  
 गुज्ज गण । आइम वारम जिण चउवीसम जिणजाण ॥ अजिता  
 दिक वीसे पुइता सिवपुर वास । समेतशिखरपर प्रणमुं अधिक

संख्या कालसग परदक्षा परिणाम । आगम ज्ञापित विधि इम  
कीजे अज्ञिराम ॥ ३ ॥ चक्रेसरिदेवी तिम विमलेसर जस्क । श्री  
पालतणीपर पूरे ववित सुस्क ॥ इण विधि आराधो सिद्धचक्र ज्ञवि  
प्राणी । जिनहर्ष वढे नित श्रीजिनचंदनी वाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ शिवसुख दाता जगत विख्याता पूरण अज्ञिनव कामी  
जी । ज्ञानादिक गुण चेतनरूपी चिदानंदधन धामीजी ॥ धानक  
वीसे आगम ज्ञणिया वीतराग गुण जुक्ताजी । जे नर अंतर आ  
तम ध्यावे सिवरमणी वर युक्ताजी ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन  
सूरी शिवर पाठक मुनि सारोजी । ज्ञानी दरसन विनय चारित्र  
ब्रह्मचारज क्रियधारोजी ॥ तपसी गणधर जिण चारित्री नाण श्रुत  
तित्र ज्ञूषोजी । ए पद निज ज्ञवि ज्ञावे सेवे तेहिज ब्रह्म सरूपो  
जी ॥ २ ॥ दोय सहस गुणनो प्रत्येकें च्यार सथा उपवासोजी  
। इव्यज्ञावसें विधि परकासे तीर्थकर पद खासोजी ॥ तीजे ज्ञव  
वर वीस धानकनी सेव करे ज्ञव्य प्राणीजी । समकित बीजे जे  
निज आत्म आरोपे चित्त आणीजी ॥ ३ ॥ सुरतरुसम तप फल  
हे मोठो श्रीसुरदेवि सदाईजी । खरतर गव्व जिन आज्ञाधारी पा  
ठोधर वरदाईजी ॥ जिन सौज्ञाग्यसूरिंद पसायें हंस सूरिंद गुण  
गावेजी । संघ सकलकं सानिधकारी मन ववित फल पावेजी ॥  
४ ॥ इतिश्रीवीसस्थानक स्तुति ॥

॥ अथ वीस स्थानक स्तुति ॥

॥ अरिहंत सिद्ध पवयण आचारज शिवराण । उवजाय साहू  
नाण दसण विनय पहाण ॥ चारित्त ब्रह्म किरिया तपि गोयम  
जिनज्ञाण । संयम नाणी श्रुत संघ सेवो वीसे गण ॥ १ ॥ उ  
रुष्टे जिनवर एकसो सित्तर धीर । बलि काल जघन्ये जिनवर

जिण गणहर ज्ञाख्या सूत्र सिद्धत मजार ॥ जिनवरनी पद्मिमा  
जिन सरखी सुखकार । शुभ्र ज्ञावे वंदो पूजो जग जयकार ॥१॥  
जुख हरणी मंगल करणी जिनवर वाणी । ज्वद्येद रुपाणी मीठी  
अमिय समाणी ॥ मन गुद्धे आणी प्रतिकूजो ज्वि प्राणी । सुय  
देवि पसायें पामे जयति सुनाणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीचैत्री पुनम स्तुति ॥

॥ सेत्रुजगिरि नमिये रूपज्जदेव पुंरुरीक । शुभ्र तपनी म  
हिमा सुण गुरुमुख निरञ्जीक ॥ शुद्ध मन उपवासे विधिसुं चैत्य  
वदनीक । करिये जिन आगल टालो वचन अलीक ॥ १ ॥ शक  
स्तवनादिक प्रथम तिलक वस वीस । अरुत गिणतीसें चढता तिम  
चालीस ॥ पंचासनी पूजा ज्ञापइ इम जगदीस । तेहिज नित प्र  
णमू स्वामी जिन चोवीस ॥ २ ॥ सुदि पकनो पूनम चेत्र मास  
शुभ्र वार । विधितेती लहिये आगम साख विचार ॥ इम सोले  
वैरसलग धरिये ज्ञान उदार । करता नर नारी पामे ज्वनो पार  
॥ ३ ॥ सोवन तन चरणे नयने तिम अरविद । चक्रेसरीदेवी से  
विय नर सुरवृद ॥ कामित सुखदायक पूरय मन आणद । जपे  
गणनायक श्रीजिनलाजसूरिंद ॥ ४ ॥ इतिश्रीचैत्रीपूनमस्तुति ॥

॥ अथ नवपदस्तुति ॥

॥ समरु सुखदायक मन सुध वीर जिनंद । जिण नवपद  
महिमा ज्ञापी ज्ञान दिणंद ॥ आसु मधु उज्जल सातमथी नव  
दीस । नव आंखिल करिये मन धरि अधिक जगीस ॥ १ ॥ अरि  
दंत बलि सिठ आचारज उवज्ञाय । मुनि दरसण तिम बलि नाण  
चरण तव आय ॥ प्रतिपदनो गुणनो गुणिये दोय हज्जार । सह  
नी पुजा कीजे अष्ट प्रकार ॥ २ ॥ वारस अरुवत्तीस पण वी  
। वीस सार । समरुसठ इकावन सितर पञ्चास प्रकार ॥ इण

ववगय मंगुल ज्ञावे, तेहं विनलतवनिम्मल सहावे ॥ निरुवम महप्प  
 ज्ञावे, श्रोसामि सुदिठ सप्रावे ॥ १ ॥ गाहा ॥ सव्व डुक्कप्पसंतीणं,  
 सव्व पावप्पसंतिणं ॥ सया अजिय संतीणं, नमो अजिअ संतिणं ॥ ३ ॥  
 सिलोगो ॥ अजिय जिण सुहप्पवत्तण, तव पुरिसुत्तम नामकित्तण  
 ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तवय जिणुत्तम संतिकित्तणं ॥ ४ ॥  
 मागहिआ ॥ किरिआविहि संचिअ कम्म किलेसविमुक्कवर, अ  
 जिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिठिगयं ॥ अजिअस्त य संति  
 महा मुणिलोवि अ सतिकरं, सययं मम निव्वइ कारणयं च नम  
 सणयं ॥ ५ ॥ आदिगणय ॥ पुरिसा जइ डुक्कवारणं, जइअ विम  
 गह सुक्ककारणं ॥ अजिअं सति च ज्ञावणं, अन्नयकरे सरणं पव  
 ज्जाहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥ अरइ रइ तिमिर विरहिअ, मुवरय ज  
 रमरणं, सुर असुर गरुल ज्ञुयगवई, पयष पणिवइअं ॥ अजिअ म  
 ह्मविअ, सुनय नय निजणमन्नयकर, सरणमुवसरिय ज्ञुवि दिवि  
 ज, महिअं सयय मुवणमे ॥ ७ ॥ संगययं ॥ तं च जिणुत्तम मुत्तमं  
 नित्तम सत्तयरं, अज्जव मत्तव खंतिविमुत्ति समाहि निहि ॥ संति  
 अर पणमामि दमुत्तम तिजयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं  
 दिसण ॥ ८ ॥ सोवाणय ॥ सावडिपुव्वपडिअं च वरहडि मज्जय प  
 सत्त विज्जिअ संधिअं थिर सरिअ वडं मयगल तीलायमाण वर गंध  
 हडि पड्डाण पड्डियं सथवारिह हडिहड वाहुं धंतकणग रुअग नि  
 रुवहय पिजरं पवर लक्कणो वचिअ सोम्म चारु रूवं सुइ सुहम  
 णाजिराम परम रमणिज्ज वरडेव डुडुहि निनाय महुरयर सुहगिर  
 ॥ ९ ॥ वेड्डणं ॥ अजिअ जिआरिण, जिअ सव्वज्जयं ज्ञवो हरिअं ॥  
 पणमामि अह पयणं, पावं पसमेअ मे ज्ञयवं ॥ १० ॥ रासालुद्ध  
 णं ॥ कुरु जणवय हडिणाअर नरीसरो पढमंतण महाचक्कव  
 षडिओ महप्पज्ञावो जो वाहतरि पुरवर सहस्सवर नगर णिगम



गयशांगण वियरण समुद्र, चारण वंदिश्रं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलय  
 माला ॥ असुर गस्त परिवंदिश्र, किन्नरोरग एमंसिश्रं ॥ देव कोन्नि  
 सयसश्रुयं, समणसंध परिवदिश्रं ॥ २० ॥ समुद्रं ॥ अन्नयं अणहं अरयं  
 अरुयं ॥ अजिश्र अजिश्र पयत्त पणामे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिश्रं ॥ आग  
 यावर विमाण, दिवकणग रद्द तुरय पद्दकर सएहिं दुल्लिश्रं ॥ स  
 संजमो अरण सुज्जिश्र लुल्लिश्र चल कुम्भलंगय तिरीन् सोदत मळ  
 लिमाला ॥ २२ ॥ वेदुत्त ॥ जं सुरसया सासुर संघा, वेर विज्जता  
 ज्जत्ति सुज्जता, आयर ज्जुत्तिथ संजमपिन्निथ, सुदु सुविह्लिथ सध्व  
 लोधा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविथ ज्जासुर ज्जूसण ज्जासुरिअंगा,  
 गाय समोणय ज्जत्तिवसागय पंजलिपेसियसीस पणामा ॥ २३ ॥  
 रयणमाला ॥ वदिक्कण थोक्कणतो जिणं, तिगुणमेवय पुणोपया  
 ह्णिणं ॥ पणमिक्कणय जिण सुरासुरा, पमुद्रया सज्जवणाइतो गया  
 ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥ तं महामुणिमहपि पंजलि, राग दोस ज्जय  
 मोद्द वज्जिश्र ॥ देवदाणव नरिंद वंदिश्रं, सति मुत्तम महातवं नमे  
 ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥ अंवरतरविअारणियाहि, ललिअद्दस बहुगामि  
 णियाहि ॥ पीण सोणियाण सालणियाहि, सकल कमल दल्लो  
 अणियाहि ॥ २६ ॥ दीचयं ॥ पीण निरंतर अणन्नरविणमिय गायल  
 याहि, मणिकंचण पसिद्विलभेहल सोह्णिथ सोणितमाहि ॥ वरखि  
 खिणि नेत्तर सतिलय वलय विज्जूसणियाहिं, रद्दकर चत्तर मणो  
 हर सुंदर दत्तणियाहि ॥ २७ ॥ चित्तकरा ॥ देवसुंदरीहिं पाय  
 वदियाहि वंदियाय जस्त ते सुविक्कमाकमा अप्पणो निमालएहि  
 मंन्णोहुणप्पगारएहि केहि केहिं वीप्रवंग तिलय पत्तलेह नामएहि  
 चिह्नएहिं संगयं गयाहि ज्जत्ति सन्निविठ वंदणागयाहि हुंति ते वंदि  
 आ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायत्त ॥ तमहं जिणचंद, अजिश्रं  
 जिथमोहं ॥ धुअसवकिलेस पयत्त पणामामि ॥ २९ ॥ नंदिश्रयं ॥

जणवय वई वतीसारायवर सहस्ताणु आयमगो चनदस वररयण  
 नव महानिहि चनसठि सहस्त पवर जुवईण सुंदर वइ  
 चुलसी हय गय रह सय सहस्त सामी वसवइगाम कोनि  
 सामी आसिज्जो जारहंमि जयवं ॥ ११ ॥ वेड्ड ॥ तं  
 सतिं संतियरं, संतिन्न सब जया ॥ संति थुणामि जिण, सतिं वि  
 हेउ मे ॥ १२ ॥ रासाणंदिअयं ॥ इस्कागु विदेह नरीसर नरव  
 सहा मुणिवमहा ॥ नव सारयससि सकलाणण, विगय तमा विहु  
 अग्या ॥ अजिउत्तम तेअ गुणेहि महामुणि, अमिय वलाविज्ज  
 कुला ॥ पणमामि ते जवजय मूरण, जग सरणा मम सरणं ॥  
 १३ ॥ चित्तलेहा ॥ देव दाणाविड चद सूरवंद इठ तुठ जिठ परम,  
 लठ रूव धंत रूप पट्ट सेअ सुद्ध निद्ध धवल ॥ दत्तपति संति स  
 ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर, दित्त तेअवंदधेअ सबलोअ जावि  
 अ प्पजावणे अ पइसमे समाहि ॥ १४ ॥ नारायण ॥ विमल स  
 सिकलाइरेअसोम्मं, वित्तिमिरसूर कलाइरेअ तेअ ॥ तियसवइगणा  
 इरेअ रूव, धरणिधर प्पवराइरेअ सार ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥ सत्ते  
 अ सया अजिअ, सारीरे अवले अजिअ ॥ तव सजेमअ अजिअं,  
 एत्त अहं थुणामि जिण अजिअं ॥ १६ ॥ नूअगपरिरिगिअं  
 ॥ सोम्मगुणेहि पावइ न त नवसरय ससी, तेअ गुणेहि पावइ  
 न तं नवसरय रवी ॥ रूवगुणेहि पावइ न तं तियस गणव  
 इ, सारगुणेहि पावइ न त धरणिधरवइ ॥ १७ ॥ खिज्जिययं ॥  
 तिउवर पवत्तयं तमरयरहिअ, धीरजणथुअच्चिअ चुअ कलिकलुसं  
 ॥ सतिसुहप्पवत्तयं तिगरण पयण, सतिमह महा मुणि सरण मु  
 वणमे ॥ १८ ॥ ललियय ॥ विणउणय सिरिरइ अंजलि, रिसि  
 गण संअुअं अिमिअ ॥ विवुदाहिव धणवइ नरवइ, थुअ म हेअच्चिअं  
 बहुतो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर, समहिअ सप्पजं तवसा ॥

पयं, अद्वा कितिं सुविद्यमा ज्ञवणे ॥ ता तेलुक्कुद्वरणे, जिणव  
यणे आयरं कुणद् ॥ ४० ॥ गाद्वा ॥ इति श्रीवृद्दजितशातिस्त  
वनं प्रथमस्मरणम् ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय लघुअजितशातिस्मरणम् ॥

॥ उल्लासिक्क मनस्क निग्गयपद्दा दंरुञ्जलेणगिण, वंदारूण  
दिसंत इव पयं निद्याणमग्गावलि ॥ कुदिंडुज्जद दंतकंति मित्त  
नीहंत नाणंकुरु, केरे दोविडु इक्क सोलस जिणे थोसामि खेमंकरे  
॥ १ ॥ चरम जलहिनीरं जोमिणिज्जं जलोहि, खय समय समीरं जो  
जणिज्जा गईए ॥ सहल नहय लवा लंघए जो पएहिं, अजिअ म  
द्दव सतिं सो समञ्जे वणेउं ॥ २ ॥ तद्दविहु बहुमाणु छासज्जत्ति  
प्ररेण, गुणकणमिवकित्ती हामि चिंतामणि व ॥ अलमद्दव अचिंता  
एंतसामव्वल्लिं, फलद्दइ लहु सबं वंठियं णि च्छिय मे ॥ ३ ॥ सय  
खजयद्दिआणं नाममित्तेण जाण, विहरुइ लहु डुवा निव्वदोषट्ठयं  
॥ नमिरसुर किरीडू गिठ पायारविदे, समय मज्जिअ सती ते जि  
णिदे ज्जिवंदे ॥ ४ ॥ पसरइ वरकित्ती वट्टए देहदित्ती, विलसइ  
ज्जुवि मित्ती जायए सुप्पवित्ती ॥ फुरइ परमत्तित्ती होइ संसारवित्ती,  
जिणज्जुअ पयज्जत्ती हीअ चिंतोरुसत्ती ॥ ५ ॥ ललियपयपयारं ज्जू  
रिदिव्वगद्दार, फुरुणरसज्जावो दारसिगारसारं ॥ अणमित्तरमणीज  
इंसणत्ते अज्जीया, इव पुणमणि वधा कास नट्टेवयार ॥ ६ ॥  
अणद्द अजिअसंती ते कया सेस सती, कणयरयपसंगा वज्जए जा  
णिमुत्ती ॥ सरज्जस परिरज्जा रज्जनिद्याणलच्छी, घणअणघुसि णिक्कु  
पंपंकिंपिगीकयव ॥ ७ ॥ बहुविहनयज्जंगं वट्टणिच्च अणिच्च, सइसद  
एज्जिलप्पा लप्पमेगं अणेग ॥ इय कुनय विरुद्धं सुप्पसिद्द तु जेसिं,  
वयण मवय णिज्ज ते जिणे सज्जरामि ॥ ८ ॥ पसरइ तिअ लोए  
ताव मोहंधयारं, जमइजय रुसस तावमिठत्तवसं ॥ फुरइ फुरुप



धुअवंदिअस्सारिसिगण देवगणोहिं, तो देव वडूहिं पयउ पणमिअ  
 स्ता ॥ जस्त जगुत्तमसाणयस्ता, जत्तिवसागयपिंदिअआहि ॥  
 देव वरउरसा बहुआहिं, सुरवर रइगुण पदिअआहि ॥ ३० ॥  
 जासुरयं ॥ वंस तद् तति ताल मेलिए तिउरकराजिराम सद् मी  
 सएकए थ, सुइसमाणणेअ सुइ सऊ गीअ पाय जालघंठिआहिं ॥  
 वलय मेइला कलावनेउराजिराम सद् मीसएकए थ देवनट्टिआहिं  
 ॥ हाव जाव विप्रमप्पगारएहि नच्चिऊण श्रंग हारएहिं वदिआय  
 जस्तते सुविक्रमाकमा ॥ तय तिलोअ सव सत्त संतिकारयं पसंत  
 सव पाव दोस मेसहं नमामि संतिमुत्तम जिण ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥  
 उत्त चामर पमागजूअ जव मदिआ, ऊयवर मगर तुरय तिरिवउ  
 सुलठणा ॥ दीव समुह मदरदिसागयसोहिआ, सच्चिअ वसह सी  
 हतिरिवउसुलठणा ॥ ३२ ॥ ललिअय ॥ सहावलढा समप्पइढा,  
 अदोस डुढागुणेहि जिढा ॥ पसायसिढा तवेण पुढा, तिरिही इढा  
 रितीही जुढा ॥ ३३ ॥ वाणवासिआ ॥ ते तवेण धुअसवपावया,  
 सवलोअहिअ मूल पावया ॥ सथुआ अजिअ संति पावया, हुतु  
 मे सिव सुहाणदायया ॥ ३४ ॥ अपरातिया ॥ एव तव बल वि  
 उद, थुअ मए अजिअ सति जिणजुयल ॥ ववगय कम्म रयमलं,  
 गइ गयं सासया विमला ॥ ३५ ॥ गाहा ॥ त बहुगुणप्पसाणं, मु  
 स्क सुहेण परमेण अविंसाय ॥ नासेउ मे विसाय, कुणउअ परि  
 साविअ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥ त मोएउ अनदि, पावेउअ नं  
 दिसेणमजिनंदि ॥ परिसाइवि सुहनदिं, मम य दिसउ संजमे  
 नदिं ॥ ३७ ॥ गाहा ॥ पत्किअ चाउम्मासिय, सवउरिए अवस्त  
 ज्जिअवो ॥ सोअवो सवेहि, उवसग्ग निवारणो एतो ॥ ३८ ॥  
 जो पढइ जोअनिसुणइ, उज्जउ कालपि अजिअ सतिथय ॥ न हु  
 हुति तस्त रोगा, पुवुपन्ना विनासति ॥ ३९ ॥ जइ इउह परम

कर चरण नद मुद्, नियुक्त नासा विवन्न लावन्ना ॥ कु० महारो  
 गानल, फुलिंग निद्वद्ध सवगा ॥ १ ॥ ते तुद् चलणा रादण, स  
 विलंजलिसेय बुद्धिय चाया ॥ वण दवदद्धा गिरिपा यव द्व पत्ता  
 पुणो लच्छिं ॥ ३ ॥ उघाय खुध्रिय जलनिदि, उध्ररु कद्धोल जी  
 सणारावे ॥ संजत जय विसंजुल, निद्यामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥  
 अविदलिय जाणवचा, खणेण पावंति उच्चिअं कूलं ॥ पास जिण  
 चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमतिनरा ॥ ५ ॥ खर पवणुद्धुअ  
 वणदव, जालावलि मिलिय सयल उम गदणे ॥ रुप्रंत मुद्धमिच  
 बहु, जीतरणरव जीसणामि वणे ॥ ६ ॥ जगगुरुणो कमजुअलं,  
 निद्याविय सयल तिद्धुअणान्जोअं ॥ जे संजंरंति मणुआ, न कुणइ  
 जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥ विलसत जोग जीसण, फुरिआरुण न  
 यण तरल जीहालं ॥ उगज्जुअं नवजल य, सउद् जीसणायारं  
 ॥ ८ ॥ मन्नंत कीरु सरिसं, दूर परिचुद्ध विसम विस वेगा ॥ तुद्  
 नामस्कर फुरुसि द्द, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ९ ॥ अरुवीसु जि  
 छ तद्धर, पुलिद सद्धल सद्धजीमासु ॥ जयविहुर बुद्धकायर, उद्धु  
 रिअ पद्धिय सउासु ॥ १० ॥ अविलुत्तविद् वसारा, तुद् नाड प  
 णाम मत्तवावारा ॥ ववगय विग्घा सिग्घ, पत्ता हिय इच्चियं ठाणं  
 ॥ ११ ॥ पक्कलियाणलनयण, दूरवियारियमुद् महाकाय ॥ नद्  
 कुलिसवायविअलिय, गइंदकुज्जलाज्जोअं ॥ १२ ॥ पणय ससंज  
 म पत्रिय, नहमणिमाणिक पन्निअ पन्निमस्स ॥ तुद् वयण पहरण  
 धरा, सीहं कुद्धपि न गणंति ॥ १३ ॥ ससिधवल दत्तमुसलं, दीह  
 कुरुत्ताल वद्धि उच्चहं ॥ महुपिग नयणजुअलं, ससलिल नवजल  
 हरारावं ॥ १४ ॥ जीम महागइदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गिणंति  
 ॥ जे तुम्ह चलण जुअल, मुणिवइ तुगं समद्धीणा ॥ १५ ॥ स  
 मरम्मिस्सिक्ख खग्गा, जिग्घाय पविद् उद्धुय कवधे ॥ कुंतविणिज्जि

लता एतणाणं सुपूरो, पयन मज्झिमसंती जाण सूरो न जाव ॥९॥  
 अरि करि हरि तिण्हु एण्हु चोरा हिवाही, समर ममर मारी रुद्ध  
 खुद्धो वसग्गा ॥ पलय मज्झिमसंती कित्तणे ऊत्तिजती, निविमतरत  
 मोहा ञ्जस्करालुखिअ व ॥ १० ॥ निचिअडुरअदारु दित्तजाणग्गि  
 जाला, परिगय मिव गोर, चित्तिअ जाण रूवं ॥ कणय निहसरेहा  
 कत्तिचोर करिञ्जा, चिरथिर मिह लञ्छि गाढसंभ्रंजिअव ॥ ११ ॥  
 अरुविनिवन्निआण पञ्चिवुत्तासिआणं, जलहि लहरि हीरं ताण  
 गुत्ति ढियाणं ॥ जल्लिअ जलण जाला लिंगिआणं च जाणं, जणयइ  
 लहु सति संतिनाहा जिआण ॥ १२ ॥ हरि करि परिकिस्स पक्क  
 पाइक्कपुस्स, सयलपुहवि रक्क वक्किअं आण सज्ज ॥ तण मिव पन्नि  
 लग्गं जेजिणामुत्तिमग्ग, चरण मणुपवस्सा हुतु ते मे पसस्सा ॥ १३ ॥  
 वणससिबयणाहि फुद्धनित्तुप्पलाहि, अणञ्जरनमिरीहिं मुढिगिञ्जोद  
 रीहिं ॥ ललिअ ञ्जुअलयाहि पीण सोणिञ्जणीहि, सयसुर रमणीहि  
 वदिआ जेसि पाया ॥ १४ ॥ अरिस्स किन्नि ञ्जकुढ गठि कासाइस्सार,  
 खय जर वण लूआ सारसोसोदराणि ॥ नहमुह दसणञ्ची कुञ्चिक  
 स्साइरोगे, मह जिणजुप्र पाया सुप्पसाया हरतु ॥ १५ ॥ इय गुरु  
 डुहतासे पस्सिए चान्नासे, जिणवर दुग्गथुत्त वञ्चरे वा पवित्त ॥  
 पढइ सुणइ सिद्धा एह जाएइ चित्ते, कुणह मुणह विग्घं जेण धा  
 एह सिग्घ ॥ १६ ॥ इय विजयाजियसत्तुपुत्त तिरिअजिअ जिणे  
 सर, तह अइराविससेण तणइ पचम चक्कीसर ॥ तिञ्चकर सोल  
 सम सति जिणवत्तह सथुअ, कुरु मगल मम हर सुडुरिअमखिलं  
 पि थुणतह ॥ १७ ॥ इति श्रीलघुअजितशास्तिस्तवन द्वितीय० ॥

॥ अथ नमिऊणनामक तृतीय स्मरणम् ॥

॥ नमिऊण पणय सुरगण, चूनामणि किरणरंजिअं मुणि-  
 षो ॥ चलणजुअल महाजय, पणासणं सथव बुद्धं ॥ १ ॥ सन्धिय

ह दित्तञ्च ॥ ८ ॥ रम्मो चरित्त धम्मो, संपाविञ्च ञ्चसत्त सित्त  
 म्मो ॥ नीत्तेस क्खित्तहरो, हवन् सया सयल संघस्स ॥ ९ ॥  
 गुणगण गुरुणो गुरुणो, शिवसुह मइणो कुणंतु तिठस्स ॥  
 सिरिवद्धमाण पडुपय, निअस्स कुत्तलं समग्गस्स ॥ १० ॥  
 जियपन्निवरक्काजस्का, गोमुह मायंग गयमुह पमुस्का ॥ सिरि  
 वञ्च सति सद्धिया, कय मयरक्का सित्तं दिंतु ॥ ११ ॥ अंवा  
 पन्निहयन्निवा, सिद्धा सिद्धाऽया पवयणस्स ॥ चक्केसरि वइरुट्ठा,  
 संति सुरा विसञ्च सुक्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्जा देवी, उट्ठित्तु  
 संघस्स मगल विञ्चल ॥ अच्युत्ता सहियाञ्च, विस्सुअ सुयदेवयाञ्च  
 सम ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रक्का, जस्का चञ्चवीस सासण  
 सुरावि ॥ सुहज्जाग सतावं, तिठस्स सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि  
 णपवयणंमि निरया, विरहा कुपहाञ्च सघ हासवे ॥ वेयावच्च गरा  
 विअ, तिठस्स हवतु सत्तिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुत्तमंग्ग,  
 विद्धिअ ञ्चवाण जणिअ साहज्जो ॥ गीदरई गीयजसो, सपरिवारो  
 सुह विसञ्च ॥ १६ ॥ गिहगुत्त खित्त जलथल, वण पवय वासि  
 देव देवीञ्च ॥ जिण सासण ठियाणं, उहाणि सवाणि निहणंतु  
 ॥ १७ ॥ वसदिसिवालासस्कि, च्चवालया नवग्गहा सनस्कत्ता ॥  
 जोइणि राहुग्गदका, लपास कुलिअद पदरेहिं ॥ १८ ॥ सहका  
 ल कंटएहि, सविठ्ठिवठ्ठेहि कालवेलाहि ॥ तवे सघञ्च सुहं, दित्तु  
 सघस्स संघस्स ॥ १९ ॥ ञ्चवणवइ वाणमतर, जोइत्त वमोणिया  
 य जे देवा ॥ वरणिठ सक्क सहिया, वलंतु डुरियाइ तिठस्स ॥ २०  
 ॥ चक्कं जस्स जलंतं, गञ्चइ पुरञ्चपणासिअ तमोहं ॥ तंतिठस्स ञ्च  
 गवन्, नमो नमो वइमाणस्स ॥ २१ ॥ सो जयञ्च जिणो वीरो,  
 जस्स ज्जावित्तासणं जए जयइ ॥ सिद्धिपदसासण कुप, ह नासणं-  
 सघ ञ्चय मइणं ॥ २२ ॥ सिरि उसञ्चसेण पमुहा, हयञ्चय नि,

न्न करि कल, ह मुक्क सिक्कार पन्नरंमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर  
 रिन्न, नरिद निवहा न्ना जसं धवलं ॥ पावति पाव पसमिण,  
 पासजिण तुह प्पन्नविण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,  
 चोरारि मइद गय रण न्नायाइं ॥ पास जिणनाम सकि, त्थेण  
 पसमंति सवाइ ॥ १८ ॥ एवं महा न्नायहरं, पास जिणिदस्त संथ  
 वमुत्थारं ॥ न्नाविय जणाणदयर, कद्धाण परंपरनिहाण ॥ १९ ॥  
 राय न्नाय जक्क रक्कस, कुसुमिण डुस्सन्नण रिक्क पीमासु ॥ सं  
 जामु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो  
 अ निसुणइ, ताण कइणो य माणतुंगस्त ॥ पासा पावं पसमिन्न,  
 सयल न्नुवणच्चिय चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं वृ  
 तीयस्मरणं संपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारंभः ॥

॥ त जयन्न जय तिन्न, जमिन्न तिन्नाहि वेण वीरेण ॥  
 सम्म पवत्तिप्रन्न, व सन्न सताणसुह जणय ॥ १ ॥ नासिअ सय  
 लकिलेसा, निहय कुलेसा पसन्न सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिन्न,  
 स्स मंगल दिंतु ते अरिहा ॥ २ ॥ निहद्धकम्म वीया, वीयापरंमि  
 षिणो गुणसमिद्धा ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणंतु उच्चाणि तिन्न  
 स्त ॥ ३ ॥ आयार मायरता, पचपयार सया पयासता ॥ आय  
 रिआ तह तिन्न, निहय कुत्तिन्नं पयासतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय  
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पन्निणीय कए,  
 वणितु सव्वस्त संघस्त ॥ ५ ॥ निद्धाणसाहुणिज्जिअ, साहुण जणिअ  
 सव्व साहजा ॥ तिन्नप्पन्नायगात्ते, हवंतु परमिष्णो जइणो ॥ ६ ॥  
 जेणाणुगय नाण, निद्धाणकल च चरणमविहवइ ॥ तिन्नस्त वंसण  
 त, मगलमुवणोन्न सिद्धियरं ॥ ७ ॥ निन्नन्नमो सुअधम्मो, समग्ग  
 न्नावगि वग्ग कथ सम्मो ॥ गुणमुष्णिअस्त सघस्त, मंगलं सम्ममि

ह दिसत ॥ ८ ॥ रम्मो चरित यम्मो, संपावित्र नवसत सितस  
 म्मो ॥ नीलेस किलेसहरो, हवत सया सयल सधस्त ॥ ९ ॥  
 गुणगण गुणो गुरुणो, शिवसुह मणो कुणंतु तिष्ठस्त ॥  
 सिरिवद्धमाण पदुपय, मित्रस्त कुसलं समगस्त ॥ १० ॥  
 जियपरिवरकाजस्का, गोसुह मायंग गयमुह पमुस्का ॥ सिरि  
 वंज सति सहिया, कय मयरस्का सिधं वित्तु ॥ ११ ॥ अंवा  
 पन्हुयमिवा, सिद्धा सिद्धाया पवयणस्त ॥ चक्रेतरि वइस्ट्टा,  
 संति सुरा दिसत मुक्काणि ॥ १२ ॥ सोलस विज्ञा देवी, उदित्तु  
 संघस्त भगल विजल ॥ प्रभुत्ता सहियात्त, विस्सुअ सुयदेवयान्त  
 सम ॥ १३ ॥ जिण सासण कय रक्का, जस्का चउवीस सासण  
 सुगवि ॥ सुहज्जावा सतावं, तिष्ठस्म सया पणासंतु ॥ १४ ॥ जि  
 णपवयणांमि निरया, विरदा कुपहात्त नव हासवे ॥ वेयावच्च गरा  
 विअ, तिष्ठस्त हवतु सतिकरा ॥ १५ ॥ जिणसमय सुस्समग,  
 विद्धिय न्नाण जणिय साहज्जो ॥ गीवरई गीयजसो, सपरिवारो  
 सुह दिमत्त ॥ १६ ॥ गिद्धगुत्त खित्त जलअल, वण पवय वासि  
 देव देवीत्त ॥ जिण सासण विप्राण, उहाणि सवाणि निदणंतु  
 ॥ १७ ॥ दसदिसिवालासस्कि, त्वालय नवग्गहा सनस्कत्ता ॥  
 जोइणि राहुग्गडका, लपास कुदियर पहेरेदि ॥ १८ ॥ सहका  
 ल कटणहि, सविठिवठेदि कालवेलाहि ॥ सवे सवत्त सुह, दिमंतु  
 सबस्त सधस्त ॥ १९ ॥ नवणवड वाणमतर, जोइस वमोणिया  
 य जे देवा ॥ धरणिद सक सहिया, दलतु उरियाइ तिष्ठस्त ॥ २०  
 ॥ चकं जस्त जलंत, गच्छ पुरत्तपणासिअ तनोहं ॥ तंतिष्ठस्त न  
 गवत्त, नमो नमो वदमाणस्त ॥ २१ ॥ सो जयत्त जिणो चीरो,  
 जस्त ज्ञापिसासण जए जयइ ॥ सिद्धिपडसासण कुप, ह नासण  
 सब जय महत्त ॥ २२ ॥ सिरि उत्तत्तसेण पमुहा, हयजय नि,

न्न करि कल, ह मुक्कसिक्कार पन्नरमि ॥ १६ ॥ निज्जिय दप्पुद्धर  
 रिउ, नरिंद निवहा ज्ञना जस धवलं ॥ पावति पाव पसमिण,  
 पासजिण तुह प्पन्नावेण ॥ १७ ॥ रोग जल जलण विसहर,  
 चोरारि मइद गय रण ज्ञयाइं ॥ पास जिणनाम सकि, तणेण  
 पसमंति सवाइ ॥ १८ ॥ एवं महा ज्ञयद्धर, पास जिणिदस्स संथ्र  
 वमुआरं ॥ ज्ञविय जणाणदयर, कल्लाण परपरनिहाणं ॥ १९ ॥  
 राय ज्ञय जक्क ररकस, कुसुमिण उस्सजण रिक्क पीणासु ॥ सं  
 जासु दोसु पथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥ जो पढइ जो  
 थ्र निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥ पासा पावं पसमिउ,  
 सयल जुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवनं तृ  
 तीयस्मरण सपूर्णम् ॥ ३ ॥

॥ अथ गणधर देवस्तुति चतुर्थ स्मरण प्रारभः ॥

॥ त जयउ जय तिउ, जमिउ तिउाहि वेण वरिेण ॥  
 सम्मं पवत्तिअज्ज, व सत्त संताणसुह जणय ॥ १ ॥ नासिअ सय  
 लकिलेसा, निहय कुलेसा पसउ सुहलेसा ॥ सिरिवद्धमाण तिउ,  
 स्स मंगल दितु ते अरिहा ॥ २ ॥ निहद्धकम्म वीआ, वीआपरमि  
 षिणो गुणसमिण ॥ सिद्धा तिजय पसिद्धा, हणतु उउाणि तिउ  
 स्स ॥ ३ ॥ आयार मायरता, पंचपयार सया पयासंता ॥ आय  
 रिआ तह तिउ, निहय कुतिउ पयासंतु ॥ ४ ॥ सम्मसुअ वाय  
 गावा, यगाय सिअवाय वायगा वाए ॥ पवयण पन्निणीय कए,  
 वणितु सव्वस्स सघस्स ॥ ५ ॥ निघाणसाहुणिज्जिअ, साहूणं जणिअ  
 सव्व साहज्जा ॥ तिउप्पन्नायगाते, हवतु परमिणो जइणो ॥ ६ ॥  
 जेणाणुगय नाण, निघाणफल च चरणमविहवइ ॥ तिउस्स दंसण  
 त, मंगलमुवणेउ सिठियर ॥ ७ ॥ तिउउमो सुअधम्मो, समग्ग  
 जवग्गि वग्ग कथ सम्मो ॥ गुणमुविअस्स सघस्स, मंगलं सम्ममि

समञ्चरय निसिन्धि, प्फुरंतु सञ्चंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरैणव सूरिं  
 जिणे, सरेण ह्यमहिश्च दोसेण ॥ ११ ॥ सुकृश्च पत्त किन्ती, पय  
 निश्च गुत्ती पत्त सुहमुत्ती ॥ पदय परवाइ दिन्ती, जिणचंद जई  
 सरो मंती ॥ १२ ॥ पयनिश्च नवग सुत्तञ्च, रयणुक्कोसो पशासिश्च  
 पञ्चसो ॥ ज्वञ्जीश्च मविश्च जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥  
 ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परुवणा करणबंधु रोधशिश्चं  
 ॥ सिरि अजयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पत्तमधरो ॥ १४ ॥ कय  
 सावय संतासो, हरि च सारंग जग संदेहो ॥ गय समय दप्प द  
 लणो, आसाइश्च पवर कधरसो ॥ १५ ॥ ज्जीमज्जव काणणमिश्च,  
 वंसिश्चगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीतेस सत्त गुरुञ्च, सूरि जिणव  
 छहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरठिश्च सञ्चरणो, चञ्चरणञ्च प्पहाण  
 सञ्चरणो ॥ अत्तममयराय महणो, उहमुहो सहइ जस्त करो ॥  
 ॥ १७ ॥ दंसिश्च निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिश्च सावञ्च ज्जं  
 ॥ गुरुगिरि गरुञ्च सरहिच्च, सूरि जिणवच्छहो होढा ॥ १८ ॥ जुग  
 पवरागम पीळ, सपाणि पीणय मणाकया ज्जवा ॥ जेण जिणवच्छ  
 हेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिश्च पवर पवयण, सि  
 रोमणी वूढ उव्वह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, च सहइ सत्ताणता  
 णकरो ॥ २० ॥ सञ्चरिश्चाण मदीणं, सुगुरूणं पारतंत मुव्वइ ॥  
 जयइ जियइ जिणदत्त सूरि, सिरि निलञ्च पणय मुणितिलञ्च ॥  
 २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंजयनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपठ्ठमस्मरणम् ॥

॥ सिग्धमवहरञ्च विग्धं, जिणवीराणाणु गाम्भि संघस्त ॥  
 सिरि पासजिणो थंजण, पुरठिञ्च निठिश्चानिठे ॥ १ ॥ गोयम सुं  
 हम्म पमुहा, गणवणो विदिश्च ज्जव सत्तसुहा ॥ सिरि वद्धमाणं  
 जिपाति, च सुञ्चयंतं कुणतु सया ॥ २ ॥ सकाइणो सुराजे, जिणं



वहा दिसंतु तिष्ठस्त ॥ सव जिणाणं गणिहा, रिणो एहं वंभेअं  
 सव ॥ २३ ॥ तिरि वडमाण तिष्ठा, दिवेण तिष्ठं समप्पिअं जस्त  
 ॥ सम्म सुहम्म सामी, दिसत्त सुहं सयल संघस्त ॥ २४ ॥ पय  
 इएअद्विआ जे, जहाण दिसंतु सयल संघस्त ॥ इयरसुरा विहु स  
 म्मं, जिणगणहर कहिय कारिस्त ॥ २५ ॥ इय जो पढइ तिसऊ,  
 दुस्तथं तस्त नद्धि किपि जए ॥ जिणदत्ताणाएठिअ, सुनिद्धिअअ  
 मुही होई ॥ २६ ॥ इति श्री गणधरदेवस्तुतिनामकं चतुर्थं स्मरणं

॥ अथ गुरुपारतंत्र्यनामक पंचम स्मरणम् ॥

॥ मयरहिअं गुणगण रयण, सायरं सायरं पणमिअणं ॥  
 सुगुरुजण पारतंत. उवहिअ धुणामि तं चेव ॥ १ ॥ निम्महिय  
 मोह जोहा, निहय विरोहा पणठ संदेहा ॥ पणयंगि वग्ग दाविअ,  
 सुह सदोहा सुगुण गेहा ॥ २ ॥ पत्तसु जइत्त सोहा, समत्त पर  
 तिअ जणिय सखोहा ॥ पन्निअग्ग मोह जोहा, दंसिअ सुमहत्त  
 सजोहा ॥ ३ ॥ परिहरिअ सज्जवाहा, इय दुद दाहा सिवंध तरु  
 साहा ॥ संपाविअ सुहलाहा, खीरोदखिणुअ अग्गाहा ॥ ४ ॥ सु  
 गुणजण जणिअ पुजा, सज्जो निरुवज्ज गहिअ पवज्जा ॥ सिवसुह  
 सादण सज्जा, जयगिरि गुरु चूरणे वज्जा ॥ ५ ॥ अज्जसुहम्म प्पमुहा,  
 गुणगण निवहा सुरिंद विहिय महा ॥ ताण तिसंऊ नाम, नामं  
 न पणासइ जिणाण ॥ ६ ॥ पन्निवज्जिअ जिण देवो, देवायरिअ उरंत  
 जवहारी ॥ तिरि नेमचंद सूरि, उज्जोयण सूरिणो सुगुरु ॥ ७ ॥  
 तिरि वडमाण सूरि, पयमीरुय सूरि मत माहप्पो ॥ पन्निहय कसाय  
 पत्तरो, सरय ससकुअ सुहजणत्त ॥ ८ ॥ सुहसील चोर चप्पर, ए  
 पञ्जो निच्चलो जिणमयंमि ॥ जुगपवर तिद्धसिंहं, तजाणत्त पणय  
 सुगुणजणत्त ॥ ९ ॥ पुरत्त उच्चह महिव, छहस्त अणहिअ वारुए  
 पयं ॥ मुक्कवि आरिअण, सीहेणव दवच्चिगि गया ॥ १० ॥ ६

समञ्चैरय निसिचि, प्फुरंतुं सञ्चंद सूरिमय तिमिरं ॥ सूरैणव सूरि  
 जिणे, सरेण ह्यमद्विद्य दोसेण ॥ ११ ॥ सुकृत्त पत्त किन्ती, पय  
 नित्र गुत्ती पतंत सुहमुत्ती ॥ पहय परवाइ दिन्ती, जिणचंद जई  
 सरो मंती ॥ १२ ॥ पयनित्र नवग सुत्तव, रयणुक्कोसो पणासित्र  
 पत्तसो ॥ जवन्नीत्र मवित्र जणमण, कयसंतो सो विगय दोसो ॥  
 ॥ १३ ॥ जुग पवरागम सार, प्परूवणा करणवंधु रोधणित्रं  
 ॥ सिरि अन्नयदेव सूरि, मुणिपवरो परम पत्तमधरो ॥ १४ ॥ कय  
 सावय संतासो, हरि व सारग जग संदेहो ॥ गय समय दप्प द  
 खणो, आसाइत्र पवर कवरसो ॥ १५ ॥ ज्जीमज्जव काणणमित्र,  
 वंसिअगुरुवयण रयण संदेहो ॥ नीसेस सत्त गुरुत्त, सूरी जिणव  
 ल्लहो जयइ ॥ १६ ॥ उवरडिअ सच्चरणो, चन्नरणुत्तग प्पहाण  
 सच्चरणो ॥ असममयराय महणो, उठ्ठमुहो सहइ जस्त करो ॥  
 ॥ १७ ॥ वंसिअ निम्मल निच्चल, दंतगणो गणिअ सावत्तव जठ  
 ॥ गुरुगिरि गरुत्त सरहिव, सूरि जिणवल्लहो होत्ता ॥ १८ ॥ लुग  
 पवरागम पीऊ, सपाणि पीणय मणाकया ज्जवा ॥ जेण जिह्वद्व  
 हेणं, गुरुणा तं सव्वहा वंदे ॥ १९ ॥ विप्फुरिअ पवर प्पद्वत्त, ति  
 रोमणी वूढ डव्वह खमोया ॥ जो सेसाणं सेसु, व सव्वत्तवत्तवत्त  
 णकरो ॥ २० ॥ सच्चरिआण महीणं, सुगुरुणं प्पारत्तं सुव्वहइ ॥  
 जयइ जियइ जिणवत्त सूरि, सिरि निवत्त प्पत्तं सुव्वहइ ॥  
 २१ ॥ इति श्रीगुरुपारतंत्र्यनामक पंचमस्मरणम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीपठ्यस्मरणम् ॥

॥ सिग्धमवहरत्त-विग्ध, जिणवीणात्तं सुनि

सिरि पासजिणो

हम्म पमुहा,

जिपाति, व

विज्जिअन्निदे ॥  
 सुव्वहइ



वेयावञ्च कारिणो संति ॥ अथहरिय विग्ध सधा, इवंतु ते संघ सति  
 करा ॥ ३ ॥ सिरि घञ्जणय विप्र पा, सत्तामि पयपन्नम पणय पा  
 णीण ॥ निद्वलिय डुरिय विंदो, धरणिंदो हरज डुरिय'इं ॥ ४ ॥  
 गोमुहपमुक्क जस्का, पन्दिहय पन्दिवरक्क परक्क लस्का ते ॥ कयसुगु  
 या संघ रस्का, इवंतु सपत्त सिवसुस्का ॥ ५ ॥ अप्पन्निचक्का पमुहा,  
 जिण सासण देवयान्ज जिण पणिआ ॥ तिद्धाइप्रा समेया, इवंतु  
 संघस्त विग्धहरा ॥ ६ ॥ सक्काए सासञ्चन्नर, पुरविन्न वद्धमाण  
 जिण ज्ञतो ॥ सिरि वज्ज सति जस्को, रक्कन्न सघं पयत्तेण ॥ ७ ॥  
 खित्तगिह गुत्त संता, ए देस देवाहि देवया तान् ॥ निबुडु पुर प  
 हियाण, ज्जाण कुणतु सुस्काणि ॥ ८ ॥ चक्केसरि चक्कधग्ग, विहि  
 पहरि उच्चिण कंधरा धणिणं ॥ सिवसरण लग्ग संघस्त, सब्बहा ह  
 रज विग्धाणि ॥ ९ ॥ तिच्चवइ वद्धमाणो, जणेसरो सगत्तं मुसधंण  
 ॥ जिणचदो जयदेवो, रक्कन्न जिणवद्धहो पद्दुमं ॥ १० ॥ सो  
 जयज्ज वद्धमाणो, जिणेसरो णेस स्व इयतिमिरो ॥ जिणचदा ज्ञय  
 देवा, पद्दुणो जिणवद्धहा जेय ॥ ११ ॥ गुरु जिणवद्धह पाए,  
 ज्ञयदेव पद्दुत्त दायगे वदे ॥ जिणचट्ठ जिणेसरव, ठमाण तिच्चस्त  
 बुद्धिक्कए ॥ १२ ॥ जिणदत्ताण सम्म, मन्नति कुणति जेय कारति ॥  
 मणसा वयसा वन्नसा, जयतु साहम्मिया तेवि ॥ १३ ॥ जिणदत्त  
 गणे नाणाइणो, सया जे धरति धारिति ॥ दसियसिय वायपए,  
 नमामि साहम्मिया तेवि ॥ १४ ॥ इति पष्ठ स्मरणम् ॥ ६ ॥

॥ अथ उवसग्गहर नामक सप्तम स्मरणम् ॥

॥ उवसग्गहर पासं, पास वदामि कम्मघण मुक्कं ॥ विसह  
 रविसनिष्सास, मगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥ इत्यादि ॥ ज्ञवेज्जवे  
 पासजिणचंद पर्यंत सपूर्ण कहना ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्त  
 वन सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥ इति सप्तस्मरणं समाप्तम् ॥

॥ अथ भक्तामरस्तोत्र प्रारभ्यते ॥

॥ भक्तामरप्रणतमोतिमणिप्रज्ञाणा, मुद्योतकं दलितपापत  
 मोवितानम् ॥ सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुग युगादा, बालवन नवजले  
 पतता जनानाम् ॥ १ ॥ यं संस्तुतः सकलवाङ्मपतत्त्रावोधा, उ  
 च्छूनवुचिरटुजिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रेर्द्धगप्रितयचित्तद्वैरुद्वैरैः, स्तो  
 प्यै किलाहमपि त प्रथमं जिनेन्दम् ॥ २ ॥ युग्म ॥ बुद्ध्या विना  
 पि विद्युद्यार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्यतमतिविगतत्रयोऽहम् ॥ वा  
 लं विहाय जलसंस्थितमिडुधिव, मन्यं क ऽद्यति जनं सदृसा  
 ग्रहीतुम् ॥ ३ ॥ वक्तु गुणान् गुणसमुद्ग शशाककातान् कस्ते क्  
 मं सुरगुप्प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ॥ कद्वयातकालपवनोऽवननरुचक्र, को  
 वा तरौतुमलमबुनिधिं ज्ञुजाज्याम् ॥ ४ ॥ सोऽहं तथापि तव भ  
 क्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तथ विगतशक्तिरपि प्रवृत्त ॥ प्रीत्यान्मयी  
 र्यमविचार्य मृगोमृगेऽ, नाज्येति किं निजशिशो परिपालनार्थम्  
 ॥ ५ ॥ अद्यश्रुतं श्रुतवता परिहासयाम, त्वन्नक्तिरेव मुखरीकुरुते  
 वलान्माम् ॥ यत्कोकिल किल मयो मधुर विरौति, तच्चारुचाभ्रक  
 लिकानिकरैकहेतु ॥ ६ ॥ त्वत्संस्तवेन नवस्ततिसनिवद्धं,  
 पाप कृणात्कथमुपैति शरीरज्ञाजाम् ॥ आकातलोकमलिनी  
 लमशेषमाशु, सूर्याशुजिन्नमिव शार्धरमधकारम् ॥ ७ ॥ मत्वेति  
 नाथ तव सस्तवन मथेद, मारज्यते तनु धियापि तव प्रज्ञायात् ॥  
 जेतो हरिष्यति सता नलिनीदलेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदधिं उ  
 ॥ ८ ॥ आस्ता तवस्तवनमस्ततस्तदोप, त्वत्सकथापि  
 जगता उरितानि हन्ति ॥ द्वै सदृस्त्रकिरणं कुरुते प्रज्ञैव,  
 पद्माकरेषु जलजानि विकाशज्ञाजि ॥ ९ ॥ नात्यजुनं ज्ञुवन  
 ज्ञूपणज्ञूत नाथ, ज्ञूनेर्गुणैर्जुधिं ज्ञवतमज्जिप्तुवंतः ॥ तुड्या ज्ञवति  
 ज्ञवतो ननु तेन किं वा, ज्ञूत्याश्रितं य इह नात्मसम करोति ॥

॥ १० ॥ दृष्ट्वा ज्वंतमनिमेपविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुपयाति  
 जनस्य चक्षुः ॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युतिं दुग्धासिधोः, क्षारजलं  
 जलनिधेरशितुं कश्चेत् ॥ ११ ॥ ये शातरागरुचिन्निः परमाणु  
 जिस्त्वं, निर्मापितस्त्रिभुवनैकललामञ्जत ॥ तावन्त एव खलु तेप्य  
 णव पृथिव्या, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥ वक्रं क  
 ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जिनजगद्वितयोपमानम् ॥ विंशं  
 कलकमलिनं कनिशाकरस्य, यद्दासरे ज्वति पांडुपलाशकटपम्  
 ॥ १३ ॥ सपूर्णमरुतशशाककलाकलाप, शुभ्रा गुणास्त्रिभुवनं तव  
 लघयन्ति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वरनाथमेकं, कस्तान्निवारयति  
 संवरतो यथेष्टम् ॥ १४ ॥ चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशागनाञ्जि,  
 नीतं मनागपि मनो न विकारमार्गम् ॥ कटपातकालमरुता चलि  
 ताचलेन, किं मंदराद्विशिखरचलितं कदाचित् ॥ १५ ॥ निर्धूमव  
 त्तिरपवाङ्मनसैलपूर, कृत्स्नजगद्भ्रमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्यो न  
 जातु मरुता चलिताचलाना, दीपोऽरस्त्वमस्ति नाथ जगत्प्रकाशः  
 ॥ १६ ॥ नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यं, स्पष्टीकरोषि सहस्र  
 युगपङ्कगति ॥ नाज्जोधरोदरनिरुद्धमहाप्रजाव, सूर्यातिशायिमहि  
 मासि मुनीन् लोके ॥ १७ ॥ नित्योदयदलितमोहमहाधकारं,  
 गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम् ॥ विभ्राजते तव मुखाङ्गमन  
 द्यपकाति, विद्योतयङ्गादूर्ध्वशशाकविंशम् ॥ १८ ॥ किं शर्वरीषु  
 शशिनाह्निविवस्यता वा, युष्मन्मुखैर्दुदलितेषु तमस्सु नाथ ॥ नि  
 ष्यन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियजलधरेर्ज्ज्वन्नारनत्रैः  
 ॥ १९ ॥ ज्ञानं यथा त्वयि विजाति कृतावकाश, नैव तथा हरिह  
 रादिषु नायकेषु ॥ तेजस्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु  
 काचशकले किरणाकुलेऽपि ॥ २० ॥ मन्ये वरहरिहरादय एव  
 दृष्ट्वा, दृष्टेषु येषु हृदय त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन ज्वता नृ

वि येन नान्यः, कश्चिन्मनो हरति नाथ ज्ञवांतरेपि ॥ २१ ॥ स्त्री  
 णा शतानि शतशो जनयति पुत्रान्, नान्या सुतं त्र्यडुपमं जननी  
 प्रसूना ॥ सर्वा दिशो दधति ज्ञानि सहस्ररश्मि, प्राच्येव दिग्जन  
 यति स्फुरदंशुजालम् ॥ २२ ॥ त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस,  
 मादित्यवर्णममलं तमस. परस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलक्ष्य जयंति  
 मृत्युं, नान्यः शिव. शिवपदस्य मुनींश्चपंथाः ॥ २३ ॥ त्वामव्ययं वि  
 ज्ञुमर्चित्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्वरमनंतमनगकेतुम् ॥ योगेश्वरं  
 विदितयोगमनेकमेकं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संत. ॥ २४ ॥  
 बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिवोधात्, त्वं शंक्रोऽसि ज्ञुवनत्रयशंक  
 रत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गत्रिधेर्विधानात्, व्यक्तं त्वमेव जग  
 वन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥ तुज्यं नमस्त्रिजुवनार्तिहराय नाथ,  
 तुज्यं नम. क्षितितलामतन्नूपणाय ॥ तुज्यं नमस्त्रिजगत परमेश्व  
 राय, तुज्यं नमोजिनज्ञबोधिशोपणाय ॥ २६ ॥ को विस्मयो  
 ऽत्र यदि नाम गुणेशोपै, स्व सश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥  
 दोषैरुपात्तविनिघात्रयजातगर्वै, स्वप्नांतरेऽपि न कदाचिदपीक्षितो  
 ऽसि ॥ २७ ॥ उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माज्जाति रूपममलं  
 ज्वतो नितातम् ॥ स्पष्टोद्धसत्किरणमस्ततमोवितानं, विंबं रवेरिव  
 पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥ सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, वि  
 भ्राजते तव वपु कनकावदातम् ॥ विंबं वियद्विलसदशुलताविता  
 नं, तुंगोदयाद्दिशिस्तोव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥ कुंदावदातचलचाम  
 रचारुशोभं, विभ्राजते तव वपु. कलधौतकातम् ॥ उद्यच्छशाकशु  
 चिनिर्जरवारिधार, मुञ्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौजम् ॥ ३० ॥ उत्र  
 त्वयं तव विज्ञातिशशास्कात, मुञ्चै स्थितं स्थगितज्ञानुकरप्रता  
 पम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृद्धशोभं, प्रख्यापयच्चिजगतः परमेश्वर  
 त्वम् ॥ ३१ ॥ उच्चैर्द्वेमेनचपकजपुंजकाती, पर्युद्धसन्नखमयूख

शिखा जिरामौ ॥ पावौ पदानि तत्र यत्र जिनेऽधत्त, पदानि त  
 त्र विद्युया. परिकल्पयति ॥ ३७ ॥ इच्छ यथा तत्र विज्ञूतिरञ्जुञ्जिने  
 इ, यमोपदेशनविधौ न तथा परस्य ॥ यादृक् प्रजा दिनरुत प्रह  
 ताधरारा, तादृक्तोयहगणस्य विकारिणोऽपि ॥ ३३ ॥ श्येत  
 न्मदाविलविलोलरूपोलमूल, मत्तध्रमध्रमरनादिविवृद्धकोपम् ॥ ऐ  
 रावताजमिजमुद्धतमापतत, दृष्टा ज्ञयं जवति नो जवदाश्रिता  
 नाम् ॥ ३४ ॥ जित्तेजकुजगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रकर  
 जूपितजूमिजाग. ॥ बद्धरुम क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि, नाक्रामति  
 क्रमयुगाचलसश्रित ते ॥ ३५ ॥ कटपातकालपवनोद्भवह्लिकटप,  
 दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिगम् ॥ विश्व जिघत्सुमिव संमु  
 खमापतत, त्वन्नामकीर्तनजल शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥ रक्तेक्षणं  
 समदकोकिलकगनील, क्रोयोद्धत फलेनमुत्फलमापतंतम् ॥ आक्राम  
 ति क्रमयुगेन निरस्वशरु, स्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः  
 ॥ ३७ ॥ बद्धानुरंगाजगज्जितजीमनाट, माजौ बलबलवतामपि जू  
 पतीनाम् ॥ उद्य देवाकरमयूखशिखापविद्ध, त्वत्कीर्तनात्तम इवाशु  
 जिदामुपैति ॥ ३८ ॥ कुताग्रजिन्नगजशोणित वारिवाद्, वेगावता  
 रतरणातुरयोवन्नीमे ॥ युद्धे जय विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्वत्पाद  
 पकजवनाश्रयिणो लज्जते ॥ ३९ ॥ अज्ञोनिधौ रुजितजीपणन  
 कचक्र, पाठोनपीठजयदोदृष्टणारुवाग्रौ ॥ रगन्तरगशिखरस्थितया  
 नपात्रा, स्वात विदाय जवतः स्मरणाद्भजति ॥ ४० ॥ उज्ज्वलजी  
 पणजलोद्भरज्जुना, शोड्या दशामुपगताच्युतजीपिताशा ॥  
 त्वत्पादपकजरजोमृतदिग्भेदेहा, मर्त्या जवति मकरध्वजतुल्यरूपा  
 ॥ ४१ ॥ आपादकगमुरुशृखलवेष्टिनागा, गाढ दृढनिगमकोटिनिधु  
 एजंघा ॥ त्वन्नाममत्रमनिशं मनुजाः स्मरत, सद्य स्वय विग  
 तवधजया जवति ॥ ४२ ॥ मत्तच्छिपेऽमृगराजश्वानलादि, संग्राम

वारिधिमहोदरबंधनोष्ठम् ॥ तस्याशु नाशमुपयाति ज्ञयं ज्ञियेव,  
 यस्तावकं स्तवमिम मतिमानधीते ॥४३॥ स्तोत्रस्त्रजं तव जिनैऽ  
 गुणैर्निवद्धा, ज्ञक्तया मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ॥ धत्ते जनो  
 य इह कठगतामजस्र, त मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः ॥ ४४  
 ॥ इति ज्ञक्तामरस्तोत्रं संपूर्णम् ॥

॥ अथ वृद्धशांतिर्लिख्यते ॥

॥ ज्ञो ज्ञो ज्ञव्या. शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वं मेतत्, ये या  
 त्राया त्रिञ्चुवनगुरोर्गर्हता ज्ञक्तिज्ञाजः ॥ तेषां शांतिर्भवतु ज्ञवताम  
 र्हेदादिप्रज्ञावा, दारोग्यश्रोष्ठ तेमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥  
 ज्ञो ज्ञो ज्ञव्यलोका इह हि ज्ञरतैरावतविदेहसज्ञवानां, समस्तती  
 र्यकृता जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं श्रवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपति  
 सुघोषाघाटाचालनानन्तरं सकलसुरासुरैऽ सह समागत्य सविन  
 यमर्हन्नटारकं गृहीत्वा, गत्वा कनकाङ्गिणे, विहितजन्माज्ञिपेकः,  
 शान्तिमुद्घोषयति, ततोऽहंकृतानुकारमिति कृत्वा, महाजनो येन  
 गतस्त पंथाः ॥ इति ज्ञव्यजनैः सह समागत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं वि  
 धाय, शान्तिमुद्घोषयामि ॥ तत्पूजायात्रास्नात्रादि महोत्सवानन्तरं  
 इति कृत्वा कर्णं दत्त्वा निशम्यता स्वाहा ॥ ॐ पुण्याहं १, प्रीय  
 ता २, ज्ञगवन्तोऽर्हन्तः, सर्वज्ञा सर्वदर्शिनः ॥ त्रैलोक्यनाथाः, त्रै  
 लोक्यमहिता त्रैलोक्यपूज्या त्रैलोक्येश्वरा त्रैलोक्योद्योतकराः ॥  
 ॐ श्रोकेवलज्ञानी १, निर्वाणी २, सागर ३, महायज्ञ ४, विम  
 ल ५, सर्वानुज्ञाति ६, श्रीधर ७, दत्त ८, दामोदर ९, सुतेजा १०,  
 स्वामी ११, मुनिसुव्रत १२, सुमति १३, शिवगति १४, अस्ताग  
 १५, नमीश्वर १६, अनिल १७, यशोधर १८, कृतार्थ १९, जि  
 नेश्वर २०, शुद्धमति २१, शिवकर २२, स्यन्दन २३, संप्रति २४,  
 एते प्रतीतः



( १२० )  
॥ चतुर्विंशतित्थिकराः ॥

॥ ॐ श्रीरूपज्ञ १, अजित २, सन्नव ३, अन्ननंदन ४, सुमति ५, पद्मप्रज्ञ ६, सुपार्थ ७, चंद्रप्रज्ञ ८, सुविधि ९, शीतल १०, श्रेयास ११, वासुपूज्य १२, विमल १३, अनन्त १४, धर्म १५, शान्ति १६, कुशु १७, अर १८, मल्लि १९, मुनिसुव्रत २०, नमि २१, नेमि २२, पार्थ २३, वर्द्धमान २४, एते वर्त्तमानजिना

॥ ॐ श्रीपद्मनाभ १, सुरदेव २, सुपार्थ ३, स्वयंप्रज्ञ ४, सर्वानुभूति ५, देवश्रुत ६, नदय ७, पेढाल ८, पोद्विल ९, शत कीर्ति १०, सुवत ११, अमम १२, निष्कपाय १३, निष्पुलाक १४, निर्मम १५, चित्रगुप्ति १६, समाधि १७, संवर १८, यशोधर १९, विजय २०, मल्लि २१, देव २२, अनन्तवीर्य २३, न डकर २४.

॥ एते ज्ञावितीर्थिकराः जिना ॥ ज्ञान्ताः शान्तिकरा ज वंतु मुनयो मुनिप्रवरा, रिपुविजयदुर्जिह्वकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु र क्तुवो नित्य ॥ ॐ श्रीनाभि १, जितशत्रु २, जितारि ३, सवर ४, मेघ ५, धर ६, प्रतिष्ठ ७, महसेन नरेश्वर ८, सुग्रीव ९, हृदय १०, विष्णु ११, वासुपूज्य १२, रुतवर्म १३, सिंहासेन १४, ज्ञानु १५, विश्वसेन १६, सूर १७, सुदर्शन १८, कुञ्ज १९, सु मित्र २०, विजय २१, समुद्रविजय २२, अश्वसेन २३, सिद्धार्थ २४ ॥ इति वर्त्तमान चतुर्विंशतिजिनजनकाः ॥

॥ ॐ श्रीमरुदेवा १, विजया २, सेना ३, सिद्धार्थ ४, सुमंगला ५, सुसीमा ६, पृथिवीमाता ७, लक्ष्मणा ८, रामा ९, नदा १०, विष्णु ११, जया १२, श्यामा १३, सुयशा १४, सु व्रता १५, अचिरा १६, श्री १७, देवी १८, प्रजावती १९, पद्मा

१०, वप्रा ११, शिवा १२, वामा १३, त्रिशला १४ ॥ इति वर्त्तमान जिनजनन्य. ॥

॥ ॐ गोमुख १, महायज्ञ २, त्रिमुख ३, यक्षनायक ४, तुंगुरु ५, कुमुम ६, मातंग ७, विजय ८, अजित ९, ब्रह्मा १०, यक्षराज ११, कुमार १२, पण्णमुख १३, पाताल १४, किन्नर १५, गरुड १६, गंधर्व १७, यक्षराज १८, कुबेर १९, वरुण २०, ऋकुटि २१, गोमेध २२, पार्श्व २३, ब्रह्मशांति २४ ॥ इति वर्त्तमानजिनयक्षाः ॥

॥ ॐ चक्रेश्वरी १, अजितवला २, दुरितारि ३, काली ४, महाकाली ५, श्यामा ६, शांता ७, ऋकुटि ८, सुतारका ९, अशोका १०, मानवी ११, चंद्रा १२, विदिता १३, अंकुशा १४, कदम्पा १५, निर्वाणो १६, बला १७, धारिणी १८, धरणाप्रिया १९, नरदत्ता २०, गाथारी २१, अंबिका २२, पद्मावती २३, सिद्धाधिका २४. एते वर्त्तमानचतुर्विंशतितीर्थकरशासनदेव्यः ॥

॥ ॐ ह्री श्री घृति, कीर्त्ति, काति, बुद्धि, लक्ष्मी, मेधा, विद्या, साधन, प्रवेशनिवेशनेषु, सुगृहीतनामानो जयन्ति ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी १, प्रज्ञप्ति २, वज्रशृङ्खला ३, वज्राकुशा ४, चक्रेश्वरी ५, पुरुषदत्ता ६, काली ७, महाकाली ८, गौरी ९, गाथारी १०, सर्वास्त्रमहाज्वाला ११, मानवी १२, वैरोढ्या १३, अश्रुता १४, मानसी १५, महामानसी १६. एताः पौरुषविद्यादेव्यो रक्तु मे स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचतुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणस्य शांतिर्भवतु, ॐ तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॐ ग्रहाश्रद्धसूर्या गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनिश्वरराहुकेतुसहिताः सलोकपात्रा सोमयमवरुणकुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायक ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयन्ताः ॥ अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपत

यश्च ज्वंतु स्वाहा ॥ ॐ पुत्रमित्रव्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसंबन्धिवधु  
 वर्गसहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणो ज्वंतु ॥ अस्मिन्श्च जूम  
 रुत्वे आयतननिवासिना सायुसाध्वी श्रावकश्राविकाणा, रोगोपस  
 र्गव्याधिदुःखदौर्भनस्योपशमनाय शान्तिर्ज्वंतु ॥ ॐ तुष्टिपुष्टिर्  
 द्विवृद्धिमाङ्गल्योत्सवा ज्वंतु ॥ सदाप्राङ्मूर्तानि पुरितानि पापा  
 नि शाम्यंतु शत्रव पराह्मुखा ज्वंतु स्वाहा ॥ श्रीमते शान्तिना  
 श्राय, नम शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटाञ्च  
 र्चिताङ्गये ॥ १ ॥ शान्तिः शान्तिकर श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे  
 गुरु. ॥ शान्तिरेव सदा तेषा, येषा शान्तिर्गृहेगृहे ॥ २ ॥ ॐ उ  
 न्मृष्टरिष्टदुष्ट, अहगतिदुःखप्रदुनिमित्तादि ॥ संपादितहितसप्त,  
 नामग्रहण जयति शाते. ॥ ३ ॥ श्रीसगपौरजनपद, राजाधिपरा  
 जसनिवेशानाम् ॥ गोष्ठीपुरमुखाना, व्याहरणैर्व्याहरेच्छातिम् ॥ ४ ॥  
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्ज्वंतु, श्रीपौरलोकस्य शान्तिर्ज्वंतु, श्रीराज  
 संनिवेशाना शान्तिर्ज्वंतु, श्रीगोष्ठिकाना शान्तिर्ज्वंतु, ॐ स्वाहा  
 ॥ ० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा ॥ एषा शान्ति. प्रतिष्ठा  
 यात्रास्त्रावसानेषु, शान्तिकलश गृहीत्वा कुकुमचंदनकर्पूरागरुधू  
 पवासकुसुमाजलिसमेत, स्त्रात्रपाठे श्रीसधसमेत, शुचि. शुचि  
 त्रपु' पुष्पवस्त्रश्रंदनाञ्जरणालरुत, चंदनतिलक विधाय पुष्पमालां  
 कठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीय मस्तके दातव्यमिति  
 ॥ नृत्यति नृत्य मणिपुष्पवर्षे, सृजंति गार्धंति च मगलानि ॥ स्तो  
 त्राणि गोत्राणि पठति मंत्रान्, कल्याणज्ञाजोहि जिनाज्ञिपेके ॥ १  
 ॥ अह तिष्ठपरमाया शिवा देवी, तुम्ह नयरनिवासिनी ॥ अम्ह  
 शिवं तुम्ह शिवं, असुहोवसम ज्वंतु स्वाहा ॥ १ ॥ शिवमस्तु  
 भर्षजगत, परहितनिरता ज्वंतु जूतगणा ॥ दोषा प्रयान्तु नाशं,  
 सर्वत्र सुखी ज्वंतु लोका ॥ २ ॥ उपसर्गा. कथं यान्ति, विद्यते वि

प्रवृत्तयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ३ ॥ इति श्रीवृद्धशान्ति समाप्ता ॥

॥ अथ जिनपंजरस्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्ध अर्द्धज्ञयो नमोनमः, ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्ध सिद्धेन्द्रयो नमोनम ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्ध आचार्येन्द्रयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्ध उपाध्यायेन्द्रयो नमोनमः ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्ध श्री गौतमस्वामिप्रमुखसर्वसाधुन्द्रयो नमोनमः ॥ १ ॥ एष पंच नमस्कारः, सर्व पापह्यंकर ॥ मंगलानां च सर्वेषां, प्रथमं ज्वति मंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जयविजये, अर्द्ध परमात्मने नमः ॥ कमलप्रज्ञसूरींशो, ज्ञापते जिनपजरम् ॥ ३ ॥ एकज्ञक्तोपवासेन, त्रिकालं यः पठेदिदं ॥ मनोज्ञिलपित सर्वं, फलं स लज्जते ध्रुवं ॥ ४ ॥ शू शय्या ब्रह्मचर्येण, क्रोधलो जनिवर्जितः ॥ देवताग्रे पवित्रात्मा, ए एमासैर्लज्जते फल ॥ ५ ॥ अर्द्धतं स्थापयेन्मूर्ध्नि, सिद्धं चकुर्ललाटके ॥ आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये, उपाध्यायं तु घ्राणके ॥ ६ ॥ साधुचन्दं मुखस्याग्रे, मनः शुद्धं विधाय च ॥ सूर्यचन्द्रनिरोधेन, सुधीः सर्वा र्थसिद्धये ॥ ७ ॥ दक्षिणे मदनद्वेषी, वामपार्श्वे स्थितोजिनः ॥ अंगसंघिषु सर्वज्ञः, परभेष्टी शिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वाशा श्रीजिनो रक्ते, दाग्नेयी विजितेन्द्रिय ॥ दक्षिणाशां परं ब्रह्म, नैर्कृति च त्रिकालवि त् ॥ ९ ॥ पश्चिमाशा जगन्नाथो, वायवीपरमेश्वरः ॥ उत्तरा तीर्थ रुत् सर्वा, मीशानीं च निरंजन ॥ १० ॥ पातालं जगवानर्द्ध, न्नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणीप्रमुखा देव्यो, रक्ततु सकलं कुल ॥ ११ ॥ ऋष्यज्ञो मस्तकं रक्ते, दजितोपि विलोचने ॥ सज्ज वः कर्णयुगलं, नासिकां चाग्निनदनः ॥ १२ ॥ उष्टौश्रीसुमती र क्तेत्, दंतान्पद्मप्रज्ञो विज्जुः ॥ जिह्वां सुपार्श्वदेवीयं, तालु चन्द्रप्रज्ञो विज्जुः ॥ १३ ॥ कंठं चि चिरीरक्तेत्, हृदयं श्रीसुशोतल ॥ श्रे

चासौ वादुयुगलं, वासुगूज्य करद्वय ॥ १४ ॥ अंगुलीर्विमलो रक्ते,  
 दन्तोऽसौ स्तनावपि ॥ सुप्रमोऽपुदरास्थीनि, श्रीशातिर्नाजिमंरुलं  
 ॥ १५ ॥ श्रेकुथुर्गुह्यक रक्ते, दरो रोमकटीतटं ॥ मल्लिरूरुपृष्ठिं  
 श, जघे च मुनिसुव्रत. ॥ १६ ॥ पादागुलीर्नमी रक्तेत्, श्रीनेमि  
 श्ररणद्वयं ॥ श्रीपाद्भ्रवनाथ सर्वांग, वर्द्धमानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥  
 पृथिवीजलतेजस्क, वाय्वाकाशमय जगत् ॥ रक्तेदशेपपापेभ्यो, वी  
 तरागो निरजन ॥ १८ ॥ राजद्वारे श्मशाने वा, सग्रामे शत्रुसंक  
 टे ॥ व्याघ्रचौराग्निस्पर्षादि, जूनप्रेतजयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणे  
 प्राप्ते, दारिद्र्यापत्समाश्रिते ॥ अपुत्रत्वे महादोषे, मूर्खत्वे रोगपी  
 निते ॥ २० ॥ ऋकिनी शाकिनीयस्ने, महाग्रहणादिते ॥ नद्युक्ता  
 रेऽध्ववैपम्ये, व्यसने चापदि स्मरेत् ॥ २१ ॥ प्रातरेव समुवाय, यः  
 स्मरेज्जिनपंजर ॥ तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति, लज्जते सुखसपदं ॥२२॥  
 जिनपजरनामेदं, यः स्मरत्यनुवासर ॥ कमलप्रज्जराजेंड, श्रियं स  
 लज्जते नर ॥ २३ ॥ प्रात समुवाय पठेत् कृतज्ञो, य स्तोत्रमेत  
 ज्जिनपजरारख्यं ॥ आसादयेत्स कमलप्रज्जारख्यां, लक्ष्मीं मनोवाग्नि  
 पूरणाय ॥ २४ ॥ श्रीरुद्रपत्नीयवरेण्यगच्छे, देवप्रज्जाचार्य्यपदाब्जदं  
 स ॥ वार्दीञ्चूनामणिरपजेनो, जीयाद् गुरु श्रीकमलप्रज्जारख्यः  
 ॥ २५ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्र संपूर्णम् ॥

## ॥ अथ स्तोत्रोमंस्तोत्रलिखणा ॥

॥ अथ वढानवकार लिख्यते ॥

॥ किं कप्पत्तरे अयाण चित्तञ्ज मणज्जितरिं, किं चित्तमणि  
 कामधेनु आराद्धो बहुपरि ॥ चित्तावेली काज किसे देसातर लंघञ्,  
 रयणरासि कारण किसे सायर उल्लंघञ् ॥ चवदे पूरव सार युग लद्धञ्  
 ए नवकार, सयल काज महियल तरे उत्तर तरे ससार ॥ १ ॥ के

वलि ज्ञासिय रीत जिके नवकार आराहे, जोगवि सुख अणंत  
 अंत परम प्यसाहे ॥ ७ ॥ एण जाणे मुर रिद्धि पुत सुह विलसै बहु  
 परि, इण जाणे देवलोक इंदपद पामे सुंदरि ॥ एह मंत्र सासतो  
 जपे अर्चित चिंतामणि एह, समरण पाप सवे टले रिद्धि सिद्धि  
 नियगेह ॥ ७ ॥ निय सिर ऊपर जाण मझ चिंतवै कमल नर,  
 कचणमय अठदल सहित तिहा मांहे कनकवर ॥ तिहा वेठा अ  
 रिहंतदेव पत्रमासण फिटकमणि, सेयवत्य पदरेवि पढम पय  
 चिते नियमणि ॥ निधारय चउ गइ गमण पामिय सासय सुख,  
 अरिहंत जाणे तुम लहो जिम अजरामर मुक्क ॥ ३ ॥ पनर जे  
 य तिहा सिद्ध वीय पद जे आराहे, राते विडुमतणे वन्निय सो  
 हग साहे ॥ राती धोती पहर जपै सिद्धि पुढे दिसि, सयल लोय  
 तिह नरहि होइ ततखिणसेवसि ॥ मूलमंत्र वशोकरण अवर स  
 हू जगधंद, मणमूली उपय करे बुद्धि हीणजाचंध ॥ ४ ॥ दक्षिण  
 दिसि पंखनी जपे नमो आयरिआण, सोवनवन्नह सीस सहित  
 उवए सहिनाण ॥ रिद्ध सिद्ध कारणे ताज ऊपर जे ध्यावे, पदरे  
 पीलावत्य तेह मन वंठिय पावै ॥ ५ ॥ एण जाणे नव निधि हुवेए  
 रोग कदे नवि होय, गज रथ दय वर पालखी चामर उच सिर  
 जोय ॥ ५ ॥ नीलवन्न उवजाय सीस पाढंता पञ्चिम, आराहिजे  
 अंग पुढ धारंत मणोरम ॥ पञ्चिम दिसि पंखनीय कमल ऊपर सु  
 हजाण, जोवौ परमानद तामु गय देवविमाण ॥ गुरु लघु जे रक्के  
 विडुर तिहा नर बहु फल होइ, मन सूधे विण जे जपे तिहा फल  
 सिद्ध न होइ ॥ ६ ॥ तर्ब साधु उत्तर विज्ञाग सामला वइठा, जि  
 ण धर्म लोय पयासयंत चारित गुण जिहा ॥ मण वयण काएहिं  
 जपे जे एके जाणै, पंचवन्न तिहा नाण जाण गुण एह पमाणे ॥  
 अनंत चोवीसी जग ॥ ७ ॥ सी अवर अनंत, आदि कोइ जाणे

नही इण नवकारह मत ॥ ७ ॥ एतो पच नमोकारो पद दिसिअ  
 गणोहि, सब पावपणासणो पद जपनेरेहिं ॥ वायव दिसि जाएह  
 मगलाण च सबेसि, पढम हवइ मगल ईसाण पएसि ॥ चिहुं दि  
 सि चिहु विदिसे मिलिय अठ दल कमल ठवेइ, जो गुरु लघु  
 जाणी जै सो घण पाव खवेइ ॥ ८ ॥ इण प्रजाव घरणिद हुं  
 पायालह सामी, समलोकुप्रर उपन्न जिल्ल सुर लोयह गामी ॥  
 सबल कवल बे बलद पहुता देवा कप्पे, सूली दीधो चोर देव थयो  
 नवकारहि जप्पे ॥ शिवकुमार मन बंठिय करे जोगी लियो मत्ता  
 ण, सोनापुरसो सीधयो इण नवकार प्रमाण ॥ ९ ॥ ठीके बैठो  
 चोर एक आकासे गामी, अहि फिट्टि हुई फूल माल नवकारह  
 नामी ॥ बाठरू आचारत बाल जल नदी प्रवाहे, बीध्यों कंटही  
 उयर मंत्र जपियो मनमाहे ॥ चित्या काज सबे सरे इरत परत  
 विमास, पालित सूरितणी परे विद्या सिद्ध आकास ॥ १० ॥ चौर  
 धाम संकट टले राजा वसि होवे, तिष्ठकर सो होइ लाख गुण वि  
 धिसु जोवे ॥ साइण डाइण चूत प्रेत वेत्ताल न पोहवे, आधि  
 व्याधि अहतणी पीरुते किमहि न होवे ॥ कुठ जलोदर रोग सबे  
 नासै एणही मत, मयणासुदरितणी परे नव पय जाण करंत ॥  
 ११ ॥ एक जीह इण मत्रतणा गुण किता वखाणुं, नाणहीण  
 उठमठ एह गुण पार न जाणुं ॥ जिम सत्तुंजय तिष्ठराज महिमा  
 उदयवंतो, सयल मत्र धुरि एह मत्र राजा जयवंतो ॥ तिष्ठंकर  
 गणहर पणिय चवदह पूरव सार, इण गुण अंत न को कहे गुण  
 गिरुं नवकार ॥ १२ ॥ अरु सपय नव पय सहित इणसठ लहु  
 अस्कर, गुरु अस्कर सचैव इह जाणो परमस्कर ॥ गुरु जिण वल्लह  
 सूरि जणे सिव सुस्कह कारण, नरय तिरय गय रोग सोग बहु डस्क  
 निवारण ॥ जल थल महियल वनगहण समरण हुवै इक चित्त, पय

पद्मेष्टि मंत्रं तणी सेवा देज्यो नित्त ॥ १३ ॥ इति पंच परमेष्टि  
महिमा गर्भित वृद्ध नवकार मंत्र संपूर्ण ॥

॥ अथ शक्ति जिन स्तोत्र ॥

॥ तिजय पद्भुत्त पयास । अथ महापान्दिहेर जुषाणं ॥ सम  
य खित्त ढियाणं । सरेमि चकं जिण दाणं ॥ १ ॥ पणवीसाय अस्तिया ।  
पनरस पन्नास जिनवर समूहो ॥ नासेत्त सयल डुरियं । न्नवियाणं  
न्नत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥ वीरा पणयाला विय । तीसा पन्नत्तरी जिणवरि  
दा ॥ गहन्नूय रक्क साडणि । घोरुवत्तगं पणासेत्त ॥ ३ ॥ सत्तरि पण  
तीसा विय । सढी पंचेव जिण गणो एसो ॥ वाहि जल जलण हरकरि  
। चौरारि महात्तय हरत्त ॥ ४ ॥ पण पन्नाय दसेवय । पन्नढी तहय  
चेव चालीसा ॥ रक्कतु मे शरोरं । देवासुर पणमिया सिद्धा ॥ ५  
॥ ॐ हरदुह सरसूंस । हरहुंह तहय चेव सरसूंसः ॥ आलिदिय  
नाम गभ्रं । चकं किर सबत्त न्ह ॥ ६ ॥ ॐ रोहिणी पन्नत्ती । व  
ज्जसंखत्ता तहय वज्जअकुसिया ॥ चक्रेसरि नरदत्ता । कालि महाका  
लि तहय गौरी ॥ ७ ॥ गंधारि महाज्वाला । माणविवइरुट्ट तहय  
अद्युत्ता ॥ माणसि महमाणसिया । विज्जा देवीत्त रक्कतु ॥ ८ ॥ पंचदस  
कम्मन्नूमिसु । उप्पन्न सत्तरि जिणाण सय ॥ विविह रयणाणवत्तो ।  
वसोदिय हरत्त डुरियाई ॥ ९ ॥ चत्ततीस अइसय जुत्ता । अथ  
महापान्दिहेर कयसोदा ॥ तिजयर गयमोदा । जाए अत्ता पचत्तेण  
॥ १० ॥ ॐ वर कणय सख विद्दुम । मरगय घण सन्निह विगय  
मोहं ॥ सत्तरि सय जिणाण । सवामर पूइयं वंदे स्वाहा ॥ ११ ॥  
ॐ नुवणावइ वाणमंतर । जोइसवाली विमाणवालीअ ॥ जे केवि  
डुढ देवा । ते सबे उवसमंतु मे स्वाहा ॥ १२ ॥ चंदण कप्पूरेण  
। फल हेत्तिद्विक्कणखात्तिअपीयं ॥ एगंतरगहमुग्गय । साइणि नूयं  
पणासेत्त ॥ १३ ॥ इय सत्तग्गि ॥ १४ ॥ सम्म मंतं डुवार पन्नि



लिहियं ॥ डुरिश्चारि विजयतंतं । निघ्नतं निच्चमञ्चेह ॥ १४ ॥  
॥ इति शप्तति जिन स्तोत्र ॥

॥ अथ नवग्रह गर्भित पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ दोसावहार दस्को, नालियायरवियासिगोपसरो ॥ रयणन्तय  
स्त जणत्त, पासजिणो जयत्त जय चस्कू ॥ १ ॥ कय कुवलय प  
मिवोहो, हरणं किय विग्गहो कला निलत्त ॥ विहियारविंढ मह  
णो, दीयरत्त जयत्त पासजिणो ॥ २ ॥ कतीइ निज्जिणतो, सि  
दूरं पुहवि नदणो कूरो ॥ जय जतुअमअव्वको, सुमंगलो जयत्त  
पट्टपासो ॥ ३ ॥ उप्पल दल नीलरूइ, हरिममल सथुत्त इलानदो  
॥ रयणियरदारत्तमह, बुहोपसीइज्ज पासजिणो ॥ ४ ॥ नाहियवाय  
वियट्टो, नायत्तो नागरायकय पूत्त ॥ सिरि पासनाह देवो, देवाय  
रित्त सुह दिसत्त ॥ ५ ॥ राया वट्ट समुज्जलं, तणुप्पहा ममलो म  
हान्नुइ ॥ असुरेहि नमिज्जतो, पासजिणदो कवी जयत्त ॥ ६ ॥  
तिमिरासि समारूढो, संतो डुखावहो जयंम्मि थिरो ॥ बहुलतमा  
सरिसि सिरी, जय चस्कू सुत्त जयत्त पासो ॥ ७ ॥ कवलीकय दो  
सायर, माथररहं अहो तणु विमुक्क ॥ लोआ चरणी ज्ञूय, पास  
जिण सत्तमं सरह ॥ ८ ॥ डुरिश्चाइ पासनाहो, सिढावमालीनहो  
न्नवणकेत्त ॥ दूरंतम रासीत्त, सत्तम णण छित्तं हरत्त ॥ ९ ॥ इअ  
नवग्रह थुइ गप्प, जिणपहसूरीहि गुफियं थवण ॥ तुइ पास पढइ  
जोत्तं, असुहावि गहा न पामति ॥ १० ॥ इति नवग्रह गर्भित  
पार्श्वजिन स्तुति ॥

॥ अथ चतुर्विंशति जिन गर्भित नवग्रह शांति स्तोत्रम् ॥

॥ जगद्गुरु नमस्कृत्य, श्रुत्वा सहुरुज्जापित ॥ गृहशांतिं प्र  
वक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥ जिनेंजा स्वचराङ्गेया, पूज  
नीया विधिक्रमात् ॥ पुष्पैर्विलेपनैर्वृषैः, नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥

पद्मप्रज्ञस्य मार्त्तम्. श्वेत्प्रज्ञस्य च ॥ वासुपूज्य जूमिपूत्रा, बु  
घोऽप्यष्टजिनेषु च ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माराः, शातिःकुंभुर्नमिस्त  
था ॥ वर्द्धमानो जिनेज्ञाणा, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥ ४ ॥ रूपज्ञा  
जितसुपार्था, श्वान्ननंदनशीतलौ ॥ सुमतिः संज्ञवः स्वामी, श्रेयास  
श्च वृहस्पतिः ॥ ५ ॥ सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्वरः ॥  
नेमिनाथे ज्ञवेडाहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्थव्योः ॥ ६ ॥ जनौल्लग्रे च  
राशौ च, पीर्यंति यदा ग्रहाः ॥ तदा संपूजयेदीमान्, खेचरैः स  
हितान् जिनान् ॥ ७ ॥ पुष्पं गंधादिभिर्धूपैः, फलनैवद्यसंयुते ॥ व  
र्णमदृशदानैश्च, वासोऽग्निर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ आदित्यसोममंगल,  
बुधगुरुशुक्राः शनैश्वरो राहुः ॥ केतुप्रमुखाः खेटाः, जिनपतिपुरतोव  
तिष्ठतु ॥ ९ ॥ जिननामरुतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः ॥ स्तुताश्च पू  
जिता ज्ञत्त्या, ग्रहाः संतु सुखावदाः ॥ १० ॥ जिनानामग्रतः  
स्थित्वा, ग्रहाणां सुखहेतवे ॥ नमस्कारशतं ज्ञत्त्या, जपेदष्टोत्तरं  
शतम् ॥ ११ ॥ ज्ञेवाहुर्वाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रज्ञाव  
त्पूर्वाद्, ग्रहशांतिविधिर्मतः ॥ १२ ॥ इति चतुर्विंशतिजिनग  
र्भितं नवग्रहशांति स्तोत्रम् ॥

॥ सूर्यग्रह क्रूर होय तो १ पद्मप्रज्ञजीकी माला फेरणी.  
चंद्र । २ चदाप्रज्ञजीकी ॥ मंगल । ३ श्रीवासुपूज्यजी ॥ बुध । ४ श्री  
विमलनाथजी, अनंतनाथजी, श्रीधर्मनाथजी, श्रीअरनाथजी, श्री  
शातिनाथजी, श्रीकुंभुनाथजी, श्रीनमीनाथजी, श्रीमहावीरस्वामी  
॥ वृहस्पति । ५ श्रीरूपज्ञदेवजी, श्रीअजितनाथजी, श्रीसुपार्थ  
नाथजी, श्रीअन्ननंदनजी, श्रीशीतलनाथजी, श्रीसुमतिनाथजी,  
श्रीसंज्ञवनाथजी, श्रीश्रेयांसजी ॥ शुक्र । ६ सुविधिनाथजी ॥  
शनैश्वर । ७ श्रीमुनिसुव्रतजी ॥ राहु । ८ नेमनाथजी ॥ केतु  
। ९ मल्लिनाथजी, पार्थनाथजी ॥ रंग मुजबे दान गुरुसुपात्रज्ञ

क्ति करणी माला पूर्वाक्त फेरणी पूजा जिनेश्वरकी द्रव्ये उर  
जावे करणी ॥

॥ अथ कल्याणमंदिर स्तोत्रं ॥

॥ कल्याणमंदिरमुदारमवद्यन्नेदि, नीताजयप्रदमनिदितमहि  
पद्मम् ॥ तसारसागरनिजङ्गदशेजतु, पोतायमानमजिनम्य जिने  
श्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य स्वयं सुरगुरुर्गिरिमाचुराशे, स्तोत्र सुविस्तृत  
मतिर्न विन्नुर्विधातुम् ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेनो, स्तस्या  
हमेप किल सस्तवन करिष्ये ॥२॥ युग्मम् ॥ सामान्यतोऽपि तत्र  
वर्णयितुं स्वरूप, मस्मादृशा कथनधीश ज्वंत्यधीशा ॥ घृष्टोपि  
कौशिकशिशुर्यदिवा दिवाधो, रूप प्ररूपयति किं किल धर्मरउभे ॥  
३ ॥ मोहकयादनुजवन्नपि नाथ मर्त्यो, नून गुणान् गणयितु न  
तव क्रमेत ॥ कल्पान्तवांतपयस. परुटोऽपि यस्मा, न्मीयेतकेन ज  
लधेर्ननु रत्नराशि. ॥ ४ ॥ अच्युद्यतोस्मि तव नाथ जनाशयोऽपि,  
कर्तुं स्तव लसदसख्यगुणाकरस्य ॥ वालोऽपि किं न निजवाहुयुग  
वितत्य, विस्तीर्णता कथयति स्वधियांशुराशेः ॥ ५ ॥ ये योगिना  
मपि न याति गुणास्तवेश, वक्तु कथं जवति तेषु ममावकाशः ॥  
जातातदेवमसमीकितकारितेयं, जल्पति वा निजगिरा ननु पङ्गिगो  
ऽपि ॥ ६ ॥ आस्तामचित्यमहिमा जिनसस्तवस्ते, नामापि पाति  
ज्वतो ज्वतो जगति ॥ तीव्रातपोपहतपाश्रजनान्निदाधे, प्रीणाति  
पद्मसरस सरसोऽनिलोऽपि ॥ ७ ॥ दृष्टिर्नि त्वयि विन्नो शिश्रि  
लोज्वन्ति, जतो क्षणेन निविन्ना अपि कर्मवयाः ॥ सद्यो जुजंगम  
मया इव मध्यजाग, मज्यागते वनशिखंरिनि चदनस्य ॥ ८ ॥ सु  
च्यंत एव मनुजा सहसा जिनेऽ, रौद्रैरुपड्यशतेस्त्वयिवीक्षितेपि  
॥ गोह्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशव प्रपला  
यमानै ॥९॥ त्वं तारकोजिन कथं जविना त एव, त्वामुद्वर्हति दृ

दयेन यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जत्रमेपनून, मंतर्गतस्य म  
 रुत. स किलानुज्ञावः ॥ १० ॥ यस्मिन् हरप्रज्ञृतयोऽपि इतप्रज्ञाव  
 वा, सोऽपि त्वयारतिपतिः कृपितः कृणेन ॥ विध्यापिता हुतज्ञुजः  
 पयसाथ येन, पीतं न कि तदपि दुर्ध्वारुवेन ॥ ११ ॥ स्वामि  
 न्नतुल्यगारिमाणमपि प्रपन्ना, स्वा जंतवः कथकहो हृदये दधानाः  
 ॥ जन्मोदधि लघु तरंत्यतिलाषवेन, चिंत्यो न हंत महता यदि वा  
 प्रज्ञावः ॥ १२ ॥ क्रोधस्त्वया यदि विज्ञो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्ता  
 स्तदा वत कथं किल कर्मचौरा. ॥ प्लोपत्यमुत्र यदि वा शिशिरा  
 पिलोके, नीलडुमाणि विपिनानि न कि हिमानी ॥ १३ ॥ त्वां यो  
 गिनो जिन सदा परमात्मरूप, मन्वेपयंतिहृदयानुजकोशदेशे ॥  
 पूतस्यनिर्मलरुचेर्यदिवाकिमन्य, दक्षस्य संज्ञवि पदं ननु कर्णिकायाः  
 ॥ १४ ॥ ध्यानाङ्गिनेश जवतो जविनः कृणेन, देह विहाय परमा  
 त्मदशा व्रजति ॥ तीव्रानलाडुपलज्ञावमपास्य लोके, चामीकरत्व  
 मचिरादिव धातुज्ञेदा. ॥ १५ ॥ अंन सदैव जिन यस्य विज्ञाव्यसे  
 त्व, ज्ञव्यै कथं तदपि नाशयसे शरीरम् ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यवि  
 वार्त्तिनोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुज्ञावाः ॥ १६ ॥ आत्मा म  
 नीपिञ्जिरयं त्वदज्ञेदबुद्ध्या, ध्यातो जिनेऽ जवतीह जवत्प्रज्ञाव ॥  
 पानीयमप्यमृतमित्यनुचित्यमान, कि नाम नो विपविकारमपाकरो  
 ति ॥ १७ ॥ त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विज्ञो हरिहरा  
 दिधिया प्रपन्नाः ॥ कि काचकामलिञ्जिरीश सितोपि शंखो, नो गृ  
 ह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥ धर्मोपदेशसमये सविधानुज्ञा  
 वा, दास्ता जनो जवति ते तरुरप्यशोकः ॥ अच्युजते दिनपतौ  
 स महोरुहोपि, कि वा विवोधमुपयाति न जीवलोके ॥ १९ ॥  
 चित्रं विज्ञो जवतमेव, विष्वक् पतत्य  
 दि. ॥ २ यदिवामुनीश,

धंधनानि ॥ २० ॥ स्थाने गज्जीरहृदयोदधिसंज्ञवाया, पीयूषतां  
 तव गिर समुदीरयंति ॥ पीत्वा यत परमसंमदसंगजाजो, ज्ञव्या  
 ब्रजंति तरसाप्यजरामरत्वम् ॥ २१ ॥ स्वामिन् सुदूरमवनम्यसमु  
 त्यतंतो, मन्ये वदति शुचयः सुरचामरौषा ॥ येऽस्मै नतिं विदधते  
 मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धजावा ॥ २२ ॥ श्यामं  
 गज्जीरगिरमुज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह ज्ञव्यशिखंमिनस्त्वाम्  
 ॥ श्रालोकयंति रत्नसेन नदंतमुच्चैः, श्रामीकराडिशिरसीव नवांबुवा  
 हम् ॥ २३ ॥ उदग्छता तव शितियुतिमंरुलेन, लुप्तदृष्टविरगो  
 कतरुवज्ज्व ॥ सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग, नीरागता  
 ब्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥ ज्ञोज्ञो प्रमादवधूय ज्ञजध्वमे  
 न, मागत्य निर्वृतिपुरिं प्रतिसार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देव जगन्न  
 याय, मन्ये नदन्नजिनन्न सुरडुंडुजिस्ते ॥ २५ ॥ उद्योतिर्तेषु ज्ञ  
 वता ज्ञवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरय विहताधिकारः ॥ मुक्ताक  
 लापकलितोद्युसितातपत्र, व्याजात्रिधा धृततनुर्ध्रुवमञ्जुपेतः ॥  
 ॥ २६ ॥ स्वेन प्रपूरितजगत्तयपिमितेन, कातिप्रतापयशसामिव स  
 च्येन ॥ माणिक्यहमरजतप्रविनिर्मितेन, सालश्रयेण ज्ञगवन्नजि  
 तोविज्ञासि ॥ २७ ॥ दिव्यसृजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य  
 रत्नरचितानपि मौलिश्रघान् ॥ पादौ श्रयति ज्ञवतो यदि वा परत्र,  
 स्वत्सगमे सुमनसो न रमतएव ॥ २८ ॥ त्वं नाथ जन्मजलधेर्विप  
 राड्मुखोपि, यत्तारयस्यसुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्त हि पार्थिव  
 निपस्य सतस्तवैव, चित्र विज्ञो यदसि कर्मविपाकगूण्य ॥ २९ ॥  
 विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्व, किं वाक्करप्रकृतिरप्यलिपिस्त्व  
 मीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञान त्वयि स्फुरति वि  
 श्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥ प्राग्भारसंज्ञृतनज्ञासि रजासि रोषा, दुग्धा  
 पितानि कमठेन शठेन यानि ॥ ठायापि तैस्तव न नाथ हताह

ताशो, ग्रस्तस्त्वमीजिरयमेव परं दुरात्मा ॥ ३१ ॥ यज्ञैर्जित  
 घनोधमदन्नजीमं, ब्रह्मयत्तमिन्मुसलमासलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्त  
 मथ दुस्तरवारि दध्ने, ते नैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥  
 ध्वस्तोर्ध्वकेशविरुतारुतिमर्त्यमुद्ग, प्रालंबचृन्नयदवक्रविनिर्यदग्निः ॥  
 प्रेतव्रजः प्रतिज्ञवंतमपीरितोयः, सोऽस्याऽज्ञवत्प्रतिज्ञवं ज्ञवद्दु खहे  
 तुः ॥ ३३ ॥ धन्यास्तएव जुवनाधिप ये त्रिसध्य, माराधयति वि  
 धिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ ज्ञक्तयोद्धमत्पुत्रकपद्मलदेहदेशाः, पाद्व  
 यं तव विज्ञो जुवि जन्मज्ञाजः ॥ ३४ ॥ अस्मिन्नपारज्ञववारिनि  
 धौ मुनीश, मन्ये न मे श्रवणगोचरता गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु  
 तव गोत्रपवित्रमंत्रे, किंवा विपच्छिन्धरी सविय समेति ॥ ३५ ॥  
 जन्मातरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया मद्दितमीहितदानदक्ष  
 म् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराज्ञवाना, जातो निकेतनमहं मग्नि  
 ताशयानाम् ॥ ३६ ॥ नून न मोदतिमिरावृतलोचनेन, पूर्व वि  
 ज्ञो सरुददि प्रविलोकितोऽसि ॥ सर्मावियो विधुरयंति हि मामन  
 र्था, प्रोद्यत्प्रबंधगतय कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥ आकर्णितोऽपि महि  
 तोऽपि निरीकितोऽपि, नूनं न चेतति मया विधृतोऽसि ज्ञक्त्या ॥  
 जातोऽस्मि तेन जनवाधवद्दु खपात्रं, यस्मात्क्रिया प्रतिफलंति न  
 ज्ञावशून्या ॥ ३८ ॥ त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारु  
 ण्यपुण्यवसते वशिना वरेण्य ॥ ज्ञक्त्या नते मयि महेश दयां विधाय,  
 दुःखाकुरोद्दलनतत्परता विवेहि ॥ ३९ ॥ नि संख्यसारशरणं श  
 रण्य, मासाद्य सादितरिपुप्रथितावदातम् ॥ न्वत्पादपंकजमपि प्र  
 णिधानबंध्यो, वध्योऽस्मि चेज्जुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥  
 देवैर्द्वंध्य विदिताखिलवस्तुसार, सतारतारक विज्ञो जुवनाधिनाथे  
 ॥ त्रायस्व देव मा पुनीहि, सीदंतमद्य ज्ञयद्व्यसनाबु  
 राशोः ॥ ४१ ॥ ॥ अथ ज्ञवद्विहिसरोरुहाणा, ज्ञक्ते फल कि

मपि संततिसंवितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्यं नूयां,  
 स्वामी त्वमेव नृवनेऽत्र नृवांतरेऽपि ॥ ४२ ॥ इच्छ समाहिताधयो  
 विधिविज्ञिनेऽ, साज्ञेऽसत्पुलककचुकितागजागा ॥ त्वद्विवनिर्मल  
 मुखानुजवद्वलदृया, ये सस्तवं तव विज्ञो रचयंति नृव्याः ॥४३॥  
 जननयन कुमुदचक्षुः, प्रजास्वराः स्वर्गसपदो नृक्त्वा ॥ ते विग  
 लितमलनिधया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यते ॥ ४४ ॥ इति श्रीक  
 ष्याणमदिरस्तोत्र ॥

॥ अथ रुपिमंडल स्तोत्रं लिख्यते ॥

॥ आद्यताक्षरसलक्ष्यं, मकर व्याप्य यत् स्थितं ॥ अग्निज्वा  
 लासम नाद, विदुरेखासमन्वित ॥ १ ॥ अग्निज्वालासमाक्रात, म  
 नोमलविसौधक ॥ देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमि निर्मलं ॥२॥  
 अर्द्धमित्यकरं ब्रह्म, वाचक परमेष्ठिन ॥ सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, स  
 र्वत प्रणिदध्महे ॥ ३ ॥ ॐ नमोर्द्धदृश्य ईशेऽन्य, ॐ सिद्धेऽन्यो न  
 मोनमः ॥ ॐ नमः सर्वसूरिऽन्य, उपाध्यायेऽन्य ॐ नमः ॥४॥ ॐ नमः  
 सर्वसाधूऽन्य ॥ ॐ ज्ञानेऽन्यो नमोनम ॥ ॐ नमः त्वदृष्टिऽन्य' । चा  
 रित्रेऽन्यो नमोनम ॥५॥ श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेत, दर्ददाद्यष्टक शुभ्र ॥  
 स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग् बीजसमन्वित ॥६॥ आद्य पदं शिखा  
 रक्षे, त्परं रक्षेत्तु मस्तक ॥ तृतीय रक्षेत्त्रेदे, तुर्थ रक्षेत्त्र नासिका  
 ॥ ७ ॥ पचम तु मुख रक्षेत्, षष्ठं रक्षेत्त्र घटिका ॥ नाच्यंतं सप्त  
 मं रक्षे, षष्ठेत्पादातमष्टमं ॥ ८ ॥ पूर्वप्रणवत सात, सरेफोद्यद्वि  
 पंचपान् ॥ सप्ताष्टदशसर्थाकान्, श्रितोविडुस्वरान् पृथक् ॥ ९ ॥  
 पूज्यनामाकरा आद्या, पचातोऽज्ञानदर्शन ॥ चारित्रेऽन्यो नमो मध्ये  
 ॥ ह्रीं सातहसमलरुत ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रू ह्रूं ह्रै ह्रौ  
 ह्रू असियाजसा ज्ञानदर्शनचारित्रेऽन्यो नमः । जवुवृक्षधरो दीपः,  
 कारोदधिसमावृत ॥ अर्द्धदाद्यष्टकैरष्ट, काष्ठाधिष्ठैरलंरुत ॥११॥

तन्मध्यसंगतो मेरुः कूटलक्षैरलकृतः ॥ उच्चैरुच्चैस्तरस्तार, स्तारा-  
 मंजलमंजितः ॥ १२ ॥ तस्योपरि सकारातं, बीज मध्यास्य सर्वगं ॥  
 नमामि विद्यमार्दित्य, ललाटस्यं निरंजनं ॥ १३ ॥ अक्षय निर्मलं  
 शातं, बहुलं जाड्यतोद्धित ॥ निरीद निरदंकारं, सारं सारतर  
 घन ॥ १४ ॥ अनुष्ठतं शुभ्रं स्फीत सात्विकं राजसमतं ॥ तामसं-  
 चिरसंबुद्धं, तैजस शर्वरीममं ॥ १५ ॥ साकारं च निराकारं, सरस  
 विरस परं ॥ परापरपरातीतं, परपरपरापरं ॥ १६ ॥ एकवर्णं त्रिवर्णं च,  
 त्रिवर्णं तूर्यवर्णक ॥ पञ्चवर्णं महावर्णं, सपरं च परापरं ॥ १७ ॥  
 सकल निष्कलं तुष्ट, निर्वृतं प्रातिवर्जितं ॥ निरंजनं निराकारं, निर्लेपं  
 दीप्तसंश्रयं ॥ १८ ॥ ईश्वर ब्रह्मसंबुद्ध, बुद्ध सिद्ध मतं गुरु ॥  
 ज्योतिरूप महादेवं, लोकालोकप्रकाशकं ॥ १९ ॥ अर्द्धदारुप्यस्तु-  
 वर्णात्, सरेफो विद्धमंजितः ॥ तुर्यस्वरसमायुक्तो, बहुधा नाद-  
 मालितः ॥ २० ॥ अस्मिन् धीजे स्थिताः सर्वे, वृषज्ञाद्या जिनो-  
 त्तमा ॥ वर्णैर्निजैर्निजैर्युक्ताः, ध्यातव्यास्तत्र सगताः ॥ २१ ॥  
 नादश्रंसमाकारो, विद्धतीलसमप्रज्ञ ॥ कलारुणसमासात्, स्वर्णाग्निः  
 सर्वतो मुखः ॥ २२ ॥ शिरसंलीनईकारो, विनीलोवर्णतः स्मृत ॥  
 वर्णानुसारसलीनं, तार्थरुन्मंजलं स्तुमः ॥ २३ ॥ चंद्रप्रज्ञपुष्पदंतो,  
 नादस्थितिसमाश्रितौ ॥ विद्धमध्यगतो नमि, सुव्रतो जिनसत्तमौ  
 ॥ २४ ॥ पद्मप्रज्ञवासुपुज्यो, कलापदमशिष्टितौ ॥ सिरिई स्थिति-  
 सलीनौ, पार्श्वमद्धीजिनेश्वरो ॥ २५ ॥ शेषास्तीर्थरुतः सर्व, हर-  
 स्थाने नियोजिताः ॥ मायावीजाकर प्राप्ता, श्रुतुर्विशतिरर्द्धता ॥ २६ ॥  
 गतरागद्वेषमोहाः, सर्वपापविधर्जिता ॥ सर्वदा सर्वकालेन, ते ज्ञवंतु  
 जिनोत्तमाः ॥ २७ ॥ देवदेवस्य यच्चक्र, तस्य चक्रस्य वा विज्ञा ॥  
 तथाद्यादितसर्वाङ्ग, मामाहिनस्तगकिनी ॥ २८ ॥ देवदेवस्य य०  
 मामाहिनस्तुराकिनी ॥ २९ ॥ देवदे० मामाहिनस्तुलाकिनी ॥ ३० ॥



देव० मामाहिनस्तुकाकनी ॥ ३१ ॥ देवदेवस्य० मामाहिनस्तु-  
 शाकिनी ॥ ३२ ॥ देवदे० मामाहिनस्तुहाकिनी ॥ ३३ ॥ देव०  
 मामाहिनस्तुयाकिनी ॥ ३४ ॥ देवदे० मामाहिसंतुपसगा ॥ ३५ ॥  
 देवदे० मामाहिनस्तुर्हास्तनः ॥ ३६ ॥ देवदे० मामाहिसतुराकसा  
 ॥ ३७ ॥ देवदे० मामाहिसतुवह्वय ॥ ३८ ॥ देवदे० मामाहिसं-  
 तुसिंहकाः ॥ ३९ ॥ देवदे० मामाहिसंतुजुर्जना ॥ ४० ॥ देवदे०  
 मामाहिसंतुजूमिपा ॥ ४१ ॥ श्रीगौतमस्य या मुञ्जा, तस्या या  
 ज्जुविलब्धय ॥ तान्तिरच्युद्यतज्योति, रहं सर्वनिधीश्वर ॥ ४२ ॥  
 पातालवासिनो देवा, देवाजूर्पा, ग्वासिन ॥ स्वर्वासिनोपि ये देवा, सर्वे  
 रक्तु मामित ॥ ४३ ॥ यऽविलब्धयो ये तु, परमावधिलब्धय ॥  
 ते सर्वे मुनयो देवा, मा संरक्तु सर्वदा ॥ ४४ ॥ जुर्जनाञ्जुत-  
 वेत्ताला, पिशाचामुद्गलास्तथा ॥ ते सर्वेप्युपसाम्यतु, देवदेवप्रजा-  
 वतः ॥ ४५ ॥ उँही श्रीश्च घृतिर्लक्ष्मी, गौरी चनी सरस्वती,  
 जयावाविजया नित्या क्लिन्नाजितामदङ्वा ॥ ४६ ॥ कामागा काम-  
 वाणा च, सानंदानदमालिनी ॥ माया मायाविनी रौंडी, कला  
 काली कलिप्रिया ॥ ४७ ॥ एता सर्वा महादेव्यो, वक्षते या जग-  
 त्रये ॥ मह्य सर्वा प्रयच्छतु, कार्तिं कीर्तिं घृतिं मतिं ॥ ४८ ॥ दिव्यो  
 गोप्य सुदुः प्राप्य, श्रीरुपिमंरुलस्तव ॥ ज्ञापितस्तीर्थ, जगत्-  
 त्राणरुतेनघ ॥ ४९ ॥ रणे राजकुले वन्दौ, जले दुर्गे गजे हरौ  
 ॥ श्मशाने विपिने घेरे, स्मृतो रक्षति मानवं ॥ ५० ॥ राज्यघ्न-  
 टा निज राज्यं, पदघ्नटानिजं पदं ॥ लक्ष्मीघ्नटा निजां लक्ष्मीं,  
 प्राप्नुवंति न सशय ॥ ५१ ॥ ज्ञार्यार्थी लज्जते ज्ञार्यी, पुत्रार्थी लज्जते  
 सुनं ॥ वित्तार्थी लज्जते वित्तं, नर-स्मरणमात्रतः ॥ ५२ ॥ स्वर्णे  
 रूपे पटे कास्ये, लिखित्वा यस्तु पूजयेत् ॥ तस्यैवाष्टमहासिद्धि,  
 शृद्दे वसति शाश्वती ॥ ५३ ॥ नूर्यपत्रे लिखित्वेदं, गलके मुग्धि वा

ज्ञुजं ॥ धारितं सर्वदा दिव्य, सर्वजीतिविनाशकं ॥५४॥ ज्ञूतैः प्रे  
 तैर्ग्रहैर्वकै, पिशाचैर्मुञ्जैर्मले ॥ वातपित्तकफोद्देहे, मुञ्च्यते नात्र  
 सशय ॥ ५५ ॥ जूर्जुवः स्वस्त्रयीपीठ, वर्त्तिनः शाश्वता जिनाः ॥  
 तैःस्तुतैर्वदितैर्दृष्टै, र्यत्फलं तत्फलं श्रुतौ ॥ ५६ ॥ एतत् गोप्पं महा  
 स्तोत्रं, न देयं यस्य कस्यचित्, मिथ्यात्ववासिनेदत्ते, बालहत्या  
 पदे पदे ॥ ५७ ॥ आचाम्नादितपकृत्वा, पूजयित्वा जिनावर्त्ती ॥  
 अष्टसाहस्रिको जाप, कार्यस्तत्सिद्धिहेतवे ॥ ५८ ॥ शतमष्टोत्तरं  
 प्रात, र्यं पठन्ति दिने दिने ॥ तेषां न व्याधयो देहे, प्रज्वन्ति न चापद ॥  
 ५९ ॥ अष्टमासावधि यावत्, प्रात प्रातस्तु य पठेत् ॥ स्तोत्रमे  
 तन्महातेजो, जिनविंशं स पश्यति ॥ ६० ॥ दृष्टे सत्पार्श्वे विवे,  
 ज्ञवे सप्तमेके ध्रुव ॥ पदं प्राप्नोति शुद्धात्मा, परमानन्दनंदित ॥  
 ६१ ॥ विश्वबंधो ज्ञवेध्याता, कळ्याणानि च सोश्रुते ॥ गत्वा  
 स्थान परं सोपि, ज्ञूयस्तु न निवर्त्तते ॥ ६२ ॥ इदं स्तोत्रं महा  
 स्तोत्रं, स्तुतीनामुत्तम पर ॥ पठनात्स्मरणाङ्गापात्, लज्जते पदमु-  
 च्तम ॥ ६३ ॥ इति रुपि मन्त्र स्तोत्रं ॥ केपकश्लोकनिराकृत्य  
 मूलयत्रकळ्यानुसारेण लिखित गणि । श्रेष्ठमाकळ्याणोपाध्यायै  
 तदानुसारेण मयापि लिखितं ॥

॥ अथलघुजिनसहस्रनामलिख्यते ॥

नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥ वक्त्रे तस्यैव ना  
 मानि । मौक्तिसौक्ताज्जिवापया ॥ १ ॥ निर्मलः साश्वतोशुभः । निर्वि  
 कल्पो निरामय ॥ निःशरीरी निरातंकः । सिद्धसूक्तमो निरंजनः ॥  
 २ ॥ निष्कलंकोनिरालंबो । निर्मोहो निर्मलोत्तम ॥ निर्जयो निरहं  
 कारो । निर्विकारोऽथ ॥ निर्दोषो निरुजः शान्तः । नि  
 ज्ञयो निर्ममः शिवः । ॥ निष्कर्मो  
 ज्ञुः ॥ ४ ॥ निर्वादो । निरघो जिनः ॥

प्रतिमश्लेष, । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥५॥ निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो ।  
 नैष्टक शब्दवर्जितः ॥ अनिद्यो मन्मथतात्मा । जगत् शिखरशिखरः ॥६॥  
 नि शब्दो गुणसपन्ना । पापतापप्रणाशनः ॥ सोऽपि योगात् शुचि  
 प्राप्तः । कर्मद्योतिवलावहः ॥ ७ ॥ अजरो अमरः सिद्धः । अर्चितः अ  
 कृतो विष्णुः ॥ अमुर्त्त अच्युतो ब्रह्म, विष्णुरीश प्रजापतिः ॥ ८ ॥  
 अनिद्यो विश्वनाथश्च, अजो अनुपमो जवः ॥ अप्रमेयो जगन्नाथ,  
 बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अव्ययसकलाराध्यो, निष्पन्नो ज्ञान  
 लोचनः ॥ अठेद्यो निर्मलो नित्यः । सर्वशल्यविवर्जितः ॥ १० ॥  
 अजेयसर्वतो जद् । निष्कपायो जवातरुः ॥ विश्वनाथः स्वयंबुद्धः ॥  
 वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥ प्रतको सहजानन्दः । अवाङ्मानस  
 गोचरः ॥ असाध्यशुद्धचैतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनत  
 विमलज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशकः ॥ कर्मवर्जितो महात्मानः ।  
 लोकत्रयशिरोमणिः ॥ १३ ॥ अव्यावायो वर शंभुः । विश्ववेदी  
 पितामहः ॥ सर्वज्ञतद्धितो देवः । सर्वलोकसरण्यकः ॥ १४ ॥ आनं  
 दरूपचैतन्यो । जगवास्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनतानतवीशक्तिः । सत्यव्य  
 क्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अष्टकर्मविनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जितः ॥  
 गौरवादित्रयाहूरः । सर्वज्ञानादि रूयुतः ॥ १६ ॥ अजयः प्राप्तकैव  
 ल्यः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलः केवलज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्र  
 दायकः ॥ १७ ॥ अनामयो महाराध्यो । वरदो ज्ञानपावकः ॥ स  
 र्वेशः सतसुखावासः । जिनेशो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्नूनपरम  
 ज्ञानी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धोजगवास्त्राय । प्रस्तुतः पुन्य  
 कारकः ॥ १९ ॥ शकरः सुगतो रौद्रः । सर्वज्ञो मदनातकः ॥ ईश्वरो  
 ज्ञानाधीशः । सच्चित्तः पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानः ।  
 विमुक्तो मुक्तिवद्वज्रः ॥ योगीशो नादिसिद्धः । निरोद्धो ज्ञानगोच  
 रः ॥ २१ ॥ सदाशिवा चतुर्वक्त्रः । सत्सौरैयस्त्रिपुगतकः ॥ त्रिनेत्र

त्रिजगत्पूज्यः । कल्याणकोटमूर्तिकः ॥ १७ ॥ सर्वतापुजनैर्बन्ध ।  
 सर्वपापनिवारित ॥ सर्वदेवाधिकोदेव । सर्वज्ञूतहितंकर ॥ १३ ॥  
 स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः पापनाशनः ॥ तनुमात्रचिदानंद ।  
 चैतन्यश्चैत्यवैज्जव ॥ २४ ॥ सकलातिशयो देव । मुक्तिस्थो मह  
 तामह ॥ मुक्तिकार्याय संतुष्टो । निराग परमेश्वर ॥ २५ ॥ महा  
 देवो महावीरो । महामोहविनाशक ॥ महाज्ञावो महादर्शः । म  
 हामुक्तिप्रदायक ॥ २६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो महा  
 त्मकः ॥ महर्द्धिको महावीर्यो । महातिरुपदस्थितः ॥ २७ ॥ महा  
 पूज्यो महाबंधो । महाविघ्नविनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंसो ।  
 महामहिम अच्युत ॥ २८ ॥ मुक्तामुक्तिजस बोध । एकानेकवि  
 निश्र्वलः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानक ॥ २९ ॥ महासूरो  
 महाधीरो । महाउखविनाशकः ॥ महामुक्तिप्रदो धीरो । महाह  
 द्यो महागुरु ॥ ३० ॥ निर्मारो मारविहंतो । निष्कामो विषयाच्यु  
 त ॥ जगवंतामहाघ्रातो । शातिकल्याणकारक ॥ ३१ ॥ परमात्मा  
 परज्योति । परमेष्ठी परमेश्वर ॥ परमात्मा पगानद । परंपरमश्रा  
 त्मक ॥ ३२ ॥ प्रस्तुतानंतविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ ना  
 कृतिं नाहरो वर्षी । व्योमरूपो जितात्मरु ॥ ३३ ॥ व्यक्ताव्यक्त  
 जसबोध । ससारवेदकारण ॥ निरवद्यो महाराध्य । कर्मजित्  
 धर्मनायक ॥ ३४ ॥ बोधसत्सु जगद्द्वयो । विश्वात्मा नरकांतक ॥  
 स्वयंज्ञूपापहृत्पूज्य । पुनीतो विज्जव स्तुत ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो  
 महातातः । रूपातीतो निरंजन ॥ अनतज्ञानसंपर्णो । देवदेवेश  
 नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्यो ज्वविध्वसी । योगिनी ज्ञानगोचर ॥  
 जन्ममृत्युजरातीत । सर्वविघ्नहरो हरः ॥ ३७ ॥ विश्वदृक् ज्वसं  
 बंध । पवित्रो गुणसागर ॥ प्रसन्नः परमाराध्य ॥ लोकालोकप्र  
 काशरु ॥ ३८ ॥ रत्नगर्जो जगत्स्वामी । इड्वंधः सुरचित ॥ नि

प्रपचो निरातङ्गो ॥ नि.शेरकेशनाशक. ॥ ३९ ॥ लोकेशो लोके  
संसेव्यो । लोकालोकविलोकन. ॥ लोकोत्तमो त्रिलोकेशो । लोकाग्र  
शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्टकसदस्याणि । ये पठन्ति पुन पुन ॥  
ते निर्वाणपदं यान्ति । मुच्यन्ते नात्र संशयः ॥ ४१ ॥ इति श्रीज  
ज्ञादुस्वामिना विरचित लघुजिनसदस्यनाम संपूर्ण ॥

॥ अयमहिम्नस्तोत्रलिख्यते ॥

॥महिम्न पारम्ये परमविभुपस्ते जिनपरं । गणागीर्वाणानाम  
पि गुणगुरौरैर्गतुमनलम् ॥ नलम्न लम्न त्वाधिपमिहनयैस्सर्वकलनं  
। नुवन्निः प्रापीनाप्रतिहतगतिर्वागमृतजित् ॥ १ ॥ जगत्रात. स्तोतुं  
किल निरवकाशोप्यहमिहो । द्यतप्रज्ञो यत्किंचिदचिदनघोश्चावच  
वच । शृणीया सह्य तत्तनुञ्चुव इवेष्टार्थप्रतिज्ञूपदोपास्ते पार्श्वान्न  
यजनयित्र्याशिवमम ॥ २ ॥ त्वकाशामसूनापुतनिघनमूनोयवसु  
ना । सुनामन्नोडुनो स्मरमहमनूनोदयरमम् ॥ अजातानोज्ञानो ज्ञु  
वनन्नवने नो वृषन्नर । व्यधामोहोदेनोरयमधनतेनोत्कटविपत् ॥३॥  
सुबोधं देया मे घनघनघटामेचकतनु । जङ्गन्न्यारामेमरकुरुह्वामे  
यजिनपा ॥ इतोम्राकग्रामे शितरत्तमकामेपुविजयो । त्वमर्काली  
ज्ञामे डुरमदजघामे तनमते ॥ ४ ॥ अपारे कूपारे चितरत्तमपारे  
जुवनया । असारे संसारे गदशतविसारे वसमहम् ॥ ध्रुतारेकेतारे  
क्वसि सततारे कितमति । स्तवारे छिद्वाारे ज्वदहनवारे कुरुरूपां  
॥ ५ ॥ निपीय व्याहारानरममृतधारासुमधुरा । न्तमादेयान्तारान  
हिमिधुनमाराव्ययविज्ञो ॥ ज्वलन्नस्योदारान्विषधरकुमाराधिपतिता  
। मनुक्रोशागारावतुजिनमहाराजसन्नवान् ॥ ६ ॥ दिशश्रीमान्दे  
वब्रजविहितसेव कुशलता, जताजातेदेव प्रशमिवरेदेवत्वमंतमा ॥  
तमालान्नोमेवः परिकरिहरेवत्सलसदा, सदानदकेवल्यचलपदमेवस्तु  
तिरुते ॥ ७ ॥ कजन्माकृकायकिरवगणहंकीर्तिधवलं, कुबेरेज्यं



श्ताः ॥ १७ ॥ अनन्तेतोदोपान्तकञ्जप्रकाशोपतमसं हरद्वौकंकुर्ध  
 न्नमलकमलोद्वासमयकम् प्रबोधव्यातन्वनिततकरत पंरुदलनो ज  
 गच्चदु पार्श्वोदिशतुकुशलमेसमयज्ञः ॥ १८ ॥ नितान्तसन्तापं  
 मतनुमताद्यन्नमृतगु कलाञ्जि संपूर्ण कुवलयकलानन्दजनकः प्रदो  
 येनोरम्यः समुपचितरत्नाकरऽडा वताद्दामापुत्रः सपदिविपवस्तार  
 कपति १ ए स्फुरंत्यासिडुर निजतनुरुवाचारुप्रकृति मेहीजन्मातह्वा  
 त्ययप्रज्ञतिडु खाग्निजलदः वृधोबोधस्फीतिदददविरतराजतनयो वृ  
 यातीतोलोकेतनुजवनमाप्रे तिवलवान् ॥ २० ॥ घरादित्येशान शु  
 ज्जुरुविज्ञांगोरकरण सदापायाघैमासुरगुरुरपायाङ्गिनपति स्थिर  
 स्फारश्लोकस्तुतिसमुचितोज्ञानुतनय स्तमोविग्रध्वंसीनकुशलकेर  
 केतुरसित ॥ २१ ॥ सुरज्येष्ठोऽथेज्यस्त्रिदसविसरेज्योवरतया सि  
 लोकेशोनूनत्रिजगदवनात्वकमलज्ञः सुयोगीन्दस्वान्तामलकमलज  
 न्माधिवसना चतुर्ध्वज्याश्रेयोजिनपचतुरास्यास्युपदिशन् ॥ २२ ॥  
 प्रतीतोदेत्यारिशठकमठमानप्रदलनात्परार्धश्रीयोगात्कमलनिलरेसो  
 सिजगवन् ननाकश्चिश्वातिशयज्जरवित्तस्त्रिजुवने जवाहृकोगीतः  
 परमपुरुषोतोहरिद्वै ॥ २३ ॥ महेशानोसित्वंत्रिजुवनजनैकाधि  
 पतया शिव शश्वन्तृणापरमपददानैकसुविधेः असित्वंसर्वज्ञ सकल  
 जगदश्रौषकलना न्नशूलीनोचोश्रेनचपशुपतिर्नोविपमहृक् ॥ २४ ॥  
 अवाप्त श्रेय श्रीप्रवितरणलोलाविदलिता दित्तेयाअक्रोणीरुदमहि  
 मतारोतिशयवान् विमुक्तस्त्रीसन्न रुतकुमतज्ज सुमनसा हिताया  
 शेपाणांसुरुतपदवीत्वकरुथयन् ॥ २५ ॥ जिनेंदाहेरात्रवदु विपदम  
 न्नधृतमरं कलत्रयेनात्रकसहरिहरादि सुरगण सङ्घर्षानाकष्यामित  
 चरितताधूर्त्तनिवह प्रतारीसदोप मित्तसततरोप स्थितिदत् ॥ २६ ॥  
 समग्रामग्रामप्रज्वन्नयदो बोधरहित सरुग्जव्यद्वेषीपुरुडुरितरुत्मा  
 नकवित पुरानोद्धान्नुवधिरमिदसगहीनमहित सदेवोप्राचट्यरुथ

मपिसमासादिमयकाः ॥ २७ ॥ प्रज्ञोकिंवामेतेरन्निमतविधानैलसतरे  
 रपासोपास्यस्तंखलुजिनवरेण्योनवरतम् मनोविस्मैत्वत्यद्वनजयुगले  
 सप्रतिवसन् परामेतिप्रीतिंप्रणयकरुणामिष्टसुदृशा ॥ २८ ॥ अद्वन्द्वं  
 चांसिन् ऽविणञ्जरमङ्गीसदृश विहायेनाप्रतन्धरसिक्विलरत्नत्रयमहो  
 दधत्सौवर्णानामुपरिखलिनानाक्रमयुगं पुनर्त्रिलोञ्जानाधुरिसुमतिमद्भि  
 स्त्वमुदित ॥ २९ ॥ लसन्ति सीमश्री परिकलितमग्न्यंसुवरेण त्रयी  
 मध्यं मेघोदधिधरणवास्तोप्यतिनुतः सनादध्यासीनाखिलनृपतिल  
 रुमांणिदधत कुनस्तैर्नैराग्यंशिवयुवतिसंगोत्कमनसः ॥ ३० ॥ चलं  
 प्राज्यराज्यंविदितविज्ञवापारयलपतो महानंदानन्तामहदधिपतेनश्व  
 रतरम् कृतेनिर्गम्यत्वप्रशमरसवादेस्त्वसुमतामहच्चित्रंचित्तेजनयतित  
 वेदतुचरित ॥ ३१ ॥ निकामाश्रौत्सृष्ट्या ततवनददृपूयातिशयित जगद्वा  
 रिद्याग्नि स्मकिलजिनविध्यापयसिय त्रिशुद्धयाध्यायन्तस्तवचरणयु  
 ग्म सुष्ठादया नतर्पं स्वेष्टासैमुरशिखरिणीशानदयते ॥ ३२ ॥ जग  
 त्येकाधाराहितनरककारानिलयतः समुद्धर्तुजतून्परिवृढसमंतून्पिकि  
 ल तवत्रातर्कान्माजनिजननमुख्याकगणहत् जवेवेशरतार्थोपिचनिरु  
 पमानन्दरसिकः ॥ ३३ ॥ अहीशस्तेशस्तक्रमणवरिवस्यस्यसुमना  
 मनादयस्येद्रक्तोयदि ऽदनुगंमद्यसनित नितम्बिन्यान्वीतः सपदिकुरु  
 तेतस्वपसम समाङ्गल्यंवाथप्रज्जवतिनक स्वामिकृपया ॥ ३४ ॥ प्र  
 लापायाञ्चुद्धास्तवगुणगणाञ्जान्तिविशदा स्त्रिलोकीञ्जुजानेसुरपयमणे  
 ज्ञानवञ्च रसज्ञानाकोट्याप्यमलधिपणोनव्यधिपणो नतानीष्टेसख्या  
 तुमदरपरार्थतुसरदा ॥ ३५ ॥ नमस्तुञ्चससृत्यतनुतटिनीतारणतरे  
 नमस्तुञ्च्यंजीमामयसमददन्तावलहरे नमस्तुञ्च्यसूक्तातिमधुरिमदासी  
 कृतसुधा समुद्रायामुञ्च्युदवसिततुञ्च्यंजिननम ॥ ३६ ॥ पादेयाद्  
 महिमालपायसुमनः सन्दोहशुश्रूषिता ह्रिद्वन्द्वायकलिच्छिदेज्जगवते  
 ज्ञव्यावलीहेतवे लोकेशेपुरुषोत्तमायमदनामित्रायविश्वत्रयी मित्राय



क्षणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुञ्जयनमः ॥ ३७ ॥ सार्द्धलविक्रीमितं  
 वन्द ॥ पवनाशनतारकवक्त्रमा न्नरनिर्कृततारकराजगणः कृतल  
 क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारब्धे ॥ ३८ ॥ तोटकवन्द ॥  
 न्नवदमलपदाम्भोजन्मसलन्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलि प्रार्थये  
 हम् वितरविततवोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुपरम्यत्वामघिन्त्य  
 स्वरूपम् ॥ ३९ ॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिद्धपा  
 दप्रसादसन्नुपरधुनाथदासम् माशुद्धशासनसहायकपार्श्वयक्ष पद्मावती  
 प्रणुतससृत्तितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भवसततिलका  
 वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रज्ञुस्तव ॥ अहाग्येपुस्तम्बेरमशशिमितेहायन  
 यरे नन्नोमासरुष्णेगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरधु  
 नाथाहामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदन्नरत ॥ १ ॥  
 इतिश्री पार्श्वप्रज्ञोमहिम्नस्तोत्र सपूर्णमगात् ॥

## ॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवदन ॥

॥ सिद्धो विज्ञाऽ चक्री नमि विनमि ॥ मुणी पुंमरीठ मु  
 निदो । वाकी पङ्कुन्न सवो न्नरहसग मुणी सेलगो पथगोय ॥ रामो  
 कोमी पच इविड नरवई नारदो पद्मुपुत्ता । मुत्ता एवं अणेगे विम  
 लगिरिमद् तिष्ठमेय नमामि ॥ १ ॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥ सिवा ॥

॥ अथ श्रीवभणापार्श्वनाथ चैत्यवदन ॥

॥ श्रीसेटी तट मेरु धाम, अन्नणपुर ठाम ॥ सुरतरु सम  
 सिरि पास साम, राजे अन्निराम ॥ १ ॥ विबुधेतर सिरि  
 देव सठवियाणं दिय धुइ जलसिरिय नील वण  
 न्दिय ॥ २ ॥ सुर नर सुह कुसुमावलीए, ... ॥  
 आराहन्न जदि एग मण, पावो पद

॥ अथ श्रीसीमंधर स्तुति ॥

॥ बंदू जिनवर विहरमाण, सीमंधर सामी ॥ केवल कमला  
कात दात, करुणारस धामी ॥ १ ॥ काचनगिरि सम देह, काति  
वृष लाघन पाय ॥ चौरासी लख पूर्व आय, सेवे सुरराय ॥ २ ॥  
पूर्व विदेह विराजता ए, पुरुरीकनी ज्ञाण ॥ प्रचु द्यो दरसन सं  
पदा, कारण पद कळ्याण ॥ ३ ॥ इति श्रीसीमंधर जिन स्तुति ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तुति ॥

॥ पूरुष दीप्ते दीपतो । गिरवो गिरवर निन्न । तीरथ सिख  
र समेतको । चाहुं दरसन चित्त ॥ १ ॥ प्रथम चरम वारम प्रचु ।  
वावीसम विण वीम ॥ अणसण कर इण गिरवरे । शिव पुहता सु  
जगीस ॥ २ ॥ सुणिये इणपर सूत्रमें । जिनवर गणधर वाण ॥  
जविजन जेटो जगतसुं । तीरथ करण कळ्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ पद्मनाभजिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम महेसर पदमनाज्ज । समरुं सुखकारी ॥ ज्ञावी  
जिनवर जरहखित्त । मंरुण मणिधारी ॥ १ ॥ लावन वर्ण सुदेह  
मान । धिति आयु प्रमाण ॥ परमेसर तिरि वर्धमान । जिनराज  
समाण ॥ २ ॥ उत्तम अमृत धर्मनो ए । विरह निवारक जाण ॥  
ज्ञावी जिनवर जेटिये । कारण पद कळ्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ सरस्वति स्तुति ॥

॥ अवाभा वामाठे सकलमुन्नयः कालघटना । द्विधा जूतं  
रूपं जगदज्ञिधेयं जवतिय ॥ तदंतर्मत्र मे स्मरहरमयं सेंडुमलं  
निराकारं शस्वज्जप नरपते सिव्यतु सते ॥१॥ ५.७२

स्वती हरतु मे इति सरस्वती स्तुति

क्षणदोदयायसततंश्रीपार्श्वतुन्यनम ॥ ३७ ॥ सार्दूलविक्रीणितं  
ठन्दः ॥ पवनाशनतारकवक्त्रमा न्नरनिर्जिततारकराजगणः कृतल  
क्षणतारकनेत्रयुगो जिनमामवतारकलारघदे ॥ ३८ ॥ तोटकठन्द ॥  
ज्वदमलपदाम्त्रोजन्मसंलग्नचेतो मधुतिमितिजिनेन्द्राप्राञ्जलि प्रार्थये  
हम् वित्तरविततवोधयेनपश्यामिसाक्षा त्परमपुरुपरम्यंत्वामचिन्त्य  
स्वरूपम् ॥ ३९ ॥ मालनीवृत्तम् ॥ श्रीसिद्धपूरितमहामुनिराजसिंहपा  
दप्रसादसन्नृपरधुनाश्रदासम् माशुद्धशासनसहायकपार्श्वयद् पद्मावती  
प्रणुतसंसृतितोवपार्श्व ॥ ४० ॥ स्तोत्रकृद्गुरुनामगर्भवसंततिलका  
वृत्तम् ॥ इति पार्श्वप्रज्ञुस्तव ॥ अहाय्येपुस्तम्बेरमशशिमितेहायन  
यरे नज्जोमासकृष्णगजमुखतिथौजीवदिवसे सुनामस्थानीयेसपदिरघु  
नाथाहामुनिना स्तवोवामासूनोरचितलिखितोमोदजरत ॥ १ ॥  
इतिश्री पार्श्वप्रज्ञोमहिम्नस्तोत्र संपूर्णमात् ॥

॥ अथ चैत्यवंदनस्तुति लिख्यते ॥

॥ अथ सिद्धाचल चैत्यवदन ॥

॥ सिद्धो विज्ञाश् चक्री नमि विनमि ॥ मुणी पुंनरीत्त  
निदो । वाली पञ्चुन्न सवो ज्जरहसग मुणी सेलगो पथगोय ॥ रा  
कोनी पच इविड नरवई नारदो पदुपुत्ता । मुत्ता एव अणोणे  
लगिरिमहं तिष्ठमेयं नमामि ॥१॥ इति सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ चैत्यवदन ॥

॥ श्रीसेटी तट

॥ ह

सिरि पास साम, राजे

सिरि अन्न

देव संठवियाण दिव

पल्लव म

निय ॥ ३ नर

जाण ॥

आराहत्त



पूर सवि माहरा ॥ १३ ॥ पुष जवि मोह वश नेह हुवे जेहने,  
 समरिये एणि ससार नित तेहने ॥ मेहने मोर जिम कमल जम  
 रो रमे, तेम अरिहत तू चित्त मेरे गमे ॥ १४ ॥ खरु अरिहतनुं  
 ध्यान हियने वस्यु, बापहुं पाप हिव रहिय करशे किस्थु ॥ गाम  
 जिम गरुडवर पंखि आवे वही, ततखिण सर्पनी जाति न शके  
 रही ॥ १५ ॥ पाप में कळ सावळ सहु परिहरी, सामि सीमंधरा  
 तुम्ह पय अणुसरी ॥ शुद्ध चारित्र कहिये प्रभु पालशु, ड ख जं  
 नारससार जय टालशु ॥ १६ ॥ तुम्ह हु दास हुं तुम्ह सेवक सही,  
 एह में वात अरिहत आगल कहो ॥ एवनी मारी जगति जाणी  
 करी, आपजो बापजी सारकेवल सही ॥ १७ ॥ कलशा ॥ एम ऊद्विवृद्धि  
 समृद्धि कारण, डुरित वारण, सुख करो ॥ उवजाय वर श्री, जक्ति  
 लाजे, शुणयो श्री, सीमधरो ॥ जय जयो जगगुरु, जीव जीवन, करी  
 सामि, मया घणी ॥ कर जोमि वलि वलि, वीनबु प्रभु, पूर आ  
 शा, मन तणी ॥ १८ ॥ इति श्रीसीमधरजीनी स्तुति सपूर्णा ॥

॥ अथ पजमी वृद्ध स्तवन प्रारभ ॥

॥ प्रणमं श्रीगुरु पाय, निर्मल न्यान उपाय ॥ पाचसि तप  
 जणु ए, जन्म सफल गिणु ए ॥ १ ॥ चत्रवीसमो जिनचद, केवल  
 न्यान दिणद ॥ त्रिगणे गहगह्यो ए, जवियणने कह्यो ए ॥ २ ॥  
 न्यान वडू ससार, न्यान सुगति दातार ॥ न्यान दीवो कह्यो ए,  
 साचो सर्वह्यो ए ॥ ३ ॥ नयन लोचन सुमिलास, लोकालोरु प्र  
 काश ॥ न्यान विना पशु ए, नर जाणे किश्यु ए ॥ ४ ॥ अधिक  
 आराधक जाण, जगवती सूत्र प्रमाण ॥ न्यानी सर्वतु, ए, किरिया  
 देशतु ए ॥ न्यानी श्वातोद्धास, करम करे जे नास ॥ नारकीने सही  
 ए, कोरु वरस कही ए ॥ ६ ॥ न्यान तणो अधिकार, बोड्या

सूत्र मञ्जर ॥ किरिया ठे सदी ए, पण पाठे कदी ए ॥ ७ ॥  
 किरिया सहित जो न्यान, हुवे तो अति परधान ॥ सोनो ने सूरु  
 ए, शंख दूर्धे जरयो ए ॥ ८ ॥ महानिशीथ मञ्जर, पांचमि अक्षर  
 सार ॥ जगवंत ज्ञाखीचो ए, गणधर सांखियो ए ॥ ९ ॥

॥ ढाल दूजी ॥ कालहरानी देशी ॥

॥ पांचमि तप विधि साजलो, जिम पामो जवपारो रे ॥  
 श्रीअरिहंत इम उपदिशे, जविषणने हितकारो रे ॥ पा० ॥ १ ॥  
 भिगसर माद फागुल जला, नेठ आपाढ वैशाखो रे ॥ इण पट  
 मासे लीजिये, शुजदिन सद्गुरु साखो रे ॥ पा० ॥ २ ॥ देव जु  
 हारी देहेरे, गीतारध गुरु वंदी रे ॥ पोथी पूजो ग्याननी, सगति  
 हुवे तो नंदी रे ॥ पा० ॥ ३ ॥ वे कर जोमी जावशुं, गुरु मुख  
 करो उपवास्तो रे ॥ पांचमि पम्किमणो करो, पढो पंमित गुरु  
 पास्तो रे ॥ पा० ॥ ४ ॥ जिण दिन पांचमि तप करो, तिण दिन  
 आरंज टालो रे ॥ पांचमि स्तवन शुई कदो, ब्रह्मचरिज पिण पा  
 लो रे ॥ पा० ॥ ५ ॥ पाच मास लघुपंचमी, जावजीव उत्कृष्टो  
 रे ॥ पाच वरस पांच मासनी, पांचमि करो शुज दृष्टि रे ॥ पा० ॥ ६ ॥

॥ ढाल घीजी ॥ उछालानी देशी ॥

॥ द्विज जविषण रे पाचमी उजमणो सुणो, घर सारु रे  
 वारु धन खरचो घणो ॥ ए अवसर रे आवता बलि दोहिलो, पुण्य  
 जोगे रे धन पामंतां सोहिलो ॥ उछालो ॥ सोहिलो बलिय धन  
 पामंतां पण धर्मकाज किहा घली, पाचमी दिन गुरु पास आवी  
 कीजिये काउस्तगरलो ॥ प्रण ज्ञान दरिसण चरण टीकी वेइ  
 पुस्तक पूजिये, आपना पहिली पूज केसर सुगुरु सेवा किजिये ॥  
 १ ॥ ढाल ॥ सिद्धातनी रे पाच, प्रति वीटागणां, पांच पूर्वां रे  
 मखमल सूत्र प्रमुख तणा ॥ पांच मोरा रे लेखण पांच

मजीसणा, वासिकुंवा रे कांची वारू वतरणां ॥ उल्लालो ॥  
 वतरणा वारू वलीह कमली पाच जिलमिल अति जली, स्थाप  
 नाचारिज पाच ठवणी मुदपत्ती पनपाटली ॥ पटसूत्र पाटी पंच  
 कोथल पंच नयकरवालिया, इण परें श्रावक करे पाचम ऊजमणुं  
 उजवालिया ॥ २ ॥ ढाल ॥ वलि देहरे रे स्नात्र महोत्सव कीजि  
 यें, घर सारू रे दान वली तिहा दीजियें ॥ प्रतिमानी रे आगल  
 ढोवणु ढोइयें, पूजाना रे जे जे उपगरण जोइयें ॥ उल्लालो ॥  
 जोइयें उपगरण देवपूजा काज कलश जृंगार ए, श्राति मङ्गलधा  
 ल दीवो धूपधाणु सार ए ॥ धनसार केशर अगर सूखरु अंगलू  
 हणुं दीस ए, पंच पच सघली वस्तु ढोवो सगतिशु पचवीश ए  
 ॥ ३ ॥ ढाल ॥ पाचमिना रे सहाम्मी सर्व जिमाकियें रात्रि जोगे  
 रे गीत रसाल गवामीये ॥ इण करणी रे करता ज्ञान आराधियें,  
 ज्ञान दरिस्णारे उत्तम मारग साधियें ॥ उल्लालो ॥ साधियें मारग  
 एह करणी ज्ञान लहियें निरमलो, सुरलोक नें नरलोक माहे ज्ञान  
 वंत ते आगलो ॥ अनुक्रमें केवलज्ञान पामी सासता सुख जे  
 लहे, जे करे पाचमी तप अखन्ति वीर जिणवर इम कहे ॥ ४ ॥  
 कलश ॥ एम पचमी तप फल प्ररूपक, वर्द्धमान जिणेसरो ॥ में  
 शुणयो श्री अरिहत जगवत, अतुल वल अलवेसरो ॥ जयवत श्री  
 जिन चंद सूरिज, सकलचद नमंसियो ॥ वाचनाचारिज समय  
 सुदर, जगति जाव, प्रशंसियो ॥ २५ ॥ इति श्रीपचमी वृद्धस्त  
 वन संपूर्णम् ॥

॥ अथ पार्श्वजिन अथवा लघुपंचमी स्तवन ॥

॥ पचमि तप तुमें करो रे प्राणी, निर्मल पामो ज्ञान रे ॥  
 पहिलु ज्ञान ने पठें गिरिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ ५० ॥  
 ॥ १ ॥ नदिसूत्रमें ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पंच प्रकार रे ॥ मति

श्रुत अवधि प्रने मनःपर्यव, केवल ज्ञान श्रीकार रे ॥ पं० ॥ २॥  
 मति अठावीश श्रुत चवदे वीश, अवधि ठ अस्तस्य प्रकार रे ॥  
 दोय जेद मनःपर्यव दारख्युं, केवल एक प्रकार रे ॥ पं० ॥ ३ ॥  
 चंड सूरज ग्रह नक्षत्र तारा, तेशु तेज आकाश रे ॥ केवलज्ञान  
 समुं नहिं कोई, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पं० ॥ ४ ॥ पार्श्वनाथ  
 प्रसाद करीने, महारी पूरो उमेद रे ॥ समयसुद्धर कहे हुं पण  
 पामुं, ज्ञाननो पंचमो जेद रे ॥ प० ॥ ५ ॥ इति श्रीपार्श्वजि० ॥

॥ अथ पार्श्वजिनस्तवनम् ॥

॥ अमल कमल जिम धवल विराजे, गाजे गोमी पास ॥  
 सेवा सारे जेहनी सुर, नर मन धरिय उद्धास ॥ १ ॥ सोजागी  
 साहिब मेरा बे, अरेहा सुग्यानी पास जिणदा बे ॥ ए आकणी ॥  
 सुंदर सूरति मूरति सोदे, मो मन अयिक सुहाय ॥ पलक पलकमें  
 पेखतां मानुं, नव नवि ठविय देखाय ॥ २ ॥ सोजा० ॥ अ० ॥  
 जव दुःख जंजन जनमनरंजन, खंजन नयनशुं रंग ॥ श्रवण सुणी  
 गुण ताहरा माहरां, विकस्था अंगो अंग ॥ ३ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 दूरथकी हुं आयो वहिने, देव लह्यो दीदार ॥ प्रारथिया पहिने  
 नहिं साहिवा, एह उत्तम आचार ॥ ४ ॥ सो० ॥ अ० ॥ प्रजु  
 मुखचंद विलोकित हरपित, नाचत नयन चकोर ॥ कमल हसे  
 रवि देखिने जिम, जलधर आगम मोर ॥ ५ ॥ सो० ॥ अ० ॥  
 किसके हरिहर किसके ब्रह्मा, किसके दिलमें राम ॥ मेरे-मनमें  
 तु वसे साहिव, शिवसुखनोही ठाम ॥ सो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ मा  
 ता वामा धन्य पिता जसु, श्रीअश्वसेन नरेश ॥ जनमपुरी वणा  
 रसी, धन धन काशीनो देश सो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ संवत सत  
 रेश वावीशें, वदि नै- ॥ आठम दिन जले २५  
 मारी जात्र चढी ॥ अ० ॥ ८ ॥



विघ्ननिवारि, परंजपगारी पास ॥ श्रीजिनचंद जूहारीता, भोरी स  
फल फली सहु आश ॥ सो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ विमलजिनस्तवनम् ॥

॥ घर अंगण सुरतरु फळ्यो जी, कवण कनक फल खाय  
॥ गयवर बाध्यो वारणें जी, खर किम आवे दाय ॥ १ ॥ विमल  
जिन महारी तुम्हशु प्रीति, सुर सकलकितशुं मिळ्या जी, हियमुं  
हीसे केम ॥ वि० ॥ २ ॥ मन गमता मेवा लही जी, कुश खरु  
खावा जाय ॥ आदर साहिवनो लही जी, कुण ल्ये रांकु मनाय  
॥ वि० ॥ ३ ॥ रत्न ठते कुण काचनें जी, अलवे पसारे हाय ॥  
कुण सुरतरुथी ऊठिनें जी, धावल घाले बाथ ॥ वि० ॥ ४ ॥ देव  
अवर जो हुं करु जी, तो प्रभु तुमची आण ॥ श्रीजिनराज जवो  
जवे जी, तुंदिज देव प्रमाण ॥ वि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशी वृद्ध स्तवनं ॥

॥ समवसरण वेठा जगवत, धरम प्रकाशे श्रीअरिहंत ॥  
घारे परपदा वैठी जुनी, मागशिर शुवि इग्यारश वनी ॥ १ ॥ म  
द्विनाथना तीन कळ्याण, जनम दीक्षा ने केवलज्ञान ॥ अर  
दीक्षा लीधी रुवनी ॥ मा० ॥ २ ॥ नभिने ऊपनुं केवलज्ञान,  
पाच कळ्याणक अति परधान ॥ ए तिथिनी महिमा एवनी ॥ मा०  
॥ ३ ॥ पांच जगत ऐरवत इमहीज, पाच कळ्याणिक हुवे तिम  
हीज, पंचासनी संख्या परगनी ॥ मा० ॥ ४ ॥ अतीत अनागत  
गणता एम, दोढशें कळ्याणक थाये तेम ॥ कुण तिथवे ए तिथि  
जेवनी ॥ मा० ॥ ५ ॥ अनंत चोवीशी इण परें गिणो, लाज अ  
नत उपवासा तणो ॥ ए तिथि सहु तिथि शिर राखनी ॥ मा० ॥  
६ ॥ मौनपणें रक्षा श्रीमद्वि नाथ, एक दिवस संयम व्रत साथ  
॥ मौन तणी परि व्रत इम पनी ॥ मा० ॥ ७ ॥ अठ पुहरी पोसो

कीजिये, चोविदार विधिगुं कीजिये ॥ पण परमादन कीजे घर्म  
 ॥ मा० ॥ ८ ॥ वरम इग्यार कीजे उपवास, जावजीव पण अधि  
 उब्दास ॥ ए निधि मोक्ष तणी पावनी ॥ मा० ॥ ए ॥ कुजम  
 कीजे श्रीभार, ज्ञाननां उरगरण इग्यार इग्यार ॥ करो काउसम  
 गुरु पथि पने ॥ मा० ॥ १० ॥ देहरे सात्र करीजे वली, पोष  
 पूजीजे मा रली ॥ मुग तेपुरी कीजे दूकनी ॥ मा० ॥ ११  
 मौन इग्यारम महेटुं पर्य, आराध्यां सुख लहिं सर्व ॥ व्रत प  
 स्काग्र वरो प्राप्ती ॥ मा० ॥ १२ ॥ जेसन शोल इक्वाशा समे  
 कंधुं स्तवन सहू मन गमे ॥ तनवसुंदर कहे करो यादनी ॥ मा०  
 ॥ १३ ॥ इति श्राएकादशि वृद्ध स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ श्रीशातिनाय स्तवनं ॥

॥ श्रीसारद मात नमूं सिरनामी, हुं गाउं त्रिजुवनके स्वामी  
 ॥ संतहि संत जपै सव कोइ, जां घर शांति सदा सुख होई ॥ १ ॥  
 संत जपिने कीजे कांना, सोइ वाम हुं अन्निरामा ॥ शांति ब  
 धी परदेश सिधावै, ते कुशले कमला ले थावे ॥ २ ॥ गर्जनी  
 प्रचु मारि निवारी, शांतहि नाम दियो महतारी ॥ जे नर अ  
 तणा गुण गावै, रुहि अचिती ते नर पावै ॥ ३ ॥ जा नरुं प्र  
 शांति सुदाई, ता नरकं कुठ अरति नांही ॥ जो कतु वं सोई  
 पूरै, दाहिइ दोष मिछ्यामत चूरे ॥ ४ ॥ अलख निरजत ज्योति  
 प्रकासी, घटर के जीतर प्रचु वासी ॥ स्वामि सरुप इत नदि  
 जावै, कडितां मो मन अचरज थावै ॥ ५ ॥ नर दिका सवही इ  
 थियारा, जीता मोदतणा दल सारा ॥ नारितजी शिबुं रंग रावै  
 राज तज्या पिण साहिब सावै ॥ ६ ॥ महा वडनं कहीजे र  
 कायर कुंधु न एक इषेवा ॥ कति सहू प्रतु शत उहोई,   
 हारी नाम कहीजे ॥ ७ ॥ पूजक दे मम जायक

सेवक सदा सुख दायक ॥ तजी परिग्रह जए लग नायक, नाम  
 अतीत सवै विध लायक ॥ ७ ॥ सत्रु मित्र सम चित्त गिणीजै,  
 नाम देव अरिहत जणीजै ॥ सयल जीव हिनरंत कहीजै, सेवक  
 जाण महा पद दीजै ॥ ८ ॥ सायर जैसा होय गजीरा, दूषण  
 नहि इक माहि सरीरा ॥ मेरु अचल जिम अंतरजामी ॥ पिण  
 न रहै प्रजु एकण ठानी ॥ १० ॥ लोक कहे प्रजुजी सब देखै,  
 पिण सुपनो कबहु नवि पेखै ॥ रीत विना बावीस परीसह, सै-या  
 जीती तें जगदीसह ॥ ११ ॥ मान विना जग आण मनावै, मा  
 या विना सबसुं मन लावै ॥ लोभ विना गुणरास अहीजै, जिहु  
 जये त्रिगुणो सेवीजै ॥ १२ ॥ निग्रयपणै सिर ठत्र धरावै, नाम  
 जती पिण चमर दुलावै ॥ अजय दान दाता सुखकारण, आगै  
 चक्र चलै अरि दारण ॥ १३ ॥ श्रीजिनराज दयाल जणीजै, कर्म  
 सबीको मूल खणीजै ॥ चौविह संघ जे तीरथ आपै, लख घणी  
 देखी नवि आपै ॥ १४ ॥ विनयवंत जगवंत कहावै, ना किसही  
 कू सीस नमावै ॥ अकिंचनको विरुद्ध धरावै, पिण सोवन पंकज  
 पगडावै ॥ १५ ॥ तजि आरज निज आतम ध्यावै, शिवरमणीकुं  
 साथ चलावै ॥ राग नही सेवग पिण तारे, द्वेष नही निगुणा  
 संग वारै ॥ १६ ॥ तेरी महिमा अठ्ठुत कहिये, तेरे गुणांको पार  
 न लहिये ॥ तूं प्रजु समरथ साइव मोरा, हुं मनमोहन सेवक  
 तोरा ॥ १७ ॥ तू त्रिहुलोकनणो प्रतिपाला, मे हुं अनाथ तूं दीन  
 दयाला ॥ तूं सरणागत राखण धीरा, तूं प्रजु तारक ठै वरुवीरा  
 ॥ १८ ॥ तुम जेसैं वरुजागज पायो, तो मेरो कारज चढ्यो स  
 वायो ॥ कर जोरु प्रजु वीनवु तोसु, करो रुपा जिनवरजी मोसु  
 ॥ १९ ॥ जामण मरण निवारो तारो, जवसायरथी पार उतारो  
 ॥ श्रीद्वयणापुर मरुण सोहे, तिहा जिन शानि सदा मन मोहे

॥ २० ॥ पद्मसूरि गुरुसंज पसावै, श्रीगुणसागरके मन जायै ॥  
जे नर नारी इक चित गावै, मन वडित फल निश्चै पावै ॥ २१ ॥  
इति श्रीशातिनाथ स्तवनं ॥

॥ अथ चोरासी आसातना जिनमंदिरकी स्तवनं ॥

॥ दाल ॥ विलसै ऋद्धि समृद्धि मिली ॥ ए देशी ॥

॥ जयर जिण पास जगत्र धणी, सोजा ताहरी संसार  
सुणी ॥ आयो हुं पिण धर आस घणी, करवा सेवा तुम चरण  
तणी ॥ १ ॥ धनर जे न पने जंजालै, उपयोगसुं वैसे जिन आलै  
॥ आसातना चनरासी टालै, साश्वता सुख तेहिज संजालै ॥ २ ॥  
जे नाखै श्लेषम जिनहरमें, कलह करै गाली जूये रमै ॥ धनुषादि  
कला सीखण हूकै, कुरखो तंबोल जखे थूकै ॥ ३ ॥ सुरेवाय वनी  
लघुनीत तणी, सज्ञा कंगुलिया टोप सुणी ॥ नख केस समारण रु  
धिर क्रिया, चादोनी नाखै चामनिया ॥ ४ ॥ दातण ने वमन पिये  
कावो, खावे धाणी फूली खावो ॥ सूवे वेसामण विसरावै, अज  
गज पशु ने दामण दावै ॥ ५ ॥ सिर नासा कान दशन आखै,  
नख गाल वपुपना मल नाखै ॥ मिलणो लेखो करे मंत्रणो, विह  
चन अपणो कर धन धरणो ॥ ६ ॥ वैसै पग ऊपर पग चढिया, थापै  
ठाणा ठमै हुंढणिया ॥ सूदवै कप्परु पप्परु वनिया, नासीय निपै  
नृप जय पनिया ॥ ७ ॥ शोके रोवे विरुथा ज कहै, इहां संख्या  
वैतालीस लहै ॥ हयियार धमे ने पशु बांधै, तापै नाणो परखै रां  
धै ॥ ८ ॥ जाजी निस्तही जिनगृह पेसे, धरै ठत्र ने मंरुपमें  
वेसै ॥ पहिरै वस्त्र अनें पनही, चामर वीजै मन गम नही ॥ ९ ॥  
तनु तैल सच्चि फल, जूपण तज आप कुरूप धियै ॥  
दरसणथी सिर, इगसामै उत्तरासंग न, ॥ १० ॥

ठोगो सिरपेच मोरु जौमै, दनिये रमने वेते होमै ॥ सयणासुं  
 जुहार करे मुजरो, करे जनु चेष्टा कहै वचन धुरौ ॥११॥ धरे ध  
 रणो जगने उल्लंगी, सिर गूधे बावे पालवी ॥ पसारे पग पदरे चावनि-  
 या, पग ऊटक दिरावे डुखनिया ॥ १२ ॥ करदम छेड़ै मैथुन मरु,  
 जू आवलि अँठ तिहा वंमै ॥ उधामे गुऊ करै वयदा, काढे व्या-  
 पार तणी कयदा ॥ १३ ॥ जिनहर परनालनो नीर धरै, अंधोले  
 पीवा ठाम जरे ॥ दूषण जिनजगनमें ए दाख्या, वैगवदनजाप्यमें  
 जे जाख्या ॥ १४ ॥ सुजानी आवग सगति उता, आसातन टाले  
 वारस्तता, परमाद वसे कोई प्रायै, आले या पाप सहू जायै ॥१५॥  
 तबोल ने जोजन पान जूया, मल मूत्र सवन छी जोग दुआ ॥  
 दूषण पनही ए जघन्य वसे, वरज्या निनमदिर गहि वसे ॥१६॥  
 इयत ने जावत दोय पूना, एहनाहिज जेद कथा दूजा ॥ सेवा  
 प्रचुनी मन शुद्ध करै, वंठत सुख लीला तेह वरै ॥ १७ ॥  
 कलश ॥ इम जव्य प्राणी जाव आण, विवेधी शुद्ध वातता ॥  
 जिनविद्य अरचै परी वरजै, चोरानी आसातना ॥ ते गोत्र तीर्थ  
 कर अरजै, नमें जेहने केवलो ॥ उवकाय श्री ब्रह्मसंह वं, जैन  
 शासन ते वली ॥ १८ ॥ इति श्री योगीश्वर आमातना स्तवर्न ॥

॥ अथ चोवीस जिन देहप्रमाण स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रणसु रूपज विनेर पय, धनुष पाचसे उग काय ॥ बी  
 जो अजित जिन मुऊ मन वलै, मान धनुष ताढाकारसे ॥ १ ॥  
 तीजो सजव सुख दानार, उंरी काय धनुष भो चार ॥ अजिनं  
 दन जिनसुं मन लीन, देह धनुष सो ताढातीन ॥ २ ॥ पवम  
 सुमतिनाथ जगवान, धनुष तानलो देही मान ॥ पदम प्रचू पूरे  
 मन आस, देह धनुष दोयसे पञ्चास ॥ ३ ॥ साभि सुपारस सतम  
 होय, देह प्रमाण धनुष सो दोय ॥ चंद्राप्रचु जिन मुज मन वसै, देह

प्रमाण धनुष दोढसै ॥ ४ ॥ सुविधनाथ नमिये सुविवेक, उंच प्र  
 माण धनुष सो एक ॥ शीतलनाथ नमें जग सवे, देह प्रमाण ध  
 नुष जसु निवे ॥ ५ ॥ श्री श्रेयास नमूं उल्लसी, उंच प्रमाण धनुष  
 तनु असी ॥ वासपूज्य धारम जिन चद, मान धनुष सितर सुख  
 कंद ॥ ६ ॥ विमलर गुणकर गंजोर, साठ धनुष जसु मान सरीर  
 ॥ अनंत ज्ञान अनंत प्रकाश, देह प्रमाण धनुष पञ्चास ॥ ७ ॥  
 पनरम धरमनाथ जगदीस, मान धनुष जस पेंतालीस ॥ शांति  
 करण शोलम जिन शांति, देह धनुष चालीस सोजति ॥ ८ ॥  
 सतरम कुंथु जिन जगदाधार, मान धनुष पेंत्रीस उदार ॥ अर अ  
 ठरम दीनदयाल, त्रीस धनुष तन अति सुविशाल ॥ ९ ॥ मद्धि  
 नाथ जिन जगणीसमो, मान पञ्चीस धनुष पय नमो ॥ वीसम  
 मुनिसुव्रत अरिदत्त, वीस धनुष तनु मान कहत ॥ १० ॥ इक्की  
 सतम नमिजिन राजान, धनुष पनरे तसु रूप निधान ॥ बावीसम  
 श्रीनेमजिनंद, दस धन दीपे जाण दिणंद ॥ ११ ॥ तेवीसम श्री  
 पारसनाथ, नील वरण सोहे नव हाथ ॥ चोवीसमा जिनवर श्री  
 वीर, सात हाथ जगनाथ सरीर ॥ १२ ॥ इण परि ए जिनवर चो  
 वीस, प्रणमें प्रह शम धरिय जगीस ॥ तां घर रुद्धि सिद्धि उठ  
 रंग, रंग विनय प्रणमें मुनि रंग ॥ १३ ॥ इति श्री चोवीस जिन  
 देहमानं स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवनं लिख्यते ॥

॥ रूपदेव प्रणमूं जिनराय, लाख चोरासी पूरव आय ॥ बी  
 जो अजित जसु सूत्रे साख, आठ बहुत्तर पूरव लाख ॥ १ ॥ ती  
 र्थकर सज्जव तीसरो, आठ लाख पूरव साठरो ॥ अजिनंदन प्रै  
 मन आस, आठ लाख पूरव पञ्चास ॥ २ ॥ सुमतिनाथ पंचम  
 जगदीस, आठ लाख ॥ श्री पद्मप्रज्ञानी ए श्रित

जाण, लाख तीस पूरव परिमाण ॥ ३ ॥ श्री सुपार्थ लाग्य पूरव  
 वीस, दस लाख पूरव चदप्रचु ईस ॥ सुविधनाथ लाख पूरव गोंय,  
 इक लाख पूरव शीतल धित द्योय ॥ ४ ॥ आयु वरस चोरासी  
 लाख, श्री त्रेपास तणी श्रुत साख ॥ लास बहुत्तर वरसा तणो,  
 वासुपूज्य परमायुष गिणो ॥ ५ ॥ विमल आयु लस साठ वरीस,  
 वरस अनंत तणो लाख तीस ॥ लाख वरस दस धरम दिणंद,  
 लाख वरस श्री शातिजिणंद ॥ ६ ॥ वरस सहस्र थिति पचपाणवै,  
 श्री कुशुनाथ तणी सन्नवै ॥ सहस्र चोरासी अर जिनतणी, महि  
 सहस्र पचावन जणी ॥ ७ ॥ वरस सपूरण त्रीस हजार, मनिसु  
 व्रत परमाञ्ज उदार ॥ वीस सहस्र ननिजिन थित जणी, वरस स  
 हस्र नेमीसरतणी ॥ ८ ॥ पास वरस एक सो सुखकंद, वरस  
 बहुत्तर वीरजिणद ॥ रूपजतणा तेरे अवतार, सात चड शंती-  
 सर वार ॥ ९ ॥ सुव्रत जव नव नव नेमीस, पार्थ वीर दस सत्ता-  
 वीस ॥ त्रिहुंश जव सतरे जगदीस, सगला जव एकसो अमतीस  
 ॥ १० ॥ सिद्ध लदी सहुने धन धन, गणधर चवदेसै वावन्न ॥  
 सहुने मुनि लाख अठावीस, सहस्र ऊपरै अमतालीस ॥ ११ ॥ लाख  
 चमाल ठयाल हजार, पमधिक सहु साधवो सो ज्यार ॥ श्रावक  
 लाख पचावन वुरै, अमतालीस सहस्र ऊपरै ॥ १२ ॥ एक कोनि  
 श्रावका सुजगीस, लाख पाच सहस्र अमतीस ॥ ए संघ चतुर्विध  
 सहु जिनतणो, रग विनय प्रणमै दित घणो ॥ १३ ॥ इति श्री  
 चोवीस जिन आयु प्रमाण स्तवन ॥

॥ अथ तेसठ शलाका पुरुष स्तवन लिख्यते ॥

॥ टाल १ ॥ धरम महारथ सारथ सार ॥ ए देशी ॥

सहुरु चरण कमल मन धारं, त्रैसठ उत्तम नर अधिकारं,  
 पन्नणसु श्रुत अनुसार ॥ जेहने नाम लिये निसतारं, आपण सफल

हुवै अवतारं, पामीजै जव पारं ॥ १ ॥ रूपज अजित संजव अ-  
 जिनदन, सुमति पदमप्रजु नयनानंदन, सत्तम तेम सुपास ॥ चंड-  
 प्रजु ने सुविध शीतल जिन श्रेयास, वामपूज्य जिन सुरमणि,  
 विमल गुणेशकर वास ॥ २ ॥ अनंत धर्म श्री शांति जिनेसर, कुं-  
 थुनाथ अर महि सुहंकर, मुनिगुवन नमि नेम ॥ पार्श्व वीर ए  
 जिन चोवीस ॥ जग वल्ल जगगुरु जगदीस, प्रणामीजै धर प्रेम ॥ ३ ॥  
 ॥ ढाल २ जी ॥ प्रथम सुपनगज निरख्यो ॥ ए देशी ॥

॥ प्रथम जतर नरइद, बीजो सगर सुरिंद ॥ मघवा तीजो  
 उदार, चोथो सनतकुमार ॥ ४ ॥ पाचमो शांति चक्रोस, ठगे  
 कुशु गणीस ॥ सातमो अरि नरनाथ, आठमो संजूमि सनाथ ॥  
 ५ ॥ नवमो पदम नरेस, हरिषेण दममो कहेस ॥ इग्यारम जय  
 ताम, बारम ब्रह्मदत्त नाम ॥ ६ ॥ एह चक्कीसर वार, क्षेत्र जतर  
 सिणगार ॥ मघवा सनतकुमार, षोडता सरग मऊर ॥ ७ ॥ स-  
 जूम अने ब्रह्मदत्त, सत्तम नयर निरत्त ॥ आठ अया सिवगामो, ते  
 प्रणमु सिरनामी ॥ ८ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ मुनिर आर्य सुहस्ति ॥ ए देशी ॥

॥ पहिलो त्रिपृष्टि जाण, द्विपृष्ट दूमरो, तीजो स्वयंप्रजु जा-  
 णिये ए ॥ पुरुषोत्तम ए चोथो, पचम परगमो, पुरुषसिंह परमाणिये  
 ए ॥ ९ ॥ ठगे पुरुष पुररीक, दत्त तिम सातमो, लक्ष्मण नामे  
 आठमो ए ॥ नवमो कृष्ण नरेस, ए नव केसवा, प्रह ऊठी ए  
 पिण नमूं ए ॥ १० ॥ तिहा पहिलो वसुदेव, नारकी सातमी, अगला  
 पाच ठगे गया ए ॥ सातमो पंचमी नैर, चोथी आठमो, नवमो  
 तीजी नारीया ए ॥ ११ ॥ अचल विजय नें जइ, सुप्रजु सुदर्शन,  
 आनंद नंदन शुभ मती - मचं० बलजड, बलदेव ए-नव,  
 आठ अया तिहां सिव १२ ॥ वतजइ ब्रह्म



काल उत्तप्पणी, जास्यै तिव रुष्ण सासने ए ॥ अथवा निपुलाक  
नाम, तीर्थकर होस्ये, घवदमो इम बहुश्रुत ज्ञणे ए ॥ १३ ॥

॥ ढाल ४ ॥ कुमरपणे प्रभु रहता काल सुखै गमेए ॥ ए देशी ॥

अस्वग्रीव नें तारक मेरुकवलि मधु तिसाए, निशुंज वलष  
प्रइलाद, रावण जरासिंधु जिसा ए ॥ ए नव प्रतिवासुदेव नरक  
गति गामिया ए, ते पिण जावि जिनेस कैई प्रणमुंमुदा ए ॥ १४ ॥

॥ ढाल ५ ॥ सफल ससारनी ॥ ए देशी ॥

शाति नें कुयु अरि एह नव एकही, चक्रधर तीर्थकर दोष  
पदवी लही ॥ वीर वासुदेव अरिहंत नव जूजूथा, देह तिणसाठ  
पिण जीव गुणसठ घया ॥ १५ ॥ वासुदेव वलीय बलदेव कैरा  
पिता, एकहिज थाय नव एण लेखै गता ॥ तीन चक्रधर तणा  
मिलिय वारै टळ्या, एम त्रेसठना तात इकावन मिल्या ॥ १६ ॥  
तीन चक्रवर्त्तणी ढाल दीजे इतै, माय सहुनी थई साठ लेखे इतै  
॥ एह नररयणनो ध्यान नित जे घरे, तेह सुरपद लही मोक  
पदवी वरै ॥ १७ ॥

॥ कलस ॥

इम शुण्या तीर्थकर चक्रीसर वासुदेव बलदेव ए, प्रतिवासु-  
देव सुसेव जेहनी करै सुरनर सेव ए ॥ त्रेसठ शलाका पुरुष उत्तम  
जगत जयवंतो सदा, प्रह शमे तेहना चरण पंकज नमे मुनि वसतो  
मुदा ॥ १८ ॥ इति त्रेसठ शलाका पुरुष स्तवनं ॥

॥ अथ सैत्रुजगिरी स्तवनं ॥

श्री विमलाक्षेण सिर तिलो, आदीसर अरीहंत ॥ जुगला  
धर्म निवारणो, जय जंजण जगवंत ॥ श्री० ॥ १ ॥ मुऊ मन ऊ  
लट अति घणो, सो दिन सफल गिणोस ॥ स्वामी श्री रिसहेसरू,  
जव नयणे निरखेस ॥ श्री० ॥ ७ ॥ जंगम तिरथ विहरता, साधु

तेषे परिवार ॥ आदि जिनंद समोसरया, पूरव निन्नाणूं वार ॥  
 श्री० ॥ ३ ॥ अचिरा विजयानदने, जगवंशव जगतात ॥  
 इण गिरचनमासे रक्षा, शिवर कहे ए वात ॥ श्री० ॥ ४ ॥ पामे  
 शिव सुख साश्वता, गणधर श्री पुंररीक ॥ पुंरगिरि तिण कारणे,  
 जगति करो निरञ्जीक ॥ श्री० ॥ ५ ॥ नमि नै विनमि सद्दोदरु,  
 विद्याधर वलवंत ॥ सेतुंज शिखर समोसरया, जे गरुआ गुणवत ॥  
 श्री० ॥ ६ ॥ आवच्चा मुनिवर सुक, सद्दत्त परिवार ॥ पयग  
 वंशे जागियो, सो सेलग अणगार ॥ श्री० ॥ ७ ॥ पाम्व पाव  
 भदावलो, सुणि जादव निरवाण ॥ ते सोधा सिद्धाचलै, सुर नर  
 करै वखाण ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इमसीधा इण रूंगरे, मुनिवर कोना-  
 कोरि ॥ पाज चढंता सान्तरै, ते प्रणमूं करजोरि ॥ श्री० ॥ ९ ॥  
 जे वायण प्रतिबूजवो, ते दरवाजे जोय ॥ गोमुख यक कवरु मिला,  
 सानिधकारी होय ॥ श्री० ॥ १० ॥ जे विधसुं यात्रा करै, सुर नर  
 सेवक तास ॥ राजसमुद्र गुण गावता, अविचल लील विलास  
 श्री० ॥ ११ ॥ इति ॥ स्तवनं ॥

अथ श्री सिद्धाचल स्तवन लिख्यते ॥

॥ देसी गरवानी ॥

श्री सिद्धाचल मंरुण स्वामी रे, जग जीवन अंतरजांमी  
 रे, एतो प्रणमूं हूं सिरनांमी, यात्रीना जात्रा निनाणूं करिये रे ॥ १ ॥  
 श्रीकृपञ्ज जिनेसर राया रे, जिहा पूरव निनाणूं आया रे, प्रजु  
 संभवसरया सुख दाय ॥ या० ॥ २ ॥ चेत्रो पूनम दिन वखाणो रे,  
 पांच कोरिसुं पूररीक जाणो रे, जे पाम्या पद निरवाण ॥ या०  
 ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख सैंते रे, वे वे कोरिसुं साधु संघाते  
 रे, एतो पोहता पद जोकांत ॥ या० ॥ ४ ॥ काती पूनम कर्मने  
 तोमी रे, जिहा वस कोमी रे, ते वंदो वे कर जोरु

॥ या ० ॥ ५ ॥ इम ज़रतेसरने पाटे रे, अक्षरुवात माधु थिर  
 थोटे रे, पाम्वा सुगति तयो ए वाट ॥ जा० ॥ ६ ॥ दोय सदस  
 सुनी परचारे रे, थावच्चा सुत सुखकारे रे, सय पच सेजग अणगार  
 ॥ या० ॥ ७ ॥ देवकी सुत सुजगीने रे, सीधा बहु यादवसे रे,  
 ते नमो रे नमो मन हींसे ॥ या० ॥ ८ ॥ पाचे पाम्ब इण गिर  
 आया रे, सीधा नव नारद कृपिराया रे, वलो सब प्रज्ञेन कदाय  
 ॥ या० ॥ ९ ॥ ए तीरथ महिमावेंते रे, जिहां सीया साधु अनते  
 रे, इम ज्ञाप्यो श्रीजगवत ॥ या० ॥ १० ॥ उऊज गिर सम नही  
 कोइ रे, तारथ सगलामे जोइ रे, जे फरस्या पावन होइ ॥ या०  
 ॥ ११ ॥ एकाहारी ने सचित्त पहारी रे, पठचारी ने चूमि सधारी  
 रे, शुद्ध समकित ने ब्रह्मचारी ॥ या० ॥ १२ ॥ इम ठहरी जे नर  
 पाले रे, बहु वान सुपात्रे आले रे, ते जनम मरण जय टाले  
 ॥ या० ॥ १३ ॥ धन७ ते नर ने नारी रे, जेट विमलाचल इक  
 तारी रे, जइये तेहतयी बलिहारी ॥ या० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंड  
 सूरि सुपसाये रे, जिनहर्ष हिये हुलसाये रे, इम विमलाचल गुण  
 गाये ॥ या० ॥ १५ ॥ इतिपठं ॥

॥ अथ श्री कृष्णभदेव स्तवन ॥

कृष्ण जिनेसर दिनकर साहिव, वीनतकी अवधारो रे ॥  
 जगना तारु ॥ मुऊ तारो जो कृपानिध स्वामी, जग जसवाद  
 प्रगट वै ताहरो, अविचल सुखदातारो रे ॥ ज० ॥ १ ॥ मु० ॥  
 निज गुण जोक्ता पर गुण जोसा, आतम शक्ति जगायो रे ॥ ज० ॥  
 अविनासी अविचल अविहारी, शिव वासी जिनराया रे ॥ ज०  
 ॥ १ ॥ मु० ॥ इत्यादिक गुण श्रवणे निसुणी, हु तुम चरणे आयोरे ॥  
 ज० ॥ तुम रीजावण हेते ततखिण, नाटक खेल मचायो रे ॥ ज० ॥ ३ ॥  
 मु० ॥ काल अनत गह्यो ऐकैइ, तरु साधारण पामी रे ॥ ज० ॥

वरस संख्याता बलि विकलेडी, वेप धरया डुख धामी रे ॥ ज०  
 ॥ ४ ॥ मु० ॥ सुर नर तिरि बली नरकतणी गति, पचेडीपणो  
 धारयो रे ॥ ज० ॥ चोवीसे दंरुक मांदि जमियो, अब तो हूं पिण  
 ढारयो रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ मु० ॥ अब नाटक नित करतो नव नव,  
 हू तुज आगल नाच्यो रे ॥ ज० ॥ समरथ साद्विब सुरतरु सरिखो,  
 निरखी तुज्जे याच्यो रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ मु० ॥ जो मुज नाटक  
 देखी रीज्या, तो मन बंठित दीजे रे ॥ ज० ॥ जो नवि रीज्या  
 तो मुज ज्ञाखो, बलि नाटक नवि कीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ मु० ॥  
 लालच धरि हूं सेवा सारूं, तुं डुखना नवि कापे रे ॥ ज० ॥ दाता  
 सेती सुंम जलेरो, वहिलो उत्तर आपे रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ मु० ॥  
 तुज सरिपा साद्विब पिण माहरो, जो नवि कारज सारो रे ॥ ज० ॥  
 तो मुज करमतणी गति अबली, दोसन कोइ तुमारो रे ॥ ज० ॥ ९ ॥  
 मु० ॥ दीनदयाल दया कर दीजै, सुध समकित सह नाणी रे ॥  
 ज० ॥ सुगुण सेवकना बंठित पूरो, तेहिज गुणमणि खाणी रे ॥  
 ज० ॥ १० ॥ मु० ॥ वर्ष अढारै गुणतालीसै, ज्येष्ठ सुदी सोमवारो रे ॥  
 ज० ॥ लालचंद प्रतिपद दिन जेटया, वीकानेर मजारो रे ॥ ज०  
 ॥ ११ ॥ मु० ॥ इति श्री एकमदिन रुपजदेव स्तवनं ॥

॥ अथ अमावस दिनका महावीर स्तवन ॥

॥ वीर सुणों मोरो वीनती करजोनी हो कहु मननी वात  
 ॥ बालकनी पर वीनवूं, मोरा स्वामी हो तूं त्रिज्जुवन तात ॥ वी०  
 ॥ १ ॥ तुम दरशण विन हू जन्म्यो, अब माहे हो स्वामीसमुझ म  
 जार ॥ डुक्क अनंता में सह्या, ते कहिता हो किम आधे पार ॥  
 वी० ॥ २ ॥ पर जगारी तूं प्रजू, डुख जजे हो जग दीनदयाल  
 ॥ तिण तोरे चरणे हू आवियो, सामी मुज्जे हो निज नयण निहाल  
 ॥ वी० ॥ ३ ॥ अपराधी पिण ऊधरया, तें कीधी हो करुणा मो

रा स्वाम ॥ हुंतो परम जक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं हीलतो  
 काम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिवूज्या, जिण कीधा हो तुज  
 ने उपसर्ग ॥ रुक वियो चरुकोसिये, तें दीधो हो तसु आठमो सर्ग  
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसाखो गुनहीण धणो, जिण बोळ्या हो तोरा  
 अवरणवाद ॥ ते चलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र  
 साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण ठै इज्जालियो, इम कहतो हो आ  
 यो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रजुतानो वजी  
 र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उयाप्या ताहरो, ते जगळ्यो हो तुज साथ  
 जमाल ॥ तेदनें पिण पनरे जवे, शिवगामी हो तें कीयो रूपाल  
 ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिप जेरम्यो, जल मांहे हो बाधी माटीनी  
 पाल ॥ तिरती मूकी काठलो ॥ तें तारयो हो तेदनें ततकाल ॥  
 वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर रुवि दूह्यो, चित चूको हो चारित्तयो  
 अपार ॥ एकावतारी तेदने, तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ वी०  
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो सजमनो जार ॥  
 नदिपेण पिण ऊरयो, सुर पदगी हो दीधी अति सार ॥ वी० ॥  
 ११ ॥ पच महाघत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते  
 पिण आडकुमारनें ॥ ते तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥  
 १२ ॥ राघ श्रेणक राणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह  
 ॥ समवसरण साथ साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी०  
 ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखनी, नही पोसो हो नही आदर दीख  
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामो आप सरीख ॥ वी०  
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊरया, कहु तोरा हो केता अवदात ॥  
 सार करो हिव माहरी, मनमाहे हो आणो मोरनी वात ॥ वी०  
 ॥ १५ ॥ सूयो संजम नहि पले, नही तेदयो हो मुज दरसन  
 ज्ञान ॥ पिण आधार ठै एतलो, इक तोरो हो धरु निश्चल ध्यान

धी० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नंवि जोवेहो सम विखमी  
 चांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांमी सारो हो मोरा वंठित  
 कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नामे सुख संपदा, तुम नामे हो दुख  
 जाये दूर ॥ तुम नामे वंठित फलै, तुम नामे हो मुज्ज आनंद पूर  
 ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु मरुन, तीर्थकर  
 चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिद्ध लंठन, सेवता सुरतरु समो ॥  
 जिनचंद्र त्रिसलामात नंदन, सकलचंद्र कला निलो, वाचनाचारज  
 सनयसुंदर ॥ संधुण्यो त्रिचुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा  
 चीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ शाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करुं अरदास जी ॥ ना  
 रण तरण विरुद तुज साज्जलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥  
 इण ससार समुद्र अधागै, जमियो जवजल मांदिजी ॥ गिलगिचिया  
 जिम आयो गिरुतो, साहिब हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं  
 ज्ञानी तोपिण तुज आगै, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंरु  
 क हूं जमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न  
 ररुतणो इक दंरुक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पांच आवर नें  
 तीन विकलेंडी ॥ जगणीस गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें  
 डी तिर्यच ने मानव, एह अया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतपा  
 नें वैमाणिक, इम दंरुक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंडी तिर्यच  
 अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए चोविह देवामें ऊपजै, इम देवां  
 गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आनखै नर तिरि, निहचै  
 देव ज आय जी ॥ निज आऊखै सम के लुठै, पिण अधिके नवि  
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर नाई, नमूर्छिम तिर्यच

रा स्वाम ॥ हुंतो परम जक्त ताहरो, तिण तारो हो नहीं दीखनो  
 कांम ॥ वी० ॥ ४ ॥ सूलपाण प्रतिवूज्या, जिण कीधा हो तुज्ज  
 ने उपसर्ग ॥ रुक दियो चरकोसिये, तें दीघो हो तसु आठमो सर्ग  
 ॥ वी० ॥ ५ ॥ गोसालो गुनहोण घणो, जिण बोड्या हो तोरा  
 अवरणवाद ॥ ते बलतो तें राखीयो, सीतललेस्या हो मूकी सुप्र  
 साद ॥ वी० ॥ ६ ॥ ए कुण वै इडजालियो, इम कहतो हो आ  
 यो तुम तीर ॥ ते गोतमनें तें कियो, पोतानो हो प्रजुतानो बजी  
 र ॥ वी० ॥ ७ ॥ वचन उआप्या ताहरा, ते जगड्यो हो तुज्ज साथ  
 जमाल ॥ तेदनें पिण पनरे जवे, शिवगामी हो तें कीयो रुपाल  
 ॥ वी० ॥ ८ ॥ एमत्तो रिप जेरम्यो, जल माहे हो घाधी माटीनी  
 पाल ॥ तिरती मूकी काठलो ॥ तें तारयो हो तेदनें ततराल ॥  
 वी० ॥ ९ ॥ मेघकुमर ऊपि दूह्यो, चित चूको हो चारितथी  
 अपार ॥ एकावतारी तेदने, तें कीधो हो करुणा जंमार ॥ वी०  
 ॥ १० ॥ वार वरस वेस्या घरे, रह्यो मूकी हो संजमनो जार ॥  
 नदिपेण पिण ऊपरयो, सुर पदवी हो दीवो अति सार ॥ वी० ॥  
 ११ ॥ पंच महाव्रत परिहरी, ग्रहवासे हो वस्यो वरस चोवीस ॥ ते  
 पिण आडकुमारनें ॥ ते तारयो हो तोरी एह जगीस ॥ वी० ॥  
 १२ ॥ राय श्रेणक राणी चेलणा, रूप देखी हो चित चूका जेह  
 ॥ समवसरण साथु साधवी, तें कीधा हो आराधिक तेह ॥ वी०  
 ॥ १३ ॥ विरत नही नही आखनी, नही पोसो हो नही आदर दीख  
 ॥ ते पिण श्रेणिकरायनें, तें कीधो हो सामी आप सरीख ॥ वी०  
 ॥ १४ ॥ इम अनेक तें ऊपरया, कहुं तोरा हो केता अवदात ॥  
 सार करो हिव माहरी, मनमाहे हो आणो मोरनी वात ॥ वी०  
 ॥ १५ ॥ सूयो संजम नहि पले, नही तेहवो हो मुज्ज वरसण  
 ज्ञान ॥ पिण आधार वै एतलो, एक तोरो हो धरुं निश्चल ध्यान

ची० ॥ १६ ॥ मेह महितल वरसतो, नवि जेवे हो सम विखमी  
 कांम ॥ गिरुवा सहजे गुण करे, स्वांनी सारो हो मोरा वंठित  
 कांम ॥ वी० ॥ १७ ॥ तुम नांमे सुख संपदा, तुम नांमे हो डुख  
 जाये दूर ॥ तुम नांमे वंठित फलै, तुम नामे हो मुऊ आनंद पूर  
 ॥ वी० ॥ १८ ॥ कलस ॥ इम नगर जेसलमेरु ममन, तीर्थकर  
 चोवीसमो ॥ सासनाधीश्वर सिंह खठन, सेवता सुरतरु समो ॥  
 जिनचंद्र त्रिसलामात नंदन, सकलचंद्र कला निलो, वाचनाचारज  
 सनयसुंदर ॥ संयुणयो त्रिचुवन तिलो ॥ १९ ॥ इति श्री माहा  
 चीर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ चोवीस दंडक स्तवनं ॥

॥ बाल १ ॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

॥ पूर मनोरथ पास जिनेसर, एह करुं अरदास जी ॥ ना  
 रण तरण विरुद तुऊ साजलि, आयो हूं धर आस जी ॥ पू० ॥ १ ॥

इण संसार समुड् अथागे, जमियो जवजल मांदिजी ॥ गिलगिचिया  
 जिम आयो गिरुतो, साहिव हाथे साहि जी ॥ पू० ॥ २ ॥ तूं  
 झानी तोपिण तुऊ आगे, वीतक कहिये वात जी ॥ चोवीसे दंरु  
 क हूं जमियो ॥ वरणूं तेह विख्यात जी ॥ पू० ॥ ३ ॥ साते न  
 रकतणो इक दंरुक, असुरादिक दस जाण जी ॥ पाच थावर नें  
 तीन विकलेंडी ॥ उगणीस गिणती आण जी ॥ पू० ॥ ४ ॥ पंचें  
 डी तिर्यच ने मानव, एह थया इकवीस जी ॥ व्यंतर ज्योतपो  
 नें वैमाणिक, इम दंरुक चोवीस जी ॥ पू० ॥ ५ ॥ पंचेंडी तिर्यच  
 अने नर, परयाप्ता जे होय जी, ए चोविह देवामें ऊपजे, इम देवा  
 गति दोय जी ॥ पू० ॥ ६ ॥ असंख्यात आजसौ नर तिरि, निहचै  
 देव ज थाय जी ॥ निज आजलै सम के नुंयै, पिण अधिके नवि  
 जाय जी ॥ पू० ॥ ७ ॥ जवनपती के व्यंतर नाई, समूर्द्धिम तिर्यच



जी ॥ सरग आठमां तांड पोहचै, गरज्ज सुकृत संच जी ॥ पू० ॥  
॥ ८ ॥ आठ सरख्यातै जे गरज्ज, नर तिरजच विवेक जी ॥ वादर  
पृथ्वी नै वलि पाणी, वनस्पती प्रत्येक जी ॥ पू० ॥ ए ॥ पर्याप्त  
इण पांचे ठामे, आवी ऊपजै देव जी ॥ इण पाचा माहे पिण  
आगै, अधिकारि कहु देव जी ॥ पू० ॥ १० ॥ तीजा सरगथकी  
मानी सुर, एकैडी नवि थाय जी ॥ अठमथी ऊपरला सगला,  
मानवमाहे जाय जी ॥ पू० ॥ ११ ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ आज निहेजोरे दीसै नाहलो ॥ ए देसी ॥

नरकतणी गति आगति इण परै, जीव जमै संसार।दोय गति  
नै दोय आगत जाणियै, वलिय विशेष विचार ॥ न० ॥ १२ ॥ सं-  
ख्याते आयु परजापता, पंचेडी तिरयंच ॥ तिमहीज मनुष्य एहि-  
ज वे नरकमें, जायै पाप प्रपच ॥ न० ॥ १३ ॥ प्रथम नरक लग  
जाय असन्नियो, गोह नकुल तिम वीय ॥ गृध्र प्रमुख पंखी त्रीजी  
सगे, सींह प्रमुख चोथीय ॥ न० ॥ १४ ॥ पंचमी नरकै सीमा सा  
पणी, ठठि लग स्त्री जाय ॥ सातमिये माणस के मावलो ॥ ऊप  
जै गरज्ज आय ॥ न० ॥ १५ ॥ नरकथकी आवे विहुं दंभकै,  
तिरयंच के नर थाय ॥ तेपिण गरज्ज ने परयापता ॥ संख्याती  
जसु आय ॥ न० ॥ १६ ॥ नारकिया ने नरकथी नीसरथा, जे  
फल प्रापति होय ॥ उरठुष्टे जागे करते कहुं, पिण निश्चै नही को  
य ॥ न० ॥ १७ ॥ प्रथम नरकथी चवि चक्रवर्ति हुवै, वीजी हरि  
वलदेव ॥ तीजी लग तीर्थकरपद लहै ॥ चोथीकेवल एव ॥ न० ॥  
॥ १८ ॥ पंचम नरकनो सरवविरति लहै, ठठि देसविरत्त ॥ सातमी  
नरकनो समकित्ठी लहै, न हुवै अधिक निमत्त ॥ न० ॥ १९ ॥

कमर चलयो रे ॥ ए देशी ॥

रे, एहनो इम अधिकार

॥आञ्ज संख्यातै नर सहु दंरुके रे, आवी लहै अवतार॥मा०॥१०॥  
 तेउ वाञ्ज दंरुक वे तजो रे, वोजा जे वावैस ॥ तिहायी प्राया आयै  
 मानवी रे, सुख डुव कर्म सरीस ॥ मा० ॥ २१ ॥ नर तिरयंच अतं  
 खी आञ्जयै रे, सातमी नरकना लेन ॥ तिहायी मरनें मनुष्य हुये  
 नही रे अरिहत जारुयो एम ॥ मा० ॥ २२ ॥ वासुदेव बलदेव  
 तथा वली रे, चक्रवर्त्त ने अरिहंत ॥ सरग नरगना प्राया ए हुवै रे,  
 नर तिरिथी न हुवत ॥ मा० ॥ २३ ॥ चोविह देव धकी चवि ऊप  
 जै रे, चक्रवर्त्ति बलदेव ॥ वासुदेव तीर्थकर ए हुवै रे, वैमानिकथी  
 वेव ॥ मा० ॥ २४ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥ नाभि अने मरुदेवा ॥ ए देखी ॥

दिव तिरयच तणी गति आगति कहिये अशेष, जीव जमें  
 इण पर जव माहे करम विशेष ॥ आञ्ज संख्यातो जे नर तिर्यंच  
 विचार, ते सगला तिरयचा माहे लहै अवतार ॥ २५ ॥ जिण  
 निरयंचा माहे आवे नारक देव, ते कहा पदली तिण कारण न कहूं  
 हेव ॥ पंचेडी तिर्यंच संख्यातै आऊखै जेह, ते मरी त्रिहुंगतिमा  
 जावे इहा नही संदेह ॥ २६ ॥ धावर पांच तीने विरुलेंड आठ  
 कहावे, तिहांथी आञ्ज संख्याता नर तिरयंचमें आवे ॥ विकल चवो  
 लहै सरवविरति पिण सुगति न पावै, तेउ वाञ्जयी आयो तेहनें  
 समकित नावै ॥ २७ ॥ नारक वरजाने सगलाही जीव संसार,  
 पृथ्वी आञ्ज वनस्पतीमाहि लहै अवतार ॥ ए तीनें इहांथी चवि  
 आवै दसे ठामे, धावर विकल तिरा नरमाहै उतपत पामै ॥ २८ ॥  
 पृथ्वीकाय आद देई दस दंरुके एह, तेउ वाञ्ज माहे आवी ऊपजै  
 तेह ॥ मनुष्य विना नव माहे तेउ वाञ्ज वे जावै, विकलेंडी ते  
 दतमाहि जावै पूठाही आवै ॥ २९ ॥ एम अनादितणो मिथ्याल्वी  
 जीव एकंत, वनस्पती माहे तिहा रहियो काल अनत ॥ पुढवी

पाणी अग्नि अने चोयो वलि वाय, कालचक्र असंख्याता तांइ  
जीव रदाय ॥ ३० ॥ वेइंझी तेइंझी अने चौरिद्री मजारै, संख्याता  
वरसां लगे जमियो करम प्रकारै ॥ सात आठ जव लागि ता नर  
तिरयचमें रहियो, दिव मानवजव लहिनें साधुनें वेपमें रहियो  
॥ ३१ ॥ राग छेप वूटे नही किम हुवे वूटकवार, पिण ठै माहरै  
मनसुध ताहरो एक आधार ॥ तारण तरण में त्रिकरण सुद्ध अ-  
रिहत लाधो, दिव संसार घणो जमिवोतो पुदगल आधो ॥ ३२ ॥  
तूं मन वठित पूरण आण्ड चूरण सामी, ताहरी सेव लही तो में  
नवनिध सिद्ध पामो ॥ अवर न काइ इच्छू इण जव तूंहिज देव,  
सूधै मन इक होज्यो जव२ ताहरी सेव ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम सकल सुखकर नगर जेतल, मेर महिमा दिन दिनें ॥  
संवत सतर उगणतीसै, दिवस दीवाली तणै ॥ गुणविमल चद  
समान वाचक, विजय हरप सुतीस ए ॥ श्री पासना गुण एम  
गावै, धरमसी सुजगीस ए ॥ ३४ ॥ इति श्री चोवीस दंभक स्तवनं ॥

॥ अथ इरियावही मित्रामिडुक्कड सख्या स्तवनं ॥

॥ प्रभु प्रणमू रे पास जिनेसर यभणो ॥ ए देसी ॥

पद पकज रे प्रणमी वीर जिनंदना, त्रिकरण सुद्ध रे करि  
मुनिवर पय वंदणा ॥ एमत्ते रे पम्किमी जिम इरियावही, श्री  
वीरनी रे वाणी तहत्त कर सरदही ॥ उल्लाखो ॥ सरदही वाणी  
मन सुहाणी, चित्त आंणी ते वली ॥ मित्रामिडुक्कड तणी संख्या,  
कहिसुं जिम कहे केवली ॥ जू दग जलण तिम वाउ, वणसइ  
विगल पण इडी तणी ॥ करतां विराहण करम बंध्या, डुर ते क-  
रिवा जणी ॥ १ ॥ चाल ॥ पुनवि दग रे वाउ तेज वणसइ, पण  
धावर रे वादर सुहम दसे अई ॥ प्रत्येकज रे वणसइ इग्यारह

थया, वावीस्ति रे पङ्कतग अपङ्कतया ॥ उल्लाखो ॥ पङ्कत अपङ्क-  
 तग वखाण्या, विगल तिय उह ज्ञाल ए ॥ जल थल खचर जुयंग  
 डुइ, पण इंइय तिरि अरुयाल ए ॥ तस्मादि साते नरक पुन्वी,  
 नारकी तिहा सात जे ॥ ते चवढ जेदे करी जाणो, पङ्कतय अ-  
 पङ्कत जे ॥ २ ॥ चाल ॥ पनरह विध रे सुरगण परमा इन्मिया,  
 किलविपिया रे त्रिविध करम ते निन्मिया ॥ जंजिय दस रे नव  
 लोमंतिक जाणियै, सोलह विध रे व्यतर देव वखाणियै ॥ उल्लाखो ॥  
 वखाणियै दस विध चुवनपतिना, तार रवि सशि रिसिगहा ॥ चर  
 थिर दसै विध जोइसी सुर, वखाण्या जिनवर जिहां ॥ वारह  
 विमाणह पण अनुत्तर, नवग्रीवैके नव ज्ञण्या ॥ पङ्कत अपङ्कतग  
 अठाणूं, अधिक सत संख्या गिण्यां ॥

॥ दाल ॥ २ ॥ मेव आगम सही ए ॥ देशी ॥

पंचनरत वलि ऐरवत पंच पंच विदेहवर जूमिका ए ॥ खेत्र  
 ए पनरह करम जूमि जाणायै अस्ति कस्ति मस्तिहि आजीविकाए ॥  
 हेमवत खेत्र वलि तिम दरिवर्ष रम्यक ऐरण्यवत सहीए ॥ मेरुपिया  
 पाखती चारि ७ खेत्र दस कुरु अकरम जूमीकहीए ॥ ४ ॥ हिम-  
 गिर सिहरीय दाढ चीयारि लवण समुड्मांदि विस्तरीए ॥ सात  
 २ अतर दोय पासै दीप वप्पन्न अन्तर धरीए ॥ दोइसै जेद डुइ  
 आगला जांणी मणुय पङ्कत अपङ्कतयाए ॥ एक सौ एक समुष्टिम  
 जेद तीनसै तीनमणुआ थयाए ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ हिव जनम्या जगगुरु ॥ ए देशी ॥

पणस्य त्रेसठिविध जीवसहू ठे एह अजिह्य आदिक दस  
 गुणित करीजै तेह ॥ पणसहस ठसै वलि त्रीस अधिकते जाणि ॥  
 ते रागै दोसै डुगुण करी वखाण ॥ ६ ॥ डुइ सहस इग्यारह डुइ-  
 सय साठि प्रमाण ॥ ए प्रवचनवाणी जाणो हितउर आण ॥ मन-

वच काया करि त्रिगुणाकरि त्रियक ॥ तेतीस सहस सत सात-  
 असी नि तक ॥ ७ ॥ बलि करण करावण अनुमति त्रिगुण कि ६ ॥  
 इकलकख सहसइग तिसय चालीस प्रसिद्ध ॥ अतीत अनागत  
 वर्त्तमान बलिकाल जे थइयविरायना तिणि त्रिगुण सज्जाल ॥ ८ ॥  
 तीन लाख सहस च्यार वेत्तै अधिक तेथाय ॥ अरिदंत प्रमुख गढ  
 साखै उगुण ज्ञाय ॥ इम लाख अटारह बलि सहस चनवीस ॥  
 इकसो बीसोत्तर हुइ संख्या निसदीस ॥ ९ ॥

॥ बाल ४ यी ॥ चोपइनी ॥ ए देशी ॥

॥ इण परि मिच्छामि डुक्करुदेई जविक तरया जवजल नि  
 धिकेई ॥ तरै अठै बलि आगलि तरिसी ॥ निरमल केवल लखमी  
 वरिसी ॥ १० ॥ इरियावही धरम गंगाजल ॥ न्हाण करै आतम  
 करि निरमल ॥ से मुखजापै वीर जिणोत्तर ॥ सूत्रकरि गूथै ते श्रु  
 तधर ॥ ११ ॥ इम पम्किमी मुनिवर अइमत्तो ॥ वीरसीस केव  
 ल पदपत्तो ॥ त्रिऊरण सुध तसु पय प्रणमी जै ॥ मानव जनम  
 सफल इम कीजै ॥ १२ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम वीरजिणवर ग्यान दिणयर सयललोय सुदंकरो ॥  
 तियलोय सामि सिद्धिगामी सुद्ध धरम धुरंगरो ॥ उवजाय लक्ष्मी  
 किर्ति सीसै जैनवाणी मन धरी ॥ गणि लछिवल्लज तवन करि  
 इम संघुणयो ज्ञावै करी ॥ १३ ॥ इति इरियावही मिच्छामि डुक्करु  
 संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ पंच समवाय स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथ सुत वदीए, जगदीपक जिनराजा ॥ वस्तु-  
 तत्व सवि जाणीए, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादधी  
 संपजे, सकल वस्तु विख्यात ॥ तस जग रचना विना, बधन

बेसे वात ॥ ७ ॥ वाद वदे नय जूजुआ, आप आपणे ठाम ॥  
 पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥ ३ ॥ अंध पुरुषे एह  
 गज, ग्रही अवयव अकेरु ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्ण गज, अवयव मिला  
 अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकल नये करी, जुगति योग शुद्ध बाध ॥  
 धन्य जिनशासन जग जयो, जिहां नदीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ राग आशावरी ॥

श्रीजिनशासन जग जयकारी स्यादाव शुद्ध रूप रे ॥  
 नय एकांत मिथ्यात्व निवारण, अरुल अजंग अनूपरे ॥ ६ ॥  
 ॥ श्री० ॥ कोइ कहे ए कालतणे वस, सकल जगत गत होय रे ॥  
 काले ऊपजै विणसे काले, अवर न कारण कोइ रे ॥ ७ ॥ श्री० ॥  
 काले गर्ज धरे जग वनिता ॥ काले जनमे पूत रे ॥ काले षोले  
 काले चाले, काले जाले घरसूत रे ॥ ८ ॥ काले दूधअकी दही धायै,  
 काले फल परपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपावै, अंत करे वे  
 वाक रे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ जिनचत्रवीसै वार चक्रवै, वासुदेव बलवंत  
 रे ॥ काले कविलत कोइ न दीसै, जसु करता सुर सेव रे ॥ १० ॥  
 ॥ श्री० ॥ उत्सर्पिणी अवसर्पणी आरा, वै वै जूजूये जाते रे,  
 पट् ऋतु काल विशेष विचारो ॥ जिन २ दिन रात रे ॥ ११ ॥ श्री० ॥  
 काले बाल विलास मनोहर, यौवन काला केश रे ॥ बुद्धपणे हुय  
 बलिष् छर्वल, सकत नदी लवलेस रे ॥ १२ ॥ श्री० ॥

॥ दाल ॥ २ री ॥ गिरुवा गुण श्रीवीरजी ॥ ए देशी ॥

तव स्वज्ञाववादी वदे जी, काल किसुं करै रक ॥ वस्तु स्वज्ञावे  
 नीपजे जी, विणसे तिमज निस्तरु ॥ १३ ॥ सुविवेक विचारो जुओ  
 ७ वस्तु स्वज्ञाव ॥ ए आकणी ॥ उते योग यौवनवतीजी, वाऊणि  
 न जणै बाल ॥ मूठ नही महिला मुखै जी, करतल ऊगै न बाल  
 ॥ १४ ॥ सु० ॥ विण सज्ञाव नवि सपजै जी, किमह पदारथ कोय ॥

श्रंघ न लागे नीवमै जी, वाग वसंते जोय ॥ १५ ॥ सु० ॥ मोरपठ  
 कुण चोतरे जी, कुण करे सध्यारंग ॥ अग विविध सब जीवना जी,  
 सुदर नयण कुरग ॥ १६ ॥ सु० ॥ काटा बोर दंडूलना जी, कुणें अशि-  
 याला कीध ॥ रूप रग गुण जूजूग्रा जी ॥ तस फल फल प्रतिदा ॥  
 ॥ १७ ॥ सु० ॥ विसदर मस्तके नित वसे जी, मणि हरै विस  
 ततकाल, परवत थिर चल वायरो जी, ऊरघ अगननी जाल ॥ १८ ॥  
 ॥ सु० ॥ मछ तुव जलमा तिरै जी, बूमै काग पाहाण ॥ पख जाति  
 गयणे फिरै जी ॥ ङण परै सहिज विनाण ॥ १९ ॥ सु० ॥ वाय  
 सुंठ्या उपशमें जी, हरमे करै विरेच ॥ सीकै नही कण कागमो जी ॥  
 तकल स्वजाव अनेक ॥ २० ॥ सु० ॥ देस विशेषै काठनो जी,  
 भुयमा धायै पाखाण ॥ सख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्र स्वजाव  
 प्रमाण ॥ २१ ॥ सु० ॥ रवि तातो सगि सीयलो जी, जव्यादिक  
 बहु जाव ॥ ठए डव्य आपायणा जी, न तजै कोइ सुजाव ॥  
 ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ डाल ॥ ३ ॥ कपूर हुरै अति ऊजळो रे ॥ पदेसी ॥

काल किसु करै वापमो रे, वस्तु स्वजाव अकळ ॥ जो न  
 होय जवतव्यता जी, तो किम सीजै कळा रे ॥ २३ ॥ प्राणी म  
 करो मन जजाल, ए तो जावी जाव निहाल रे ॥ प्रा० ॥ ए  
 आकणी ॥ जलवि तरै जगल फिरै जी, कोरि यतन करे कोय ॥  
 अणजायी होये नही जी, जावी होय ते होय रे ॥ २४ ॥ प्रा० ॥  
 आवै मोर वसंतमा जी, मालै केइ लाख ॥ खरघा केइ खाखटी  
 जी, केइ प्राधा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ २५ ॥ वाउल जिम जव  
 तव्यता जी, जिण जिण विसै उजाय ॥ परवग मन मानसतणो जी,  
 तृण जिम पूजे धायरे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ नियत वसें पिण चितव्यं  
 जी, आवी मिलै ततकाल ॥ वरसा सोनुं चितव्यो जी, नियत कर

विसराल रे ॥ प्रा० ॥ २७ ॥ धावमो चक्री सुजूमिते जी, समुद्र  
 पन्थो विकराल ॥ ब्रह्मदत्त चक्री तणाजी, नयण हरै गोवाल रे ॥  
 प्रा० ॥ २८ ॥ कोकूहा कोयल करै जी, किम राखीस रे प्राण ॥  
 आहेमी तर ताकियो जी, ऊपर जमें सीचाण रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥  
 आहेमी नागे रुस्यो जी, बाण लग्यो सीचाण ॥ कोकूहो ऊनी  
 गयो जी, कोठ नियत परमाण रे ॥ प्रा० ॥ ३० ॥ सख हण्यां  
 संग्राममां जी, रात पन्था जीवंत ॥ मंदिरमाहे मानवी जी,  
 राख्याही न रहंत रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ गारुणी मनीहरणी ॥ ए देशी ॥

काल स्वजाव नियत मति रूनी, करम करे ते थाय ॥  
 करमें नरय तिरिय नर सुर गति, जीव जवंतरै जाय ॥ ३२ ॥  
 चेतन चेतज्यो रे करम न ठूटै कोय ॥ ए आंकणी ॥ करमें  
 राम घस्या वनवासै, सीता पामी थाल ॥ कर्म लंकापति रावणनु,  
 राज्य घयो विसराल ॥ ३३ ॥ चे० ॥ कर्म कीमी कर्म कुंजर ॥  
 कर्म नर गुणवंत ॥ कर्म रोग सोग डख पीमित, जनम जायै  
 विलसंत ॥ ३४ ॥ चे० ॥ कर्म वरस लगे रिसहेसर, उदक न पामे  
 अन्न ॥ कर्म जिननें जोठ निमा रे, खोला रोप्या कन्न ॥ ३५ ॥  
 ॥ चे० ॥ कर्म एक सुखपाले वैसै, सेवक सैवै पाय ॥ एक हय  
 गय चढ्या चतुरनर, एक आगल ऊजाय ॥ ३६ ॥ चे० ॥ उद्यम  
 मानी अंधतणी पर, जग हिनै हाहूतो ॥ कर्म बली ते लहै  
 सकल फल, सुखजर सैजै सूतो ॥ ३७ ॥ चे० ॥ ऊंवर एके  
 कीधो उद्यम ॥ करंणीयो करकोले ॥ माहे घणा दिवसनो नूखो,  
 नाग रह्यो रुमकोले ॥ चे० ॥ ३८ ॥ विवर करी मूपक तसु  
 मुखमां, दीयै आपणूं वेह ॥ मार्ग लही वन नाग पधारधा,  
 कर्म मर्म जोवो एह ॥ ३९ ॥



॥ ढाल ६ मी ॥ तो चढियो घन मान गमे ॥ प देखी ॥

द्विव उद्यमवादी जणे ए, ए च्यारे असमञ्च तो ॥ सकल  
पदारथ साधवा ए, उद्यम एक समरञ्च तो ॥ ४० ॥ उद्यम  
करता मानवी ए, स्युं नवि सीऊँ काज तो ॥ रामें रयणायर तणी  
ए, लीधो लका राज तो ॥ ४१ ॥ करम नियत ते अणुसरै ए, जेदमां  
सत्व न होय तो ॥ देवल वाघमुख पंखिया ए, पिउ पैसता जोय  
तो ॥ ४२ ॥ विन उद्यम कीम नीकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥  
उद्यमथी उची चढै ए, जोवो एकेंद्रिय वेल तो ॥ ४३ ॥ उद्यम  
करता एक समें ए, जेद न सीऊँ काज तो ॥ ते फिर उद्यमथी  
हुवे ए, जो नवि आवे वाज तो ॥ ४४ ॥ उद्यम करि ऊरघा विना  
ए, नवि रघायै अन्न तो ॥ आवी न पमै कोलियो ए, मुखमा क्षेपे  
जतन्न तो ॥ ४५ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यम कीधा कर्म  
तो ॥ उद्यमथी दूरे टलै ए, जोउ कर्मनो मर्म तो ॥ ४६ ॥ दृढप्र  
हार इत्या करी ए, कीधा पाप श्रारंज तो ॥ उद्यमथी खट मासमा  
ए, आप घया अरिहत तो ॥ ४७ ॥ टीपैश् सरवर जरै ए, का  
करे ३ पाल तो ॥ गिर जेदवा गढ नीपजे ए, उद्यम सकत निहाल  
तो ॥ ४८ ॥ उद्यमथी जलविंडुठ ए, करे पाहाणमा ठाम तो ॥  
उद्यमथी विद्या जणै ए, उद्यम जोदै दाम तो ॥ ४९ ॥

॥ ढाल ६ ॥ ए छिडी किहां राखी ॥ ए देखी ॥

ए पांचेही वाद करंता, श्रीजिन चरणे आवै ॥ अमिय  
रसै जिन वयण सुशीने, आणद अंग न मावै रे ॥ ५० ॥ प्राणी  
समकित मति मन आणो ॥ नय एकांत म ताणो रे ॥  
॥ प्रा० ॥ ते मिथ्या मति जाणो रे ॥ प्रा० ॥ ए आकणी ॥ ए  
पांचे समवाय मिढ्या विन, कोइ काज न सीऊँ ॥ अगुल जोगै

कवल तणी पर, जे बूजै ते रोजै रे ॥ प्रा० ॥ ५१ ॥ आग्रह आणी  
 कोइ एकनें, एहमां वियै वनाई ॥ पिण सेना मिल सकल रणंगण,  
 जांते सुजट लमाई रे ॥ प्रा० ॥ ५२ ॥ तंतु स्वजावे पट उपजावै,  
 काल क्रमे वणाई ॥ ज्वितव्यता होय ते नीपजे, नही तो विघन  
 घणाई रे ॥ प्रा० ॥ ५३ ॥ तंतुवाय उद्यम जोक्तादिक, जाग्य सख  
 सहकारी ॥ ए पांचे मिल सकल पदारथ, उतपत जोवो विचारी  
 रे ॥ प्रा० ॥ ५४ ॥ नियत वसे हलु कर्म अर्शनें, निगोदघाती नीक-  
 लियो ॥ पुण्ये मनुज जवादिक पामी, सद्गुरुनें जइ मिलियो रे  
 प्रा० ॥ ५५ ॥ ज्वथितनो परपाक थयो तव, पंमित वोर्य उल्ल-  
 सियो ॥ ज्व्य स्वजावै शिवगति गामी, शिवपुर जशनें वसियो रे  
 ॥ प्रा० ॥ ५६ ॥ वर्धमान जिन इण पर वीनवै, सासन नायक गा  
 वो ॥ संघ सकल सुखदाई जेहथी, स्यादाद रस पावो रे ॥ प्रा० ॥ ५७ ॥

॥ कलश ॥

॥ इम धर्म नायक मुगति दायक, वीर जिनवर संशुणयो  
 ॥ तय सतर संवत वह्नि लोचन, वर्ग इर्थ धरी घणो ॥ श्रीविजय  
 देव सुरिंद पटथर, विजयप्रज्ञ मुण्डिद ए ॥ कीर्तिविजय वाचक  
 सीत इण पर, विनय कहे आणंद ए ॥ ५८ ॥ इति श्री पञ्च स  
 मवाय स्तवनं ॥

॥ अथ १४ गुणठाणा स्तवनं ॥

॥ यवणपुर श्रीपास जिणंदो ॥ ए देशी ॥

॥ सुमति जिणंद सुमति दातार, वंदू मन सुध वारंवार,  
 आणी जाव अपार ॥ चवदै गुण धानक सुविचार, कहिस्थुं सूत्र  
 अरथ मन धार, पामे जिम जव पार ॥ १ ॥ प्रथम मिष्ठानत कह्यो  
 गुणठाणो, बीजो सास्वादन मन आणो, तीजो मिश्र वखाणूं ॥ चो  
 थो अविरत नाम कहाणो, देशविरति पंचम परमाणो, उणे प्रमत्तं

पिठाणुं ॥ २ ॥ अप्रमत्त सत्तम सलहीजै, अहम, अपुरव करण  
 फहीजै, अनिवृत्ति नाम नवम् ॥ सुखम लोचन दसम सुविचार,  
 उपशात मोह नाम इग्यार, स्त्रीणमोह बारम् ॥ ३ ॥ तेरम  
 सयोगी गुणधाम, चवदम थयो अजोगी नाम, वरणुं प्रथम  
 विचार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म वखाणै, ए लक्षण मिथ्या गुणगणै,  
 तेहना पंच प्रकार ॥ ४ ॥

॥ दाळ ॥ २ ॥ सफल ससारनी ॥ ए देशी ॥

॥ जेह एकांतनय पद धापी रहै, प्रथम एकांत मिथ्यामती  
 ते कहै ॥ जैन शिव देव गुरु सहु नमै सारखा, तृतीय ते विनय  
 मिथ्यामती पारिखा ॥ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प धरणें, संस  
 यी नाम मिथ्यात चोथो जणै ॥ ६ ॥ समज नही काय निज  
 धद रातो रहै, एह अज्ञान मिथ्यात पंचम कहै ॥ एह अनादिअ  
 नंत अजव्यनें, करिय अनादि धिति अंतसुजव्यनें ॥ ७ ॥ जेम  
 नर खीर घृत खंरु जिमनें वमें, सरस रस पाय वलि रुवाद केहवो  
 गमें ॥ चौथ पंचम ठठै गण चढने परे, किणहि कषाय वस आय  
 पहलै अरु ॥ ८ ॥ रहै विच एक समयादि पट आवली, सहोय  
 सासादनें धित इसी साजली ॥ हिव इहा मिश्र गुणगण तीजो  
 कहै, जेह उत्कृष्ट अतरमदुरत लहै ॥ ९ ॥

॥ दाळ ॥ ३ ॥ बे कर जोडी ताम ॥ ए देशी ॥

॥ पहिला च्यार कषाय, सम कर समकितो, कैतो सादि  
 मिथ्यामती ए ॥ ए वेह्निज लहे मिश्र, सत्य असत्य जिहां, सर  
 दहणा बेऊ वती ए ॥ १० ॥ मिश्र गुणालय माहि, मरणा लहै  
 नही, आज बंधनपरु नवो ए ॥ कै तो लहै मिथ्यातकै समकि  
 त लहै, मति सरखी गति परजवै ॥ ११ ॥ च्यार अप्रत्याख्यान,  
 उदय करी लहै, मति विन किहा समकितपणो ए ॥ ते अविरत

गुणगण, तेत्रीस सागर, साधिक धिति एदनी जणी ए ॥ १२ ॥  
 दया उपशम संवेग, निरवेद आसता, समकित गुण पांचै धरै ए ॥  
 सद्गु जिन वचन प्रमाण, जिन शासन तणी, अधिक २ उन्नत करै  
 ए ॥ १३ ॥ कोईक समकित पाय, पुदगत अरधतां, उत्कृष्टा जव  
 में रहै ए ॥ केइएक जेदी गंठि, अंतरमहुरते, चढते गुण शिवपद  
 खहै ए ॥ १४ ॥ च्यार कषाय प्रथम्म, त्रिण बलि मोहनी, मिथ्या  
 मिश्र सम्यक्तनी ए ॥ साते प्रकृति जास, परही उपशमें, ते उप  
 शम समकित धणी ए ॥ १५ ॥ जिण साते कय कीध, ते नर  
 क्हायकी, तिणदिज जव शिव अनुसरै ए ॥ आगलि बाध्यो आऊ,  
 तातें तिहां थकी, तीजै चोथे जव तिरै ए ॥ १५ ॥

॥ बाल ॥ ४ ॥ इण पुर कबल कोइ न लेसी ॥ ए देसी ॥

पंचम देसविरति गुणगण, प्रगटै चोकनी प्रथारव्यान ॥ जेज  
 तजैवा वीस अजक, पाम्यो श्रावकपणो प्रत्यक ॥ १७ ॥ गुण  
 इकवीस तिके पिण धारै, साचा वारै व्रत संजारै ॥ पुत्रादिक पट्ट  
 कारज साथै, इग्यारै प्रतिमा आराधै ॥ १८ ॥ आरंभ नैउ ध्यान हे  
 मंद, आयो मध्य घरम आणंद ॥ आठ वरस उगी पुत्रकोन, पंचम  
 गुणगणो धित जोरु ॥ १९ ॥ द्विव आगे साते गुणग्रान, इक २  
 अंतरमहुरत मान ॥ पंच प्रमाद वसै जिण गान, तेष प्रमत्त उबो  
 गुणधाम ॥ २० ॥ धिवरकलप जिनकलप आचार, सावै पट्ट आर-  
 स्यक सार ॥ उद्यत चोथा च्यार कषाय, तेष प्रमत्त इतनेक  
 कहाय ॥ २१ ॥ रुयो राखै चित्त समाधे, घरम ध्यान एकरे  
 आराधै ॥ जिहा प्रमाद क्रिया विघ्न नासै, इतनेक सवन  
 गुण जासै ॥ २२ ॥

॥ बाल ॥ ५ ॥ नदी यमुनाके तीर वडै द्रोप  
 पहिले अंसे

ते गणें ॥ उपशम श्रेणि चढै जे नर हुवै उपशमी, कृपकश्रेणि  
 क्रायक, प्रकृति दस कृप गमी ॥ २३ ॥ तिहां चढता परिणाम  
 अपूरव गुण लहै, अरु नाम अपूरव करण तिणें कहै ॥ सुकल  
 ध्याननो पहिलो पायो आदरै, निरमल मन परिणाम अरुिग ध्याने  
 धरै ॥ २४ ॥ हिव अनिवृत्त करण नवमो गुण जाणियै, जिहां जाव  
 थिररूप निवृत्ति न जाणियै ॥ क्रोध मान ने माया संजलणा हणें,  
 उवै नही जिहा वेद अवेदपणो तिणें ॥ २५ ॥ जिहा रहै सुखम  
 लोचन कांडक शिव अजिलखै, ते सुखम संपराय दसम पंक्ति अखै ॥  
 संत मोह इण नाम इग्यारम गुण कहै, मोह प्रकृति जिण गंम  
 सहू उपशम लहै ॥ २६ ॥ श्रेणि चढयो जो काल करै किणही  
 परै, तो थायै अहमिइ अवर गति नादरै ॥ च्यार वार समश्रेणि  
 करै संसारमें, एक जेवे दोय श्रेण अधिक न हुवे किमें ॥ २७ ॥  
 चढि इग्यारम सीम समीप पहिले पडै, मोह उदय उत्कृष्ट अरुध  
 पुदगल रहै ॥ कृपकश्रेणि इग्यारम गुणठाणो नही, दशमथकी  
 वारम्भ चढै ध्याने रही ॥ २८ ॥

॥ दाल ॥ ६ ॥ एक दिन कोइ मागव आयो पुरंदर पास ॥ प देसी ॥

खीणमोह नामे गुणठाणो वारम जाण, मोह स्वपायो नेमो  
 आयो केवलज्ञान ॥ प्रगटपणे जिहां चरित अमल यथा आख्यात,  
 हिव आगे तेरम गुणधान तणी कहै वात ॥ २९ ॥ घातीय चोकनी  
 कृप गई रहीय अघातीय एम, प्रकृति पिब्यासी जेहने जूना कप्पन  
 जेम ॥ दरसण ज्ञान वीरज सुख चारित पंच अनंत, केवलज्ञान  
 प्रगट थयो विचरै श्रीजगवंत ॥ ३० ॥ देखे लोक अलोकनी गानी  
 परगट वात, महिमावंत अढारै दोषण रहित विख्यात ॥ आठे वरसे  
 उरसी कही इक पूरवकोनि, उत्कृष्टै तेरम गुणठाणें ए थिति जोनि  
 ॥ ३१ ॥ कर सेलेसी करण निरुध्या मन वच काय, तेष अयोगी

अंतं समय सद्गु प्रकृति खपाय ॥ पांचे जयु अक्षर ऊचरता जेहनी  
मान, पंचम गति पांमें सिवपद चन्द्रम गुणधान ॥ ३२ ॥ त्रोजे  
चारमें तेरमें माहे न मरै कोय, पहिलो बीजो चौथो परजव साथे  
होय ॥ नारक देवनी गति माहे लाजै पहिला च्यार, धुरला पांच  
तिरी माहे मणु ए सर्व विचार ॥ ३३ ॥

॥ कलश ॥

इम नगर धादरु मेरु मंरुण, सुमति जिण सुपसाजलै ॥  
गुणघाण चवद विचार वरणयो, जेद आगमनें जलै ॥ संवत सतरैसै  
बत्तीसै, श्रावण वदि एकादसी ॥ वाचक विजय श्री हरप सानिध,  
कहे मुनि इम धर्मसी ॥ ३४ ॥ इति श्री चवदै गुणगणा स्तवनं ॥

॥ अथ नव तत्व भाषा गर्भित स्तवन ॥

॥ दूहा ॥ नमस्कार अरिदंतनें, सिद्ध सुरि उवजाय ॥ साधु  
सकल प्रणमी करी, प्रणामी श्रीगुरु पाय ॥ १ ॥ करस्युं हूं नव  
तत्वनी, गाथा ज्ञासा रूप ॥ मंद बुद्धि गुरु सानिधै, कदिस्युं  
सुगम सरूप ॥ २ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ सूरती महीनानी ॥ ए देसी ॥

जीव अजीवें पुण्य पाप तिम आश्रव सोय, संवर निज्जर  
बंध मोक्ष ए नव तत होय ॥ चवद २ बायाल वयासी बलि बायाल,  
सत्तावन बारै चौ नव क्रम जेदनी माल ॥ १ ॥ इग ड ति चौविह  
पणविह बबिह जीव कहाय, चेतन त्रस थावर वेदै गई करणे  
काय ॥ एगेदी सुखम वादर ए दोय जिय गण, सन्नि असन्नि  
पलिंदी वि ति चौरिंद्री आण ॥ २ ॥ ए सग पऊचा अपऊता चवदै  
होय, अनुक्रम जीव गण ए सूत्र प्ररूप्या सोय ॥ नाण वंसण  
चारित वीरज तप तिम उपयोग, ए धरु लक्षण लकत जीव इय  
इह लोग ॥ ३ ॥ इग आहार सरीर इंदिय पऊती तीन, सासोसास

ज्ञाया मन पर ए अनुक्रम लीन ॥ च्यार एगिंदी पंच पञ्जती  
 विगलें जोय ॥ पंच अतन्नि सन्नि तें पर पञ्जती होय ॥ ४ ॥ इंद्रिय  
 पाच उसास आऊ बल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ एगिंदी  
 विगलें जाण ॥ अतन्नि सन्नि पंचेडी नें नव दस क्रम आय, प्राणाश्री  
 जेवि प्रयोग जिय मरण कहाय ॥ ५ ॥ धम्माधम्म आगास तोनुना  
 त्रिणश् जेद, काल दसम इग आगास पुगल च्यार विवेद ॥ खंधा देस  
 पएस परमाणू चवद अजीव, धम्माधम्म पुगल नञ्ज काल ए पांच  
 न जीव ॥ ६ ॥ चक्षुष सहार्इ धम्मे धिर सठाण अधम्म, अवगाहें पूर्ण  
 गलणें नञ्ज पुगल धम्म ॥ समयावलिय महुत्त दीह पख मास नें  
 साल पढ्योपम सागर उत्तप्पणी सप्पणी काल ॥ ७ ॥ पर इग दो संग  
 संग संग पर इग अक गिणाय, एग मुहुत्तें आवलि संख्या सूत्र  
 कहाय ॥ तीन सात वलि सात तीन ऊमासे माण, केवलनाणी  
 जणियो एह महुत्त प्रमाण ॥ ८ ॥ सातो उच्च गोय मणु सुर दुग्ग  
 पंचिंदि जाय, पांच शरीर आदि प्रति शरीर उवंग कहाय ॥ आदि  
 संघेण संठाण चौवर्ण अगुरु लहु होय, परघ उसास तेम वलि आ  
 तप ने उज्जोय ॥ ९ ॥ सुज्जवगइ निम्माणत सादि दशु नीमाल,  
 सुर नर तिरि आऊ तिच्चकर पुण्य वयाल ॥ तस वादर पञ्जत ए  
 सेय धिरं सुज्ज सोय ॥ सुज्जग सुतरं आइऊ जलें तस दसको होय  
 ॥ १० ॥ नाणतराय दस कनव बीजा नीचअसाय, मित्थ आवर  
 दशनादग त्रिक पंचवीस कसाय ॥ तिरिय च दुग एकेडी वि ति  
 चौरिडी तेय, कूखंगई उपघा अपसत्थ वस चौ जेय ॥ ११ ॥ पढ  
 म संघयण विना सघेण तेम संठाण, एम वयासी प्ररुति पाप त  
 तनी ए जाण ॥ आवर सुद्धमं अपऊ साहारण अथिरै गेय, असुज्ज  
 दुज्जग दू सरणा इऊ अजस दस लेय ॥ १२ ॥ पण चौ पण तिय  
 इदि कसाय अद्वय तिम जोग वायालीस सेय पचीस क्रिया संजो

ण ॥ काइय अहिगरणीया पावसिया परिताप, प्राणनिवृत्त अ  
 ञकी परिगहियानो ताप ॥ १३ ॥ माया प्रत्यर निवृत्त अ  
 तेम, अपञ्चखाणकी दिठ पुठ पाहुच्चिय जेम ॥ १४ ॥ अणव कंख  
 याने सत्थि सहत्थै जेह, आक्षापनकी वेयागु अरनेह ॥  
 १४ ॥ अणव कंख षड्दयना उवलंगी समुदान, अणव कंख  
 ही किरिया ए कहिवाय ॥ सुमति गुपति परिगहियानो ताप  
 ए चारित्त, पणतिग वावीस दस वारै पण अणव कंख ॥ १५ ॥  
 रिया ज्ञावा एणणा सुमतीना जेह होय, अणव कंख अणव कंख  
 स्केवण पाचे जोय ॥ मनगुत्ती वयगुत्ती अणव कंख अणव कंख  
 व आगे वावीस परिसह कहूं हित आण ॥ १६ ॥ अणव कंख  
 सीत उत्तनं मासा निरवत्थ, अरति जोष अणव कंख अणव कंख  
 सत्त ॥ अक्रोसवहजायण अलाज रोग अणव कंख अणव कंख  
 ज्ञा अन्नाण समत्त समास ॥ १७ ॥ अणव कंख अणव कंख  
 सजम सम्म, सत्य सौच अकिचन अणव कंख अणव कंख  
 नित्य असरण संसार एग अनत्त, अणव कंख अणव कंख  
 वि ज्ञावो नित्त ॥ १८ ॥ लोक सुजाण अणव कंख अणव कंख  
 धरम साधक अरिहंत ए वारै ज्ञावण अणव कंख अणव कंख  
 रथापन बीजो सोय, परिहार विधु अणव कंख अणव कंख  
 ॥ १९ ॥ तिम अहस्काय चरित्त अणव कंख अणव कंख  
 विधि आचरणों के जिय पान्या अणव कंख अणव कंख  
 ना च्यार प्रकार, प्रकृति विई अणव कंख अणव कंख  
 अणसण उणोठर वृत्ति संखेप अणव कंख अणव कंख  
 बाहिर तप परु ज्ञाग ॥ पावण अणव कंख अणव कंख  
 ध्यान काठलग अ तप अणव कंख अणव कंख  
 ज्ञाव काल अ



नो संव ॥ पेट प्रतिहार धार तरवार मय वलि तेर्म, निगम चिप्र  
 कर कुंजकार जंकारी जेम ॥ २२ ॥ अनुक्रम आठ नामना ज्ञाप्या  
 जे जे ज्ञाव, तिम ज्ञानावरणादिक अरुना एद सज्ञाव ॥ इम संसेपे  
 विवरण कीना आठे तत्त, प्रस्तावै पांम्यो वरण वस्यु द्विव मोख  
 तत्त ॥ २३ ॥ संत पदै परूपण इव्य नै खेत्र प्रमाण, फरसन काल  
 पांचमो ठठो अंतर जाण ॥ जाग सातमो ज्ञाव आठ तिम अलप  
 बहुत्त ॥ ए नव जेदे ज्ञावन कस्युं नवमो तत्त ॥ २४ ॥ मोक्ष एक  
 पदवी वै जे पदेअविनाज्ञाव, व्योम कुसुम तिम सत्तिक शृंग जिम  
 नहीय अज्ञाव ॥ एहवो जे पद मोक्ष तेहनो मग्गण धार, विवरण  
 कर वरणवस्युं सुपाज्यो सुदुम विचार ॥ २५ ॥ संमत्तै क्षायक सत्री  
 अतत्री येसन्नि, अणहारी आहारी अणहारी ऊपन्न ह्य्य प्रमाणे सिद्ध  
 जीव ॥ इव्य होय अनंत, लोग असंखम जाग एग सिद्ध होय अणंत ॥  
 २६ ॥ फरसन क्षेत्रथी अधिक काल इग सिद्ध प्रतीत, सादि अनंती  
 थित जिन आगमथी सुविदीत ॥ प्रतिपाता ज्ञावै नहि सिद्धा अं  
 तर जोय, सरव जीवथी जाग अनंतम सद्दू सिद्ध होय ॥ २७ ॥  
 दंशण नाण जेहने वे ते क्षायक ज्ञाव, जीवत जेहने वलि परणाम  
 क ज्ञाव समाव ॥ सद्दुथी घोमा वेद नपुत्तकथी जे सिद्ध, तेहथी  
 थीनर अनुक्रम सख गुणा सुप्रसिद्ध ॥ २८ ॥ जे जाणे जीवादिक  
 नव तत्त तस सम्मत्त, अणजाणताने हुय जे सरधा नेरत्त ॥ सरव  
 जिनेसर मुखथी ज्ञाप्या वयण जहत्थ, ए बुद्धी जेहने मन संमत  
 निब्वल तत्थ ॥ २९ ॥ अतरमहुरत एग मात्र फरस्यो सम्मत्त, अ  
 र्द्ध पुग्गल परियट्ट नियम सत्तार निमित्त ॥ उत्तप्पणिय अणते इग  
 पुग्गल परियट्ट, अनत अतीत अनागत तद्गुण वयण प्रगट्ट ॥ ३०  
 ॥ इम नव तत्त जेद पन्निजेदै विवरण कीध, आवक आग्रह कीन  
 सहाय पूरण रस पीध ॥ कोटिक गुण सुत्त सदन प्रकास नवी उपमान,

श्रीजिनलालचंद्र कुल पूनमचंद्र समान ॥ ३१ ॥ अग्यानादिक  
करिवर सिद्धे वधरो साख, रत्नराजमुनि ते वरुसाखानी पम्सिखा ॥  
ग्यानसार ते पम्सिखाखानी सूखम माल, ए नव पद नव रयणे  
विनाएँ गूंथी माल ॥ ३२ ॥ संवहर निश्चय नय विगई प्रवचन  
माय, परम सिद्धि पद वाम गेंते ए अंक गिणाय ॥ माघ कितन  
ससि वार मेरु तिथ परन कीध, च्यार कथा तजि तत्वकथा ज्ञज  
नर फल लीध ॥ ३३ ॥ इति नवतत्व ज्ञापागर्भित स्तवनं ॥

॥ अथ दंडक भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ दूहा ॥ रूपज्ञादिक चोवीस नमि, तेहनो सूत्र विचार ॥  
दंरुक रचनायें तवुं, सखेपे निरधार ॥ १ ॥ नरक सात दंरुक  
प्रथम, असुरा नाग सुवन्न ॥ विज्जु अगन दीवो दही, दिसि पवणें  
अणियन्न ॥ २ ॥ पुढवी आठ तेउ वलि, वाठ वणस्सइ काय ॥ वि  
ति चौरिंदी गप्पर, तिरि नर तिहा मिलाय ॥ ३ ॥ व्यंतर जोइस  
वेमाशिया, ए दंरुक चोवीस ॥ एहना चार कहु द्विवै, गणनाये  
ते वीस ॥ ४ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ वीर जिणेसरनी ॥ ए देशी ॥

सरीर उगाइण संघयणेंसणा संठाण, कोहाई लेसिंदिय दो  
समुग्घाय प्रमाण ॥ दिठी दंसण नाण जोग तिम वलि उवयोग,  
उपपात वलि चवण ठिई पक्कति प्रयोग ॥ १ ॥ केदिसिनोआहार  
सन्नि गई आगयवेय, दार गाहा जुगनो ए अरथ कह्यो सकेव ॥  
द्वि तेवीस दारनो रहिस समय अनुसार, अलप रुची हुं तेहयो  
कहिसुं अलप विचार ॥ २ ॥

॥ दाल ॥ २ जी ॥ देसी सूरती महीनानी ॥

चौ गप्पर तिरि वाऊ कायें च्यार सरीर, मनुष्य सें पांच  
दंरुक इगवीस रह्या ति ॥ १ ॥ अवार च्यारनें जघन्य उकोसे देइ

प्रमाण, ज्ञाग असंख्यातम इग अंगुलनो परिमाण ॥ १ ॥ सरवनो  
 जघन्य स्वज्ञावक अंगुल ज्ञाग सख्यात, उक्कोसे पणसै धनु सागरने  
 विहात ॥ सुरनो सात हाथ गप्पय तिरि वणस्तय काय, जोयण  
 सहम साधक इक महस अनुक्रम थाय ॥ २ ॥ नर तेइदि तिगाउ  
 वेइदी जोयण वार, एग जोयण चउरेंडी देह उंचै आकार ॥ आरंज  
 कालै वैक्रिय देहनो ए परिमाण, ज्ञाग एक इग अंगुलनो सख्या-  
 तम जाण ॥ ३ ॥ सुर नरनें साधिक इक लाख जोयण इक लाख,  
 नवसै जोयण तिर्यचने ए सूत्रे साख ॥ साज्ञावकथी डुगणो नारक  
 वैक्रिय काय, एक महूरत नारय नर तिरि च्यार कहाय ॥ ४ ॥  
 सुरनें पद एक उक्कोसविजबण काल, विगल संघयणो थावर सुर  
 नारकनी माल ॥ गप्पय नर तिरनें परु विगलनें वेवढ एक, सख  
 जीवनें च्यार दसेसणाये लेप ॥ ५ ॥ नर तिरनें परु सुरनें सम-  
 चौरस सठाण, हुंरुग इग नारग विगलेइ सोत्र प्रमाण, नाणाविह  
 धयसूर्इमरुरनी चइ आकार, वणसइ वाऊ तेऊ नू बुदबुद अप्पा-  
 कार ॥ ६ ॥ सहुनें च्यार कसाय गप्पय परु नर तिरि दोय, वेमा-  
 णिय नारग तेउ वाऊ विगल त्रिक होय ॥ जोयसि तेऊ लेसा सेस  
 रह्या ने च्यार, वार इडियनो सुगम तेहनो स्युं विसतार ॥ ७ ॥  
 समुद्धात सग नरनें पण गप्पय तिरि देव, नरग वायुनें च्यार  
 भेसनें तीनु जेव ॥ दिढी दोय विगलमें थावरने मिच्छ्यात, सेसने  
 तीन दिढि जिम प्रवचनमें विहात ॥ ८ ॥ थावर वि ति नें एक अच-  
 स्कू दसण होय, चौरिंइ ते चस्कू अचस्कू दंसण होय ॥ मनुजने  
 च्यार सेस दंरुगमें दंसण तीन, नाण अनाण तीन सुर तिर  
 नारगनें तीन ॥ ९ ॥ थावर दोय अनाण विगल दो' नाण अनाण,  
 गप्पय मणुनें तीन अनाणनें पाचू नाण ॥ सुर नारग एकादस तिरनें  
 तेरै जोग, मनुजने १० च्यार विगलनें जोग प्रयोग ॥ १० ॥

वाक्कणायने पाच तीन आवर सयोग, मनुजने वार नरग तिर देवने  
 नव उपयोग ॥ विगल जुगै पण परु चौरिडी आवर तीन, उववाय  
 इग चवण दार दोनुं समकीन ॥ ११ ॥ एगसमै संख्यात अस्तरया  
 चवण पपात, गघ्नय तिरि विकलेंडी नारय सुरनी रूपात ॥ मणुआ  
 अथावर वणस्सइ संख संख अणंत, मणुज अस्तत्री अस्तख चवत  
 तेम उपजंत ॥ १२ ॥ वावीस सात तीन दस वरस लहस उक्किठ,  
 वणस्सई च्यारनें तीन दिवस तेऊने जिठ ॥ नर तिर तीन पढ्य  
 सुर नारग अवर तेतीन, व्यतर पढ्य अधिक लख वरय पढ्य  
 जोइस ॥ १३ ॥ असुरादिकु दसनें इक सागर अधिको आय, देसें  
 ऊणा दोय पढ्यनो नवेय निकाय ॥ विगलनें वार वरस गुणचास  
 दिवस ठम्मास ॥ अंतमुहुत्तजदनें पुढवाई दस रास ॥ १४ ॥  
 जुवनपती नारग व्यंतर दस वरस हजार, पढ्य तेना अरुंस वेमा-  
 णिय जोइस धार, सुर नर तिरि नारगनें पट आवरनें च्यार ॥ विग-  
 लनें पंच पऊत्ती ण अठारम दार ॥ १५ ॥ सरव जीवनें होय ठए  
 दिवसनो आहार ॥ होय न होय पंचादिक दिस ए सब मऊार,  
 दीह कालकी चौविड सुर नारग तिरयंच ॥ विगलनें हेउ पण्णा  
 सन्नि रहित थिर पंच ॥ १६ ॥ गघ्नय मणुजनें दीह कालकी सन्ना  
 होय, केइक आचारज कडे दिठियायथी दोय ॥ निच्चय पऊत्ता पं-  
 चिंदि तिरि नर जेह, चौविड देवा माहे आवी ऊपजै तेह ॥ १७ ॥  
 संखानुपऊत पंचेदी तिरि नर तेम, पऊत्ता जू दग पचेय वणस्सई  
 जेम ॥ ए सरवेमें निश्चे सुरनी आगति हुंति, पऊत्त संख गघ्नय  
 तिरि नर सग नरके जत ॥ १८ ॥ नरक उद वरत्या नर तिर  
 उपजै न हुवे सेस, जू अण्य वणस्सइमें नरग विण उपजै असेस ॥  
 पुढवाई दस पयमें जू आऊ वणजति, पुढवाई दस पयमें तेउ वाऊ  
 उवजंत ॥ १९ ॥ तेउ वाऊनो गमण पुढवी पद नवमें हुत, पुढ-

चाई दस पदमें विगल जावन आवत ॥ सहुमें तिर गति आगति  
 मणुआ सहुमें जाय, तेउ वाऊग्री मरोने जीव मनुज नवि थाय  
 ॥ २० ॥ घीपुरसै चोविह सुर तिरि नर तीनू वेद, थावर विगल  
 नारकनें एक नपुंसक जेद ॥ पङ्कत्ता मणु वादर अगन वेमाणिक  
 तेम जवण नरग व्यंतर जोइस चौपण तिरि, एमा ॥ १ ॥ वेइंड़ी तेइंड़ी  
 पृथ्वी ने अपकाय, वायु वणस्तइ अधिक अनुक्रम करि कहिवाय ॥  
 हे जिन ए सहु जावमें पाम्या वार अनंत, तेहनो अनुक्रम गिणता  
 किमही न आवै अत ॥ २२ ॥ नर सुर विन सहु दमगमें ते गति  
 संयोग, लाधो नही तुह दसण कीनो कम्म प्रयोग ॥ सुरमें पिण  
 दसण लहि विरत न पानी मूल, ते सुर जात सइवे देसविरत  
 प्रतिकून ॥ २३ ॥ आरजदेस आरजकुल शुद्ध सुगुरु उपदेस, तेइथी  
 तुह दरसनो किचित पाम्यो लेस ॥ धारक तारक कारक वारक  
 दंशण देव, आतम गुण संसार समत्त कम्म सयमेव ॥ २४ ॥  
 खरतर गच्च जट्टारक श्रीजिनलाज सुरिंद, रत्नराजमुनि सीस तेहना  
 पद अरविद ॥ रज मरुंदे लीनो ग्यानसार तमु सीस, तेण तव्या  
 तेवीस दार दंरुग चोवीस ॥ २५ ॥ सवत ससि रस वारण तेम  
 चद निरधार, पोस मास पख उळ्ळ सातमनें सोमवार ॥ आवक  
 आग्रहथी ए कीनो अलप विचार, अछम चौमासो कर जेपुर नगर  
 मजार ॥ २६ ॥ इति श्री चोवीस दंरुग स्तवनं ॥

॥ अथ जीवविषार भाषागर्भित स्तवनं ॥

॥ इहा ॥ जुवन प्रदीपक वीर नमि, किचित् जीव सरूप ॥  
 कहस्थुं पूर्वाचार्य जिम, बालबोध गुरुरूप ॥ १ ॥

॥ दाळ १ ली ॥ देसी सुरती महीनानी ॥ ए देशी ॥

एक मुगति बीजा ससारी जीव इ जेद, सत्ता जिनै सिइ अनं-  
 तै रूप अजेद ॥ ससारी थावर इग तिम त्रस दोष प्रकार, नु अप वाच

तेज वण स्तइ धावर धारा ॥ १ ॥ फिटकरयण मणि विड्म हिंगुल वलि  
 हरियाल, मनसिल पारो सुवरण आदि धातुनी माल ॥ सेढी वन्नी  
 अरणेटो पालेवो पाषाण ॥ जोमल तूरी उंस जूमि पाइण जे खाण  
 ॥ २ ॥ सुरमो लूण जात ए पुढवी काय विष्टे ॥ जूमि आकास  
 उंस हिम, करग आऊना जेद, हरित घास ऊपर जे जलकण धूं  
 अर तेम ॥ होय घणो वधि अप्पकाय पिएण पाइण जेम ॥ ३ ॥  
 अंगारा जाला जोजर तिम उलकापात, असणि कणग विद्युतादिक  
 अगनि जीव विह्वात ॥ उप्रामगजकनिका मंजल वलि मुख वात,  
 सुद्ध गूंज तिम घण तणु बाऊ जेदे कात ॥ ४ ॥ साधारण पत्तेय  
 वणस्सई जीव उ जेय, एग सररीर अनंत जीव साधारणनेय ॥ फं  
 दा अंकुर कूपल फूलण वलि जंबाल, जूफोना अइत्तिय सरवे जे फ  
 ल, वाल ॥ ५ ॥ गाजर मोथ वाथलो थेग पालंको साग, गुपत  
 सिरा साधा गाठा जाजे सम जाग ॥ काटी माल जूमिमें रोप्यां पद्ध  
 व आय, जाल पान इत्यादिक साधारण वणकाय ॥ ६ ॥ एग सररी रे  
 एक जीव जे ते प्रत्येक, फूल गाल फल मूल फाठ बीजै जिय एक ॥  
 वण पत्तेय विना जे पाचे पुढवीकाय, सयल लोगमें व्यापक अंतमु  
 हुचै आय ॥ ७ ॥ सूखमथी ते नियमा दिढी निजर न होय, लोका  
 लोक प्रकास थकी वलि अलप न कोय ॥ कवनी संख गमोला लहिगा  
 लटनी जात, चदन काअलसीमेहरजोका विह्वात ॥ ८ ॥ माय वा  
 हाक्रम पौरादिक वेइंडी होय, गोमी माकण जूया कीमा कीमी दोय  
 ॥ दीपक ईली धीवेलो गोगीमा जात, चरम जू कागादहिया गोवर  
 कूम उतपात ॥ ९ ॥ धनकीमा जिम चोरकीमा गोवालो तेह, ईली  
 कंधुक इंडगोप तेइडी एह ॥ बीठू ढंकेण जमरा जमरी इंडी च्यार,  
 तीमा माखी मास मडर कंसारी धार ॥ १० ॥ कवरुमोला माक  
 मिय पतग इत्यादिक जेद, नारकतिरि मणु देव पचेइ च्यार विष्टे ॥

घन्मा वंसा सेला अंजन रिषा क्रात, मघा माधवई नारग ए नमि  
 सात ॥११॥ जलचारी अक्षचारी नञ्चारी तिरयच, मञ्च कञ्च सुस-  
 मार मगर गाहा जल अच ॥ चौपय उरपरि नुजपरि साप नुचारी  
 तेय, तिविहा गाय साप तिम नकुल अनुक्रम लेय ॥१२॥ खेचर चग्म  
 रोम पखी चमचेरु कपोत, मनुजलोकथो वाहिर समुग विगंय पंख  
 दोत ॥ सरवे जल अल खेचर समुञ्चम गङ्गय दोय, कम्म अकम्म नूमि  
 अतर दीवा मणु जोय ॥१३॥ असुरादिक दस होय वाण व्यतरिया अह,  
 जोइस पच वेमाणिय डविहासु ते दिह ॥ पनेरे जेडे सिद्ध कहा ए  
 जीव प्रकार, तनु मानादिक हिव एहनो कहिसुं अधिकारा ॥१४॥ देह  
 आनखो एक सरिरे थितनो मान, प्राण जेहने जेता तिम वलि योन  
 प्रमाण ॥ अगुल ज्ञाग असंखसदू एगिदी काय, जोयणसहस साधिक  
 पत्तेय वणस्तई काय ॥१५॥ वि ति चउरेइ अनुक्रम उक्किह देह ऊंचास,  
 वरै जोयण तीन गाउ इग जोयण ज्ञास ॥ सत्तमना नेरइया घणु  
 सय पंच प्रमाण, तेइथी प्रथर ऊणा अनुक्रम रवणाण ॥१६॥ जो  
 यण सहस गङ्गधर मञ्च उरगनो देह, गाउ धणुअ पुहत्त नूचारी पं  
 खी जेह खेचर नव घणु उरग नुयग जोयण नव होय, नव गाऊ  
 परिमाण सनुञ्चम चौपय तोय ॥ १७ ॥ खरु गाउ उचास चउप्य  
 यं गङ्गय माण, तीन कोस उकोस मनुजनो काय प्रमाण ॥ नुवन  
 व्यतर जोइस वेमाणिय ईसाणन, सात हाथ उकोसे ऊचपणै तणु  
 हुत ॥ १८ ॥ सनतकुमार माहेइ पद ब्रह्म लातरु पाच, शुक स  
 हस्यारे उकोस चार कर वांच ॥ आणत प्राणत अरत अच्युत हाथे  
 तीन, नवधैवेयक दोय पचाणुतर इग लीन ॥१९॥ धावीस सात तीन  
 वस वरस सहस्त्रे आय नू आऊवाऊ वणती दिन तेऊकाय ॥ बार  
 वरस गुणचास दिवस तिम वलि ठम्मास, अनुक्रम वेइडी तेइडी  
 चौरिडी रास ॥ २० ॥ मुर नारग तेतीम अयर उकोसे आय, चौपय

तिरिप मनुजनौ तीन पढ्योपम श्राय ॥ जलचर उरपर चुजपर  
 उकासे पुवकोमि, पंखीने इग ज्ञाग असंख्य पढ्यनो जोरु ॥ २१ ॥  
 सरव सूखम साधारण समूहम मणुं जेद, जइन्न उकोसे अंतमुहुत  
 नियम थिति तेद, इम उगाइण आरूपो संखेपे अधिकार, जे वलि  
 इत्य वितेस वितेस सूत्रसुं धार ॥ २२ ॥ असंख्य उर, प्पिणी सहु  
 एगिंडी आपणी काप, उपज चवे अनंत साधारण वणस्तई काय ॥  
 संख्याता संवहर विगल आपणी देह, सात आठ जव पंचेडी तिरि  
 मणुआ जेद ॥ २३ ॥ नारकथी उदवरती जीव नरक नवि जाय,  
 देव चवाने ते वलि देवपणे नवि श्राय ॥ इंडिय सासोसास श्राउ  
 वल ए दस प्राण, च्यार ठ सात आठ इग ड ति चौरिंडोय जाण  
 ॥ २४ ॥ सन्नि असन्नि पंचेडी दस नव अनुक्रम जोय, प्राणश्रक।  
 जेव प्रयोग जिय मरणे होय ॥ ज्ञोम सायर सत्तार अपार अनंती  
 चर, जमियो जीव वरम विन जोण असीने च्यार ॥ २५ ॥ तग सग  
 सग सग दस चवदे दो दो दो लाख, च्यार च्यार तिम च्यार चवठ  
 लख सूत्रे साख ॥ जू अप तेउ वाक्य वणयत्तेय साधार, वि ति चौ  
 पण तिरि नारग सुर नर अनुक्रम धार ॥ २६ ॥ काय न श्राय न  
 पाण न जोणी कुव नही जात, सादि अनत जंग जिन आगम थित  
 विहात ॥ रोग न सोग न जोग जोग नही नारी लिंग, नहोय नपु-  
 सक पुरसतणा नही अंग उपंग ॥ २७ ॥ नाश दरत चरित वोरज  
 ए च्यार अनंत, सिद्ध थया तेदधी सिद्धतै सिद्ध कहत ॥ इम ए  
 जीवविचार गाथाथो ज्ञापारुप श्रावक, आग्रहथी मै कीनी सुगम  
 सुगम सरूप ॥ २८ ॥ खरतर गछ जट्टारक श्री जिनलान्न सूरीस,  
 रत्नराज गणि मुनि सीस जगीस ॥ संवत ससि रस  
 वारण ससिहर धार, माघ चोथ दिन कीने  
 मजार ॥ २९ ॥ जीवविचार स्तवन सं



॥ अथ समवसरण विचारगर्पित भाषा स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्री जिनसासन सेहरो, जगगुरु पास जिणद ॥  
 प्रणमी जेहना पाय कमल, आवी चोसठ इंदे ॥ १ ॥ तीर्थकर आवे  
 तिहा, त्रिगमो करै तइयार ॥ समकित करणी साचवै, एह कहुं  
 अधिकार ॥ २ ॥ करै प्रशंसा समकित्ती, मिथ्यात्वी होवे मूक ॥  
 सूर्य देख हरखे सहू, जिम अंधारे घूक ॥ ३ ॥

॥ दाल ॥ १ ॥ वीर बलाणी राणी चेलणा ॥ ए देसी ॥

आप अरिहंत जलै आविया जी, गावै अपठरह गंधर्व ॥  
 समवसरण रचै सुरवराजी, सखेपे ते कहुं सर्व ॥ ४ ॥ आ० ॥  
 ज्ञवनपति वीस इंदै मिढया जी, सोलह व्यंतर सार ॥ जोइस ड  
 दस वेमाणिय जुमया जी, चौसठ इंद सुविचार ॥ ५ ॥ आ० ॥  
 पवन सुर पूज परमारजै जी, जूमि योजन सम जात्र ॥ मेघकुमर  
 रचै मेघने जी, करिय सुगंध छिन्काव ॥ ६ ॥ आ० ॥ अगर कपूर  
 सुज धूपणा जी, करय श्री अगनकुमार ॥ वाणव्यंतर द्विव वेगसूं  
 जी, रचय मणि पीठका सार ॥ ७ ॥ आ० ॥ पुहप पंच वरण  
 उरघ मुखै जी, वरपए जाणु प्रमाण ॥ जवणवइ देव त्रिगमो जलो  
 जी, करय ते सुणत्र सुजाण ॥ आ० ॥ ८ ॥ रचय गढ प्रथम रूपा-  
 तणो जी, सोवन कांगरै सार ॥ रवि ससि रयण कोसीसको जी,  
 कनकनो बीच प्रांकार ॥ आ० ॥ ९ ॥ रतनगढ रतनने कांगरै जी,  
 रचय वैमाणि सुरराज ॥ जलो त्रीजो गढ जीतरे जी, जिहां विराजै  
 जिनराज ॥ आ० ॥ १० ॥ ज्जांत उंची धणुं पांचसै जी, सवा-  
 तेतीस विसतार ॥ ॥ धनुष से तेर गढ आंतरो जी, प्रौल पचास  
 धणु ध्यार ॥ आ० ॥ ११ ॥ दस पंच २ त्रिहु गढ तणो जी, पावनी  
 वीस हजार ॥ धाक अम नहिय चढता धका जी, एक कर उच्च  
 विस्तार ॥ आ० ॥ १२ ॥ पंच धणु सहस पृथ्वीधकी जी, उच्च

रहे त्रिगद आकास ॥ तेह तल सहू यथास्थित वसै जी, नगर  
 आराम आवास ॥ आ० ॥ १३ ॥ तोरण चिहुं २ दिस तिहा जी,  
 नीजमणि मोर निरमाण ॥ दुसय धणु मध्य मणि पीठका जी,  
 उच्च जिण देह परिमाण ॥ आ० ॥ १४ ॥ ज्यार आसण तिहां  
 चिहुं दिते जी, मोतीयें जाकज्जमाल ॥ सम विच कूण ईसाणमें  
 जी, देवउंदो सुविसाल ॥ आ० ॥ १५ ॥ देवउंडजि नाद उपदिते  
 जी, जिन गुण गावसी तेह ॥ अह्ल जिम आइ सिर कपरे जी,  
 गाजसी तेह गुण गेह ॥ १६ ॥ आ० ॥

॥ ढाल २ ॥ सफल संसारनी ॥

पुढ दिसि आसणे आय वेसे पहु, सुर कृत चौमुख रूप देखै सहू  
 ॥ दीपै असोक तल वारगुण देहथी, देखि हरखै सहू मोर जिम  
 मेहथी ॥ १७ ॥ मोतियां जालि त्रिण ठत्र सुविसाल ए, रूप चि  
 हुं २ दिते चामर ढाल ए ॥ योजनगामनी वाण श्री जिनतणा,  
 जगवंत उपदिते वार परपद जणी ॥ १८ ॥ प्रदक्षिणारूपथी अग  
 निकूणें करी, गणधर साधचो तिम वेमाणिय सुरी ॥ ज्योतशी जु  
 वणनी विंतरी स्त्रीपणें, नैरुतकूण जिनवाण ऊज्जी सुणे ॥ त्रिहंत  
 णा पति वायवकूणमें जाण ए, सुर वैमाणीय नर नारि ईसाण ए  
 ॥ बारह परखदा मद मन्नर ठोरु ए, नूख त्रिस विसरै सुणै कर जोरु  
 ए ॥ १९ ॥ पूढ जामंजल तेज प्रकास ए जोयण सहस ध्वज उ  
 च आकास ए, ऊलहलै तेज ध्रुव चक्र गगने सही, महक सहू  
 वारणे धूपधाणा सही ॥ २० ॥ वाहण वहिल सहू धरिय पहिले  
 गढै, होय पगचार नर नार उंचा चढै ॥ जिनतणी वाणि सुणि  
 जीव तिरयंच ए, वैर तजि बीय गढ रहे सुख संच ए ॥ २१ ॥  
 पुन्यवंत पुरुष ते, परपद वारमें, सुणें जिनवाणि धन गणिय अत्र  
 तारमें ॥ चौविह देव जिनदेव सेवा रचै, मणिमयी माहिलो प्रौढ

माहे वसै ॥ २२ ॥ चिहु दिसि वाटली वावि चौ जाणियै, विद्रिस्ति  
 चौ कूण गोय २ वस्वाणिये ॥ आठ जिहा वावि जल अमृत जेम ए,  
 स्नान पाने वपु निरमल हेम ए ॥ २३ ॥ जय विजय जयत अप  
 राजिया, मध्य कंचण गढै प्रोल वसंतिया ॥ तुवरु पुरुष खट्टंग अ  
 र्चि माल ए, रजतगढ प्रौलना एह रखवाल ए ॥ २४ ॥ पहिलो  
 त्रिगणो नहुयपुर जिण ग्राम ए, देव महर्दिक रचै तिण ठाम ए ॥  
 करण वारवार नही कारण कोय ए, आठ प्रातीहारज ते सही  
 होय ए ॥ २५ ॥ जिण समवसरणनी रुद्रि दीठी जियै, तेह ध  
 धन धन्न अवतार पायो तियै ॥ पास अरदास सुणी वठित पूरज्यो,  
 हिव मुऊ ताहरो शुद्ध दरसन हुज्यो ॥ २६ ॥

॥ कलश ॥

इम समवसरणै रुद्रि वरणै सहू जिनवर सारखी ॥ सर-  
 वहे ते लहे शुद्ध समकित परम जिनधर्म पारखी ॥ प्रकरण सिद्धंत  
 गुरु परंपर सुणी सहू अधिकार ए, संस्तव्यो पासजिनंद पाठक धर्म  
 वर्द्धन धार ए, ॥ २७ ॥ इति समवसरण विचार स्तवन ॥

॥ अथ श्री रूपभेदेवजी सुण २ सैत्रुज स्तवन लि० ॥

॥ दाल ॥ पाटोधरजी पाटियै प्यारो ॥ ए देगी ॥

॥ सुण २ सैत्रुंजगिर स्वामी, जग जीवण अंतरजांमी, हूँ  
 तो अरज करू सिरनामी ॥ रुपानिध विनती अवधारो, जवसायर  
 पार उतारो, निज सेवक वांन वयारो ॥ क० ॥ १ ॥ प्रचू मूरति  
 मोहनगारी, निरख्या हरखै नर नारी, जाऊं वारी हु वार हजारी  
 क० ॥ २ ॥ हिव किसिय विमासण कीजे, मुऊ ऊपर महिर घरीजै,  
 दिल रजन दरसन दीजे ॥ क० ॥ ३ ॥ आज सयल मनोरथ फलिया,  
 जवरेना पातिक टलिया, प्रचु जो मुऊसै मुख मिलिया ॥ क० ॥  
 ॥ ४ ॥ समरया मकट टलि जावै, नव नव नित मंगल थावै, मुऊ

आतम पुन्य जेरावै ॥ क० ॥ ५ ॥ करजोनी वीनंती कीजै, केसर  
चंदन चरचीजै, दिन धन२ तेह गिणोजै ॥ क० ॥ ६ ॥ प्रजु दरस  
सरस लहि तोरो, अति हरपित हुवो चित मोरो, जिम दीछा चद  
चकोरो ॥ क० ॥ ७ ॥ परतिख प्रजु पंचम आरै, वीस माहा जय  
संकट वारै, सहु सेवक काज सुधारै ॥ क० ॥ ८ ॥ सेवो स्वांमि  
सदा सुखदाई, कमणा न रहै घर काई, वाधै संपत शोज्ञ सवाई ॥  
॥ क० ॥ ९ ॥ नाजिराय कुलंवर चंदा, जव जन मन नयण आनंदा,  
जलगै सुर असुर सुरिदा ॥ क० ॥ १० ॥ जयकारी रिपज्ज जिनंदा,  
प्रह सम घर परम आणंदा, वंदे श्रीजिन जक्ति सूरिदा ॥ क० ॥ ११ ॥  
इति शत्रुंजय स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ दसमीका वडा स्तवन पार्श्वनाथजीका लि० ॥

॥ दाल १ ॥

पास जिनेसर जग तिलो ए, गवनीपुर मंरुण गुण निलो  
ए, तवन करिस प्रजु ताहरो ए, मन वंठित पूरो माहरो ए ॥ १ ॥  
नयरी नांम वणारसी ए, सुरनयरी जिण रुद्धे हसी ए ॥ तेण पूरी  
ठै दीपतो ए, अश्वसेन राजा रिपु जीपतो ए ॥ २ ॥ वामा तसु  
घर नार ए तसु गुणहि न लपै पार ए ॥ तास जयर अवतार ए,  
तसु अतिशय रूप उदार ए ॥ ३ ॥ चवद सुपन तिण निसि लह्या ए,  
अनुक्रम करि ते सहु मन ग्रह्या ए ॥ पूठै जूपतिने कह्या ए,  
करजोनि कह्या ते जिम लह्या ए ॥ ४ ॥

॥ दाल २ ॥

प्रथम सुपन गज निरख्यो, मायतणो मन हरख्यो ॥ वीजै  
वृषज ऊदार, घरणी जिण धरघो जार ॥ ५ ॥ तीजै सिह प्रधान,  
जसु बल कोय न मान ॥ चउथै देखी श्रीदेवी, कमल वसै सुर सेवी  
॥ ६ ॥ पाचमै पुण्डरीकी माला, पंच वरण सुविशाला ॥ ठै दीवो

ए चंद, ग्रहगण केरो ए इद ॥ ७ ॥ सातमें सूरज सार, दूर कियो  
 अंधकार ॥ आठमें धज लहकती, वरण विचित्र सोदंती ॥ ८ ॥  
 नवमें पूरण कूज, जरियो निरमल अंज ॥ देखि सरोवर दसमें,  
 मनह अयो अति विसमें ॥ ९ ॥ समुद्र इग्यारमें गर्में, खीरजलधि  
 इण नामें ॥ बारस देव विमान, वाजित्र धुन गीत गान ॥ १० ॥  
 तेरम रतननी राति, दह दिसि ज्योति प्रकाती ॥ सुपन चवदमें  
 ए दीणे, पातिक धूमथी नीगे ॥ ११ ॥ सुपन कहा सुविचार, हरख्यो  
 भूप ऊदार ॥ पुत्ररतन होस्यै ताहरै, थास्यै नद्वय हमारै ॥ १२ ॥

॥ दुहा ॥

चवद सुपन श्रवणे सुणी, हरख कियो सुविचार ॥ सुंदर सुत  
 तुमें जनमस्यो, कुलदीपक आधार ॥ १३ ॥ वामा प्रीतम वचन सुण,  
 आवी मंदिर ऊत्ति ॥ ठेव सुगुरु कीरति करै, जनम कियो सुकयत्य  
 ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम ऊगो दिवस, कीधा सुपन विचार ॥ ते घर  
 पहुता आपणै, दीधा दान अपार ॥ १५ ॥

॥ दाढ ३ ॥

दिव जनम्या जगगुरुजगत्र अयो जयकार, खिण इक नारकिये  
 पायो सुक अपार ॥ दिसिकुमरी मिलकर सूत्रकरम निसि कीध,  
 कर धानक पोहती वंठित तेहनो तिद्ध ॥ १६ ॥ तिणहीज निसि चोसठ  
 इइ मिली तिहा आवै, लेइ निज ज्ञकै सुरगिरि स्नात्र करावै ॥ क  
 री जनम महोच्चव जननी पासै ठावै, तिहाथी सुर सब मिल ही  
 प नंदीश्वर जावै ॥ १७ ॥ इम स्पण विहाणी ऊगो दिवस ऊदार,  
 घर२ गाईजै कीजै मगलाचार ॥ इग्यारमें दिवसे मिली सहू परिवार,  
 तसु नाम दियो श्री उत्तम पासकुमार ॥ १८ ॥ प्रभु वाधै दिन२कला  
 करी जिम चद, त्रिहु ज्ञान विराजितरूप जिसो देविद ॥ गुणकला  
 विचक्षण विद्यातणो निधान, जोवनवय आयो परणायो राजान १९

॥ बाल ४ ॥

कुमारपदै प्रभु रहतां काळ सुखै गर्भे ए. ~~आगे मर~~  
संजम लेवा समै ए ॥ तव लोकातिक देव जगद्वै ~~अच्छ~~  
संवहरी दान याचक जन सुखकरु ए ॥ २० ॥ ~~सर्व~~  
इंद्राविक सब मिढ्या ए, देस विदेस विहार करी ~~सर्व~~  
ए, पामीय केवलज्ञान सुरै महिमा करी ए, ~~अर्थ~~  
मुगति रमणी वरी ए ॥ २१ ॥

॥ बाल ५ ॥

इम श्री गौरीपासतणा गुण जे नर ~~यै~~  
परलोग सुवन्तित पावै ॥ संघ करी संघपनि ~~जि~~  
चोर धारु संकट टलै विघन बुराइन ~~अच्छ~~  
पञ्मावइ जास वदे सिर आण, सामत्र ~~अच्छ~~  
काय प्रमाण ॥ कळपवृक्ष चिंतामणि कामर्ग ~~अच्छ~~  
शेखर सीस समघरगे इण पर बोले ॥ २२ ॥ ~~अच्छ~~  
जिन स्तवनं ॥

॥ अथ अजित शांति जिन ~~अच्छ~~

मंगल कमला कंद ए, सुख ~~अच्छ~~  
अजित्थ जिणंद ए, शातीसर नयण ~~अच्छ~~  
प्रणामेव ए, बिहुं गुण गाइस ~~अच्छ~~  
मानव जव सफल करेसु ए ॥ २३ ॥ ~~अच्छ~~  
जिनसासण ज्ञास ए, रिसद ~~अच्छ~~  
हस ए ॥ ३ ॥ इण अवसर ति ~~अच्छ~~  
गाजियो ए ॥ विजया तसु ~~अच्छ~~  
॥ ४ ॥ कूखदि जिन अवतार ~~अच्छ~~  
वस्यो दस मान ॥ प्रभु ~~अच्छ~~

मन श्रोत्रदियो ए, सुत नाम अजिय जिन तो दियो ए ॥ तिहुअण  
 सयल उच्चाह ए, क्रम२ वाधे जगनाह ए ॥ ६ ॥ हस धवल सारिस  
 तणी ए, गति सुललित निज गति निरजण। ए ॥ मलपति चाँले  
 गैल ए, जाणे नयण अमीरस रेल ए ॥ ७ ॥ अवर न समो सं  
 सार ए, वलि न्यान विवेक विचार ए ॥ गुण देखी गज गहगह्यो ए,  
 लठन मिसि पग लागी रह्यो ए ॥ ८ ॥ जोवन वय जव आवियो  
 ए, तव वर रमणी परणावियो ए ॥ पीय साथै सब काज ए, प्रभु  
 पालै पुहवी राज ए ॥ ९ ॥ हिव हयणापुर ठाम ए, विश्व  
 सेन नरेश्वर नाम ए राणी अचिरा देव ए, मनहर सुख माणे वेव  
 ए ॥ १० ॥ चवदह सुपने परवरयो ए, अचिरा उयेँ सुत अवत  
 र्यो ए ॥ मानव देव वखाणियो ए, चक्कीसर जिएवर जाणियो  
 ए ॥ ११ ॥ देस नयर हुय संत ए, तिश नाम दियो श्रोशात ए  
 ॥ जिन गुण कुण जाँले कही ए, त्रिहु जुवणे तसु उपम नही ए  
 ॥ १२ ॥ नयण सल्लूयो हिरणलो ए, वन सिंहे वोहै एकलो ए ॥  
 नयण समाधि निरोध ए, इण नयणे नारि विरोध ए ॥ १३ ॥ गी  
 तहि राग सु रंग ए, पिण पन्नलै लोक कुरंग ए ॥ तो उलग्यो स  
 सि सक ए ॥ तिण पाम्यो नाम कलक ए ॥ १४ ॥ इण पर मृग  
 अति खलजड्यो ए, जय जजण सामि साजड्यो ए ॥ आणदियो  
 मन आपणो ए, पाय सेवे मिस लठन तणो ए ॥ १५ ॥ लीला पति  
 परणे घणी ए, नव नविय कुमर राया तणी ए ॥ बल बल आ  
 यण जोगवे ए, पीय राज जलो पर जोगवे ए ॥ १६ ॥ कुमर त  
 णें मरुल समें ए, पचास सहस वरसा गमे ए ॥ तो तेजै दिणय  
 र जितो ए, ऊपन्नो चक्ररण तिसो ए ॥ १७ ॥ साथी जरह ठ  
 खरु ए, वरतावी आण अखरु ए ॥ चवद रयण नव निहि सही  
 ए, वसु सोल सहस जखै अही ए ॥ १८ ॥ सहस बहुतर पुर

वरा ए, वत्तीस मौनवद्ध नरवरा ए ॥ पायक गांमै कोरु ए, ठिन्न  
 वे नमें वे कर जोरु ए ॥ १९ ॥ इय गय रद्वर जुजुवा ए, लख  
 चौरासी मदिर हुआ ए ॥ लाख त्रि वाजित्र घमघमें ए, वत्तीस  
 सदस नाटिक रमें ए ॥ २० ॥ रूप जिती सुरसुंदरी ए, लक्षण ला  
 वए लोला जरी ए ॥ जगम सोद्वग देहरी ए, एसी चौसठ सद  
 स अतेऊरी ए ॥ २१ ॥ अवरज रुद्धि प्रकार ए, मणि कंचण र  
 यण जंनार ए ॥ ते कद्विवा कुण जाण ए, वपुत्रपुरे पुण्य प्रमांश  
 ए ॥ २२ ॥ इम चक्कीसर पचमो ए, चौथो दूतम सूतम समो ए ॥ वरस  
 सदस पचवीस ए, सब पूरी मनद जगीस ए ॥ २३ ॥ इण पर विहुं  
 तीर्थकरा ए, चिर पात्रिय राज विविह परा ॥ जाणी अवसर ए  
 सार ए, विहु लोघो सजम जार ए ॥ २४ ॥ विहुं स्वम दम धीर  
 ज धरी ए, विहु मोद मयण मद परिहरी ए ॥ विहुं जिन ज्ञाण  
 समाण ए, विहु पाण्या केवलनाण ए ॥ २५ ॥ विहु देवदि कोरु-  
 दिमदि ए, विहु चौतीसै अतिसय सदिए ॥ समचसरण विहु ठाण  
 ए, विहुं घोजनवाण वखाण ए ॥ २६ ॥ नाचे रणकत नेउरी ए,  
 विहु आगलि इइ अंतेउरी ए ॥ टिगमिग जोवे जग सहू ए, रंगदि  
 गुण गावै मुग्धहू ए ॥ २७ ॥ विहु तिर उत्र चमर विमल, विहु  
 पग तल नव सोवन कमल ॥ विहु जिनतणें विहार ए, नवि रोग  
 न सोग न मारि ए ॥ २८ ॥ विहु उवयार जुवन जरी ए, विहुं  
 सिद्ध रमणसु परवरी ए, विहु जजी जव फंद ए, विहु उदयो  
 परमाणद ए ॥ २९ ॥ इम बीजो ने सोलमो ए, जाणे चितामण सुर  
 तरु समो ए ॥ शुणि अति सऊ विहाण ए, तिहा इह परजव नवि  
 दाण ए ॥ ३० ॥ विहु उन्नव मगल करण, विहु सं मयल डुरिय  
 हरण ॥ विहुं वर कमल नयण वयण, विहुं श्री ॥ ३१ ॥



जिण धुय ज्ञणि ए ॥ सरण विहु जिण पाय ए ॥ श्रीमेरुनंदन  
उवझाय ए ॥ ३३ ॥ इति अजित शाति वृद्ध स्तवनं ॥

॥ अथ मुहपत्ती पडिलेहण स्तवनं ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥ कपूर हुवै अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥

वरधमान जिनवरतणा जी, चरण नमूं चित लाय ॥ ज्ञान  
क्रिया जिण उपदिसी जी, सब सुख तणो उपाय ॥ जविक जन  
धर श्रीजिन उपदेस, वूटे कर्म कलेस ॥ ज० ॥ आंकणी ॥ पडिलेहण  
मुहपत्ती तणी जी, ज्ञाखी ठै पचवीस ॥ तिहां ए ज्ञाव विचारिये  
जी, इम ज्ञाखै जगदीस ॥ ज० ॥ २ ॥ प्रथम वे पास विलोकिये  
जी, सूत्र अरथनी दृष्टि ॥ ए पडिलेहण दृष्टिनी जी, करै धर्मनी  
पुष्टि ॥ ज० ॥ ३ ॥ समकित मिथ्या मिश्रनी जी, मोहनी तीननो  
त्याग ॥ कामराग स्नेहरागनें जी, तज वलि तिम दृष्टिराग ॥ ४ ॥  
ज० ॥ सीप वधू टक गुरुधकी जी, वाम हाथ करनाउ ॥ नव  
अखोन्ना आदरो जी, नव परयोन्ना गमाउ ॥ ५ ॥ ज० ॥ देवतत्व  
गुरुतत्वसू जी, धर्मतत्व ग्रह सार ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो जी,  
तीनतणो परिहार ॥ ६ ॥ ज० ॥ ग्यान दरसण चारित्रना जी,  
संग्रह तीन आचार ॥ तजो विराधन तीन ए जी, एह अरथ अव-  
धार ॥ ज० ॥ ७ ॥ मन वच कायानी सदा जी, गुपति गृहीजे  
शुद्ध ॥ परिहरिये वलि जाणनें जी, तीने दंरु विशुद्ध ॥ ज० ॥ ८ ॥  
पडिलेहण पचवीस ए जी, मुहपत्तीनी सार ॥ हिव पडिलेहण  
अंगनी जी, ते पिण चतुर विचार ॥ ज० ॥ ९ ॥ हास्य अरति  
रति धोयनें जी, मुद्ध करो वाम वाह ॥ तज जय शोक डुगठना  
जी, दक्षिण पिण करै साह ॥ १० ॥ ज० ॥ धुरली लेस्या तीन  
ए जी, ते सिरथी करि दूर ॥ रिद्धि रस साता गारवोजी, करि  
मुखथी चकचूर ॥ ११ ॥ ज० ॥ काढ सख्य तीन उरथनी जी, मा

या नियाण मिच्छात ॥ च्यार कपाय वेव गलथी जी, क्रोधादिक करा  
 घात ॥ १२ ॥ ज० ॥ तज खटकाय विराघना जी, चरण विन्हे सुद्ध  
 होय ॥ ए पम्हिलेहण अंगनी जी, पचवीसे तू जोय ॥ १३ ॥ ज० ॥  
 इम पम्हिलेहण जे करै जी, धर मन ज्ञान विवेक ॥ सकल करम दूरै  
 करै जी, पामै सुख अनेक ॥ १४ ॥ ज० ॥ कलस ॥ इम वीर जिन-  
 वरतणा मुखथी, अरथ गणधर साजली ॥ कहै सूत्रवांणी मन सुहा-  
 णी, सुणो जविघण मन रली ॥ उवज्ञाय वर श्रीलक्ष्मीरत, मुख-  
 थकी ए सप्रदी ॥ मुंहपती पम्हिलेहण तणी विध लक्ष्मीरत गणि  
 कही ॥ इति श्रीमुहपती पम्हिलेहण स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन लिख्यते ॥

॥ ढाल ॥ सफल ससारनी ॥ ए देशी ॥

ए धन सासन वीर जिनवरतणौ, जास परसाद उपगार  
 थायै घणौ ॥ सूत्र सिद्धात गुरुमुखथकी सांजली, लहिय समकित  
 अमें विरति लहिये वली ॥ १ ॥ धर्मनो ध्यान धर तप जप खप  
 करै, जिणयकी जीव संसारनागर तिरै ॥ दोष लागे जिके गुरुमुख  
 आलोइयै, जीव निमल हुवै वस्त्र जिम घोइयै ॥ २ ॥ दोष लागे  
 तिके चार प्रकारना, धुरथकी नाम नें अरथ ते धारणा ॥ क्रिणही  
 कारण वसै पाप जे कीजियै, प्रथम ते नाम संकल्प कहीजियै ॥ ३ ॥  
 कीजिये जेह कदर्प प्रमुखै करी, दोष तेवीय परमाद सज्ञा धरो ॥  
 कूदता गर्वता होय हिंसा जिहा, दर्प इण नाम करि दोष तीजो  
 तिहा ॥ ४ ॥ विणसतां जीव जीवनेगिनर करे जिको, चौथौ आकु-  
 टिया दोष ऊपजै तिको ॥ अनुक्रमे च्यार ए अधिक एक एकथी,  
 दोष धर प्रायश्चित्त लेह निरेकथी ॥ ५ ॥

॥ ढाल २ ॥ अन्य दिवस कोइ मागष आयो पुग्दर पाम ॥ ए देशी ॥

पाटी पोथी कवली नवकरवाली जोय, ग्यानना उपगरश-  
तणी आसातन कीधी होय ॥ जयन्यथी पुरमठ एकासणो आविल  
उपवास, अनुक्रम एह आलोचण सुगुरु चतार्ड तास ॥ ६ ॥ ए  
जो खमित थायै अथवा किहार्इ गमाय ॥ तो वलि नवा करायां  
दोष सहू मिट जाय ॥ थापना अणपमिलेह्या परिमढनो तप धार,  
गिरता एकासणनें गमता चोथ विचार ॥ ७ ॥ दर्शनना अतिचार  
तिहा पुरमठ जयन्य, एकासण आविल अठम चिहुं जेद मन्न ॥  
आशातन गुरु देवनी साहमीसु अप्रीति ॥ जयन्य एकासणनी  
आलोचण चढती रीत ॥ ८ ॥ अनतकाय शारज्ज विणास्यां चोथ  
प्रसिद्ध, वि ति चउरेडी प्रसाया एकासणथी वृद्ध ॥ बहु वि ति चौरै-  
डिय हएया रि ति चउ उपवास, सकळपादि चिहु विधि डुगुणा  
डुगुण प्रकास ॥ ९ ॥ उहेडी कुलियावना कीनी नगरा जंग, बहुत  
जलोयां मूक्या दस उपवास प्रसंग ॥ वमन विरेचन रुमि पातन  
आविल इक एक, जीवाणी ढोलता दोष उपवास विवेक ॥ १० ॥  
सकळपादिक एक पचेडी उपड्य होय, दोड त्रिण आठ दसै उपवासै  
आलोचण जोइ, बहु पचेडी उपड्य ठठ अठमें दस वीस ॥ चिहुं  
प्रकारै चढती आलोचण सुण ले तीस ॥ ११ ॥ पचेडीनें लकमी  
प्रमुखै कीध प्रहार, एकासण आविल उपवास नें ठठ विचार ॥ साथ  
समकें लोक समकें राज समक, कुमा आल दिया डुइ चौथरु ठठ  
प्रत्यक ॥ १२ ॥ उपवास दस दनाया तेम मराया वीस, इक लख  
असी सहस नवकार गुणो तजि रीस ॥ पख चौमास वरस लग  
इक त्रिण दस उपवास, अधिको मोध करे तो आलोचण नहि तास  
॥ १३ ॥ सूआवरुना दोष किया गुरु ऊपर रोस, जीव विराधन  
कीधा बहु अस्तर्ती पोस ॥ करीय डुगुणस चार हजार गुणो नव-

कार, मिच्छाडुकरु देऽ आलोचो वारोवार ॥ १४ ॥

॥ दाल ॥ ३ ॥ रे कर जोंडी ताम ॥ ए चाल ॥

॥ विण कीया पञ्चखाण, विण दीधां वांदणा, पन्दिमणा  
विध पातरे ए ॥ अणोझा नें असिझाय, तिहा अविधै जएया, इ  
कश् आविल आचरै ए ॥ १५ ॥ गंठसीनें एरुअ, निवी आविल, जां  
गै आलोचण इमें ए ॥ एक पाच पट आठ, नवकरवालीय ॥ गुण  
नवकार अनुक्रमे ए ॥ १६ ॥ उपवास जंग उपवाम, आविल ऊप  
रा, अतिको दंरु बखाणिये ए ॥ पाचम आठम आदि, जंग किया  
वलो, फिर ग्रही पातिक हाणीये ए ॥ १७ ॥ ऊखल मूसल आग,  
चूले घरटिये, दीधै अठम तप करे ए ॥ मागी सूई दीध, कातरणी  
ठुरी, आविल चढता आढरै ए ॥ १८ ॥ जीव करावै युद्ध, रात्री  
जोजन, जल तिरणो खेलण जूओ ए ॥ पापतणा उपदेश, परझेह  
चींतव्या, उपवास एकर जूजूआ ए ॥ १९ ॥ पनेर करमादान,  
नियम करी जंग, मद्य मास माखण जरुया ए ॥ आलोचण उ  
पवास, सकप्पादिक, चिहुं जेढे चढता लिख्या ए ॥ २० ॥ बोढरा  
मिरखावाद, अदत्ता दान त्यु, जघन्य एकासण जाणाये ए ॥ अति  
उत्कृष्टी एण, जाण आलोचण, उपवास दत्तराणिये ए ॥ २१ ॥

॥ दाल ॥ ४ ॥ सुगण सनेही मेरे लाल ॥ ए चाल ॥

॥ चौथे व्रत जागे अतीचार, जघन्य ठठ आलोचण धार ॥  
मध्ये दस उपवास विचार, उत्कृष्टा गुण लख नवकार ॥ २२ ॥  
परिग्रह विरमण दोष प्रसंग, तीन गुणव्रतमाहे जंग ॥ च्यार सिद्धा  
व्रतने अतिचारे, आविल त्रिण प्रत्येके धारे ॥ २३ ॥ शीलतणी  
नववारि कहाय, तिहा जो लागो दोष जणाय ॥ त्रियनें फरस  
हुआ अविवेके, एक आविल कीजे प्रत्येके ॥ २४ ॥ साधुअने श्रावक  
पोसाध, एकेंडी सच्चित्त संघटे कीध ॥ वीतर जोले सच्चित्त जल पी

नगर तिमहिज मन गमें ॥ पूरवे पश्चिम जेदनी ते, तेह तिमहीज  
अनुक्रमें ॥ श्रीचंड्वाहु जुजग ईसर नेम च्यार तीर्थकरा, पूरवे पुष्कर  
अरध माहे, सरवर्जीव सुखंकरा ॥ २२ ॥ ढाल ॥ वैरसेनवदू जिन  
सैतैरमो, श्रीमहान्नइ अठारम नित नमो ॥ देवजला जगणीसम  
देव ए, जसो रिद्ध वीसम जिण देव ए ॥ ३० ॥ जिण च्यार पुष्कर  
अरध माहे, कह्या पश्चिम जग ए ॥ तिहां मेरु विद्युनमालि चिहुं  
दिसि, विचरता वीतराग ए ॥ चौरासी पूरव लाख वरसा, आठ इक  
२ जिण तणो ॥ पाचसै धनुष सरीर सोहे ॥ सोवन वरणा सुदामणो  
॥ ३३ ॥ ढाल ॥ काल जघन्धे ए जिण वीस ए ॥ दिव उरुहै  
जेद कहीस ए ॥ ॥ एकसो सत्तर तिहां जिनकर कहे, पांचे  
जरते जिम पाचे लहे ॥ ३० ॥ जिण लहे पाचै तेम पाचै;  
एरवत मिल वस हुवा ॥ इक २ विदेहे वचीस विजया,  
तिहा पिण ठै जूजूआ ॥ एकसो सत्तर एम जिनवर, कोनि  
नवसय केवली, नव सहस कोनी अवर मुनिवर, वदिभै नित ते  
वली ॥ २४ ॥ ढाल ॥ इहां जरते एरवतें आज ए, पंचम आरै  
नही जिनराज ए ॥ धन २ पाचे महाविदेह ए, विचरे वीसै जिन  
गुणगेह ए ॥ ३० ॥ गुणगेह दोष अठार वरजित, अतिसया चोतीस  
ए ॥ चौसठि इद नरिंद सेवित, नमुं ते निसदीस ए ॥ तिहां आजै  
तारण तरण विचरै, केवली दोष कोन ए ॥ दोष सहस कोनी सुसाधु  
बीजा, नमुवे कर जोन ए ॥ २५ ॥ कलश ॥ इम अढी द्वीपे पनर करमा  
जूमी क्षेत्र प्रमाण ए, सिद्धात प्रकरण तेह जारुया वीस विहरमाण  
ए ॥ श्रीनगर जेसलमेर सवत सत्तर गुणतीसै समै, सुखविजय हरख  
जिनंद सानिध नेह धरि ध्रमसी नमें ॥ २६ ॥ इति अढी द्वीप  
स्तवन सपूर्ण ॥ १ जवूद्वीप २ धातकी खंन ३ आधोपुष्करद्वीप एव  
४ द्वीपमें ५ जरत ५ एरवत ५ महाविदेह १५ कर्मजूमामें विच-

रता साश्वता २० विहरमानको मेरा नमस्कार हुचो ॥

॥ अथ आबूजी तीर्थ स्तवनं ॥

॥ जात्रीनाजाई आबूजीनी जात्र करेज्यो, जात्र ज्ञानी ऊ  
महेज्यो, तुम्हे नरजव लाहो लीज्यो रे ॥ जात्री० ॥ पंच तीरथा  
मांहे ठाजे, आबू मारुने देस विराजे रे ॥ जा० स्वरगथी चादे ला  
गो, उंचो अत्ररियै जइ लागो रे ॥ जा० ॥ १ ॥ एतो देवानो वास  
कहावै, निरखंता त्रिपति न थावे रे ॥ जा० ॥ एतो हुंगरियानो राजा,  
एदनी ठै बारह पाजा रे ॥ जा० ॥ २ ॥ उह रुनु वास वणायो,  
एतो चंपला अंबला ठायो रे ॥ जा० ॥ सरवर ऊरणा जाजा, जिहां  
तिहा वनवेढ्या आजा रे ॥ जा० ॥ ३ ॥ जार अढारे वणराई,  
एतो इहांदिज निजरे आइ रे ॥ जा० ॥ दहदिति परिमल आवै, फू  
लमानो रंग सुहावै रे ॥ जा० ॥ ४ ॥ ऊपर जूमि विसाला, देवल  
दीठा रलिपाला रे ॥ जा० ॥ विमलमंत्री वरगाई, चक्केसरि देवी सहा  
ई रे ॥ जा० ॥ ५ ॥ पोरवारु वंस वदीतो, जिणइलपति साहि जो  
तो रे ॥ जा० ॥ देवल तेष करायो, पाइण आरास मंभायो रे ॥ जा०  
॥ ६ ॥ जीणीर कोरणी ऊरयो, दल माखणजेम उकेरयो रे जा०  
॥ नवीर ज्ञांति वणराई, जिहां तिहां कोरणिया जिणराई रे ॥ जा०  
॥ ७ ॥ उत्तरे पाइण जेतो, जोखीजे पाइण तेतो रे ॥ जा० ॥  
आदि जिनेसर सांमी, प्रतिमा थापी दितकामी रे ॥ जा० ॥ ८ ॥  
उगणिस कोम सोनइया, इव्य लागत करि जस लीया रे ॥ जा०  
॥ करजोमीने आगै, मंत्री जिनवर पाय लागे, रे ॥ जा० ॥ ९ ॥  
पुठै चढिया हाथी, मंभाणा पति साह साथीरे ॥ जा० ॥ इणदेवल  
समवरु कोई, जूमंरुल माहि न होई रे जा० ॥ १० ॥ बलि ति  
ण वंस विगताला, वस्तुपाल अने तेजपाला रे ॥ जा० ॥ देव नमी  
रुहि पाई, इहां निर्या पिण सफल कराई रे ॥ जा० ॥ ११ ॥ ते

द्वो जिणहर पासै, वार क्रोरुनी लागति जामै रे ॥ जा० ॥ देरा  
 णी जेठाणी, आलानी अन्नव कहाणी रे ॥ जा० १२ ॥ इहा देव  
 ल सोह वधारी, नेमनाथजी वाल ब्रह्मचारी रे ॥ जा० ॥ कस  
 वट पाहण केरी, मूरत सुरमा रंग हेरी रे ॥ जा० ॥ १३ ॥ देवल  
 वामो दीवो, ते तो लागै नयणै मीठोरे ॥ जा० ॥ तिहा केइ देवल  
 पासै, लोक जेवि घणो तमासै रे ॥ जा० ॥ १४ ॥ त्रिण गात्र आ  
 गल जाइयै, देवल देखी सुख लहिये रे ॥ जा० ॥ चोमुख प्रतिमा  
 वारो, आदिनाथ देव जुहारो रे ॥ जा० ॥ १५ ॥ सोवनमें साते  
 घातो, जिगमिग रही दिनने रातो रे ॥ जा० ॥ मण चवदेसै चम्मा  
 लौ, जिण विवनो जाव निहानो रे ॥ जा० ॥ १६ ॥ श्रीमाली  
 जोम सोजागी, जिणवरथी जसु लय लागी रे ॥ जा० ॥ १६  
 ॥ एहनी करणी वाहवाहो, इहा लीयो लखमी लाहो रे ॥ जा०  
 ॥ १७ ॥ इण हुंगरियै आवी, जिण जात्र करै मन जावी रे ॥  
 जा० ॥ जिहा तिहा पूज रचावै, नाटकिया नाच करावै रे ॥ जा० ॥  
 ॥ १८ ॥ रातीजोगो दिवरावो, जिनवरना जस गुण गावो रे ॥  
 जा० ॥ साहमी वञ्चल कीज्यो, जातमलीनो जसलीजो रे ॥ जा०  
 ॥ १९ ॥ आगेथी आवी चाली, वाता केइ अचरज वाली रे ॥  
 जा० ॥ सुणिये ठै जे कोई, अदिनाणे जोज्यो तेई रे ॥ जा० ॥  
 ॥ २० ॥ ए तीरथना गुण गावै, जात्रानो फल ते पावे रे ॥  
 जा० ॥ ए तीरथ समतोले, कुण आवै रूपचद बोले रे ॥ जा० ॥  
 २१ ॥ इति आवूजी स्तवनं ॥

॥ अथ सकल सास्वता चैत्य नमस्कार स्तवनं ॥

॥ रिपज्ञानन ब्रधमान, चक्षानन जिन, वारिपेण नामे जि  
 णा ए॥१ ॥ तेह तणा प्रासाद, त्रिचुवन सासता, प्रणमुं विव सोहा-  
 मणा ए ॥ २ ॥ चेइहर सग कोरु, लाख बहुत्तर, चैत्य प्रतिमा

सो असी ए ॥ ३ ॥ तेरेसे निव्यासी कोनि, साठ लाख सुंदर,  
श्रुवनपती मांदि मन वसी ए ॥ ४ ॥ धारे देवलोक प्रासाद,  
चौरासी लाख, सहस विन्नू ने सातसे ए ॥ ५ ॥

॥ डाल ॥ २ ॥ आव्यो तिहां नरहर ॥ ९ चाल ॥

दिवै नवंग्रीवेकै पंचानुत्तर सार, चेईहर त्रणसय त्रेवीसा  
सुविचार ॥ प्रत्येके प्रतिमा वीसासो तिहां जाण, अरुत्रीस सह  
स सत साठ श्रै गुण पाण ॥ ६ ॥ नंदीसर वावन कुंमल रुचक  
वखाण, चउ९ चेईहर साठ सवे त्रिहुं गण ॥ इकसो चोवीसै गुण  
प्रतिमा चिहुं नाम, च्यारसै चालिता सात सहस प्रणमाम ॥ ७ ॥  
नंदीसर विदिसै सोलस कुल गिरि तीस, मेरु वन अस्सी दस कु  
रु गजदते वीस ॥ मानुषोत्तर परवत च्यार२ इखुकार, असी अति  
सुंदर वक्क सकार मजार ॥ ८ ॥

॥ डाल ॥ ३ ॥

॥ दिग्गजगिरि चालीस, असी इह सुजगीस ॥ कंचन गिर  
वरु ए, एक सहस धरु ए ॥ ९ ॥ वृत दीरघ वैताढ्य, वीस सत  
रसो आढ्य ॥ सतर महानदी ए, पच चूला सदी ए ॥ १० ॥  
जंबू प्रमुख दस रुक्क, इग्यारसै सतर सुक्क ॥ कुंरु त्रणसय असी  
ए, वीसजमगवसी ए ॥ ११ ॥

॥ डाल ॥ ४ ॥

त्रिण सहस सो एक निवाणूं रे, जिनवर प्रासाद वखाणूं,  
वीस सो ए अंक गुणियै रे, तीर्थकर प्रतिमा शुणियै ॥ १२ ॥ त्रिण लाख  
सहस वलि ज्यासी रे, प्रतिमा आठसो ने असी ॥ सरवालै सब  
मेलीजै रे, नमीजै ॥ १३ ॥ आठ कोनि सचावन  
लस्का रे, दो कयरुक्का ॥ दिव प्रतिमा ग्यान कहीजै



रे, जिनवरनी आण वहीजै ॥ १४ ॥ पनरैसै वेतालीस कोमी रे  
 अरुवन लख अधिके जोमी ॥ उत्तीस सदस अधिक कहीवै रे  
 प्रतिमा सगली सरदहियै ॥ १५ ॥

॥ बाळ ॥ ६ मी ॥

जोइस बिंतर प्रतिमा सासती, असंख्यात वलि जेहो जी ।  
 पायकमल तेदना नित प्रणमियै, सोवन वरणा सुदेहो जी ॥ १ ॥  
 विनय करी जिन प्रतिमा वंविचै, सुंदर सकल सरूपो जी, पूजै प्र  
 तिमा चोविह देवता, वलिय विद्याधर जपो जी ॥ २ ॥ वि० ।  
 जिनप्रतिमा बोली जिन सारपी, हित सुख मोक्ष निदानो जी ।  
 जवियणने जवसायर तारवा, प्रवहण जेम प्रधानो जी ॥ ३ ॥ वि० ।  
 जीवाजिगम प्रमुख माहि जाखीयो, ए सहू अरथ विचारो जी ।  
 साजलतां जणतां सुख संपदा, हियमै दरख अपारो जी ॥ ४ ॥ वि० ।

॥ कळश ॥

इम शासता प्रासाद प्रतिमा सधुण्या जिनवर तणा, चिहु  
 नाम जिनचंद तणा त्रिजुवन सेकलचंद सुदावणा ॥ वाचनाचारिज  
 समयसुंदर गुण जणै अजिराम ए, त्रिहु काल त्रिकरण सुद्ध होयज्यो  
 सदा मुज परणाम ए ॥ ५ ॥ इति साश्वता जिन चैत्य जिनबि  
 संख्या स्तवनं ॥

॥ अथ सूरत सहर सीतल जिन चैत्य प्रतिष्ठा स्तवन ॥

जविजन पूजो रे शीतल जिनपती रे, नयनानंदन चंद ।  
 प्रज्जुजी विराजै रे सूरत बिंदै रे, नंदादेवीना नंद ॥ १ ॥ ज० ।  
 जगहितकारी रे जिनजी अवतरणा रे, श्रीहृदरथ नृप गेद ॥ श्रीव  
 सोहे रे लाबन सूदरू रे ॥ कनक वर्षा प्रज्जु देह ॥ २ ॥ ज० ।  
 विषय निवारी रे सजम संग्रहो रे, लाधू केवलनाण ॥ सघन घन  
 घन जिम धम वरसता रे, विचरणा त्रिजुवन ज्ञाण ॥ ज० ॥ ३ ॥

चदनी प्रमुख जे शेष रह्या हुता रे, ज्यार अघाती कर्म ॥ दूर  
 निवारया रे अनुक्रम तेहने रे, पाम्भुं शिवपद शर्म ॥ ४ ॥ ज० ॥  
 संप्रति काले रे श्रीजिनराजनो रे, पूजीजे प्रतिविष्व ॥ प्रतिदिन  
 लक्ष्मि रे प्रभु सुप्रसादधी रे, मन वाञ्छित अविखं व ॥ ५ ॥ ज० ॥  
 श्रीजिनवरनो बिंष बिलोकता रे, डुकृत दूर पुलाय ॥ इडिय निग्रह  
 सुग्रह संपजे रे, समकित पिण दृढ आय ॥ ६ ॥ ज० ॥ श्रीसङ्ग-  
 रुना मुखधी सांज्जदबा रे, एहवा वचन विज्ञास ॥ ते बहुमाने रे  
 निज वित्तमें धरवा रे, नेमी सुत जाईवास ॥ ७ ॥ ज० ॥ चैत्य  
 कराव्युं रे सुंदर लोज्तो रे, मनधर अधिक छलास ॥ शीतल प्रचुनो  
 रे बिंष भराविषो रे, सहस्रफणा वलि पास ॥ ८ ॥ ज० ॥ वरस  
 अठारह सत्तावीसमे रे, माधव मास मजार ॥ उज्जल द्वादशी दि-  
 वसे आपियो रे, बिंष अनेक अदार ॥ ९ ॥ ज० ॥ एकसो इक्यासी  
 सहस्र मेले अया रे, विंवादिक् सुविचार ॥ कीध प्रतिष्ठा ते दिन ते-  
 दनी रे, विधि पूर्वक मन धार ॥ १० ॥ ज० ॥ श्रीजिनलाज सूरि-  
 श्वर हीपता रे, श्रीवरतर गङ्गा ज्ञाण ॥ तास पसाय में शीतल जिन  
 थुण्णा रे, विबुध कृमा कड्याण ॥ ११ ॥ ज० ॥ इति शीतल  
 जिन स्तवनं ॥

### ॥ अथ श्रीधरमनाथ स्तवनं ॥

॥ हारे हू तो भरवा गइयी तट जमुना के तीर जो ॥ ए चाल ॥

हारे मारे धरम जिनंदसुं लागी पूरण प्रीत जो, जीवरुलो  
 ललचाणो जिनजीनी उलगे रे लो ॥ हारे मुंने थास्ये कोइयक  
 समें प्रभु सुप्रसन्न जो, वातरुली तव थास्यै मदारी तधि वगे रे  
 लो ॥ १ ॥ हारे कोइ दुर्जननो जंजेरयो माइरो नाथ जो, उड-  
 वस्यै नही क्यारे कीधी चाकरी रे लो ॥ हारे मारे स्वामी ललि-  
 खो कुण ठै डनिया ॥ २ ॥ ये रे जिम तेहने धर

करी रे लो ॥ २ ॥ हारे मारे लस सेव्यांथी स्वारथनी नदी सिद्ध  
जो, गली रे ली करवी तेहथी गोठनी रे लो ॥ हारे काइ फुतू खाई  
ते मिठाईने माटे जो, क्याही रे परमारथनी नदी प्रीतनी रे लो  
॥ ३ ॥ हारे प्रभु अतरजामी जीवत प्राणाधार जो, बायो रे नवि  
जाण्यो कलियुग वायरो रे लो ॥ हारे मोरा लायक नायक जगत  
वज्रल जगवत जो, वारू रे गुण केरा सादिय सायरू रे लो ॥ ४ ॥  
हारे प्रभु लागी मुऊने ताहरी माया जोर जो, अलगा रे रद्याथी  
होइ उन्नोगलो रे लो ॥ हारे कुण जाणें अंतर गतिनी विण माहा-  
राज जो, हेजे रे हसी वोलो वंकी आमलो रे लो ॥ ५ ॥ हारे तारे  
मुखने मटके अटक्यूं माहरो मन्न जो, आसुमली अणियाली का-  
मणगारीयूरे लो ॥ हारे मारे नयणा लपट जोवे खिण २ तुऊ जो,  
गती रे प्रभु रागे न रहे वारीयां रे लो ॥ ६ ॥ हारे प्रभु अलगा  
ते पिण जाणज्यो करीनें हजूर जो, ताहरी रे वलिहारी हु जाउं  
वारणे रे लो ॥ हारे कवि रूप विबुधनो मोहन करै अरदास जो,  
गिरुआ थइ मन आणो ऊलट अति घणो रे लो ॥ इति स्त० ॥

॥ अथ राणपुरा स्तवनं ॥

राणपुरै रक्षियामणो रे लाल, श्रीआदीसर देव, मन मोह्युं  
रे ॥ उत्तंग तोरण देहरू रे लाल, निरखीजै नित्य मेव ॥ म० ॥  
रा० ॥ १ ॥ चोवीत मंरुप चिहुं विते रे लाल, चौमुख प्रतिमा  
च्यार ॥ म० ॥ त्रिजुवन दीपक देहरो रे ला०, समवरु नही  
संसार ॥ म० ॥ २ ॥ रा० ॥ देहरी चोरासी दीपती रे लाल,  
मांरुयो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ जलें जुहारघा जोगरा रे लाल, सूता  
ऊठ सवेर ॥ म० ॥ ३ ॥ रा० ॥ देस जाणीतू देहरू रे लाल, मोटो  
देस मेवारु ॥ म० ॥ लरक नवाणु लगाविया रे लाल, धन धनो  
पोरवारु ॥ म० ॥ ४ ॥ रा० ॥ खरतर वसई खतसू रे लाल, निर

खंता सुखु थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजा वली रे लाल,  
 जोतां पातिक जाय ॥ म० ॥ ५ ॥ रा० ॥ आज कृतार्थ हुं थयो  
 रे लाल, आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवरतणी रे  
 लाल, दूर गयूं ड्रव दद ॥ म० ॥ ६ ॥ रा० ॥ संवत सोल त्रियं-  
 तरे रे लाल, मिगसिर मास मजार ॥ म० ॥ राणपुरै यात्रा करी रे  
 लाल, समयसुंदर सुखकार ॥ म० ॥ ७ ॥ रा० ॥ इति श्री  
 राणपुरा स्तवनं ॥

॥ अथ दर्शनद्वार श्रोआदिजिन स्तवनं ॥

समकित घर गुजारै पैसता जी, पाप परल गयां दूर रे ॥  
 मोहन मारुदेवीनो लामलो जी, देगे मीगे थानद पूर रे ॥ स० ॥  
 ॥ १ ॥ आयू वरजित साते कर्मनी जी, सागर कोमाकोमी हीण  
 रे ॥ स्थिती पढम करणें करी जीवनें जी, वीरज अपूरवनो घर  
 लीध रे ॥ २ ॥ स० ॥ जुगल ज्ञागी श्रादि कपायनी जी, मिश्यात  
 मोहनी साकल साथ रे ॥ धार ऊघामा तम सवेगना जी, अनुजव  
 जवनें वेगे नाथ रे ॥ ३ ॥ स० ॥ तोरण बाधू जीवदया तणू  
 जी, साश्रियो पूरो सरवा रूप रे ॥ धुपघटी प्रजुगुण अनुमोदना  
 जी, द्विगुण मंगल आठ अनूप रे ॥ ४ ॥ स० ॥ संवर पाणी अंग  
 पखालनें जी, केशर चंदन उत्तम ध्यान रे ॥ आतम गुण रुची  
 मृगमद महमहे जी, पंचाचार कुशम परधान रे ॥ ५ ॥ स० ॥  
 ज्ञावपूजाने पावत आतमा जी, पूजो परमेसर पून्य पवित्र रे ॥  
 कारण जोगे कारज नीपजे जी, कृमा विजय जिन आगम रीत रे  
 ॥ ६ ॥ स० ॥ इति श्री आदीसर जिन स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीआदीसर जिन स्तवन ॥

आदि जिनेसर अरज सुणीजे, मोहन महिर धरीजे रे ॥  
 दिलरंजन प्रजु दरसण दीजे, मनमो रीजे रे ॥ आ० ॥ १ ॥

प्रभु दरसन लहिवो जग डुरलज, विन दरसन नही किरिया रे ॥  
 जे दरसन विन किरिया पावै, ते नवि कहियै तरिया रे ॥ आ० ॥ २ ॥  
 नय एकांते दरसन थापै, पिरु जरे ते पापे रे ॥ आप आपणा मति  
 आलापै, ते जूला जव थापे रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ शुद्ध दरसन स्या-  
 द्वादने संगे, जे ग्रहे आत्म उमगे रे ॥ आनदघन उपजै तसु अगै,  
 सिद्धमणने रगे रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ जव कोनाकोमीमें जमता, तुज  
 दरसन नहीं पायो रे ॥ सुकृत सयोगे ताहरे सनमुख, आज जले  
 हुं आयो रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ ताहरी महिर लहिरनो लटकौ, जो  
 जगगुरु हुं पाउं रे ॥ सहजे एक पलकमें अदभुत, आत्म गुण  
 उपजाउं रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ मरुदेवानंदन जग वंदन, श्वामी दर-  
 सण दीजै रे ॥ लाजउदय जिनचद लहीने, सगला कारज सीजै  
 रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति श्री आदिजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीअजितनाथ स्तवनं ॥

॥ अनत जिन आपज्योरे ॥ ए चाल ॥

ज्ञानादिक गुण सपदा रे, तुज अनंत अपार ॥ ते साजलता  
 कपनी रे, रुचि तिण पार उतार ॥ अजित जिन तारज्यो रे ॥  
 तारज्यो दीनदयाल, अ० ॥ ता० ॥ १ ॥ ए आकणी ॥ जे जे कारण जे-  
 दनो रे, सामग्री सयोग ॥ मिलता कार्य नीपजे रे, कर्ता तनय  
 प्रयोग ॥ अ० ॥ ता० ॥ २ ॥ कार्य सिद्धि कर्ता वसु रे, लहि का-  
 रण सयोग ॥ निज पदकारक प्रभु मिल्ब्या रे, होय निमित्तम जोग  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ३ ॥ अज कुलगत केसरी लहे रे, निज पद सिद्ध नि-  
 हाल ॥ तिम प्रभु जेके जवि लहे रे, आत्म शक्ति संजाल ॥  
 ॥ अ० ॥ ता० ॥ ४ ॥ कारण पद कर्तापणें रे, करि आरोप अजेद ॥ निज  
 पद अर्था प्रभुअकी रे, करै अनेक उमेद ॥ अ० ॥ ता० ॥ ५ ॥  
 अदवा परमात्म प्रभू रे, परमानंद सरूप ॥ स्याद्वाद मतारसी रे,

अमल अखंन अनूप ॥ अ० ॥ ता० ॥ ६ ॥ आरोपित सुख ब्रस  
 टट्यो रे, नास्यो अव्यावाध ॥ समरयो अजिलाखीपणो रे, कर्त्ता  
 साधन साध्य ॥ अ० ॥ ता० ॥ ७ ॥ आदकता स्वामित्वता रे,  
 व्यापक ज्ञोक्ता ज्ञाव ॥ कारणता कारज दसारे, सकल ग्रह्युं निज  
 ज्ञाव ॥ अ० ॥ ता० ॥ ८ ॥ अद्धा ज्ञासन रमणाता रे, दानादिक परिणा  
 म ॥ सकल अया सत्तारसी रे, जिनवर दरसन पामि ॥ अ० ॥ ता०  
 ॥ ९ ॥ तिणे निर्यामक माहणो रे, वैद्य गोप आधार ॥ देवचंद्  
 सुख सागरू रे, ज्ञावयरम दातार ॥ अ० ॥ ता० ॥ १० ॥ इति श्री  
 अजित जिन स्तवनं ॥

॥ अथ आलोयण वृद्ध स्तवनं ॥

॥ वे कर जोम्तो वीनवूं जी, सुणि स्वामी सुविदीत ॥ कूरु  
 कपट मूंकी करी जी, वात कहूं आप वीत ॥ १ ॥ रूपानाथ मु  
 ऊ विनती अवधार ॥ आकणी ॥ तू समरथ त्रिजुवन धणी जी,  
 मुऊने डुत्तर तार ॥ २ ॥ २ ॥ जवसायर जमता थका जी,  
 दीगं डुख अनंत ॥ ज्ञागसंयोगे जेटियो जी, जयजंजण जगवंत  
 ॥ ३ ॥ ३ ॥ जे डुख ज्ञांजे आपणा जी, तेहनें कहिये डुस्क ॥  
 परडुख जजण तूं सुण्यो जी, सेवगने थो सुस्क ॥ ४ ॥ ४ ॥ आलोयण  
 लीधां पखै जी, जीव रुले ससार ॥ रूपी लक्ष्मणा महासती जी, एह  
 सुण्यो अधिकार ॥ ५ ॥ ५ ॥ दूपमकालै दोहिलो जी, सूयो गुरु  
 सयोग ॥ परमारथ पीठै नही जी, गमरप्रवाही लोक ॥ ६ ॥ ६ ॥  
 तिण तुऊ आगल आपणा जी, पाप आलोउं आज ॥ माय  
 वाप आगल बोलतां जी, बालक केही लाज ॥ ७ ॥ ७ ॥ जि  
 न धमर सहू कहै जी, आपै अपणी जी वात ॥ सामाचारो  
 जुइ जुइ जी, शंसय पन्थां मिथ्यात ॥ ८ ॥ ८ ॥ जाण  
 अजाणपणे करी जी, ~~पुण्य~~ वत्सूत्र बोल ॥ रतने काग

उभावता जी, हारयो जनम नितोल ॥ ६० ॥ ए ॥ जग-  
 वंत ज्ञाप्यो ते किदा जी, किदा मुज करणी एह ॥ गज पाखर  
 खर किम सदे जी, सबल विमासण तेह ॥ ६० ॥ १० ॥ आप  
 परंपुं आकरो जी, जाणे लोक महंत ॥ पिण न करू परमादियो  
 जी, मासाहस दृष्टात ॥ ६० ॥ ११ ॥ काल अनते में लह्या जी,  
 तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमोदे पाणिया जी, किदा जइ करूं  
 पुकार ॥ ६० ॥ १२ ॥ जाणू उत्तुष्टी करूं जी, उद्यत करूं अ-  
 विहार ॥ धीरज जीव धरै नहीं जी, पोते बहु संसार ॥ ६० ॥ १३ ॥  
 सइज पड्यो मुज आकरो जी, न गमें जूंनी वात ॥ परनिद्या क-  
 ग्ता अकाजी, जाये दिन नें रात ॥ ६० ॥ १४ ॥ किरिया करतां  
 दोहिली जी, आलस आपो जीव ॥ धरम परै धेदे पड्यो जी,  
 नरकै करसी रीव ॥ ६० ॥ १५ ॥ अणहंता गुण को कहे जी, तो  
 हरखूं निसदीत ॥ को हितसीख जली दियै जी, तो मन आणू  
 रीस ॥ ६० ॥ १६ ॥ वादजणी विद्या जणी जी, पररंजण उपदेश  
 ॥ मन संवेग धरयो नही जी, किम ससार तरेस ॥ ६० ॥ १७ ॥  
 सूत्र सिद्धात वखाणतां जी, सुणता करम विपाक ॥ खिण इक  
 मनमाहे ऊपजै जी, मुज मरकट वैराग ॥ ६० ॥ १८ ॥ त्रिविध  
 ७ कर उच्चरू जी, जगवत तुम्ह हजर ॥ वार २ ज्ञाजू वली जी,  
 वृटकवारो दूर ॥ ६० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचता जी, कीधा  
 आरंज कोमि ॥ जयणा न करी जीवनी जो, देवदया पर ठोर  
 ॥ ६० ॥ २० ॥ वचन दोषव्यापक कह्या जी, दास्या अनरअ दंरु ॥  
 कूरु कपट बहु केलवी जी, व्रत काधा सत खंरु ॥ ६० ॥ २१ ॥  
 अणदीधो लीजे ठणो जी, तोही अदत्तादान ॥ ते दूषण लागा घणा  
 जी, गिणता नावे ज्ञान ॥ ६० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं  
 जी, राचै रमणी रूप ॥ राम विटंवन सी कहू जी, ते तू जाणे

सरूप ॥ ८० ॥ ७३ ॥ माया ममतामें पण्यो जी, कीधो अधिको  
 लोभ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो जी, न चढी संजम सोभ ॥ ८० ॥  
 ॥ २४ ॥ लाग्या मुऊनें लाखे जी, रात्रीजो जन दोष ॥ में मन  
 मूक्यो माहरो जी, न धरयो धरम संतोष ॥ ८० ॥ २५ ॥ इण जव  
 परजव दूहव्या जी, जीव चोरासी लाख ॥ ते मुऊ मिच्छामिडुकरं  
 जी, जगवंत तोरी साख ॥ ८० ॥ २६ ॥ करमादान पनरे कह्या  
 जी, प्रगट अघारे जी पाप ॥ जे में कीधा ते सहूजी, बगसर माइ  
 बाप ॥ ८० ॥ २७ ॥ मुऊ आधार ठै एतलो जी, सरदहणा ठै शुद्ध ॥  
 जिनधर्म मीठो जगतमें जी, जिम साकर ने दूष ॥ ८० ॥ २८ ॥  
 रिषजदेव तूं राजियो जी, सैत्रुंजगिर सिणगार ॥ पाप आलोया  
 आपणा जी, कर प्रजु मोरी सार ॥ ८० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-  
 धर्मनो जी, पाप आलोयां जाय ॥ मनसुं मिच्छामिडुकरं जी, देता  
 दूर पुलाय ॥ ८० ॥ ३० ॥ तूं गति तूं मति तूं धणी जी, तूं साहिव  
 तू देव ॥ आण धरुं सिर ताहरीजी, जव २ ताहरी सेव ॥ ८० ॥ ३१ ॥  
 ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चरण जेव्या नाजिनंदन जिन तणा,  
 करजोनि आदिजिनंद आगे पाप आलोयां आपणां ॥ श्रीपूज्य  
 जिनचंद सूरि सदगुरु प्रथम शिष्य सुजस घणें, गणि सकलचंद  
 सुसीस वाचक समयसुंदर गणि जणें ॥ ३१ ॥ इति आलोयण वृद्ध स्त०

॥ अथ आनंदघनजी कृत स्तवन लिख्यते ॥

॥ अथ श्री रूपज देव जिन स्तवनं ॥

॥ करम परीक्षा करण कुमर चलयो रे ॥ ए चाल ॥

रूपज जिनेसर प्रीतम माहरो रे, नर न चाहूं रे कंत ॥  
 रीज्यो साहिव संग न परिहरे रे, ज्ञागे सादि अनंत ॥ ३० ॥ १ ॥  
 प्रीत सगाई रे जगमा सहु करे रे, प्रीत सगाई न कोय ॥ प्रीत



सगाई रे निरुपाधिक कही रे, सोपाधिक धन ग्योय ॥ ३० ॥ २ ॥  
 कोइ कत कारणा काष्ट न्कृण करे रे, मिलसु कतने घाय ॥ ए  
 मेलो नवि कहियै संजवे रे, मेलो ठाम न ढाय ॥ ३० ॥ ३ ॥ कोइ  
 पति रंजन अति घणो तप तपै रे, पति रंजन तन ताप ॥ ए पति  
 रंजन में नवि चित्त धरयुं रे, रंजन धातु मिलाप ॥ ३० ॥ ४ ॥  
 कोइ कहे लीला रे अलख अलख तणी रे, लख पूरै मन आस ॥  
 दोष रहितने लीला नवि घटे रे, लीला दोष विलास ॥ ३० ॥ ५ ॥  
 चित्त प्रसन्ने रे पूजन फल कह्यो रे, पूज अखन्त एह ॥ कपट रहित  
 धई आतम अरपणा रे, आनदधन पद रेह ॥ ३० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥

॥ श्री अथ अजित जिन स्तवन ॥

॥ मारु मन मोह्य रे श्री विमलाचले रे ॥ ए चाल ॥

पंथको निहालू रे बीजा जिनतणो रे, अजित २ गुण धाम ॥  
 जे तें जीत्या रे तेणे हु जीतियो रे, पुरुष किस्सुं मुऊ नाम् ॥ पं० ॥  
 ॥१॥ चरम नयण करी मारग जोवतो रे, नूली सयल संसार ॥ जेखें  
 नयणे करी मारग जोइये रे, नयण ते दिव्य विचार ॥ ५० ॥ २ ॥  
 पुरुष परपर अनुभव जोवता रे, अधोग्रंथ पुलाय ॥ वस्तु विचारे  
 रे जो आगमे करी रे, तो चरण धरण नही ठाय ॥ पं० ॥ ३ ॥ तर्क  
 विचारेरे वाद परंपरा रे, पार न पहुचेकोय ॥ अजिमते वस्तु वस्तुगते  
 कहे रे, ते विरला जग जोय ॥ पं० ॥ ४ ॥ वस्तु विचारे रे दिव्य  
 नयणातणे रे, विरह पड्यो निरधार ॥ तरतम जोगे रे तरतम वासना रे,  
 वासित बोध आचार ॥ पं० ॥ ५ ॥ काल लवधि लही पंथ-निहालसु  
 रे, ए आस्या अविर्लंब ॥ ए जग जीवे रे जिनजी जांशज्यो रे,  
 आनदधन मत अथ ॥ पं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवनं ॥

॥ रातडी रमितें किहायी आविया रे ॥ ए चाल ॥

॥ संजव देव ते घुर सेवो सवे रे, लहि प्रचू जेद ॥ सेवन  
सेवन कारण पदली जूमिका रे, अन्नथ अद्वेष अखेद ॥ सं० ॥ १ ॥  
जय चंच लता हो जे परिणामनी रे, द्वेष अरोचक जाव ॥ खेद  
प्रवृत्ति हो करतां थाक्रियें रे, दोष अवोधि लखाव ॥ सं० ॥ २ ॥  
चरमावर्त हो चरम करण तथा रे, जव परणति परिपाकादोष टले  
वली दृष्टी खुले जली रे, प्रापति प्रवचन वाका ॥ सं० ॥ ३ ॥ परिचय  
पातिक घातक साधसूं रे, अकुशल अपचय चेत ॥ ग्रंथ अध्यातम अ  
वण मनन करी रे, परिशीलन नय हेत ॥ सं० ॥ ४ ॥ कारण  
जोगे हो कारज नीपजे रे, एमा कोइ न वाद ॥ पण कारण विण  
कारज साधिये रे, ए जिनमत उनमाद ॥ सं० ॥ ५ ॥ मुग्ध सु  
गम करी सेवन आदरे रे, सेवन अगम अनूप ॥ देजो कदाचित से  
वक याचना रे, आनदघन रसरूप ॥ सं० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअभिनदन जिन स्तवनं ॥

॥ आज निहेज्यो रे दीसे नाहलो ॥ ए चाल ॥

॥ अजिनदन जिन दरशन तरसियै, दरसण डुर्वज देव ॥  
॥ मतर जेदे रे जो जइ पूढिये ॥ सहु थापै अहमेव ॥ अजिन  
॥ १ ॥ सामान्ये करी दरिण दोहलुं, निरणय सकल विशेष ॥  
मदमें घेरयो रे अंधो किम करे, रवि शशि रूप विलेख ॥ अ० ॥  
२ ॥ हेतु विवादे हो चित्त धरि जोइये, अति डुरगम नय वाद ॥  
आगम वादे हो गुरुगम को नही, ए सबलो विपवाद ॥ अ० ॥  
३ ॥ घाती हुंगर आम्ना अतिघणा, तुऊ दरिण जगनाथ ॥ घी  
ठाइ करी मारग सचरुं, सेंगु न कोइ साथ ॥ अ० ॥ ४ ॥ दरिण  
एर रटतो जो फिं समान ॥ जेहने पीपासा हो अ

मृत पाननी, किम ज्ञाजे विप पान ॥ अ० ॥ ५ ॥ तरस न आवे  
हो मरण जीवन तणो, सीजे जो दरसन आज ॥ दरसन दुर्ल  
ज सुलज रूपाथकी, आनंदघन माहाराज ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसुमती जिन स्तवनं ॥

॥ राग वसत तथा केदारो ॥

॥ सुमति चरण कज आतम अरपणा, दरपण जिम अवि  
कार सुग्यानी ॥ मति तरपण बहु सम्मत जाणिये, परि सरपण सु  
विचार ॥ सुग्यानी सु० ॥ १ ॥ त्रिविध सकल तनु धर गत आत  
मा, वहिरातम धुरि जेद ॥ सु० ॥ बीजो अतर आतम तीसरो, पर  
मातम अविभेद ॥ सु० सु० ॥ २ ॥ आतम बुद्धे हो कायादिक अ  
ह्यो, वहिरातम अथ रूप ॥ सुग्यानी ॥ कायादिकनो हो साखीधर र  
ह्यो, अतर आतम रूपा ॥ सुग्यानी ॥ सु० ॥ ३ ॥ ज्ञानानंदे हो पूरण  
पावनो, वरजित सकल उपाधि सुग्यानी ॥ अतिडिय गुण गण मणि  
आगरू, ड्य परमातम साध सुग्यानी ॥ सुम० ४ ॥ वहिरा  
तमतज अंतरआतमा, रूप सुग्यानी अइ थिर ज्ञावा ॥ परमातमनू हो  
आतम ज्ञाववू, आतम अरपण दाव सुग्यानी ॥ सुम० ॥ ५ ॥ आ  
तम अरपण वस्तु विचारता, जरम टले मतिदोष ॥ सु० ॥ परम  
पदारथ संपति सपजै, आनंदघन रस पोष ॥ सु० सुम० ॥ ६ ॥ इति

॥ अथ श्रीशीतल जिन स्तवनं ॥

॥ गुणह विसाला मगलीक माला ॥ ए चाल ॥

॥ शीतल जिनपति ललित त्रिजंगी, विविध जंगी मन मो  
हे रे ॥ करुणा कोमलता तीक्ष्णता, उदासीनता सोहे रे ॥ शी०  
॥ १ ॥ सर्व जंतु हितकरणी करुणा, कर्म विदारण तीक्ष्ण रे ॥  
ज्ञानादाना रहित परणामी, उदासीनता विक्ष्ण रे ॥ शी० ॥ २  
॥ परदुःख वेदन उच्चा करुणा, तीक्ष्ण परदुःख रीके रे ॥ उदासी

नता उन्नय विवक्षणा, एक ठामे केम सीजे रे ॥ शी० ॥ ३ ॥ अ  
 न्नयदांन ते मल कय करुणा, तीकरता गुण जावे रे ॥ प्रेरणा  
 विगु कृत उदासीनता, इम विरोध मति नावे रे ॥ शी० ॥ ४ ॥  
 श के व्यक्ति त्रिजुवन प्रजुता, निग्रथता संयोगे रे ॥ योगी जोगी वक्ता  
 मौनी, अनुपयोगि उपयोगे रे ॥ शी० ॥ ५ ॥ इत्यादिक बहु जं  
 ग त्रिजंगी, चमत्कार चित्त देती रे ॥ अचरजकारी चित्र विचित्रा,  
 आनंदघन पद लेती रे ॥ शी० ॥ ६ ॥ इति पद ॥

॥ अथश्रो कुंथुजिन स्तवन ॥

॥ राग गुर्मी ॥

॥ मनमो किमडी न वाजे हो, कुंथु जिन म० ॥ जिम२ ज  
 त्तन करीनें राखू, तिम२ अलगो जाजे हो ॥ कुंथुजिन म० ॥ १ ॥ रज  
 नी वासर वमती ऊजरु, गयण पायाले जाया ॥ सांप खायने मुखमुं  
 थांथुं, ए उखाणो न्याय हो ॥ कुंथु जिन म० ॥ २ ॥ मुगतितणा  
 अजिलापी तपिया, ज्ञान ने ध्यान अज्यासे ॥ वयरीमुं कांड एहवुं  
 चित्तै, नाखे प्रबले पासे हो ॥ कुं० म० ॥ ३ ॥ आगम आगम  
 घरनें हाथे, नावे किण विध आंरू ॥ किहां कणे जो दृठ करीदटकू,  
 तो व्यालतणी पर वांकू हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ४ ॥ जो उग कडू तो  
 उग तो न देखूं, सादूकार पिण नांही ॥ सर्वमांद ने सहृथी अ  
 लगू, ए अचरिज मनमांही हो ॥ कुं० म० ॥ ५ ॥ जे जे कहुं ते  
 कान न धारे, आप मते रहे कालो ॥ सुरनर पंक्ति जन समजावे,  
 समजे न माहारो सालो हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ६ ॥ में जाण्यु ए  
 लिंग नपुंसक, सकल मरदने ठेले ॥ बीजी वाते समरथ ठै नर,  
 एहने कोई न जेजे हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ७ ॥ मन साधुं तिण स  
 गलू सधयुं, एह वात नही खोटी ॥ एम कहे साधुं ते नवि मानुं,  
 ए कदि वात ठे मोटी हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ८ ॥ मनहुं डुराराध्य ते

चस आणुं, ते आगमथी मति आणुं ॥ आनंदधन प्रभु मादरो प्राणो,  
तो साचू कर जाणु हो ॥ कुं० ॥ म० ॥ ए ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पढिक्रमणेमें बोलणेमें आवे ॥

॥ पार्श्वनाथजीके छोटे स्तवन लिख्यते ॥

॥ पद ॥ १ ॥ लुं ॥

॥ श्रीसखेसर पाम जिनेसर जेटियै, जवना सखित पाप परा सब  
मेटियै ॥ मन धर जाव अनत चरण धुग सेवता, अणहूते एक  
कोनि चतुर विध देवता ॥ १ ॥ ध्यान धरूं प्रभू दूरधकी में तादरो,  
जल जिम लीनो मीन सदा मन मादरो ॥ जव २ तुमहीज देव  
चरण हू सिर धरु, जवसापरथी तार धरज आहीज करू ॥ २ ॥  
जख त्रिपा तप सीत आतप ए ना सहै, तप जप सजम जार त  
णी नवी निरवहै ॥ पिण जिनवरजीना नामतणी आसत घणी,  
एहिज ठै आधार जगतगुरु अम्ह जणी ॥ ३ ॥ तुम्ह दरिसल विण स्वांम  
जवोदधि हूं फिरयो, सहीया इस्क अनेक न कारज को सरयो ॥  
मिलिया हिव प्रभु मुऊ सदा सुख दीजियै, चौ गइ संकट चूर जगत  
जस लीजियै ॥ ४ ॥ यादवपति श्रीरुष्णातणी आरति हरी, सैन्या  
कीध सचेत जरा दूरै करी ॥ परचा पूरण पास रयण जिम दीपतो,  
जयवतो जिणचद सयल रिपु जीपतो ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ॥ २ ॥ लुं ॥

मनमोहन माहाराज, तीन जनुवन सिरताज ॥ आवेलाल,  
नगर ब्रह्मानपुर राजीया जी ॥ १ ॥ पास जिनंद प्रधान, निरमल  
सुगुण निधान ॥ आवेलाल, वामासुत वरुजागीयाजी ॥ २ ॥ सेव-  
कनी संजाल, करिय खरी ततकाल ॥ आवेलाल, सकट सहु प्रभु  
परिहरया जी ॥ ३ ॥ चिता करी चकचूर, प्रयव्यो आनद पूर ॥  
आवेलाल, वाट विदमता पिण टली जी ॥ ४ ॥ प्रभुजीने परसाद,

वीता सहु विखवाद ॥ आठेलाल, मन वंछित मुऊ सहु फट्या जी  
॥ ५ ॥ ध्यान समाधिनी आप, मिलिया ठो प्रचु आप ॥ आठेलाल,  
देज्यो दरिसेण वलि सदा जी ॥ ६ ॥ अमृतधर्म सुजाण, सीस क्कमा-  
कट्टयाण ॥ आठेलाल, वाचक इम वीनती करै जी ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ३ जु ॥

जयकारी जिनराज, पुरिसावाणी रे ॥ वामासुत वरदाय,  
निरमल नाणी रे ॥ १ ॥ पाव कमल प्रचु अंग, निरुपम निरुख्या रे ॥  
तीन कमल मुऊ संग, आतम हरख्या रे ॥ २ ॥ वदन महोदय देख,  
चंद लजाणूं रे ॥ गगन जमे निसदीस, इम मन आंशूं रे ॥ ३ ॥  
सुरमणि ज्युं सुखकार, नयण विराजै रे ॥ हृदयकमल सुविलास,  
आल ज्युं ठाजै रे ॥ ४ ॥ प्रचु कर चरण विलोक, पकज हारघो रे ॥  
ततखिण निज संवास, जलमें धारघो रे ॥ ५ ॥ इम सरवंग नदार,  
श्रीजिन राया रे ॥ सावै पुण्य संयोग, साहिव पाया रे ॥ ६ ॥ प्रचु-  
गुण अनुभव नीर, साग सुरंगे रे ॥ टाढ्यो पात्तिक पंक, आतम संगे रे  
॥ ७ ॥ वरस अठार चोतीस, वदि वैसाखै रे ॥ मनुहर पाचम डीस,  
सहु संघ साखै रे ॥ नगर महेवा मांदि, पास जुडारया रे ॥ श्री  
जिनचंद मुर्षिंद, वांछित सारया रे ॥ ८ ॥ इति पदं ॥

॥ पद ४ थुं ॥

वालेसर मुऊ वीनती गोमीचा, अलवेसर अवधार हो गोमी  
चाराय ॥ प्रगट थई पातालजी गोमीचा, सेवक जिन साधार हो  
गो० ॥ वा० ॥ १ ॥ आख थई ऊतावली, गो० ॥ दरसेण देखण  
काज हो ॥ गो० ॥ पाणीनखमे पातली, गो० ॥ थो दरसेण महा-  
राज हो ॥ गो० ॥ वा० ॥ २ ॥ तूं साहिव सुपनंतरे, गो० ॥ मिलियो  
ठै नित मेव हो ॥ गो० ॥ तोपिण आयो ऊमही, गो० ॥ संप्रति क-  
रवा सेव हो, गो० ॥ ३ ॥ जो पोतानो त्रेवतो, गो० ॥ सगली.

पात जिनेसर अंतरजामी, सेवा कहुं विनशमें ॥ तू० ॥ १ ॥ का-  
हूको मन तरुणीसैं राज्यो, काहूको चित्त मनमें ॥ मेरो मन प्रभु  
तुमहीसे राज्यो, ज्यु चात्रक चित्त वनमें ॥ तू० ॥ ७ ॥ जोगीसर  
तेरो गति जायै, अलख निरंजन विनमें ॥ कनककीरत सुखसागर  
तूही, साहिव तीन जवनमें ॥ तू० ॥ ३ ॥ इति पद ॥

॥ अथ निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ मारगदेशक मोहनो रे, केवल ज्ञान निधान ॥ जाव  
दयासागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रमानो रे ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध  
थया, सघ सकल आधारो रे, दिवइण जरतमां ॥ कुण करणे उप-  
गारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणू सैन्य ज्यु रे, वीर विहूणो रे  
सघ ॥ साथे कुण आधारथी रे, परमानंद अजंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥  
मात विहूणा बाल ज्यु रे, अरहा परहा अग्रमाय ॥ वीर विहूणा  
लीवना रे, आकुल ठपाकुल आयो रे ॥ ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय  
वेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख ऊपजे रे,  
ते विण किम रहिवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्वाणक जवसमुझनो रे,  
जव अटवो सववाह ॥ ते परमे नरविश मिट्यारे, किम बाधे उवताहो  
रे वीर० ॥ ६ ॥ वीर अका पण श्रुत तणो रे, हुनो परम आधार ॥  
हमणा श्रुत आधार वे रे, ए जिन आगम-सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥  
इण कालें सवि जीवने रे, आगमथी आनंद ॥ ध्यावो सेवो जवि-  
जना रे, जिनपनिमा सुखकदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणथर आचा-  
रिज मुनि रे, सहुनें इण परसिद्ध ॥ जव जव आगम संगथी रे, देव-  
चंद्र पद लीधो रे ॥ वीर० ॥ ९ ॥ इति निर्वाणकल्याणक स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतीर्थमाला स्तवनम् ॥

॥ शत्रुंजय रूपज समोसरथा, जला गुण जरया रे ॥ सिद्धा  
साधु अनंत, तीर्थ ते नमुं रे ॥ तीन कल्याणक तिहा थया, मुगतें

गया रे ॥ नेमीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो,  
 गिरिसेहरो रे ॥ नरतं नराव्यां विं व ॥ ती० ॥ आयु चौमुख अति  
 जलो, त्रिभुवन तिलो रे ॥ विमल वसइ वस्तुपाल ॥ ती० ॥ २ ॥  
 समेतशिखर सोदामणो, रक्षियामणो रे ॥ सिद्धा तीर्थकर वीश  
 ॥ ती० ॥ नयरो चंपा निरखीयें, द्वैये दरखीयें रे ॥ सिद्धा श्रीवा-  
 सुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशे पावापुरो, रुद्धे नरी रे ॥ मुक्ति  
 गया मद्दावोर ॥ ती० ॥ जेसलमेर जुहारीयें, दुःख वारीयें रे ॥  
 अरिहंत विं व अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें, चिर नंदीयें  
 रे ॥ अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो संखेसरो, पंचासरो  
 रे ॥ फलोधी धंजण पास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अंजावरो, अ  
 मीऊरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो,  
 जात्रा करोरे ॥ राणगुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीनामुलाई जाववो,  
 गोमी स्तवो रे ॥ आवरकाणो पास ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरा,  
 चावन जलां रे ॥ रुचक कुंमल चारू चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती  
 अशाश्वती, प्रतिमा वती रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ ती० ॥ तीर्थ  
 जात्रा फल तिहा, होजो मुज इहा रे ॥ समयसुदर कहे एम ॥ ती० ८  
 ॥ अथ सिद्धाचल स्तवनं ॥

॥ आज आपें चालो सदीधो, सिद्धाचल गिरि जायें ॥ सिद्धा-  
 चलगिरि जईएं बहेनी, विमलान्चलगिरि जईएं रे ॥ आ० ॥ सुण  
 बहेनी ए गिरिनी महिमा, आदिजिनइ इम जाखी ॥ नरतादिक  
 नरपतिने आगल, इंडादिक सहु साखी रे ॥ आ० ॥ १ ॥ इणा गि-  
 रिवरिये काल अनते, साधु अनन्ता सीधा ॥ जन्म मरणना दुःख  
 गोमीने, अमल अखय गुण लीवा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ इण गिरि स-  
 न्मुख पगलां नरता . . . . . जुद्ध सुजायें ॥ कोनि नवारा पातक  
 कीधा, एक . . . . . ॥ आ० ॥ ३ ॥ सासतो तीर्थ ए श्रेष्ठ



जो, जोता लगे मीठे ॥ तीन चुवनमें ऽण गिरि तोले, बीजो कोई  
 न वीठो रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नीरजनशु नेह धरीने, आगे जलक  
 रस्यां ॥ अन्नत आदि जिनेसर निरखी, प्रेम सुधारस पीस्यां रे ॥  
 ॥ आ० ॥ ५ ॥ पुहप सुगधा लेइ पचरगा, हार सुगंवा गूंथी ॥ प  
 हिरावी प्रचु कठें लहिया, शिव मारगनी स्यी रे ॥ आ० ॥ ६ ॥  
 गहिर स्वरें जिनवर गुण गातां, जात्र नवाणूं करिये ॥ मन गमती  
 जमती विच जमता, जवसायर निततरिये रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ पूरव  
 नवाण् वार प्रथम जिन, रायण रूखे आया ॥ ए तीरथ शुज जावे  
 फरसी, करिये निरमल काया रे ॥ आ० ॥ ८ ॥ लाज छे ए गिरि  
 वर लहिये, कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचद सदा हित वस्तव,  
 प्रेम घले वित्त आणी रे ॥ आ० ॥ ९ ॥ इति सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ अथ पारणा महावीर स्वामीका लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ श्रीप्ररिद्धत अनंत गुण, अतिशय पूरण गात्र ॥  
 मुनि जे ज्ञानी सजमी, कहिये उत्तम पात्र ॥ १ ॥ पात्रतणी अतु  
 मोदना, करतो जीरणसेठ ॥ आवक अच्युय गति लहे, नवधैके  
 हेठ ॥ २ ॥ दस चउमासा वीरजी, विचरत सजम वास ॥ वेशा  
 लापुर आविया, इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥ ढाल ॥ चोमासी इ  
 ग्यारमी जी, विचरत साइसवीर ॥ वेतालपुर वाहिरे जी, आवा  
 श्रीमहावीर ॥ १ ॥ जगतगुरु त्रिसलानदन जा, जले में जेव्या श्री  
 जिनराय ॥ सखीरी चोक पूरावो आय, मेरे जाग्य अनोपम माय  
 ॥ ज० ॥ २ ॥ बलदेवनो वे देहरो जी, तिहा प्रचु काठसग ली  
 य ॥ पञ्चकाण चोमासनो जी, स्वामीए तप कीध ॥ ज० ॥ ३ ॥  
 जीरणसेठ तिहां वसे जी, पाले आवकधर्म ॥ आकारे तिण नन  
 र्या जी ॥ जाणे श्रीजिन मर्म ॥ ज० ॥ ४ ॥ आज अठे उपवा  
 सीया जी, स्वामी श्रीवर्द्धमान ॥ काले सही प्रचु जीमस्ये जी,

सिंहासने द्युं दान ॥ ज० ॥ ५ ॥ सदा सेठ इम चिंतवे जी, हो  
 रसी सफल मुऊ आस ॥ पद्म मास गिरातां थका जी, पूरी थइ चो  
 आस ॥ ज० ॥ ६ ॥ सामग्री आहारनी जी, जीरण कीयी तइ  
 प्यार ॥ प्रचुनो मारग देखतो जी, वेठो घरने वार ॥ ज० ॥ ७ ॥  
 घर आवे ठे पाहुणो जी, निहुत्यो एऊण वार ॥ प्रचुजी का न  
 पधारसी जी, में निहुत्या वारंवार ॥ ज० ॥ ८ ॥ पीठे करस्युं  
 पारणो जी, हू प्रचूने पन्निवाज ॥ होय मनोरथ एहवो जी, तोय  
 विन वरसे आज ॥ ज० ॥ ९ ॥ अवतर ऊज्या गोचरी जी, श्री  
 सिद्धारप्रपुत ॥ वेसान्वापुर आवतां जी, पूरणघरे पहुत ॥ ज० ॥  
 १० ॥ मिश्राल्यो जाणे नही जी, जंगम तीरथ एह ॥ चेनी प्रने  
 इम कहे जी, काइक जिक्का देह ॥ ज० ॥ ११ ॥ चाटू जरने वा  
 कला जी, प्रचूने आंगी दीव ॥ नीरागी तेही जिया जी, तिहां प्र  
 चू पारणो कीथ ॥ ज० ॥ १२ ॥ देव वजावे डुंडुजि जी, जै वो  
 ले कर जोमि ॥ इम वृष्टि हुइ तिहा जी, साढोवारे कोमि ॥  
 ज० ॥ १३ ॥ कहे सेठ तुमे स्युं दियो जी, कियो पारणो वीर ॥  
 लोकां प्रते इम कहे जी, में बहिराइ क्षीर ॥ ज० ॥ १४ ॥ राजा  
 दिऊ सहूए कहे जी, धन७ पूरणसेठ ॥ उंची करणी तेंकरी जी,  
 अवर सहू तुऊ हेठ ॥ ज० ॥ १५ ॥ जीरणसेठ सुणे तवे जी, वा  
 जित डुंडुजिनाद ॥ अन्यत्र कियो प्रचु पारणो जी, मनमें थयो  
 विपवाद ॥ ज० ॥ १६ ॥ हूं जगमें अज्ञागियो जी, मेरे न आया  
 साम ॥ कल्पवृक्ष किम पांसीये जी, मारूमंजल ठाम ॥ ज० ॥  
 १७ ॥ जेता मनोरथ में किया जी, तेता रह्या मनमाहि ॥ निर  
 धन जिमर चितवे जी, निमर निरफल थाय ॥ ज० ॥ १८ ॥ स्वा  
 मी तिहा कियो पारणो जी, कियो अन्यत्र विहार ॥ आया पास  
 संतानिया जी, तिहा मुनि ॥ ज० ॥ १९ ॥

राजियो जी, लौकास्थुं आणद ॥ राय प्रश्न पूठे इस्यो जी, सुगुरु  
 चरणे अरविठ ॥ ज० ॥ २० ॥ मेरे नगरमें को अठें जी, जीव पु  
 न्य जंसवंत ॥ कहे केवली आज तो जी, जीरणसेठ महंत ॥ ज० ॥  
 २१ ॥ राय कहे किए कारणे जी, जीरणसेठ महंत ॥ दांन दियो  
 जिन वीरने जी, पूरणसेठ महंत ॥ ज० ॥ २२ ॥ राय प्रते कहे  
 केवली जी, पूरण दीनो दांन ॥ हेमवृष्टि फल तेहने जी, अवर न  
 कोइ प्रमाण ॥ ज० ॥ २३ ॥ देवलोक तिण वारमें जी, जीरण  
 घाड्यो वंध ॥ विना दांन दिया लह्यो जी, उत्तम फल संबंध ॥ ज०  
 ॥ २४ ॥ घनी एक सुर डुडुजि जी, जो न सुणांतो कान ॥ लहि-  
 तो जीरण तो सही जी, केवल अविचल गम ॥ ज० ॥ २५ ॥  
 राजा जीरणने दियो जी, अधिक मांन सनमांन ॥ मुक्तनगरमें था  
 पियो जी, जोवो पुण्य प्रमाणे ॥ ज० ॥ २६ ॥ दान दिया सु-  
 पात्रने जी, तें निष्फल नवि जाय ॥ पात्रदान अनुमोदना जी,  
 जीरण जिम फल घाय ॥ ज० ॥ २७ ॥ इम जांणी अनुमोदना  
 जी, दांन सुपात्र रसाव ॥ दान देवे सुपात्रने जी, तेहने नमे मु-  
 नि माल ॥ ज० ॥ २८ ॥ इति श्रीवीर प्रभु पारणा संपूर्ण ॥

॥ अथ आलौघण जीवरासि खमावण पद्मावती लिख्यते ॥

॥ हिव राणी पद्मावती, जीवरासि खमावे ॥ जाणपणो ज  
 ग दो हिलो, इस बेला आवे ॥ ते मुऊ मित्रामिडुक्कं ॥ १ ॥ अ-  
 रिहंतनीसाख ॥ जे में जीव विराधिया, चोगास्ती लाख ॥ ते मु०  
 ॥ २ ॥ सात लाख पृथ्वीतणा, साते अप्पकाय ॥ सात लाख ते  
 ऊहायना, साते वलि वाय ॥ ते० ॥ ३ ॥ दस प्रत्येकवनस्पती, चव-  
 दे लाख साधार ॥ वि ति चउरेंई जीवना, बे बे लाख विचार ॥  
 ते० ॥ ४ ॥ देवता तिर्यच नारकी, च्यार७ प्रकाशी ॥ चवदे लाख  
 मनुष्यना, ए लाख चैरामी ॥ ते० ॥ ५ ॥ इणजव परजव से

विया, जे पाप अढार ॥ त्रिविध ७ कर वोतकं, डुरगति दातार ॥ ते०  
 ॥ ६ ॥ हिंसा कीधी जीवनी, बोढ्या मृपावाद ॥ दोष अदत्तादां  
 नना, मैशुन उनमाद ॥ ते० ॥ ७ ॥ परिग्रह मेढ्यो कारमो, की  
 धो क्रोध विशेष ॥ मांन माया लोभ में कीया, बलि राग ने छेप  
 ॥ ते० ॥ ८ ॥ कलह करी जीव दूह्या, दीधा कूना कलंक ॥ नि  
 द्या कीधी पारकी, रति अरति निस्तंक ॥ ते० ॥ ९ ॥ चानी की  
 धी चोतरे, कीधी थांपणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो, जलो आं  
 ण्यो जरोसो ॥ ते० ॥ १० ॥ खाटकीने जव जे क्रिया, जीवना  
 वध घात ॥ चिनीमार जव चिरुकला, मारघा दिन ने रात ॥ ते०  
 ॥ ११ ॥ माठीगर जव माठला, जाढ्या जलवासा ॥ धीवर नील कोली  
 जवे, मृग मारघा पास ॥ ते० ॥ १२ ॥ काजी मुल्लाने जवे, पढी  
 मंत्र कठोर ॥ जीव अनेक जवे क्रिया, कीधा पाप अघोर ॥ ते० ॥  
 १३ ॥ कोटवालजवमें क्रिया, आकाराकर दंरु ॥ वंदीवान मराविया,  
 कोरना ठनी दंरु ॥ ते० ॥ १४ ॥ परमाधामीने जवे, दीधा नार  
 की डुरक ॥ वेदन जेदन वेदना, तारुना, अति तिरक ॥ ते० ॥ १५  
 ॥ कुंजारने जव में क्रिया, निवाह पचाया ॥ तेलीजव तिल पि  
 लिया, पापे पेट जराया ॥ ते० ॥ १६ ॥ हालीने जव हल ख  
 रुया, फाड्या पृथ्वी पेट ॥ सूराने दान क्रिया घणा, दीधा बलध  
 चपेट ॥ ते० ॥ १७ ॥ मालीने जव रोपिया, नानाविध वृक्ष, मूल  
 पत्र फल फूलना, लागे पाप ते लक्ष ॥ ते० ॥ १८ ॥ अधोवाही  
 आंगमी, जरया अधिका जार ॥ पोठी जंट कीना पड्या, दया ना  
 वी लिंगार ॥ ते० ॥ १९ ॥ ठीपाने जव ठेतरयो, कीधा रंगणपास  
 ॥ अगनि आरंज क्रिया घणा, धातुरवाद अचपास ॥ ते० ॥ २० ॥ सूर  
 पणे रणजुंजतां, मारघा माणस वृंद ॥ मदिरा मास माखण जराव्या,  
 खाधा मूला ने कद ॥ ते

उलंघ्या ॥ आरज्ज कीया अतिधणा, पोते पाप ते संख्या ॥ते०॥२२॥  
 अगारकर्म किया वली, धरमें द्व व दीधा ॥ सून लेइ वीतरागना,  
 कूना कोलज पीधा ॥ ते० ॥ २३ ॥ विच्छी जव ऊर गिह्या, गि  
 लोइ हत्यारी ॥ मूढ गिमारतणे जवे, में जू लीख मारी ॥ते०॥२४॥  
 ज्ञानज्ञातणे जवे, एकेंडी जीव, ज्वार चिणाग हुसे किया, पामंता  
 रीव ॥ ते० ॥ २५ ॥ खारण पीसण गारना, आरज्ज अनेक ॥ रा गण  
 इधण अगनिना, कीया पाप उदेग ॥ ते० ॥ २६ ॥ विकथा च्यार  
 कीधी वली, सेव्या पाच प्रमाद ॥ इष्ट विद्योग पमाकिया, रोदनवि  
 खवाद ॥ ते० ॥ २७ ॥ साधु अने श्रावकतणा, व्रत लेइने ज्ञागा,  
 मूल अने उत्तरतणा, मुऊ दूयल लागा ॥ ते० ॥ २८ ॥ साप विहु  
 सिंढ चीतरा, तिकरा ने समली ॥ हिसरु जीवतणे जवे, हिमा  
 कीधी सजली ॥ ते० ॥ २९ ॥ सूआवने दूयल घणा, वलि गरज्ज  
 गदाया ॥ जीवाणी दोह्या घणा, शीलव्रत जंजाया ॥ ते०॥३०॥  
 जव अनत जमता थका, किया कुटुंब संवध ॥ त्रिविध २ कर वो-  
 सरूं, तिणसु प्रतिवध ॥ ते० ॥ ३१ ॥ इणजव परजव, इण परे,  
 कीधा पाप अखत्र ॥ त्रिविध ३ कर वोसरूं, करु जनम पवित्र ॥  
 ॥ ते० ॥ ३२ ॥ राग वेरानी जे सुणे, ए तीजी ढाल ॥ समयसुंदर  
 कहे पापयी, वूटे ततकाल ॥ते०॥३३॥इति आलोयण सिंझाय स०॥

॥ अथ गोडीपार्श्वनाथजीका वृद्ध स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥

वाणी ब्रह्मा वादनी, जागे जग विह्वल ॥ पासतणा गुण  
 गावता, मुऊ मुख वतज्यो मात ॥ १ ॥ नारंगे अणहिलपुरे, अह  
 म्मदावाडे पासं ॥ गोमीनो धणी जागतो, सडूनी पूरे आस ॥ २ ॥  
 शुज वेला शुज दिन घनी, महुरत एक मंभाण ॥ प्रतिमा तीने  
 पासनी, अई प्रतिष्ठा जाण ॥ ३ ॥

॥ ढाल ॥ १ ॥

गुणहि विशाला मंगलीकमाला, चामानो सुत सांचो जी ॥  
 धण कण कचण मणि माणक दे, गोमीनो धणी जाचो जी ॥ गु० ॥  
 ॥ ४ ॥ अणहिलपुर पाटणमें प्रतिमा, तुरकतणे घर हूती जी ॥  
 अश्वनी जूमे अश्वनी पीना, अश्वनी वाल विगूती जी ॥ गु० ॥ ५ ॥  
 जागंतो जक जेहने कहिये, सुदणो तुरकने आपे जी ॥ पास जि  
 नेसर केरी प्रतिमा, सेयग तुज सतापे जी ॥ ६ ॥ गु० ॥ प्रदक  
 ठीने परगट करजे, मेधागोठीने देजे जी ॥ अधिको मले जे उठो  
 मले जे, टक्का पाचसे लेजे जी ॥ ७ ॥ गु० ॥ नहि आपिस तो मा  
 रीस मुरनिस, मोरबंध बंधास्ये जी ॥ पुत्र कलत्रधन ह्य गय हाथी,  
 लाठ घणी घर जास्ये जी ॥ ८ ॥ गु० ॥ मारग पहिलो तुजने मिल  
 स्ये, सारथवाहो गोठी जी ॥ निलवट टीलो चोखा चोढ्या, वस्तु  
 वदे तस पोठी जी ॥ ९ ॥ गु० ॥

॥ दूहा ॥

मनसुं विदतो तुरकमी, माने वचन प्रमांण ॥ बीबीने सुह  
 णातणो, सज्जलावे सहिनांण ॥ १० ॥ बीबी बोले तुरकने, वना  
 देव हे कोइ ॥ अत्र सताव परगट करो, नहितर मारे सोय ॥ ११ ॥  
 पाठलीरात परोनिये, पहली बाधे पाज ॥ सुदणामाहे सेठने, संज  
 लावे यकराज ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ ॥

एम कही यक आयो राते, सारथवाहूने सुदणे जी ॥ पास  
 तणी प्रतिमा तू लेजे, लेतो सिर मत धूणे जी ॥ ए० ॥ १३ ॥  
 पांचसे टक्का तेहने आपे, अघिनो म आपिस वारू जी ॥ जतन करी  
 पहुंचाडे आनक, प्रतिमा गुण सजारू जी ॥ ए० ॥ १४ ॥ तुजने  
 होसी बहु फलदायक, जाइ गोठी सुणजे जी ॥ पूजे प्रणामे तेहना  
 पाया, प्रदकठीने थुणजे जी ॥ १५ ॥ तेहने

॥ बाल ४ ॥

वरण अठारतणो लहे जोग, विघन निवारे टाले रोग ॥ ४१ ॥ प  
 वित्र थड समरे जे जाप, टाले सगला पाप संताप ॥ ४२ ॥ निर  
 घनने घर घननो सूत, आपे अपुत्रियाने पूत ॥ कायरने सूरापणो  
 धरे, पार उतारे लढी बरे ॥ ४३ ॥ दोजार्गीने वे सोजाग ॥ पग  
 विहूणाने आपे पाग ॥ गंम नही तेदने थे गंम ॥ मन वंठित पूरे  
 अजिरांम ॥ ४४ ॥ निरधाराने थे आधार, जवसायर क्तारे पार ॥  
 आरतियानी आरत जंग, धरे ध्यान ते लहे सुरंग ॥ ४५ ॥ समरथां  
 साद दिये जहराज, जेदना मोटा अछे दिवाज ॥ बुद्धिहीनने बुद्धि  
 प्रकाश ॥ गूंगाने थे वचन विलास ॥ ४६ ॥ दुखियाने सुखनो दां  
 तार, जयजजण रजण अवतार ॥ बंधन तूटे बेनीतणा, श्रीपार्श्व  
 नाम अकर समरणा ॥ ४७ ॥

॥ दहा ॥

श्रीपार्श्व नाम अकर जपे, विश्वानर विकराल ॥ इस्तियुद्ध  
 दूरे टले, डुहर सींद सियाल ॥ ४८ ॥ चौरतणा जय चूकवे, विष  
 अमृत उरुकार ॥ विषधरना विष क्तारे, संग्रामे जय जयकार ॥ ४९ ॥  
 रोग शोग दालिड डुख, दोहग दूर पुलाय ॥ परमेसर श्रीपासनो, म-  
 हिमा मंत्र जपाय ॥ ५० ॥

॥ बाल ५ ॥ बाल कढखानी ॥

उजततू २ उज उपशम घरी, उँ ह्रीं श्री श्रीपार्श्व अकर ज  
 पते ॥ जूतने प्रेत जोटिंग वितर सुरा, उपशमे वार इकवीस गुणते  
 ॥ ५१ ॥ उँ ० ॥ डुख रोग शोगा जरा जंतरा, ताव एकंतरा डु  
 क्षते ॥ गर्जवधन अण सर्प विठू विष, चालिका बाल भेवाऊखते  
 ॥ ५२ ॥ उँ ० ॥ साइणी माइणी रोदणी रंकणी, फोटका मोटका  
 दोष हुते ॥ दाद अठारतणी कोल नोलां तणी ॥ श्वान सियाल वि-

कराल दते ॥ ५३ ॥ ॐ० ॥ धरशेड पद्मावती समर सोभावती, वाट  
 आघाट अटवी अटते ॥ लखमी लोंदो मिले सुजस चेला वले ॥  
 सयल आस्या फले मन हसंते ॥ ५४ ॥ ॐ० ॥ अष्ट महाजय हरे  
 कानपीना टले ॥ ऊतरे शूल शीतग जणते ॥ वदत वर प्रीतसुं,  
 प्रीतविमल प्रनु, श्रीपास जिण नाम अन्निराम मंते ॥ ५५ ॥ इति  
 श्रीगोमीपार्श्व लिन स्तवनं ॥

॥ अय मंगलीक लिख्यते ॥

धम्मो मंगल मुक्किं अहिंसा संजमो तवो ॥ देवा वितं नमं  
 संति, जस्त धम्मे सयामणो ॥ १ ॥ जहा डम्मस्त पुप्फेसु, जमरो  
 आवि अइरसं ॥ नय पुप्फं किलामेइ, सोइ पीणेइ अप्पयं ॥ २ ॥  
 एव मेए समणा बुत्ता, जे खोए संति साद्दुणो ॥ विहंगमाइ पुप्फेसु,  
 दाणज्जे सणेरया ॥ ३ ॥ वयं च वि ति लघ्नामो ॥ नदि कोइ उव  
 हम्मइ ॥ अहागमे सुरीयंते, पुप्फेसु जमरो जहा ॥ ४ ॥ महुकार  
 समा बुद्धा, जे जवंति अणिस्सिया ॥ नाणापिंन रयीदिंता, तेण बुच्चं  
 ति साद्दुणोत्तिवेनि ॥ ५ ॥ इति ॥ सर्वं मंगल मांगळ्यं, सर्वं कल्याण  
 कारणं ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां जैनं, जयति साशनं ॥ १ ॥ मंगल जगवान्वी  
 रो, मंगलं गौतम प्रनु ॥ मंगलं स्वजज्ञज्ञाद्या, जैनोधर्मोस्तु मंगलं ॥ २ ॥

॥ अय आत्मरक्षा स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ ॐ नमो परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं ॥ आत्म  
 रक्षा करं वज्र, पंजरा जस्मराम्यहं ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं ॥  
 शिरस्कशिर संस्थितं, ॐ नमो सब सिद्धाणं, मुखे मुखपटवरं ॥ २  
 ॥ ॐ नमो आयरिआणं, अंगरक्षाति शायिनी ॥ ॐ नमो उव  
 ज्ञायाणं, आयुधं दस्तयोर्हृदं ॥ ३ ॥ ॐ नमो खोए सब साद्दूणं,  
 मोचके पादयो सुजे ॥ एतो पंच नमोकारो, शिखा वज्रमई तले  
 ॥ ४ ॥ सब पात्रप्पणासणो, वप्रो पज्जमयोवहि ॥ मगलाण च स-



ब्रह्मि, स्वादिरंगार स्वातिका ॥ ५ ॥ स्वाहातंच पदं झैयं, पढमं  
 हवइ मंगलं ॥ वप्रो परिवज्जमयं, विधानं वेहरकणे ॥ ६ ॥ महा  
 प्रज्ञावात् रक्षेय, कुडोपड्व नाशनी ॥ परमेष्टि पदोद्भूता, कथिता  
 पूर्वसूरिजि. ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठी पदे सदा ॥ तस्य  
 नस्यान्नयं व्याधि, राधि श्रापि कदाचनः ॥ ॥८॥ इति आत्मरक्षा०  
 स्तोत्र संपूर्णं ॥

॥ अथ नवकार स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ सुखकारण ऋवियण समरो नित नवकार, जिनशाशन  
 आगम चवदे पूरब सार ॥ इण मंत्रनी महिमा कहिता न लहुं  
 पार, सुरतरु जिम चिंतित वठितफल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव  
 मानव सेव करे कर जोरु, न्युयमंरुल विचरे तारे ऋवियण कोनि  
 ॥ सुरठंदे विलसे अतिशय जास अनंत, पहिले पद नमिये अरिगं  
 जन अरिहंत ॥ २ ॥ जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत, पंचमि  
 गति पुहता अष्ट कर्म करि अत ॥ कल अकल सरूपी पंचानंतक  
 जेह ॥ सिद्धना पाय प्रणमुं बीजे पद बलि एह ॥ ३ ॥ गच्छन्तार  
 धुरधर सुदर शशिहर शोम, कर शारणवारण गुण वृत्तीसे थोम  
 ॥ श्रुत जाण शिरोमण सागर जेम गज्जीर, तीजे पद नमिये आ  
 चारज गुण धीर ॥ ४ ॥ श्रुतधर गुण आगम सूत्र जणावे सार,  
 तप विध संयोगे ज्ञाखे अरथ विचार ॥ मुनिवर गुणयुक्ता ते क  
 हिये भवझाय, चोथे पद नमिये अहनिश तेहना पाय ॥ ५ ॥ पं  
 चाश्रव टाले पाले पंचाचार, तपसी गुणधारी वारी विषय विकार  
 ॥ त्रस थावर पीहर लोकमाहि ते साध, त्रिविधे ते प्रणमू परमा  
 रथ जिण लाध ॥ ६ ॥ अरि हरि करि साइण काइख नूत वेताल,  
 सब पाप पणासे विलसे मंगलमाल ॥ इण समरया सकट दूर ट  
 वे त्तकाल, जपे जिण गुण इम सुरवर सीत रस्ताल ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री संखेश्वरा पार्श्वनाथ स्तवनं ॥ ( छंद )

॥ शैवो पास संखेसरो मन सुद्धे, नमू नाथ निश्च करी एक  
 बुधे ॥ देवी देवता अन्यने शुं नमो गो, अहो ज्ञव्य लोको ज्ञुला  
 कां ज्ञमो गो ॥ १ ॥ त्रैलोक्यना नाथने सुं तजो गो, पछ्या पाश  
 मे ज्ञूतमाने ज्ञजो गो ॥ सुराधेनु ठंभी अज्ञाने अज्ञो गो, महापंथ  
 मूकी कुपंथे व्रजो गो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी काच माटे,  
 अहे कोण राशजने हस्ति साटे ॥ सुरजुम ऊपामने आक वावे,  
 महामूढ ते आकुला अंत पावे ॥३॥ किहा काकरोने जे किहा मेरु  
 श्रृंग, किहां केशरीने किहां ते कुरंग ॥किहां विश्वनाथ किहा अन्य  
 देवा, करो एक चित्ते प्रज्नु पार्श्व सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती  
 प्राणनाथ, सद्दू जीवने करे सद्द सनाथं ॥ महातत्व जाणी सदा  
 जेह ध्यावे, तेहना डक्क दाखिड दूरे गमावे ॥५॥ पामी मानुषोने  
 वृथा क्यु गमो गो, कुशीले करी देहने का दमो गो, नहि मुक्ति  
 वासं विना वितरागं ॥ ज्ञजो ज्ञगवंत तज्ञो दृष्टिदरागं ॥ ६ ॥ उदय  
 रत्न ज्ञाखे सदा हेत आणी, दयाज्ञाव कीजे मोहि दास जाणी  
 ॥ मोरे आज मोतीअने मेह वृगा, प्रज्नु पास सखेसरो आप तूगा  
 ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ लघु गौतम रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिनेसर केरो शीश, गोतम नाम जपो निश दीश  
 ॥ जो कीजे गौतमनो ध्यान, तो घर विलशे नवे निधान ॥ १ ॥  
 गौतम नामे गिरवर चढे, मन वंगित लीला संपजे ॥ गौतम नामे  
 नावे रोग, गौतम नामे सर्व सजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ वंक  
 ऋ, तसनामे नावे दूकमा ॥ ज्ञूत प्रेत नवि मंने प्राण, ते गौतम  
 ना करूं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामे निरमल काय, गौतम नामे  
 वाधे आय ॥ गौतम जिनशाशन सिणगार, गौतम नामे जयश्कार

॥ ४ ॥ शाल दास सदा घृत घोल, मनवंठित कप्पन-तंबोल ॥  
घरे सुघरणी निरमल चित्त, गौतम नामे पूत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौ  
तम नृदयो अविचल ज्ञाण, गौतम नाम जपो जगजाण ॥ मोटा  
मंदिर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल  
घोमानी जोरु, वारू विलसे वंठित कोरि ॥ महियल मनि मोटा  
राय जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले, उत्तम  
सरसी संगत मिले ॥ गौतम नामे निर्मल ज्ञान, गौतम नामे वाधेवान  
॥ ८ ॥ पुण्यवत अवधारो सहू, गुरु गौतमना गुण ठे वहू ॥ कहे ला  
वण्य समय कर जोरि, गौतम तूठा संपत कोरि ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शोल शती छंद ॥

आदिनाथ आदि देइ जिनवर वादी, सफल मनोरथ कीजिये  
ए ॥ प्रजात ऊठी मगलीक काजे शोले शती नाम लीजिये ए ॥ १ ॥  
बालकुमारी जगहितकारी, ब्राह्मी जरतनी बहिननी ए ॥ घट २  
व्यापक अक्षररूपे शोल शती माहि जे वनी ए ॥ २ ॥ बाहुबल  
जगनी सतिय शिरोमणि, सुबरी नामे रुपज सुता ए ॥ अंग स्व  
रूपी त्रिजुवनमाहे, जेह अनोपम गुणयुता ए ॥ ३ ॥ चंदनवाला  
बालपणेशी शीलवती शुद्ध श्राविका ए, उरुदना वाकला वीर प्रति  
लाज्या, केवल लहि व्रत ज्ञाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धूआ धारणी  
नृदन राजेमती नेम वल्लजा ए, योवन वेशें कामने जीती, शंजम  
लेइ देव उल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पारुव नारी, द्रुपदा नाम  
वखाणिये ए, एकशो आठे चीर पुराणा, शील महिमा तस जाणि  
ये ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारि निरोपम कौशल्या कुलचंडिका ए,  
शीघल सलूणी राम जनीता पुण्यतणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कौशं  
निक ठामे शतानिक नामे, राज्य करे रग राजियो ए, तस घर ध  
रणी मृगावती नामे मुरजुवने जश गाजियो ए ॥ ८ ॥ सुलशा

साची शील न काची राची नही विषयारसें ए, मुखमो जोता पाप  
 पुलाये नाम लेता मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवशी जेदनी का  
 मण जनकसुता शीता शती ए, जग सहू जाणो धीज करंता अनल  
 शीतल थयो शीलथ्री ए ॥ १० ॥ काचे तांतण चांलणो वांथो कू  
 वाथकी जल काढियो ए, कलंक कृतारवा शतिय सुज्जज चंपा वार  
 उघारियो ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शील अकंपित शिवा शिवपद  
 गामनी ए ॥ जेदने नामे निरमल थइये वलिहारी तसु नांमनी ए  
 ॥ १२ ॥ हस्तिनागपुर पांरुवरायनी कूंता नांमे कामनी ए, पांरुव  
 माता दशे दशारनी, वदिन पतिव्रता पदमनी ए ॥ १३ ॥ शील  
 चती नामें शीलव्रत धारणी, त्रिविधे तेदने वंदीये ए ॥ नाम जप  
 ता पातिक जाए, दरसन उरित निकंदि ए ॥ १४ ॥ निपथानगरी  
 नल नरपतनी, द्वादंती तसु गेदनी, ए संकट पमियां शीलज राख्यो,  
 त्रिभुवन कीर्ति जेदनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीता जगजन जीता,  
 पुष्पचूला ने प्रजावती ए ॥ विश्व विदाता कामित दाता, शोलमी  
 शती पद्मावती ए ॥ १६ ॥ वीरे दाखी शास्त्र ठे साखी, उदयरत्न  
 चापे मुदा ए ॥ प्रह कर्गीने जे नर जणसे, ते लहिस्थे सुख संपदा ए १७

॥ अथ गौतम मंगल लिख्यते ॥

जय २ मंगलनिधान गौतम जयकारी ॥ ज० ॥ हृषीकूख  
 रत्नहीर, विश्वभूति पितु सधीर ॥ च्यार वेद चतुरवीर मन्मथ अ  
 चतारी ॥ ज० ॥ १ ॥ जह्नू रंग विप्र संग, नृप्रा सुरलोक गंग ॥  
 करत धरत वात्र पात्र, विरुद विबुधचारी ॥ ज० ॥ २ ॥ विचरत  
 प्रभु आये चग, वाणी गुण सप्त जग ॥ वर्द्धमान जित अनंग, शंशय  
 तम हारी ॥ ज० ॥ ३ ॥ देवागम त्रिगढ देख, इंद्रजाल संक रेखा ॥  
 चीतराग वचन पेख, मिथ्यामत टारी ॥ ज० ॥ ४ ॥ त्रिपदी पाय  
 अंग वार, स्वना ठत अति अपार, बोधन जग जीव तार, जये गुरु

गणधारी ॥ ज० ॥ ५ ॥ केवल चिद सरस पीन, मुक्ति लक्ष्मी धरम  
लीन ॥ मुनि मन जल चरण मीन, कुन्दन युतिसारी ॥ ज० ॥ ६ ॥  
सिद्धियोग नद चद, कार्तिक शित संघ वृन्द ॥ फूलत घर कल्प  
कंद, दूज कुमति हारी ॥ ज० ॥ ७ ॥ गुणशीलपुर देवमणी इन्द्रूति  
जगधारी ॥ कुशल निधान सुख ज्ञानी, पाठक रुदिसारीज० ॥ ८ ॥

॥ अथ मुनिवेष संप्रधे पद लिख्यते ॥

॥ म्हानि प्यारो लागे ठे जी मुनिवर ज्ञेस ॥ म्हाने० हाथ  
लकन्या कांधे कंबलिया, शिर शोजित तनु केश म्हा० ॥ १ ॥  
चोलपट्ट चादर पागरणी, उज्जान रहत हमेश ॥ म्हा० ॥ २ ॥ ज  
यणा कर मुखपत्ती धारक, रजोहरण सविसेस, म्हां० ॥ ३ ॥ थि  
वरकल्प जिनमुजाधारी ॥ काटत कर्म कलेश ॥ म्हां० ॥ ४ ॥  
दे उपदेश ज्ञविक जनतारक, तमहर प्रगट दिनेश ॥ म्हा० ॥ ५ ॥  
करतरामरुदिसार वंदना, निरखत एसो ज्ञेस ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ इति पदां ॥

॥ अथ अरिहत स्तवनं पद ॥

॥ राग नाटक ॥

॥ जबसे सरधा श्रुद्ध जई, मन अरिहत २ ध्याते हे ॥ अरि  
हंत ध्यावत गुणगण पावत कर्म रहित हो जाते हे ॥ १ ॥ जय  
२ जय २ श्रीजगदीश्वर, शंकर ब्रह्म कहाते हे ३ सहजानदी जगत  
उधारण, सुरनर चरण लुजाते हे ॥ सब देव मिल त्रिगढ स्वाते,  
अपठर भगल धुनि गाते हे ॥ देवडुडुजि नाद बजाते हे, धर्म के  
ते हे सुख देते हे ॥ ज्ञविक जीव तिर जाते हे, जो निश्चय मनमें  
जाते हे ॥ रामउदार कहे रुदिसार, तू आधार प्रभु मोहे तार ॥ ज०

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सज्ञाय ॥

॥ चोपाइ ॥ श्रावक तु ऊठे परजात, चार घन्टी ले पाठली  
राते ॥ मनमा समरे श्री नवकार, जेम पामे जव सायर पार ॥ १ ॥

कवण देव कवण गुरुधर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म, कवण अ  
 मारो ठे व्यवसाय, एवं चिंतवजे मन माय ॥ २ ॥ सामायिक ले  
 जे मन शुद्ध, धर्मनी हेम धरजे बुध ॥ पणिकमणुं करे रयणी तणु,  
 पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तं करे पञ्चक्राण सूधि पाले  
 जिननी आण ॥ ज्ञणजे गणजे स्तवन सज्ञाय, जिणहुंती निस्तारो  
 घाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम  
 ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, इव्यजावणी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोपालें  
 गुरु वंदन जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सूजंतो  
 आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ साहम्मीवत्सल करजे घणां,  
 सगपण महोटा साहम्मीतणां ॥ दुःखीया होणा दीना देखि, क  
 रजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारे देजे दान, महोटाशुं  
 म करे अजिमान ॥ गुरुने सुखे लेजे आखनी, धर्म न मूकीश ए  
 के घनी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उंग अधिकानो परिहार ॥  
 म ज्रिशकेनी कूनी साख, कूना जनशु कथन म ज्ञांख ॥ ९ ॥  
 अनंतकाय कहिये बत्रीश, अज्जदय वाविशे विश्वावीश ॥ ते ज्ञण  
 नवि क्रीजें किमे, काचा कवला फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिजो  
 जनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी सावू लोह ने गु  
 ली, मधु धावनी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रगण  
 पास, दूषण घणा कह्यां ठे तास ॥ पाणी गलजे वेवे वार, अणगल  
 पीता दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीना करजे यत्न, पातक ठंमी  
 करजे पुण्य ॥ वाणा इंधण चूले जोय, वावरजे जिम पाप  
 न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर  
 म थोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूथु पालजे, अतिचार सघला टालजे  
 ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ किशुं  
 म लेजे अनरथ दंरु, मिश्या मेल म ज्रजे पिरु ॥ १५ ॥ समकि

त्त शुद्ध हैने राखजे, बोल विचारीने जाखजे ॥ पांच तिथि म कतो  
 आरंज, पालो शीयल तजो मन वंज ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूध  
 ने दहिं, क्यामा मर मल सः ॥ उत्तम ठामे खरचो वित्त, पर  
 उपगार करो शुद्धित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार,  
 चार आहार तणे रह र । दिवस तणां आलोए पाप, जिम जा  
 जे सयला संताप ॥ १८ ॥ संध्याये आवश्यक साचवे, जिनवर च  
 रण शर ग ज्ञ । जवे ॥ चरे शरण करी दृढ होय, सागारी अण  
 सण ले साय ॥ १९ ॥ हरे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुजे जा  
 यवा ॥ समेतशिखर आहु गरगार, जेटीश हु धन धन अवतार ॥  
 ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी ठे एह, दृष्टी घाये जवनो ठेह ॥ श्रावे  
 कर्म पने पातला, पात तणा दुःख आः ला ॥ २१ ॥ वारु लहिये  
 अमर विमान, अनुक्रमे प मे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणेसत  
 नेह, करणो दुःखहरणी ठे एह ॥ २२ ॥ इति श्रावकनी करणीनी स० ॥

॥ अथ गौतम स्वामीनो रास लिख्यते ॥

॥ वीर जिणेश्वर चरण कमल कमलाकय वासो, पणभवि प  
 जणिसुं सामी साल गोयम गुरुरासो ॥ मणतण वयणे एकद कर  
 वि निसुणहु जा जविया, जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह  
 गहिया ॥ १ ॥ जवूदीव सिरिजरहखित्त खाणी तल मंण, मगहदे  
 स सेणियनेस रिउदल बलखंण ॥ धणवर गुडर गाम नाम जि  
 हां गुणगणसजा, विप्य वसे वसुज्जू तच्च तसु पुहवी जजा ॥ २ ॥  
 ताणपुत्त सिरिद्ध जूय जूवलपतिणे, चवदह विजा विवहरूव ना  
 री रस लुद्धो ॥ विनय विवेक विवार सार गुण गणह मनोहर, सा  
 त हाथ सुप्रमाणदेह रूवहि रजावर ॥ ३ ॥ नयणवयण कर चरण  
 लणवि पंकजत्रपानिय, तेजहिं तारा चंद सूरि आकास जमानिय  
 ॥ रूवहि मयण अनग करवि मेढयो निरुधामिय, धीरम मेरु गज्जी

र सिंधु चंगम चयचादिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास जण  
 जंपे किंचिय, एकाकी किल नीस इठ गुण मेढ्या संचिय ॥ अह  
 वा निञ्चयपुव जम्म जिणवर इण अंचिय, रंजा पत्तमा गवरि गंग  
 रतिहा विधि व चय ॥ ५ ॥ नय दुध नय इर कविसा कोय जसु  
 आगल रहियो, पंचसयां गुण पात्र ठात्र हींमे परवरिया ॥ करय  
 निरंतर यज्ञ करम मिळयामति मोहिय, अणचल हास चरमनाण,  
 वंसगह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव जंबूदीव नरह वासमि  
 खोणीतल मंरुण, मगह देस सेणिय नरेसर, वरगुधरगाम तिहां,  
 विष्ण वसे वमजूइ, उर तसु पुहवि नजा, सयलगुणगणरूवनिहा  
 ण, ताणपुत्त विज्ञानिला, गोयम अतिही सुजाण ॥७॥ जास ॥ चर  
 म जिनसर केवलनाणी, चो वेदतंघ पइव जाणी ॥ पावा पुरतामी  
 संपत्तो, चनविह देव निकायहिं जुता ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण  
 तिहां किजे, जिश देवे मिळयामा ठीजे ॥ त्रिजुवनगुरु सिंहास  
 सन बेठा, ततखिण माह दिगंत पइव ॥ ९ ॥ क्रोय मानमाया म  
 दपूरा, जाये नाग जिम दिनचोरा ॥ देव डडुजि आगासैं वाजी,  
 धरम नरेसर आब्यो गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि अरचे तिहां देवा,  
 चनसठ इंज मागे सेवा ॥ चामर ठत्र सिरोवरि सोहे, रूवहि जि  
 नवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसजर वरवरसंता, जोज  
 नवाणि वलाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान जिण पाया, सुर नर  
 किन्नर आवइ राया ॥ १२ ॥ कंत समोहियजलदलकंता, गयण  
 विमाणहि रणरणाकंता ॥ पेखवि इंद्रजूइ मन चिंते, सुर आवे अम  
 यज्ञ हुवंते ॥ १३ ॥ तीरतरंक जिम तेवहिता, समवसरण पुहतां  
 गहगहिता ॥ तो अजिमानें गोयम जंपे, इण अवसर कोपें तणु  
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा कोक अजाण्युं बोले, सुर जाणंता इम कांइ  
 बोले ॥ मो आगल कोइ जाण नणीजे, मेरुं अवर किम उपम वी



गोयम में करिस खेव, ठेह जाय आपण सही, होस्यां तुल्ला भेवं  
 ॥ ३१ ॥ ज्ञात ॥ सामियो ए वीर जिणंद, पूनमचंद जिम उल्ल  
 त्तिय ॥ विहरियो ए ज़रहवासंमि, वरस बहुत्तर संवसिय ॥ ठव  
 तो ए कणय पत्रमेण, पायकमल संघे सहिय ॥ आवियो ए नव  
 णाणद, नयर पावापुर सुरमहिय ॥ ३२ ॥ पेखयो ए गोयमसामि,  
 देवसमा प्रतिबोध करे ॥ आपणो ए तिसलादेवि, नंदन पुहतो पर  
 मपए ॥ बलतो ए देव आकाश, पेखवि जाणयो जिण समे ए ॥  
 तो मुनि ए मनविखषाद, नादनेद जिम ऊपनो ए ॥ ३३ ॥ इण  
 समे ए सामिय देखि, आपकनासूं टालियो ए ॥ जाण तो ए तिहु  
 अण नाह, लोक विवहार न पालियो ए ॥ अतिजलो ए कीधलो  
 सामि, जाणयो केवल मागसे ए ॥ चिंतव्यो ए वालक जेम, अहवा  
 केरें लागसे ए ॥ ३४ ॥ हू किम ए वीर जिणंद, जगतहिं ज़ोलें  
 ज़ोलव्यो ए ॥ आपणो ए उंचलो नेह, नाह न संपे साचव्यो ए ॥  
 साचो ए ए वीतराग, नेह न हेजे टालियो ए ॥ तिणसमे ए गो  
 यम चित्त, राग वैरागे वालियो ए ॥ ३५ ॥ आवतो ए जो उल्लट्ट,  
 रहितो रागे साहियो ए ॥ केवल ए नाण ऊपन्न, गोयम सहिज  
 जमाहियो ए ॥ तिहुअण ए जयजयकार, केवल महिमा सुर करे  
 ए ॥ गणधरु ए करय वखाण, ज़विया ज़व जिम निस्तरे ए ॥ ३६ ॥  
 ॥ वस्तु ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पञ्चास, गिहवासें सं  
 वसिय तीसवरससजम विजूसिय, सिरि केवलनाणपुण, बार वरस  
 तिहुअण नमंमिय, राजगृही नयरी ठव्यो, वाणवइ वरसाउ, सामी  
 गोयम गुणनिलो, होसे सिवपुर गात्र ॥ ३७ ॥ ज्ञात ॥ जिम सह  
 कारें ज़ोपत टुठुके, जिम कुसुमावन परिमल महके, जिमचंदन सो  
 गधनिधि ॥ जिमगंगाजल लहिरधां लहके, जिम कणयाचल ते जें ऊ  
 लके, तिम गोयम सोजागनिधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे

हैसा, जिम सुरतरुवर कणयथ तंसा, जिम मंहुयर राजीवधने ॥ जिम  
 रयणायर रयणं विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गु  
 रु केल घने ॥ ३९ ॥ पूनमनिसि जिम ससियर सोहे, सुरतऊ महि  
 मा जिम जगमाहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिमं गि  
 रिवर राजे, नर वइ घर जिम मेगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि प  
 वरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु तरुवर सोहे साखा, जिम  
 उत्तम मुख मधुरी ज्ञाया, जिम वन केतकि महमहे ए ॥ जिम जूः  
 मीपती जुयवल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, गोयमलबधे  
 गहगहो ए ॥ ४१ ॥ विंतामणि कर चदीयो आज, सुरतरु सारे  
 वंजिय काज, कामकुंज सहु वशि हुआ ए ॥ कामगवी पूरे मन  
 कामी, अठमहासिद्धि आवे धामी, सामी गोयम अणुसरी ए ॥  
 ४२ ॥ पणवकर पहिलो पजणी जे, माया धीजो श्रवण सुणीजे ॥  
 श्रीभित्ति सोजा संजवो ए ॥ देवा धुर अरिहंत नमीजे, विनय पहु  
 उवज्ञाय धणीजे, इण मंत्रे गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ परघर वसता  
 काय करीजे, देस देसातर काय जमी जे, कवण काज आयास क  
 रो ॥ प्रह ऊठी गोयम समरीजे, काज समगल ततखिण सीजे,  
 नवनिधि विलसे तिहां घरे ए ॥ ४४ ॥ चवदयसय वारोत्तर वरसे,  
 गोयम गणहर केवल दिवसे, कीयो कवित उपगारपरो ॥ आदहिं  
 भंगल ए पजणीजे, परव महोच्चव पहिलो दीजे, रिद्धि वृद्धि क  
 ढयाण करो ॥ ४५ ॥ धन माता जिण उयरे धरियो, धन्य  
 पिता जिण कुल अवतरियो, धन्य सुगुरु जिण दीस्कियो ए ॥  
 विनयवंत विद्या जंकार, तसु गुण पुहवी न लप्रह पार, धरु जिम  
 साखा विस्तरु ए ॥ गोयमस्वामीनो रास जणीजे, चउविह संघ  
 रलियायत कीजे, रिद्धिवृद्धि कढयाण करो ॥ ४६ ॥ कुंकुम चंदन  
 उरु दिवरावो, माणक मोतीना चोक पूरावो, रयण सिहासण बेस

णो ए ॥ तिहा ठेठी गुरु देशना देशी, ऋविकु जीवना काज संरेसी,  
नित नित मगल उदय करो ॥ ४७ ॥ इति श्रीगौतम स्वामीनो  
रास सपूर्ण ॥

॥ राग प्रजाती जे करे, प्रह ऊगमते सूर ॥ नूख्या नोजन  
संपजे, कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा जं  
रार ॥ जे गुरु गौतम समरिये, मनवठित दातार ॥ २ ॥ पुं  
रुकीक गोयम पमुहा, गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊगीनें प्रणमता,  
चवदसे धावन्न ॥ ३ ॥ खतिखमगुणकलिय, सुविणिय सबलहि सं  
पणं ॥ वीरस्त पढम सीसं, गोयम सामी नमस्तामि ॥ ४ ॥ सर्वा  
रिष्टप्रणाशाय, सर्वाजिषार्थदायिने ॥ सर्वलब्धिनिधानाय, गौतमस्वा  
मिने नमः ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सेत्रुंज रास लिख्यते ॥

॥ वृहा ॥

॥ श्रीरिसहेसर पाय नमी, आणी मन आनंद ॥ रास जं  
णूं रलियामणो, सेत्रुजनो सुखकंद ॥ १ ॥ संवत च्यार सतोतरे, हु  
आ धनेश्वर सूर ॥ तिण सेत्रुंज महातम कियो, शिलाद्वैत्य हजूर  
॥ २ ॥ वीर जिशंद समवसरघा, सेत्रुंज ऊपर जेम ॥ इडादिक आ  
गल कह्यो, सेत्रुंज महातम एम ॥ ३ ॥ सेत्रुज तीरथ सारिखो,  
नही ठे तीरथ कोय ॥ स्वर्ग मृत्यु पातालमें, तरथ सगला जोय  
॥ ४ ॥ नामे नव निध संपजे, दीग डुरित पुलाय ॥ जेटता जव  
जय टले, सेवता सुख धाय ॥ ५ ॥ जवू नामे छीप ए, दक्षिण  
जस्त मजार ॥ सोरठ देस सुहामणो, तिहां ठे तीरथ सार ॥ ६ ॥

॥ दाल पहिली ॥ राग रामगिरी ॥

॥ सेत्रुजो ने श्रीपुंरुकीक, सिद्धक्षेत्र कहूं तहतीक ॥ विम  
लाचलने करूं प्रणाम, ए सेत्रुजैना इकवीस नाम ॥ १ ॥ सुरगिदि

ने महागिरि, पुन्यरास, श्रीपदपर्वत इंद्रप्रकास ॥ महातीरथ पूरवे  
सुखकाम ॥ ए० ॥ २ ॥ सास्ततो पर्वत ने दृढशक्ति, मुक्तिनिलो  
तिण कीजे ज्ञाति ॥ पुष्पवंत महापद्म सुगम ॥ ए० ॥ ३ ॥ प  
रुवीपीठ सुज्ज केलास, पातालमूल अकर्मक तास ॥ सर्व काम  
कीजे गुणग्राम ॥ ए० ॥ ४ ॥ श्रीसेत्रुंजना इकवील नांम, जपेज वे  
टा अपने गाम ॥ सेत्रुंज जात्रानो फल ते लहे, महावीर जगवंत-  
इम कहे ॥ ए० ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ सेत्रुंजो पहिले अरे, असी जोयण परिमाण ॥ पिहुलो  
मूल उंचपण, उधीस जोयण जाण ॥ १ ॥ सत्तर जोयण जाणवो, बीजे  
अरे विसाल ॥ वीस जोयण उंचो कह्यो, मुऊ वदना त्रिकाल ॥  
२ ॥ साठ जोयण तीजे अरे, पिहुलो तीरथराय ॥ सोल जोयण  
उंचो सही, ध्यान धरुं चित लाय ॥ ३ ॥ पचास जोयण पिहुलपण,  
चोथे अरे मजार, उंचो दस जोयण अचल, नित प्रणामे नर नार ॥  
४ ॥ बार जोयण पचम अरे, मूलतणे विसतार ॥ दो जोयण उंचो  
अठे, सेत्रुंजो तीरथ तार ॥ ५ ॥ सात हाथ ठेठे अरे, पिहुलो पर  
वत एह ॥ उंचो होस्ये सो धनुष, सास्ततो तीरथ एह ॥ ६ ॥

॥ दाळ बीजी ॥

॥ केवलनांणी प्रमुख तीर्थकर, अनंत सीधा इण गाम रे ॥  
अनंत वली सिऊस्ये इण गामे, तिण करुं नित परणाम रे ॥ १ ॥ सेत्रुं  
जसाधू अनता सीधा, सीऊसी वलिय अनंत रे ॥ जिण सेत्रुंज ती  
रथ नही जेठ्यो, तेगरजावास कदंत रे ॥ से० ॥ २ ॥ फागुण सुदि  
आठमने दिवसे, रूपजदेव सुखकार रे ॥ रायणरुंख समोसरथा  
स्वामी, पूर्व निनाणू वार रे ॥ से० ॥ ३ ॥ जरतपुत्र चैत्री पुनम  
दिन, इण सेत्रुजगिरि आय रे ॥ पाच कोमीसुं पुनरीक सीधा, ति

श पुंरुकी कहाय रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नमि विनमिराजा विद्याधर,  
 वे वे कोनी संघात रे ॥ फागुण सुद दशमी दिन सीधा, तिण  
 प्रणमुं परजात रे ॥ से० ॥ ५ ॥ चेत्रमास वदि चौदसने दिन, न  
 मीपुत्री चणसठि रे ॥ अणसण कर सैत्रुंजगिर ऊपर, ए सहु सी  
 घा एकठि रे ॥ ६ ॥ से० ॥ पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, झावरु ने  
 चारिखिल्ल रे ॥ काती सुदि पूनम दिन सीधा, दश कोनी  
 मुनिसुं निसल्ल रे ॥ से० ॥ ७ ॥ पांचे पांम्व इण गिर सी  
 धा, नव नारद रुपिराय रे ॥ संब प्रज्जुन्न गया इहां मुगते, आवू क  
 र्म स्वपाय रे ॥ से० ॥ ८ ॥ नेम विना तेविस तीर्थकर, समवस  
 रथा गिरिशृंगरे ॥ अजित शांति तीर्थकर वेहूं, रह्या चोमासे सुरग  
 रे ॥ से० ॥ ९ ॥ सदत्त साधु परिवार संघाते, आवचासुत साध  
 रे ॥ पाचसे साधुसुं सेलग मुनिवर, सैत्रुंज शिवसुख लाधरे ॥ से०  
 ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि सैत्रुंज सीधा, जरतेसरने पाट रे ॥ रा  
 म अने जरतादिक सीधा, मुक्तितणी ए वाट रे ॥ से० ॥ ११ ॥  
 जालि मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी कोदि रे ॥ साधु अन  
 ता सैत्रुंज सीधा, प्रणमुं वे कर जोदि रे ॥ से० ॥ १२ ॥

॥ दाल वीजी ॥ चोपाइकी ॥

॥ सैत्रुंजना कहुं सोल उक्षर, ते सुणज्यो सहुको सुविचार  
 ॥ सुणतां आणंद अग न माय, जनमश्ना पातिक जाय ॥ १ ॥ रु  
 पन्नदेव अयोध्यापुरी, समवसरथा स्वामी हित करी ॥ जरत गयो  
 चंदणने काजं, ये उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जगमहि मोटा  
 अरिहंत देव, चोसठ इंड करे जसु सेव ॥ तेहथी मोटो संघ कहाय,  
 जेहने प्रणमे जिनवरराय ॥ ३ ॥ तेहथी मोटो संघवी कह्यो, जर  
 त सुणीने मन गहगह्यो ॥ जरत कहे ते किम पामिधे, प्रज्जु कहे से  
 षुंज जात्रा किये ॥ ४ ॥ जरत कहे संघवीपद मुज्ज, थे आपो

हूं अगज तुझ ॥ इंद्रे आणया अकृतवात, प्रभु आपे संघवीपद ता  
 स ॥ ५ ॥ इंद्रे तिण वेला ततकाल, जरत सुजडा बिहुंने माल ॥  
 पहिरावी घर संप्रेमीया, सखर सोनाना रथ आपिया ॥ ६ ॥ रिष  
 ज्ञदेवनी प्रतिमा वली, रत्नतणी दीधी मन रली ॥ जरते गणधर  
 घर तेनिया, शांतिक पौष्टिक सहु तिहा किया ॥ ७ ॥ कंकोत्री मू  
 की सहु देस, जरत तेनायो संघ असेस ॥ आयो संघ अयोध्यापुरी,  
 प्रथमथकी रथजात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ जगत कीधी अतिघणो, सं  
 घ चलायो सेत्रुंज जरी ॥ गणधर बाहूबल केवली, मुनिवर कोरु  
 साथे लिया वली ॥ ९ ॥ चक्रवर्तनी सघली रुद्धि, जरते साथे ली  
 धीतिद्ध ॥ हय गय रथ पायक परिवार, ते तो कइतां नाथे पार  
 ॥ १० ॥ जरतेसर संघवी कइवाप, मारग चैत्य ऊपरतो जाय ॥  
 संघ आयो सेत्रुंजा पाल, सद्गुनी पूगी मननी आस ॥ ११ ॥ नयणे  
 निरख्यो सेत्रुंजराय, मणि माशिक मोत्यासुं वधाय ॥ तिण ठामे  
 रदी महोच्चव क्रियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ  
 सेत्रुंजा ऊपर चढयो, फरसंता पातिक ऊरु पड्यो ॥ केवलग्यानी  
 पगला तिहा, प्रणम्यां रायशरुंख ठे जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी  
 आत्र निमित्त, ईशानेंद्र आणी सुपवित्त ॥ नदी सेत्रुंजे सोहामणी,  
 जरते दीठी कौतुक जणी ॥ १४ ॥ गणधरदेव तणे उपदेश, इंद्रे  
 वलि दीघो आदेश ॥ श्रीप्रादिनाथतणो देहरो, जरत करायो गुरि  
 सेहरो ॥ १५ ॥ सोनानो प्रासाद उत्तग, रतनतणी प्रतिमा मन  
 रंग ॥ जरते श्रीआदीसरतणी ॥ प्रतिमा थापी सोहामणी ॥ १६ ॥  
 मरुदेवानी प्रतिमा वली, माही पूनम थापी रली ॥ ब्राह्मी सुंदरि  
 प्रमुख प्राशाद, जरते थाप्या नवला नाद ॥ १७ ॥ इम अनेक  
 प्रतिमा प्राशाद, जरते करायो गुरु सुप्रशाद ॥ जरततणो पहिलो  
 वदार, सगलोदी जाणे संसार ॥ १८ ॥

हाल चौधी ॥ राग सिंधुडो आमाउरी ॥

॥ नरततणे पाट आठमे, दंरुवीरज थयो रायो जी ॥ नर-  
 ततणी पर संघ कियो, सेत्रुंज संघवी कहायो जी ॥ १ ॥ सेत्रुज  
 उदार साजलो, सोल मोटा श्रीकारो जी ॥ असंख्यात बीजा  
 बली, तेन कहु अधिकारो जी ॥ से० ॥ २ ॥ चैत्य करायो रूपात-  
 णो, सोनानो विंघ सारो जी ॥ मूलगो विंघ नरारीयो, पञ्चिमदि-  
 सि तिण वारो जी ॥ से० ॥ ३ ॥ सेत्रुजैनी जात्रा करी, सफल  
 कियो श्रवतारो जी ॥ दंरुवीरज राजातणो, ए बीजो उदारो जी ॥  
 से० ॥ ४ ॥ सो सागरोपम व्यतिक्रम्या, दंरुवीरजथी जिवारो जी,  
 श्शानेइ करावियो ॥ ए तीजो उदारो जी ॥ से० ॥ ५ ॥ चौथा  
 देवलोकनो धणी, माहेइ नाम उदारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करा  
 वियो, ए चौथो उदारो जी ॥ से० ॥ ६ ॥ पाचमा देवलोकनो धणी,  
 ब्रह्मेइ समकितधारो जी ॥ तिण सेत्रुंजनो करावियो, ए पाचमो  
 उदारो जी ॥ से० ॥ ७ ॥ नुवनपती इइनो कियो, ए षष्ठे उदारो  
 जी ॥ चक्रवर्त्ति सगरतणो कियो, ए सातमो उदारो जी ॥ से० ॥ ८ ॥  
 अग्निनंदन पासे सुण्यो, सेत्रुंजनो अधिकारो जी ॥ व्यतरइइ करा  
 वियो, ए आठमो उदारो जी ॥ से० ॥ ९ ॥ चडप्रजु स्वामीनो  
 पोतरो, चडशेखर नाम मल्हारो जी ॥ चड्यशराय करावियो, ए  
 नवमो उदारो जी ॥ से० ॥ १० ॥ शातिनाथनी सुणी देशना,  
 शातिनाथसुत सुविचारो जी ॥ चक्रधरराय करावियो, ए दशमो  
 उदारो जी ॥ से० ॥ ११ ॥ दसरथसुत जगदीपतो, मुनिसुव्रतस्वा  
 मी वारो जी ॥ श्रीरामचंड करावियो, ए इग्यारमो उदारो जी ॥  
 से० ॥ १२ ॥ पारुव कहे अमे पापिया, किम वूटा मोरी मायो  
 जी ॥ कहे कुंती सेत्रुजतणी, जात्र किया पाप जायो जी ॥ से०  
 ॥ १३ ॥ पाचे पारुव सघ करी, नेत्रुज नेव्यो यपारो जी, काष्ट चै

त्य धिव लेपना, ए वारमो उद्धारो जी ॥ से० ॥ १४ ॥ मम्माणी  
 पाखाणानी, प्रतिमा सुंदर सरूपो जी ॥ श्रीसेत्रुंजैनो संघ करी,  
 थापी सकल सरूपो जी ॥ से० ॥ १५ ॥ अष्टोत्तर सो वरसां गया,  
 विक्रम नृपथी जिवारो जी ॥ पोरवाम जावरु करावियो, ए तेरमो  
 उद्धारो जी ॥ १६ ॥ से० ॥ संवत वार तिमोतरे, श्रीमाली सुविचा  
 रो जी, वाह्मदे मुंहते करावियो, ए चवदमो उद्धारो जी ॥ १७ ॥  
 से० ॥ संवत तेरे इकोतरे, देसलहर अधिकारो जी ॥ समरेसाह  
 करावियो, ए पनरमो उद्धारो जी ॥ १८ ॥ से० ॥ संवत पनर स  
 त्यासिये, वेसाख वदि गुज्ज वारो जी ॥ करमे मोसी करावियो,  
 ए सोलमो उद्धारो जी ॥ १९ ॥ से० ॥ संप्रति काले सोलमो, ए  
 वरतेठे उद्धारो जी ॥ नित २कीजे वंदना, पामीजे जवपारो जी ॥ २० ॥ से०

॥ दूहा ॥

॥ वलि सेत्रुंज महातम कहू, साजलो जिम ठे तेम ॥ सूरि  
 घनेसर इम कहे, महावीर कह्यो एम ॥ १ ॥ जेहवो तेहवो दर्श-  
 नी, सेत्रुंजे पूजनीक ॥ जगवंतनो जेप मानता, लाज हुवे तह-  
 तीक ॥ २ ॥ श्रीसेत्रुंजा ऊपर, चैत्य करावे जेह ॥ दल परमाण  
 समो लहे, पढ्योपम सुख तेह ॥ ३ ॥ सेत्रुंज ऊपर देहरो, नवो  
 नीपावे कोय ॥ जीर्णोद्धार करावता, आठ गुणो फल होय ॥ ४ ॥  
 सिर ऊपर गागर धरी, स्नात्र करावे नार ॥ चक्रवर्चनी स्त्री थई,  
 शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥ काती पूनम सेत्रुंजे, चढने करे उप  
 वास ॥ नारकी सो सागर समो, करे करमनो नास ॥ ६ ॥ काती  
 परब मोटो कह्यो, जिहा सीधा दश कोमि ॥ ब्रह्म स्त्री बालक ह  
 त्या, पापथी नाखे ठेरु ॥ ७ ॥ सहस्र लाख श्रावक जणी, जो  
 जन पुन्य विशेष ॥ सेत्रुंज सायु पन्डितानां; अधिको तेहथी देख ८



ज उतरू ए, सिद्धवरलू विसराम ॥ चैत्यप्रवाह इण पर करी ए, ती,  
 धा वंठित कांम ॥ से० ॥ १६ ॥ जात्रा कगे सेत्रुजतणी ए, सफल  
 कियो श्रवतार ॥ कुसल केमसुं आवियो ए, संघ सहू परवार ॥ से०  
 ॥ १७ ॥ सेत्रुज रास सोहामणो ए, साजलज्यो सहू कोय ॥ घर  
 वेग, जणे जावसु ए, तसु यात्रा फल होय ॥ से० ॥ १८ ॥ संव  
 त सोल वयातिये ए, श्रावण वदि सुखकार ॥ रास रच्यो सेत्रुजत  
 णो ए, नगर नागोर मजार ॥ से० ॥ १९ ॥ गिरुवो गढ खरतर  
 तणो ए, श्रीजिनचंद सूरिस, प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए, सकल  
 चंद सुजगीस ॥ से० ॥ २० ॥ ताससीस जग जाणिये ए, सम  
 यसुंदर उवझाय ॥ रास रच्यो तिण रूवमो ए, सुराता आणंद था  
 य ॥ से० ॥ २१ ॥ इति श्रीसेत्रुजराम संपूर्ण ॥

॥ अथ शिखरगिरि रास लिख्यते ॥

॥ दश ॥

॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्थु रास रताल ॥ तीरथ शि,  
 खरसमेतनी, महिमा वनी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले,  
 प्रगठ्यो शिखरसमेत ॥ कोमाकोमी मुनिवरू, सिद्ध गए इह खेत ॥  
 २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्या पाप पुलाय ॥ जत्रिजन जे  
 टो जावसु, ज्यु सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी,  
 कहि न सके कवि कोय ॥ गुण अनत जगवतना, तिम ए ती  
 रथ होय ॥ ४ ॥

॥ दाल १ ॥ चोपईनी ॥

॥ गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सक  
 जग होय ॥ वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरी  
 ने रहा ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी ज्ञानी, तिहा जितशत्रु

नरेश्वर वली ॥ विजयाराणीने सुत जाण, अजितकुमर सहु गुण  
नी खाण ॥२॥ जसु इंद्रादिक सेवा करे, इंद्राणी अति उच्चव धरे ॥  
तीर्थकरनी पदवी लही, अंतर अरि जिण साध्या सही ॥३॥ अनु  
क्रम इम जोगवतां जोग, पुन्य प्रसाद मिळ्यो सहु जोग ॥ अवल  
६ वे संवत्सर दान, संजम लीनो आय सुजाण ॥४॥ कर्म खपावी  
पांभ्यो ज्ञान, केवलदर्शन लह्यो प्रधान ॥ विचरे पुढवीमंरुलमांदि,  
अव्यजिव प्रतिबोधन तादि ॥५॥ सिंहासेनादिक गणवर जया, पं  
चाणवे संख्या सहु अया, एक लाख मुनिवर परिवरया, आवक  
आवकणी सहु करया ॥६॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधव  
था जाणो सुविचार ॥ आवक सहस्र अठाणुं सही, दोय लाख  
संख्या गहगही ॥७॥ पांच लाख पैतालीस हजार, आवकणी सं  
ख्या सुविचार ॥ बहुतर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण तरीर  
सुहाय ॥८॥ साढीव्यारसे धनुष तरीर, मान लह्यो प्रजु गुण गं  
जरीर ॥ गज लांठन प्रजुजीने जाण, अमृत सम जसु मीठी वाण  
॥९॥ अनुक्रम प्रजुजी शिखरसमेत, गिरवर पर आया निज हेत  
सहस्र मुनिवरने परिवार, भासखमण अणसण कर सार ॥ १० ॥  
चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रजु तीरथ शणे ॥ जूचर खेच  
६ किन्नर सुरी, इंद्रादिकसहु उच्चव करी ॥११॥ थाप्यो तीरथ मोटो  
मही, अगाइ महोच्चव कियो सही ॥ ए तीरथनी जात्रा करे, ते  
प्रवियण अकयसुख वरे ॥ १२ ॥

॥ दहा ॥

॥ श्रीसंजव जिनराज जी, गए इहां निर्वाण ॥ शिखरसमे  
त सुहामणो, प्रगळ्यो तीरथ जाण ॥१॥

॥ ढाल धीजी ॥ सुगण सनेही साजन श्रीसीमंवर स्वाम ॥ ए देशी ॥

॥ सावडीनगरी जरी धन संपद बहु थोक, जैतारि नूप

राज करै सुखिया सब लोक ॥ सेनाराणी मीठी वाणी गुणनी खा  
 ण, जेहने सुत श्रीसन्नव जनम्या सकल सुजाण ॥१॥ कंचनवरण  
 सरीर मनोहर प्रचुनो जाण, लठन अश्वत्थो सोहे प्रचुनो परश  
 न ॥ साठ लाख पूरवनो प्रचुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्च  
 पणै प्रचु देह वखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय सरख्याये प्रचुने गणधर  
 होय, दोय लाख मुनि जेहनै गुणवरता जग जोय ॥ तीन लाख  
 श्रमणी वली ऊपर सहस ठत्तीस, जूमंनल विचरे प्रचु श्रीसन्नव  
 जगदीस ॥३॥ तीन लाख वलि सहस त्रयाणु श्रावकलोक, पट  
 लख सहस ठत्तीस श्रावकणी सरख्या थोक ॥ त्रिमुखयक अरु उ  
 रितादेवी सानिधकार, विचरता प्रचु सकल संघमें जयशकार ॥४॥  
 सहस श्रमण परिवारे प्रचुजी शिखरसमेत, एक मास संजेखण  
 कीनी निजपद हेत ॥ इण गिरि ऊपर पायो प्रचुजी पद निरवाण,  
 तीरथ महिमा महियल मोटी अइय सुजाण ॥५॥

॥ दुहा ॥

॥ अजिनंदन जिन वंदिथे, पायो पद निरवाण ॥ शिखरस-  
 मेत सोहामणो, जेटो तीर्थ सुजाण ॥१॥

॥ ढाल व्रीजी ॥ सहस श्रमणसु सुक सजमपरो ॥ ए देशी ॥

॥ नगरी अयोध्या सुरपुरि सम जली, सवर राजा सोहे  
 मन रखी ॥ सिद्धार्थो राणी प्रचु तसु नंद ए, अजिनंदन जिन प्रग  
 टया चद ए ॥ उल्लालो ॥ चंद ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी  
 तीनसे ॥ सुदर शरीर प्रमाण द्युतिकरा, कपि लंठन ते नित वसे ॥  
 पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि  
 उलाख आर्या, सहस त्रिसत् सोल ए, ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी  
 दो लख श्राद्धनी, सरख्या चौ लख सत्तावीसनी ॥ श्रावकस्यारी सरख्या  
 जाण ए, नायकयक कालिका गण ए ॥ उल्लालो ॥ ढाण ए शिखरस

मत ऊपर मास एक संलेखणा, एक सहस्र साधु परवरया प्रज्जु  
 मुक्ति पहुँचे पेपणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवी मात सुमं  
 गला, श्रीसुमति जिनवर ज्ञानंदनसदा होतसुमंगला ॥३॥ चालो ॥  
 सावन वर्षा धनुष तसु तीनसे, लंठन क्रोंच सोहै सुज्जगे हसे ॥  
 पूरव लाख पच्यासी आठ ए, एकसौ गणधर गुणगण ज्ञान ए ॥  
 उज्जालो ॥ ज्ञान ए मुनि त्रिण लाख सोहै सहस्र वीस प्रमणां  
 ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दोय लक्ष जाण ए ॥  
 संख्या इक्यासी सहस्र ऊपर श्रावका इम आणिये, पण लाख  
 सोले सहस्र तुंवरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात  
 संख्या सहस्र साधु सुरंग ए, कर मासकी संलेखणा प्रज्जु मुक्ति  
 पुहुता चंग ए ॥३॥ चाल ॥ इमकोसंबीनगरी तात ए, धरनृप तात  
 सुसीमा मात ए, पदम प्रज्जु तसु अंगज नाथ ए, लंठन कमलतें  
 णो सुज्ज हाथ ए ॥ उज्जालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अंढाई  
 सै त् कही, तीन लाख पूरव थित कहावै एकसौ गणधर लहो ॥  
 लख तीन तीस हजार साधू वीस सहस्र लख च्यार ए, साधवी  
 दोय खल सहस्र विद्वतर श्रावक संख्या सार ए ॥४॥ चाल ॥ पांच  
 लाख वलि पाच हजार ए, श्रावकएयारी संख्या सार ए ॥ कुसम  
 देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रज्जु सोहै सही ॥ उज्जालो  
 ॥ सोहए शिखरसमेत ऊपर, आठसे त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास सं  
 लेखन प्रज्जुनी, सैव करहै सुरवरा ॥ श्रीपदम प्रज्जुजी मुक्ति पुहुता,  
 गिर शिखर महिमा जई, ॥ तसु चरण पंकज वालवंदे हृदय आनं  
 द गहजही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥

॥ श्रीसुपास जिनंदना, पद पंकज आरामि ॥ जविजन ब्रह्म  
 रसु सेवतां, पामे वंदित काम ॥ ॥

॥ दाल चोथी ॥ धीसीमंथर साहित्रा ॥ ए चाल ॥

॥ नगर बनारसी सौजता, राजा तात प्रतिष्ट लालरे ॥ दे  
 वी पृथ्वी मात जी, स्वस्तिक लंवन सिष्ट लालरे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व  
 जिनंद जी, वीस पूरव लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसै देहनो, कं  
 चनवरण मुहाय लालरे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, सा  
 धू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस सा  
 धवियां जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहस सतावन लकनी, श्रावक  
 संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै, सहस श्रावकणी  
 जाय लालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक शातासुरी, पांचसे मुनि पर  
 वर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम वियां निस्तार ला  
 लरे ॥ ५ ॥ श्री० ॥ नगर चंडपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥  
 देवी माता लक्ष्मणा, सुत चंडाप्रभु वेस लालरे ॥ ६ ॥ श्रीचंडाप्रभु  
 वंदिये, चंडवरण तनु जेह लालरे ॥ लंवन चंडतणो जलो, धनुष  
 दोदसे देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ जविकरुमल प्रतिबोधता, सेवे  
 सुर नर यक लालरे ॥ दस लाख पूरव श्राजखो, तेणवे गणधर  
 दह लालरे ॥ श्रीचं० ॥ ८ ॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्र  
 मणी तीन लक लालरे ॥ असी सहस संका कही, श्रावक वलि  
 दोय लक लालरे ॥ ९ ॥ श्री० ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्रा  
 विका चउ लक धार लालरे ॥ सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजी  
 नो परिवार लालरे ॥ १० ॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव नृकुटीसुरी, स  
 हस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक भासनी, पुहता  
 मुक्ति मजार लालरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ बुहा ॥

॥ जय श्रीसुबिद्ध जिनेसरु, जगपति दीनदयाल ॥ समे  
 त्रिशखर मुगते गया, जविजनके प्रतिपाल ॥ १ ॥

॥ दाल पांचमी ॥ श्रीविमलाचल सिरतिलो ॥ ९ देशी ॥

॥ नयर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा  
 माता सुत, जए सुविध सुज जीव ॥ १ ॥ रत्नतवरण सम तनु  
 सत, धनुष एक परिमाण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रजुनो आयु  
 सुजांण ॥ २ ॥ अठ्यासी संख्या जए, गणवर परम प्रधान ॥ ल  
 ख बों मुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय  
 लक्ष श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकतर चौ लख सहस,  
 श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुरी सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सा  
 निघकांर ॥ सहस साधु परिवारसुं, जए सिखर सुवार ॥ ५ ॥  
 मास संलेखण कर प्रजु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा म  
 हियलै, प्रगटी च्यारुं नर ॥ ६ ॥ इमहिज शीतलनाथनो, दिव सु  
 एज्यो अधिकार ॥ जहिलपुर हठरथ पिता, मात नंदा सुखकार ॥  
 ७ ॥ लंघन सुज श्रीवठनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ  
 धनुष, मान सररीर अमंद ॥ ८ ॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रजुनो आयु  
 प्रमाण ॥ इक्यासी गणवर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ ९ ॥  
 एक लाख चाळीस सहस, श्रमणी संख्या नर ॥ सहस तयासी  
 दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्ष चौ,  
 श्रावकणी सुविचार ॥ देवी असोका ब्रह्म यक्ष, सह संघ सानि  
 घकार ॥ ११ ॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति  
 गए प्रजु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

॥ दाल छठी ॥ धनरे समति साचो राजा ॥ ९ देशी ॥

॥ सिंदहपुरी नगरी तिहां राजा, विष्णु नरेसर तात जी, कं  
 चनवरण श्रेयास प्रजुजी, उपज्या विष्णु सुमात जी ॥ १ ॥ नमो  
 रे नमो श्रीत्रिजुवन राजा, खरुग लंघन प्रजु पायजी ॥ धनुष अस्ती

नो जी, आयु प्रज्जुनो जान ॥१२॥ ज० ॥पैतीस गणधर दीपता  
 जी, साठ सैदस मुनि जान ॥ उसै साठ सहस वली जी, श्रमणी  
 संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्ष्मणो जी, श्राव  
 क संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनी जी, श्राविका सं  
 ख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवरथा जी, देवी ब  
 ला गंधर्व॥कुंभुनाथ मुगते गया जी, माख संलेखण सर्व ॥ज०॥१५  
 ॥ दहा ॥

॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनो, कहिस्थुं अब अधिकार ॥ श्री  
 ता सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लाज अपार ॥ १ ॥  
 ॥ दाल आठमी ॥ देसी विछियानी ॥ हारे छाला श्रीजिनकुशल सूरिसखाए देसी ॥  
 ॥ हारे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहां नगरी अयोध्या  
 चंदरे लाला ॥ तात सुदर्शन मातजी, नंदादेवीना नंद रे लाला  
 ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंठन नंदावर्तनो, तीस धनुषदेदीनो मान रे  
 लाला॥कचनवरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला॥  
 ॥२॥श्रीअ०॥ इरू लाख श्रावकऊपरे, वलि संख्या अधकी जाण रे  
 लाला ॥सहस बहुतर ताननी लक्ष श्राविका संख्या आशरे लाला ॥  
 श्रीअ० ॥३॥ देव देवी सातिथ करे, इक सहस मुनि परवार  
 रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रज्जु, कर मास संलेखण सा  
 ररे ॥ श्रीअ० ॥४॥ मिथिलानगर प्रतावती, मात पिता श्री  
 कुंज राय रे लाला ॥ लंठन कलस पचीसनो, वधु धनुष सोवन  
 सम कायेरे लाला ॥ श्रीमह्विनाथ जिनेसरू ॥५॥ सहस पचा  
 वन वर्षनी, थित गणधर अठ्ठावीस रे लाला ॥ जविक कमल प्रति  
 बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ७ ॥ श्री म० ॥ चा  
 लीस सहस मूनासरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस  
 त्रयासी लक्ष्मी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ८ ॥ श्री म०॥

श्राविका तिसरे सदसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सदस  
 मुनि परवारस्युं, गये मुक्ति संलेखण धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ १० ॥  
 राजघदी राजा पिता, सुमीव पश्चावती मात रे लाला ॥ श्र्यामव  
 रण तनु शोभता, जे कपिल लंबन विख्यात रे, लाला ॥ श्रीमुनिसुब्रत  
 स्वामिजी ॥ १० ॥ धनुष घीत देहीतणो, श्रायु वर तीस हजार  
 रे लाला ॥ अष्टादश गणधर अया, तीस सदस मुनिसर सार रे  
 लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ अमली सदस पचवीसनी, संख्या व  
 हुतर हजार रे लाला ॥ इक लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष-प  
 चास हजार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १२ ॥ वरुणयक्ष देवी, जली,  
 नरदत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सदस मुनि परवारसे, गए मुक्ति  
 भेदल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमु० ॥ १३ ॥ विजय पिता, विप्रा  
 मातजी, सोवन सम श्रोनमिताथ रे लाला ॥ नीलकमल लंबन  
 कश्यो, वपु धनुष पनर श्रायु साध रे लाला ॥ श्रीनमिताथ जिने  
 संरू ॥ १४ ॥ दस हजार वरततणो, गणधर तिसर परिमाण रे  
 लाला ॥ घीत इकतालीस सदस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण  
 रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५-॥ इक लख तिसर सदसनी, तीन ल  
 क्ष सदस चलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अतक्रम  
 करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥ विचरंता जूमरुले,  
 आया तिसर समेत मऊर रे लाला ॥ जूकुटी यक्ष गंवारी सुरी,  
 इक सदस मुनि परवार रे लाला ॥ १७ ॥ श्रीन० ॥

॥ दूरा ॥

परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर सि  
 रोमणि सुब्रसफण, जगजीवन जगतात ॥ १ ॥

॥ श्री ॥ आदर जीव समागुण ॥ देवी ॥

म पुरुष ॥

जी ॥



साँवरिया साहिब लगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥  
 जय२ सिखर समेत सिरोमणि, श्रीसाँवरिया पास जी ॥ घ्यावे  
 सेवे जे नर तेहनी, पूरै वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ कासी दे  
 स वणारसी नगरी, श्रीअश्वत्तेन नरिंद जी, वामामाता जगविख्या  
 ता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंठन नील  
 वरण ठवि, देहि शुभ्र नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाणे,  
 गणधर वस प्रभु साथ जी ॥ ४ ॥ ज० ॥ सोल सदस मुनिवर  
 अरु भ्रमणी, कही अमृतीस हजार जी ॥ जूमंमल विचरे जवि  
 जनकू, धोधवीज दातार जी ॥ ५ ॥ ज० ॥ चौसठ सदस लाख इ  
 क श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्रावकणी सं  
 ख्या, पार्श्वयक सुर सार जी ॥ ६ ॥ ज० ॥ वीस जिनेसर मुगते  
 पुढता, महिमा थइय अपार जी ॥ तिण ए तीरथ प्रगठ्यो जग  
 में, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ ज० ॥ ठहरी पाले जे नर  
 जावे, जेठे सिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे, ए सु  
 रतठनो कद जी ॥ ८ ॥ ज० ॥ बहुविध संघतणी करै जक्ति, सं  
 घपति नाम धराय जी ॥ सफल करे संपद निज पांमी, जेहनो  
 सुजस सवाय जी ॥ ९ ॥ ज० ॥ परजव सुरनर संपद पामे, जा  
 प्रा करे गद्गाट जी ॥ साधर्मि वछल मुनिजक्ति, पूजा उछव था  
 ट जी ॥ १० ॥ ज० ॥ टूंक२ पर चरण प्रभूना, पूजो जविज  
 न जाव जी ॥ घ्यांन धरो जिनवरनो मनमें, आनंद अधिक उ  
 छाव जी ॥ ११ ॥ ज० ॥ रास रच्यो श्रीसिखरगिरीनो, सुणतां  
 नवनिध थाय जी ॥ तिण ए जविजन जाव धरीने, सुणज्यो म  
 न धिर लाय जी ॥ १२ ॥ ज० ॥ खरतर गछपति महिमाधारी,  
 कीरत जग विख्यात जी ॥ जय श्रीजिनसौजाग्य सूरीश्वर, अमृत  
 वचन सुगात जी ॥ १३ ॥

सु पसायें रास रच्यो ए, अ

मृतसमुद्घ्ने सीत जी ॥ वाखचंङ् निज मति अनुसारे, सोधो विष्णु  
ध जगीत जी ॥ १४ ॥ ज० ॥ संवत उगणोत्तै सितमोत्तर, सुदि  
वैशाख सुढाल जी ॥ रास अजीमगंजमांहे कीनो, ज्ञाता मंगल  
माल जी ॥ १५ ॥ ज० ॥ इति श्रीसिखर गिरी रास संपूर्ण ॥

॥ अथ मुनि मालका लिख्यते ॥ ढाल १ ॥

रूपज्ञ प्रमुख जिन पाययुग प्रणामूं, तिवसुख दायक मनह  
वृद्धास ॥ पुंरुरीरु श्रीगौतम आदिक, गणधर गुरु मन कमल वि  
कास ॥ १ ॥ प्रह सम सूधा साधु नमुं नित, जावै श्रमण सुगुरु  
ज्ञगवंत ॥ नाम ग्रहण कर पाप पखालूं, परमानंद सुमति विकसं  
त ॥ २ ॥ प्र० ॥ ज्ञरत महामुनि प्रथम चक्रीतर, बाहूवल उप  
शम जंकार ॥ सूर्यसादिक आठ मुनिसर, पाम्यो विमलाचल ज  
वपार ॥ ३ ॥ प्र० ॥ रूपज्ञवंत जे अनुक्रम हुवा, मुनिवर कोनी  
लाख असख, श्रीतेत्रेजे शिवपुर सीधा, कलमल कालक मूंकी कं  
ख ॥ ४ ॥ प्र० ॥ सगर प्रमुख निरुपम नव चक्रवर्ति, साधु महा  
वल संजम सींह ॥ अचलादिक वलदेव अष्टमुनि, राम रूपीतर न-  
वन अवीह ॥ ५ ॥ प्र० ॥ श्रीप्रतिबुद्ध प्रमुख ठ वसुंदर, श्रीमद्वि  
नाथ पूरवज्जव मित्र ॥ पटुंता परम रूपीतर शिवपुर, पाली श्रीजि  
न आण पवित्र ॥ ६ ॥ प्र० ॥ बंडु विष्णुकुमार लब्धि निधि, खं  
दरु सूरिता सीत सत्र पंच ॥ कार्त्तिकसेठ मुसाधु कीर्त्तिधर, श्रम  
ण सुदोशल व्रत निखंच ॥ ७ ॥ प्र० ॥ श्रीयजुवंत अज्ञोत्तमु सा  
गर, प्रमुख आठ अगार प्रगान ॥ श्रीरहनेमि नेमजिन बंधव,  
निरंनल गुणार रथण निधान ॥ ८ ॥ श्री० ॥ जालि मयालि ने  
उगयाला, पुरनसेण वारिसेत प्रजुत्र ॥ संव अने अनिरुद्ध रूपीतर,  
सत्यनेमि दृढनेमि सुधन्य ॥ ९ ॥ प्र० ॥ कुमार अनीकजसादिक  
पट मुनि, गुणगिरुवो श्रीगजसुकपाल ॥ दंडण रूपि श्रीथावचा

सुते, सहस्र साधु संजतसु ठपाल ॥ १० ॥ प्र० ॥

॥ दाल बीजी ॥ राग धन्यार्थी ॥

॥ सहस्र श्रमणासु सुक सजमधरो, पचसयासु सेलग् मुनि  
 धरो ॥ सिद्ध धया श्रीपुंरुगरिगिरिवरो, करुणाकर प्रणम्या संपदकरो ॥  
 उल्लाखो ॥ संपद करो समदम रिपीतर साधु आरण सोह ए, श्रं  
 तर प्रकासे तिमर नासे, जविकजन मन मोह ए ॥ प्रत्येकबुद्ध प्रबुद्ध  
 नारद मुनि प्रमुख पैताल ए, दमदंत महारुपि कुजवारे साधु नमुं  
 त्रिहुं काल ए ॥ ११ ॥ चाल ॥ रंग रिपंजदत्त रतनत्रय मुणी, स  
 मरुं देवानंदा साहुणी ॥ पांचे पारुव प्रणमुं मुनिपती, केसपेएसी  
 बोधक जिनमती ॥ उल्लाखो ॥ जिनमती वालकं पूत्र मेहल धिवर  
 आणंद रक्कियो, अणगार कासव धर्म जारुयो सोधि सिवपुर स  
 र्कियो ॥ कालासवेसी पूत्र आतम अरथ सायक उपसमइ, श्रीपुं  
 रुरीक महामुनीतर प्रणमिये शुज संयसी ॥ १२ ॥ चाल ॥ वड  
 वलकलची राकेवली, श्री अयमत्तो मुनिवर मन रखी ॥ श्रीकरकडू  
 डमद नमि निग्गया, निज२ देसे नरवर श्रीजुआ ॥ उल्लाखो ॥ श्री  
 जुवा ए वृपजावि देखी धया वरु वइसगिया, संजमतिरि जज मो  
 हनिडा तजिय जोगे जागिया ॥ प्रत्येकबुद्धा च्यार सिद्धा सिद्ध धया  
 एरुण समे, सुप्रसन्नचंद मुनिंद निरमम प्रेम प्रणमुं प्रह समे ॥ १३  
 ॥ चाल ॥ खतै कुल्लकुमारसु ध्याइये, लोहच्चा मुनि चरणे लय ला  
 इये ॥ काल उदाई प्रमुख महामुणी, संजम सुइ जयती साहूणी  
 ॥ उल्लाखो ॥ साहूणी जाणी जगवखाणी, परमपद सुख पामिया  
 ॥ श्रीश्रमणजइ सुजइ सुंदर अचल आतमसामिया ॥ श्रीसुप्रतिष्ठकी  
 नील सुव्रत, साधुसुयत सेहरो ॥ चारित्र रिष गुणवंत योजनइ गरुठ गरि  
 भा सागरो ॥ १४ ॥ चाल ॥ तिरि सिवराय रूपीतर बंदिये, इतारण  
 जइ नमुं उख वंदिये ॥ अर्जुननाली सुख संजमधरो, सुहृदप्रह

शी .सिवरमणी वरो ॥ उल्लाखो ॥ सिवरमणी वरो श्री कूरुगमू कृमावंत  
 प्रसिद्ध, कोरिन्न दिन्न. अने सेवाली पनर सतक तिमोत्तरा ॥ गो  
 तम प्रबोधत सिद्ध पुहता नमुं चरण करणाधरा ॥ १५ ॥ चाल ॥  
 गरुआ श्रीगुणसागर गाईये, प्रअवीचंड प्रणम्यां सुख पाईये ॥ खं  
 वकुमार सदा अजितंदिये, नमिह ज़रह मित्र मन आणंदिये ॥  
 उल्लाखो ॥ आणंदिये मेतार्य मुनिवर जगतसु समरी करी, रूप इ  
 लापुत्र चिलापुत्र सृगापुत्र हीये धरी ॥ श्री इंड नाम निर्गय निर्मम  
 धर्मरुचि धर्मागिरो ॥ तेतलीपुत्र सुबुद्धि, बोध तसु जितशत्रु मुनी  
 सरो ॥ १६ ॥ चाल ॥ उदय २ कर जगि ९ जसतणो, श्रमण सु  
 वंतण सील सुदामणो ॥ श्रीअन्नयसुत आडकुमार ए, चित्त चतुर  
 नर चित्त चमकार ए ॥ उल्लाखो ॥ चमकार सार सुजात शिवर,  
 देवसांनिध जस धणी, गगेय गिरुवो गुणे गाजै सुजिन पावत हि  
 त धणी ॥ श्रीधर्मघोष सुसीस धर्मरुचि, साधु श्रीजिनदेव ए ॥  
 श्रीरूपिल रूपि हरिकेशव बल मुनि, नित नमु, निरलेप ए ॥ १७ ॥  
 ॥ चाल ॥ जति जयघोष विजयघोषै जुन्न, सेवुं श्रुतधर श्रीदेवलसुन्न ॥ श्री  
 इखुकार नृपति कमलावती, राणी नृगुसुं शोहित सुन्नमती ॥ उल्ला-  
 खो ॥ सुन्नमती जेहनी जसाचार्या पुत्र दोय वखाणिये, ए वहुं,  
 खेइ चारु चारित्र मुगति पहुता जाणिये ॥ कत्रिय मुनिसर, साधु,  
 सजम धर्मरुचि महाव्रती, निअंथनाथ अनाथ वंदू समुडपाल सुसं  
 यती ॥ १८ ॥ चाल ॥ कुम्मापुत्र नमुं केवल कळपो, विधसुं शीतल,  
 सिवकमला मिळ्यौ ॥ धन धन धन्यो सुरगिरी धीर ए, वीरप्रशं  
 स्यो तप गुण वीर ए ॥ उ० ॥ श्रीवीर दीक्षित श्रीसुवाहुज्ज नं  
 दकुमार ए, आदिक दसे रिप चरिय जेहना सुख विपाक उदार, ए ॥  
 श्रीचंद्ररुद्र सुसीस खंडग कृमान्निधि, कहिये इण कलै, कुरुवत्त सुत,  
 तीसग सरोरुद रिप नम्या आस्या फले ॥ १९ ॥ चाल ॥ अंग प्र

मुख रिष च्यारे आदरी, विधिसु संजम सिद्धिवधू वरी ॥ अत्रैकुमार  
मुनि अन्नपंकरो, हृद्य विद्वत्सु आतम हितकरो ॥ उद्धालो ॥  
हितकरो दयाधर मेघ मुनिवर नंदिपेण आराधियै, सुनहत्र  
ने सर्वानुभूति समर तिवसुख साधिये ॥ श्रीसिंह साधू अने  
उदायन चरम राजरुपीसरो, श्रीसाखन्नइ सुधन्न मुनिवर समरंता  
मंगलकरो ॥ २० ॥

॥ ढाल ३ ॥ राग धन्यासिरी ॥

वरुवेरागी वर नमूं, युगवर जवूतामि ॥ प्रजव तिर्यंजव  
परगमो, सुजस जसोन्नद्र स्वामि ॥ महामुनितर नित नमू जी,  
नामे घर नवनिध्व वाधै रिद्ध समुद्ध ॥ महा० ॥ २१ ॥ जग संजू  
तिविजय जयो, जद्रवाहु कृतजद्र, जग जोगीतर जागतो, मुनिवर  
श्रीधूलजद्र ॥ २३ ॥ म० ॥ जद्रवाहु स्वामीतणा, च्यार शिष्य  
मुनीराय ॥ सीत परीपह जिणसह्या, तारया२ आतम काज॥म०॥  
॥ २४ ॥ अऊमहागिरि जाशिये, अऊसुदृष्टि विसाल ॥ संप्रति नृप  
पन्विबोहियो, श्रीअयवंतीसुकमाळ ॥ म० ॥ २५ ॥ आरिजतामि  
यसंतियो, अऊसुजद मुनीस ॥ अऊमंगु महिमा निलो, सींदगि  
रो समुनीस ॥ म० ॥ २६ ॥ धनगिरि शिवर महामनी, श्रीवयर  
स्वामी मुनिराय ॥ अरददिस मुनि अपहरघो, जद्रगुपति निरमाय  
॥ म० ॥ २७ ॥ वयरसेन विद्यावरू, श्रीरहत गुरु दह ॥ पुस  
मित्र गुण गहगह्यो, प्रजु डरवलका पद ॥ म० ॥ २८ ॥ विजु सा  
धु सुविषइ जरघो, श्रीठनिल सुविद्वह ॥ सूत्रअरथ रतने जरघो,  
कृमाश्रमण देवहै ॥ म० ॥ २९ ॥ पचम काल महामुनी, श्री  
उपसै सूर दयाल ॥ सुद क्रिया खरतर सही, जिन आज्ञा प्रतिपाल  
॥ म० ॥ ३० ॥ इम पनर कर्नभूमी जिजे, हुआ होस्यै अणत  
॥ वर्तमान श्रीसाधुजी ॥ रत्नत्रइ गुणवंत ॥ म० ॥ ३१ ॥ ब्राह्मी

सुंदरि रायने, साहुणी चंदनवाल ॥ आदिक सीलवती सती, त्रिक  
रण सुद्ध त्रिकाल ॥ म० ॥ ३२ ॥ संवत सोल षष्ठीस ए, श्री  
विमलनाथ सुरस्ताल ॥ दिक्का कळ्याणक दिने, गूंघ्री श्रीमुनिमाल  
॥ म० ॥ ३३ ॥ रिणी पुरै रत्निधामणो, श्रीशीतल जिनचंद ॥  
सूरि विजय राजै सदा, संघ सकल आणंद ॥ म० ॥ ३४ ॥ श्री  
भतिज्ज सुगुरुतणें, सुपसाये सुखकार ॥ चारित्र सिंध वखाणियै,  
सदा२ जयकार ॥ म० ॥ ३५ ॥ मनहर श्रीमुनिमालका, गुणग  
ण परिमलपूर ॥ कंठ ठवे उत्तम जिके, पांमे सुख जरपूर ॥ म० ॥  
॥ ३६ ॥ महा मुनिसर गावतां, सुरतरु सफल समान ॥ अष्टम  
हासिद्ध घेर फले, सदा२ कळ्याण ॥ म० ॥ ३७ ॥ इति मुनिमाल  
का साधु वंदना संपूर्णम् ॥

॥ अथ छिन्नूं जिन स्तवन लि० ॥

॥ व० ॥ वरतमान चौवीसी वंदू, मन सूधै नित मेव री माई ॥  
रुवज्ज अजित संजव अजिनंदन, सुमति पदम प्रज्जु सेव री माई ॥  
॥ व० ॥ १ ॥ श्रीसुपार्थ चंड प्रज्जु प्रणमूं, सुविध शीतल श्रेयास री  
माई ॥ वासपूज्य विमल अनंत धरम जिन, शांति कुंथु परसंसरी  
माई ॥ व० ॥ २ ॥ अरिजिन मद्धि अने मुनिसुव्रत, नमि नेमी  
पास जिनंद री माई ॥ चौवीसमा श्रीवीर जिनेसर, प्रणमूं परमा  
चंद री माई ॥ व० ॥ ३ ॥

॥ दाल २ ॥ पर सम सूधा साधु नमूं नित ॥ ए देशी ॥

नित २ अतीत चौवीसी नमियै, जेहना नांम प्रगट ए जाण ॥  
केवलग्यानी ते निरवाणी, सागर महाजस विमल वखाण ॥ ४ ॥  
॥ नि० ॥ सर्वानुज्जुति श्रीधरदत्त जिनवर, दामोदर सुतजाश्रीस्वां  
मि ॥ मुनिसुव्रत सुमति शिवगति जिन, श्रीअस्ताग नेमीसर नांम  
॥ ५ ॥ नि० ॥ अनिल यशोधर तेम कृतारथ, श्रीजिनेसर सुद्धम

ति मुजंगीत, तिवकरे स्थंदन संप्रति नामे, वंदीजे जिनवर चौवी  
स ॥६॥ नि० ॥

॥ डाल ३ ॥ सफल सत्तारनी ॥

जे ज्विस्संतिअणागए काल ए तेह चौविस प्रणमीस त्रिहु  
काल ए प्रथम माहाराज श्रेणिकतणो जीव ए श्रीपदमनाज प्रण  
मीस सदीव ए ॥ १ ॥ वीरनो पितरियो नाम सुपास ए, हुंसी  
जिन वीय सुरदेव सुप्रसास ए ॥ श्रेणिक सुत उवाइ नरिंद ए,  
तीसरो तेह सुपास जिणंद ए ॥ २ ॥ शिष्य श्रीवीरनो पोहलो  
साध ए, चोस्रो स्वयंप्रभू नाम आराधि ए ॥ दृढायुप जीव सिद्धा  
तमें जाणिये, पंचम सर्वानुभूति प्रमाणिये ॥ ३ ॥ कीर्त्त इण नाम  
इक जीव कहीजिये, देवश्रुत ते उगो स्वामि सखहीजिये ॥ सख  
आवक हुस्थै उदय जिन सातमो, आनंदनो जीव पेढाल जिन  
आठमो ॥ ४ ॥ सुनंदनो जीव ते नवम पोहल-जिणं, सतक आवक  
शतकीर्त्ति दसमो जणं ॥ देवकीजीव सुतिसुव्रत इग्यारमो, सत्य  
कीजीव ते अमम जिन बारमो ॥ ५ ॥ वासुदेवजीव निकपाय  
जिन तेरमो, बलदेवजीव निपुलाक चवदम नमो ॥ पनरमो निर  
सुम देव सुखसा कही, रोहणीजीव चित्रगुप्त सोलम सही ॥ ६ ॥  
समाध जिन सतरमो आवका रेवती, अठारमो शदालजीव संवर  
जिनपती ॥ दीपायनजीव यशोधर जगणीसमो, कृष्णकोइजीव  
ते विजय जिन वीसमो ॥ ७ ॥ मद्धि इकरीसमो जीव नारदतणो,  
देव वावीसमो अवउ आवक जणं ॥ तेवीसमो अमरजीव अनंत  
वीरज नमो, स्वातबुधजीव ते जइ चौवीसमो ॥ ८ ॥ एह आगाम  
चौवीस जिन जाणिया, प्रवचन सारउद्धारथी आणिया ॥ केइ पर-  
सिद्ध ने केइ अप्रसिद्ध कहा, साख अनुसारी सार कर मरदह्या ॥ १५ ॥

॥ शाल ३ ॥ आजनिदेजो रे दीसे नाहाली ए देत्री ॥

विहरमांन जिन वीसे वंदियै, महाविदेह विख्यात ॥ सीमंधर  
युगमधिर वाहुजी, श्रीसुबाहु सुजात ॥ वि० ॥ ६ ॥ स्वयंप्रभु  
रूपज्ञानन अनंतवीरजी, सूरप्रभु तेम विशाल ॥ वज्रधर चंज्ञानन  
चंडवाहुजी, जुजंग ईश्वर नेमि जाल ॥ वि० ॥ ७ ॥ वैरसेन महा  
भद्र नमुं, वली, देवयस्ता यतोरिद्ध अढीदीपमे विचरे आज ए, नाम  
लिया नवनिद्ध ॥ वि० ॥ ८ ॥

॥ शाल ४ ॥ रे जीव जिन परम कीजिये ॥ ए देत्री ॥

च्यार तीर्थंकर सासता, इणहिज अजिधान ॥ रूपज्ञानन चं-  
ज्ञानन वारिपेण वर्द्धमान ॥ च्यार० ॥ ए ॥ अठ कोनि ठप्पन्न  
लाख ए सत्ताणू हजार ॥ चउसे उयासी देहरा, त्रिहुं लोक मजार  
॥ च्यार० ॥ १० ॥ नवसे पणवीस कोनिया, विव त्रेपन लाख ॥  
सदस अठावीस च्यारसे, अठघासी जाल ॥ च्यार० ॥ ११ ॥ विज्जू  
जिणवर नाम ए, समरघा सुखदाय ॥ प्रणम्यां पाप मिटेपरा, सम-  
कित सुद्ध थाप ॥ च्यार० ॥ १२ ॥

॥ कलस ॥

इम त्रिण चोवीसी वीस विहरमाण चक्र जिणवर सासता,  
संशुण्या सतरैसे वयाले अधिक आणी आसता ॥ जिन रतनचिंता  
मणितणी पर प्रबल वंचित पूर ए, प्रदसमै त्रिकरण श्रुद्ध प्रणभे  
सदा जिनचंड सूर ए ॥ १३ ॥ इति श्री विज्जूं जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ उपदेशमाला पोसह सिधाय लि० ॥

जग चूमामणिज्जूठ, उसजो वीरो तिलोय सिरि तिलठ ॥  
एगो लोगाइचो, एगो, चम्कू तिहुअणस्त ॥ १ ॥ संवन्नरमुसन्न जिणो,  
उम्मासे वद्धमाण जिणचंडो ॥ इइ विहरिया निरसणा, जए ऊएउव  
माणेण ॥ २ ॥ जइता लो - ०, विसइइ वहुचाई असरिसज



एस्त ॥ इय जीयंतकराई, एस खमा सबसादृणं ॥ ३ ॥ न चइ  
 ऊइ चालेउ, महइ महावदमाण जिणचंदो ॥ उवसग्ग सहस्तेहिं  
 वि, मेरु जहा वायगुं जाहिं ॥ ४ ॥ जहो विणीय विणउ, पढम  
 गणहरो समत्त सुयनाणी ॥ जाणंतो वि तमउं, विम्हिय दियउ  
 सुणइ सध ॥ ५ ॥ जं आणवेइ राया, पयइत्त तं सिरेण इउंति ॥  
 इय गुरुजण मुह जणियं, कयंजलिउमेहिं सोचव ॥ ६ ॥ जह  
 सुर गणाण इदो, गहगणतारागणाण जह चंदो ॥ जइय पयाण  
 नरिंदो, गणस्त वि गुरु तदाणंदो ॥ ७ ॥ वालुत्ति महीपालो, न  
 पया परिहवइ ए स गुरु उवमा ॥ जंवा पुरउं काउं, विहरंति मुणी  
 तहा सोवि ॥ ८ ॥ पत्तिरुवो तेहस्ति, जुगम्पहाणागमो महुरवको  
 ॥ गंजीरो धिइमंतो, उवएत्तपरो य आयरिउ ॥ ९ ॥ अपरिस्तावी  
 सोमो, संगइसीलो अज्जिगदमई य ॥ अविकउणो अचवलो, पत्तं  
 तुहियउ गुरू दोई ॥ १० ॥ कइयावि जिणवरिंदा, पत्ता अयरामरं  
 पद दाउं ॥ आयरिण्हिं पवयणं, धारिऊइ, संपयं सयलं ॥ ११ ॥  
 अणुगम्मए जगवई, रायसुयळा सहस्त वदोहिं ॥ तहवि न करे इ  
 माण, परिय उइ त तहा नूणं १२ ॥ दिण दिस्सियस्स वमग, स्त  
 अज्जिमुहा अंऊचंदणां अऊा ॥ नेउइ आसणागहणं, सो विणउं स  
 अऊाणं ॥ १३ ॥ वरससय दिस्सियाए, अऊाए अऊादिस्सिउं साहू ॥  
 अज्जिगमण वंदण नम, सणेष विणएणसो पुऊो ॥ १४ ॥ धम्मो  
 पुरिसप्पज्जवो, पुरिसव रदेसिउं पुरिसजिणो ॥ लोएवि पदू पुरिसो,  
 किंपुण लोणुंत्तमे धम्मो ॥ १५ ॥ संवाइणस्ससरणो, तइया वाणा-  
 रसीइ नयरीए ॥ कत्ता सहस्समइय, आसी किररुववंतीण ॥ १६ ॥  
 तह वि य सारायसिरी, उउइत्ती न ताइया ताहि ॥ उवरणिण  
 इके, ए ताइया अगवीरेण ॥ १७ ॥ महिलाणसु बहुयाण वि, म  
 ऊाउं इह समत्त धरसारो ॥ रायपुरिसेहिं निऊउ, जयेवि पुरिसो

जहिं नञि ॥ १८ ॥ किं परजण बहुजाणां, वणाहिं वरमप्य सस्किर्ये  
 सुकथं ॥ इह ज्ञरदचक्रवट्टी, पत्तन्नचंदो य दिठंता ॥ १९ ॥ वित्तो वि  
 अप्पमाणो, असंजम पएसु वट्टमाणस्स ॥ किं परियत्तियवेत्तं, वित्तं  
 न मारेइ खज्जनं ॥ २० ॥ घम्मं रक्कइ वेत्तो, संकइ वेत्तेण दिस्सित्तं  
 मिअहं ॥ उम्मगेण परंतं, रक्कइ राया जणवत्तं य ॥ २१ ॥ अप्पा  
 जाणइ अप्पा, जइठ्ठि अप्पसस्सित्तं धम्मो ॥ अप्पा करेइ तं तइ,  
 जइ अप्पसुहावहं होई ॥ २२ ॥ ज जं समयं जीवो, आविस्सइ  
 जेण जेण ज्ञावेण ॥ सो तंमि तंमि समए, सुहासुहं बंधए कम्मं ॥  
 ॥ २३ ॥ घम्मो मएण हुंतो, तोन वि स्तीउन्ह वायविच्चत्तिन् ॥ संव  
 अरमणसीत्त, बाहुवली तइ किलिस्संतो ॥ २४ ॥ नियगमइ विग  
 प्पिय चिं, तिएण सच्चंदबुद्धिचरिएण ॥ कत्तोपारत्तदियं, कीरइ गुरु  
 अप्पुवएसेण ॥ २५ ॥ अद्धो निरोवयारी, अविणीत्तं गवित्तं निरवणा  
 मो ॥ साहुजणस्स गरदित्तं, जणेवि वयणिक्कयं लइइ ॥ २६ ॥  
 थोवेषा वि सप्पुरिसा, सणंकुमारु व्केइ बुद्धति ॥ देहे खणपरिहाणी,  
 जंकिर देवेहिंसे क्हियं ॥ २७ ॥ जइता लवसत्तम सुर, विमाण  
 यात्तीवि परिवर्तंति सुरा ॥ चिंतिज्जंतं सेत्तं, संसारे सासयं कयरं ॥  
 ॥ २८ ॥ क्रदतं जन्नइ सुक्कं, सुचिरेण वि जस्स उक्कमद्विदियए ॥  
 जं च मरणा वसाणे, जव संसाराणुबंधिं च ॥ २९ ॥ उवएस सह  
 स्सेहिं, बोदिज्जनो न बुद्धई कोई ॥ जइ बंजदत्तराया, उदाइनिवं  
 मारत्तं चेव ॥ ३० ॥ गयकन्न चंचलाए, अपरिच्चत्ताइ रायलञ्जीए ॥  
 जीवासक्कम्म कलिमल, ज्ञरिय ज्ञरातो परंतं अहे ॥ ३१ ॥ वोत्तू  
 णवि जीवाणं, सउक्करा इति पावन्नरियाइ ॥ ज्ञयवंजा सा साता,  
 पञ्चाएसो हु इणमो ते ॥ ३२ ॥ पन्निवज्जिक्कण दोत्ते, नियए सन्मं  
 च पायवन्नियाए ॥ तो किर भिगावईए, उप्पन्नं केवलं नाणं ॥ ३३ ॥  
 इति पोसइ सिद्धा ॥

॥ अथ राईसंधारा पोसह सिधाय ॥

॥ निस्तिही निस्तिही नमो खमासमणाणं, गोयमाईणं ॥  
 महामुणीण ॥ नवकार ३, करेमिजंतं ३, कहियें, अणुजाणह जि  
 विज्ञा, अणुजाणह परमगुरु. गुणगणरयणेहिं मंनिअसररीरा ॥ बहु  
 पन्निपुत्रा पोरिसि, राईसंधारए गामि ॥ १ ॥ अणुजाणह संधार,  
 बाहुवदाणेण वामपासेणं ॥ कुक्कुण पाय पसारण, अंतरं तु पमञ्जए  
 जूमि ॥ २ ॥ संकोश्य संमासं, उवटंतेय काय पन्निहेहा ॥ दवाई  
 उवत्तं, ऊसात्तनिरुत्तणालोयं ॥ ३ ॥ जइ मे दुऊ पमानं, इमस्त  
 देहस्तिमाइ रयणीए ॥ आहार मुवहि देहं, सधं तिविहेण वोरिरियं  
 ॥ ४ ॥ आसव कसाय वधण, कलहा जरकाण परपरीवानं ॥ अरइ  
 रई पेसुन्न, माया मोसं च मिच्चत्त ॥ ५ ॥ वोत्तिरिसु इमाइंमु, स्कम  
 ग्ग संसग्ग विग्घ जूआइ ॥ डुग्गइनिवधणाइ, अणारस पावणाणाइं  
 ॥ ६ ॥ एगो इ नच्चिमे कोइ, नाइमन्नस्त कस्सवि ॥ एवं अदीण  
 मणसो, अप्पाण मणुसातए ॥ ७ ॥ एगो मे सासत्तं अप्पा, नाण  
 वंसणसज्जत्तं ॥ सेसा मे बाहिरा ज्ञावा, सव्वे संजोगलक्खणा ॥  
 ॥ ८ ॥ सजोग मूला जीवेण, पत्ता डुक्कपरंपरा ॥ तम्हा संजोग  
 तबंधं, सध तिविहेण वोसिरे ॥ ९ ॥ अरिहतो मह देवो, जावळीवं  
 सुसाहुषो गुरुणो ॥ जिणपन्नत्तं तत्तं, इयसम्मत्तं मए गहियं ॥ १० ॥  
 चत्तारि मंगल, अरिहता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि  
 पन्नतो धम्मो मंगलं, चत्तारि लोयुत्तमा, अरिहंता लोयुत्तमा, सिद्धा  
 लोयुत्तमा, साहू लोयुत्तमा, केवलि पन्नतो धम्मो लोयुत्तमो ॥ च  
 त्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पव  
 ज्जामि, साहूसरणं पवज्जामि, केवलि पन्नत्त धम्मं सरणं पवज्जामि ॥  
 अरिहता मंगलं मज्झ, अरिहंता मध्य देवया ॥ अरिहता कित्तिअत्ता  
 णं, वोत्तिरामित्ति पावग ॥ १ ॥ सिद्धाय मंगलं मज्झ सिद्धा य मज्झ

देवया ॥ सिद्धा य कित्तिअत्ताणं, वोत्तिरामि ति पावगं ॥ २ ॥ आ  
 यरिया मंगलं मझ, आयरिया मझ देवया ॥ आयरिया कित्तिअत्ताणं,  
 वोत्तिरामि ति पावगं ॥ ३ ॥ उवद्धाया मंगलं मच्च, उवद्धाया मच्च  
 देवया ॥ उवद्धायां कित्तिअत्ताणं, वोत्तिरामि ति पावग ॥ ४ ॥ सा  
 हूणो मंगलं मच्च, साहूणो मच्च देवया ॥ साहूणो कित्तिअत्ताणं,  
 वोत्तिरामि ति पावगं ॥ ५ ॥ पुढवि दग अगणि मारुय, इक्किक्के सत्त  
 जोणि लक्कात्त ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणि लक्कात्त ॥  
 ॥ १ ॥ विगलिदिण्णु दो दो, चउरो चउरो य नारय सुरेसु ॥ ति  
 रिण्णु हुंति चउरो, चउदस लक्का यमणुण्णु ॥ २ ॥ खामेमि सव्व  
 जीवे, सव्वे जीवाखमंतु मे ॥ मित्ती मे सव्वण्णुण्णु, वेरं मच्चं न  
 केणवि ॥ ३ ॥ एवमइं आलोइअ, निदिअ गरहिअ डुगंठिअं सम्मं ॥  
 तिदिहेण पम्किंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ४ ॥ खमिअ खमा  
 विअ मइ खमिअ, सव्वह जीव निकाय ॥ तिहहसाख आलोयणह,  
 मच्चह वेर न ज्ञाय ॥ ५ ॥ सव्वे जीवा कम्मवसु, चउदह राज  
 जमंतु ॥ ते मइ सव्व खमाविया, मच्चवि तेह खमंतु ॥ ६ ॥ इति  
 संधारा गाथा स० ॥

॥ अथ निदावारक सञ्चाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां वोळ्यां महा  
 बाप रे ॥ वयर विरोध बाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे भायं  
 बाप रे ॥ निं० ॥ १ ॥ दूर बलंती का देखो तुस्हे रे, पगमा बलंती  
 देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलमा धोयां लूगनां रे, कहो केम ऊ  
 जला होय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप सज्जालो सहुको आपणो रे,  
 निंदानी मूको परी टेव रे ॥ थोरे घणे अवगुणो सहु जरयां रे,  
 केहना नलीया चुए केहना नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 थाये नारकी रे, तप जप कीयु सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो

आपणी रे, जेम टुटकवारी थाय रे, ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो  
सहुको तपो रे, जेहमा देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो  
रे, समयसुंदर सुखकार रे ॥ नि० ॥ ५ ॥

अथ सीता सिधाय लिख्यते ॥

॥ अल जलती मिलती घणी रे, जाली जाल अपसर रे ॥ सु  
जाण सीता ॥ जाणो केसू फूलियां रे जाल, राता खिरअझार रे  
॥ सु० ॥ २ ॥ श्रीज करे सीतासती रे जाल ॥ शील तणे परि  
भाषा रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम खुशी थया रे जाल, निरखे राणो  
शाण रे ॥ सु० ॥ २ ॥ स्नान करी निरमल जलें रे जाल, प्रावक  
सालें थाय रे ॥ सु० ॥ उजो जाणे सुराज्ञता रे जाल, अनुपम रूप  
दिखाय रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ नर नारी मिलियां घणा रे जाल, ऊजा  
करे हाय हाय रे ॥ सु० ॥ जस्म हुशी इण आगमें रे जाल, राम  
करे अन्याय रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राघव त्रिन वाठयो हुवे रे जाल,  
सुपनेही नहिं कोय रे ॥ सु० ॥ तो मुऊ अगन प्रजाजो रे  
जाल, नहिं तो पाणी होय रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ इम कहि पेवी आग  
में रे जाल, तुरत अगन थयो नीर रे ॥ सु० ॥ जाणें इह जलगु  
जरयो रे जाल, जीवि धरम सुधीर रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ देव कुसुम  
वरपा करे रे जाल, एह सती सिरदार रे ॥ सु० ॥ सीता धीजें ऊ  
तरी रे जाल, साख जरे संसार रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ रवियायत स  
हुको थया रे जाल, सयले थया ठवरंग रे ॥ सु० ॥ लक्ष्मण राम  
खुशी थया रे जाल, सीता शीला सुसारे ॥ सु० ॥ ८ ॥ जग  
मांहे जस जेहनो रे जाल, अविचल शील कहाय रे ॥ सु० ॥ क  
हे जिन हर्ष सती तणा रे जाल, नित प्रणमीजें पाय रे ॥ सु० ॥  
॥ ९ ॥ इति सीतासती सिधाय समाप्ता ॥

॥ अथ अनाथी रूपि सिंघाय ॥

॥ श्रेणिक रथवानी चढयो, पेलियो मुनी ए केत ॥ वर हू  
 पकारे मोहियो, राय पूठे रे कहो विरतंत ॥ १ ॥ श्रेणिकराय हुं  
 रे अनाथी निर्घैथ ॥ तिलमें लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रे० ॥ ए  
 आकषी ॥ इण कोसंबी नगरो वसे, मुज पिता परि गल धन्न ॥  
 परवार परे परवरयो हुं हुं तेहनो रे पुत्र रतन्न ॥ श्रे० ॥ २ ॥ इ  
 क द्विवस मुज वेदना, ऊपनी ते न खमाय ॥ मात पिता सुहु  
 जूरी रह्या, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरमी  
 गुण मन उरमी, उरमी अबला नारि ॥ कोरमी पीना में सही,  
 नाहि कीधी रे मोरमी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राजिवेद्य बुलाइया,  
 कापला कोमी उपाय ॥ बावना चंदन लेईया, पण तोही रे दाह  
 नवि जाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ वेदना जो मुज उपशमे, तो लेउ सं  
 जमजार ॥ इम चितवता वेदन गई, व्रत लीधो रे इरथ अपार ॥  
 ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ जगमाहे को केहनो नाहि, ते जशी हुं रे अनाथा ॥  
 वीतरागनो धरम वाहरो, कोई नहीं रे मुगतिनो साथ ॥ श्रे० ॥  
 ॥ ७ ॥ कर जोमी राजा गुण स्तवे, धन धन तुं अनगार ॥ श्रे  
 णिक समकित तिहां लडे, वांदी पहुचे रे सरग मजार ॥ श्रे० ॥  
 ॥ ८ ॥ मुनिवर अनाथी गावता, कर्मनी तूटे कोनी ॥ गणि समय  
 सुंदर तेहना, पाय वादे रे बे कर जोमी ॥ श्रे० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ प्रतिक्रमणसिंघाय ॥

॥ कर पनिक्रमणो जावसुं, दोय धनी शुज जाण ॥ लाख  
 रे ॥ परजव जाता जीवनें, सबल साचुं जाण ॥ लाख रे ॥ १ ॥  
 कर पनिक्रमणु जावसुं ॥ ए आकषी ॥ श्रीमुख वीर समुचरे, श्रे  
 णिकराय प्रतिबोध ॥ २ ॥ लाख खनी सोना तणी, वीये दिन  
 प्रति दान ॥ ३ ॥ १० ॥ लाख वरस लग ते ॥ एम ॥

न काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे जायने हुं० चूरे करम समाज रे  
हुं० ॥ ८ ॥ टं०॥ आंणी चढती जावना हुं०, पांभ्यो केवल नाण रे  
हुं० ॥ टंढण रुपि मुगते गया हुं०, कहे जिनदर्य सुजाण रे हुं०  
॥ ए० ॥ टं० ॥ इति टंढण रुपि सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ धन्नारुषी सिद्धाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अभिय समाणी मोरा नंदन,  
मनमै तो मांनी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि वैरागी रे धन्ना,  
धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो ममनो रे किम परचावसुं  
॥ २ ॥ दस दिस्ती दीते रे धन्ना, तो विन मूनी मोरा नंदन, अनु  
मति देतां रे जीज बहे नही ॥ ३ ॥ बत्तीसै नारी हो धन्ना,  
अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर सुहामणी ॥ ४ ॥  
वालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुशी मो० ॥ गजगति चाले  
रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख सज्या मो० ॥  
कोम बत्तीसे धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन माणो रे धन्ना, वय  
पिण जाणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग सुहामणो ॥ ७ ॥ अत  
अति दोहिलो रे धन्ना, नदिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नही ठे रे साधु क  
हावणो ॥ ८ ॥ घर ७ जिद्धा हो धन्ना, गुरुतणी शिद्धा मो० ॥ कदाणी  
रे रदणी नही ठे सारखी ॥ ९ ॥ इक वारे सुणीये हो धन्ना, आ  
गम जणीये मो० ॥ जिनवर जांणो हो डुकर जोग ठै ॥ १० ॥  
वनवासे रदणा हो धन्ना, परीसद सहाणो मो० ॥ कोमल  
केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाख्यो हे अम्मा,  
जूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो ॥ १२ ॥  
सुख अजिलापी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर मारम  
जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही परमार  
थि मोरी अम्मा, वीर दखाण्यो परखदा सह सुण्यो ॥ १४ ॥

में इम जाण्यो हें अम्मा, वीर बखाण्यो मोरी अम्मा, ए घन जो-  
वन आयु थिर नही ॥ १५ ॥ अनुमति दीजे हे अम्मा, ढील न कीजे  
मेरी अम्मा, जो खिण जावे सु फिर आवे नही ॥ १६ ॥ अन-  
मति आपी हो अम्मा, जीव सख पायो मोरी अम्मा, संजम लीधो  
रे मनमां गद्गही ॥ १७ ॥ ठठर पारयो हे अम्मा, विगय निवा-  
रण मोरी अम्मा, वीर बखाण्यो सुरगर आगलै ॥ १८ ॥ सुख सं-  
जम पावे हे अम्मा, दूपण टाले मोरी अम्मा, अंग इग्यारे अरथ  
रूमा जणै ॥ १९ ॥ संजम पाळ्यो हे अम्मा, नव पखवामे मोरी  
अम्मा, मास संधारे सरवारथसिद्ध लह्यो ॥ २० ॥ इति धन्ना  
रुपि सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ कर्मसिंहाय लिख्यते ॥

देव दाणव तीर्थकर गणधर, हरि हर नरवर सवला ॥ कर्म  
तणे वस सुख डख पाया, सवल हुआ महा निवला रे प्राणी, कर्म  
समो नहि कोई ॥ १ ॥ आदीचरजीने कर्म अटारया, वरस दिव  
स रह्या नूखा ॥ वीरने बारे वरस डख दीधा, ऊपना ब्राह्मणी कूवै  
रे प्राणी ॥ क० ॥ २ ॥ साठ सदस सुत मारया एकण दिन, जोध  
जुवान नर जैसा ॥ सगर दुठ महा पूत्रनो डखियो, कर्मतणा फल  
एता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ३ ॥ बन्नीस सदस वेसारे साहिव, चक्री  
सनतकुमार ॥ सोले रोग सरीरमे ऊपना, कर्म कीयो तनु ठार रे  
॥ प्रा० ॥ ४ ॥ कर्म हवाल किया हरचंदने, वेची सुतारा राणी ॥  
बारे वरस लग माथे आण्यो, नीचतणे घर पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥  
॥ ५ ॥ दधिवाहन राजारी बेटी, चावी चंदनबाला ॥ चौपद ज्युं  
चहुटामे वेची, कर्मतणा ए चाला रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ६ ॥ संजूम नामे  
आठमो चक्री, कर्म सायर नाख्यो ॥ सोले सदस जह उजा देखे,  
पिण किलदी नहि राख्यो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ ब्रह्मदत्त नामे



म काज रे हूं० ॥ इंट निवा हे जायने हुं०  
 हुं० ॥ ७ ॥ टं०॥ आंणी चढती जावना हुं०,  
 हुं० ॥ टंढण रुपि सुगते गया हुं०, कहे ज २१  
 ॥ ए० ॥ ८० ॥ इति टंढण रुपि सिंहाय संपूर्ण

॥ अथ धन्नारुषी सिंहाय ॥

श्रीजिनवाणी रे धन्ना, अनिय ..  
 मनसै तो मानी रे नंदन ताहरै ॥ १ ॥ तूं अतहि  
 धरमनो रागी मोरा नंदन, माहरो तो ममको रे  
 ॥ २ ॥ दस दिली वीले रे धन्ना, तो विन मूनी मे  
 मति देता रे जीज वहे नही ॥ ३ ॥ वत्तसै  
 अतहि पियारी मो० ॥ वाणी तो बोले रे मधुर  
 बालक तो कामणी रे धन्ना, वय पिण तरुणी मो०  
 रे चाल सुहावणी ॥ ५ ॥ ए घर मंदिर हो धन्ना, ए सुख  
 कोरु वत्तीते धननो तूं धणी ॥ ६ ॥ ए धन मालो  
 पिण जाणो मो० ॥ जोगवि लेज्यो रे जोग  
 अति दोहिलो रे धन्ना, नदिय सुहेलो मो० ॥ सुगम नदी  
 हावणो ॥ ७ ॥ घर जिहा हो धन्ना, गुरुतणी शिक्षा  
 रे रदणी नही वे सारखी ॥ ८ ॥ इक वारे सुणीये हो  
 गम जणीये मो० ॥ जिनवर जाणो हो डुकर जोग वै ॥  
 वनवाले रदणा हो धन्ना, परीसह सहलो मो० ॥  
 केसा रे लोच करावणो ॥ ११ ॥ साचो तें जाख्यो हे  
 जूठ न दाख्यो मोरी अम्मा ॥ डुकर मारग जननी दाखियो।  
 सुख अजिलापी हे अम्मा, जूठ न आखी मोरी अम्मा ॥ कायर  
 जननी दाखियो ॥ १३ ॥ ए जग स्वारथी हे अम्मा नही पर  
 धि मोरी अम्मा, बीर वखाण्यो परखदा सह सुण्यो ॥ १४

॥ सा० ॥ १ ॥ प्रथम जूवाने रे विसन परुयांधकां, पामव पांच  
 प्रसिद्ध विवेकी ॥ नलराजा पिण इण विसने पढ्यो, खोइ सहू रा  
 जरिइ वि० ॥ सा० ॥ २ ॥ दूसरे मांस जटाण अचगुण घणा, करे  
 पर जीव संहार विवेकी ॥ महासतकनी नारी रेवती; नरक गइ  
 निरधार विवेकी वि० ॥ सा० ॥ ३ ॥ तीजे मदिरा पान - विसन  
 तजी, चित घरी वलि चाइ वि० ॥ छीपायण रिषि दहव्यो जा  
 ववे, द्वारकानो थयो दाइ वि० ॥ सा० ॥ ४ ॥ चोथे विसने दे  
 स्याघर वसै, लोकमें न रहे लाज वि० ॥ कयवन्नादिकनो गयो  
 कायदो, कुविसने रे काज वि० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पाप आदिने  
 कुविसन साचवै, प्राणी हणिये प्रहार वि० ॥ मारी - मृगली श्रे  
 णिक नृप गयो पहली नरक मजार वि० ॥ सा० ॥ ६ ॥ बडे  
 चोरीने विसने करी, जीव लहे डस्क जोर वि० ॥ मुंजदेव रा  
 जाये मारियो, चावो हुंरक चोर ॥ वि० ॥ सा० ॥ ७ ॥ परस्त्रीय  
 संगत कुविसन सातमें, हाणि कुजस बहु दोष वि० ॥ राणे  
 रावण सीता अपहरी, नास लंकानो रे जोय वि० ॥ सा० ॥ ८ ॥  
 इम जाणीने जव्य तुमे आदरो, सीख सुगुरुनी रे सार वि० ॥ इण  
 जव परजव आणंद अतिघणा, कहे धमसी सुखकार ॥ वि० ॥  
 ॥ सा० ॥ ९ ॥ इति सात विसनकी सिंहाय संपूर्ण ॥

॥ अथ चेलणा सतीनी सिंहाय लिख्यते ॥

वीर-वादी वलतां थका जी, चेलणा दीवो रे निर्ग्रन्थाराति वन  
 मांदि काञ्जसग्न रह्यो रे, साधतो मुगतिनो पंथ ॥ १ ॥ वीर वखा  
 णी राणी, चेलणा जी, सतिय सिरोमणि जाण ॥ च्चेमाराजानी  
 साते सुता जी, श्रेणिक सीयल परिमाण ॥ वी० ॥ २ ॥ सीत  
 ङ्गार सबलो पने जी, चेलणा प्रीतम साध ॥ चारतियो चितमे  
 वस्यो जी ॥ सौरि वाहर रह्यो हाथ ॥ वी० ॥ ३ ॥ ऊवक जागी

बारमो चक्री, कर्म कीधो आधो ॥ इस जाणीने अहो ज्विप्राणी,  
 कर्म कोइ मत बांधो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ७ ॥ उपन्न को न जा  
 धवरो साहिव, कृष्ण महाबल जाणी ॥ अटवी साहि मूठ एकलमो,  
 विल २ करतो पाणी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ए ॥ पारुव पांच महा  
 जूजारा, हारी ज्ञेपदा नारी ॥ वारे वरस लग वन ररुवनिया, ज  
 मिया जेम जिख्यारी रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १० ॥ वीस जुजा वस  
 मस्तक हूँता, लखमण रावण मारयो ॥ एकलमे जग सहु नर जीत्या,  
 ते पिण कर्मसुं हारयो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ ११ ॥ लखमण राम  
 महा बलवंता, अरु सतवंती सीता ॥ कर्म प्रमाणे सुख दुख पांम्या,  
 वीतक बहु तस वीता रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १२ ॥ समकित्तधारी  
 श्रेणिक राजा, वेटे बाध्यो मुसकै ॥ धरमी नरने कर्म धकाया ॥  
 करमसु जोर न कितका रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १३ ॥ सतिय तिरोमणी जौ  
 पदि कहियै, जित्त सम अवर न कोई ॥ पाच पुरुपनी हुइ ते नारी,  
 पूरव कर्म कमाई रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १४ ॥ आज्ञानगरीनो जे  
 स्वामी, साचो राजा चद ॥ माइ कीधो पंखी कूकमो, कर्म नाख्यो  
 ते फंद रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १५ ॥ ईसर वेव ते पारवती नारी, क  
 रता पुरुष कदावै ॥ अहनिस महिल मसाणमे वासो, जिहा जो  
 जन खावे रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १६ ॥ सहस किरण सूरज परतापी,  
 रात विवस रदे अटतो, सोल कला ससीधर जग चावो, दिन २ जाये  
 घटतो रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १७ ॥ इम अनेक खंभ्या नर कर्म,  
 प्रांज्या ते पिण साजा ॥ रुद्धिहरप-कर जोम्नीने विनवै, नमो २  
 कर्म महाराजा रे ॥ प्रा० ॥ क० ॥ १८ ॥ इति कर्म सिंहाय स० ॥

॥ अथ सात विसनकी सिंहाय लिख्यते ॥

सात विसनना रे संग मतां करो, सुण तेहनो सुविचार वि  
 वेकी ॥ सात नरकना रे जाइ सातेई, आपै डरक अपार विवेकी ॥

॥ अथ बाहूबल सिद्धाय ॥

॥ राजतणा अति लोभिया, जगत बाहूबल कूजे रे ॥ मूठ  
 उपासी मारिवा, बाहूबल प्रतिबूजे रे ॥ १ ॥ वीरा म्दारा गजध  
 की ऊतरो, ब्राह्मी सुंदरी ज्ञासै रे ॥ रुपज जिनेसर मोकली, बा  
 हूबलनें पासै रे ॥ वी० ॥ गज चढयां केवल न होई रे ॥  
 वी० ॥ २ ॥ लोच करी चारित्र लियो, बलि आयो अजिमानो रे  
 ॥ लघु बांधव बांदू नही, काउसग रह्यो शुज घ्यानो रे ॥ ३ ॥  
 वी० ॥ वरस दिवस काठसग रह्यो, घेलनिया वींटाणो रे ॥ पंखी  
 भाला मांदिबा, सीत ताप सूकाणो रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ साधवी व  
 धन सुणपा इत्ता, चमक्यो चित्त मजारो रे ॥ ह्य गय रथ में प  
 रिहरया, पिण नवि मूक्यो अहंकारो रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ वैरागै मन  
 वालियो, मूक्यो निज अजिमानो रे ॥ पांव उपासी वांदिवां, ऊप  
 नो केवलज्ञानो रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ पहुंतो केवली परखषा, बाढ  
 धल रुपिराया रे ॥ अजर अमर पदवी लही, समयसुंदर बंदे  
 पाया रे ॥ ७ ॥ वी० ॥ इति ॥

॥ अथ अरणक मुनि सिद्धाय ॥

॥ अरणक मुनिवर चाढया गोचरी, तनके दाजे सीसो जी ॥  
 पाय उवराणा रे वेलू परजलै, तन सुकमाल मुनीसो जी ॥ अर०  
 १ ॥ मुख कमलाणो रे मालती फूल ज्युं, ऊजो गोखने हेठो  
 जी ॥ खरै डुपहरै रे दीठो एकलौ, मोही माननी भीठो जी ॥ २  
 ॥ अ० ॥ वयण रंगिले रे नयणे वेधियो, रुपि धंज्यो तिण वारो  
 जी ॥ दासीने कहे जाय ऊतावली, उ रिपि तेनी आणो जी ॥  
 ३ ॥ अ० पावन कीजे रुपि घर आंगणो, वहिरो मोदक सारो जी  
 ॥ नवजोवन रस काया काइ दहो, सफल करो अवतारो जी ॥  
 ४ ॥ अ० ॥ चंडावदनी रे चारित चूक्यो, सुख विलसै दिन रातो

कहे चेलणा जी, किम करतो हुस्यै तेह ॥ कुसती मनमाहि ए कुण  
 वस्यो जो ॥ श्रेणिक पड्यो रे संदेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ अंतेउर परो  
 जालज्यो जी, श्रेणिक दियो रे आदेस ॥ जगवंत सांतो जाजियो  
 जो, चमकियो चित्त तरेस ॥ वी० ॥ ५ ॥ वीर वादी बलतां थकां  
 जी, पैसतां नगर मजार ॥ धुंआनो घोर देखी करी जी, जा जा रे  
 अजयकुमार ॥ वी० ॥ ६ ॥ तातनो वचन पाळी करी जी, व्रत  
 लियो अजयकुमार ॥ समयसुंदर कहे चेलणा जी, पामियो जवत  
 णो पार ॥ वी० ॥ ७ ॥ इती चेलणा महासती सिंहाय सपूर्ण ॥  
 ॥ अथ वैराग्य सिंहाय ॥

॥ जूलो मनजमरा कांइ जमै, जमियो दिवस ते रात ॥  
 मायारो लोत्री प्राणियो, जमियो परमल जात ॥ १ ॥ जू० ॥ कुं  
 ज काचो काया कारमी, जेहना करो रे जतन ॥ विणसतां वार लागे  
 नही, निरमल राखो रे मन ॥ २ ॥ जू० ॥ केहना ठोरू केहना  
 वाठरू, केहना माय नै बाप ॥ उ जीव जासी एकलो, साथे पुन्य  
 नै पाप ॥ ३ ॥ जू० ॥ आस्या तो रुंगर जेवनी, मरवो पगला रे  
 हेठ ॥ धन संची सच काइ करो, करवो देवनी वेठ ॥ ४ ॥ जू०  
 ॥ लखपति उत्रपती सब गए, गए लाखो के लाख ॥ गरब करी  
 गोखै बैठता, जए जल बल राख ॥ ५ ॥ जू० ॥ जवसायरजल  
 डल जरयो, तिरबो ठे रे जेह ॥ वीचमें बीह सबलो अठै, करमें  
 वाय नै मेह ॥ ६ ॥ जू० ॥ उलट नही मारग चालवो, जायवो  
 पहिले रे पार ॥ आगल नहि दूट वाणियो ॥ संबल लेज्यो रे सार  
 ॥ ७ ॥ जू० मूरख कहे धन माहरो, धन केहतो इतो न थाय ॥  
 वस्त विना जाय पोदवो, लखपति लाकरु माय ॥ ८ ॥ जू० ॥ मह  
 मंद कहे वस्त वीरीयै, जे कुठ आवे रे साथ ॥ अपणो लाज उवा  
 रियै, लेखो साहिव हाथ ॥ जू० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ मेघकुमार सुनि सिद्धाय लिख्यते ॥

वीरजिनंद समोसरया जी, वंदे मेघकुमार ॥ सुण देशन वै  
 रागीयौ जी, ए संसार असार रे मायमी ॥ अनुमति द्यो सुऊ आज ॥  
 संयम विषम अपार रे ॥ मा० ॥ अ० ॥ १ ॥ वठ तू केषो ज्ञोल  
 व्यौ रे, श्रेणिक तात नरेस ॥ कांइ ऊणौ किण दूहव्यो रे, हू नवि  
 छुं आदेश रे जाया ॥ संयम विष० ॥ किम निरवाहित जार रे  
 जाया ॥ हूंन० ॥ २ ॥ आदि निगोदे हूं रुढ्यो जी, सदिया डस्क  
 अणंत ॥ सासोश्वासैं जव पूरीया जी, तेह न जाणू अंत हे ॥  
 ॥ मा० ॥ अ० ॥ ३ ॥ दिवणा तू बालक अठै जो, जोवन जरणो  
 रे कुमार ॥ आठ रमणि परणावियो रे, जोगवि सुस्क अपार रे  
 जाया ॥ हूं नवि० ॥ ४ ॥ जनम मरण निरयातणौ जी, डस्क न  
 सहणौ जाय ॥ वीरजिनंद वखाणियो जी, ते मै सुणियो कांन हे  
 मायमी ॥ अ० ॥ ५ ॥ वठ कांठलीयै जीमणो जी ॥ अरस विरस  
 आहार ॥ नुइ पावा नित हींमणो जी, जाणसि तुऊ कुमार रे जाया ॥  
 हूं न० ॥ ६ ॥ जमता जीव अनंत जग्घो जी, धर्म उदेळो होय ॥  
 जरा व्यापे जोवन खिसे जी, तब किम करणो होय रे मायमी ॥  
 ॥ अ० ॥ ७ ॥ भृगनयणी आठे रमे जी, तोमे नवसर हार ॥ जो  
 वनजर ठेरू नही जी, काइ भूको निरधार कुमरजी ॥ हू न० ॥  
 ॥ ८ ॥ हंसतूविका सेजनी जी, रूप रमणि रस जोग ॥ अतहि-  
 सुहाली देहमी जी, किम हुय संजम जोग रे जाया ॥ हूं न० ॥  
 ॥ ९ ॥ स्वारथनो सहू ए सगो जी, अरथ पखे सहु कोय ॥ विषय  
 विषम महुरा कह्या जी, किम जोगविये सोय हे मायमी ॥ अ० ॥  
 १० ॥ खभिश् मान पसाय करी जी, में दीधु तुऊ डस्क ॥ दिउ आदेस  
 जिम हु सुखी जी, वीर चरणे ड्युं दीस्क हे ॥ मा० ॥ अ० ॥ ११ ॥  
 तन फाटे लोयण ऊरे जी, डख न सहणा जाइ ॥ वठ सुखी दुखो

जी ॥ इक दिन गोखै रमतो सोगठै, तब दीगो निज मातो जी ॥  
 ६ ॥ अ० अरणक३ करती भाय फिरे, गलिपै२ मजारो जी ॥ क  
 हि किए दीगो रे माहरो अरणलो, पूठै लोक हजारो जो ॥ ६ ॥  
 अ० ॥ उत्तर तिहाथी रे जननीरे पाय नमे, मनमें लाउयो तिया  
 रो जी ॥ धिग२ पापी रे माहरा जीवने, एह में अकारज धारयो  
 जी ॥ ७ ॥ अ० ॥ अगन धुखती रे सिद्धा उपैरे, अरणक अर्थास  
 ण कीधो जी ॥ समयसुंदर कहे धन ते मुनिवरु, मन वंछित फल  
 सीधो जी ॥ ८ ॥ अ० ॥ इति अरणक मुनि सिंहाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ इलापुत्र सिंहाय लिख्यते ॥

नाम इलापुत्र जांणियै, धनदरसेठनो पूत ॥ नटवी देखी रे मे  
 हियो, जे राखे घरसूत ॥ १ ॥ करम न ठूटे रे प्राणिया, पूरब नेह  
 विकार ॥ निज कुल ठनी रे नट थयो, नाणी सरम विगार ॥  
 १ ॥ क० ॥ २ ॥ इक पुर आयो रे नाचरा, उंचो वंस विवेक ॥ तिहा  
 राय जोवा रे आवियो, मिलिया लोक अनेक ॥ क० ॥ ३ ॥ दोष  
 पग पहरी रे पावनी, बस चढयो गजगेल ॥ निरधारा ऊपर नाचतौ,  
 खेले नवनवा खेल ॥ क० ॥ ४ ॥ ढोल बजावे रे नाटकी, गावे किन्नर  
 साद ॥ पायतल घूघर घभघने, गाजै अवर नाद ॥ क० ॥ ५ ॥  
 तिहा राय धिते रे राजियो, लुधधो नटवी रे साथ ॥ जो पदै नट  
 वी रे नाचतौ, तौ नटवी मुऊ हाथ ॥ क० ॥ ६ ॥ दाने न आयो  
 रे नूपती, नट जाणै नूप वात ॥ हूं धन बरू रे रायनो, राय वंछै  
 मुऊ घात ॥ क० ॥ ७ ॥ तिहाथी मुनिवर पेखियो, धन३ साधु  
 नीराग ॥ धिग२ विषया रे जीवना, मन आयो वैराग ॥ क० ॥  
 ८ ॥ संवरजावे रे केवली, ततखिण कर्म स्वपाय ॥ केवलि मदि  
 मा रे सुर करै, समय सुंदर गुण गाय ॥ क० ॥ ९ ॥ इति ॥

सुगुरु मुखै ऋविषण सरदही ॥ नगर प्रधान मरे जो कोइ,  
 आठ पुहर असिझाई होय ॥ ए ॥ वसतीथकी सातां घर मांदि, नर  
 विहमै अहोरति असिझाई ॥ पुरुष पढ्यो होय मृतकअनाथ, तां  
 असिजाय कही सो हाथ ॥ १० ॥ पुत्रतणै प्रसवै दिन सात, वेटीं  
 आठ दिवस विहात ॥ सो कर मांदि कही असिजाई, नारी ऋतु दिन  
 तीन कदाइ ॥ ११ ॥ इमो फूटै प्रसवै गाइ, जां जर रुधिर पमै तिन  
 गइ ॥ असिझाइ मो कर मादि, त्रिएह पोहर के ऊपर नहो ॥ १२ ॥  
 असाढै चौमासै दिने, पम्कमणा गायत्री गिणै ॥ वार पोहर  
 असिजाई कही, काती चौमासै इण परि सही ॥ १३ ॥ इण पर  
 असिजाई ठै बहू, गीतारथ गुरु जाणै सहू ॥ सांजलि ए में कही  
 संखेवि, हरखै पय प्रनू कीजै हेवि ॥ १४ ॥ अंतवर्ग अंतकर जेह,  
 च्यार भावठबीजे तेह ॥ सत्तम वर्ग बीअं अकरै, तब कवि नाम  
 कहियो इण परै ॥ ॥ १५ ॥ इति असिजाइ सिजाय संपूर्णम् ॥

॥ अथ बावीस अभक्ष सिजाय लिख्यते ॥

जिनशासन रे सूयी सरदहिणा बरो, श्रीगुरुमुख रे नव तत्व  
 ए निरता करो ॥ मिछ्यामत रे कुमति कदाग्रह परिहरौ, सदि पालो  
 रे ते नर समकित मन खरो ॥ १ ॥ तूटक ॥ मन खरौ समकित  
 शुभ पालौ, टालो दोषदया परो ॥ धुरि पंच अणुव्रत तीन गुणव्रत,  
 च्यार तिहाव्रत घरौ ॥ इम देशविरती क्रिया निरती, सुणो ऋवि  
 षण मनरली ॥ दाखविए गुण परह केरा, दोष सम काढौ बली ॥  
 ॥ २ ॥ मम काढो रे लोन्नी नर कूनौ करौ, जाणी सावध रे अ  
 ऋक बावीसे परिहरौ ॥ वरु पीपल रे पिलखण ने कटुंबरो,  
 कंवरफल रे रखे तुमें ऋक्षण करो ॥ ३ ॥ उज्जाला ॥ रखे  
 तुमें ऋक्षण करौ भावण, मद्य मधु आमिष तणो ॥ विष हेम  
 करहा ठंनि परदा, दोष मूल पाटी घणो ॥ परिहरो सज्जन र



तिम करो जी, में दीधो आदेस रे जाया ॥ संयम वि० ॥ ११ ॥  
 मणि माणक मोती तज्या जी, तोड्यो नवसर हार ॥ मृगनयणी,  
 आठै रमे जी, हिव अह्न कवण आधार नरेसर ॥ संयम० ॥ १३ ॥  
 कुमर जणै सुकुली थिया जी, बहु डुख ए संसार ॥ नेह तुमारो  
 जाणियो जी, जो द्यो संयमजार रे नारी ॥ संय० ॥ १४ ॥ रथ  
 सिविका तव सजी करी जी, कुवर धारणी माइ ॥ श्रेणिकराय, उ  
 छव करै जी, चारित्र द्यो रिपिराय रे जाया ॥ सं० ॥ १५ ॥ इम  
 जाणी वैरागियौ जी, वरजै जे नर नारि ॥ करजोनी पूनो जणे जी,  
 ते तरस्यै ससार हे मा० ॥ अ० ॥ १६ ॥ इति मेघकुमार सि० ॥

॥ अथ असिझाइ निर्णय सिझाय ॥

श्रावण काती मिंगसर मास, पहिली परुवा तीन विमास ॥  
 चौथी परुवा वदि वैसाख, च्यार पुहर असिजाइ ज्ञाख ॥ १ ॥ जा  
 लगि होली ऊमे वार, धुंवर परुती हुवै जिवार ॥ जा परचक्रनो  
 ज्ञय नवि जाय, ता लग असिझाई कहिवाय ॥ २ ॥ धूलवृष्टि ने  
 केल पाखाण, वरसै ता लग असिझाई जाण ॥ जूजै मल्ल मादोमादि  
 जाम, ता लग असिझाई तिण ठाम ॥ ३ ॥ जूपति परजव पोहतो  
 होय, जा लग पाट न बैसै कोइ ॥ तां लग बोली वै असिजाइ, स  
 हुको सरदहज्यो मन मांहि ॥ ४ ॥ उलकापात अने दिगदाह, एक  
 पोहर असिझाई थाय ॥ निवल मेह तिम जाणो सही, आठ पहोर  
 सबल जल कही ॥ ५ ॥ चैत्र सुदि पांचम दिनथकी, पन्निवा लग  
 असिजाइ वकी ॥ पन्निवा बीज तीज चादणी, समीताऊ असिझाई  
 गिणी ॥ ६ ॥ आझ नकन्न न लागै जाम, गाज बीज असिजाइ ताम ॥  
 गाज बीज जो हुवे अकाल, असिझाइ वे पुहर संजाल ॥ ७ ॥ चउग्रहण  
 असिझाई जणी, बारह पोहर उत्कृष्टी गिणी ॥ जघन्य प्रकारें आठ वि  
 चार, सूर्यग्रहण पोहर जघन्यै वार ॥ ८ ॥ सोल प्रहर उत्कृष्टी कही,

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ ( अथ वायव्यकूण ) ॥ हरिणोयाहनयस्य  
 वायव्याधिपतिर्मस्तु संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तर दिशि )  
 ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रजुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥  
 ( ईशान कूण ) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानांचदिसोविजुः संघस्य०  
 वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अधोदिशि ) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म  
 वाहनः संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ उर्ध्वदिशि ) ब्रह्मलोकत्रि  
 ज्ञोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश दि  
 ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुयां पीठे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ ओर बलवाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्वम् ॥

॥ उैनमोइंशच पूर्वदिग्धिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र  
 नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणांर्धे अमु ऋन  
 गरे अमुकचैत्ये अमु ऋमहोत्रवे सर्वोपद्वाहलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥  
 पूर्वदिशाकी तरफ उंइंशयनमः ॥ १ ॥ ( अग्नि कूण ) ॥ उैनमोअ  
 ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०  
 सर्वोपद्रवाहलिरक्ष० गच्छ २ स्वाहा ॥ इति ॥ ( दक्षिणदिशि ) उैन  
 मोयमाय दक्षिणदिग्धिष्टायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण  
 मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्वाहलिरक्ष २ गच्छ २ स्वां  
 हा ॥ ३ ॥ इति ॥ ( नेरुतकूणे ) ॥ उैनमोनेरुताय खरुगहस्ताय  
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाहलिरक्ष २ गच्छ २  
 स्वाहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशि ) ॥ उैनमोवरुणाय पश्चिम  
 दिग्धिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०  
 सर्वोपद्वाहलिरक्ष २ गच्छ २ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ ( वायवकूणे ) ॥  
 उैनमोवायवे वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०  
 सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाहलिरक्ष ० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

णा सन्निधियाय तेसर्वेविलेवण ध्रुवपुष्पफलवश्वसणाहिं वलिपदि  
 छता तुष्किराजवतु पुष्किरा सतिकराजवतु सधंजणं कुर्वतु सबजि  
 णाण सहणप्पजावत्त पसन्नजावतणे सधत्थररकंतुकुर्वतु सबडुरियाणी  
 नासतु सवाशिवमुवसमतु सतितुष्किपुष्किसिवसत्प्रयणकारिणो जवतु  
 स्वाहा. ॥ इस मंत्रसें तीन वेर वासुदेपकूं मंत्रके बलवाकुलमें  
 मालके सुद्ध करे ॥ पीठे आधा बलवाकुल दूसरी परातमें विसर्जनके  
 वास्ते वस्त्रसें ढककर रखठोने आधा लेकर धरके तथा चैत्यके ऊपर  
 इग्यारे स्नात्रिया शुद्ध होकर पहला एक आवक चोटीके बाल खो  
 लकर बलवाकुल लेके पूर्वकी तरफ खडा रहे, २ दूसरा केसरकी  
 कटोरी, ३ तीसरा पुष्पकी चंगेरी, ४ चौथा श्रेता, ५ पांचमा धूप  
 धाणा, ६ षष्ठ दीपक, ७ सातमा चमर, ८ आठमा घंटा, नवमा  
 जलका कलश, १० दसमा बलवाकुलकी थाली, ११ इग्यारमा मंग  
 लवाजित्र इस तरे सब स्नात्रिये एकेक दिसाकी तरफ खडा रहै.  
 जब गुरु शुद्धमंत्र उच्चारण करखूके तब क्रमसें जल चदन फूल वा  
 कुलादिक चढावै, चामरकरे, आरीसा दिखावै, वाजित्र बजावै ॥

॥ अथ दस दिग्पाल आह्वानमंत्र ॥

॥ ऐरावत.समारूढ. शक्र. पूर्वदिशिस्थितः संघस्यशांतयेसो  
 स्तु वलिपूजाप्रयच्छतु ॥ १ ॥ ( एसा कहके पूर्वदिशाकी तरफ  
 बलवाकुल चढावै ) ( अग्निक्लृणके सामने ) ॥ सदावह्निदिशो  
 नेता पावकोमेपवाहन संघस्यशांतयेसोस्तु वलिपूजाप्रयच्छतु ॥ २ ॥  
 ( एसा कह वाकुलादिद्रव्य चढावै ) ( दक्षिणदिशाकी तरफ ) ॥  
 दक्षिणस्थादिश स्वामी यमोमहिषवाहन संघस्य० वलि० ॥ ३ ॥  
 ( बलवाकुल चढावै वाजित्र बजावै ) ( नैरुतक्लृणकी तरफ ) ॥  
 यमापरातरालोको नैरुत शिववाहन. संघस्य० वलि० ॥ ४ ॥  
 ( अथ पश्चिमदिशि ) ॥ य. प्रतीचीदिशोनाथः वरुणोमकरस्थितः

संघस्य० वलि० ॥ ५ ॥ ( अथ वायव्यकूण ) ॥ हरिणोवाहनस्य  
 वायव्याधिपतिर्मरुत् संघस्य० वलि० ॥ ६ ॥ ( अथ उत्तर दिशि )  
 ॥ निधाननवकारूढ उत्तरस्यादिशिप्रजुः संघस्य० वलि ॥ ७ ॥  
 ( ईशान कूण ) ॥ सितेवृषेधिरूढश्च ईशानाचदिसोविजुः संघस्य०  
 वलि० ॥ ८ ॥ ( अथ अथोदिशि ) पातालाधिपतियोस्तु सर्वदापद्म  
 वाहन-संघस्य० वलि० ॥ ९ ॥ ( अथ उर्ध्वदिसि ) ब्रह्मलोकवि  
 ज्ञोयस्तु राजहंससमाश्रित संघस्य० वलि० ॥ १० ॥ इति दश-दि  
 ग्पाल आह्वानविधिः ॥

॥ अथ पूजा प्रतिष्ठादि हुया पीठे दिग्पाल विसर्जनविधि ॥

॥ धोर बलनाकुलादि द्रव्यपूजा पूर्ववत् ॥

॥ उन्नमोऽत्राय पूर्वदिग्अधिष्टायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्र  
 नेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अस्मिन्जंबुद्वीपे दक्षिणादे अमु रुन  
 गरे अमुकचैत्ये अमु रुमदोष्ठवे सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥  
 पूर्वदिशाकी तरफ उन्नमोऽत्राय नमः ॥ १ ॥ ( अग्नि कूण ) ॥ उन्नमोऽत्र  
 ग्निमूर्त्तये शक्तिहस्ताय सायुधाय सवा० सप० अस्मिन्० अमुक०  
 सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष० गच्छ २ स्वाहा ॥ इति ॥ ( दक्षिणदिशि ) उन्न  
 मोऽत्राय दक्षिणदिग्अधिष्टायकाय महिषवाहनाय दंरुआयुधाय कृष्ण  
 मुर्त्तये सायु० सवा० सप० अस्मि० सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वा  
 हा ॥ ३ ॥ इति ॥ ( नेरुतकूणे ) ॥ उन्नमोऽत्राय खरुगहस्ताय  
 सायु० सवा० सप० अस्मिन्० अमु० सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष २ गच्छ २ स्वा  
 हा ॥ ४ ॥ इति ॥ ( पश्चिमदिशि ) ॥ उन्नमोऽत्राय पश्चिम  
 दिग्अधिष्टायकाय मकरवाहनाय सायु० सवा० सप० अस्मि० अमु०  
 सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष १ गच्छ १ स्वाहा ॥ ५ ॥ इति ॥ ( वायवकूणे ) ॥  
 उन्नमोऽत्राय वायवाधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायु०  
 सवा० सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्वाद्दलिरक्ष ० स्वाहा ॥ ६ ॥ इति ॥

( उत्तरदिशि ) ॥ ॐ नमो धनदाय उत्तरदिग्धिष्टाय काय नरवाहनाय  
 गदाहस्ताय सप० अस्मि० अमुकनगरे सर्वोपद्रवाद्दलि० गञ्ज२ स्वा  
 हा ॥ ७ ॥ इति ॥ ( ईशाणकूपे ) ॐ नमो ईशानाय त्रिसूलहस्ताय  
 ईशानाधिपतये वृषजवाहनाय सप० अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्द  
 लि० गञ्ज२ स्वाहा ॥ ८ ॥ इति ॥ ( उर्ध्वलोके ) ॐ नमो ब्रह्मणे रा  
 जहसवाहनाय उर्ध्वलोकाधिष्टाय काय सायु० सवा० सप० अस्मिन्०  
 अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि० गञ्ज० स्वाहा ॥ ए ॥ इति ॥ ( अधोलोके )  
 ॐ नमो नागाय पातालनिवासाय पद्मवाहनाय० सायु० सवा० सप०  
 अस्मि० अमु० सर्वोपद्रवाद्दलि२ गञ्ज२ स्वाहा ॥ १० ॥ ( इत  
 तरे पदे वाद सर्व देवतोके विसर्जनका श्लोक पढे ॥ यथा ॥ शक्राद्या  
 लोकपालादिशिविसिगता शुद्धसङ्घर्मशक्ता, आयातास्त्रात्रकाले क  
 लुपहृतिरुते तीर्थनाथस्यज्जक्त्या, न्यस्ताशेषापदाद्याविहितशिवसु  
 खाः स्वरूपदंसाप्रतंते, स्त्रात्रेपूजामवाप्यस्वमतिष्ठतमुदोयातुकड्याण  
 ज्ञाज ॥ १ ॥ आग्याहीनं क्रियाहीन, मंत्रहीनचयत्कृत, तत्सर्वकर्म  
 तंदेव, प्रशीदपरमेश्वर ॥ २ ॥ आह्वाननैवजानामि, नैवजानामि  
 पूजनं, विसर्जननैवजानामि, त्वमेवशरणमम ॥ ३ ॥ पीठे यथाश  
 क्ति ज्ञानपूजा गुरुपूजा साधर्मीवात्सल्य करै ॥ इति नवग्रह दश  
 दिग्पाल स्थापन आह्वान विसर्जन विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ नवपद मडल पूजाविधि ॥

प्रथम सुंदर अंगोपांगवाले नव स्त्रात्रिया मंत्रितजलसें स्नान  
 करे ( जलमंत्र ) ॐ ह्रीं अमृते अमृतोन्नवे अमृतवर्षणी अमृतश्राव  
 य२ स्वाहा ( इत मंत्रसें जलमंत्रे पीठे ) ॐ ह्रीं अमले विमले वि  
 मलोन्नवे सर्वतीर्थजलोपमे पापावावाग्रशुचिशुचिज्जवामिस्वाहा ( इत  
 मंत्रकों सातवेर पढता हुवा स्नान करे. पीठे ॥ ॐ ह्रीं आँ क्रॉं ॥ ( सा  
 त वेर इत मंत्रसें वस्त्र शुद्ध कर पहिरे पीठे ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रॉं अर्दते

नमः ) इस मंत्रसें सान वेर गुरु पाससें केसर मंत्रायके तिलक करै ( पीठै ) नै ह्रीं अक्षतर २ सोमे २ कुरु २ वडगु २ सुमणसे सो मणसे महामहुरे उँरुवलीकः कः स्वाहा ॥ ( इस मंत्रसें मोली मेंढल मरोमाफली मंत्रायके हाथके बांधै नुर जब मंमलजीके च्यारुं तरफ मौलीमेंढल बाधे सोजी इसी मंत्रसें मंत्रायके बांधे. इस तरे अपणा अंग शुद्ध करके स्नात्रिया गुरुके सामने हाथ जोरके बैठै तब गुरु आत्मरक्षा स्तोत्र जो पहिली लिखा हे उससें तीन वेर पढके गुरु आत्मरक्षा करवावे. पीठै तीन वेर नवकारमंत्रसें मंत्रकें चोटीके गांठ देवे तथा तीन नवकार गुणके सब स्नात्रियाके कानामें फूंक देवे. इतनी विधी तो हरकोइ पूजा प्रतिष्ठा मन्मलादिकमें स्नात्रियोंको प्रथम अवस्य करानी चाहिये. पीठै मंदिरीमें अविष्टायक जो देव देवी होय उसकी पूजा करावै अष्टङ्ग्य चढावै. पीठै चंपेलीके तेलमें हिंगलू वा सिदूर मिलाके क्षेत्रपालजी की पूजा करे, चादीके वरक या मालीपाना चढावै, अतर चढावे, फूल धूप नैवद्य फल जल रोकङ्ग्य इत्यादि सर्वङ्ग्य ( उँकेत्रपाला यनम. ) एसा बोलता हुवा चढावै. पीठै मंमलजीके दक्षणे तरफ १० दिग्पालके पढेकी थापना करे. अकेक दिग्पालकी पूजा पढके जल चंदनादि सर्वे ङ्ग्य चढावै नागरवेलके पान समेत दसोंकी पूजा पढके ऊपर लालवस्त्र मोलीसें बाधे. आगे फेर सर्व द्रव्य चढाके दीपक करै. पीठे बायें तरफ नवग्रहके पढेकी थापना कर पूर्वोक्त काव्य पढके इसी मुजब पूजा करै. ) पीठै सर्व स्नात्रिया कू १७ स्तुतीसें देववंदावै.

अदारे स्तुतिका देववंदाणेकी विधी लिखते हैं ॥ पहली इरियावही पन्निहमें च्यार नवकारका काञ्जसग्ग कर लोगस्त कहे. नीचे वेठके द्दिणागोमा धरतीपर रख के मावागोमा नमीनूत करके चैत्यवंदन करै,

नमोऽनुं० कइके अरिदंतचेऽयाणं० वंदणवत्ति० अन्ननुं० १  
 एक नवकारका काउसग्ग करै नमोर्दत् सिद्धा० कइके यदहिन  
 मनादेव शुईकी पहली गाथा कहे ॥ लोगस्स० वदण० अन्ननुं० एक  
 नवकारका काउसग्ग इस शुईकी छुसरी गाथा कहे. पुक्क  
 रवरदी० वदणवत्ति० एक नवकारका काउसग्ग० शुईकी तीसरी  
 गाथा कहे. सिद्धाणंनुं० वेयावच्चगरा० वंदणव० एक नवकारका  
 काउसग्ग शुईकी धथी गाथा कहे पीठै वेठके नमोऽनुं कइके खना  
 हो के श्रीशातिनाथ देवाधिदेव आराधनार्थं करेमिकाउसग्गं वंदण  
 व० अन्ननुं० १ नवकारका काउसग्ग कर० ॥ रोगशोगादिजिर्दोपै र  
 जितायजितारये नम. श्रीशातयेत्समै विहितानतगातये ५ ( तत-  
 श्रीशांतिदेवतानिमित्तंकरेमिकाउसग्ग० १ नवकारका काउसग्ग )  
 ॥ श्रीशातिजिनञ्जकाय च्चव्यायसुखसंपदं श्रीशातिदेवतादेया दशाति  
 मपनीयते ६ ( तत- श्रीशुतदेवतानिमित्तं० ) सुवर्णशाखनीडेयात्  
 षादशाणीजिनोन्नवा श्रुतदेवीसदामह्य मशेषश्रुतसंपदं॥७॥ ( तत- श्री  
 जुवनदेवताआराधनार्थं० ) चतुर्वर्णायकीस्तुति १ गाथा कहे ॥ ( तत-  
 हेत्रदेवतानिमित्तं० ) यासाहेत्रगतास्तंति १ गाथा कहे ॥ ८ ॥  
 ( तत- श्रीअंभिकादेवतानिमित्तं० ) अंधानिहितमिवामे सिद्धुद्धतम  
 न्विता सित्तिसिद्धेस्थितागौरी वितनोत्तुसमीहितं ॥ १० ॥ ( तत- श्री  
 पद्मावतीदेवतानिमित्तं० ) धराधिपतिपत्नीया देवीपद्मावतीसदा कुडो  
 पड्वतःसामा पातुफुल्लवफणावली ॥ ११ ॥ ( ततः श्रीचक्रेश्वरीदे  
 वतानि० ) चंचश्चक्रधराचारु प्रवालदलसन्निजा चिरंचक्रेश्वरीदेवी  
 नंदतानिवञ्जामा ॥ १२ ॥ ( तत- श्रीअञ्जनादेवतानि० ) खड्गे  
 टकक्रोदं चणपाणिस्तमित्युतिः तुरगगमनाञ्जना कटपाणानिकरो  
 तुमे ॥ १३ ॥ ( ततः श्रीकुबेरदेवतानि० ) मथुरापुरीसुपार्थ्व श्री  
 पार्थ्वस्तूपरकका श्रीकुबेरानगररुढा सुताकावतुवोजयात् ॥ १४ ॥

( ततः श्रीब्रह्मदेवतानिमित्तं करेमि ) ब्रह्मशातिसमांपाया द्वापाय  
द्वीरसेवकः श्रोमन्सत्यपुरेतत्या येनकीर्त्तिं कृतानिजः ॥ १५ ॥

( ततः श्रीगोत्रदेवतानिमि० ) चागोत्रंपालयत्येव सकलापायतःस-  
दा श्रीगोत्रदेवतारक्षा शंकरोतुनतागिरा ॥ १६ ॥ ( ततः श्रीशक्रा  
दिसमस्तदेवतानिमि० ) श्रीशक्रप्रमुग्वायक्षा जिनशासनसस्थिताः  
देवादेव्यस्तदन्धेपि संघरक्षंत्वपायतः ॥ १७ ॥ ( ततः श्रीसिद्धायि  
का श्रीशासनदेवतानि० च्यारलोगस्सको कानस्सग्गकर स्तुति  
कहे ) श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमालंगसेविता सामासिद्धायिकापातु  
चक्रेचापेपुधारणी ॥ १८ ॥ लोमस्स कहके वेठै चैत्यवं० नमोवु०  
जयवीयराय पर्यंत कहै ॥ इस तरै १८ स्तुतिसे देववांदण विधि॥

॥ अथ मंडल प्रतिष्ठाविधिः ॥

॥ प्रथम दोनों तरफ मौली सूत्रकी बत्ती जगाके घृतका दी  
पक करै, इन दोनों दीपकको चार प्रहर अखंरु रखै ( पीठै ) सो  
ने चादी वगेरे के कलसमें अघोटजल जरके सोनवाणी करै, हाथमें  
कलस लेके सात नवकार गुणै ॥ उँह्री जीरावलापार्श्वनाथरक्षाकुरु  
स्वाहा ॥ इस मंत्रसे सात वेर जलको मंत्रके मंरुलजीके च्यारों तर  
फ धारा देवे, ऊपर जरा ठीटा देकर पवि करै, धूपखेवै (पीठै)  
नवतारी मौलीसूत्रका साढातीन आटा मंरुलजीके बाहर करदेवे,  
पूर्वोक्त मंत्रसे मंत्रके मौली तथा मेढल मरोमाफली चारुं तरफ  
बाधे (पीठै) केसरकी कटोरी हाथमें लेके ॥ उँ आँ ह्री श्री अर्हतेनमः ॥  
इस मंत्रसे मंत्रके मंरुलके ऊपर केसरका ठीटा देवे ( ऊपर ) चा  
बलोंको साश्रियो करै, टीकीदेवे, मंरुलके अगामी साश्रिया चाव  
लोंका वा नंद्यावर्त्त करके नाखेर रुपिया ऊपर जेट धरै, ( पीठै )  
केशरचदन लेकर मंरुलजीके चारों तरफ तीन रेखा आलेखन क  
रै ॥ (पीठै) वासकेप प्रुप हाथमें लेके ॥ उँ जगतीज्जतवात्रीविश्वा



धारौनम ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मन्त्रजूमि तथा पीठकी पूजा करै, फेर आचार्यगुरु वासुदेव हाथमें लेके ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्ध स्पीठायनम ॥ इस मंत्रसे सात बेर मंत्रके मन्त्रपीठकी पूजा करे (पीठै) स्नात्रिया हाथमें पुष्प चावल ले लेके तीन बेर मन्त्रकों वधावे नीचे चावलोंका साधिया करके रुपिया नालेर थापना कों धरे ( पीठै ) स्नात्रिया मंदरके जीतरसे प्रतिमाजी लायके त्रिगनेके सिंहासन पर मंत्र पढके थापन करै. (स्थापनमंत्र) ॥ ॐ नमो अर्द्धत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग्गुमरी परिपूजिताय चतुपटिसुरासुरेण्डसेविताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्रपीठेति षष्ठं स्वाहा. ॥ इस मंत्रको ७ बेर पढके नव प्रतिमा वा एक प्रतिमा स्थापन करै इस तरे मन्त्रप्रतिष्ठा करके पीठै सिद्धचक्रपूजा सरू करै ॥

॥ अथ सिद्धचक्र पूजा ॥

॥ प्रथम एक रकेबीमें सपेद गोटा, सपेद वस्त्र, सपेद धजा, ८ कर्कतनरत्न, ३४ हीरा, पुष्प अकृत फल नैवद्य दीप धूप हाथमें ले के अरिहंतपदकी पूजा पढै ( यथा ) अथाष्टदलमध्याब्ज कर्णिकायाजिनेश्वरान् आविर्भूतोद्धसद्बोधा नात्रत.स्थापयाम्यहं ॥ ॥ १ ॥ नि शेषदोषेघनधूमकेतुः नपारसंसारसमुद्रसेतुन् यजैसमस्तातिशयैरुहेतून् श्रीमज्जिनानावुजकर्णिकाया ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धप्रयोनम स्वाहा (इस मंत्रकूं बोलके अर्द्धत्पदकी पुजा करै. अपने २ जगे सर्व द्रव्य चढावै पीठै रकेबीमें लालगोटा, लालधजा लालवस्त्र, ८ माणकरत्न, ३१ मूंगा, अष्ट द्रव्य लेके सिद्धपूजा पढै (यथा) तस्यपुर्वदले सिद्धानसम्यक्तादिगुणात्मकान् नि श्रेयसंपदंप्राप्तान् निदधेन्नक्तिनिर्जर ॥ ३ ॥ तत्पूर्वपत्रेयतित प्रणष्ट जुष्टाष्टकर्माधिगम्यशुद्धि प्राप्तान्नरान्सिद्धिमनंतबोधान् सिद्धान्पजेशातिकरान्नराणा ॥४॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेच्योनम स्वाहा (पूर्व दिसकी तरफ सिद्धपदकी

पूजा करै. सर्व द्रव्य चढावै इति ॥ (पीठै) रकेत्रीमें पीला गोटा,  
पीली धजा, पीलावस्त्र, ५ गोमेदकरत्न, ३६ सोनेकाफूल, जलादि  
सर्व द्रव्य ले के पूजा पढै ( यथा ) स्थापयामितत.सूरीन् दक्षिण  
स्मिन्इलेमले चरत'पंचधाधारान् पटत्रिसत्युणैर्युतान् ॥ ५ ॥ सू-  
रीसदाचारविचारसारा नाचारयंत. स्वपरान्यथेष्टं उग्रोपसर्गैकानवा-  
रणार्थं मन्त्र्यर्चयाम्यकृतगंधधूपै.॥६॥ ॐ ह्रीं श्रीं सूरीज्योनमःस्वा-  
हा (दक्षिणदिसकी तरफ आचार्य थापना पूजा करै इति ॥ पीठै)  
हरागोटा, हरीधजा, हरवस्त्र, मूंगकालरु, ४ इंद्रनील, २५ मरकतप-  
न्ना, सर्व द्रव्य लेके खना रहे. उपाध्याय पद पूजा पढे ( यथा )  
छादशागश्रुताधारान् शास्त्राध्ययनतत्परान् निवेशयाम्युपाध्यायान्  
पवित्रेष्विमेदले ॥ ७ ॥ श्रीधर्मशास्त्राप्यनिज्ञप्रज्ञात्सै पठंतियेन्या-  
न्यपिपाठयंति अध्यापकस्तानपरापञ्जपत्रै स्थितान्पवित्रान्परिपूज-  
यामि ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्योनमः स्वाहा ( पश्चिमदि-  
शाकी तरफ उपाध्यायपदकी थापना पूजा करै इति ॥ पीठै )  
स्यामगोटा, स्यामवस्त्र, स्यामधजा, उरुढकालरु, ५ राजपट्ट, २७  
अरिष्टरत्न, जलादि सर्व द्रव्य ले के साधूपदकी पूजा पढै ( यथा )  
व्याख्यादिकर्मकुर्वाणान् शुद्ध्यानैकमानसान् उदकपत्रगतान्वारान्  
साधुवासीससुव्रतान् ॥ ९ ॥ वैराग्यमतर्हचसिप्रसिद्धं सत्यंतपोद्वा-  
दशयाशरीरे येषामुदक्यवगतान्सुकृतान्पवित्रान् साधून्सदात्तान्प-  
रिपूजयामि ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सर्वसाधुज्योनमः स्वाहा ॥ ५ ॥  
( उत्तरदिसाकी तरफ साधूपदकी थापना पूजा करै इति ॥  
पीठै ) सपेदगोटा, सपेदधजा, सपेदवस्त्र, ६७ मोती, सर्व ड्रव्य  
हाथमे ले के खना रहे काव्य पढै ( यथा ) जिनेंज्ञोक्तमनश्रद्धा, ल-  
क्षणेदर्शनेयजे ॥ मिथ्यात्वमथनशुद्ध, न्यस्तमीशानसद्वले ॥ ११ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं . . . ( ईशानकृष्णमें दर्शनपदकी

थापनापूजा करै इति ॥ पीठै ) ५१ मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा,  
 श्वेतवस्त्र, चावलोकालक्षु, आदि सर्व द्रव्य ले खन्ना रहै ॥ काव्य  
 पढै ( यथा ) मशेषद्रव्यपर्याय, रूपमेवावज्ञासकं ॥ ज्ञानमाश्रयप  
 त्रस्थ पूजयामिहितावहं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्ज्ञानायनमः  
 स्वाहा ॥ ७ ॥ ( अग्निकूणकी तरफ ज्ञानपदकी थापना पूजा करै ॥  
 इति ॥ ) फेर ) रकेवीमे ७० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा, श्वे  
 तवस्त्रादि सर्व द्रव्य ले के खन्ना रहे. काव्य पढै ( यथा ) सामाधि  
 कादिजिज्ञेदै, आरित्रचारुपचघा ॥ संस्थापयामिपूजार्थ, पत्रैदनेरु  
 तेकमात् ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं श्री सम्यग्चारित्रायनम. स्वाहा ( नैरु  
 तकूणकी तरफ चारित्रपदकी थापना पूजा करै इति ॥ ८ ॥ )  
 पीठै ) रकेवीमे ५० मोती, श्वेतगोटा, श्वेतधजा वस्त्रादि सर्व  
 द्रव्य लेके काव्य पढै ( यथा ) द्विधाद्वादशधाजिज्ञे, पूतेपत्रतपस्व  
 यं ॥ निधाययामिज्जक्तघात्र, वायव्यादिशिशर्मदं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं  
 श्री सम्यग्तपसेनम स्वाहा ( वायव्यकूणकी तरफ तपपदकी था  
 पनापूजा करै इति ॥ अथग्रथं ) नि स्वैदत्वादिदिव्यातिशयम  
 यतनन्श्रीजिनेद्वान्सुसिष्ठान्, सम्यक्तादिप्ररुष्टाष्टकगुणनृदाचार  
 साराश्वसूरीन् ॥ शास्त्राणिप्राणिरहाप्रवचनरचनासुदराण्यादिसङ्ग,  
 स्तत्सिद्धयेपाठकानायतिपतिसहिता नर्चयाम्यर्घदानै ॥ १५ ॥ इत्यं  
 अष्टदलंपद्म, पूरयेदर्ददादिजि ॥ स्वाहातैप्रणवाद्यश्च, पदैर्विघ्ननिवृत्त  
 ये ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्री अर्ह असिआउता सम्यग्दर्शन ज्ञान चा  
 रित्र तपसेभ्यो ह्रीं श्री अर्ह परमेष्ठिन परमनाथ परमदेवाधिदेव  
 परमार्हन् परमानतचतुष्टय परमात्मनेतुभ्यंनम ( इति मूलामंत्र )  
 इति सिद्धचक्र प्रथम बलय पूजा ॥

॥ अथ द्वितीय बलय पूजा ॥

पहिले बलयमे एक तो बीचमें च्यार-दिशिमें च्यार विदि

सामे एमै अटदल कमलके आकार नव कोठे मंगलके मध्य जाग  
 में होय उनोकी पूर्वोक्त प्रकार पूजा करावै ( पीठे ) दूसरे बलयमें  
 धूम्रके आकार १६ कोठा होय ( जितमें ) एकेरु कोठाके अनं  
 तर आठ कोठोमें अर्वादि आठ वर्ग स्थापन करे ( थोर ) एकेरु  
 कोठा बीचमें खाली रद्दा दे उत्तमें अनाहतपद उँ ह्रीं एमो अरि  
 हंताणं ) एसा पद स्थापन करे ( पीठे ) एक रकेवीमें मिश्री ल-  
 वंग ( तथा ) एक रकेवीमें मोटी दाखा ले के खना रहे अनाहन  
 पदमें मिश्री लवंग चढावै थोर आठ वर्गमें दाखा चढावै ( यथा )  
 ( उँ ह्रीं एमो अरिहंताणं ) मिश्री लोंग चढाणा ॥ अ आ इ ई  
 उ ऊ ऋ ॠ नृ नृ ए ऐ उँ औं अं अ. ( उँ ह्रीं स्वरवर्गायनमः )  
 ( इहां ) १६ दाख चढावै ७ ( उँ ह्रीं एमोअरिहंताणं ) मिश्री  
 लोंग ३ क ख ग घ ङ ( उँ ह्रीं व्यंजनकवर्गायनमः ) १६ दाख  
 चढावै ४ ( उँ ह्रीं एमोअरिहंताणं ) ५ च ठ ज ङ ञ ( उँ ह्रीं  
 चवर्गायनमः ॥ ६ ( उँ ह्रीं एमोअरिहंताणं ) ७ ट ठ ढ ण  
 ( उँ ह्रीं टवर्गायनमः ) ८ ( उँ ह्रीं एमोअरिहंताणं ) ९ त थ द  
 ध न ( उँ ह्रीं तवर्गायनमः ) १० ( उँ ह्रीं एमोअरिहंताणं ) ११  
 पं फ वं ज म ( उँ ह्रीं पवर्गायनमः ) १२ ( उँ ह्रीं एमोअरिहंता  
 णं ) १३ य र ल व ( उँ ह्रीं यवर्गायनमः ) १४ ( उँ ह्रीं एमो  
 अरिहंताणं ) १५ श ष स ह ( उँ ह्रीं शवर्गायनमः ) १६ पहिले  
 अ वर्गसे प वर्ग तक वर्ग प्रति सोलैश दाख चढावै सब ए६  
 ( उँ ह्रीं य र ल व १ श ष स ह २ इण दो वर्गोंमें ६४ चोसठ  
 दाख चढावै इति ॥ दूसरा बलय पूजा ॥ २ ॥

॥ ( अथ तीसरा बलयमें ) चार दिश चार विदिशिमें आठ  
 परमेष्टिपद स्थापन निमित्त आठ कोठा करै इस आठ कोठाके  
 बीचमें बलाका तीन २ देवे तीनुं बलाकामे २४ खाना होय एके

क खानेमें २ दोय २ दोय लब्धिपद स्थापन करणसें चोवीस घरों में ४८ लब्धिपद होय स्थापन कर पूजन करणा ॥

॥ अथ लब्धिपद पूजनविधि ॥

आठ परमेष्ठीपदमें ( ॐ ह्रीं परमेष्ठिनेनमः स्वाहा ) एसा ८ वेर कहेके ८ बीजोरा चढावे, नर लब्धिपदका नाम बोलेके खारका ४८ चढावे ( यथा ) ॐ ह्रीं अर्हणमोजिणाणं ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोन्नहिजिणाणं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपरमोहिजिणाणं ॥ ३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसबोहिजिणाणं ॥ ४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअणंतोहिजिणाणं ॥ ५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोकुब्बुदीणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोवायवुदीणं ॥ ७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपयाणुमारीणं ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोआसीविसाणं ॥ ९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोदिठिविसाणं ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसंजिन्नसोयाणं ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसयसवुद्धाणं ॥ १२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपत्तेयवुद्धाणं ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोबोहिवुदीणं ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोउज्जुमईणं ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोविन्नलमईणं ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोदसपूवीणं ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोचउदसपूवीणं ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअग्निमत्तकुसलाणं ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोविन्नवणइष्टिपत्ताणं ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोविक्कादराणं ॥ २१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोचारणलक्षीणं ॥ २२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोपप्पासमणाणं ॥ २३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोआगासगामीणं ॥ २४ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोखीरासवेणं ॥ २५ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसपियासवाणं ॥ २६ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोमदुआसवाणं ॥ २७ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअमियासवाणं ॥ २८ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोसिद्धायणाणं ॥ २९ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअयवयामहाइमहावीरवदमाणबुद्धरितीणं ॥ ३० ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअगातवाणं ॥ ३१ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोअस्कीणमहाणसियाणं ॥ ३२ ॥ ॐ ह्रीं अर्हणमोवदुमाणाणं ॥ ३३ ॥ ॐ ह्रीं अर्हण

मोदिततवाणं ॥ ३४ ॥ ॐ॒ह्रींअर्हणमोतत्तवाणं ॥ ३५ ॥ ॐ॒ह्रींअ  
 र्हणमोमहातवाणं ॥ ३६ ॥ ॐ॒ह्रींअर्हणमोघोरतवाणं ॥ ३७ ॥ ॐ  
 ॒ह्रींअर्हणमोगोरगुणाणं ॥ ३८ ॥ ॐ॒ह्रींअर्हणमोघोरपरिक्रमाणं ॥ ३९ ॥  
 ॐ॒ह्रींअर्हणमोघोरवंजयारीण ॥ ४० ॥ ॐ॒ह्रींअर्हणमोआमोसहि  
 पत्ताणं ॥ ४१ ॥ ॐ॒ह्रींअर्हणमोखेलोसहिपत्ताणं ॥ ४२ ॥ ॐ॒ह्रींअ  
 र्हणमोजल्लोसहिपत्ताणं ॥ ४३ ॥ ॐ॒ह्रींअर्हणमोविष्णोसहिपत्ताणं ॥  
 ॥ ४४ ॥ ॐ॒ह्रींअर्हणमोसद्योसहिपत्ताणं ॥ ४५ ॥ ॐ॒ह्रींअर्हणमोम  
 णवलीणं ॥ ४६ ॥ ॐ॒ह्रींअर्हणमोषमणवलीणं ॥ ४७ ॥ ॐ॒ह्रींअर्ह  
 णमोकायवलीणं ॥ ४८ ॥ ॐ॒ह्रींअर्हअमयाललब्धिपेदञ्च्योनमः ॥ इत  
 तरे लब्धिपदका नाम षोडशके तीजे चोथे पाचमें वलयमें ४८ खारका  
 चढावै ॥ ( पीठे ) मंरुलजीके गलेमें ॒ह्रींकारजी स्थापन किया हे  
 ( जडांते ) साढातीन नवलाका मंरुलजीके चोतरफ देके नीचे  
 ( नों ) एता अकर लिखा हे ( जिसके ) प्रथम वलयमें आठे दि-  
 शायें आठ गुरुपादका स्थापन करके ८ आठ दार्मिकफल चढाव  
 ( यथा ) ॐ॒ह्रींअर्हत्पाडुकाञ्च्योनमः ॥ १ ॥ अनारचढावै ॥ ॐ॒ह्रींसि  
 द्वपाडुकाञ्च्योनम ॥ २ ॥ ॐ॒ह्रींआचार्यपाडुकाञ्च्योनम. ॥ ३ ॥ ॐ  
 ॒ह्रींगुरुपाडुकाञ्च्योनम. ॥ ४ ॥ ॐ॒ह्रींपरमगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥  
 ॥ ५ ॥ ॐ॒ह्रींप्रदृष्टगुरुपाडुकाञ्च्योनमः ॥ ६ ॥ ॐ॒ह्रींअनंतगुरुपाडु  
 काञ्च्योनम ॥ ७ ॥ ॐ॒ह्रींअनंतानंतगुरुपाडुकाञ्च्योनम. ॥ ८ ॥ ॐ  
 ॒ह्रींअष्टगुरुपाडुकाञ्च्योनम. स्वाहा ॥ इत तरे ठठे वलयमें ८ द्वा  
 रुम चढावै ( पीठे ) सातमा वलयमें आठों दिसामें जयादिक ८  
 देवीको स्थापन करके ८ नारंगी चढावै ( यथा ) ॐ॒ह्रींजयायैनमः  
 स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ॒ह्रींजंजायैनम. स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ॒ह्रींविजयायैनमः  
 स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ॒ह्रींथजायैनम. स्वाहा ॥ ४ ॥ ॐ॒ह्रींजयंत्यैनमः  
 स्वाहा ॥ ५ ॥ ॐ॒ह्रींमोहायैनमः स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ॒ह्रींअपराजिता

धैर्यम स्वाहा ॥ ७ ॥ उँन्हीअंधाधैर्यम स्वाहा ॥ ८ ॥ ( इमी  
 तरे ) सातमें वलयमें ८ नारंगी चढावै ( पीठे ) आठमें वलयमें  
 १६ विद्यादेवीयोकी स्थापना करके चाद्रीके वर्ग लपेटी १६ सुपा  
 री चढावै ( यथा ) उँन्हीरोहण्यैर्यम ॥ १ ॥ उँन्हीप्रज्ञतेर्यमः ॥ २ ॥  
 उँन्हीवज्रश्रुखलायैर्यम ॥ ३ ॥ उँन्हीवज्रांकुशायैर्यमः ॥ ४ ॥ उँ  
 न्हीचक्रेश्वर्यैर्यम. ॥ ५ ॥ उँन्हीपुरुषद्रुतायैर्यम. ॥ ६ ॥ उँन्ही  
 काट्यैर्यम. ॥ ७ ॥ उँन्हीमाहाकाट्यैर्यम ॥ ८ ॥ उँन्ही  
 गौर्यैर्यम. ॥ ९ ॥ उँन्हीगंधार्यैर्यम. ॥ १० ॥ उँन्हीसर्वास्त्र  
 महाज्वाल्यैर्यमः ॥ ११ ॥ उँन्हीसान्धैर्यमः ॥ १२ ॥  
 उँन्हीविरोध्यायैर्यम. ॥ १३ ॥ उँन्हीअनुतायैर्यमः ॥ १४ ॥ उँन्ही  
 ध्यानस्यैर्यम ॥ १५ ॥ उँन्हीमाहामानस्यैर्यमः ॥ १६ ॥ इत तरे  
 आठमा वलयकी बोलके बरक समेत सुपारी चढा के पूजा करै पी  
 ठे नवमें वलयके वार्ये तरफ शास्त्रदेवीया ॥ १४ की थापना  
 कर पूजा करै ॥ १४ पूंगीफल चढावै ( यथा ) उँचक्रेश्वर्यैर्यम ॥ १ ॥  
 उँअजितवलयैर्यमः ॥ २ ॥ उँडुरितायैर्यमः ॥ ३ ॥ उँकाट्यैर्यम-  
 ॥ ४ ॥ उँमहाकाट्यैर्यम ॥ ५ ॥ उँश्यामायैर्यम. ॥ ६ ॥ उँशांतायैर्यमः  
 ॥ ७ ॥ उँनृकुट्टियैर्यमः ॥ ८ ॥ उँसुतारकायैर्यम ॥ ९ ॥ उँअशोकायैर्यम.  
 ॥ १० ॥ उँमानव्यैर्यम. ॥ ११ ॥ उँचंद्रायैर्यमः ॥ १२ ॥ उँविदि  
 तायैर्यम. ॥ १३ ॥ उँअकुशायैर्यम ॥ १४ ॥ उँकदप्पाययिनमः  
 ॥ १५ ॥ उँमिर्वाण्यैर्यम ॥ १६ ॥ उँवलायैर्यम. ॥ १७ ॥ उँधार  
 ण्यैर्यम ॥ १८ ॥ उँवरणप्रियायैर्यम. ॥ १९ ॥ उँनरदत्तायैर्यम.  
 ॥ २० ॥ उँगागौर्यैर्यम. ॥ २१ ॥ उँअंत्रिकायैर्यम ॥ २२ ॥ पद्माव  
 त्यैर्यमः ॥ २३ ॥ उँसिद्धायिकायैर्यम ॥ २४ ॥ इति ॥ दहिणे त  
 रफ २४ यद्वाराजकी स्थापना करै बरकलपेटी २४ सुपारी चढावै ॥  
 ( यथा ) उँवलायैर्यम. ॥ १७ ॥ उँगार्थायैर्यम ॥ २१ ॥ उँगो

मेधायनमः ॥ २२ ॥ उँनृकुट्यै नमः ॥ २१ ॥ उँरुणायनमः ॥  
 २० ॥ उँकुवेरायनमः ॥ १९ ॥ उँयकराजायनमः ॥ १८ ॥ उँगंध  
 र्वायनमः ॥ १७ ॥ उँगरुणायनमः ॥ १६ ॥ उँकिन्नरायनमः ॥ १५ ॥  
 उँपातालायनमः ॥ १४ ॥ उँपण्मुखायनमः ॥ १३ ॥ उँकुमाराय  
 नमः ॥ १२ ॥ उँयकराजायनमः ॥ ११ ॥ ब्रह्मणेनमः ॥ १० ॥  
 उँअजितायनमः ॥ ९ ॥ उँविजयायै नमः ॥ ८ ॥ उँसातंगायनमः  
 ॥ ७ ॥ उँकुसुमायनमः ॥ ६ ॥ उँतुवुर्यै नमः ॥ ५ ॥ उँयकनाप  
 कायनमः ॥ ४ ॥ उँत्रिमुखायनमः ॥ ३ ॥ उँमहायज्ञायनमः ॥ २ ॥  
 उँगोमुखायनमः ॥ १ ॥ इति ॥ पीठे चार दिशामें ४ ठारपालकी  
 स्थापना कर के पीला बलवाकुल चढावे ( यथा ) उँकुमुदायनमः  
 ॥ १ ॥ पूर्वदिशि ॥ उँअंजनायनमः ॥ २ ॥ दक्षिणदिशि ॥ उँवामनाय  
 नमः ॥ ३ ॥ पश्चिमदिशि ॥ उँपुष्पदंतायनमः ॥ ४ ॥ उत्तरदिशि ॥  
 पीठे चार विदिसकी तरफ च्यार वीरपदमें काले बलवाकुल चढावे  
 ( यथा ) उँमाणज्ञायनमः ॥ १ ॥ उँपूर्णज्ञायनमः ॥ २ ॥ उँक  
 पिलायनमः ॥ ३ ॥ उँपिगलायनमः ॥ ४ ॥ ( इस तरे दसमें बल  
 यमें श्रावु दिशामें ४ ठारपाल ४ वीर स्थापन करै पीठे पूर्ण कल  
 सके श्राकार कपरसें कियाज्ञया सिद्धकजीके गलेके ठिकाणे ठि  
 काणे नवनिधान पढ़ै, तब सोने चाद्दीके कलसादिकोमें यथाशक्ति  
 शोकनाणा मालके स्थापन करै ) ( यथा ) उँनैसर्पकायनमः ॥ १  
 ॥ उँपांडुकायनमः ॥ २ ॥ उँपिगलायनमः ॥ ३ ॥ उँसर्वरत्नायनमः  
 ॥ ४ ॥ उँमहापद्मायनमः ॥ ५ ॥ उँकालायनमः ॥ ६ ॥ उँमहा  
 कालायनमः ॥ ७ ॥ उँमाणवायनमः ॥ ८ ॥ उँशखायनमः ॥  
 ९ ॥ ( इस तरे मुखस्थानकपदे ९ कलस स्थापन करै ॥ पीठे  
 कोहलेका फल हाथमें ले के दक्षिणनेत्रके बराबर पासमें बंगली  
 का श्राकार किया दे ( जहा ) उँन्दोविमलस्वामिनेनमः १ ॥ एसा



कहके चढ़ावै ॥ फेर कोइलाफल हाथमें ले के वायेनेत्रके पास बंगलीमें ( उँक्केत्रपालायनम. ) एसा बोलके चढ़ावै २ ॥ पीठै तीसरा कोइलाफल ) हाथमें ले के नीचे पीँडिके दक्षिणे तरफ बंगलीमें ) उँचक्रेश्वर्येनम ( एसा बोलके चढ़ावै ॥ ३ ॥ ( पीठै ) चौथा कोइलाफल हाथमें ले के नीचे पीँडेके बाँये तरफ बंगलीमें ( उँअप्रसिद्धसिद्धचक्राधिष्टायकायनम ) एसा बोलके चढ़ावै ॥ ४ ॥ (पीठै दसूँ दिशामें इँझादिक दत्त दिग्पालकी स्थापन करै बरासकेतो अण्णा २ वर्ष मुजब वस्त्र नैवद्य पुष्पादि इँव्य चढ़ावै अथवा सर्वकों एक इँव्य सर्व समान चढ़ावै ( यथा ) उँइँझायनम ॥ १ ॥ कनक वर्ण चदन केसर चपो द्राख पीलावस्त्र पान सुपारी रोकइँव्य आदि सर्व इँव्य चढ़ावै १ ॥ ( अश्लिकूणे ) उँअग्नयेनमः ॥ २ ॥ रक्तवर्ण का वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ २ ॥ ( दक्षिणदिसि ) उँयमायनमः ॥ ३ ॥ काले वर्णका वस्त्रादि इँव्य चढ़ावे ॥ ३ ॥ ( नैरुतकूणे ) उँनैरुतायनमः ॥ ४ ॥ धूसरवर्णका वस्त्रादिक इँव्य चढ़ावै ( पश्चिमदिश ) उँवरुणायनमः ॥ धूसरवर्णका सर्व इँव्य चढ़ावै ५ ( वायव्यकूण ) उँवायवेनम ॥ ६ ॥ नीलवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ ६ ॥ ( उत्तरदिसि ) उँकुवेरायनमः ॥ ७ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इँव्य चढ़ावै ॥ ७ ॥ ( ईशानकूण ) उँइँशानायनमः ॥ ८ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इँव्य चढ़ावै ॥ ८ ॥ ( अघोदिसि ) उँनागायनम. ॥ ९ ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादिक इँव्य चढ़ावै ॥ ९ ॥ ( उँर्ददिशि ) उँब्रह्मणेनम ॥ १० ॥ सपेदवर्णका वस्त्रादि सर्व द्रव्य चढ़ावै ॥ १० ॥ इस तरे दत्त दिग्पालका- स्थापन पूजन करै ॥ ( पीठै यंत्रके पीदीके स्थानक नव कोठा किया जया दे जहां नवग्रहकी स्थापन पूजन करै (यथा) उँसूर्यायनमः लालवर्णका वस्त्रादिक द्रव्य चढ़ावै ॥ १ ॥ उँसोमायनम ॥ २ ॥

सपेदवर्णवस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ २ ॥ उँन्नोमायनमः ॥ ३ ॥ लो  
 लरंगवस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ३ ॥ उँयुधायनमः ॥ ४ ॥ मूंगरग  
 का वस्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ४ ॥ उँवृंहस्पतयेनमः ॥ ५ ॥ पीलेवर्ण  
 वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ५ ॥ उँशुक्रायममः ॥ ६ ॥ सपेदवर्णनंदोल  
 वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ६ ॥ उँशनेश्वरायनमः ॥ ७ ॥ नीलेरग  
 का वस्त्रादिक द्रव्य चढावै ॥ ७ ॥ उँराहवेनमः ॥ ८ ॥ कालेरग  
 का वस्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ८ ॥ उँकेतवेनमः ॥ ९ ॥ उँटरंग व  
 स्त्रादि द्रव्य चढावै ॥ ९ ॥ इस तरे नीचै नवग्रहकी स्थापनपूजा  
 करै. पीठै स्नात्र नवपदजीवी पूजा पढावै चैत्यवंदन कर शुद्ध क  
 इकर नवपद स्तवन कहे ॥ पीठै गुरु पास आकर ज्ञानपूजा कर  
 वासकूप लेवे ॥ गुरुपूजा वस्त्रपात्रसें करै पीठै यथाशक्ति साथ  
 भी वास्तव्य करै ॥ इति मंजुल पूजनविधि ॥ जाणना चाहिधे  
 ( जब ) कोइ श्रीमंत उँलीकी तपस्या करै तब तो उँए महीने मं  
 रुल पूजा विस्तार विधीसे करता रहै ॥ ४ ॥ वरसे तप पूरण  
 जये वाइ उँछव के साथ मंजुलपूजा कराके नवर उपगणोसे उ  
 द्यापन करै जलजात्रादि अष्टाईमहोछव कर धर्मशालासिणगारै  
 ( फेर ) देवका देवखाते, ज्ञानका ज्ञानखाते, गुरुका गुरुखाते च  
 ढावै, इदिरहित जावसें यथाशक्ति रोकद्रव्य चढावै ( उँर ) पचा  
 यती संघकी तरफसें मंगलीकके वास्ते मंजुलपूजादिक नवपदपूजा  
 अवश्य विधिसंयुक्त करता रहै ॥ इतिउद्यापनविधि ॥

॥ अथ सर्व तपस्याविधि लिख्यते ॥

॥ अथ सत्तर सो को गुणनो लिख्यते ॥

॥ अथ जबूद्धीपमें प्रथम महाविदेहे जिननामकी प्रथम पंक्ती ॥ १ ॥

जयदेवस्वामीसर्वज्ञायनमः ॥ १ ॥ करणज्जस्वामीसर्वज्ञाय  
 नमः ॥ २ ॥ श्रीलक्ष्मीनाथसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीअनतनाथसर्वज्ञा

धनमः ॥ ४ ॥ श्रीगंगाधरसर्वज्ञायनमः ॥ ५ ॥ श्रीविशालचंद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ ६ ॥ प्रियंकरनाथसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ अमारिदत्तसर्वज्ञा० ॥  
 ॥ ८ ॥ श्रीरुष्णनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीगुणगुप्तसर्वज्ञा० ॥ १० ॥  
 श्रीपद्मनाभसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीजलंधरस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥  
 श्रीयुगादित्यसर्वज्ञायनम ॥ १३ ॥ श्रीधरदत्तसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥  
 श्रीचङ्केतुसर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ श्रीमहाकायसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्री  
 अमरकेतुसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीअरण्यवाससर्वज्ञायनम. ॥ १८ ॥  
 श्रीहरिहरसर्वज्ञायनम. ॥ १९ ॥ स्तमैन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ २० ॥  
 श्रीशातिरुतसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ अनंतकृतसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ गजेंद्र  
 प्रज्ञसर्वज्ञाय० ॥ २३ ॥ सागरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ महेश्वरदत्त  
 सर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ लक्ष्मीचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ रूपज्ञनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २७ ॥ सोमकातसर्वज्ञाय० ॥ २८ ॥ नेमिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥  
 अजितचंद्रसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ महीधरसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीराजे  
 श्वरसर्वज्ञायनम. ॥ ३२ ॥

॥ अथ घातकीखंडे प्रथम महाविदेहे जिननामानि ॥ २ पत्ती ॥

वीरचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ वञ्छसेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ नीलकांति  
 सर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ पूजकेसीसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ रुग्मिकसर्वज्ञायनम ॥  
 ॥ ५ ॥ खेमकरसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ मृगांकनाथसर्व० ॥ ७ ॥ मुनिमू  
 र्तिसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ विमलनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ आगमिकसर्वज्ञा०  
 ॥ १० ॥ डुक्तितनाथसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ वसुधाधिपसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥  
 महल्लनाथसर्वज्ञाय० ॥ १३ ॥ वनदेवसर्वज्ञाय० ॥ १४ ॥ चवंमृत  
 सर्वज्ञाय० ॥ १५ ॥ अमृतवाहनसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ पूर्णमेद्रसर्व  
 ज्ञाय० ॥ १७ ॥ श्रीरेवातिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीकटपशाकसर्वज्ञा०  
 ॥ १९ ॥ श्रीनलनीदत्तसर्वज्ञा ॥ २० ॥ श्रीविद्यापतिसर्वज्ञा ॥ ०  
 २१ ॥ श्रीसुपार्श्वनाथसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीज्ञानुनाथसर्वज्ञाय०

॥ २३ ॥ श्रीप्रज्ञजलसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीविशिष्टसर्वज्ञा० २५ ॥  
श्रीजलप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ २७ ॥  
श्रीरूपिपालसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीकुर्मंगदत्तसर्व० ॥ २९ ॥ श्री  
चन्द्रधरसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीनूतानंदसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीती  
र्थेश्वरसर्वज्ञायनमः ॥ ३२ ॥

॥ ओली ३ षातकीखटे महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ धरमदत्तसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीनूमिपतीसर्वज्ञा० ॥ २ ॥

श्रीमरुदत्तसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्रीसुमित्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीपेग

नाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीप्रज्ञानदसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीपद्माकरसर्व

ज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीमहायोपसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीचंद्रप्रज्ञनाथसर्वज्ञा०

॥ ९ ॥ श्रीनूमिपालसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीसुमतिपेणसर्वज्ञा० ॥ ११

॥ अतिच्युतसर्वज्ञाय० ॥ १२ ॥ श्रीखलिनागसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥

श्रीतीर्थनूतिसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअरचंडसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसमा

धिसर्वज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीमुनिचंद्रसर्वज्ञायनमः ॥ १७ ॥ श्रीमहेंद्रनाथ

सर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीशशाकनाथसर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीजगदीश्वर

सर्व० ॥ २० ॥ श्रीवेद्वेदनाथसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीगुणनाथसर्वज्ञा०

॥ २२ ॥ श्रीनयोतनाथसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीनारायणनाथसर्वज्ञा०

॥ २४ ॥ श्रीकपिणनाथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीप्रज्ञाकरसर्वज्ञा० ॥

२६ ॥ श्रीजिनदीक्षितसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीसरुलनाथसर्वज्ञा० ॥

॥ २८ ॥ श्रीशिलारनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीवज्रधरसर्वज्ञा० ॥

॥ ३० ॥ श्रीसहस्राज्ञसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीअशोकनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ४ पुष्करार्द्रप्रथममहाविदेहे जिननामानि ॥

॥ श्रीमेषवाहनसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ श्रीजाविरूपिभूतसर्वज्ञा० ॥

॥ २ ॥ श्रीमहापुरुषसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ श्री पापहरसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥

श्रीमृगाकनाथसर्वज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीसूरसिंहसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीज

गत्पूज्यसर्वज्ञा० ॥ ७ ॥ श्रीसुमतिनाथसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहाभ

हेन्द्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ए ॥ श्रीअमरभूतिसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीकुमार  
 चंद्रसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीवीरपेणसर्वज्ञायनम ॥ १२ ॥ श्रीरमणनाथ  
 सर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीस्वयंप्रज्ञसर्वज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीअचलभद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीअमरकेतुसर्व० ॥ १६ ॥ श्रीसिद्धार्थसर्वज्ञाय०  
 ॥ १७ ॥ श्रीसफलस्वामिसर्वज्ञा० ॥ १८ ॥ श्रीविजयदेवसर्वज्ञाय  
 नमः ॥ १९ ॥ श्रीनरसिंहसर्वज्ञाय० २० ॥ श्रीशीतानदसर्वज्ञाय०  
 ॥ २१ ॥ श्रीचंद्रारिकसर्वज्ञा० ॥ २२ ॥ श्रीचक्रातपसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥  
 श्रीचंद्रगुप्तसर्वज्ञा० ॥ २४ ॥ श्रीदृढरथसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीमहा  
 यशसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥ श्रीउमोकनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीप्रद्युम्नना  
 थसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ श्रीमहातेजसर्वज्ञायनम ॥ २९ ॥ श्रीपुष्पकेतु  
 सर्वज्ञायनम ॥ ३० ॥ श्रीकामदेवसर्वज्ञा० ॥ ३१ ॥ श्रीसमतकेतुस  
 र्वज्ञायनम ॥ ३२ ॥

॥ ओली ५ ॥ पुष्करार्द्ध द्वितिये महाविदेहे जिननामानि ॥

॥ प्रसन्नचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १ ॥ महासेनसर्वज्ञा० ॥ २ ॥ वज्र  
 नाभसर्वज्ञा० ॥ ३ ॥ सुवर्णबाहुसर्वज्ञा० ॥ ४ ॥ श्रीकूरचंद्रसर्व  
 ज्ञा० ॥ ५ ॥ श्रीवयवीर्यसर्वज्ञा० ॥ ६ ॥ श्रीविमलचंद्रसर्वज्ञा० ॥  
 ७ ॥ श्रीयसोधरसर्वज्ञा० ॥ ८ ॥ श्रीमहावलसर्वज्ञा० ॥ ९ ॥ श्री  
 वज्रसेनसर्वज्ञा० ॥ १० ॥ श्रीविमलबोधसर्वज्ञा० ॥ ११ ॥ श्रीनी  
 मनाथसर्वज्ञा० ॥ १२ ॥ श्रीमेरुभद्रसर्वज्ञा० ॥ १३ ॥ श्रीभद्रगुप्तसर्व  
 ज्ञा० ॥ १४ ॥ श्रीमुद्दसहस्रसर्वज्ञा० ॥ १५ ॥ श्रीसुव्रतनाथसर्व  
 ज्ञा० ॥ १६ ॥ श्रीहरिचंद्रसर्वज्ञा० ॥ १७ ॥ श्रीप्रतिमाधरसर्वज्ञा०  
 ॥ १८ ॥ श्रीअतिश्रेयससर्वज्ञा० ॥ १९ ॥ श्रीकनककेतुसर्वज्ञा० ॥  
 २० ॥ श्रीअजितवीर्यसर्वज्ञा० ॥ २१ ॥ श्रीफलगुप्तनाथसर्वज्ञा०  
 ॥ २२ ॥ श्रीब्रह्मभूतसर्वज्ञा० ॥ २३ ॥ श्रीहितकरसर्वज्ञा० ॥  
 २४ ॥ श्रीवरुणदत्तसर्वज्ञा० ॥ २५ ॥ श्रीयशकीर्तिसर्वज्ञा० ॥ २६ ॥

नागेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ २७ ॥ श्रीमहीधरसर्वज्ञा० ॥ २८ ॥ रुतत्र  
ह्यनाथसर्वज्ञा० ॥ २९ ॥ श्रीमहेंडनाथसर्वज्ञा० ॥ ३० ॥ श्रीवर्द्ध  
मानसर्व० ॥ ३१ ॥ श्रीसुरेंद्रनाथसर्वज्ञा० ॥ ३२ ॥

॥ ओली ६ ॥ पाच भरत पाच एरवत जिननामानि ॥

( जंबुद्वीपेऽनरतक्षेत्रे जिननामानि ) श्रीअजिनाथसर्वज्ञा०  
॥ १ ॥ ( धातकीखंभेप्रथमऋरते० ) सिद्धतनाथसर्वज्ञायनमः ॥२॥  
( धातकीखंभे द्वितीयऋरतेजिननाम ) करणनाथसर्वज्ञायनमः ॥  
॥ ३ ॥ ( पुष्करार्द्धेप्रथमऋरतेजिननाम ) प्रज्ञासनाथसर्वज्ञा० ॥ ४  
॥ ( पुष्करार्द्धेद्वितीयऋरतेजिननाम ) प्रज्ञावकनाथसर्व०॥५॥ ( जं-  
बूद्वीपेएरवतक्षेत्रेजिननाम ) चंद्रनाथसर्वज्ञायनमः ॥ ६ ॥ ( धात  
कीखंभेप्रथमएरवतेजि० ) जयनाथसर्वज्ञायनमः ॥७॥ ( धातकीखंभे  
द्वितीयएरवते ) पुष्पदंतसर्वज्ञायनमः ॥ ८ ॥ ( पुष्करार्द्धेप्रथमएरव  
तेजिनना० ) आत्राहिकसर्वज्ञाय०॥९॥(पुष्करार्द्धेद्वितीयएरवतेजि०)  
श्रीवल्लिऋडनाथसर्वज्ञायनमः ॥ १० ॥ इति सत्तर सय तीर्थंकर तपका  
गुणना संपूर्ण ॥१६ स्यांम, ३० लाल, ३८ नीला, ३६ पीला, ५०  
श्वेत. सर्व सख्या १७० ॥

॥ अथ सत्तर सो जिन को स्तवन लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ स्वस्ति श्री दायक सदा, त्रैसलेय जिनचंद्र ॥ त-  
त्पद नामी कंधरा, कारण सिव सुखकंद ॥१॥ वाइर्थकासरदातणो,  
उर धरि समरण शक्ति ॥ सद्युत्तर सत जिनतणी, रचस्युं नुति सु  
चि ऋक्ति ॥ २ ॥ वे जे द्वीप समस्तने, मध्यमेरु कनकाऋ ॥  
पूर्वापर ऋवि तेहनें, विजय नामको लाऋ ॥ ३ ॥ मूलविजय वसु  
प्रतिदिशा, कग्रनामं युगतीस ॥ शीतोदा तरणीतणो, कारण वि  
श्वावीस ॥ ४ ॥ खंभु धातकी दूसरो, द्वीप मनोहर तेह ॥ कंचन  
गिरि युग वे तिहां, मन धारो धर नेह ॥ ५ ॥ त्रयतम पुष्कर जां

लिये, द्वीप सकल गुणखान ॥ अर्थ ज्ञाग जसु उत्तम, गिरि युग  
 जलद समान ॥ ६ ॥ ज्ञोन्नवि संख्या विजयनी, प्रति मेरो वताम  
 ॥ धारो गणित अनुक्रमे, पष्टयुत्तर शत हीस ॥ ७ ॥ एह अद्ग  
 द्वीपनी, विजयतणो परिमाण ॥ काल चतुर्थ तिहा सदा, ज्ञाप्या  
 श्रीजिनज्ञाण ॥ ८ ॥ जिण तीर्थकर वारके, विचरया जे जिनरा  
 य ॥ ते हूं प्रति विजये ज्ञणूं, आगमसुं चित लाय ॥ ९ ॥ (दाल  
 पारणेकी) ॥ तिण काले ने तिण समे जी, तीर्थकर महाराज ॥ अ  
 जित जिनेसर राजता जी, तारण तरण जिहाज ॥ ज्ञविकजन व  
 रज्यो धर्म सनेह ॥ टेरे ॥ १ ॥ अतिशय चौतील संजुआ जी, वा  
 णी गुण पैतीस ॥ लोकालोक प्रकाशता जी, प्रणमत नर सुर ईस ॥  
 ज्ञ० ॥ २ ॥ एहवा श्रीजिन वारके जी, एकसो साठ जिनंद ॥ वि  
 चरया महियल बोधता जी, विजय मऊार सजंद ॥ ज्ञ० ॥ ३ ॥  
 पंचर जरतैरवतै जी, दशमित श्रीजिनराय ॥ विचरे जगजन ता  
 रता जी, समरया संपति आय ॥ ज्ञ० ॥ ४ ॥ ए सत्तर सो जिन  
 वरू जी, अतुल सकल गुणखान ॥ श्यामवरण सोले कह्या जी,  
 अकल कला द्युतिवांन ॥ ज्ञ० ॥ ५ ॥ रक्ताकृति त्रिशत कह्या जी,  
 नीलवरण वसु तीस ॥ रवि जिम ऊललह ज्ञाथरू जी, कनकवर  
 ण वचीस ॥ ज्ञ० ॥ ६ ॥ रजत मुक्त पय जलकणा जी, सम सित  
 विमल प्रकाश ॥ ज्ञविक चकोर प्रमोदता जी, शशि जिम जिन पञ्चा  
 स ॥ ज्ञ० ॥ ७ ॥ प्रति जिन व्रत उपवासथी जी, वीस प्रमित  
 जपमाल ॥ त्यक्त कपाय शुजातमा जी, धरिये ज्ञाव विशाल ॥  
 ज्ञ० ॥ ८ ॥ इम ए तप पूरण हुया जी, उजमणे निज शक्ति ॥  
 कीजे श्रीजिनशासने जी, संघ सहूनी ज्ञक्ति ॥ ज्ञ० ॥ ९ ॥ ए त  
 पविधि ज्ञवि जे करे जी, प्रेम सहित जिनधर्म ॥ साधन गुण अ  
 नुमोदता जी, ते लहे दिव शिव शर्म ॥ ज्ञ० ॥ १० ॥ कवश ॥

संवत् मूनि सर लोक नारद चंड ज्येष्ठ पशुर ए, वदि सप्तमी रवि  
दिने हितवल्लभ कथनधर चूर ए ॥ गुरु खरतरावर तरणि सन्नि-  
भ जैनचड सनूर ए, ए तवन कीषो जीमगजे श्रमणचंद कपूर ए  
॥ ११ ॥ इति श्रीसत्तर सय जिन स्तवम् ॥

॥ अथ कम्मपयही को गुणनो लिख्यते ॥

॥ ज्ञानावरणीकर्मकी ५ प्ररुती-मतिज्ञानावरणीरहितायथ्री  
सिद्धायनमः १, श्रुतज्ञानावरणीरहितायथ्रीसिद्धायनमः २, अवधि  
ज्ञानावरणीरहितायथ्रीसि० ३, मनपर्यवज्ञानावरणीरहितायथ्रीसि  
द्धा० ४, केवलज्ञानावरणीरहितायसि० ५, ( दर्शनावणकर्मकी नव  
प्ररुती ए )-चक्रुदर्शनावरणरहितायसि० ६, अचक्रुदर्शनावरण  
र० ७, अवधिदर्शनावरणर० ८, केवलदर्शनावरणर० ९, निष्कार्म  
रहितायसि० १०, निद्रानिद्रारहि० ११, प्रचलार० १२, प्रचलाप्रच  
ला० १३, श्रीणद्धी० १४ ॥ ( वेदनीकर्म की प्ररुति २ )-सातावे  
देनीरहितायथ्री० १५, अशातावेदनीरहिताय० १६, ( मोहनी  
कर्म की प्ररुती १८ )-सम्पत्कमोहनीर० १७, मिश्रमोहनीरहिताय  
१८, मिश्र्यात्वमोहनीर० १९, अनंतानुबंधीक्रोधर० २०, अनंतानु  
बंधीमानर० २०, अनंतानुबंधीमायार० २१, अनंतानुबंधिलोचर०  
२३, अप्रत्याख्यानीक्रोधर० २४, अप्रत्याख्यानीमानर० २५, अप्रत्या  
ख्यानीमायार० २६, अप्रत्याख्यानीलोचर० २७, प्रत्याख्यानीक्रो  
धर० २८, प्रत्याख्यानीमानर० २९, प्रत्याख्यानीमायार० ३०,  
प्रत्याख्यानीलोचर० ३१, संज्वलनक्रोधर० ३२, संज्वलमानर०  
३३, संज्वलनमायार० ३४, संज्वलनलोचर० ३५, हास्यमोह  
नीर० ३६, रतिमोहनीर० ३७, अरतिमोहनीर० ३८, जयमोह  
नीर० ३९, सोकमोहनीर० ४०, दुर्गमामोहनीर० ४१, स्त्रीवेदर०  
४२, पुरुषवेदर० ४३, नष्टमक्रेदर० ४४ ॥ ( आयुर्कर्मकी प्ररुती



- ४५ परतीर्थकादि नमस्कार वर्जनरूप सद्व० ॥  
 ४६ परतीर्थकादि आलाप वर्जनरूप सद्व० ॥  
 ४७ परतीर्थकादि सलाप वर्जनरूप स० ॥  
 ४८ परतीर्थकादि असनादि दानवर्जन श्रीस० ॥  
 ४९ परतीर्थकादि गणपुष्पादि प्रेषणवर्जन श्रीस० ॥  
 ५० राजान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद्व० ॥  
 ५१ गणान्नियोगाकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५२ बलान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद्व० ॥  
 ५३ सुरान्नियोगाकारयुक्त श्रीसद्व० ॥  
 ५४ कांतारवृत्याकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५५ गुरुनिग्रहकारयुक्त श्रीस० ॥  
 ५६ सम्यक्तचारित्र्यधर्मस्व मूलमिति चिंतनरूप सद्व० ॥  
 ५७ चारित्र्यधर्मस्य पुरस्यहारमिति चितन श्रीसद्व० ॥  
 ५७ चारित्र्यधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्व० ॥  
 ५८ चारित्र्यधर्मस्य प्रतिष्ठानमिति चिंतनरूप सद्व० ॥  
 ५९ चारित्र्यधर्मस्याधारमिति चिंतनरूप सद्व० ॥  
 ६० चारित्र्यधर्मस्य ज्ञानमिति चिंतनरूप स० ॥  
 ६१ चारित्र्यधर्मस्य सन्नित्तमिति चितवनरूप स० ॥  
 ६२ अस्तिजीवेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीसद्व० ॥  
 ६३ सचजीव नित्येति श्रद्धानस्थानयु० सद्व० ॥  
 ६४ सचजीव कर्माणि करोतीति श्रद्धानस्थानयु० स० ॥  
 ६५ सचजीव कृतकर्माणि वेदयतीति श्रद्धानस्थान यु० स० ॥  
 ६६ जीवस्यास्ति निर्वाणमिति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥  
 ६७ अस्तिपुनर्मोक्षोपायेति श्रद्धानस्थानयु० श्रीस० ॥ इति स० ॥  
 ॥ इति वजे समस्त नमस्कार कर खन्ना होके अन्नबू कदके

६७ लोगस्तका काउसग करै. एक लोगस्त प्रगट फहके पारे. पीठे  
पूवोक्त करणी करै. इति षष्ट दिवस विधिः॥

॥ अथ सप्तम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ नै ह्रीं नमो नाणस्त ॥ इत पदका २ हजार जाप करै.  
ज्ञानपद उज्वल यणी, तंडुलका आविल करै, इकावन भेद ज्ञानपद  
के चितव के ममस्कार करै ॥

॥ अथ ज्ञानपदके ५१ भेद लिख्यते ॥

- १ स्पर्शनेंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाव नम. ॥
- २ रसनैंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ॥
- ३ घ्राणैंड़ी व्यंजनावग्रह मतिज्ञानाय नम ॥
- ४ श्रोत्रैंड़ी व्यंजनावग्रह मति० ॥
- ५ स्पर्शनेंड़ी अर्थावग्रह मति० ॥
- ६ रसनैंड़ी अर्थावग्रह मति० ॥
- ७ घ्राणैंड़ी अर्थावग्रह मति० ॥
- ८ चक्षुरिंड़ी अर्थावग्रह मति० ॥
- ९ श्रोत्रैंड़ी अर्थावग्रह मति० ॥
- १० मन अर्थावग्रह मतिज्ञाना० ॥
- ११ स्पर्शनेंड़ीईहा मति० ॥
- १२ रसनैंड़ीईहा मति० ॥
- १३ घ्राणैंड़ीईहा मति० ॥
- १४ चक्षुरिंड़ीईहा मति० ॥
- १५ श्रोत्रैंड़ीईहा मति० ॥
- १६ मनेकरीईहामति० ॥
- १७ स्पर्शनेंड़ीअपाय मति० ॥
- १८ रसनैंड़ीअपाय मति० ॥
- १९ घ्राणैंड़ीअपाय मति० ॥

- २० चक्षुरिन्द्रियपाय मति० ॥  
 २१ श्रोत्रेन्द्रियपाय मति० ॥  
 २२ मनैनापाय मति० ॥  
 २३ स्पर्शनेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २४ रसनेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २५ घ्राणेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २६ चक्षुरिन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २७ श्रोत्रेन्द्रियधारणा मति० ॥  
 २८ मनोधारणा मति० ॥  
 २९ अक्षर श्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३० अनक्षर श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३१ संज्ञी श्रुतज्ञानाय नमः ॥  
 ३२ असंज्ञी श्रुत० ॥  
 ३३ सम्यक् श्रुत० ॥  
 ३४ मिथ्या श्रुत० ॥  
 ३५ सादि श्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३६ अनादि श्रुतज्ञानाय नम ॥  
 ३७ सपर्यवसति श्रुत० ॥  
 ३८ अपर्यवसति श्रुत० ॥  
 ३९ गमिक श्रुतज्ञान० ॥  
 ४० अगमिक श्रुत० ॥  
 ४१ अंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४२ अनंगप्रविष्ट श्रुत० ॥  
 ४३ अणुगामि अवधिज्ञानाय नमः ॥  
 ४४ अणुगामि अवधि० ॥

४५ बहमान अवधि० ॥

४६ हीयमान अवधिज्ञा० ॥

४७ प्रतिपाती अवधि० ॥

४८ अप्रतिपाती अवधि० ॥

४९ रुजुमति मनःपर्यवज्ञानाय नमः ।

५० विपुलमति मनःपर्यवज्ञा० ॥

५१ लोकालोक प्रकाशक श्रीकेवलज्ञानाय नमः ॥ इति पं० ज्ञा० ॥

इस तरे ५१ नमस्कार करै, खरुा होके अन्नबू० कहके एका वन लोगस्तका काजसग करै, एक लोगस्त प्रगट कहके पारे, पीठै पूर्वोक्त करणी करे, इति सप्तम दिवस विधि ॥

॥ अथ अष्टम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं नमो चारित्तस्त ॥ इस पदका २ हजार जाप करे, चारित्र पदका उज्वल वर्ण हे, इसीसे तंडुलका आविल करे, सत्तर जेव चारित्रपदके चिंतवके नमस्कार करे,

॥ अथ चारित्रपद के ७० भेद लिख्यते ॥

१ प्राणातिपातविरमणरूप चारित्राप नमः ॥

२ मृषावादविरमणरूप चारित्रा० ॥

३ अदत्तादानविरमणरूप चारि० ॥

४ मैथुनविरमणरूप चारि० ॥

५ परिग्रहविरमणरूप चारि० ॥

६ क्षमाधर्मरूप चारित्रेज्यो नमः ॥

७ आर्थवधर्मरूप चारित्रे० ॥

८ मृडुताधर्मरूप चारित्रे० ॥

९ मुक्तधर्मरूप चारित्रे० ।

१० तपोधर्मरूप चारित्रे०

६१ सिञ्जाय तपोरूप चा० ॥

६२ ध्यान तपोरूप चारि० ॥

६३ उपसर्ग तपोरूप चा० ॥

६४ अनत ज्ञान सयुक्त चा० ॥

६५ अनत दर्शनसंयुक्त चा० ॥

६६ अनंत चारित्रसयुक्त चा० ॥

६७ क्रोध निग्रहकरण चारि० ॥

६८ मान निग्रहकरण चारि० ॥

६९ माया निग्रहकरण चा० ॥

७० लोभ निग्रहकरण चा० ॥ इतिसित्तचारित्रज्ञेदाः ।

॥ इस तरै ७० नमस्कार करै, खना हो के अन्नब्रूसति०  
७० लोगस्तका कानसग्ग करै, एक लोगस्त प्रगट कहे, पूर्वोक्त क  
रणी करै ॥ इति अष्टम दिवस विधिः ॥

॥ अथ नवम दिवस विधि लिख्यते ॥

॥ ॐ ह्रीं एमो तवस्त ॥ इस पदका २ हजार गुणना करै,  
तपपदका उज्वल वर्ण इस वास्ते चावलोंका आंबिल करै, पञ्चास  
ज्ञेद तपपदके चिंतव के नमस्कार करै ॥

॥ अथ तपपद के ५० भेद लिख्यते ॥

१ यावत् कथक तपसे नमः ॥

२ इत्वर तपज्ञेद तपसे नमः ॥

३ बाह्यक्रणोदरी तपज्ञेद तपसे नमः ॥

४ अन्धंतरजपोदरी तपज्ञेद त० ॥

५ इत्यतपवृत्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

६ क्षेत्रतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

७ कालतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

८ जावतप वित्ती संखेप तपज्ञेद त० ॥

- १७ कायकिलेस तपज्ञेद तप० ॥  
 १० रसत्याग तपज्ञेद तप० ॥  
 ११ इंद्रिकपाय योग विषयक संलीणता तपसे नमः ॥  
 १२ स्त्री पशु पंमकादि वर्जित स्थान अवस्थित संलीणता त० ॥  
 १३ आलोयण प्रायश्चित्त तप० ॥  
 १४ पम्कमण प्रायश्चित्त तप० ॥  
 १५ मिश्र प्रायश्चित्त तपसे ० ॥  
 १६ विवेक प्रायश्चित्त तप० ॥  
 १७ उपसर्ग प्रायश्चित्त त० ॥  
 १८ तप प्रायश्चित्त त० ॥  
 १९ ज्ञेद प्रायश्चित्त त० ॥  
 २० मूल प्रायश्चित्त त० ॥  
 २१ अणवस्थित प्रायश्चित्त त० ॥  
 २२ पारंक्षिय प्रायश्चित्त त० ॥  
 २३ ग्यान विनयरूप तप० ॥  
 २४ दर्शन विनयरूप तप० ॥  
 २५ चारित्र विनयरूप त० ॥  
 २६ गुर्वादिक मन विनयरूप त० ॥  
 २७ चचन विनयरूप त० ॥  
 २८ काय विनयरूप त० ॥  
 २९ उपचारक विनयरूप तप० ॥  
 ३० आचार्य वेयावच्च त० ॥  
 ३१ उपाध्याय वेयावच्च त० ॥  
 ३२ साधू वेयावच्च त० ॥  
 ३३ तपस्वी वेयावच्च त० ॥

॥ अथ द्वादश मास पर्वाधिकार प्रारंभः ॥

॥ अथ चैत्रमासमें पर्वाराधन स्वरूप लिख्यते ॥

॥ चैत्र महीनेमें चैत्र सुद ७ से लेके चैत्र सुदि १५ पर्यंत ए दिन अति उत्तम है उत्तमताका कारण ऐसा है—वारे महीनोंमें तीन अष्टादश महोत्सव आते हैं जिसमें चैत्र आसोजकी अठई तो सास्वती है आठमसे पूनम तक इन दोनों महोत्सवोंमें च्यारुंनिकायके देवता उर ६४ इद्र एकठे होकर आठमा नदीश्वर क्षीपमें जाते है, (पुन्याहंर) कहते जये अष्ट इवसे पूजन करे, गीत गान नाटकादिकसे अनेक तरेसे नक्ति करे, पीठे नवमें दिन अपणे २ जन्मकुं स फल मानते जये अपणे २ देवलोक जावे इसी सुजब तीसरी अठई आसाठ चोमासेकी ( १४ ) पीठे ( ४२ ) दिन जाणेसे सबछरी पर्व साचवणेकुं ( ८ ) दिन तक अष्टादश महोत्सव करे. लेकिन यह अष्टादश सास्वती नहीं कही, कोइ वखत च्यारुंनिकायके देवता एकठे होकर नहीनी जावे, पहली पीठेनी करलेवे ॥ यह नवपदजी की नली शाश्वती अष्टादशमेंही की जाती है, नवपद माहात्म अधि कार दशमा विद्याप्रवादपूर्वमेंस उधार करके जयजीवोंके अनंत सुख प्राप्ति वास्ते श्रुतकेवली जगवान जद्रवाहूस्वामीने इसको प्र सिद्ध करा, इस वास्ते जयजीवोंको यह तप प्रमाण है, उर जो अ नवी अपणी अपणी कुयुक्तिये लगाकर खंमन करते हैं सो तीर्थ- करका वचन उत्थापणेसे अनंतसत्सारमें जमेंगे, सूत्रोंमें जगवंत महावीरने फुरमाया है, हे गोतम वीतराग सर्वज्ञ के वचन सूत्रोंमें हैं उर उन सूत्रोंमेंसे एक हरफकेनी यशार्थ अर्थकुं तोमके नया कल्पन करेगा पचागी विरुद्ध परंपरागम विगर सो अनंतसंसारी होगा ( सूत्रनाम किसका है ) ॥ सुत्तगणहररश्य, तदेवपत्तेयबुद्धर इयच ॥ सुपकेवलिनारश्यं, अजिन्नदसपूर्व्विणारश्यं ॥ १ ॥ ( अर्थ ) गणधरोका रचा, प्रत्येकेबुद्धोका रचा, श्रुतकेवली चौदे पूर्वधारियो का रचा, संपूर्ण दस पूर्वधारियोका रचा जयेकुं जगवानने सूत्र कहा है. सूत्र १, पयन्ना २, आगम ३, सिद्धत ४, ग्रंथ ५, इत्यादिक





चौबीस माहाराजकी पूजा करावे, पीठे बलवाकुल ढके दिग्पालां  
को विसर्जन करै ॥ इति अष्टापदपूजा ॥ दूसरापर्व २ ॥

॥ शासनाधिपति जन्मकल्याणक पर्वाधिकारः ॥ ३ ॥

चेत्र सुदि १३ के दिन श्रीमहावीरस्वामीका जन्मकल्याणक  
जया हे, इस वास्ते सब जगे धर्मरागीपुरप गुरुमुखसें समजके जल  
जात्रादिक संपूर्ण जन्मकल्याणकका महोत्सव करै, एसेही रुद्रिंत  
श्रावककू धर्मके उद्योत वास्ते सब जगवतके कल्याणक जो जो  
होय उसका उत्सव करणा, एसी शक्ति नहीं होय तो सासनाधी-  
श्वर देवाधिदेव श्रीमहावीरस्वामीके ज्यवनकल्याणकसें लेकर नि-  
र्वाणकल्याणक पर्यंत जिसदिन जो कल्याणक होय उसीका महो-  
त्सव पूजन करणा चाहिये, इससें धर्मका उद्योत होय, श्रीसंघमें  
परम आनंद होय ॥ इति तीसरा पर्व ३ ॥

॥ अथ चेत्रोपूनमपर्वाधिकार सामाचारी सतकानुसारसे लिखते हे ॥

प्रथम चावलके पूजसें सेत्रजयपर्वतकों स्थापन करै ( तिस-  
पर ) पट्टा रखके श्रीपुरुीक गणधर ( वा ) श्रीरुद्रदेवस्वामीका  
त्रिव स्थापन करै अद्वत मोतियोसें पर्वतको वधावै, केसरचंदनसें  
पर्वतको पूजै, सब श्रीसघ एकठे होकर पर्वतके चो फेर तीन प्रव-  
ह्रिणा देवे ( पीठे ) पूजन करू करै ( यथा ) दश ( १० ) बीस ( २० )  
तीस ( ३० ) चत्ता ( ४० ), पन्ना ( ५० ) पुष्पदामेणलदर्श ॥ चउठठठअठम,  
दसमदुवातस कलाइच ॥ १ ॥ अब प्रथम १० प्रकारसें पूजनका  
अधिकार लिखते हैं, एकाय चित्तसें अष्टमंगलीक आगे रखके  
श्रुद्धोदकसें मूलप्रतिमाको न्दवण करावे, पीठे श्रीसंघ स्वप्ता होके  
( १० ) दस नमस्कार उच्चारपूर्वक १० फूल तथा १० फूलमाला  
चढाके प्रतिमाके १० तिलक करै यथाशक्ति सुपारी नारेल इत्यादि  
सब चीज उत्कृष्टसें दस १ जघन्ये नारेल १ सुपारी १० उर फल

फूल यथासंभव चढावै, धूप खेवै, कपूरकी आरती करै, पीठै सिद्ध  
 गिरी गुणगर्भित चैत्यवन्दन करके पांचे शक्रस्तवे देव वाँदें, १० ख  
 मासमण देके ( श्रीसिद्धकेत्र पुंररीक गणधराय नम. ) इस पदका  
 १० वेर नमस्कार करै, पीठै ( श्रीसिद्धजय पुंररीक आराधनार्थ करै  
 मि काञ्जसगं अन्नचूससि० ) कहके १० लोगस्तका काञ्जसग करे  
 (इहां केइ आचार्यने कहे ते कि बहुतउछव होय वखत कम रहे तव  
 एक लोगस्तका काञ्जसग करै १० जेतीके ठिकाणे १० गाथाका  
 स्तवन कहे ) पीठै अनेक प्रकारका वाजिन्न चजावै ॥ इति प्रथम  
 पूजा विधि ॥ अब इसी तरै ( वीस । तीस । चालीस । पच्चास ।  
 यह चारों पूजाके जेद जाण लेणा ( इतनाही विशेष हे ) दूसरी  
 पूजामें १० के ठिकाणे २० की विधि करै ॥ तीसरी पूजामें १०  
 की जगें ३० की विधि करै, चौथी पूजामें १० की जगें ४० की  
 विधि करै, पाचमी पूजामें सब विधी ५० की करै, तथा ( सिद्ध  
 क्षेत्र श्रीपुंररीकाय नम. ) इस पदका दो हज़ार गुणानो करै, उ-  
 त्कृष्टसैं पाचू पूजामें जुदीर धजा चढावै, जघन्यसे पाचू पूजा किये  
 पीठै १ धजा चढावै । यह तप गुरुके मुखसे लेके जघन्य १ वर  
 स, ज्यादा हो सके तो ७ वरस, उत्कृष्ट १२ वरस विधि संयुक्त  
 तपस्या करै, गुरुके मुखसैं उपदेश सुलै, संपूर्ण तप हुयां पीठै  
 सिद्धगिरीकी जात्रा करै, ग्यानपूजा करै, गुरुजत्की करै, सा-  
 हमीवञ्जल करै ( यह ) चैत्रीपूनमके दिन श्रीरूपन्नदेवस्वामी  
 के प्रथम गणधर श्रीपुंररीकजी पाच कोनी साधू साथ अक्षय  
 सुखको प्राप्त जये, ( इतवास्ते ) जरत प्रथम चक्रवर्तीने चैत्री  
 पूनमको आराधन करके ( यह ) चैत्रीपूनम पर्व प्रसिद्ध कि  
 या, यह चैत्रीपूनम पर्व आराधन करणसैं इस जवमें अनेक सुख  
 संपदा प्राप्त होय, स्त्रियोंके पूत्र पुत्रादिककी वाछा पूरण होय, नर

आविध्यावि सोग संताप सब दूर होय, परजवमें देवाधिक रुदि प्राप्त होय, क्रीणकर्मी होणें अक्षयसुखकों प्राप्त होय ॥ इति चैत्र मास पर्वाधिकार. ॥

॥ अथ चैत्रपूनम स्तवन लिख्यते ॥

( ढाल ) पय प्रणमी रे जिनवरना सुपसाजलै, पुंरगिर रे गार्इस हू सुज ज्ञाजलै ॥ मति सुरगिर रे सहस जीज जो मुखहु वै, किम ते नर रे विमलाचलना गुण तवै ॥ ( उज्जालो ), किम तवे गुणगण एह गिरिना जिहा मुनि सीधा बहू, गिरिरायना गुण वै अनता कहे जिनवर मुख सहू ॥ निय जनम सफलो करण कारण केतला गुण ज्ञापियै, तिरयच नारकतणी गतिना डु खदूरैराखियै ॥ १ ॥ ( चाल ) जिनराजारे पहिलो प्राद जिनेसरू, तसु नंदनरे चक्रवर्त्ति जरतेसरू ॥ तसु अगज रे पुंरुरीक गुणगण निलो, समदम रस रे विनय विवेक गुणै जलो ॥ ( उज्जालो ) गुण जलो अनु क्रम प्रादि जिनवर पास सजम शिउपुरी, पुंरुरीक गणार प्रथम विहरै मुमति गुपते संचरी ॥ पण कोरि साथे विमलगिरिवर मुग ति पढवी पाव ए, सुदि चैत्रपूनम तेण ए गिरि पुंरुरीक कहाव ए ॥ ७ ॥ ( चाल ) द्विव चैत्री रे पूनम पर्व सुहामणो, सेत्रंजे रे आरा ध्या फल हुवे घणो ॥ मनमुद्धे रे आपणपे आनरु रही, आराध्यां रे यात्र पुन्य पामे सही ॥ ( उज्जालो ) ते पुन्य पामे दान तप जप धर्म ध्यान मने धरै, बहु ज्ञाव ज्ञतै त्रिविध पूजा प्रादि जिनवरनी करै ॥ ज्ञावना ज्ञावै तेण दिवसे पचकोरि गुणो फलै, अनुक्रमे ते नर मुगति पामी सिद्धसुंदरने मिलै ॥ ३ ॥ ( चाल ) दस बीसा रे तीस चालीस पूजा कही, पन्नासा रे आवरु निरती सरवही ॥ चउअठठे रे अठम दसज डुवालसे, पूजा फल रे अनुक्रम एमुज मन वमै ॥ ( उज्जालो ) मन वसे पूजरूपूरधूपे मासखमण फले बली, समज

धूपै पस्कनो फल जे करे मननी रखी ॥ हिव पूजनी विधि जेम  
 गुरुमुख सुणीअठै परंपरा, ते मोह माया कपट ठंणी सुणो जवि  
 यण सादरा ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तंडुलरासि विमलगिरि थापी, तसु  
 ऊपर पट्टादिक थापी ॥ प्रतिमा आदिजिनेसर केरी, पुंमरीकनी  
 थापी निवेरो ॥ ५ ॥ सेत्रुजगिरिने मन चितीजै, करमतणा मल  
 दूर करीजै ॥ मोती तंडुल करीय वधावो, तीन प्रदक्षण पुज रचा  
 वौ ॥ ६ ॥ मंगलीक पहिला तिहां आठ, करमवध दूरै करि आठ ॥  
 प्रतिमा मूल सनात्र करेवा, जिनवरना गुण हियमे धरेवा ॥ ७ ॥  
 ऊजा थई नवकार गुणंता, दस२ जैती तिलक करंता ॥ माता  
 पुष्प पूंगीफल ढोवो, मेरु जरण वर धूप उरकेवो ॥ ८ ॥ ( ढाल )  
 शक्रस्तष पांचे देव वादै, जघन्यना वंदण पाप वैदे ॥ दसे नमस्का  
 र करंत जैती, राखी करी दृष्टि जिनेइ सेती ॥ ९ ॥ आराधिवा  
 काजे कानसग, जिणे किये जांजै कर्मवग ॥ लोगस्तनज्जोय दसे  
 चखाण, बेला प्रमाणे अहिएग आणूं ॥ १० ॥ इणे प्रकारै धूपपूज  
 एह, इसी परै बीजा च्यार तेह ॥ दसातणी वृद्धि तिहा गिणीजै,  
 एक चित्त सूधै शुज्न पून्य कीजै ॥ ११ ॥ धजातणी रोप तिहां करी  
 जै, एकेरु पूठै अथवा गिण्णिजै ॥ महुत्तरे आरति मंगलेवो, पर्व  
 प्रज्ज आगल ते करेवो ॥ १२ ॥ ( कलश ) इम करिय पूजा यथा  
 योगै संघपूजा आदरो, साहमोवचल करो जविका जवसमुइ ल  
 लावरो ॥ सपदा सोहग तेह मानव रुद्धि वृद्धि बहू लहै, आअमर  
 माणिक सीस सुपरै साधुकारति इम कहै ॥ १३ ॥ इति श्री चै०स्त० ॥

॥ अथ नंदीश्वर तपस्या करण विधि लिख्यते ॥

स्तवन पहली वेरु स्तवनोमें लिखा है सो सुणाणा. अथ शुज्न  
 घनी शुज्नदिन गुरुके पास नंदीश्वरतपः नंदीश्वरदीपके च्यारुं  
 दिसि तरफ ५२ चैत्यकी अपेक्षायें

२) वावन

करै जिस दिन जो मादाराजके नामका उपवास होय उसही नामका १००० गुणना करै, सो लिखते है ॥ १ श्रीरूपज्ञाननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ २ श्रीचद्राननजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ३ श्रीवारिपेणजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ४ श्रीवर्द्धमानजी सर्वज्ञाय नमः ॥ ( यह ) च्यार नामकूं ४ वेर ऊलटा, ४ वेर सुलटा गिणो ॥ अनुक्रमे १३ उपवास करणेसे एक नली होय ४ नली करणेसे यह तप संपूर्ण होय ॥ पीठे शक्ति मुजब ऊजमणा करै नंदीश्वरद्वीपका मरुल वणावै, पूजा करावे. इत्यादि महोच्चवकरके ग्यानपूजा, गुरु पूजा करै, साह मीवञ्जल करै, मंरुलकी विधि एकेक दिसीमें (१३) तेरे २ पद्दामकी रचना करै चार दिसामें ५२ करै, बीचमे अजनगिरी, च्यारुं दिसा में च्यार श्वेतपर्वत, दोय २ दधिमुखपर्वतके बीचमें दोय २ रतिकर पर्वत, एवं ७ रतिकर, एवं सब एक दीसीमे १३, च्यारुं दिसिके ५२, सब पर जिनबिंब थापे. इनको पूजामें ५२ थापना, ५२ नारेख, ५२ पान नागरबेलके, ५२ अंगलूहणा, इत्यादि सब चीज ५२ वावन लेवे क्रमसे एकेक काव्य पट्टके जल चदनादि अष्ट ८ असें अगपूजा तथा अग्रपूजा करे ॥ इति नंदीश्वर तपस्याधिकारः ॥

॥ अथ वैसाख मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ वैशाखके महानेमें मित्ती वैसाख सुदि ३ हे सो अक्षय तृतिया नामसे पर्व प्रसिद्ध हे. इस दिन श्रीरूपज्ञदेव स्वामीके चारित्र ग्रहण किया पीठे बारे मासीका पारणा सोमयशराजाके पुत्र श्रीश्रेयासकुमरजीके हाथसें इक्षुरससेती जया उस वखत उत्तम दानके प्रज्ञावसें सब देवगण प्रमोदवंत होके सुगंधजलकी वर्षा १, सुगंधपुष्पोकी वर्षा २, साहीबारे कोनि सोनइयोकी वर्षा ३, आकासमें अहोदान २ एसी उदघोपणा ४, देवडुंडुनी वाजित्र ५, एसे पाच इव्य प्रगट किये. श्रेयासकुमरका जस तीन जुवनमें विस्तरण

हुआ. उस दिनसे आहारदानकी विधी सबको मालम नई. इस दानके प्रज्ञावसे श्रेयांसकुमार अक्षयसुखको प्राप्त नया. इस वास्ते अक्षयतृतिया पर्व श्रीसंघमें परम मंगलकारी है. इस पर्वके आणसे वध्व आभूषण पहरके जगवंतके मंदिर जाके अष्ट द्रव्यसे पूजन करे, स्नात्र, अष्ट प्रकारी, सतरह जेदी, आदि पूजा करावै. पीठे गुरुके मुखसे एकासणादिकेक पञ्चस्काण करके पर्वकी महिमा सुणे. अपने घर गुरुको बहिरायके सब कुटंब समेत जीमें, नर जो मंगलीक कार्य करणा होय सो इस दिन करै, इस माफक इस पर्वको जा जव्यजीव सेवन करते रहेंगे उनोका तपतेज हमेसा बढ़ता रहेगा ॥ इति अक्षयतृतिया पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ तृतिय ज्येष्ठ मासाभ्यंतर पर्वाधिकारः ॥

॥ जेष्ठ ऋष्यात्रयोदशीके दिन सोलमें श्रीशातिनाथ स्वामीका निर्वाण कल्याणकका दिन है इस वास्ते इस उत्तम दिनमें सब जगे श्रीसंघ एकठा होके विधिभंग्युक्त शातिपूजाका महोत्सव करावै, शांतिजल लेजाके अपने२ घरमें गाटे इस शातिपूजाके कराणसे मारी, हेजा, इत्यादिक समुदायिक रोग कञ्ची श्रीसंघमें प्राप्त न होय ( अथवा ) किसी आवकके घरमें रोग चाला रहता होय तो (वा) बहुत चिंता रहती होय तो इसी दिन शांतिपूजाका उत्सव करणा चाहिये. ( इससे ) आधि व्याधि ग्रहादिककी पीना सब दूर होय, अनेक मंगलश्रेणी प्रवर्त्तन होय ॥ इति ज्येष्ठ मास पर्वाधिकारः ॥

॥ अथ आपाढ मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ आपाढसुदि १४ के दिन चौमासी इस नामसे पर्व प्रसिद्ध है सो लि० है ॥ यथा ॥ सामायकावस्यकपोपयानि, देवार्चनस्नात्रविलेपनानि ॥ ब्रह्मक्रियादानतपोमुखानि, जव्याश्चतुर्मासिकमंनानि ॥१॥ ( अर्थ ) ज्ञोत्तत्र्याएतानि सामायकादि धर्मरुयानि चतुर्मासकस्यं

मंशुलानि श्रलंकारभूतानि विद्यन्ते ॥ ग्रहो ज्ञव्य प्राणी जीवो यद्  
 सामायकको आद लेके जो धर्मकृत्य हे तो चोमासेके मंशुण हे, अ  
 र्थात् श्रलंकार समान हे यथाशक्ति यह चोमासेपर्वमें कोइ जीव  
 सामायक पन्धिक्रमणा पोसा करे, कोइ जगवानके मंदिरमे नाना-  
 प्रकारकी पूजा करे, केइ सीलव्रत पावै, कोइ सुपात्रदान देवे, कोइ  
 नानाप्रकारकी तपस्या करै, जेसा धर्मकाम अरणी शक्तिसँ वल  
 आवै सो करै, इसमें विरोध नही लेकिन कोईनी प्रकारसँ धर्मका  
 उद्योत करणा चाहिये जिससँ सय श्रीसंधमें कढ्याणमाला प्रगट  
 होय, उर चोमासी ( १४ ) के दिन सब मंदिरोंमें दरशन करणेको  
 जाणा, पाच शक्रस्तवसँ देववादै, पीठै गुरुके पास जाके चोमासे  
 पर्वका व्याख्यान सुणे, सब चीजका प्रमाण करके उपरातका सोगन  
 लेवै, साऊकूं चोमासी पन्धिक्रमणा करे. इत मुजब काती चोमासै  
 फागुण चोमासे कौंजी सेवन करै ॥ इति चतुर्मासपर्वाधिकार.

॥ अथ श्रावणमास मध्ये तपस्याधिकार कथ्यते ॥

श्रावणमासमें केइ ज्ञव्यजीव मम्माई आदि क्षेत्रोंमें तरे  
 की पूजा लाखीणी अंगिया कराय के चोमासेपर्वका उद्योत करते  
 हैं, इस माफक सब जगे तरे की पूजा करानी चाहिये. उर देस  
 देसमें श्रावणमास इत महीनेमें केइ तरेकी तपस्याये करती हे.  
 जिसमे उत्तमफलको देणेवाली केइयक तपस्या विधिप्रपाकग्रन्थसे  
 उवरण करके सक्षेपविधिसँ इहां लिखते हैं ॥

॥ अथ नुटकर तपस्याविधि लिख्यते ॥

पुरिमह १, एकासण १, नीवी १, आखिल १, उपवास १,  
 ( यह १ उली ) इस तरे पाच उली करै तपोदिन २५ जजमणे  
 २५ लाडू चढावे ॥ इति इंद्रीजयतप ॥ १ ॥

एकासण १, नीवी १, आखिल १, उपवास १, इस तरे

उत्ती च्यार करै. तपोदिन १६ ऊजमणें १६ लडू चढावै ॥ इति  
कपायजयतपः ॥ २ ॥

नीवी १, आंखिल १, उपवास १, इसी तरे उत्ती ३ करै. तपो  
दिन ए. ऊजमणें ए लडू चढावै ॥ इति योगशुद्धितपः ॥ ३ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें झा  
नपूजा करै ॥ इति नाणतपः ॥ ४ ॥

इकसार उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें  
स्नात्र पूजा करावै ॥ इति दर्शनतपः ॥ ५ ॥

इकलग उपवास ३ अथवा एकांतर उपवास ३. ऊजमणें  
गौतमस्वामीकी पूजा करै ॥ इति चारित्रतपः ॥ ६ ॥

अठम १, उठ, १, उपवास १, एकासण १, एकलठाणो १, दत्ति  
१, नीवी १, आखिल १, यह एक उत्ती. इसी तरे उत्ती आठ करै.  
तपोदिन ८८. ऊजमणें रूपेका वृद्ध, सोनेका कुहामा करायके ग्यान  
खाते देवे ॥ इति आठ कर्मसूततपः ॥ ७ ॥

जाइवा वदि चउथसैं लेके पनरे दिन पर्यत इकसार एकास  
णा अथवा विआसणा करै, घरदेरासर आगे अथवा अछे ठिकाणें  
कलस स्थापन करै, एक मुठी चावल सदा कलसमे जरै, संवत्तरीके  
दिन कलस ऊपर नारेख रख के महोत्सवपूर्वक मदरमें जाके देव  
आगे रखै, स्नात्रपूजा करै, ज्ञानपूजा करै ॥ इति अहयनिधि तपः ८ ॥

श्रीवासुपूज्य पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्र के दिन उपवास वा  
नीवी, आखिल सात वरस सात मास करै ( श्रीवासुपूज्यस्वामी  
सर्वज्ञायनम. ) इस पदका २००० गुणना करै, गुरू के पास स्त  
वन सुणे. ( सो स्तवन आगे लिखें ) ऊजमणें ज्ञानके उपकरणसैं  
ज्ञानज्ञक्ति गुरुज्ञक्ति करै. इति रोहिणीतपः ॥ ९ ॥

सुनिपद्धके पाचमेके दिन श्रीनेमि अंबिका पूजापूर्वक पाच



एकासणादिक तप करै अंधिकादेवीकूवेस चढ़ावै ॥ इति अंधिकातपः ॥  
 सुदिपद्मके इग्यारसके दिन सिद्धातपूजापूर्वक मौनसयुक्त  
 उपवास करै इति श्रुतदेवतातपः ॥ ११ ॥

सुदि पद्ममें एकातर उपवास ८। पारणो अंधिल ८, एवं दिन  
 १६ ऊजमणों ज्ञानपूजा करै, इति सर्वांगसुंदरतपः ॥ १२ ॥

चैत्रमासे एकातर उपवास १५, एवं दिन ३०, ऊजमणों  
 सोनेका अथवा रूपेका वृद्ध अनेक फल सहित चढ़ावै ॥ इति सौ-  
 भाग्यकल्पवृद्धतपः ॥ १३ ॥

पनिवा, वीज, तीज, १ अनुक्रमसें पूनम पर्यंत (१५) उप-  
 वास करे जो तिथि जूले सो तिथि उर करै, ऊजमणे एकसो वीस  
 लक्ष मंदिर चढ़ावै, स्नात्र करावै ॥ इति सर्वसुखसपतितपः ॥ १४ ॥

वरसातका च्यार मास उर पोष, चैत्र, यह पट मास टा-  
 लके ठोटी पाचमतप सरू करै, अंधारी उजवाली पाचम मास ५  
 लग एकासणादि तप करै, ऊजमणे ज्ञानपूजा करै ॥ इति ठोटी  
 पाचमतप ॥ १५ ॥

सुद पाचमकूं पाच वरस पाच मास उपवास करै, उपवास  
 के दिन देव वांदणादिक क्रिया करै ऊजमणों पुस्तकादिक ज्ञानोप-  
 गरण पकान फल कलशादिक पाच ५ चढ़ावै, सत्तरजेदी पूजा  
 करावै, माहमी वछल करै ॥ इति ज्ञानपंचमीतपः ॥ १६ ॥

॥ आपाढ सुदि पनिवा, वीज, तीज, चोथ, पांचम, एकाश-  
 णादि तप करै, अशोगवृद्ध पूजापूर्वक देव आगे नेवेद्य चढ़ावै, इस  
 तरै वरस १ तप करै ऊजमणों चावलोंसें अशोगवृद्ध लिखके पूजा  
 करै ॥ इति अशोगवृद्धतपः ॥ १७ ॥

आपाढ वदि ७ श्रीविमलनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ श्रावण  
 वदि ७ श्रीअनतनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ काती वदि ७ श्रीअ-

दिनाथ पूजापूर्वक उपवास ॥ पोषवदि ७ श्रीपार्श्वनाथ पूजापूर्वक उपवास करै, स्नात्र करै, ऊजमणें चावलौसे लोकनाल चणाके सा ते राज सात पावनी करके उसपर सिद्धकेत्र ( उसकों ) सोनेरत्न का मुगट चढावै ॥ इति मुगटसप्तमीतपः ॥ १८ ॥

आसोज सुदि ८ तक एकाशणादि तपकरै, आठ प्रकारकी पूजा करै, नैवेद्य चढावे, पहिले वरस अष्टापदकी एक पावनी, इ स तरे आठे वरसे आठ पावनी अष्टप्रकारी पूजापूर्वक आराधिये, ऊजमणें अष्टापदपूजा करावै, एकवान फल सर्व चौबीस चढावै ॥ इति अष्टापदपावनीतपः १९ ॥

सुदि पक्षके ८ आठमके दिन उपवास अथवा आबिल करै. ऊजमणें दूधका कटोरा जरके आठ लड्डु देव आगे चढावै ॥ इति अमृतआठमितप. २० ॥

॥ वदपक्ष अथवा सुदपक्ष के दशम के दिन वस उपवास अथवा बीस एकासणा करै. ऊजमणें अखन्ति धी धारपूर्वक ती ए प्रदक्षणा देवे ॥ इति अखन्तिदशमीतप ॥ २१ ॥

वदिपक्ष अथवा सुदिपक्षमें ११ के दिन सिद्धांतपूजापूर्वक एकाशण, नीवी, आबिल, वा उपवास ११ करै. ऊजमणें ११ अं गकी पूजा करै ॥ इति श्राङ्ग्यारअगतपः ॥ २२ ॥

सुदिपक्षके १४ के दिन एकासणादि १४ तप करै. ऊजमणें ज्ञानपूजा करै, चवद प्रकारके एकवान प्रमुख चढावै ॥ इति १४ पूर्वतपः ॥ २३ ॥

पांच अमृततेला मास ६ में करै ( प्रथम तेले ) सिखरणसे पारणा ( दूसरे तेले ) सारेका पारणा ( तीसरे तेले ) लापशीका पारणा ( चौथे तेले ) लड्डुलें पारणा ( पाचमें तेले ) खीरसे पार णा. पारणे प्रथम साधुको वक्षिरके पारणा करै ॥ इति पंचामृतते लातप ॥ २४ ॥

अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १, एकासणो १, अष्टम १,  
एकासणो १ ॥ यह मोटारत्नोत्तरतपः ॥ २५ ॥

आविल १२ करके ऊजमणें रूपाका चक्र मंदर चढावे तो  
सदा जय होय, विणज व्यापारमें लाज होय ऊगमेमें जीत होय॥  
इति धर्मचक्रतपः ॥ २६ ॥

उपवास ५, व्यासणा ५ एकातरै करै॥इति पंचमहाव्रततपः२७॥  
उपवास १, एकसणो १, नीवी १, आविल १, व्यासणो १, उपवास  
१, एकासणो १, नीवी १, आविल १, व्यासणो १.

एवं दिन १० पूनमसें सरू करै. पारणै साधु पन्डितानै, ग्यानपूजा  
करै ॥ इति दालिइहरणतपः ॥ २८ ॥

एकेंद्रिये उपवास १, वेइद्रिये ठठ १, तेंद्रिये अष्टम १,  
चौरेंद्रिये दसम १, पंचेंद्रिये द्वादशम १, ठक्कायें चतुर्दसम १, तप करै.  
ऊजमणें मुखनीसें ६ स्त्री जीमावे॥इति ठक्कायआलोयणतपः॥२९॥

नीवी आठ निरंतर करै ॥ इति सासूसुखतपः ॥ ३० ॥

आविल आठ निरंतर करै ॥ इति सुसरसुखतपः ॥ ३१ ॥

ठठ पाच करै ॥ इति पूत्रीसुखतपः ॥ ३२ ॥

॥ अष्टम पाच करै ॥ इति पूत्रसुखतपः ॥ ३३ ॥

॥ उपवास आठ एकानर करै॥ इति जर्त्तारसुखतपः ॥३४॥

॥ निवी पाच निरंतर करै ॥ इति जेठसुखतपः ॥ ३५ ॥

॥ एकासणा पाच निरंतर करै ॥ इति देवरसुखतपः ॥ ३६॥

॥ एकासणा पाच एकातर करै॥ इति पितामातासुखतपः ३७

॥ इत्यादिक केइ तरीके तपस्या बहुत ठिकाणेकी थावक  
एयो कियाकरती हे. इस वास्ते बहुतेके उपगारार्थ शास्त्रोंसें उहा  
र करके संक्षेपविधिसें इहा लिखी हे, ज्यादा शक्ति होय तो पूजा  
साहमीवञ्जल तीर्थयात्रा इत्यादिक सातु शुभकेशोमें अपना धन

खरब करै, धर्मका उद्योत करै ॥ इस तपस्याके प्रज्ञावर्ते इस ज  
वमें संसारसंबंधी दुःखदालिङ्ग दूर होके सर्व कुटुंबमें सुख संपदा  
होय, परजबमें देवाङ्किक कृष्ठी प्राप्त होय. ( किवहुना ) इति वृष्ट  
कर तपस्याविधि ॥

॥ अब भाद्रपद मासे पर्वार्धिकार लिख्यते ॥

॥ ज्ञाउव महिनेमें मिति ज्ञाउवा सुद ४ तथा केइ मतकी  
अपेक्षासे ५ तिथिओं सवहरी नामसें पर्व प्रसिद्ध हे ( प्रथम इस  
संवहरी पर्वकी महिमा कहते हे ) जेसें जगत्रमें अनेक मंत्र हे  
पर नवकार समाश कोइ मंत्र नही १, तीर्थोंमें सेत्रुंजय समान कोइ  
तीर्थ नही २, पांडवानमें अन्नयदान सुपात्रदान समान कोइ दान नही  
३, गुणमाहे विष्णुयगुल ४, व्रतमाहे ब्रह्मव्रत ५, नियममें संतोष  
नियम ६, तपमें उपशमतप ७, दर्शनमें जैनदर्शन ८, जलमाहे गंगा  
जल ९, अलंकारमाहि चूनामणी १०, उबोतथामे चंद्रमा ११, ते  
अंशतमांदि सुर्य १२, गजमें एरावण १३, डेत्यमांहे रावण १४, तु  
रंगमें पंखपुष्पकिकोरे १५, नृत्त्यकृत्तावंतमांहे मोर १६, वनमांहे  
मंदन १७, काष्टमांहे चंदन १८, साहसीकमें विक्रमादित्य १९,  
न्वावधतमें श्रीराम २०, रूपवंतमें काम २१, सतीमांहे शीना २२,  
शास्त्रमांहे ज्ञाता २३, सुगंधमें कस्तूरी २४, वस्तुमें तेजनतूरी २५,  
बाजित्रमें जज्ञा २६, स्त्रीमांहे रंजना २७, धातुमें स्वर्ण २८, वाता  
रमें कर्ण २९, गौमें कामधेनु ३०, वृद्धनमें कटपवृद्ध ३१, जलमें  
अमृत ३२, स्नेहमांहे घृत ३३, इत्यादिक सर्व चीजोंमें एक १ चीज  
उत्तम होता है. इस तरे सर्व पर्वोंमें उत्कृष्ट राजाधिराज पर्व श्री  
संवहरी ( दूसरा नाम ) श्रीपर्युषण पर्वकों जगवंत श्रीमाहावीर  
स्वामीजीने उत्तम दर्शन किया. अब श्रीपर्युषणपर्वके आणसें प्रथ  
म श्रीसाधुके करणे योग्य धर्मकृत्य कहते हे ॥ सवत्सरी प्रतिक्रमण

करै १, लोच करावे २, तैलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोंमें जंगवंत  
 की जावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावे ५, यह पाच कारण  
 के वास्ते श्रीतीर्थकर गणधरोनें पर्यूपणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब  
 शुद्धश्रावक संवहरी पर्व आराधन करणेकूं आठ दिन अठाइ महो  
 हव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी  
 जक्ति करै, कल्पसूत्रजीकू विधिसयुक्त अपणे घर लेजाके रात्रीजागर  
 ण करावै, प्रजातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकू निमंत्रण कर यथा  
 योग्य सन्कार सन्मान करै, पीठे पुस्तकग्राहक पुरुषसर्वसें उत्तम वस्त्र  
 आञ्जूपण पहरकै मुगट उत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रम  
 हाराजका रूप बणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मं  
 गलीकरचित थालमें पुस्तक धरके अपणे दोनुं हाथमें थाल धरके दोनुं  
 तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आञ्जूपण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके वा  
 जित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन  
 करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिण  
 खना होके विनयसयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके आगे रखै. श्रीसं  
 घके आज्ञासें वाचनापूर्वक वाचे १, नगरमें सब जगे अमारिपरुह  
 वजावै, दूसरा वचनसे तथा द्रव्यसें कसाइ धोबी जन्जूजा इत्या  
 दिक सबका आरंज गोहावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाम सुपारी  
 नालेरादिक की प्रजाचना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिसें  
 पूजा करै, चौदसके दिन संवहरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इकोठ हो  
 कर सर्व मंदिर दरसन करणेको जावै ५, सचित्तका परिहार करै  
 ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चउठ, उठ, अठमादिक तप करै ८, अपने  
 वित्तके अनुसारे जन्मकल्याणकका उद्यव करै ९, अठपहरी पोसा  
 करै १०, संवहरी प्रतिष्मण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ  
 खमावै १२, पारणके दिन पोसइ १३, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ

थोंकी जक्ति करै ? ३, गुरुजक्ति करै ? ४, संबन्धरी दान देवै, साहमी वञ्चल करै ? ४. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसे आराधन करनेसे आठ जवसे मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता है ( नर ) केइयक जव्यजीव अत्यंत शुद्ध ज्ञाव धरतेजये अठमादि तप कर के युक्त कल्पसूत्रजीको वाचते है नर सुणनेवाले प्रमाद निडा वि कथा ठोरुके अठमादि तप करके एक चित्तसे शुद्धज्ञाव रखके इक बीस बेर सुणते है, सो जव्य देवगतीकों प्राप्त होके तोसरे जव सि द्विस्थानकों प्राप्त होते है ॥ इस पर्यूपणपर्वका महोच्चव जो जव्य जीव करते है सो धन्य है, धर्मके प्रज्ञावीक है, अपनी लक्ष्मीसे धर्मका उद्योत करते है. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते है नर नमस्कार करते है ॥ (अब कल्पसूत्रजीका महात्म कहते है ॥ यह कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसे उहरण कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा अध्यायन है सर्व श्रीसंघके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीजद्रवाहु स्वामी प्रसिद्ध किया है. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय है. जैसे सर्व नदीके बालू के कश होय उससे जौ एक सूत्रके अनंते विषय है. इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हज्जार जीज करके कहे तोजौ महात्मका एक अंस जौ कह सकता नही. एसा इस पर्वका महात्म जाण जो जव्यजीव शुद्ध ज्ञावसे सेवन करेंगे सो अनेक तरे से रुद्धि वृद्धी सुख सौजाग्य कों प्राप्त होंगे नर परजवमें देवादिक रुद्धि पाषके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूपणपर्वाधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकार ॥

॥ आसोज महीनेमें मिति आसोज सुदि ७ से लेके आसोज सुदि १५ तक नवपदजी की नली तथा अष्टापदजीकी नली विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखी है उसी माफक करै ॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मिति कार्तिक वदि अमावस है सो दी-

करै १, लोच करावे २, तैलेका तप करै ३, सर्व मंदिरोमें जगवंत  
 की ज्ञावस्तवना करै ४, सर्व श्रीसंघसें खमावे ५. यह पाच कारण  
 के वास्ते श्रीतीर्थकर गणधरोनें पर्यूपणापर्व प्रवर्त्तन किया ॥ अब  
 शुद्धश्रावक संवञ्चरी पर्व आराधन करणोकू आठ दिन अठाइ महो  
 छव करै सो कल्पलता शास्त्रोंसें लिखते हे ॥ प्रथम श्रुतज्ञानकी  
 जक्ति करै, कल्पसूत्रजीकूं विधिसयुक्त अपमे घर लेजाके रात्रीजागर  
 ण करावै, प्रजातसमय नगरके सर्व श्रीसंघकू निमंत्रण कर यथा  
 योग्य सन्कार सन्मान करै, पीठै पुस्तकग्राहक पुरुष सर्वसें उत्तम वस्त्र  
 आञ्जूपण पहरकै मुगट ठत्र चामर इत्यादिक समेत साक्षात् इंद्रम  
 हाराजका रूप वणाकर हाथी पर अथवा पालखी पर बैठ अष्ट मं  
 गलीकरचित धालमें पुस्तक धरके अपणे दोनुं हाथमें थाल धरके दोनुं  
 तरफ पुरुष अष्टा वस्त्र आञ्जूपण पहरके चमर ढाले, अनेक प्रकारके वा  
 जित्र वाजते जये, दान देते जये, नानाप्रकारके श्रुतज्ञानके गुण वर्णन  
 करते जये, नगरमें प्रदक्षणा तुल्य फिरके गुरुके पास आवै. गुरु पिण  
 खना होके विनयसंयुक्त पुस्तकको नमस्कार करके आगे रकै श्रीसं  
 घके आज्ञासें वाचनापूर्वक वावे १, नगरमें सब जगे अमारिपरुह  
 वजावै, दूसरा वचनसे तथा द्रव्यसें कसाइ धोवी जम्जूजा इत्या  
 दिक सबका आरज ठोकावे २, सुपात्रदान देवे ३, विदाम सुपारी  
 नाखेरादिक की प्रजावना करे ४, श्रीवीतरागदेवकी उदार जक्तिसें  
 पूजा करे, चौदमके दिन संवञ्चरीके दिन चतुर्विध श्रीसंघ इके हो  
 कर सर्व मंदिर दरसन करणोकै जावै ५, सचित्तका परिहार करै  
 ६, ब्रह्मचर्य पाले ७, चण्ड, उठ, अठमादिक तप करै ८, अपने  
 वित्तके अनुसारे जन्मकल्याणकका उचव करै ९, अठपहरी पोसा  
 करै १०, संवञ्चरी प्रतिक्रमण करै ११, निसल्य होके सर्व श्रीसंघ  
 खमावै १२, पारणके दिन पोसइ पण्डितकेणोवाले साधर्मीजाइ-

योंकी जक्ति करै १३, गुरुजक्ति करै १४, संवहरी दान देवै, साहमी  
 वज्र करै १४. इस विधिसंयुक्त यह कल्पसूत्र एक चित्त सुणनेसे  
 आराधन करणेमें आठ जवसे मोक्षस्थानकूं प्राप्त होता हे ( नर )  
 केवक जव्यजीव अत्यंत शुद्ध जाव धरतेजये अहमादि तप कर  
 के युक्त कल्पसूत्रजीको वांचते हे नर सुणनेवाले प्रमाद निडा वि  
 कथा ठोरुके अहमादि तप करके एक चित्तसे शुद्धजाव रखके एक  
 बीस बेर सुणते हे, सो जव्य देवगतीकों प्राप्त होके तीसरे जग सि  
 द्विस्थानकों प्राप्त होते हे ॥ इस पर्यूपणपर्वका महोच्चव जो जव्य  
 जीव करते हे सो धन्य हे, धर्मके प्रजावीक हे, अपनी लक्ष्मीसे  
 धर्मका उद्योत करते हे. उस पुण्यात्माकों देव सहायता करते हे नर  
 नमस्कार करते हे ॥ (अब कल्पसूत्रजोका महात्म कहते हे ॥ यह  
 कल्पसूत्र नवमेंपूर्वसे उहरण कियाजया दशाश्रुतस्कंधका आठमा  
 अध्यायन हे सर्व श्रीसंवके मंगलके कारण श्रुतकेवली श्रीजद्रवाहु  
 स्वामी प्रसिद्ध किया हे. यह श्रीकल्पसूत्रके अनंते विषय हे. जेसे  
 सर्व नदीके बालू के कण होय उससे जौ एक सूत्रके अनंते विषय हे.  
 इस कल्पसूत्रका महात्म जो देवाचार्य हज्जार जीज करके कहे  
 तोजौ महात्मका एक अंस जौ कह सकता नही एसा इस पर्वका  
 महात्म जाण जो जव्यजीव शुद्ध जावसे सेवन करेंगे सो अनेक तरे  
 से रुद्रि वृद्धी सुख सौजाग्य कों प्राप्त होंगे नर परजवमें देवादिकं  
 रुद्रि पाषके मुक्तिसुखकों प्राप्त होंगे ॥ इति पर्यूपणपर्वधिकारः६॥

॥ अथ आश्विन मास मध्ये पर्वाधिकारः ॥

॥ आसोज महीनेमें मिति आसोज सुदि ७ से लेके आसो  
 ज सुदि १५ तक नवपदजी की नली तथा अष्टापदजीकी नली  
 विधिसंयुक्त करै. सो सब विधि पहली लिखो हे उसी माफक करै॥

॥ अथ कार्तिक मास मध्ये पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ कार्तिक महीनेमें मिति कार्तिक वदि अमावस हे सो दी-



पमालिका नामसें पर्व प्रसिद्ध है. यह दीपमालिकापर्व कवसें जया सो लिखते है. चौबीसमे तीर्थकर श्रीमहावीरस्वामी समस्त साधु साध्वी साथ विचरते अके अतकी चोमासी मध्यनपावापुगीमें आयके रहे, उहा आगामीकालकी सर्व बात जयजीवोंके सामने निरूपण किया, फेर अपणा अंत समय जाण के हस्तपालराजाके शुक्रशालामें आयके रहे अपणे पर गौतमस्वामीका बहुत खेद देख के निजीक गाममें देवशर्मा ब्राह्मणकों प्रतिबोध देखेकू जेजा पि गानी पद्मासन धारण करके शोले पहर तक अखंड देतना देते जये बहुतर वरतका आयू पूरण पालके इसी अमावासके दिन पि गली दो घन्टी रात रहणेसें सिद्धिस्थानकों प्राप्त जये जिस समय जगवतका निर्वाणकल्याणक जया उस समय चौसठ इंद्र देवतागणके आणे जाणेसें वना उद्योत जया, नर जो राजा पोपधमें बैठे जयेथे सो जावउद्योतका अस्तपणा देखके सब जगे रत्न धरके उद्योत किया. एकमके प्रजात समें देवतोंका आणा जाणा नर वचन सुणके श्रीगौतमस्वामीकूं केवलज्ञान उत्पन्न जया. दूजके दिन सुदर्शना वहिन अपणे जाई नंदिवर्द्धनराजाकू घरमें बुलाके जीमाया, शोक दूर कराया जिससें जाईबीज प्रवर्त्तन हुई इससें यह दीवाली पर्व वना उत्तम है इस दिवालीकी रातकू जो गुणना करते है सो लिखते है ॥ ॥ श्रीमहावीस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ श्रीमहावीरस्वामी पारगतायनमः ॥ श्रीगौतमस्वामी सर्वज्ञायनमः ॥ इस एक२ पदको १००० गुणनो करे, उपवास करे, रात्रीजागरण करे, निर्वाणकल्याणककी आरती करे ॥ स्तवन बोलै । निर्वाणकल्याणकका अधिकार सुणें । गौतमरास सुणें इत्यादिक उदारचित्तसें सर्व ठिकाणें दीवालीपर्वका उजव करणा चाहियै ॥ दिवालीका स्तवन पूर्वे लिखा है सो पढे ॥

॥ अथ ग्यानपंचमी पर्वाधिकार लिख्यते ॥

॥ दूसरा काती महीनेमें कार्तिक सुवि पंचमी सो ज्ञानपंचमी नामसें पर्व प्रसिद्ध है. इस दिन सर्व जन्मजीवोंको ज्ञानका विशेष आराधन करणा चाहिये. ज्ञानके समान संसारमें उत्तम पदार्थ कुछ नही है. सर्व तत्वमें ज्ञानके समान कोई तत्व नही. मोक्षमार्ग साधनकूं ज्ञान समान कोई उपाय नही. इस ज्ञानपंचमीके आराधनसें अनेक दुष्कर्म नाशहोय. गूंगापणा, मूर्खपणा, वक्रपणा, और कोढ़ादिकरोग सर्व दूर होय. अनुक्रमें ज्ञानावरणी कर्मके ह्य होणसें पाचो ज्ञान प्रगट होय. जैसें वरदत्त गुणमंजरी के रोगादिकके सर्व उपद्रव दूर होके मनोरथ पूर्ण जये, इस तरे जो ज्ञानपंचमीका आराधन करेगा उसका मनोरथ पूर्ण होगा ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमी देववंदन विधि ॥

॥ प्रथम पवित्र स्थानक चौकीपट्टे पर ग्यानकों स्थापन करै, उसके आगे पाच साश्रिया करै, फल फूल प्रगुल चढावे, पाच बत्ती का दीपक चढावे, अगर कपूरका धूप खेवै, पूजा पढेके वासुदेव कपूरसें ज्ञानपूजा करै, यथाशक्ती रोकद्रव्य चढावे तथा पूजा विटागणादि चढावे. ( ज्ञानपूजा लिखते है ) नमंतिसानंतमहीवनाहं, देवायपूयंसुविदेयपूर्विं ॥ ज्ञत्तीयचित्तमणिगामएहि, मंदारपुण्ड्रपमवेहि नाणं ॥ १ ॥ तद्देवसह्यामणिमुत्तिएहि, सुगंधपुष्पेहिवरसएहि ॥ पूयंतिवंदतिनमंतिनाणं, नाणस्तन्नाज्जायन्नवस्त्वथाय ॥२॥ यह गाथा पढेके ज्ञानपूजा करै. (इस तरे द्रव्यपूजा करके पीठे ज्ञानपूजा करे सो लिखते है) खमासमण दे के । इरियावही पमिद्धमें । लोगस्न कहे । वेठके । मुंहपत्ती पमिलेहे । अणूजाणह मेमिउगह (इत्यादिक) दो वादणा देवे, पीठे पाच खमासमण दे के ज्ञानका नमस्कार कहै ॥

॥ अथ ज्ञाननमस्कार लिख्यते ॥ सकल वस्तु प्रतिज्ञात ज्ञानु

निरमल सुखकारण, सम्यग्दर्शन पुष्टहेतु जवजलनिधि तारण ॥ तं  
 यमतप आनंदकंद अन्नाण निवारण, मार विकार प्रचार ताप तापि  
 त जिन ठारण ॥ १ ॥ स्याद्वाद परिणाम धर्म परणति पद्मिरोद्दण,  
 साहु साहुणी संघ सर्व आराधन सोहण ॥ मोह तिमर विध्वंससूर  
 मिथ्यात्व पणासण, आतमशक्ति अनंत शुद्ध प्रच्युता परगासण ॥  
 ॥ २ ॥ मति श्रुति अबधि विशुद्ध नाण मणपङ्कज केवल, जेद प-  
 चास द्वायोपसमिक एक द्वायिक निरमल ॥ दोय परोक्ष प्रथम तिहा  
 डुग परतद्ध दीसत, सकल प्रतद्ध प्रकाश ज्ञास भ्रुव केवल अपर  
 मित ॥ ३ ॥ धर्म सकलनो मूल शुद्ध त्रिपदी जिन ज्ञासै, बाहिर  
 अग प्रधान खंघ गणधर सुप्रकाशै ॥ शाखा श्रीनिर्युक्ति ज्ञाप्य पद्मि  
 शाखा दीपै, चूरण टीका पत्र पुष्प सशय सध जीपै ॥ ४ ॥ पंचां  
 गो सार बोध कह्यो जिनपंचम अंगै, नंदो अनुयोगद्वार शाख मा-  
 नो मनरगे ॥ वीर परंपर जीत अनुभव उपगारी, अज्यासो आग-  
 म अगम निरुपम सुखकारी ॥५॥ मोहपक हर नीर सम सिद्धत  
 अवाधै, देवचड् आणा सहित नयजग आराधै ॥ ए श्रुतज्ञान सोद्द  
 मणो सकल मोक्ष मुखकंद, जगते सेवो जविकजन पामो परमा  
 नंद ॥ ६ ॥ इति ज्ञानस्तुति ॥ इत्यादि नमस्कार कहके । एमो  
 स्थुणं० जावंतिचेइयाइं० जावंतिकेविताहू० नमोर्दित् सिद्ध० । कह-  
 के ॥ प्रणमु श्रीगुरुपाय० ॥ इत्यादि ज्ञानका स्तवन बोले, जयवी  
 यराय० कहै, वदणव० अन्नत्रू० कहके एक नवकारका कान्तसग  
 करै, थुई कहै ॥ ॥ अथ थुई लिखपते ॥ देविंदवंदियपएहिपरुवि  
 चाण, नाणणिकेवलमणोहिमईसुयाण ॥ पंचाविपंचमगईसियपं  
 चमीए, पूजातवोगुणरवाणजियाणदितु ॥ १ ॥ यह स्तुति कहके  
 ( ज्ञान आराधवा निमित्त करैमि कान्तसग ) नमस्तुत्तरी० अन्नत्रू०  
 कहके । जोगस्तका कान्तसग करै, ( पारके ) वो गगाय० ( इत्या-

दिगाथापढके) पीठे ॥ आनखिवोदियनाणं । सुयनाणं चैव न हिना  
 एव ॥ तद्दमणपङ्कवनाण । केवलनाणं चंपंचमयं ॥ २ ॥ यह गाथा  
 कइके । इच्छामिखमासमणो० श्रीमतिज्ञानायनमः १, श्रीश्रुतिज्ञा  
 नायनमः २, श्रीअवधिज्ञानायनमः ३, श्रीमनपर्यवज्ञानायनमः ४,  
 समस्त लोकालोकनास्कर श्रीकेवलज्ञानायनमः ५, इस तरे पांच  
 नमस्कार करै, थिरता होय तो ( ५१ ) ज्ञानके गुणोंको नमस्कार  
 करै, सो पूर्वे नवपदजीके गुणनेमें लिख्या है ॥ उस माफक करै  
 ॥ पीठे ( उँ ह्रीं लामोमाणस्त) इस पवका २००० गुणना करै, कम  
 थिरता होय तो इग्वारे अगकी सिझायों पढै वा सुणें, सो लिखते हे ॥

॥ प्रथम आचारांग सिझाय लिख्यते ॥

॥ ढाल हठीलानी ॥ पहिलो अंग सुहामणो रे, अनुपम आ  
 चराग रे ॥ सुगणनरा ॥ वीर जिनंदे जापियो रे लाल, उववाई जास  
 उवंग रे ॥ सु० १ ॥ बलिहारी ए अंगनीरे, हुं जाऊ वारंवार रे ॥ सु० ॥  
 विनये गोचरी आदरे रे लाल, जिहां साधुतणो आचार रे ॥ सु०  
 व० ॥ १ ॥ सुयखेंध दोष वै जेइना रे, प्रवर अध्ययन पचवीस रे ॥ सु०  
 ॥ उद्देशादिक जाणिये रे लाल, पिच्यासी सुजगोस रे ॥ सु० व० ३ ॥  
 हेतु जुगत कर सोजता रे, पद अठार हज्जार रे ॥ सु० ॥ अकरप  
 दने ठेहने रे लाल, संख्याता श्रीकार रे ॥ सु० व० ४ ॥ गमा अनंता  
 जेहमां रे, बलिखि अनंत पर्याय रे ॥ सु० ॥ अस परितो वै इहां  
 रे लाल, आवर अनंत कहाय रे ॥ सु० व० ५ ॥ निब्रह्म निकाचित  
 सासता रे, जिनप्रणीत ए जाव रे ॥ सु० ॥ सुणतां आतम उलसे  
 रे लाल, प्रगटे सहज स्वजाव रे ॥ सु० व० ६ ॥ सुगुण श्रावक  
 वारू श्राविका रे, अंगे धरिय उद्घास रे ॥ सु० ॥ विधिपूर्वक तुमे सा  
 जलो रे लाल, गीनारथ गुरु पास रे ॥ सु० व० ७ ॥ ए सिद्धंत  
 महिनानिलो रे, ऊतारे नव पार रे ॥ सु० ॥ विनयचंद्र कहे मादरे

विमलाय ॥ ग्यान पिचरको पकरकै, वारी भुगतिवधू चित लाव ॥  
हो० ३ ॥ एसा साज वणायकै रे, रूपजदेव गुण गाय ॥ श्रीजिन-  
नचइ इम खेलतां, वारी जव२ पातिक जाय ॥ हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसत होरी तालमत् ॥ जय बोखो रे पास जिने-  
सरकी, ज० ॥ मस्तक मुगट सोहे मनमोहन, अंगिया सोहे केसर-  
की ॥ ज० १ ॥ त्रिजुवन ज्योति अखंभित तनकी, श्यामघटा  
जैसी जलधरकी ॥ ज० २ ॥ बालपणे प्रभु अदभुत ज्ञानी, करुणा  
कीधी विपधरकी ॥ ज० ३ ॥ कमठ उमाय वाय ज्युं वादल, जीत  
करी अपणे धरकी ॥ ज० ४ ॥ मातवामा उदरे जिन जाया,  
राणी अश्वसेन नरेसरकी ॥ ज० ५ ॥ अष्ट करमदल सबल खपा-  
ये, श्रेणि चढ्या जे शिवपुरकी ॥ ज० ६ ॥ कहै जिनचंद्र मेरे प्रभु  
पारस, जैसी छाया सुरतरुकी ॥ ज० ७ ॥ इतिपद ॥

॥ पुनः वसंतहोरी ॥ मधुवनमें जाय मची होरी, म० ॥ ग्यान  
गुलाल अवीर उमावो, सुमताकेसर रग घोरी ॥ म० १ ॥ अमृत  
रूप धरम जिनवरको, शुध क्रमा कहै करजोरी ॥ म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन वसंतहोरी ॥ यादव मन मेरो हर लियो रे, या० ॥  
संजमदूती कान लगी जब, जिवनारी पर चित दियो रे ॥ या० २ ॥  
मोह गोन गिरनार सिधाए, नव जव नेह अलग क्रियो रे ॥ या०  
३ ॥ तुम हो तीन जुवनके साहिव, सुरनर कहै तुमे चिरंजीयो  
रे ॥ या० ४ ॥ वारु मेरो वडना होयज्यो, चद कहै मन  
हरखियो रे ॥ या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन वसंतहोरी ॥ इर सुण लै नाथ अरज मेरी, ५० ॥  
इह सतार गहर तरु सिधु, जमर पन्त जिहा जव फेरी ॥ ५० १ ॥  
क्रोधादिक बहु मगरमछ हे, अहत जतु न करत देरी ॥ ५० २ ॥  
एसें जलधिसें पार करो तो, तारण तरण विरुद तेरी ॥ ५० ३ ॥

धरमजिनेसर जगपरमेसर, दूर करो डखकी वेरी । ६० १ ॥ परम  
 क्षमागुण दायक लायक, अनुपमकीरत जग तेरी ॥ ६० ५ ॥ इति ॥

॥ पुनःहोरी ॥ सांवरो सुखदाई, जाकी ठिव वरणी न जाई  
 सा० ॥ श्री ॥ अश्वसेन वामा नंदकी, कीरत त्रिजुवन गई ॥ समे-  
 तसिखरगिरि मंरुण प्रजुभे, देख दरस हरखाई—हृदय मेरो अति  
 हुलसाइ ॥ सां० १ ॥ आज हमारे सुरतरु प्रगढ्यो, आज आनंद वया  
 ई ॥ तीन जुवनको नायक निरख्यो, प्रगटी पूर्व पुन्याई—सफल  
 मेरो जनम कहाई ॥ सां० २ ॥ प्रजुके दरस सरस विन पाये, ज-  
 वश जटक्यो में जाई ॥ अश्व प्रजु चरण सरण चित चाहत, बाल  
 कहै गुण गाई ॥ प्र० सां ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः वसतहोरी ॥ नेना हरखाई, आज तेरी सूरत निर  
 खी ॥ ने० ॥ जवश सचित षाष करम सब, देखत दूर पुलाई, सु  
 मति वधारण कुमति विमारण, ज्ञान विमल जलसाइ ॥ आ० १  
 ॥ वामानंदग अति ठवि सुंदर, महिमा वरणी न जाई ॥ दीनद-  
 याल दयाकर दीजै, आनंद हरख सदाइ ॥ आ० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफीमें होरी ॥ एसें फागुण मस्त महीने च  
 लोरी, देखो स्वाम सखी मोपै ठोरी ॥ एते० ॥ ब्रजकी सखी सब  
 वनश निकसी, खिलत मिलश होरी ॥ नारे गुलाल अश्वीरमुठोजर, अप  
 ने प्रीतम रंगरोरी ॥ च० ए० १ ॥ फूलत फूल सजी वनशके,  
 मधुरर रस जोरी ॥ कलि कोयल कल करत मरत विन, प्रियतमर  
 गौरी ॥ च० ए० २ ॥ रत अनरस रात रसे रस, सरस दरस  
 प्रजु मोरी ॥ प्रो १ तजी सुमता ममता मन, बाल कहै कर जोरी ॥  
 च० ए० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग काफी होरी ॥ नेम स्वामसें कहियो मोरी, ने० ॥  
 समुद्रविजै शिवादेवीको नंदन, यादवकुल उदयो री ॥ तेजपूज तनु

मकुमार ॥ ग० ॥ इक दिशि सायर जल जरथौ, दिशि दूजी गिर  
 वर गिरनार ॥ विच सहसावन सोजतौ, तिण माहे खेले नेमकु  
 मार ॥ ग० १ ॥ फूड्या केवना केतकी, विच फूड्या मरुग्रामचक्रुद  
 ॥ वासै मोगरा मालती, तिण माहे खेले नेमजिषांद ॥ ग० २ ॥  
 आवा मोरथा वागमें, तिण ऊपर कोयल करे टट्टुकार ॥ वाजै  
 पवन दक्षिणतणी, स्यामजमरा कर रह्या रे गुजार ॥ ग० ३ ॥ आं  
 व पके नींबू पके, नारंगी पके तूत अनार ॥ काचै नेमकुमार अजुं  
 नही, नारी ऊपर जसु प्यार ॥ ग० ४ ॥ हरि हलार गोपि मिली,  
 विच घेरयो श्रीनेमकुमार ॥ सोवन सीसी जलजरी, मुख ऊपर ठा  
 टे यडुनार ॥ ग० ५ ॥ नेम हठी हठ ना तजै, समजायो जोरें य-  
 डुनाथ ॥ रिद्धरप वाचक कहै, वात साजलो शिवादेवी मात ॥ ग० ६

॥ पुन होरी ॥ धन राजुल तेरो जाग री, नेमनाथ वर  
 पायो री सजनी ॥ ध० ॥ पहिली में पूजू रूपज्जिणदा, जिण  
 मोहि दियो सुहाग री ॥ ने० १ ॥ सोनेको ठत्र धरयो सिर ऊपर,  
 गल मोतियनकी माल री ॥ ने० २ ॥ चपा चपेली दोनुं मरुआ,  
 फूल चढाज गुलाब री ॥ ने० ३ ॥ धूप दीप नैवद्य आरती, मुख  
 बोळो जयकार री ॥ ने० ४ ॥ ग्यानमदिरकी एहि वीनती, जवर  
 दीज्यो दीदार री ॥ ने० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ राग वसंत ॥ ऐसी होरी तो हो रही चगानगरमें, फा-  
 गणके दिन आये ॥ ऐ० ॥ वासुपूजजीके नवल मरुपमें, होय रही  
 हो सुखदाए ॥ ऐ० १ ॥ केसर घोरी जरिय कचोरी, प्रजुजीके अं-  
 गियां रचाए ॥ ऐ० २ ॥ चोवा चदन श्रवर श्ररगजा, लाल गुलाब  
 उभाए ॥ ऐ० ३ ॥ विविध जातिकी पूजा रचाए, रन्नसुंदर चित  
 लाए ॥ ऐ० ४ ॥ इति पद ॥

॥ रागवसंत ॥ बलिहारी हु विमलाचल गिरकी, व० ॥

निनिम्न डुरित ज्ञर शिखर ज्ञि डुरकी, ज्ञवसागर तारण तरकी ॥  
 व० १ ॥ तीन ज्ञुवन तीरथ तारागण, सोज्जा लक्ष्मि निशाकरकी  
 ॥ व० ॥ सुन्दर अनुपम अतिसय करिँके, महिमा जीती सुरगिरकी  
 ॥ व० २ ॥ परमात्म पद प्रतिविब तनकी, वंठित पूरण सुरतरु-  
 की ॥ व० ॥ वर सोरठ मंरुल मंरुनकी, सकल करम रज जल-  
 धरकी ॥ व० ॥ बलि बलिहारी वारंवारी, श्रीनाज्ञेय ज्ञिनेसर-  
 की ॥ व० ३ ॥ ए गिरि उदयाचल परि जिनकी, डुति दीपे जेम  
 दिनेसरकी ॥ व० ॥ असरण सरण प्रथम जिनवरकी, अगणित क-  
 रुणासागरकी ॥ व० ४ ॥ युगलाधरम निवारण की सहु, तीन ज्ञु-  
 वन जनहितकरकी ॥ व० ॥ सोवन वरण सरीर विराजित, वृपज्ञ  
 लंठन सोज्जाधरकी ॥ व० ५ ॥ सुन्दर प्रज्जुकी मोहनमूरति, देखत  
 परमानंद ज्ञरकी ॥ व० ॥ केवलकमला प्रज्जुकी निरतर, पदतल  
 नमत सुरासुरकी ॥ व० ॥ चरण सरण होयजो शिवचंदकै, ज्ञवश्  
 एहिज जिनवरकी ॥ व० ॥ ७ ॥ इति पद ॥

॥ रागवसंत ॥ ऐसे प्रज्जु नेमनाथ, भेरे दिल बसिया ॥ ऐ०॥  
 त्रिगढमें विराजमान, डुडु ज्ञि सुणत कान ॥ अपठर मिल करत  
 गान, तान मान रसिया ॥ ऐ० १ ॥ सिधासश गिराजै साम, जीत  
 लिए रूप काम ॥ देख्या दिल हर्ष धाम, स्वाम नाम लसिया ॥  
 ऐ० २ ॥ तीन ठत्र चमर सार, पंच वर्ष पुष्प धार ॥ गहिर अ-  
 सोक सार, ज्ञामंरुल हसिया ॥ ऐ० ३ ॥ दिव्यधुनी मिली चग,  
 द्वादश वखाणै अग ॥ अष्ट प्रतीहार संग, कुसटा चित्त बसिया ॥ ऐ० ४ ॥

॥ रागवसंत ॥ संज्ञवजिन सुखकारी, हो लाला, सं० ॥  
 हारे हो रे लाला ॥ सं० ॥ एक अरज अवधारो हमारी हो लाला  
 ॥ सं० ॥ ज्ञाता तीन ज्ञुवनके जगगुरु, दाता विस्द विचारी ॥ साता  
 दीजै साहिव मोकू, तक आयो सरण तिहारी हो लाला ॥ सं० १ ॥



सेनामात उयर अरवतारी, जयवत तात जितारी ॥ प्रभु पदकज  
 छंठन अधिकारी, अश्वरतन अनुहारी हो लाखा ॥ सं० २ ॥ साठ  
 पूरव लख आयु अरवगाहन, अनुप च्यारसे धारी ॥ सोइन वरण  
 सेवे छुरितारी, सावत्री नगरी सारी हो लाखा ॥ सं० ३ ॥ समेत  
 सिखर पर सुगत सिधाए, सहस साधु परिवारी ॥ इन्द्रादिक मिल  
 मंगल गावत, नाचत नाग कुमारी हो लाखा ॥ सं० ४ ॥ त्रिकरण  
 सुद्वसें त्रिभुवन पतिकु, वदना होष्यो हमारी ॥ चरणकमल सेवा  
 चित चाहत, सुगुण सदा हितकारी होलाखा ॥ सं० ५ ॥ इति पद ॥

॥ रागवसत होरी ॥ सारो सोरठ देस दिखावो रसिया,  
 सा० ॥ सोरठ देसमें नीकै दोय तीरथ, गढगिरनार सेत्रुंजगिरिया ॥  
 सा० १ ॥ रेवतगिर पर जडुपति केरा, दिखवा ग्यानकेवल रसि  
 या ॥ सा० २ ॥ राजुलनारी नेमोसर हाथै, सजम लेइ जवोदधि  
 तरिया ॥ सा० ३ ॥ सैत्रुजगिर पर श्रीरिसहेसर, पूरव निनाणुं  
 समोतरिया ॥ सा० ४ ॥ इहा अणगार अनंत अपारा, अणसण कर  
 सिवपुर वरिया ॥ सा० ५ ॥ नाजनंदनकू करु जुहारा,  
 सा० ६ ॥ हीण अमारने होत लगारा, ज्ञानविमल प्रभु सिर धरिया  
 ॥ सा० ७ ॥ इति पद ॥

॥ राग वसत ॥ जिनराज जुहारो, क्या बैठे जव हारो रे ॥  
 जि० ॥ रथ पाउधारे चदाप्रभुजी, नयणे आय निहारो ॥ शुचि त  
 न कर हियरा हरख जरे, प्रभु पूजो प्राण पियारो ॥ जि० क्या०  
 १ ॥ पूरण पुन्य उदयथी पायो, नरजव सफल जमारो ॥ जवि  
 जन मन जमरा रंग जरे, प्रभु चरणकमल चित धारो ॥ जि० २ ॥  
 जवडुख जंजननाथ निरजन, नाम लीये निसतारो ॥ ममता तज सम  
 तासग जेली, निज आतम काज सुधारो ॥ जि० ३ ॥ आज नगरमें  
 रंग बवाई, घरइ भगवाचारो ॥ रथ मद्दोभव रचना रची हद, मुख

जयरं सबट उचारो ॥ जि० ४ ॥ पतित उधारण विरुद्ध विचारी,  
सेवक सुगुण संज्ञारो ॥ प्रच्यु पंकजकी द्विव सरणा ग्रही, जवसा  
यर पार उतारो ॥ जि० क्या० ५ ॥ इति पदं ॥

॥पुनः होरी॥ मनमोहन गज गतकी गामनी, आज चली  
गिरनार कामनी ॥ मन० ॥ सुंदर रूप वषाय सखी सब, शिखर  
सैल जेसें चमके दामनी ॥ आ० १ ॥ नेमप्रच्युको व्याह मनायो,  
मोसें प्रीत लगाइ शामनी ॥ आ० ॥ तौरण आय चले मोहि ठोनी,  
कोन चूक धोपै काढी जामनी ॥ आ० ॥ २ ॥ में न तलूंगी  
नव जव केरी, प्रीत वणी जेसी इंडु यामिनी ॥ आ० ॥ रा-  
जुल पहली प्रीतमसेती, बाल कइ नई सुमति गामिनी ॥ आ०  
म० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ रंग लख्यो मुरु ज्ञान, होरी चेतन खेल ॥  
रं० ॥ शील सुरंगी चीर मंगाये, बहिरे आप सुजान ॥ हो० रं० १ ॥  
पर मंदिर तज अविचल लीजै, धर्म दया धर ध्यान ॥ हो० रं० २ ॥  
द्विख मिल आप परम रस चाखै, सुमत सखी पहिचान ॥ हो०  
रं० ३ ॥ ज्ञान गुलाल लाल रंग लागै, सोहै अदच्युत वान ॥ हो०  
रं० ४ ॥ सुमति अवीर उभाय जगतमै, वैठै शिवपुर ध्यान ॥ हो०  
रं० ५ ॥ अनुजव राग मगन गुण गावै, तप जप सुंदर ध्यान ॥  
हो० रं० ६ ॥ एसा खेल जविकजन चारै, वंजित पावैदान ॥ हो०  
रं० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ चिदानंद खेले फाग, हो हो होरी आई ॥  
मनमृदंग वजै तन मांही, गावत आगम राग ॥ हो० १ ॥ ज्ञान  
गुलाल सदा रंग लागै, खेलत सुमत सुहाग ॥ हो० ॥ समकित  
केसर चीर रंगाज, पहिरो मनवैराग ॥ हो० २ ॥ लाख चोरासी रा-  
मत ठानी, च्यारुं गतिसै ज्ञाग ॥ हो० ॥ अविचल सुख पंचमगति

पावै, योग जतन कर जाग ॥ हो० ३ ॥ एमा खेल जविकंजन  
 धारै, पावै जवजल आग ॥ हो० ॥ चेतनता सुद्ध होय जगतमें,  
 समकृतके रग लाग ॥ हो० ४ ॥ इति पदम् ॥

पुन. होरी ॥ होरी खेलो नेमसें धायर, डुरजनकी लाज  
 मेरी करे रे बलाय ॥ हो० ॥ ज्ञानगुलाल अवीर उमावो, कृमा  
 करो रग लाय २ ॥ ड० हो० १ ॥ शील सजमव्रत पान मिठाई,  
 ध्यान धरुंगी में गाय गायर ॥ ड० हो० ॥ अष्ट कर्मकी खेह  
 उमावो, ज्ञान हियामें लाय २ ॥ ड० हो० ३ ॥ जगतचदकी अ-  
 रज वीनती, सरण गद्दी में तेरी जायर ॥ ड० हो० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुन. होरी॥ मेरी घटकी गागरिया रंगसे जरी, शिवपुरकी  
 वात पूवूं कवकी खरी ॥ मे० ॥ परमजोत प्रभु सिद्धशिला पर,  
 परमात्म निज ध्यान धरी ॥ मे० १ ॥ मोहन रग जस्थो रंग शी-  
 वपुर, अजर अमर पद सुख बरी ॥ मे० २ ॥ इति पद ॥

॥ पुनः होरी ॥ बावो रूपन वैठै अलवेसर, नारो गुलाल  
 मुठी जरकै ॥ बावो० ॥ मुठी जरकै पसली जरकै, बावो० ॥ चू-  
 आर चंदन नुर अगर्जा, केसरका मटका जरके ॥ बावो० १ ॥  
 रतनजमित शिर ठत्र विराजै, अंगी जनाव जमी जरकै ॥ बावो०  
 २ ॥ बाहै बाजूबंध बहिरखा विराजै, फूलनके गजरे सरके ॥ बा०  
 ३ ॥ नाजिराया मरुदेवीको नंदन, रमिथे जवि आदीसरसें ॥ बा०  
 ४ ॥ आदिखान हे दास तुमारो, तार लीओ अपणे करकै ॥ बावो० ६ ॥

॥ पुन' होरी राग टप्पो ॥ गिरिराजकुं हमारी वदना रे,  
 जिनराजकु हमारी वदना रे ॥ जव डुख वारण शिवमुख कारण,  
 देखत जवनही फदना रे ॥ जि० १ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नद-  
 न, प्रणमु रूपन जिनदना रे ॥ जि० २ ॥ निशि वासर प्रभु ध्यान  
 तुमारो, जिम चातक दिल चदना रे ॥ जि० ३ ॥ चतुर कुशल कहै

शरण तुमारो, सिद्धगिरि कर्म निकंदना रे ॥ गि० ४॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ दरशन कीयो आज शिखरगिरिको, द० ॥  
देख्यो मधुवन शीतानालो, नीर वहे वै अति नीको ॥ द० १ ॥ वी-  
स कोसथा दरसन ठीगो, जागो जरम सकल जियको ॥ द० २ ॥  
वीसे टूँके वीस गोमटनी, तामे चरण जिनेसरको ॥ द० ३ ॥ अब  
जिनवरके शरणे आयो, रसतो पायो मुगतिपदको ॥ द० ४ ॥ ५०

॥ पुनः होरी ॥ सिद्धगिरिजीको दरसन करलै, संघयात्रा-सं-  
घयात्रा करणसैं पाप कटत हे, सिद्ध० ॥ कोटि अनंता इण गिरि  
सीधा, ताकू शीस नमाय ले ॥ संघ० १ ॥ रूपज्ज जिनेश्वरजीको  
दरशन, शुद्ध आतम पावन करलै ॥ संघ० २ ॥ रूपचंद कहै  
नाथ निरजन, जवश्का पुख हरलै ॥ संघ० ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मोहे अपने रंगमें रंगदे, मेरे साहिव आदि  
जिनंद चद ॥ मोहे० ॥ रंग तूँही रंग रे ज तूँही है, संजम रंग  
मोहि रंगदै ॥ मेरे सा० मो० १ ॥ रंग मिथ्यात लग्यो हे अना-  
दिको, नो अब इनकूं खिनदै ॥ मेरे सा० मो० २ ॥ रत्नत्रयी रु-  
दि तेरी में देखी, सो अब मुऊकुं सज्जदे ॥ मेरे सा० मो० ३ ॥  
ज्ञान दर्शन चारित्र रंग हे, बा विच केवल धरदे ॥ मेरे० मो० ४ ॥  
ज्वरदास कहे समकित हे, आप समान मोहि करदे ॥ मेरे० मो० ५ ॥

॥ पुनः होरी ॥ मेरे पारसप्रजुजीके रगमंरुपमें, खेलत संत  
वसंत ॥ ज्ञान गुलाल विवेक अरगजा, विनय अवीर विलसंत ॥  
॥ मे० १ ॥ प्रजुगुण प्रेम पिचरकी ठूटत, समता सखिय मिलत  
॥ आगम लहर फूली फुलवामी, मुनिवर ब्रमर गुंजंत ॥ मे० २  
अंग आजूषण पर्वेइय वस, गुरुसेवास लहंत, वार जावना ग-  
हिर कसूंवा, पीवत मन हरखंत ॥ मे० ३ ॥ अदज्ञूत पंच माहा  
व्रत वागा, पहिरे तन सोहंत ॥ कहै जिनचड प्रजुकी कृपासैं, नी-

रखे नवल वसंत ॥ मेरे० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन होरी ॥ रंग मन्व्यो जिनद्वार चालो खेलिये होरी,  
 रं० ॥ पास प्रभु दरवार रे ॥ चा० ॥ फागणके दिन च्यार रे, चा०  
 कनक कचोरी केसर घोरी, पूजो विविध प्रकार रे ॥ चा० १ ॥  
 कृष्णागरकी धूप घटत हे, परिमल महके अपार रे ॥ चा० २ ॥  
 लाल गुलाल अवीर उन्नावत, पासजीकै दरवार रे ॥ चा० ३ ॥  
 नर पिचकारी गुलाबकी ठिरको, वामादेवी कुमार रे ॥ चा० ४ ॥  
 ताल मृदंग वीण रुफ वाजै, जेरी जुगल रणकार रे ॥ चा० ५ ॥  
 सब सखियन मिल नाटक करकै, गावत मंगल सार रे ॥ चा० ६ ॥  
 ॥ रत्नसागर प्रभु ज्ञावना ज्ञावै, मुख बोलै जयकार रे ॥ चा० ७ ॥

॥ पुन होरी ॥ नेमजीसे कहियो मोरी, सामरेसैं कहियो  
 मोरी ॥ तोरण आए किरण नरमाए, ठोरु चलै अजिमाणी ॥ हा  
 रे लाला ठे० ॥ पशुवनके शिर दोष चढायो, तोम्नी प्रीत पुरानी-  
 दया दिलमें नहि आणी ॥ सा० १ ॥ चूक पत्नीसो मुंहसैं कहियो,  
 ना करिये सोधाणी ॥ आठ जवोकी प्रीत बघाणी, नवमे चले क्यु  
 ज्यानी—श्याम तेरी सूरत पिठाणी ॥ सा० २ ॥ या जोरी जुगमें  
 बेह लागी, राजुल गुलकी वानी ॥ वीनती सुणकै अमर पद दीजै,  
 रंग विजय सुख दानी—आवा नर गमन ठिदानी ॥ सा० ३ ॥ ५०॥

॥ पुन होरी ॥ महाराजा तोरे मंदिरमे बरसै रंग, जिन०  
 ॥ श्रीचिंतामणि पासजी, तोरे० ॥ ज्ञान गुलाल अवीर अरगजा,  
 सुमता चीर सुचग ॥ श्रीचि० तोरे० १ ॥ अनुजव लहर फुली फु-  
 लवानी, दिन२ बढते रंग ॥ श्रीचि० तोरे० २ ॥ उपशम वागा  
 अग अनोपम, शुक्र ध्यानके संग ॥ श्रीचि० तो० ३ ॥ अमरचद  
 चिंतामणि चित धर, तुजसुं अविह्वर रंग ॥ श्रीचि० तो० ४ ॥ ५०॥

॥ पुन. होरी ॥ तोरी अंगिया वणी हे सुरग, श्रीचिंतामणि

पास प्रचूजी, तोरी० ॥ सुविवेकी श्रावक मिल आधे, आणी ज्ञाव  
 अन्नंग ॥ श्रीचि० तोरी० १ ॥ ग्रहबंधीकी ज्ञात ज्ञानी हे, वुंटिया  
 नवश रंग ॥ श्री० ॥ जरकस जामो खूब वन्धो हे, कोर केवना  
 संग ॥ श्रीचि० १ ॥ मस्तक मुगट काने दोय कुंमल, वाजूबंध  
 सुबंध ॥ श्रीचि० ॥ फूलनकी गल माल सोजत है, सौरंग वास  
 सुगंध ॥ श्रीचि० ३ ॥ त्रिचुवन साहब तखत विराजै, महिरवान मनरंग  
 ॥ श्रीचि० ॥ सुरनर याकी सेवा करत है, रात दिवस धर रंग ॥  
 श्रीचि० ४ ॥ सुनिजर है साहिबकी सब पर, संघ हे सकल सुरंग  
 ॥ श्रीचि० ॥ ज्ञावना ज्ञावो जिनगुण गावो, अमर धरै उठरंग  
 ॥ श्रीचि० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन. होरी ॥ चिंतामणि चिन ध्यावो रे, वठित फल पा-  
 वो ॥ चि० ॥ सकल जविक जन मिल कर आवो, राग फाग गुण  
 गावो रे ॥ वंठित० १ ॥ अजीर गुलाल लाल सग लावो, जरर मु-  
 ठिया उठावो रे ॥ वंठित० चि० ॥ कुंकुम केसरकुं ठिम्कावो, ज्ञा-  
 व शुक्ल जल ज्ञावो रे ॥ वंठि० चि० २ ॥ अंगी चंगी पुहप व-  
 नावो, दीपक ज्योति दीषावो रे ॥ वंठित० चि० ॥ दरस सरस  
 करके सुख पावो, पुण्य जंमार जरावो रे ॥ वंठित० चि० ३ ॥ वा-  
 जित्र वाजाविविध वजावो, नृत्य संगीत नचावो रे ॥ वंठित० चि०  
 ॥ अमरलिंगुर आनंद वजावो, जिनजीमें लयलावो रे ॥ व० चि० ४ ॥

॥ पुनःहोरी ॥ मत मारो पिचकारी रे, में तो सगरी जीज  
 गई ॥ म० ॥ ताल मृदंग वजत मनमाहि, गवत आगम राग ॥  
 लाल में तो स० १ ॥ ज्ञान गुलाल सदा रंग लागे, खेलत सुमति  
 सोहाग ॥ लाल मे० २ ॥ समकितकेसर चीर रंगानं, पहिहं मन  
 वैराग ॥ लाल मे० ३ ॥ लख चोरासी रामत ठोरु, धारों गति  
 सोहाग ॥ पिथा में तो० ४ ॥ एसा खेल खेले सब प्यारी, शिव-

सुंदरी वर मांग ॥ लाल में० ५ ॥ ज्ञानसागर प्रभु विविध प्रकारै,  
इण विध खेले फाग ॥ पिया में० ६ ॥ इति पदं ॥

॥पुन होरी॥ नेम मिले तो वाता कीजिये, हो प्यारे जिन-  
जी, नेम० ॥ मे हुं तुमारी खिजमतगारी, प्रेमका प्याला पीजीये ॥  
हो० ने० १ ॥ हम हे केतकी तुमहो २ जमरा, फिर वासना लीजीये  
॥ हो० ने० २ ॥ में हू धरती तुम हो मेहला, कबहु तो मिलना  
कीजीये ॥ हो० ने० ३ ॥ नेम राजुल मिल मुगति सिवाए, रूपचदपद  
ठीजीये ॥ हो० ने० ४ ॥ इति पदं ॥

॥पुन. होरी॥ आतम तत्व विचारो ज्ञानसें, करम कटेज्युं शुद्ध  
ध्यानसें ॥ आ० ॥ पुदगल जीव स्वरूप पिठाणयो, ममता मिट  
गई सारी जानसें ॥ कर्म क० आ० १ ॥ क्रोधादिक अरि अंधकार  
सम, नास जयो सब ज्ञानज्ञानसें ॥ कर्म क० आ० २ ॥ परमात्म  
पद पावत सोई, विनय जजत पद अचल ध्यानसें ॥ कर्म० आ० ३ ॥

॥ पुन होरी ॥ लाल तेरे नयनोकी गति न्यारी, एतो उपस-  
मरसकी क्यारी ॥ लाल ते० ॥ काम क्रोधादिक दोष रहित हे,  
नयन जये अविकारी ॥ निज्ञा सुपनदशा नहि यामें, दर्शनावरण  
निवारी ॥ लाल ते० १ ॥ और नयनमें काम क्रोध हे, बहोत  
जरी हे खुमारी ॥ पर धन देख हरणकी इच्छा, यामें हे हुसिया-  
रो ॥ लाल ते० २ ॥ एसा लज्जन हे नयनोमें, क्युं पामे जव पारी,  
योही विचार करो दिल अपनें, होत कर्मसें जारी ॥ लाल ते० ३ ॥  
धर्म विना कोई सरणा नही हे, एसो निश्चै घारी ॥ विनय कहै  
प्रभु जजन करो नित, योही तारनहारी ॥ लाल ते० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन होरी ॥ दर्शन विन जीवससार जम्यो, द० ॥ चो-  
रासी लख योनिमे जटकत, लहि मानवजव युही गम्यो ॥ द०  
१ ॥ पुन्य उदय श्रावक कुल पायो, बटमे ज्ञान उद्योत जयो ॥ द०

३॥ माया ममतामें निश दिन तू, विषय विकारसुं नहिं विरम्यो ॥  
 द० ३ ॥ सार विवेक धार रे चैतन, जटकत जवमें क्यु जरम्यो  
 ॥ द० ४ ॥ कहत कृमाकट्याण निरंतर, जज जगवंत तेरो पाप  
 शम्यो ॥ द० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ मत ठोसो मोने यूही रे, कोइ चूक वतावो  
 ॥ म० १ ॥ श्रवीर गुलाल जावसें रमतां, हमसुं कदिय न खेलो रे  
 ॥ कोइ० म० १ ॥ रथ फेरी प्रजुजी घर आये, चढिया गढ गिरनारी  
 रे ॥ को० म० २ ॥ बहुत हठासुं व्याह मनायो, जीव देख दया  
 आणी रे ॥ को० म० ३ ॥ राजुल ऊज्जी अरज करत हे, एक वार  
 फिर जोवो रे ॥ कोइ० म० ४ ॥ नेमराजुल दोनुं मुगत सिधाए,  
 पहली राजुल नारी रे ॥ कोइ० म० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुनः होरी ॥ अटक्यो चित्त हमारो री, जिन चरण कमलमें  
 ॥ अट० ॥ शीतलनाथ जिनेसर साहिव, जिनवर प्राण आधारो  
 री ॥ जि० अ० १ ॥ माता नंदादेवीको नंदन, दृढरथ नृपको प्या-  
 रो री ॥ जि० अ० २ ॥ श्रीवठ लंछन जनम जदिलपुर, कुल  
 इक्ष्वाग उदारो री ॥ जि० अ० ३ ॥ नेत्र धनुष शरीर सुसोजित,  
 कनक वरण अनुकारो री ॥ जि० अ० ४ ॥ एक लक्ष पूर्व आयु  
 कहिये, नाम लिआं निसतारो री ॥ जि० अ० ५ ॥ दीनदयाल जगत  
 प्रतिपालक, अब मोहि पार उतारो री ॥ जि० अ० ६ ॥ हरखचंदके  
 साहिव सचे, हुं तो दास तुमारो री ॥ जि० अ० ७ ॥ इति पद ॥

॥ मंगल स्तवनं ॥ मंगल राजै गिरनार, नेमपद मंगल है  
 देवा ॥ म० ॥ मंगल राजेमती पद मंगल, मंगल रहनेमि धार ॥  
 ने० १ ॥ मंगल गणपति मंगल-पाठक, सब तपस्ती विच सार ॥  
 ने० २ ॥ मंगल धन ॥ मंगल सब ॥ ने० ३  
 ॥ जय २ खेमकुसल गुरु ॥ यवतार ॥ ने



॥ इम मास द्वादश तप सुतग्रह त्रिभिप्रपासे संयही, अति सुगम ज्ञाप प्रकाश करतां ज्ञव्यजन मन गद्गदी ॥ निधि बाण नद सुचङ् विक्रम माध सुवि पूनम सही, श्रीवृद्धतरतर गद्य पाठक रामगणि विधि इम कही ॥ १ ॥

अथ पंच कल्याणक टिपनिका स्वरूप मुच्यते ॥

॥ जिस महीनेमें जितने दिन जगदतके कल्याणकके हे सो सर्व ज्ञव्यजीवोंके सेवन करणे योग्य हे, लेकिन् कोण तिथिकुं कोणसा कल्याणक सेवन करणा सो जाणे विगर सेवन कर सकते नही ( और विशेषमें ) पच कल्याणककी तपस्वा करणेवाले ज्ञव्यजीवोंके अवश्य पचकल्याणककी टीप गुणें विगर काम चलता नही, इस वास्ते गुणने मुजब विधिप्रपासे पच कल्याणककी टीप लि०

॥ अथ पच कल्याणककी टीप लिख्यते ॥

कार्तिककृष्णपक्षे ॥ ५

कार्तिकशुक्लपक्षे ॥ २ ॥

५ श्रीसंज्ञवनाथजीसर्वज्ञाय०

३ श्रीसुविधनाथजीसर्वज्ञाय०

१२ श्रीपद्मप्रभुजीअर्हतेनम०

१२ श्रीअरनाथजीसर्वज्ञायनमः

१२ श्रीनेमनाथजीपरमेष्ठिनेन०

मार्गशीर्षशुक्लपक्षे ॥ ६ ॥

१३ श्रीपद्मप्रभुजीनाथायनम

१० श्रीअरनाथजीअर्हतेनम.

३० श्रीवर्द्धमानजीपारंगतायन०

१० श्रीअरनाथजीपारंगताय०

मार्गशीर्षकृष्णपक्षे ॥ ४

११ श्रीअरनाथजीनाथायनमः

५ श्रीसुविधनाथजीअर्हतेनमः

११ श्रीमद्विनाथ नीअर्हतेनम०

६ श्रीसुविधनाथजीनाथायन०

११ श्रीमद्विनाथजीनाथायनमः

१० श्रीवर्द्धमानजीनाथायनम

११ श्रीमद्विनाथजीसर्वज्ञायन०

११ श्रीपद्मप्रभुजीपारंगतायनम

११ श्रीनमिनाथजीसर्वज्ञायन०

पोषकृष्णपक्षे ॥ ५ ॥

१४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३०

१० श्रीपार्श्वनाथजीअर्हतेनम

- ११ श्रीपार्श्वनाथजीनाथायनमः पोपशुक्लपक्षे ॥ ५ ॥
- १२ श्रीचंद्राप्रभुजीअर्हतेनमः ६ श्रीविमलनाथजीसर्वज्ञाय०
- १३ श्रीचंद्राप्रभुजीनाथायनमः ७ श्रीशान्तिनाथजीसर्वज्ञा०
- १४ श्रीशीतलनाथजीसर्वज्ञाय० ११ श्रीअजितनाथजीसर्व०
- माघकृष्णपक्षे ॥ ५ । १४ श्रीअजिनंदनजीसर्वज्ञा०
- ६ श्रीपद्मप्रभुजीपरमेष्ठिने० १५ श्रीधर्मनाथजीसर्वज्ञा०
- १२ श्रीशीतलनाथजीअर्ह० भाघशुक्लपक्षे ॥ ७
- १२ श्रीशीतलनाथजीना०नमः २ श्रीअजिनंदनजीअर्ह०
- १३ श्रीरुपद्रदेवजीपारंगता० २ श्रीवासुपूज्यजीसर्वज्ञा०
- ३० श्रीश्रेयासजीसर्वज्ञायन० ३ श्रीविमलनाथजीअर्ह०
- फाल्गुनकृष्णपक्षे ॥ १० ३ श्रीधर्मनाथजीअर्हतेनमः
- ६ श्रीसुपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ४ श्रीविमलनाथजीना०न०
- ७ श्रीसुपार्श्वनाथजीपारंगता० ७ श्रीअजितनाथजीअर्ह०
- ७ श्रीचंद्राप्रभुजीसर्वज्ञायन० ७ श्रीअजितनाथजीनाथा०
- ७ श्रीसुविधनाथजीपरमेष्ठिने० ११ श्रीअजिनंदनजीनाथा०
- ११ श्रीरुपद्रदेवजीसर्वज्ञायनमः १३ श्रीधर्मनाथजीनाथाय०
- १२ श्रीश्रेयासजीअर्हतेनमः फाल्गुणशुक्लपक्षे । ५
- १२ श्रीमुनिसुव्रतसर्वज्ञायनमः २ श्रीअरमाथजीपरमेष्ठिने०
- १३ श्रीश्रेयासजीनाथायनमः ४ श्रीमह्विनाथजीपरमेष्ठि०
- १४ श्रीवासुपूज्यजीअर्हतेनमः ७ श्रीसंभवनाथजीपरमेष्ठि०
- ३० श्रीवासुपूज्यजीनाथायनमः १२ श्रीमह्विनाथजीपारंग०
- चैत्रकृष्णपक्षे ॥ ५ १२ श्रीमुनिसुव्रतजीनाथाय०
- ४ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमेष्ठिने० चैत्रशुक्लपक्षे । ७
- ४ श्रीपार्श्वनाथजीसर्वज्ञाय० ३ श्रीकुंभनाथजीसर्वज्ञा०
- ५ श्रीचंद्राप्रभुजीपरमेष्ठिने० ५

- ८ श्रीआदिनाथग्रहतेनम  
 ८ श्रीआदिनाथजीनाथाय०  
 वैशाखकृष्णपक्षे ॥ ९
- १ श्रीकुशुनाथपारगतायनम  
 २ श्रीशीतलनाथजीपारंगता०  
 ५ श्रीकुशुनाथजीनाथायनम  
 ६ श्रीशीतलनाथजीपरमेष्टि०  
 १० श्रीनिमिनाथजीपारंगताय०  
 १३ श्रीअनंतनाथजीग्रहतेन०  
 १४ श्रीअनतनाथजीनाथायन०  
 १४ श्रीअनंतनाथजीसर्वज्ञा०  
 १४ श्री कुंशुनाथजीग्रहतेन०  
 ज्येष्ठकृष्णपक्षे ॥ ८ ॥  
 ८ श्रीमुनिसुव्रतजीग्रहते०  
 ९ श्रीमुनिसुव्रतजीपारंग०  
 १३ श्रीशातिनाथजीग्रह०  
 १३ श्रीशातिनाथजीपारंग०  
 १४ श्रीशातिनाथजीनाथा०  
 आपाढकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥  
 ४ श्रीआदिनाथजीपरमे०  
 ७ श्रीविमलनाथजीपार०  
 ९ श्रीनिमिनाथजीनाथा०  
 श्रावणकृष्णपक्षे । ४  
 ३ श्रीश्रेयासजीपारंग०  
 ७ श्री अनतनाथजीपर०
- ५ श्रीसन्नवनाथजीपारंग०  
 ५ श्रीअनतनाथजीपारंग०  
 ९ श्रीसुमतिनाथजीपार०  
 ११ श्रीसुमतिनाथजीसर्व०  
 १३ श्रीवर्द्धमानजीग्रहतेनमः  
 १५ श्रीपद्मप्रजूजीसर्वज्ञाय०  
 वैशाखशुक्लपक्षे ८  
 ४ श्रीअजिनंदनजीपरमे०  
 ७ श्रीधर्मनाथजीपरमे०  
 ८ श्रीअजिनंदनजीपारंग०  
 ८ श्रीसुमतिनाथजीग्रहते०  
 १० श्रीवर्द्धमानजीसर्वज्ञाय०  
 १२ श्रीविमलनाथजीपारंग०  
 ज्येष्ठशुक्लपक्षे ॥ ४ ॥  
 ५ श्रीधर्मनाथजीपारंगता०  
 ९ श्रीवासुपूज्वजीपरमेष्टि०  
 १२ श्रीसुपार्श्वनाथजीग्रह०  
 १३ श्रीसुपार्श्वनाथजीनाथा०  
 आपाढशुक्लपक्षे १  
 ६ श्रीवर्द्धमानजीपरमेष्टि०  
 ८ श्रीनिमनाथजीपारंगता०  
 १४ श्रीवासुपूज्यजीपारंग०  
 श्रावणशुक्लपक्षे ५  
 २ श्रीसुमतिनाथजीपरमे०  
 ५ श्रीनिमनाथजीग्रहते०

८ श्रीनामनाथजीप्रहं०

ए श्रीकुंभुनाथजीपरमे०

भाद्रपदकृष्णपक्षे ॥ ३ ॥

उ श्रीचंझप्रज्ञूजीपारग०

उ श्रीशातिनाथजीपरमे०

८ श्रीसुपार्श्वनाथजीपरमे०

आश्विनकृष्णपक्षे ॥ २

१३ श्रीमहावीरजीगर्भाय०

३० श्रीनेमनाथजीसर्वज्ञा०

इति श्रीपंचकल्याणक टीप संपूर्ण। गर्भापहार पष्टमप्पस्ति ॥

॥ अथ पंच कल्याणक विधि ॥

॥ प्रथम शुभ दिन शुभ घन्टा गुरुके पास पंच कल्याणक तप ग्रहण करै, उपवास (वा) आंचील एकासणादिकका पञ्चस्काण करै, तीन टंक देववंदन करै, पम्कमणा करै, जिस दिन जो माहाराजका कल्याणक होय उसका २००० गुणना करै, उर पहली लिखा जो पंच कल्याणकका स्तवन सो सुलै या पढै, जहा जगवंतकी कल्याणक जूमि होय उहा वरे महोन्नवसे संघ समेत यात्रा करणेको जावै, उहा विधी संयुक्त सर्व जगवतोके पंच कल्याणकका उन्नव करै, जो शक्ति नहि होय तो शासनपति श्रीमहावीरस्वामीके पट्ट कल्याणकका उन्नव करै ॥ अब २३ जगवंतकी अपेक्षार्थे पांच, श्रीवीरप्रज्ञूके अपेक्षार्थे पट्ट कल्याणक संक्षेप उन्नव विधि लिखते ॥ च्यवन कल्याणकको (परमेष्टिनेनमः) कहियै, इस दिन चवदे स्वप्नादिककी पूजा करायके च्यवन कल्याणादिकका उन्नव करै, हीरा चढावै ॥ १ ॥ जन्म कल्याणककू ( अर्दतेनमः ) कहणा इस दिन जलजात्रादिकका

अथवा दिन विसां लगै, बीसे पद गुण भैव लाल रे ॥ वी० ६ ॥  
 एक उली पट मासमें, पूरी जो नवि होय लाल रे ॥ फेर  
 नवी करणी पै, पिठली निष्फल जोय लाल रे ॥ वी० ७ ॥  
 ठठ अष्टम उपवाससु, अथवा देखो शक्ति लाल रे ॥ पोसह कर  
 आराधियै, देव वादै निज जक्ति लाल रे ॥ वी० ८ ॥ संपू-  
 रण पद सेवता, पोसहनो नहि जोग लाल रे ॥ तोही सात पद  
 सही, पोसह करियै सजोग लाल रे ॥ वी० ९ ॥ सूरी थिवर  
 पाठक पदै, नाधु चरित्र सुजण लाल रे ॥ गौतम तीर्थपदे सही,  
 सात थानक मन मान लाल रे ॥ वी० १० ॥ पद२ दीठ करै स-  
 दा, दीय२ जाप हजार लाल रे ॥ पम्कमणो दोय टंरुही, करियै  
 पूजा सार लाल रे ॥ शक्ति भुजव तप कीजियै, एक उली करो  
 बीस लाल रे ॥ बीसाबीसी च्यारसै, तप सख्या कही एम लाल  
 रे ॥ वी० ११ ॥ जिस दिन जो पद तप करै, तिसके गुण चित  
 धार लाल रे ॥ काठसग्गने परदरुणा, मुख जणियै नवकारलाल  
 रे ॥ वी० १२ ॥ जिस पदकी स्तवना सुणे, कीजै जिनपद जक्ति  
 लाल रे ॥ पूजन शुज मन साच्यै, दिन२ वढती शक्ति लाल रे  
 ॥ वी० १३ ॥ मृतक जनम रूतुकालमें, कवि धारयो उपवास लाल  
 रे ॥ सो लेखे नहि लेखवो ॥ निकेवल तप जास लाल रे ॥ वी०  
 १४ ॥ सावळ त्यागपणो करै, सोक न धारे चित्त लाल रे ॥ शील  
 आचूषण आदरै, मुखसु वोलै सत्य लाल रे ॥ वी० १५ ॥ जेव  
 आसाठ वैशाखमें, मिंगसर फागुण भाह लाल रे ॥ ए पट् मासे  
 माहिनें, व्रत ग्रहिये वरुजाग लाल रे ॥ वी० १६ ॥ तप पूरण  
 हुवा अका, ऊजमणो निरधार लाल रे ॥ कीजै शक्ति विचारोनें,  
 उच्च विविध प्रकार लाल रे ॥ वी० १७ ॥ बीस२ गिणती तणा,  
 पुस्तक पूग आदि लाल रे ॥ ग्यानतणी ३३

लाल रे ॥ वी० १९ ॥ फलवयी नगरनी श्राविका, कीधी विध चित  
 लाय लाल रे ॥ जनम सफल करवा ज्ञणी, उद्दिज मोक्ष उपाय  
 लाल रे ॥ वी० २० ॥ कलश ॥ इम वीर जिनवरतणी आजा धार  
 चित मजार ए, सहु देख आगमतणी रचना रची तप विध सार  
 ए ॥ वसु नंद सिद्धि चंड वरसै चैत्र मास सुदंकरु, मुनि केशरी  
 षशि गद्य खरतर ज्ञणी स्तवना मनदरु ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अय वीस स्थानक तप करण विधि लिख्यते ॥

॥ तिहा प्रथम शुभ मङ्गुर्त्तके दिन नदी स्थापनापूर्वक सुवि  
 हित गुरुके पास वीस स्थानकतप विधिपूर्वक उच्चरै. एक उली दे  
 महीनेसे लेकर ठ महीने पूरी करै. कदास ठ महीनेमें पूरी नदी कर  
 सके तो वो उली गिणतीमें नदी. उर फेर नइ करणी परती हे.  
 एक उलीके वीस पद हे ( तहां ) कोइ वीस दिनमें वीस पद  
 जुदाइ गिणते हे, कोईयक वीसों दिनमें एकही पद गिणते हें, दूसरै  
 वीशों दिनमें दूसरा पद, एमें वीशों पदकी वीज उली करै. तिहां  
 पदाराधनेके दिन प्रबल शक्तिवंत अठम तप करिके आराधै. वीश  
 अठमसे एक उली होय ( एसे ) वीस उली १०० से अठमसे आ  
 राधै. और उससे कम शक्ति होय तो उठसे आराधै. उससे कम  
 शक्ति होय तो चोविहार उपवास करिके आराधै. उसमें हीनशक्ति  
 होय तो त्रिविहार उपवास करिके आराधै. उसमें हीणशक्ति आविल  
 ( तथा ) त्रिविहार एकाशणा करिके आराधै उसमें जो शक्तिवान  
 होय सो तो सर्व तपस्याके दिन अठ पहरि पौसह करे. हीनशक्ति  
 दिनपौसह करै. वीसों पद पौराहसेती आराधै. जो पौसह शक्ति  
 सर्व पदमें नहीं होय तो आचार्यपदमें १, उपाध्यायपदमें २, त्रिवर  
 पदमें ३, साधुपदमें ४, चारित्र्यपदमें ५, गौतमपदमें ६, उर तीर्थपद  
 में ७, यह सात आनरु पद तो पौसह करकेही आराधै. जो इतनी

ज्नी शक्ति नहिं होय तो उस दिन देसावगासी करै, सावद्य व्यापार  
 ठामै, सो शक्ति ज्नी नही होय तो यथाशक्ति तप करैकै आराधै,  
 अपणी हीणता जावे तथा मृतक जन्म के सूतकमें उपवामादि तप  
 नही गिणै जावै, स्त्रियां ज्नी शतुसमयका तप नही गिणै, तथा तपके  
 दिन पोसह सहित करै तो वहोत श्रेयकारी है, वो अगर नहीं हो  
 सके तो तपके दिन उज्जय टंक पन्निक्कमण करै, तीन टंक देववदन  
 करै, दो हज़ार एक पदका जाप करै, ब्रह्मचर्य पालै, जूमि शयन  
 करै, तपके दिन अति सावद्य व्यापार नही करै, असत्य नहि बोले,  
 सब दिन तप पदके गुण कीर्त्तनमें रहै, तथा तपके दिन पोसह करे  
 तो पारणके दिन जिनज्जक्ति करैकै पारणा करै, जो तपके दिन पो-  
 सह नही होय तो उसी दिन श्रीजिनज्जक्ति करै करावै, जावना  
 जावै तथा तपके दिन तप पदके गुण ज्ञेद प्रमाण संख्यासँ कान्त-  
 सग्ग करै. इतनाही तद्गुण स्मरणपूर्वक खमासमण देइ वंदणा करै.  
 उस पदका गुण याद करैकै उदात्त स्वरसँ स्तवना करै, हर्षित रहै॥  
 ॥ अथ वीस स्थानक गुणना और काउसग्गका प्रमाण लिखते है॥

( एमो अरिहंताण ) २००० गुणना लोगस्त १२ का कान्त-  
 सग्ग ॥ १ ॥ ( एमोसिद्धाण ) २००० गुणना लोगस्त १५ का का-  
 न्तसग्ग ॥ २ ॥ ( एमो पवयणस्त ) २००० गुणना लोगस्त ७  
 का कान्तसग्ग ॥ ३ ॥ ( एमो आयरिआणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्त ३६ का कान्तसग्ग ( एमो धेराण ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्त १५ का कान्तसग्ग ॥ ५ ॥ ( एमो उवझायाणं ) दो ह-  
 ज़ार गुणना लोगस्त ७५ का कान्तसग्ग ॥ ६ ॥ ( एमो लोए सव्व  
 साहूण ) दो हज़ार गुणना लोगस्त २७ का कान्तसग्ग ॥ ७ ॥  
 ( एमो नाणस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ५ का कान्तसग्ग ॥  
 ॥ ८ ॥ ( एमो दंसणस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त १७ का

कान्तसग ॥ ए ॥ ( एमो विणयसंपसाणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्त १० का कान्तसग ॥ १० ॥ ( एमो चारित्तस्त ) दो ह-  
 ज़ार गुणना लोगस्त ६ का कान्तसग ॥ ११ ॥ ( एमो वंजव्य  
 धारीणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ए का कान्तसग ॥ १२ ॥  
 ( एमो किरिआणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त २५ का कान्तसग  
 ॥ १३ ॥ ( एमो तवस्तीणं ) दो हज़ार गुणना लोगस्त १५ का  
 कान्तसग ॥ १४ ॥ ( एमो गोयमस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त  
 १७ का कान्तसग ॥ १५ ॥ ( एमो जिणाणं ) दो हज़ार गुणना  
 लोगस्त १० का कान्तसग ॥ १६ ॥ ( एमो चरणस्त ) दो हज़ार  
 गुणना लोगस्त १२ का कान्तसग ॥ १७ ॥ ( एमो नाणस्त ) दो  
 हज़ार गुणना लोगस्त ५ का कान्तसग ॥ १८ ॥ ( एमो सुअना-  
 णस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त १० का कान्तसग ॥ १९ ॥  
 ( एमो तिठस्त ) दो हज़ार गुणना लोगस्त ५ का कान्तसग करै  
 ॥ २० ॥ इति वीस स्थानक गुणना संपूर्णम् ॥

इत्यादि विधि संयुक्त वीशों उलीमें सर्व पदके उच्च महो-  
 च्छव प्रज्ञावना ऊजमणापूर्वक करै. जिनशासनके उन्नतीके वास्ते  
 इतनी शक्ति नहीं होय तो एक उज़ी तो विशेष उच्चवादिक संयुक्त  
 करणी चाहिये. इहां विधिप्रपाक ग्रंथसे वीश स्थानक सेवनविधि  
 संक्षेप मात्रसे लिखी हे. जो गुरुका सयोग होय तब तो विस्तारसे  
 वीशों पदकी जुड़ी२ विधि गुरुके मुखसे समझके करै. जो गुरुका  
 सयोग नहि होय तो विवेक संयुक्त इस विधिकों देखके वीस स्था-  
 नक तपकों सेवन करै, वीस स्थानकका स्तवन सुणें वा पढ़ै, वीस  
 स्थानकजीकी पूजा करावै, अथवा शक्ति माफक वीस२ ज्ञानोप-  
 करण करावै, देवपदका देवखाते लगावै, ज्ञानपदका ज्ञानखाते  
 लगावै, गुरुपदका गुरुखाते लगावै, सब तीर्थोंकी यात्रा करै,



साहमी घञ्जल कैर, इत्यादिक इयें नर जावे विधि संयुक्त शुद्ध  
जावसें जो ज्ञव्यजीव यह वीस स्थानक पदकों सेवन करेंगे मो  
जिन नाम कर्मकों उपार्जन करके तीसरें ज्ञव अनंत सुखकों प्राप्त  
होंगे, इत्यलंविस्तरेण ॥ इति वीस स्थानक तप उक्ती विधि स० ॥

॥ अथ वीस स्थानक मंडल पूजन लिख्यते ॥

एमोणतविन्नाणसदसणाण, सहाणदियासेसजतूगणाणं ॥  
ज्वज्जोवविन्नयणेवारणाण, एमोवोहियाणंवराणजिणाण ॥ १ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं अर्हज्योनम ॥ १ ॥ इति प्रथमपदे जिनेऽपूजा ॥ अथ  
सिद्धपूजा ॥ लोगगजागोपरिस्तवियाण, बुद्धाणसिद्धाणमणि-  
दियाण ॥ निस्सेसकम्मस्सकयकारणाण, एमोसयामगलधारणाणं ॥  
॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सिद्धेज्योनमः ॥ २ ॥ अथ तृतीय पद ॥  
अणंतसंसुद्धगुणाकरस्स, दुस्संयारुग्गदिवाकरस्स ॥ अणंतजीवा-  
णदयागिहस्स, एमो२ संघचउच्चिहस्स ॥ ॐ ह्रीं श्रीं प्रवचनायनमः  
॥ ३ ॥ अथ चतुर्थ पद ॥ कुवादिकेलीतरूप्पिंधुराण, सुरीतराणं-  
मुणिवंधुराणं ॥ धीरत्तसंतज्जियमदराणं, एमोसयामगलमदिराणं ॥  
४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं आचार्येभ्योनम ॥ ४ ॥ अथ पचम पद ॥ सम्म-  
नसंयमपतितज्जविजन अतिहधिरकरताज्जना ॥ अवगुणअडुपित  
गुणविज्जूपित चंडकिरणसमोक्कजा ॥ अष्टाधिकादससहससीलागरथ  
रुच्चिरधाराधरा, ज्वसिधुतारणप्रवरधारणनमोश्रिवरमुनीवरा ॥ ५ ॥  
ॐ ह्रीं श्रीं स्पविरायनम ॥ अथ षष्ठा पद ॥ सवोहिवीजकुरुकार-  
णाणं, एमोश्वायगावारणाण ॥ कुवोहिदंतीहरिणोसराण ॥ विग्घो-  
घसंतावपयोहराणं ॥ ६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं उपाध्यायेज्यो नमः ॥ ६ ॥ अथ  
सातमा पद ॥ सतज्जियसेसपरीसहाण, निस्सेसजीवाणदयागिहा-  
ण ॥ सन्नाण पज्जायतरूवणाणं, एमो२होउतवोवणाण ॥ ७ ॥ ॐ  
ह्रीं श्रीं सम्मगत्ताधुज्योनमः ॥ ७ ॥ अथ अष्टम पद ॥ उद्वपज्जा

यगुणाकरस्त, सयापयासीकरणोधुरस्त ॥ मिष्ठतत्रन्नाणतमोहरस्त,  
 एमो२ नाणदिवाधरस्त ॥ ८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥  
 ८ ॥ अथ नवम पद ॥ अणंतविन्नाणसुकारणस्त, अणंतसंसारवि  
 दारणस्त ॥ अणंतकम्मावलिधसणस्त, एमो२निम्मलदंसणस्त ॥  
 ९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्दर्शनाय नमः ॥ ९ ॥ अथ दशम विनय-  
 पद ॥ आणंदियासेसजगङ्गणस्त, कुर्विंडुपादामलताचणस्त ॥ सुध-  
 म्मजुत्तस्तदयासयस्त, एमो२श्रीविणयालयस्त ॥ १० ॥ ॐ ह्रीं  
 श्रीं सम्यग्विनयै नमः ॥ १० ॥ अथ इग्यारम चारित्र पद ॥ क-  
 म्मोघकंतारदवानलस्त, महोदयानंदलयाजलस्त ॥ विन्नाणपंकेरुह  
 कारणस्त, एमोचरित्तस्तगुणापणस्त ॥ ११ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्चा-  
 रित्राय नमः ॥ ११ ॥ अथ द्वादशन चारित्र पद ॥ सग्गापवगाग्ग-  
 सुहप्पयस्त, सुनिम्मलाणंतगुणालयस्त ॥ सबवयाज्जुपणञ्जुपणस्त,  
 नमोहिशीलस्तअदूसणस्त ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्ब्रह्मचर्यै नमः ॥ १२ ॥  
 अथ तेरमे क्रिया पद ॥ विशुद्धसक्षणविज्जुपणस्त, सुलद्धिंपत्तिसु  
 पोपणस्त ॥ एमोसदाणंतगुणप्पदस्त, नमो२सुद्धक्रियापदस्त ॥  
 १३ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्क्रियायै नमः ॥ अथ चवदमा तप पद ॥  
 लद्धीसरोजावलितावणस्त, सुह्वसलग्गसुपावणस्त ॥ अमंगलानो  
 कुहडुहवस्त, नमो२निम्मलसत्तवस्त ॥ १४ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्त्व-  
 से नमः ॥ १४ ॥ अथ पनरमा गौत्तम पद ॥ अणतविन्नाणविज्जाकर  
 स्त, डुवालसंगीकमलाकरस्त ॥ सुलद्धवासाजयगोयमस्त, नमोण  
 णाधीस्तरगोयमस्त ॥ १५ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं गौतमाय नमः ॥ अथ  
 सोलम पदे जिनपूजा ॥ मणुससत्तवासयासयाणं, सुरा२धी तर-  
 वदियाणं ॥ रवीडुविधामलसग्गुणाणं, दयावणाणंहिनमोजिशाणं  
 ॥ १६ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जिनेच्च्योनम ॥ अथ सतरमें चारित्तधारीपद  
 ॥ सच्चिंदियापारविकारदारी, अकारणासेसजशावेगारी ॥ महान्-

वातंकरणापहारी, जयोसदाशुद्धचरित्रधारी ॥ १७ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 सम्यग्चारित्रधारीभ्यो नमः ॥ १७ ॥ अथ अगारमें ज्ञानपदपूजा  
 ॥ शुद्धक्रियामंरुलमरुणस्त, सवेहसंदोहविखरुणस्त ॥ मुक्तीउपादा  
 नसुकारणस्त, नमोहिनाणस्तजसोधणस्त ॥ १८ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं  
 सम्यग्ज्ञानाय नमः ॥ १८ ॥ अथ उगणीसमें श्रुतपद ॥ अन्नाणव  
 स्त्रीवनवारणस्त, सुबोहिवीजांकुरकारणस्त ॥ अणंतससुद्धगुणाल-  
 यस्त, नमोदयामंदिरसत्रयस्त ॥ १९ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं सम्यग्श्रुतये  
 नमः ॥ १९ ॥ अथ वीसमें तीर्थपद ॥ तुच्यनमःसकलविश्ववश  
 कराय, तुच्यनमःस्त्रिजगतीजनशकराय ॥ तुच्यनमःत्रुवनमंरुल  
 मंरुनाय, तुच्यनमोस्तुजिनपंकविखंरुनाय ॥ २० ॥ ॐ ह्रीं श्रीं स  
 म्यग्तीर्थपदेभ्योनमः ॥ २० ॥ ध्वजासमेत अष्ट इव्य चढावै (पीठे)  
 ६४ इंड्रपूजा अखरोट चढावै ॥ ॐसौधमेंज्ञानम. १ ॥ ॐ इशाणें  
 ज्ञानम. २ ॥ ॐसनत्कुमारेंज्ञानम. ३ ॥ ॐमाहेंज्ञानम ४ ॥  
 ॐब्रह्मेंज्ञानम ॥ ५ ॥ ॐलातकेंज्ञानम ६ ॥ ॐशुकेंज्ञानमः ॥  
 ७ ॥ ॐसहस्रारेंज्ञानमः ॥ ८ ॥ ॐप्राणतेंज्ञानमः ॥ ९ ॥ ॐअ-  
 च्युतेंज्ञानमः ॥ १० ॥ ॐचंद्रेंद्रायनम ॥ ११ ॥ ॐसूर्येंद्रायनम ॥ १२ ॥  
 ॐचमरेंद्रायनम ॥ १३ ॥ ॐवलीद्रायनम ॥ १४ ॥ ॐधरेंद्राय  
 नम ॥ १५ ॥ ॐभूतानेंद्रायनम. ॥ १६ ॥ ॐवेणुदेवेंद्रायनम ॥ १७ ॥  
 ॐवेणुदालींद्रायनम. ॥ १८ ॥ ॐहरिकतेंद्रायनम ॥ १९ ॥ ॐहरिस्त  
 हेंद्रायनम ॥ २० ॥ ॐअग्निशिखेंद्रायनम ॥ २१ ॥ ॐअग्निमाण  
 वेंद्रायनम ॥ २२ ॥ ॐपूर्णेद्रायनम ॥ २३ ॥ ॐविशिष्टेंद्रायनमः  
 ॥ २४ ॥ ॐजलकतेंद्रायनमः ॥ २५ ॥ ॐजलप्रचेंद्रायनमः ॥ २६  
 ॥ ॐअमितगतींद्रायनमः ॥ २७ ॥ ॐमितवाहनेंद्रायनम. ॥ २८ ॥  
 ॐवेलवेंद्रायनमः ॥ २९ ॥ ॐप्रज्ञजनेंद्रायनम ॥ ३० ॥ ॐघोषें  
 दायनम ॥ ३१ ॥ ॐमहाघोषेंद्रायनम. ॥ ३२ ॥ ॐकालेंद्रायनम.

॥ ३३ ॥ उमहाकालेन्द्रायनमः ॥ ३४ ॥ उंस्वरूपेन्द्रायनमः ॥ ३५ ॥  
 उंप्रतिरूपेन्द्रायनमः ॥ ३६ ॥ उंपूर्णज्ञेन्द्रायनमः ३७ ॥ उंमाणज्ञेन्द्राय  
 नमः ॥ ३८ ॥ उंज्ञोमेन्द्रायनमः ॥ ३९ ॥ उंमहाज्ञीमेन्द्रायनमः ॥  
 ४० ॥ उंकिन्नरेन्द्रायनमः ॥ ४१ ॥ उंकिपुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४२ ॥ उंस्तत्पुरुषे  
 द्रायनमः ॥ ४३ ॥ उंमहापुरुषेन्द्रायनमः ॥ ४४ ॥ उंअमितकार्येन्द्रायनमः ॥  
 ४५ ॥ उंमहाकार्येन्द्रायनमः ॥ ४६ ॥ उंगीतरतीन्द्रायनमः ॥ ४७ ॥ उंगीत-  
 यज्ञेन्द्रायनमः ॥ ४८ ॥ उंस्तन्निहितेन्द्रायनमः ॥ ४९ ॥ उंस्तामानि-  
 केन्द्रायनमः ॥ ५० ॥ उंधार्त्रेन्द्रायनमः ॥ ५१ ॥ उंविधार्त्रेन्द्रायनमः  
 ॥ ५२ ॥ उंरूपिन्द्रायनमः ॥ ५३ ॥ उंरूपिपालतेन्द्रायनमः ॥ ५४ ॥  
 उंइश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५५ ॥ उंमहेश्वरेन्द्रायनमः ॥ ५६ ॥ उंवत्सेन्द्रा-  
 यनमः ॥ ५७ ॥ उंविशालेन्द्रायनमः ॥ ५८ ॥ उंहास्येन्द्रायनमः ॥  
 ५९ ॥ उंश्रेयसेन्द्रायनमः ॥ ६० ॥ उंहास्यस्तेन्द्रायनमः ॥ ६१ ॥  
 उंपदगोत्रेन्द्रायनमः ॥ ६२ ॥ उंपदगपतेन्द्रायनमः ॥ ६३ ॥ उंमहाश्रे-  
 येन्द्रायनमः ॥ ६४ ॥ इतिचोसठइंद्रनामपूजा ॥ अथ १६ विद्या-  
 देवीपदे १६ सुपारी चढावै ॥ ॥ उंरोहिण्येनमः ॥ १ ॥ उं-  
 प्रहृष्टेनमः ॥ २ ॥ उंवज्रश्रृंगलायनेनमः ॥ ३ ॥ उंवज्राकुर्शयनेनमः  
 ॥ ४ ॥ उंचक्रेश्वर्येनमः ॥ ५ ॥ उंपुरुषपदत्रायनेनमः ॥ ६ ॥ उंका-  
 ढ्येनमः ॥ ७ ॥ उंमहाकाढ्येनमः ॥ ८ ॥ उंगौर्येनमः ॥ ९ ॥ उं  
 गंधार्येनमः ॥ १० ॥ उंमहाज्वालायनेनमः ॥ ११ ॥ उंमानव्ये-  
 नमः ॥ १२ ॥ उंवैरोढ्यायनमः ॥ १३ ॥ उंअतुष्टायनेनमः ॥ १४  
 ॥ उंमानस्येनमः ॥ १५ ॥ उंमहामानस्येनमः ॥ १६ ॥ इति षो-  
 रुश विद्यादेवी नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यक्षपदे सो-  
 पारी चढावै ॥ ॥ उंब्रह्मशांतिथेनमः ॥ २४ ॥ उंपा-  
 र्श्वयक्षायनमः ॥ २३ ॥ उंगोमेधायनमः ॥ २२ ॥ उंमृकुट्टेनमः  
 ॥ २१ ॥ उंवरुणायनमः ॥ २० ॥ उंकुबेरायनमः ॥ १९ ॥ उंय-

केंद्रायनम ॥ १८ ॥ उँगधर्वायनमः ॥ १७ ॥ उँगरुमायनम ॥  
 १६ ॥ उँगकिन्नरायनम ॥ १५ ॥ उँगपातालायनम. ॥ १४ ॥ उँगप-  
 एमुखायनमः ॥ १३ ॥ उँगकुमारायनम ॥ १२ ॥ उँगयक्रराजाय-  
 नम. ॥ ११ ॥ उँगवह्मण्येनमः ॥ १० ॥ उँगअजितायनमः ॥ ए ॥  
 उँगविजयायनम ॥ ८ ॥ उँगमातगायनम ॥ ७ ॥ उँगकुसुमायनमः ॥  
 ६ ॥ उँगतुचुर्येनम ॥ ५ ॥ उँगरक्षनायकायनमः ॥ ४ ॥ उँगत्रिमुखा-  
 यनम ॥ ३ ॥ उँगमहायज्ञायनमः ॥ २ ॥ उँगगोमुखायनम. ॥ १ ॥  
 इति ७४ यज्ञ नाम पूजा ॥ ॥ अथ २४ यज्ञणी नाम लि० ॥  
 उँगचक्रेश्वर्येनम ॥ १ ॥ उँगअजितवलायैनम ॥ २ ॥ उँगउरितायैनमः  
 ॥ ३ ॥ उँगहात्रिकायैनम. ॥ ४ ॥ उँगमहाकाट्यैनम. ॥ ५ ॥ उँगइया-  
 मायैनम ॥ ६ ॥ उँगशातायैनम ॥ ७ ॥ उँगभ्रुकुट्यैनम. ॥ ८ ॥  
 उँगसुतारकायैनम ॥ ए ॥ उँगअशोकायनम ॥ १० ॥ उँगमानव्यैनमः  
 ॥ ११ ॥ उँगचक्रायनम ॥ १२ ॥ उँगविदितायैनम. ॥ १३ ॥ उँगप्रकु-  
 शायैनम ॥ १४ ॥ उँगकंदपार्यनम. ॥ १५ ॥ उँगनिर्वाण्यैनम. ॥  
 १६ ॥ उँगत्रलायैनम १७ ॥ उँगवारिण्यैनम ॥ १८ ॥ उँगधरणप्रियायैनम.  
 ॥ १९ ॥ उँगनरदत्तायैनम. ॥ २० ॥ उँगगाथायैनम. ॥ २१ ॥ उँगअ-  
 धिकायैनम ॥ २२ ॥ उँगपदमावत्यैनम ॥ २३ ॥ उँगसिद्धायकायै-  
 नम. ॥ २४ ॥ इति ॥ अथ नव निधान नाम ॥ उँगनैसर्षका-  
 यनम. १ ॥ उँगपादुकायनम. २ ॥ उँगपिगलायनम ३ ॥ उँगसर्वरत्नायनम.  
 ४ ॥ उँगमहापद्मायनम ॥ ५ ॥ उँगकालायनम ॥ ६ ॥ उँगमहाकालायनम  
 ॥ ७ ॥ उँगमाणायनम ॥ ८ ॥ उँगशखायनम. ॥ ए ॥ इति नव  
 निधान पदे ए कलश चढावै ॥ अथ दश दिग्पालादि नाम ॥  
 उँगविजयस्वामिनेनम. ॥ १ ॥ उँगकैत्रपालायनम ॥ २ ॥ उँगचक्रेश्व-  
 र्यैनमः ॥ ३ ॥ उँगवरणोद्रायनम. ॥ ४ ॥ उँगपद्मावत्यैनम. ॥ ५ ॥  
 उँगइद्रायनमः ॥ ६ ॥ उँगप्रसन्न्येनम ॥ ७ ॥ उँगयमायनमः ॥ ८ ॥

ॐ नैऋताय नमः ॥ ४ ॥ ॐ वरुणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ वायव्ये नमः ॥ ६ ॥  
 ॐ कुबेराय नमः ॥ ७ ॥ ॐ ईशानाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ नागाय नमः ॥ ९ ॥  
 ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ १० ॥ इति दशदिग्पालः ॥ ॐ सूर्याय नमः ॥ १ ॥  
 ॐ चंद्राय नमः ॥ २ ॥ ॐ ज्योत्सनाय नमः ॥ ३ ॥ ॐ बुधाय नमः ॥ ४ ॥  
 ॐ शुक्रेणाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ शुक्राय नमः ॥ ६ ॥ ॐ शनैश्वराय नमः  
 ॥ ७ ॥ ॐ राहवे नमः ॥ ८ ॥ ॐ केतवे नमः ॥ ९ ॥ इति नवग्रह  
 नाम ॥ इहा बीस स्थानक मंत्रल पूजनकी विधि विशेष लिखी  
 है । सो नाममात्र स्थापन पूजनकी हे, इस उपरांत मंत्रल प्रतिष्ठा  
 बलवाकुलादिककी संपूर्ण विधी नवपद मंत्रल पूजामें लिखआए  
 हे उस मुजबदी करणी । फेर विशेष विधी करणी होय तो वि-  
 ष्णुजन गुरुको पूठके करणी ॥ इति बीसस्थानक मंत्रल पूजा वि० ॥

॥ अथ रोहणीतप स्तवन लिख्यते ॥

॥ शाशण देवत सामणी ए मुज सानिध कीजै, सुयो  
 अक्षर जगति जणी समजाई दीजै ॥ मोटो तप रोहण तपो ए  
 जिणारा गुण गात्र, जिम सुख सोहण संपदा ए वंजिन रुद्र पाठ ॥  
 १ ॥ दक्षिण जरते अंगदेस ठै चंपानयरी, मधवा राजा राज्य करै  
 तिण जीता वयरी ॥ पाठतणी राणी रुवनी रुवनी इण नामे,  
 आठ पूत्र जाया जिणें ए मनमें सुख पाये ॥ २ ॥ रोहिणी नने  
 कन्यका ए सबकुं सुखफारी, आठ पुत्र लखें ए तिण लागे ॥  
 ॥ वावै चइतणी कला ए जिम दण्ड लखवै, निम ते कर्म  
 भाव पावै प्रतिपालें ॥ ३ ॥ ॐ नने रुवनी ए घर  
 दीठी राजा खेवती ए निम जिम फौजी ॥ तीन सु  
 ए नदी दूजी नारी, रुद्र रुद्र नवर गंग इत्य  
 ॥ पुरुष न दीपे अठ अठे जितने  
 वरें तिण चयन त रुद्र ए देवा

सबस सजाई साथ करी नरपति पिण आया ॥ ५ ॥ वीतशोक  
 राजातणो ए ठे कुमर सोजागी, कन्याकैरी आखनी ए तिणसेती  
 लागी ॥ ऊजा दैखै सकल लोक चढिया केइ पाला, चित्रसेनरे कंठ  
 ठवी कुमरी वरमाला ॥ ६ ॥ देव अनै देवागना ए जपै जैजैकार,  
 रलियायत थयो देखने ए सारो संसार ॥ कर जोमी कहै लोक व  
 खत कन्यारो जानो, वीतशोकनो कुमर थयो सिर ऊपर  
 लामो ॥ ७ ॥ इम विवाह थयो जलो ए दीया दान अपार ॥  
 घर आया परणी करी ए ह्खयो परिवार ॥ वीतशोक निज पूत्र  
 जणी अपणो पाट दीधो, आपण संजम आदरी ए जगमें जस  
 लीधो ॥ ८ ॥ ( दाल—प्रजु प्रणमुं रे पास जिणसर थजयो ॥ ए  
 देशी ) ॥ तिण नगरी रे चित्रसेन राजा थयो, सुखमाही रे  
 केतलो काल बही गयो ॥ इण अवसर रे आठ पूत्र हूवा जला,  
 चढते पख रे चद्र जिसी चढती कला ॥ ( उज्जालो ) चढती कला  
 हिव राय बैठो पास बैठी रोहणी, सातमी जूमी कतसेती करै क्री  
 ना अतिघणी ॥ आठमो बालक गोद ऊपर रंगसूं राणी लियो,  
 पूत्रने प्रीतम आख आगल देखता हरखे हियो ॥ ९ ॥ ( चाल )  
 इक कामण रे गोख चढी इष्टे पनी, शिर पीटे रे दीन सरे रोवे  
 खनी ॥ बूढापण रे मन गमतो बालक मूओ, हुं एकज रे तिण  
 अधिकरो डुख हुं ॥ ( उज्जालो ) डुख हुयो देखी रोहणी हिव  
 कहै इम प्रीतम जणी, ए नार नाचै अनै कूटै कहो किम मोटा  
 धणी ॥ एहवो नाटक आज ताइ में कदे देखयो नही, मुऊने त-  
 मासो अने हासो देखता आवै सही ॥ १० ॥ ( चाल ) इण वचनै  
 रे रीसाणो राजा कहै, तूं पापण रे परतणी पीमा नवि लहै ॥ ए  
 डुखणी रे पूत्र मुथे तरुपरु करै, जब वीतेरे वेदना जाणीजै तरै ॥  
 ( उज्जालो ) जाणै तरै तू वात डुखनी गरवगढली कामनी, इम

कङ्गी राजा हाथ जाल्यो तेहना वालकनणी ॥ सातमा ज्युयथी  
 तलै नाख्यो तिसै हादारव थयो, रोहणी हसती कहै प्रीतम पूत्र  
 नीचै किम गयो ॥ ११ ॥ ( चाल ) हिव राजा रे पूत्रतणै शोकै  
 करी, थयो मुरठित रे रोवै अति आख्या जरी ॥ पन्तो सुत रे  
 सासणदेवत जालियो, कंचनमयरे सिंहासण वैसारियो ॥ ( उल्लाळो )  
 वैसारियो कर जोम आगै करै नाटक देवता, गोदे खिलावै केइ  
 हसावै पायपकज सेवता ॥ ऊपनो जूपतने अचंजो देख ए कारण  
 किसो, जो कोइ ग्यानी गुरु पथारै पूठियै सासो इतो ॥ १३ ॥  
 ( चाल ) चितवतां रे चारनिया आया जिसै, राजा पिण रे पुढतो  
 वंदणने तिसै ॥ सुण देशना रे पूठे प्रश्न सोहामणो, कहो स्वामी  
 रे पूरवज्जव वालकतणो ॥ ( उल्लाळो ) वालकतणो जव जूप पूठै  
 कहै इण पर केवली, रोहणी राणीनो जवातर अने राजानो वली  
 ॥ श्रीगुरु पासे पाठवै जव रोहणी तप आदर्शयो, तपतणो सगते  
 साधुजगते तुम्म जवसायर तरयो ॥ १३ ॥ ( चाल ) कहै राजा रे  
 रोहणितप किम कीजियै, विवि जाखो रे जिम तुम पासे लीजियै  
 ॥ तव मुनिवर रे विधि रोहणीरा तपतणी, इम जंपे रे चित्रसेन  
 राजाजणी ॥ ( उल्लाळो ) राजाजणी विधि एह जंपै चइ रोहणतप  
 आवियै, उपवास कीजै लाज लीजै जली जावना जावियै ॥ बा-  
 रमा जिनवरतणी प्रतिमा पूजियै मनरगसु, इम सात वरसा लगे  
 कीजै तजी आलस अंगमुं ॥ १४ ॥ ( ढाल-वीर सुणो-मोरी वीनती  
 ॥ ए देशी ) ॥ तप करियै रोहणितणो, वलि करिये हो ऊजमणो  
 एम ॥ तप करतां प्रातिक टलै, तिण कीजे हो तपसेती प्रेम ॥  
 त० १५ ॥ देव जुहारी दंहेरे, तिण आगे हो कीजै वृह अशोक ॥  
 गुणनो बारम जिनतणो, जला नेवज हो धरियै सहु थोक ॥ त०  
 ॥ १६ ॥ केशर चंदन चरचियै, कीजे आगे हो अठे मंगलीक ॥



वै ॥ महा० १ ॥ इंझानी मिल मंगल गावै, मोतियन चौक पुरावै  
वै ॥ महा० २ ॥ सेवग प्रजुजीसैं अरज करे वै, चरणारी सेवा  
प्यारी लागे वै ॥ महा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग अर्याणो १ ॥ मोतनकी माला जिन गल सोहे,  
मोति० ॥ मस्तक सुगट सोहे मनमोहन, कुंमल लागत वाला ॥  
॥ जि० १ ॥ जजोरी जजो तुम लोक सहरके, नहिय जजै सो  
काला, माणक पर प्रजु महिर करो तो, अपणा विरुद संजाला ॥  
जि० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सोरठ ॥ रहे तुम आज क्युं जीवन डुराय, रहे०  
॥ जीय जीवन सखियन में प्यारी, हारो हा हा खाय ॥ २० १ ॥  
अविरत घुंघट पट नधारी, अनुजव मुख निरखाय ॥ २० २  
॥ जव परणित परिपाक इतै पर, आई धाई माय ॥ २०  
३ ॥ अति आग्रह सब ग्यानसारकू, जीवन कंठ लगाय ॥ २०  
४ ॥ इति पदं ॥ पुन हे माय वाकनी करमगति जाय ना  
कही, चितत और वनत कबु औरे, हौनहार सो होय रही ॥ हे माय  
वा० १ ॥ सकल साज सजियौ व्याहनकू, राजुलकों तव चाह  
जई ॥ सुनी नेम गिरनार सिधाए, वदन विलख मुरजाय रही ॥  
हे माय वा० २ ॥ सीता सती योही पतिजगता, जानत सकल  
मही ॥ जूगो दोस दियो जव रुपति, पावक कुरुमें धीज दही ॥  
हे माय वा० ३ ॥ दायक सुदृष्टि श्रेणिकराजा, निज सुत कोणक  
बंध ठई ॥ सुध बुध विस्तर गई नरपतकी, आपणकी अपघात  
लही ॥ हे० वा० ४ ॥ तिनमें ररु तिनकमें राजा, अकल कथा  
किम ज्ञाण कही ॥ नलट पजट वाजी नटसीकी, नवल सरवमें  
व्याप रही ॥ हे० वा० ५ ॥ इति पद ॥ पुन ॥ म्हानु प्यारो  
लागे वै जी आरो उपदेस, म्हानु० ॥ ग्यान जगावण उगुण

भेटण, संशयन रहे न लेस ॥ म्हा० १ ॥ मोह तिमिर डुख  
 दूर करणकुं, जगन वढावत हेत ॥ चंद फत्ते नित एही चाहे,  
 समकित सुखको खेत ॥ म्हा० २ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 मेरो पिया पर संग रमत हे, मै केले मनाऊं री ॥ मे० ॥ सोतन  
 संग रैन दिन रमतां, मोहि न बुलावै री ॥ मे० १ ॥ हाहा करत  
 सखी पइया परत हूं, कोइ पिया मिलावै री ॥ विरहानल अति  
 झुसद पिया विन, कोन बुझावै री ॥ मे० २ ॥ सुमता संगले अ-  
 नुजव आयो, सव परठ सुणावै री ॥ ग्यानसार प्यारी दोऊं हिल-  
 मिल, तोरठ गावै री ॥ मे० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग तोरठमलार ॥ वरपित वचन ऊरी, हो सुगुरु  
 मेरो, व० ॥ श्रीश्रुतज्ञान गगनतेऊमटी, ग्यानघटागहरी ॥ हो सुगु०  
 १ ॥ श्यादादनय विजुरी चमकित, देखत कुमति मरी ॥ हो सुगु०  
 ॥ अरथ विचार गुहर धुनि गरजित, रहत न एक घरी ॥ हो सु-  
 गु० ॥ २ ॥ श्रद्धा नदी चढी अति जोरे, शुद्ध सुजाव धरी ॥ सु-  
 ज्ञरज्ञरयो सुमतारससागर, समकित जूमि हरी ॥ हो सुगु० ३ ॥  
 प्रगटे पुन्य अंरुरे चिहुं दिस, पाप जवास जरी ॥ चातक मोर पप-  
 इया जविजन, बोलत जक्तिजरी ॥ हो सुगु० ४ ॥ दया दान व्रत  
 संजम खेती, जविक कसान करी, हरखचंद सुरनर शिवसुखकी,  
 सद्दज स्वजाव फली ॥ हो सुगु० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ या  
 घरीमें रंग, वन्यो हे म्हारे ॥ या० ॥ तत्वारथकी चरचा पाई, सा  
 धरमीको संग ॥ व० या० १ ॥ श्रीजिनराज दयातिथ जेठे, हरख  
 जयो अंग अंग ॥ व० या० २ ॥ एसी विध जवश् मांहे मिलियो,  
 धर्मप्रसाद अजंग ॥ व० या० ३ इति पदं ॥

॥ रागमलार चिहुं उर दरिया वरसै, अब वरर धरर  
 घन गरजै ॥ चि० ॥ नेमप्रचु गिरनार सिधाए, देखणकुं जिया त

रसै ॥ चि० १ ॥ दाडुर मोर सोर सुण श्रवणें, नयन ज्ञए धन  
 जरसै ॥ चि० २ ॥ दूढत दुढ सकल वनश्में, कवहु पिया ना दर  
 सै ॥ चि० ३ ॥ सो दिन सफल जाणेंगे सजनी, दिवस घरी जिन  
 फरसै ॥ चि० ४ ॥ इति पद ॥ पुन ॥ मोरवा पपश्या बोले  
 थीउर धनमें, नेमपिया रहे सहसावनमें, मो० ॥ निशि श्रवियारी  
 कारी विजुरी रुरावै, दूजी विरह व्याकुल नई तनमें ॥ मो० १ ॥  
 फिरमिर वरपित गरजत दाडुर, सोर करत रहे नदिया रनमें ॥  
 मो० २ ॥ आणंद यह सम देखण चाहै, राजुल नई विरागण ठि  
 नमें ॥ मो० ३ ॥ इति पद ॥

॥राग विहाग॥ समऊ नर जीवन थोरो, थोरो थोरो थोरो  
 ॥स०॥ पलश् आयुघटत ठिनरही, गलत जात जेसैं उरो ॥स० १॥  
 या तनको कहो कोन नरोसो, ठिन मासो ठिन तोरो ॥ जो कहु  
 करै सो श्रवही करलै, पुनपरहो जिम मोरो ॥ स० २ ॥ तन धन  
 आदि सकल सामथी, गरजश् धनघोरो ॥ रूपचंद त्रसनाको बाध्यो,  
 जानवूज नयो जोरो ॥स० ३॥ इति पदं ॥ पुनः॥ मत कर मा  
 न गुमान, योवन धन उगहे ॥ म० ॥ वेलूकी ज्ञीत नुसको मोती,  
 कोइ घनी कोइ पलहे ॥ यो० म० १ ॥ नदिया गहरी नाव पुरा  
 णी, तारणद्वारा जिनहे ॥ रूपचंद कहै नाथ निरंजन, आखर अंगल  
 घर हे ॥ यो० म० २ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारू ॥ निसदिन जोउं थारी वाटनी, घर आघोनी  
 ढोला ॥ नि० ॥ मुऊ सरिखा तुऊ लाख है, भेरे तूही अमोला  
 ॥ नि० १ ॥ जोहरी मोल करै लालदा लाल अमोला ॥  
 जिसके पटंतर को नही, नु  
 किसपें कहू, किसपें  
 जोला ॥ नि० ३ ॥

ला ॥ आषाढधन प्रभु आवसी, सेजनी रंगरोला ॥ नि० ४॥ इति पदम् ॥

॥ राग जैवन्ती ॥ आज तो हमारे जाग, वीरप्रभु आए  
हैं ॥ आ० ॥ चंदना खनी डुवार, चित्तसँ करै विचार ॥ देखत दी  
दार हीया, हरख जराये हे ॥ आ० १ ॥ आज मेरी आस फली,  
अली मेरी रंगरली ॥ विकसी आतम कली, प्रभु पात्र पाए हे ॥  
आ० २ ॥ धन दिन आज मेरो, गयो सब कर्म जेरो ॥ सुठत बहु  
तेरो, जगवान दित जाए हे ॥ आ० ३ ॥ सिद्धारथराय नंद, सोहत  
सरदचंद ॥ कहै जिनचंद चित, आनंद वधाये हे ॥ आ० ४ ॥ इति ॥

॥ राग परज ॥ बावरो रे आज मनवो मारो ॥ बा० ॥  
आप रंगीला वाकी रंगीली, उर रंगीलो वाको सांवरो रे ॥ आ०  
१ ॥ आपन आवै वारी न लिख जेजै, प्रीत करणाकुं उतावरो रे ॥  
आ० २ ॥ आनंदधन पिया निजघर आवै, मिट गयो मोहसंतावरो  
रे ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग जंगलो ॥ रूपज विहारी, धारी तो ठवि न्यारी हो  
॥ रू० ॥ प्रथम तीर्थकरप्रथम जिनेसर, प्रथम यतो व्रतधारी हो ॥  
रू० १ ॥ धनुष पाचसँ मान मनोहर, काया कंचन वानी हो  
॥ रू० २ ॥ नाजिराय मरुदेवीको नंदन, वा पर जिया कुरवानी  
हो ॥ रू० ३ ॥ जुगलाधरम निवारण स्वामी, प्रभु ठो पर ऊपगारी  
हो ॥ रू० ४ ॥ केवल पाय प्रभु सुगति सिधाए, आवागमननिवारी  
हो ॥ रू० ५ ॥ आनंदधन प्रभु एती वीनती, तुम पर जावँ बलि  
हारी हो ॥ रू० ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ सुण मन होनहार  
न टैरे रे, सु० ॥ चित कष्ट उर विचारत है नर, उरही उर बने  
रे ॥ सु० १ ॥ ऊपर बाज पारधी नीचै, चिन्धिया केसँ बचे रे ॥  
सु० २ ॥ होणहार वश रुस्यो हेपारधी, सर सींचाण मरे रे ॥ सु०  
३ ॥ होत पदारथ जावी जइया, क्युं जग चाह धरै रे ॥ सु० ४

॥ उदय करम गत देखे जगतकी, जिनवर क्युन ज्ञै रे ॥ सु० ५ इति पद ॥ पुनः ॥ सहियो री मिल चालो प्रभु पूजन काज, स० ॥ समवसरण विच श्राप विराजै, वीरनाथ महाराज ॥ स० ॥ १ श्रेणक नूप चेलणाराणी, जक्ति करत हे आज ॥ स० २ ॥ निज श्रु द्रव्य लिये पुर के जन, उमगर गुन साज ॥ स० ३ ॥ वे प्रभु दोन दयाल जगतके, हितकर धर्म जिहाज ॥ स० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ राग कहरवो ॥ मनवा जिनंद गुण गाय रे, म० ॥ या जिनजीके दरस सरसतें, दुखदोहग मिट जाय रे ॥ म० १ ॥ सद् गुरु वचन परतीत मानले, आतमसुं लय लाय रे ॥ म० २ ॥ जव श्रमें तोकू सुखदाई, आनद ववित पाय रे ॥ म० ३ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ चलो देखो री मधुवनको राव, च० ॥ वामानंदन पाश जिनेसर, सिर पर रे वाके चमर धुराय ॥ च० १ ॥ तारण तरण जिनेसर लखके, जेटै सहु जवि चित सुख पाय ॥ च० २ ॥ गंगा दरस कमाहो लागो, कव फरसु वाके मन वच काय ॥ च० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ राखुं रे हमारा घटमें, जिनराज नाम तेरा, हो राखू रे ह० ॥ जाके प्रजाव मेरा, अज्ञानका अधेरा, ज्ञागा जया उजेरा ॥ हो रा० १ ॥ सूरत तेरी रागै, पेख्या विजाव स्यागै, अध्यात्मरूप जागै ॥ हो० २ ॥ मुद्रा प्रमोदकारी, रूपजे सजू तिहारी, लागत मोहि प्यारी ॥ हो० ३ ॥ त्रैलोक्यनाथ तुम ही, हम हे अनाथ गुनही, करियै सनाथ हमही ॥ हो० ४ ॥ प्रभुजी तिहारी साखै, जिनदर्प सूरि जाखै, दिल माजू याही राखै ॥ हो० ५ ॥ इति पद ॥

॥ राग उमरी जंगलो ॥ तेरे दरसको चाह लग्यो, सखी ह्यामवरण दिखलाजा रे ॥ ते० ॥ वनमें जाय प्रभु दीक्षा लीनी, हमकूं नार लगाजा रे ॥ ते० १ ॥ जाय चढे प्रभु गिरनार ऊपर,

श्रव कैसे विसराजा रे ॥ ते० २ ॥ चैनविजै कदै धन२ राजुल,  
 प्रभु चरणां चित लाजा रे ॥ ते० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः थारे  
 मुखमारी दो वारी राज, प्यारी ठवी वरणी न जाय ॥ था० ॥  
 शील मुगट सोदै सिर टीको, काने थारे कुंमल सोहाय ॥ था०  
 १ ॥ मोहनगारी सूरत थारी, देख्या म्दारो मनमो लोजाय ॥ था०  
 २ ॥ उरऊत नेश जए दोठं निरखत, थांसु प्रभु प्रीतनी लगाय ॥  
 था० ३ ॥ जव२ पाशजिनंदजी की सेवा, एसी म्दारे दिलमेमें  
 चाव ॥ था० ४ ॥ बाल कहे तुमही प्रभु मेरे, मेरे तुम्हही सुहाय  
 ॥ था० ५ ॥ इति पदं ॥

राग काफी कानमो ॥ एसी विध तेने पाइ रे, कठु कर-  
 नी करजा ॥ ए० ॥ उत्तम नरजव जैनधर्म रुचि, सुगुरु सेवा सु-  
 खदाई रे, जसु पातिक ऊरजा ॥ ए० १ ॥ हिंसा जूआ जूठ पर  
 तिरिया, परिग्रह मद फल चोरी रे, घट जायगा दरजा ॥ ए० २ ॥  
 तप जप शंजम शील दान कर, आनंद सुमति सुदाई रे, जवजव  
 निधि तरजा ॥ ए० ३ ॥ इति पदं ॥

रागकालिंगमो ॥ मोहि अपणो कर जाणो, प्रभुजी  
 मो० ॥ में मतिहीण महा हठवादी, सो तुमसें नहि ठानो ॥ राग  
 द्वेष अरु मोह महा मद, वाध्यो खोट खजानो ॥ प्र० मो० १ ॥  
 ए रिपु कर्म पन्थो मुऊ केने, किस विध ठूटै पानो ॥ कुमति क-  
 दाग्रह मांहि अलूज्यो, ज्युं मदपान वयानो ॥ प्र० मो० २ ॥ हुं  
 जववाशी तूं सिववासी, जाने सकल जहानो, विरुद लाखीणो  
 साम संजारो, तो हिव किम चित ताणो ॥ प्र० मो० ३ ॥ जक्ति  
 सदाई शिवसुख दाता, संजवनाथ कहाणो ॥ श्रीजिनसौजाग्य  
 सूरिने निज वर, दीजै सुख प्रधानो ॥ प्र० मो० ४ ॥ इति पदं ॥

रागजैरवी ॥ श्रीर प्रभु तेरी दोस्तीमें, मेरी सुमता सखा

मेहरवान जई रे ॥ वी० ॥ आप नही आवे बोधा पठावै, तेरी  
सूरत कुरवान जई रे ॥ वी० १ ॥ साशगनायक एही अरज दे,  
दाँजै दरस बनो वैर जई रे ॥ वी० २ ॥ आस दासको पूरण  
कीजै, चरण सरण लपटाय रही रे ॥ वी० ३ ॥ इति पदं ॥

राग विज्ञास ॥ जोर जयो अब जाग बावरे, जो० ॥ कोउ  
पुन्य तें नरजव पायो, क्यू सूतो अब पाय दावरे ॥ जो० १ ॥ धन  
बनिता सुत तात आतकों, मोह मगन ए विकल जाव रे ॥ जो०  
२ ॥ कोइ न तेरो तूं नही काको, इह संजोग अनाद सुजाव रे ॥  
जो० ३ ॥ आरज देस उत्तम गुरु संगत, पाइतें बहु पुन्य प्रजावरे  
॥ जो० ४ ॥ ग्यानसार जिन मारग पायो, क्यू मूवै अब पाय नाव  
रे ॥ जो० ५ ॥ इति पदं ॥

राग खट्वा ॥ जाग रे सब रैन विहाणी, जा० ॥ उदयो उदयाच-  
ल रविमरुल, पुन्यकाल क्यू सोवे प्राणी ॥ जा० १ ॥ कमलखंरु  
वन२ विकसानी, अजुअ न तेरी दृग उधराणी ॥ जा० २ ॥ चेत-  
न धर्म अनादि तुमारो, जरु सगतसैं सुय विसराणी ॥ जा० ३ ॥  
तुम कुल दोष अवस्था पश्यें, नीद सुपन ए जरु नीसाणी ॥ जा० ४  
आतम रूप संज्ञार आपणो, कब तुमरे घर कुमतिधराणी ॥ जा०  
५ ॥ सुध बुध जूली निरुपम रूपकी, तातें घट वध होत कहाणी  
॥ जा० ६ ॥ निश्चे ग्यान स्वरूप तुमारो, ग्यानसार पद निजर जया  
नी ॥ जा० ७ ॥ इति पदं ॥

राग बेलाउल ॥ सावरो सखूणो सखी मेरे मन जावनो,  
रूप देखाय मैरो मन ललचावणो ॥ सा० ॥ तोरणसैं रथ फेर च-  
ले पिया, ना जानु ए काहेको रुसावनो ॥ सा० १ ॥ नव जव नेह  
निजाहो नेम तुम, याहीतें कहा वदन डुरावणो ॥ आनंद राजुल  
याकी प्रीत कपटकी, जयो पीया मुगलसखीको पावनो ॥ सा० २ इति

राग ललित ॥ आज रूपन्न घर आवै, देखो माई आ० ॥  
 रूपमनोहर जगदानंदन, सबहीके मन जावै ॥ दे० १ ॥ केइ मुगता  
 फल माल विसाला, केइ मणि माणक लावै ॥ दे० २ ॥ हय गय  
 रथ पायक केई कन्या, ले प्रभु वेग वधावै ॥ दे० ३ ॥ श्रीश्रेयांस-  
 कुमर दानेसर, इहुरस वहिरावै ॥ उत्तमदान अधिक अमृतफल,  
 साधुकीरत गुण गावै ॥ दे० ४ ॥ इति पदं ॥

रागरामकली ॥ अंगण कल्प फल्यो री, हमारे माई  
 अं० ॥ रुद्रि वृद्धि सिद्धि सुख संपति दायक, श्रीशातिनाथ मिढ्यो  
 री ॥ ह० अं० १ ॥ केशर चंदन मृगमद घोली, मांहे वरास  
 मिढ्यो री ॥ पूजत श्रीशातिनाथजीकी प्रतिमा, अलग उदेग ट-  
 द्यो री ॥ ह० अं० २ ॥ शरणे राख रुपा कर साहिव, ल्युं पारे  
 वो पढ्यो री ॥ समयसुदर कहै तुमारी रुपासै, हुंरहिसुं सुहलो री  
 ॥ ह० अं० ३ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ ऊगने मोरा आतमराम,  
 जिनमुख जोवा जश्ये रे, ऊ० ॥ जिनजीनो दरसण ठै अति  
 दोइलो, थे किम सोहीलो जाणो रे ॥ वार२ मानवजव एहवो,  
 जुमवो मुसकल टाणो रे ॥ ऊ० १ ॥ ज्यार दिवशनो चटको म-  
 टको, देखीने मत राचो रे ॥ विनसी जाता वार न लागै, कायाघ-  
 ट ठै काचो रे ॥ ऊ० २ ॥ अनंत गुणें जरियो हे जिनवर, पूरव  
 पुन्ये पायो रे ॥ एहने देखी दिलमें आणंद, कर तूं सदा सवायो  
 रे ॥ ऊ० ३ ॥ हीरो हाथ अमोलख पायो, मूढपणें मत गमजो  
 रे, सहज सलूणा पाशजिणंदजीसुं, राजी हुय चित्त रमज्यो रे ॥  
 ऊ० ४ ॥ मन मानीता मारा चेतन, करजे सुरुत कमाई रे ॥  
 जानऊदै जिनचंद लहीने, कर तूं सिद्ध वधाई रे ॥ ऊ० ५ ॥ इति  
 राग केदारो ॥ जज मन नाजिनंदन देव, ज० ॥ ध्यान  
 मुनिजन अरुग धारै, सुरनर करत हे सेव ॥ ज० १ ॥ चक्री चू-



पति बने सुरपति, वासुदेव बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद, शेष  
मणिधर सेव ॥ ज० २ ॥ असरण शरण हे विरुय जाको, ज्ञक्ति-  
वचल जेव ॥ राजसिंह प्रभु रुपज सिर पर, नाथ हे नितमेव  
॥ ज० ३ ॥ इति पदं ॥

ताल ठुमरी ॥ आबो नेम रहजाबो सदन, हंमको न रं  
ताबो रे ॥ आ० ॥ व्याहन आये सऊके सजन, पशुवनको सुन देख  
रुदन ॥ गिरनारी चले निज ठानी वतन, तकसीर वताबो रे ॥  
आ० १ ॥ पूनम जेते चदवदन, मनमोहन मूरत स्यामवरण ॥  
मेरी नीकी लगी नव जवकी लगन, मत ठेह दिखाबो रे ॥ आ०  
२ ॥ संयमदूती लागी श्रवण, प्रभुकुं सिखाये नीके ध्रमन ॥ सब  
ऊठे पनेगें कोलवचन, रथ फेरी न जाबो रे ॥ आ० ३ ॥ कपूर  
कहै प्रभुजीके चरण, राजुल मन वैराग धरण ॥ लेउं दोरु नेम  
जिनजीकी शरण, शिवपुर तो वताबो रे ॥ आ० ४ ॥ इति पदं ॥

पुन कीरतीवाग मन प्रेम लाग, जिन सूरत प्यारी रे ॥  
की० ॥ अश्वसेन वामाजीके नंदन, सुरपति करत अहोनिशिबंदन  
॥ दरसणसें नयणानंद ठरे, गुण केसरक्यारी रे ॥ की० १ ॥ अं-  
ध कदंब मालती निरमल, चंपक बेल सघन तरु परिमल ॥ श्रीच  
भुवन हिय हरख धरै, पारश सुखकारी रे ॥ की० २ ॥ सावली  
सूरत अधिक तिराजै, वासुपूज्यकी महिमा ठाजै ॥ प्रभु अतिशय  
तन मकरंद ऊरे, पदकज बलिहारी रे ॥ की० ३ ॥ सुंदर सुजग  
दरसकू आवै, निरखै प्रभु सहज स्वभावै ॥ जीव जन्मी मन प्रे-  
म धरै, जगपति रुद्रसारी रे ॥ की० ४ ॥ इति पदं ॥

खेमटा ताल दादरा ॥ अधम जग काम जये अगीवान,  
दे ना निकला मुखसें कर्त्ती जगवान ॥ यार नहीदेखासमोसरणा,  
क्रिया जवदधिमें ऊदर जरणा ॥ दोरु जो लेते प्रभु सरणा, दूर

डुख होते जनम मरणा ॥ बैठे जववरमें लगाया नही ध्यान, राले  
 शिवपुरमें हुवा अपमान, करो अब देख काल खगवान, ना० नि० १  
 ॥ नाम जो जिनके दान देते, आठुं मद तुमसें दूर रेतें ॥ यार जो  
 तिनके चरण सेते, शपी सुमताकों तुमें देते ॥ रहे तप जपमें सदा जो  
 सूर, वरे वो जव जव सुख जरपूर ॥ करै कपूर करम चकचूर, देखयां  
 जिन नूर हुवै डुखदूर, करो जवपार सुणो महरवान ॥ ना० २ इति ॥

॥ खेमटा ॥ प्रजु तेरी सूरतिया लागे जली, नेणां हमारी  
 प्रजु तुमसें मिली ॥ प्र० ॥ अनुजव रंग मगन तेरी अखियां, खु  
 ल रही सहजानंद कली ॥ ने० प्र० १ ॥ निरमल शांति पदम  
 प्रजु आनन, सुख देखत आफत दूर टली ॥ ने० प्र० २ ॥ अगम  
 अगोचर तेरी महिमा, आप विसंजर अतुल बली ॥ ने० प्र० ३ ॥  
 सुज्जूं आश दीनपति तेरी, नर न चाहूं देव ठली ॥ ने० प्र० ४ ॥  
 लग रही लगन सुधारस कारण, खटक सटक अघ दूर बली ॥ कर  
 सुनिजर प्रतिपाल सुखाकर, श्रीधर नृपके नंद लली ॥ ने० प्र०  
 ५ ॥ गंज अजीम सुवसपुर जिनवर, कुशल जमी रुद्रतार फली  
 ने० प्र० ६ ॥ इति पदं ॥

॥ राग पीलू ॥ आयो सही अब जाई कहां, शरणागतकों  
 शरणागत तेरी ॥ आ० ॥ तोहू समान मिलयो नही कोई, दूँड  
 फिरयो धरती सब हैरी ॥ आ० १ ॥ होय दयाल महाप्रजुजी अ  
 ब, आन जई तुमसें जट जेरी ॥ आ० २ ॥ दास कल्याण करै  
 वीनती सुण, पारसनाथ सुपारस मेरी ॥ आ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग खांवाज ॥ घनी१ पल१ ठिन१ निशदिन, प्रजु  
 कों समरण करले रे ॥ घ० ॥ प्रजु समरण सब पाप कटत हे, अ-  
 शुद्ध करम सब हरलै रे ॥ घ० १ ॥ मन घच काय लगी चरणन नित  
 ज्ञान हियेमें धरले रे ॥ घ० २ ॥ दौलतराम प्रजु गुण गावै, मन

वैठित फल वरलै रे ॥ घ० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ राग सौरभ ॥ सुमताने क्या कर मारा रे, जिन ।  
 स्वामहमारा ॥ जि० सु० ॥ शखी दोस नही सुमतामेहे, आली ३  
 नेम एसा ॥ जि० सु० ॥ सुमता शोकण नई देहमारी, बस किया  
 पियारा रे ॥ जि० सु० १ ॥ प्रीतकी रीत करी नहीं वालम,  
 चले निरधारा रे ॥ जिन मो० सु० ७ ॥ जादव जात कठिन  
 मोही, दिल करवतकी धारा रे ॥ जिन मो० सु० ३ ॥ तुम ।  
 म तजे हो हमकू, में न तजू पद थारा रे ॥ जि० सु० ४ ॥  
 न हमारी तोरी नही तूटै, कर बाथी इक तारा रे ॥ जि० सु०  
 सब जग जो तुमसे हो जइयै, तो क्यू चलत ससारा रे ॥  
 सु० ६ ॥ रुइमार राजुल प्रजुजीसैं, पोहची मुगति मजारा  
 जि० सु० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ शिखरगिरि स्तवनं ॥

॥ तुम तो जले विराजो जी, सावलिया महाराज  
 पर जले विराजो जी ॥ तेरे घाटे चोकी लागै, आवक  
 पावै ॥ हुकम कियो श्रीपाशजिनेसर, बाह पकर ले जावै  
 १ ॥ उंचा नीचा परवत सोहे, तलै जीलनका वासा ॥ पें  
 सींह दमूके, जिहा लीया तुम वासा ॥ तु० २ ॥ टूंकए प  
 विराजै, जालरे ऊणकारै ॥ जालरेऊणकारे सेती, वाजा  
 ल वाजे ॥ तु० ३ ॥ दूर देशके जात्री आवै, पूजा आण र  
 अष्ट द्रव्य पूजामें लावै, मन वैठित फल पावै ॥ तु० ४ ॥  
 मुनिवर वदन आवै, महा परम सुख पावै ॥ चद खुसाल च  
 सेवक, हरखर गुण गावे तु० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥

॥ पुन. ॥ शिखर गिरिंद्र जुहारो, निज पातिक दूर  
 वारो रे ॥ जविया शि० ॥ इण सम तीर्थ न कोई, में देखा

जग जोई रे ॥ ज० १ ॥ वीश जिनेसर आया, इहा मुक्तिपुरी सुखे  
 पाया रे ॥ ज० ॥ कोनाकोनी मुनि सीधा, जिहां अजर अमर पद  
 लीधा रे ॥ ज० २ ॥ वीश चरण जिन सौहै, जविजन चात्रन मन  
 मोहै रे ॥ ज० ॥ ध्रुवमठ मंदिर ठाजै, जिहां पाशप्रनु महाराजै  
 रे ॥ ज० ३ ॥ पावन तीरथ एहवो, इहां शंसय धरवो न केहवो  
 रे ॥ ज० ॥ तीर्थ आसातन टालो, जविजन ठहरी व्रत पालो रे ॥  
 ज० ४ ॥ नरजव लाहो लीजै, इण तीरथ महिमा कीजै रे ॥ ज०  
 मय उगणीस तेतीसै, अगहन सुदि पंचमी डीसे रे ॥ ज० ५ ॥  
 रंगु गोत्र सुहावै, जवि चंदगोविद गुण गावै रे ॥ ज० ॥ जात्रा  
 करी मन रंगे, चंद शिखर जणै अति चंगे रे ॥ ज० ६ इति पदं ॥  
 शिवनः ॥ ( सांवरिया जेसैं वणे जेसे तारो, सां० ॥ इत चालमें ) सां  
 वरियामें दीगो वरस तिहारो, मेरी जव जय वाधा टारो ॥ सा० ॥  
 शिवशेननंदन जगबंदन, जगबंधव जग प्यारो ॥ नीलवरण शुति श्री  
 निजानवरकी, वामा उदर अवतारो ॥ सा० १ ॥ कमठ विरारण शिव  
 ॥ श्व कारण, तारण तरण निहारो ॥ अलख अगोचर अगम अरूपी,  
 १० प्रथमिक सत्यवारो ॥ सा० २ ॥ शिखर गिरी मंरुण जिनवरजी,  
 जनुत महिमावारो ॥ कर जोमी दोउं वीनती करतहे, बुधसिंह  
 शरणी धारो ॥ सा० ३ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पावापुरी स्तवनं ॥

( श्रीचिंतामणि पासजी ॥ ए चाल ) ॥ त्रिजुवन नायक  
 वीरजी, दरशण अतहि सुरंग ॥ वधाई प्रजुजी ॥ धारी मोहनी मृ  
 रती म्हारो मन लागो राज ॥ मुख ठवि चंदनै निरखवा, लगन  
 चकोर अजंग ॥ वया० १ ॥ सिद्धारथ कुल सेहरो, तेज ऊलामल  
 ज्ञाण ॥ व० ॥ हृदयकमल विकसायवा, तूं जगजीवन प्राण ॥ व०  
 था० २ ॥ आस धरी जिनचरणी, आयो हुं त्रीजुवन नाथ, म-

महीयल वाधयो मोटो माजनो रे ॥ म्हा० ३ ॥ जिनलाज सूरिद  
 महाराज्जो रे, फळयो ववित अनुपम राज्जो रे ॥ म्हा० ४ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः ॥ धन२ ते दिवाजी म्हारे आजनीरे, मॅतो ठवि  
 निरखी जिनराजनी रे ॥ धन० ॥ पहरी अंगी अलोकिक जातनी  
 रे, माहे घूटी दीते जातनी रे ॥ धन० १ ॥ मणि हीरा मुगट-  
 मा जम्या बहु रे, काने कुंजनी शोजा शी कहुं रे ॥ धन० २ ॥  
 मुने किरपा करी ते कडू कमी रे, मारे वाहले मुज सामो जोयुं  
 हसी रे ॥ ध० ३ ॥ प्रजु शांति जिनद हृदये वस्या रे, थई सूर  
 शशीनी चढती दशा रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥

धन२ आज्जो दिन रलियामणो रे, सूरज सोनानो जग्यो सो-  
 हामणो रे ॥ धन० ॥ वाहणुं वातां प्रजुने चरणे नम्यो रे, जिनराज  
 ते म्हारे मन गम्यो रे ॥ धन० १ ॥ नवग्रह समा थया म्हारे आ  
 जग्री रे, वली दशा ते श्री जिनराजथी रे ॥ ध० २ ॥ मुख जोता  
 ते दुख सरवे गयुं रे, वालानुं ध्यान सदा चित्तमा रह्युं रे ॥ ध० ३ ॥  
 आपी सेवा ते शुद्ध मनयी खरी रे, सूरशशी ऊरे करुणा करी  
 रे ॥ ध० ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ म्हारे आज आनंद वधाम  
 णा रे, हुतो लेउं रे वाहलाजीना जामणा रे ॥ म्हा० ॥ मुने दास  
 पोतानो जाणियो रे, आयरुता ठेकाणे आणियो रे ॥ म्हारे० १ ॥  
 आप्युं दरशन ते डुर्लभ देवने रे ॥ मुंने कीधुं तुं रहजे मारी सेव  
 मॅ रे ॥ म्हा० २ ॥ एहवो दीधो जरोसो साचा गुरू रे, प्रजु  
 विना जगत मिथ्या सहू रे ॥ म्हा० ३ ॥ महेर करी ने म्हारा म  
 नमा रम्या रे, सूरशशीने जिनराजजी गम्या रे ॥ म्हा० ४ ॥  
 इति पद ॥ पुनः ॥ सवालाख टकानी जाये एक घन्ती, स० ॥  
 ए संसार जेसा साजेला, धरुपण आया घोमे चढी ॥ मागी तूगीनें  
 उत्र परायो, केदो कंदोरो केदनी कमी ॥ स० १ ॥ साधो जाई

जिनने संज्ञारो, जन्मदशा जिम थावी चढी ॥ कहे लींको ज्ञज  
तू जगवंतने, मोक्ष जवानी यह वात खरी । स० २ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ थावोशनी प्यारा नेम थम घर थावो रे, तुम जगत  
वछल जगवंत नाथ स्ये नावो रे ॥ प्रजु केहवी थइ तकसीर कही  
ने सुणावो रे, इम विन गुनेह दीनानाथ मूकी न जावो रे ॥ था०  
१ ॥ सखी हलधर गिरधर वीर चतुर कहावो रे, मारो रुगो ठवी  
खो कत कोइ तो मनावो रे ॥ था० २ ॥ केतो मोती चुगता इंस  
के लंघन राचे रे, सपी थांवातणी जे रुद्दार, थांबलिये न माचे रे,  
था० ३ ॥ हूं तो मोही तुज दीदार नहीं तुज जोमे रे, इण जग  
में जोतां कंत कहूं वूं थोमे रे ॥ था० ४ ॥ जगमें-ठीलरिया मि  
त ते प्रीत निकामी रे, जे रेसम रगे गांठ ते मांहे न खामी रे ॥  
था० ५ ॥ बीजा जाठव केइ लाल मनमें न जावे रे, जो माहरो  
साजन होय तो नेम मिलावे रे ॥ था० ६ ॥ इम करतां थांधीप्रीत  
राजुल साची रे, जे नेहनो नावै वेह इक चित राची रे ॥ था० ७  
॥ इम रुद्धसारनी वाण चित्तमें धरजो रे, प्रजु नेम राजुल सी प्री  
त मुगति पद वरज्यो रे ॥ था० ८ ॥ इति पदं ॥

॥ राग मारु ॥ ऊजो जमुनाके तीर ॥ ए चाल ॥ मनमो  
हन पारस प्यारा रे, चित चाहे रे दीदार ॥ तन मन इंदा वागमें  
रे, नैण अनोपम फूल ॥ चंचल चित पल ठिन घनी रे,  
मत मन प्रजुकूं जूल रे, चि० म० १ ॥ स्याम घटा तन शोभता  
रे, दमक दामनी रंग ॥ जुगवाला इक तूं धणी रे, लागी लगन  
अजंग रे ॥ चि० २ ॥ अश्वसेन कुल दिनमणी रे, पुरुषोत्तम  
जयदेव ॥ वेपरवाही वालमा रे, सारुं तुमारी सेवरे ॥ चि० ३ ॥  
श्रीफलवधीपुर तिलक ज्युं रे ॥ आप विराजो नाथ ॥ निगुण दा  
स पर साहिवा रे ॥ हित कर दीजै दाथ रे ॥ चि० ४ ॥ श्रीजि

॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी

॥ अग्रमुंडंश्च वाजै चोघना, सवाइ मंका सादेवका ॥ ठननंश्च  
अवाज होता, महेल वनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ ना  
मका, नितंश्च वाजै चोघना ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिव, पार्श्व  
नाथ अवतार वना ॥ १ ॥ वषारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता  
वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोभे, जैसा सरद पूनमचंडा ॥  
स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीत कोरु देवता  
मिलकर, ओठव करणेंकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवता कोइ गावता, कोइ  
नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चंड सूरज करता सेवा  
॥ केइ सुरनर सादेवके आगे, अरज करंता खमाखमा ॥ जिनके सरूपको  
पार न पावै, जिनका गुण हे सर्वसैं वना ॥ ३ ॥ दूर देससैं आया  
जोगी, वने ओर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वनेश्च  
जोके खाता, बारे वरसकी उमर प्रभुकी, गेटेपनमें वदोत कला  
॥ वरोवरीके लिये सोवती, तपशीकूं देखण चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देख  
के बोले जोगीसैं, एसी तपस्या कूं करता, न जोगी तेरे वने लक  
नेमें, वना नाग इक अधजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहता,  
तोवी जोगी नदि सुणता, लकने दिये फेंक जंगलमें, लोक तमा  
सा देखता ॥ ५ ॥ कथा कीया वे जोगी तुमने, वना नागकूं जला  
दिया, दिया सार नवकार नागकू, धरणीघर पदवी पाया ॥ वनी  
उमेदसैं आया साहिव, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताकी  
आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज ठोरके चले जं  
गलमें, जुगतीसैं काउसग्न किया ॥ वने धीर गंजीर प्रभूने, तीन  
लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वनी धूपमें, नीरंजन निराका  
र खना, कमठासुरने किया कनाका, नजमंरुल बादल चना ॥ ७

॥ उसी दिन्नको कमठासुरने, पिठला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी  
 सेना लेकर, जलकूं जलदीबुलवाया ॥ वना किया घनघोर जोरसें,  
 पवन चलाया मतवाला ॥ कमरु२ कर हुआ कमाका, चमक बी  
 जका उजवाला ॥ ७ ॥ मूलधारा भेघ वरसता, गगन गाजता  
 चौताला ॥ सात खूटकी वनी ऊनीमें, प्रज्जु खना हे मतवाला ॥  
 नाक बरोबर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वना, पराजय नहिं  
 होय जिनुंका, एसा प्रज्जुका ध्यान चढा ॥ ८ ॥ संकटसें सिंहासण  
 मोला, हुवा घंटका आवाजा, अबधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाठ२  
 घरणीराजा ॥ धरणीधर जलडीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया,  
 पदमावतीन लिये शीत पर ॥ शेषनागने ठत्र किया ॥ १० ॥  
 क्रोर ऊपाय तो किया कमठनें, कुठवी श्लाज नही चलता ॥ तर  
 ऐवाला साहिव उनकूं, ठलऐवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज  
 हारके, कमठहाथ दो जोरु खना ॥ धरणीधर साहिवके आगे, अरजी कं  
 रता खना ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपदकूं पहुचै, पार्श्वनाथ शुज  
 मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला  
 ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वने देवलमें  
 इंदर सोदै, घंट वाजता चौताला ॥ १२ ॥ वनी जुगतसें सिंहा  
 सण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगों२ पर शिखर चढायां,  
 दरवाजा शुज केवलका ॥ जामंरुलके आगे शोजिता, मूल गुंजा-  
 रा आरसका ॥ पीठै पञ्चीत देरिया सोजित, सिरे काम सिंघा-  
 सणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोदै, सहस्रफणा प्रज्जु पार  
 सका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, बहु काम है सारसका ॥  
 अठारसे पैसठ सवाई, मुहुर्त्त फागण मास जला ॥ सुदी तीजकूं  
 तखते वैठै, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ बहु  
 मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वनी



॥ अथ लावणी संग्रह लिख्यते ॥

वीसनगर कल्याण पार्श्वनाथकी लावणी

॥ अग्रमंडुंश् वाजै चोघना, सवाइ रुंका साहेवका ॥ वननंश्  
 अवाज होता, महेल वनाया गगनोका ॥ कल्याणपारसनाथ ना  
 मका, नितश् वाजै चोघना ॥ तीन लोकमें सच्चा साहिव, पार्श्व  
 नाथ अवतार बना ॥ १ ॥ वषारसीनगरीमें तेरा जनम हे, माता  
 वामाके नंदा ॥ अश्वशेनके कुलमें शोजे, जैसा सरद पूनमचंदा ।  
 स्वर्गलोकमें हुवा आनंदा, इंद्राणी मंगल गावै ॥ तेत्रीस कोन देवता  
 मिलकर, ओठव करणेकुं आवै ॥ २ ॥ कोइ आवताकोइ गावता, कोइ  
 नाम लेता देवा ॥ चोसठ इंद्र अरज करंता, चइ सूरज करता सेव  
 ॥ केइ सुरनर साहेवके आगे, अरज करता खमाखना ॥ जिनके सरूपक  
 पार न पावै, जिनका गुण हे सबसें बना ॥ ३ ॥ दूर देससें आय  
 जोगी, वने जोर तपस्या करता, नीचै लगाता ज्वाला जोगी, वने  
 जोके खाता, वारे वरसकी उमर प्रजुकी, ठोटेपनमें बहोत कल  
 ॥ वरोवरीके लिये सोवती, तपशोकू देखण चला ॥ ४ ॥ ज्ञान देस  
 के बोले जोगीसें, एसी तपस्या कू करता, उ जोगी तेरे वने ल  
 नेमें, बना नाग इक अघजलता ॥ पारसनाथ जोगीसुं कहत  
 तोवी जोगी नहि सुणता, लकने दिये फेंक जंगलमें, लोक तम  
 सा देखता ॥ ५ ॥ क्या कीया वे जोगी तुमने, बना नागकूं जल  
 दिया, दिया सार नवकार नागकू, धरणीघर पदवी पाया ॥ व  
 उमेदसें आया साहिव, संवत्सरीका दान दिया ॥ मातापिताव  
 आज्ञा लेकर, महाराजने योग लिया ॥ ६ ॥ राज ठोरुके चले  
 गलमें, जुगतीसें काउसग किया ॥ वने धीर गज्जीर प्रजुने, ती  
 लोकमें नाम किया ॥ उष्णकालकी वनी धूपमें, नीरजन निराव  
 र खना, कमगसुरने किया कनाका, नजमरुल बादल बना ॥

॥ उसी दिन्नको कमठासुरने, पिठला दावा जगवाया ॥ मेघमालीकी  
 सेना लेकर, जलकूं जलदीबुलवाया ॥ वना किया घनघोर जोरसें,  
 पवन चलाया मतवाला ॥ कमरु२ कर हुआ कमाका, चमक बी  
 जका उजवाला ॥ ७ ॥ मूसलधारा मेघ वरसता, गगन गाजता  
 चौताला ॥ सात खूटकी वनी जमीमें, प्रजु खमा हे मतवाला ॥  
 नाक बरोबर आया पाणी, नाथ निरंजन धीर वना, पराजय नहिं  
 होय जिनूका, एसा प्रजुका ध्यान चढा ॥ ८ ॥ संकटसें सिंहासण  
 मोला, हुवा घंटका आवाजा, अवधिज्ञानसें इंदर देखा ॥ धाठ२  
 धरणीराजा ॥ धरणीधर जलदीसें आया, पदमावतीकूं संग लिया,  
 पदमावतीने लिये शीस पर ॥ शेषनागने ठत्र किया ॥ १० ॥  
 क्रोरु ऊपाय तो किया कमठनें, कुठवी इलाज नही चलता ॥ तर  
 एवाला साहिव उनकूं, ठलणेवाला क्या करता ॥ जीते श्रीजिनराज  
 हारके, कमठहाथ दो जोरु खमा ॥ धरणीधर साहिवके आगे, अरजी कं  
 रता खमा ॥ ११ ॥ केवल पाय शिवपढकूं पहुंचे, पार्श्वनाथ शुज  
 मतवाला ॥ लगी ज्योतमें ज्योति दीपकी, तपे तेजका अजुवाला  
 ॥ वीसनगरमें पार्श्वनाथका, देवल बनाया तेताला ॥ वने देवलमें  
 इंदर सोहे, घंट वाजता चोताला ॥ १२ ॥ वनी जुगतसें सिंहा  
 सण कर, कोट बनाया देवलका ॥ जगों२ पर शिखर चढाया,  
 दरवाजा शुज केवलका ॥ ज्ञामंरुलके आगे शोजता, मूल गुंजा  
 रा आरसका ॥ पीठै पञ्चीत देरिया सोजित, सिरे काम सिंघा  
 सणका ॥ १३ ॥ मूलनायक के ऊपर सोहे, सहसफणा प्रजु पार  
 सका ॥ चौमुखकी चतुराई वणी है, बहु काम है सारसका ॥  
 अहारसे पैसठ सवाई, मुहुर्त्त फागण मास जला ॥ सुंदी तीजकूं  
 तखते वैठै, जगो२ पर नाम चला ॥ १४ ॥ देश२ के संघ बहु  
 मिलकर, तेरे दर्शनकुं आया ॥ जगतगुरु जिनराज जगतमें, वनी

तमने सुणकर वीतरागपठ चीने, तत्र जगत प्रकाशन ग्यान सुष  
 रम पीने ॥ मेरी धन्य धरती दिन आज दरश मोहि दीने, मेरे हि  
 यरा हरष न माय फरकता सीने ॥ जई दीवाली जग बीच तजीते  
 जारी ॥ प्र० ३ ॥ तहा देवादिकने रदन सदनमें धारी, कोटाकोटी रज ठ  
 ठालिया नरानरी ॥ तहां जया सरोवर महिमा अपरपारी, नंदीवरधन  
 ने किया जुवन विस्तारी ॥ प्रजु जलमंदिर गरदाव कमलकी क्यारी, प्रजु  
 दो मंदरमें मूरति मोहनगारी ॥ जिन चरणकमल ठवि जिविकूलागत  
 प्यारी ॥ प्रजु० ४ ॥ प्रजु घरमचंड हो आप आप जस राजा ॥  
 क्या कांति अनोपम फूल महकते ताजा ॥ मीनाकुंदनसे जमाव  
 अंगिया साजा, प्रजु मुत्री चुत्री अविचल वाजत वाजा ॥ सन  
 जगणीसे अरुताव कृष्ण पख गाजा, जये कार्तिक दिन निर्वाण  
 जेट माहाराजा ॥ प्रजु लखमी प्रेमसे कुशल निधी रुस्तारी ॥  
 प्रजु पा० ५ इति पठं ॥

॥ अथ श्रीमधरजिन लावणी ॥

श्री सीमंधर जिनराज अरज सुण लीजै, प्रजु रहम नजर  
 कर दिलजर दरसण दीजै ॥ मोहे लगन तुमारे वदन दरसकी  
 लागी, मेरे जिगर ज्यानमें रीत प्रीतकी जागी ॥ क्या करुं नाथ  
 तुम दूर वसे वरजागी ॥ नहि पोंहचन पतिषा पास तुमारे पागी  
 ॥ नहि इस दुनिया दरम्यान पंथका थागी ॥ मेरे रात दिवस इक  
 ध्यान जया अनुरागी ॥ जो पल जर पावें संग अमृतरस पीजै ॥  
 प्रजु रह० १ ॥ मैं नारयणीके बीच सुपन पजु पाया, पजु अर  
 स परस जिनराज दग्ग दिखलाया, मेरे रोमर आनंद हरख जर  
 आया ॥ क्या प्यारी सूरत मूरति कचन काया ॥ जो परतिख  
 देखू नाथ चरणकी ठाया, मेरा जनम सफल हो जाय करुं दिख  
 चाया ॥ तुम जाणत हो घट वान ढील नहि कीजै ॥ प्रजु २० १ ॥

धन२ वो सहर मुकाम जिहां जिनराजै, धन२ वो नर नर नारसुण-  
 त धुन साजै ॥ जो पर पाउं इक वार मिलणके काजै ॥ तो आउं  
 जिन तुम पाश देख डख जाजै ॥ ये सुण जिन मेरा स्वाल कुटि  
 लता लाजै, प्रभु मतकर देरी तुरतें चढा शिव पाजै ॥ तुम वचन  
 मालती फूल जमर मन रीजै ॥ प्रभु र० ३ ॥ क्या समवसरण  
 सोनापद पदम उजाला, नरपति श्रेयांशकुमार सुतन सुकमाला ॥  
 प्रभु प्राणपियारी रुकमणि मोहनमाला, प्रभु सत्यकी जननी नीर  
 मीन खुसियाला ॥ अब दीजै कुशल निगान सदा सुविशाला, में  
 चाहुं संग अन्नंग प्रेमरस प्याला ॥ जिन जक्ति जमी रुद्धतार  
 नाथ वगसीजै ॥ प्र० ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ अजीमगजमें रामवाग लावणी ॥

जिनचंद करण आनंद दरख घन वरसण, श्रीसांवरिया म-  
 हाराज तीहारे दरशन ॥ श्रीकाशी सुंदर देश बनारस गजै, जहां  
 अश्वशेन वरशौल सुदर्शन राजै ॥ वामोदर कंदर प्रभु पंचानन गाजै,  
 प्रभु नरहरि दीनदयाल मदन मद जाजै ॥ प्रभु कमठ दीन उप  
 देश दयाके काजै, प्रभु धरे जोग तज जोग अचलपद साजै ॥ पा  
 रसके संगत लोह कनक जयो करशन ॥ श्री सां० १ ॥ क्या वर-  
 णूं साहिब तुम गुण गणकी रासी ॥ जोगी नागार्जुन सुवरणसिद्धि  
 प्रकाशी ॥ श्रीअन्नयदेव सूरी गण खरतर वाशी, तुम शांतिक जल  
 सें गये अरुज सब नाशी ॥ श्रीरामचंड्र सेतु वर पाज सराशी,  
 श्रीयादवकुलकी जरा पिशाची नाशी ॥ तुम मूरत निरखण लग  
 रही अंखियां तरसन ॥ श्री सां० २ ॥ श्रीअजीमगंजमें संघ सुधिर  
 सुविलासी, नित आनंद उज्वल होत धर्म उजियासी ॥ प्रभु रामवाग  
 विच भुवन वणयो केलासी, क्या अदनुत महिमा चडकिरण  
 परकासी, जिन ध्यान सरूपी लगी लगन अविनासी, प्रभु डरजन

फंदा तोरु मोहकी फासी ॥ जिनचंद्र सूरेश्वर विजयराजके सर  
सन ॥ श्रीसा० ३ ॥ पाठक हितवल्लभ चैत्य प्रतिष्ठा कीनी, श्री  
संघ सदा कट्याण नक्ति बुध दीनी ॥ सन् उगणी सय अमृताल  
माघ सुद लीनी, सुन्न वस्तपंचमी कुशल निधान नवीनी ॥ ल  
हमी वरदायक श्रीपारस पद चीनी, रुद्धसार कहे सुखकार नक्तिरस  
पीनी ॥ नर कंचन काया प्रभु चरणनके फरसन ॥ श्रीसा० ४इति ॥

॥ अथ लावणी नेमनाथजीकी ॥

नेमनाथ मोरी अरज सुणीजे, मेहुं दासी चरणोंकी, तोरण  
आर्ये फेर मत जान, तुमकुं सोगन जादवकी ॥ ने० १ ॥ जान  
लेइ तुम व्याहन आए, लारे सेना माधवकी ॥ ठप्पन्न कोरु जादव  
मिल आए, ए अवसर नही फिरणेकी ॥ ने० २ ॥ रथ फेरी गिर-  
वरकुं सिधाए, हमकु ठांणी नव नवकी ॥ मेरे सामरे स्थाम सबू  
णे, में इहा नही अब रहणेकी ॥ ने० ३ ॥ सुण जिनजी में तो-  
कु कहतहुं, देखूं शोभा गिरवरकी ॥ मातापिता बाधव सब ठनी ॥  
जामु सगे यादवकी ॥ ने० ४ ॥ हाथ जौरके वीनवै राजुल,  
वात सुणो पियु मुऊ घरकी, हमकु गोरु चलै निरधारी,  
अब हे पीतम सरणेकी ॥ ने० ५ ॥ नेम कहे तुम सु-  
ण हो राजुल, विपयारस हे विप सरपी ॥ यह संसार असार निरं-  
तर, कर करणी यह तरणेकी ॥ ने० ६ ॥ पियुजी पासे संयम  
लीयो, जिनसें कारज सरणेकी ॥ तपस्या करीने उत्तम कीनी, यह  
नव पार ऊनरणेकी ॥ ने० ७ ॥ पियुजी पहला राजुल नारी, पो-  
इता सेज परमपदकी ॥ केवल पामी नेम सिधाए, येही शोभा  
हे जिनकी ॥ ने० ८ ॥ चतुर कुशल या कही लावणी, जिनसें  
कार्या उद्धरणेकी ॥ अरिहंत ध्यान धरे दिल माहै, फिर फेरा नहिं  
फिरनेकी ॥ ने० ९ ॥ इति पद ॥

॥ अथ जिनदासजी कृत १० पद्य तथा लावणीओ ॥

॥ अरे तुम जपो मंत्र नवकार, जीनोसें उतरोगे जव पार

॥ होय तेरी कायाको आधार, सफल कर ले अपना अंव-

तार ॥ ध्यान तुम मनमें धरो नर नार, खाण डुख की एहे संसार

॥ करो प्रभु निहाल अज्ञी जिनदास, रखो प्रभु मुझ चरणोके पा

स ॥ १ ॥ सरकजा कुमति नार काली, तेरी संगतसें गई लाली ॥ सोबत

समताकी में टाली, आतमा तपमें नहिं घाली ॥ अनंत जव वीतगया

खाली, वेदना निगोदकी जाली ॥ अमरपद जिनदास मांगे, सदा पद प्र

भुजीकूं लागे ॥ २ ॥ शीश नित नमुं नाजिनंदन, चरण पर चढै

केशर चंदन ॥ करत सब इंद्रादिक बंदन, कटत हे कर्मोका फंदन

॥ साधो तें शिवपुरको साधन, सर्व जीवनकूं सुख कंदन ॥ जिनंद

गुण जिनदास गावै, शीश चरणोंसें नमावै ॥ ३ ॥ बोलत हे हिं

या मेरा हसकर, चढावुं चंदन चूआ घसकर ॥ पेठामें धर्मोमें ध

सकर, पाप दल दूर गया खसकर, चेतन हुवा खमा कमर कसकर,

हटाया कर्मोका लसकर ॥ श्रीजिनराज जिहाज खासा, शरण जिनदास

लिया वासा ॥ ४ ॥ समझ मन मेरा मतवाला, तुजें नहिं कोइ हट

कणवाला ॥ वस्या तेरें हिये कुगुरु काला, दिया तें सुरगतिकुं ता

ला ॥ फेर तो ममताकी माला, बाल तो जगवंत पर जाला ॥ द

यासें दे दिया ताला, देखो जिनदासका चाला ॥ ५ ॥ कीया में

गणधर प्रेमपती, मुझे वरदायक हे सरसती ॥ करी निर्मल निर्ध

मती ॥ पूठ पर खरे जागता जती ॥ मुझे बलवंत जई शोल सती,

मिठी मेरी दुर्गतिकी सब गती, एसा घन जिन दास गावे, अचल

पद जक्तिसें पावै ॥ ६ ॥ विकट घट डुरगतिका जारी, नीर

ज्या जरती कुमति नारी ॥ वरठी उन नेणोंकी मारी, मुंब्या केइ

कामी संसारी ॥ इनोकी हो रहियै खुआरी, जीता कोइ सख

धरमधारी ॥ प्रभु तुम परमारथ पाया, शरण अब जिनदास आ  
 या ॥ ७ ॥ चैत नर निगोदका वासी, कराई जगमें तें हासी ॥  
 कुमतिकी पत्नी गले फांसी, सुमतिसुं रखी हे उदासी ॥ कुमतिकी  
 वसी सेज खासी, मान रह्यो ममताकू मासी ॥ हियो  
 खोल अरिदंतकूं परखो, करो जिनदास आप नरखो ॥ ८ ॥

अफल नर तेरी जिदगानी, शीख सूत्रोंकी नहिं मानी ॥ किया  
 नही गुरु निग्रंथज्ञानी, कानसें लगी कुमति रानी ॥ जगतमें ऊन  
 रं गया पानी, गती तेरी डुरगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास  
 वाजै, सुधारोगे तुमही काजै ॥ ९ ॥ सफल नर तेरी जिदगानी,  
 शीख सूत्रोंकी तें मानी ॥ किया निज गुरु निग्रंथज्ञानी, कानमें  
 लगी सुमति राणी ॥ जगतमें अधिक चढ्यो पाणी, गती तेरी  
 सुरंगतिकी ठानी ॥ सेवक तेरा जिनदास वाजै, सुधारोगे तुमही  
 काजै ॥ १० ॥ इति ॥

पुनः लावणी ॥ चल चेतन अब उठकर अपणें, जिन मंदिर जइये ॥  
 कीसीकी जूनी ना कहियै रे, किसी० चल० ॥ चरण जिनवरजी  
 का जेटो रे च०, जवर सचित पाप करम सब तन मनका मेटो  
 ॥ सुरुत कीजै—महाराज सु० ॥ जिनवरका गुण जज लीजै, सम  
 कित अमृतरस पीजै ॥ लाज जिनजक्तीका लहिये रे—लाज० ॥  
 चल० १ ॥ करो मत मुखसे बन्दाई, करो०, तज तामस तन मनका  
 सुमति कर घर रहणा जाई ॥ रीतसे बोलो—मेरी जान री० ॥  
 आतम समतामें तोलो, मत जरम पारका खोलो ॥ मौनकर तन  
 मनसें रहियेरे—मो० ॥ च० १ ॥ जोबन दिन च्यारतणा संगी रे,  
 जो० ॥ अंत समें चेतन उठ चाढ्यो, काया पत्नी नंगी ॥ प्रीत सब  
 तूटी—मेरी ज्या० प्री० ॥ आउखेकी खरची खूटी, चेतनसें काया  
 रुठी ॥ सुख डुख आप किया सहियेरे—सुख डु० ॥ च० ॥ ३ ॥

जगतमें रहता उदासी रे ज०, परख्या में जिनराज कटी मेरी डुर  
 गतिकी फासी ॥ तजो सब धंदा-मेरी ज्या० त० ॥ जिनवर मुख  
 पूनमचंदा, जिनदास तुमारा वंश ॥ मेरे एक जिन दर्शन चाहिये  
 रे-मे० ॥ च० ४ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ तुम जजो जिनेसर देव, मुगतिपद पाईरे-मु० ॥  
 अब अचल अखंनित ज्योति सदा सुखवाईरे ॥ में रुढ्यो चोरासी  
 माहि जूढ्यो में जरम, जूढ्यो० ॥ महारे उदय अनंता डख वांध्या  
 जब कर्म ॥ में कदियक हूँ रंक फिरयो तज शरम, फि० ॥ अरु  
 कदियक राजा जयो गरयको गरम ॥ जब गरब आणकर बोढ्यो  
 पारका मर्म, पण निर्मल जगमें जैन कियो नही धर्म ॥ अब मनु  
 प्य जनममें चेत घनी शुज आई रे, घ० ॥ अब० १ ॥ में सुरनर  
 का सुख वार अनंती पाया, अनं० ॥ मारे शिव समताका सुख  
 हाथ नहिं आया ॥ में कुगुरु अने कुदेव जला कर घ्याया, जला०  
 ॥ में उलज्यो अनादि अज्ञान विषय जोग ज्ञाया ॥ में पन्या  
 लोके फंद जोरुतो माया, जो० ॥ पण लग्यो अंत जब आय  
 कालने खाया ॥ अब परहर सब परमाद धर्म कर जाई रे, धर्म०  
 अब० २ ॥ अब डुर्लज अवसर लही तुं सुकृत कर रे, तुं सु० ॥  
 अब दानशील तप जाव हीयामें धर रे, तुं करमकी माला काट  
 पाप परिहर रे, पा० ॥ अब वार २ कहुं तोय जगतसें तर रे ॥ तुं  
 निर्मल नयणे देख जगतसें नर रे, ज० ॥ तुं सीख सुगुरुकी मान  
 अज्ञानी नर रे ॥ अब पर तिरिया कर जान बैन अर जाई रे ॥  
 वे० ॥ अब० ३ ॥ अब जिनवर मुऊ मन जायो सदा गुण गाउं,  
 सदा० ॥ अब इतनी किरपा करो नरक नही जाउं ॥ अब जवर  
 मांही देव जिनेसर पाउं ॥ जि० ॥ में मन वच काया करी चरण  
 चित द्याउं ॥ ए दयाधरम हितकार, सदा में चाउं ॥ स० ॥ ए



मा पद धरै, कर्म मूल कट जाय ॥ जजो तुम नवपद सुखकारी ॥  
 ज० ४ ॥ श्रीसिद्धचक्र जजो जाई, अचामल तप विधिसैं थाई ॥  
 पाप त्रिहु जोगे परिहरजो, जाव श्रीपाल परे करजो ॥ ( दूहा-  
 साखी ) संवत जगणीस सतरा समें, जेपुर श्रोजिन पाश ॥ चैत्र  
 धवल पूनम दिने, सफल फली मुऊ आश ॥ बाल कहै नवपद  
 उवि प्यारी ॥ ज० ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ चाल इंसतजाकी ॥

ध्यान धरो नवपदका चेतन, दूर करो मद मान ॥ नवपद जे  
 सा जगसैं तारण, मिलणा नही श्रेशान ॥ १ ॥ हृदयकमलमें  
 जिसने ध्याया, सो पाया निर्वाण ॥ रुद्धि वृद्धि रमणी सुत संपत्त,  
 इनका कौनकग्रान ॥ २ ॥ कुष्ठ जगंदर राजरोग सब, जूत प्रेत  
 उल नाश ॥ नवपद जैसा निरजय शरणा, फेर करो क्या आश  
 ॥ ३ ॥ अष्ट कमलदल रचना सोह, अर्द्ध पद अरिहंत ॥ सिद्धसूरि  
 उवझाय मुनीवर, दर्शन ज्ञान महंत ॥ ४ ॥ चारित्र तप इस नव  
 पदके विच, तत्र जगका अवतार ॥ जिन अनत हो गये फिर  
 होंगें, कोश्य न पाया पार ॥ ५ ॥ इनको महिमा कहा लग बरणू,  
 भैंतो अधम अज्ञान ॥ महिर नजर कर दीजिये, परमानंद सुथान  
 ॥ ६ ॥ चैत्र माश आश्विन सुदि सातम, आशिल व्रत उजमाल ॥  
 सुरनर जूपति सेव करत हे, महिमा सुण श्रीपाल ॥ ७ ॥ श्रीवि-  
 मलेश्वर यक्ष सहाई, वरचक्रेसरि मात ॥ उठव विविध करै मन  
 शुद्धसैं, त्रिजुवन होत विख्यात ॥ ८ ॥ कर्म दलन अब मिलन  
 जिनंदसैं, में पाया आधार ॥ कुशल निधान रूपासैं आनंद, जयश  
 श्रीरुद्धसार ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ (रथ चढ जडनंदन  
 आवत हे ॥ ए चाल) ॥ चलो शाखी जिनमंदिरमें, जग नवपद  
 महिमा गाजत हे रे ॥ च० ॥ रूप अनूप तमिस्काति प्रज, मदन  
 उवि लाजत हे रे ॥ च० १ ॥ सिद्धचक्र धुर तीन तरासैं, व-

सुधा पीठ विराजत हे, तीरथनाथ सिद्ध पद सूरी, पाठक मुनि  
 कर ठाजत हे रे ॥ च० २ ॥ श्रद्धा शुद्ध प्रकाशक चिदघन, चरण  
 निरजरा साजत हे ॥ परम करण मन वंठित दायक, अतुल सु-  
 जश जग वाजत हे रे ॥ च० ३ ॥ नरवर रमापाल तुम गुणरश,  
 ज्ञोति अरुज सब जाजत हे ॥ ध्यान रंग मन संग एकसे, जग  
 दानंद निवाजत हे रे ॥ च० ४ ॥ शंभव ज्ञुवन पुरी वासूचर,  
 अंतरंग अरि दाजत हे ॥ शंकर बृहदेव तुम ध्यावै, गोविंद चरण  
 माजत हे रे ॥ च० ५ ॥ शिखर हरख माणक अरु तारा, तन द्युति  
 उषम काजत हे ॥ भेन्न मणी तुम जमी नामकी, लखमी लील  
 पराजत हे रे ॥ च० ६ ॥ दीजे कुशल निधान जक्तिजर, रुद्रसार  
 सुख राजत हे रे ॥ च० ७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ पार्व्यनाथकी होरी ॥

सांवरो लागे प्यारो, प्रभु मनमोहनगारो ॥ सा० ॥ अश्वशेन अं-  
 गज कुल दिनमणि, अधम उधारणहारो ॥ प्रभु सूरत निरखणते  
 प्रगट्यो, आनंद हरख अपारो, दयानिधि जक्तू तारो ॥ सा० १ ॥  
 चंद्र चकोर प्रेमरश आतुर, ज्युं जिनराज धीदारो ॥ लगन तिहारो  
 दरश शरसको, केसे नाथ विसारो, तुंही प्रभु प्राण आधारो ॥  
 सा० २ ॥ सुंदर रूप चंद्र वदनामृत, नयणकमल उजियारो ॥  
 धनर आज दिवशकी मंदिमा, जीवन नाथ जुहारो, बन्यो रंग  
 सरस हजारो ॥ सा० ३ ॥ गंज अजीम सुवस थिर श्रीसंध, करत  
 सदा जयकारो ॥ रामवाग विच इंद्रजुवन ज्युं, मंदिर सरस तिहारो,  
 बन्यो अति सुख दातारो ॥ सा० ४ ॥ उगलीसे अमतालीश शुभ  
 दिन, वस्तपंचमी धारो ॥ पाठक हितवल्लभ वहु विधलें, चैत्य  
 प्रतिष्ठा सारो, कुशल निधी कहै रुद्रसारो ॥ सा० ५ ॥ इति पदं ॥

गुनः ॥ (हमकू गंन चले ॥ इत चात्रमें होरी) ॥ आज

सुरंग घन वरसत होरी, पारसप्रभुजीके पाश रे ॥ आ० ॥ कीरत  
 वाग गगन जिनमंदिर, सजल घटा सुविदास रे ॥ श्याम मनोहर  
 तन ठवि दमकत, चमकत दामनी ज्ञास रे ॥ आ० १ ॥ प्रभु  
 आनन अमृतरश धारा, ऊनी लगी इक राश रे ॥ चात्रक रटत  
 वचन मन मेरो, प्राण प्रभुकी आश रे ॥ आ० २ ॥ खेंच कवाण  
 इंधनुपनकी, हिलमिल जमर उजास रे ॥ अपठर गान-करत  
 सुर वनिता, कोयल वचन उल्लास रे ॥ आ० ३ ॥ थिर चित्त  
 लाल गुलाल कुमकुमा, प्रेम अघिर सुवाश रे ॥ तन मन प्रीत  
 जरी पिचकारी, पेखूं प्रभूसैं कर हास रे ॥ आ० ४ ॥ सहज गु-  
 लाव फूल चुन चोसर, गुंथ मणी गुणवास रे ॥ कुशल निधान धरो  
 वतियनपे, रुद्धसार प्रभु दास रे ॥ आ० ५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ रुषभदेवका वारेमासो लिख्यते ॥

मरुदेवाजी सोच करत हे मनमें, मेरा रूपज गया क्युं व-  
 नमें, प्रथम महीना जी लग्या आशाढ चोमाशा, इंदर वरपणकी  
 आशा ॥ मरुदेवाजी मनमें जई उदासा, प्रभु रूपज गये वनवासा  
 ॥ ( दूहा-साखी ) रूपज प्रभु वनकूं गये, जगत सुधारण काज ॥  
 जरतादिक सो पूत्रकूं, वाट दिया सब राज ॥ पूत्र तुम सबही जी  
 मगन होय रहे धनमें ॥ मे० १ ॥ सावण महीना जी फिरमिर  
 मेहला वरसे, मेरे पूत्र विना जी तरसे ॥ जरतादिक जी सौ पूत्र-  
 नके नरसैं, मेरा नंद निकल गया घरसे ॥ ( दूहा-साखी ) नगर  
 अयोध्या युं ऊरै, गये कहां महाराज ॥ दे उलंजा जरतकूं, मेरा  
 पूत्र मिलावो आज ॥ अजीतो मेरे सुत विन जी प्राण निकलसी  
 ठिनमें ॥ मे० २ ॥ जादू महीना जी तज धन दोलत माया, वो  
 गया इकेली काया ॥ जरतादिक रे तुम मनमें हरखाया, राज ये  
 विना कमाये पाया ॥ ( दूहा-साखी ) नित नव नाटक होत हे,

कर रहै जोगविलास ॥ सब माया या रूपजकी, गोरु गया वन-  
 वास ॥ हेजी जगतारण जी दुखी होयगा तनमें ॥ मे० ३ ॥ आ  
 सू महीने जी सूरतकी ठिब लागी, वो होयगया वैरागी ॥ धनके  
 सब लोनी जी पूत्र जये नीरागी, कनी खबर न लो वरुजागी ॥  
 ( दूहा-साखी ) जरत कहे सुण मात जी, मत कर वृथा विलाप  
 ॥ तीन लोक तारण तरण, आवेगें प्रनु आप ॥ इंड पद सेवे जी  
 नहीं हे रती विघनमें ॥ मे० ४ ॥ काती महीना जी कब वो रू-  
 पज घर आवै, मोहे नेणा आण वतावै ॥ नदी कागद जी मुऊकूं  
 पूत्र पठावै, मेरा जीव बहोत दुख पावै ॥ ( दूहा-साखी ) फुरती  
 निशदिन पूत्रकों, रो रो खोइ आंख ॥ उरुकर मिलती रूपजसें,  
 जो देत विधाता पांख ॥ मोर पपइया जी मगन ज्युं रहते घनमे ॥  
 मे० ५ ॥ भिगसर महीना जी जरत बाहुबल जाई, आपसमें करे  
 लफाई ॥ जरत यूं कहता जी मानो मेरी दुहाई, सब सैन्या चढ-  
 कर आई ॥ ( दूहा-साखी ) बारा वरस लरते जये, इंद्र दिये सम  
 जाय ॥ चक्रवर्ति वनता गये, जये चंद्रयश राय ॥ हे जी तो तप  
 कारण जी खमे बाहुबल रनमें ॥ मे० ६ ॥ पोसका महीना जी  
 पमे ठंरुका पाला, रुत आया कठिन सिपाला ॥ कहां होगा  
 जी रूपज जगत प्रतिपाला, मैं रटुं रूपजकी माला ॥ ( दूहा-साखी )  
 कोइ परवतकी उदमें, होगा मेरा नंद ॥ ठंरु तापकी विपतमें, सहै  
 वहीत दुख धंद ॥ जरत मेरे सुतका जी नहीं फिकर तेरे मनमें ॥  
 मे० ७ ॥ माइका महीना जी किसें कहूं दुख मेरा, सब पूत्र विना  
 अंधेरा ॥ पूत्र घर आवो जी देखूंगी मुख तेरा, कोइ देवे रूपजका  
 वेरा ॥ ( दूहा-साखी ) इंद्रादिक जाकूं नमें, रहे सदा करजोर ॥  
 राज रमणकी संपदा, वो गया विनकमें गोरु ॥ एसा निरमोदी जी  
 पटका विरह दहनमें ॥ मे० ८ ॥ फागण महीना जी नीर नयणमें

ञरत), सूने मन धरमें फिरती ॥ ञरत यूं केता जी सोच फिकर  
 फ्यू करती, रदे निशदिन मुऊसैं लरती ॥ (दूहा-साखी) ञरत विविध  
 तर ज्ञातसैं, कहता वात बनाय ॥ वनपालक उद्यानेके, दीवी वधाइ  
 आय ॥ प्रजू पञ्चघारे जी सेवित हे मुनिजनमें ॥ मे० ए ॥ चैतका  
 महीना जी इय गय रथ सब त्यारी, सिणगारी सेन्या सारी ॥  
 ञरत कर जोने जी मरुदेवा मनुहारी, चल देख पूत्र सुखकारी ॥  
 (दूहा-साखी) इंद्रध्वज आगे चले, ज्ञामंरुल हे लार ॥ चोसठ  
 चमर सुरपति करै, इंद्रजी गगन मऊार ॥ एसो सुत तेरो जी  
 विलसे सुख सुरगणमें ॥ मे० १० ॥ माश-वैशाखां जी मरुदेवा  
 मन दरखै, जब रूपञ्जप्रजू मुख निरखै ॥ नैणपट उघरुया जी वीत  
 राग पद सरखै, चढ शुक्ल ध्यानकूं परखै ॥ (दूहा-साखी) गज ऊपर  
 सुगती गई, श्रीमरुदेवी मात ॥ पहली शिव जननी दई, एसें रु-  
 पञ्ज सुजात ॥ जगत सुख कारण जी विचरै प्रजू मगनमें ॥ मे०  
 ११ ॥ जेवका महीना जी रुत गरमीकी आई, में रूपञ्ज चरण  
 सई लाई, दरस नित तेरो जी मुऊकूं हे सुखदाई ॥ शिवा प्रेम,  
 सदा मत्त ज्ञाई ॥ (दूहा-साखी) धरम शील आधारसैं, कुशल  
 सदा आनंद ॥ रुद्धसार जिन नामसैं, हरे डरित डुख धंद ॥ हे  
 जी तो मन सुध कर जी राखौ जिन चरणमें ॥ मे० १२ ॥

॥ अय नैमनाथजीका बारे मासा ॥

(मोह लियो माहाराज कूबरी वामथुरावाली एवाक) ॥ सावण  
 महीने नेम पिपा मोहे व्याहनकूं आये, उग्रशेन धर वटत वधाई  
 सब मंगल गाये ॥ संग हे राम कृष्ण ज्ञाई, तोरणसैं रथ फेर-सि-  
 धाए, सरम नहीं आई ॥ जगतमें लोक करे हासी-मोह लियो  
 शिवरमणी शोकन प्रीतम अविनाशी ॥ १ ॥ ज्ञादू महीने गगन  
 बीच पीया इंद्र चढ आयो, वैरण बीज खीज रही मोपैं जोवन

गरणायो ॥ सखी मोकूँ विरहा संतायो, मोर पपड़या बोले पापी,  
 मदन सदन गयो ॥ तीज विन प्रीतम यूँ जाती ॥ मोह लि० २ ॥  
 आसू महीने आश पीयाकी मिलणेको लागी, तेल चढी मोकूँ वि-  
 टकाई दया नहीं जागी ॥ कंत तुम निरमोही सागी, विना गुने  
 तकशीर कंत मोहे, कैसें तुम त्यागी ॥ प्रीतकी मारी गले फासी—  
 मोह लि० ३ ॥ काती कंत गयो सहसावन खबर नहीं लीनी,  
 उत्तम प्रीत रीत नही साजन ये तुम क्या कीनी ॥ पशुनकी दयार्पे  
 चित दीनी, रूत चले माहाराज गुने विन, अंतर्गं नीनी ॥ स्याम  
 तोकुं मति ये क्या ज्ञासी—मोह लि० ४ ॥ मिगसर मोहन तीन  
 लोक पति नार और धारी, शिवरमणीके मिलणे वावत करी कंत  
 त्यारी ॥ पिया तुम चढगये गिरनारी, अनंत लोग जोगी सो काम-  
 श, लगी तुमें प्यारी ॥ पीया में चरणनकी दासी—मोह लि० ५ ॥ पोश  
 पीया उलंजा देती हिये नहीं धारो, नहीं गोमूंगी संग नाथ अब चाहे  
 सो कर मारो ॥ वचन जो लगे तुमें खारो, एक वेर घर अंगण आवो  
 फेर तजूं लारो ॥ शखी सब मिलकर समजासी—मो० ६ ॥ माह  
 महीने रूत सरदीकी ठंरु बढ़ोत वाजै, सेज लगे नागण सी मु-  
 जकों नेम नही लाजै ॥ मदनको कटक कोण ज्ञाजै, नहीं वदन  
 कूँ गैरत किसकी, तुमकूँ यह ठाजै ॥ पिया विन करुं-में गति  
 काशी—मो० ७ ॥ फागण फाग घरोघर खेले दंपति सुख माणै,  
 में अबला तरसुं विन प्रीतम जियकी जिय जानै ॥ कौन संग में  
 खेलूं होरी, एक विना यो सब जग सूनो, नहीं वाला जोरी ॥  
 कंत में दरशनकी प्यासी—मो० ८ ॥ चेत मास फूली वनराई  
 कोयल सोर करै, एसे निरमोहीसे करके कही कुण फंद पदै ॥  
 प्रीत जिन नव नवकी तोरी, राजुल तज सिलगार हार कूँ मदन  
 मान मोही ॥ नेम विन हो रही ऊदासी—मो० ९ ॥ माश

पदे पराया, निर्वेज वनसौख्य परंपरायाः ॥ ३ ॥ निःशेष जूवर्षित  
दान वारि, रन्मानसेत्वं धियसे सदैव ॥ सएव गव्युत्तम दानवारी,  
प्रोच्चारितोदाम यशा. सदैवः ॥ ४ ॥ देवाविदेवाधि हरस्त्वमेव,  
सुज्ञान सुज्ञानत्रिबुद्ध रूपः ॥ सारांग सारांगवितीर्णजूवः, कळ्याण  
कळ्याण रुदं गजाजां ॥ ५ ॥ चैरर्व्यसेत्वं वर वैद्यराज, मनोजिरा-  
मैः सुमनोजिरामै ॥ कर्माजिधै रुझित जूधनास्ते, विसारि लोकेश  
विसारि लोके ॥ ६ ॥ इत्यंते जिन पुंगवस्य जगवन् प्रोदाम धामा  
न्वितं, पादापजं परजाग जृत् त्रिजुवन स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं  
कर्म विपक्ष पक्ष दलने जव्या जवंतु क्रमा, कळ्याणाश्रय मुक्ति  
माप्नु मखिवतीर्त्वा जवाजोनिधिं ॥ ७ ॥ इति

॥ अथ शखेश्वर जिन स्तवन ॥

शालिनी उदः ॥ गौरीग्रामे स्तंजने चारु तीर्थे, जीराव-  
ख्या पत्तने लोड्वाख्ये ॥ वाणारस्या चापि विख्यात कीर्ति, श्रीपा-  
श्वेशं नौमि शखेश्वरस्यं ॥ १ ॥ इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजस्तं, वामां  
देव्या नंदनं देव वंद्यं ॥ स्वर्गे जूमौ नागलोके प्रशिद्धं ॥ श्री पा० ॥  
२ ॥ जित्वा ज्ञेयं कर्म जाल विशालं, प्राप्यानन्तं ज्ञान रत्नं  
चिरत्न ॥ लब्धा मंदानंद निर्वाण शौख्यं ॥ श्रीपार्श्वे० ३ ॥ विश्वाधी  
शं विश्वलोके पवित्रं, पापागम्यं मोक्ष लक्ष्मी कलत्रं ॥ अंजोजाहं  
सर्वदा सुप्रसन्नं ॥ श्रीपार्श्वे० ४ ॥ वर्षे रम्यं खग दोर्नाग चंड, संख्ये  
मासे माधवे कृष्ण पक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यैर्दर्शनं यस्य तंच, श्रीपा०  
५ ॥ इति

॥ अथ पार्श्व जिन स्तोत्रं ॥

विशद सद्गुण राजि विराजित, धनयना धननाद विजाजि-  
तं ॥ जजत जक्ति जरेण रमेश्वरं, जगति पार्श्वे जिनेश मनेश्वरं  
॥१॥ विविधवर्षे विजुषित विग्रहाः, विहित उर्दम दर्पकं निग्रहाः ॥

धसु युगार्क मित्ता सुंरुताकराः, जिनवरा प्रज्ञवतु शिवंकरा ॥२॥  
 क.चरवर्ण निवृद्ध मनिन्दितं, सुमनसा प्रकरै रज्जिवंदितं ॥ निखिल  
 साधुजनाः खलुनिर्मिदं, जिनमतं नमतां चित्तशर्मदं ॥ ३ ॥ सकल  
 ज्ञव्य सरोज विक्राशिका, कुमति संतमसोच्चय नाशिका ॥ जिन-  
 चरानन पद्म गतोन्मुदा, ज्वतु वाग्जिनलोचन शुज्जार्थदा ॥ ४ ॥

अथ श्री गोडीपार्श्व नाथ जिन स्तोत्रं ॥

श्रीमत्पार्श्व जिनेश्वरस्य विलसद्दहानामृताज्ञोनिधेः, सद्भा-  
 वेन परस्वरूप विरते मुक्त्यास्पदेतस्थुषः ॥ सञ्जत प्रतिविध तस्तु-  
 सुतरां गोमीपुरोद्भासिनः, सोद्धासंप्रणिपत्य सत्यमनसा तत्रैवनिधं  
 स्मरे ॥ १ ॥ यत्पादांबुज दर्शनोत्सुकधियो ज्ञव्याव्रजतोध्वनि,  
 स्पृश्यंतेनहि छुष्टजंतुनिवेदे र्वन्धैर्नवातस्करैः ॥ नैवोज्ज्वालदवानलै  
 र्जलचराकीर्णैर्जलैजातुनो, सःश्रीपार्श्वविज्जुर्व्यचिन्त्यमहिमा दृश्यो-  
 नकेपांजवेत् ॥ २ ॥ हित्वान्तःकरणघ्नतं कुटिलता मोहादिनोद्भा-  
 विता, घृत्वानिर्मलज्ञावनाचविधिनायद्रक्तिमातन्विता ॥ लज्जयन्ते  
 नरराज निर्जरवरश्रेणीसुखानिक्रमा, न्मुक्तिश्रीरपिसैवशुद्धमनसा  
 संसेव्यतांविश्वया. ॥ ३ ॥

॥ अथ चतुर्विंशती जिनस्तवर्नं ॥

॥ आद्यः श्रीरूपज्ञस्ततो जितजिनः, श्रीशंज्ञवस्तीर्षिकृत् ॥  
 सुश्रीमानजिनदनश्चसुमतिः, श्रीसद्मपद्मप्रज्ञः ॥ पृथ्वीकुक्किज्वसुपा  
 र्थे, जिनपस्तीर्षेशचंद्रप्रज्ञः ॥ सर्वज्ञ.सुविधिर्जिनोमुनिमतः, श्री  
 शीतलसौम्यदृक् ॥ १ ॥ श्रेयाशप्रज्ञुवासुपूज्यविमलानंतेशधर्मेश्वराः,  
 शाति.कृत्तरस्ततो जितरिपुर्भक्षिर्जिनःसुव्रतः ॥ अर्द्धतो नमिनेमिशुद्ध  
 मुनिपौविश्वत्रेयेविश्रुतौ, श्रीमत्पार्श्वजिन.प्रसिद्धमहिमा श्रीवर्द्धमान  
 प्रज्ञः ॥ २ ॥ एतेश्रीजिनपुङ्गवाःपरमश्विद्रूपाश्चतुर्विंशति, र्निःशेषो-  
 त्तमज्ञव्यजंतुदृढयाज्ञौजप्रबोधयताः ॥ वयन्तेसुरवृद्धवद्यविशदश्लो



कन्नजानिर्जय, श्रीसंपत्तिनिवासविक्रमपुरेसद्भक्तितःप्रत्यहं ॥ ३ ॥

॥ अथ मंगलाष्टकलिख्यते ॥

श्रीमन्नमसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतिरत्नप्रज्ञा, ज्ञास्वत्पादनखेदव-  
प्रवचनांज्ञोद्योव्यवस्थायिन ॥ येसर्वेजिनसिद्धसूरिसुगतास्तेपाठका-  
साधवः, स्तुत्यायोगिजनैश्वपंचगुरवः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ १ ॥ सम्यग्द-  
र्शन बोधवृत्तममलं रत्नत्रयंपावन, मुक्तिश्रीनगरायनं जिनपते स्व-  
र्गापवर्गप्रद. ॥ धर्म सूक्तिसुधाश्चैत्यमखिलं जैनालयंश्रयालयं  
प्रोक्ततत्त्रिविधंचतुर्विधममीकुर्वंतुमेमङ्गल ॥ २ ॥ नाज्ञेयादिजिना  
धिपा खिन्नुवनेख्याताश्चतुर्विंशतिः, श्रीमन्तोत्तरतेश्वरप्रचृतयोयंच  
क्रियो द्वावश ॥ येविष्णुप्रतिविष्णुलागलधरा. सप्ताधिकाविंशती,  
त्रैलोक्येज्यदा त्रिपष्टिपुरुषा. कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ३ ॥ कैलाडोवृषजस्य  
निर्वृतिमहीवीरस्यपावापुरी, चंपाया वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशो  
लेहतां ॥ शोषाणामपिचोर्जायन्तशिखरे नेमीश्वरस्याहंतो, निर्वाणा  
विनय प्रसिद्धविज्जवा कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ४ ॥ ज्योतिर्व्यंतरज्ञावनाम  
रगृहे मेरौकुलाडौस्थिता, जवुशाडमलिचैत्यशाखिपुतथावकाररूप्या-  
दिपु ॥ इक्ष्वाकारगिरौचकुंरुलनगेष्ठीपेचनंदीश्वरे, गौलेपेमनुजोत्तरे  
जिनगृहाः कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ५ ॥ योगज्ञवितरोजयत्यर्दताजन्माज्जि-  
पेकोत्सवे, योजातः परिनिकमेवचन्नवो य केवलज्ञानज्ञाक् ॥ य.कै-  
वल्यपुरप्रवेशमहिमा सज्ञावित स्वर्गिज्जिः, कल्याणानिचतानिपंच  
सततंकुर्वंतुमेमङ्गल ॥ ६ ॥ येपंचोषधिरुद्धयः श्रुततपोरुद्धिगतापंचये,  
येचाष्टागमहानिमित्तकुशलायेष्टौविधाचारणा ॥ पंचज्ञानधराश्वयेपि  
धलिनोयेबुद्धीरुदीश्वरा, सप्तैतेसकलाश्रतेगणचृताकुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ७ ॥  
देव्याश्चाष्टजयादिकाद्विगुणिताविद्यादिकादेवता, श्रीतीर्थकरमातृका-  
भजनकायकाश्वयकीश्वरा द्वात्रिंशच्चिदशाग्रहानिधिसुरा दिक्कन्यका  
श्चाष्टवा, दिक्पालादशइत्यमीसुरगणा कुर्वंतुमेमङ्गलं ॥ ८ ॥ इत्थं

श्रीजिनमङ्गलाष्टकमिदं कल्याणकाले र्दत्तां, पूर्वाण्डेपिमहोत्सवेपिस-  
ततं श्रीसौख्यसंपत्करं ॥ येऽगृण्वन्तिपठन्ति तैश्चमनुजैर्द्धर्मार्थिकामा-  
न्विता, लक्ष्मीराश्रयते विपाथरहिताः कुर्वन्तु मे मङ्गलं ॥ ए ॥ इति  
मंगलाष्टकं संपूर्णं ॥

॥ अथ परमात्मा स्तोत्रः ॥

शिवं शुद्धं बुद्धं परं विश्वनाथं, नदेवं नबन्धुं नैकर्म नकर्ता ॥  
न भ्रंगं नसंगं नशृङ्गा नकामं, चिदानन्दरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥  
नबन्धो नमोक्षो नरागादि लोकं, नजोगं नजोगं नव्याधि नेशोकं ॥  
नक्रोधं नमानं नमाया नलोभं ॥ चिदा० ॥ २ ॥ नहस्तौ नपादौ  
नघ्राणं नजिह्वा, नचक्षुर्नकर्णं नवक्त्रं ननिष्ठा, ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं  
नमुद्रा, चि० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्युं नमोदं नचिता, नकुतूहं  
नजोतं नरुष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नजृत्यं नदेवो नमर्त्या, चि० ४ ॥  
त्रिदंने त्रिखंने दरे विश्वव्यापं, रूपीकेशं विद्वंसं कर्म्मरिजालं  
॥ नपुण्यं नपापं नअज्ञानप्राणं, चि० ॥ ५ ॥ नत्राढ्यं नवृहं  
नविदि नमूढा, नवेद्यं नज्ञेद्यं नमूर्तिर्नमीहा ॥ नरुष्यं नशुक्लं नमोहं  
नतंज्ञा, चि० ॥ ६ ॥ नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या, नड्व्यं नकेत्रं  
नदृष्टो नजव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं, चि० ॥ ७ ॥  
इदं ज्ञानरूपं स्वयं तत्त्ववेदी, नपूणां नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्यो  
जिज्ञिषां नपरमार्थमेकं, चि० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणानि  
धिश्चैतन्यरन्नाकरं, सर्वेज्जगतगतागते सुखं दुःखं ज्ञातात्वया सर्वगं ॥  
त्रैलोक्याधिपति स्वयं स्वमनसा ध्यायन्ति योगेश्वरा, वंदेते हरिवं-  
शं दर्पं हृदयं श्रीमान्मनुदच्युतं ॥ ए ॥ इति श्रीपरमात्मा स्तोत्रं ॥

अथ नमस्कार स्तोत्रं ॥

दर्शनं देव देवस्थ, दर्शनं पाप नाशनं ॥ दर्शनं स्वर्ग सोपानं,  
दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन जिनेज्ञाणा, साधूना वंदनेन च ॥

प्रतिष्ठति चिरंपापं, त्रिष्ट हस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनमूर्त्य  
 ह्य, संसार ध्वातनाशन ॥ बोधनं चित्तपद्मस्य, समस्तार्थ प्रकाश  
 कं ॥ ३ ॥ दर्शनं जिनचंद्रस्य, सद्धर्माभृत वर्षणं ॥ जन्मदाय वि-  
 नाशाय, वृद्धं सुखवारिधे ॥ ४ ॥ जिनेज्जक्ति, जिनेज्जक्ति दिने २  
 ॥ सदामेस्तु २, सदामेस्तु ज्ञवेश ॥ ५ ॥ नद्वित्राता २, नद्वित्रा  
 ता जगत्रये ॥ वीतराग समोदेवो, नज्जतो नज्जविष्यति ॥ ६ ॥  
 धन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्सर्वं प्रयत्नेन,  
 रक्ष २ जिनेश्वर ॥ ७ ॥ वीतरागं मुखं दृष्ट्वा, पद्मरागं समं प्रज्ज ॥  
 नैकजन्म कृतं पापं, दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥ अर्हंतो मंगलं नि-  
 त्यं, सिद्धं जगति मंगलं ॥ मंगलं साधवो मुहुं, धर्मः सर्वत्र  
 मंगलं ॥ ९ ॥ लोकोत्तमा इहार्हताः, सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लो-  
 कोत्तमो यतीशाना, धर्मोलोकोत्तमोर्हता ॥ १० ॥ शरणं सर्वदाई-  
 तः, शिद्धा शरणं मंगलं ॥ साधवः शरणं लोके, धर्मं शरणं मर्द-  
 तां ॥ ११ ॥ इति नमस्कार स्तोत्रं संपूर्णं ॥

॥ अथ तपगच्छ समाचारी विशेष विधि संग्रह ॥

॥ तत्र पुन्यप्रकाश आलोचनं वृद्धं स्तवनं लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ सकल सिद्धिदायकं सदा, चोवीशे जिनराय ॥ स  
 कुरु सामिनी सरसती, प्रेमे प्रणमं पाय ॥ १ ॥ त्रिज्जुवनपति त्रि-  
 सदातपो, नंदन गुण गंज्जीर ॥ शासननायक जगजयो, वर्द्धमान  
 बभूवीर ॥ २ ॥ इकं दिनं वीरं जिनदनें, चरणं करी परिणाम ॥  
 ज्ञविकं जीवना हितं ज्ञणी, पूवै गोयमस्वामि ॥ ३ ॥ सुगतिं मां  
 र्ग आराधिये, कहे क्लिप पर अरिहंत ॥ सुधा सरस तव वचन  
 हस, ज्ञाखे श्रीजगवंत ॥ ४ ॥ अतीचार आलोच्ये, व्रत धरीये गु-  
 रु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोरासी लाख ॥ ५ ॥  
 विधिमुं वलि वीसराधिये, पाप स्थानक अघार ॥ च्यार शरणं नित

अनुसरै, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुभ करणी अनुमोदियै, जा  
 व जलो मन आषि ॥ अणशण अवसर आदरो, नवपद जपो सु  
 जाण ॥ ७ ॥ शुभगति आराधनतणा, ए ठै दडा अधिकार ॥ चि  
 त्त आणीने आदरो, जिम पामो जव पार ॥ ८ ॥ ( दाल ॥ १ ॥  
 ए विन्नी किहा राखी ॥ इस चालमें ) ज्ञान दरिशाण चारित्र तप  
 वीरज, ए पांचे आचार ॥ एहतणा इह जव पर जवना, आलोश्ये  
 अतीचार रे ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखाणी, वीर वदे इम वाणी  
 रे ॥ प्रा० ज्ञा० १ ॥ गुरु जलविये नही गुरु विनयें, कालै घरी बहु  
 मान ॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधा, जणिये वही उपधान रे ॥  
 प्रा० ज्ञा० २ ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवाली ॥ एह  
 तणी कीधी आजातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ प्रा० ज्ञा० ॥  
 ३ ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव प  
 र जव वलिय जवोजव, मित्राडुक्रम तेहरे ॥ प्रा० समकित  
 द्यो शुद्ध जाणी ॥ ४ ॥ जिनवचने शंका नवि कीजै, नवि परमत  
 अजिजाप ॥ साधुनणी निंदा परहरजो, फल संदेह म राखी रे ॥  
 प्रा० स० ५ ॥ मूढपणूं ठंनो परसंसा, गुणवंतने आदरिये ॥ सा  
 हमीने धर्म करि थिरता, जगति प्रजावना करिये रे ॥ प्रा० स०  
 ६ ॥ संघ चैत्य प्राशादतणो जे, अवणोवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य दे  
 वको जे विणसाब्धो, विणसंता नवेख्यो रे ॥ प्रा० स० ७ ॥ इ-  
 त्यादिक विपरीतपणाथी, समकित खंम्युं जेह ॥ आ जव प०,  
 मि० ॥ प्रा० चारित्र द्यो चित्त आणी ॥ ८ ॥ पांच सुमति त्रिण  
 गुप्ति विराधी, आठे प्रवचनमाय ॥ साधुतणे घरमे प्रमादे, अशुद्ध  
 वचन मन काय रे ॥ प्रा० चा० ९ ॥ आवकने धर्म सामायक, पो  
 सहमा मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक आठे, प्रवचनमायन पाली  
 रे ॥ प्रा० चा० १० ॥ इत्यादिक ॥ ५१, चारित्र रुहोद्वयुं

जेह ॥ आज्ञव०, मित्रा० ॥ प्रा० चा० ११ ॥ वारे जेदे तप नवि  
 कीधो, उते योगे निज शकते ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि  
 फोरविउं जगते रे ॥ प्रा० चा० १२ ॥ तप वीरज आचारे इण पर,  
 विविध विराध्या जेह ॥ आज्ञव०, मित्रामि० ॥ प्रा० चा० १३ ॥  
 वलिय विधेपे चारित्र केरा, अतीचार आलोइये ॥ वीरजिनेसर ब  
 चन सुणीने, पाप मैल सवि धोइये रे ॥ प्रा० चा० १४ ॥ (हाल२)  
 पृथ्वी पाणी तेउ, वाउ वनस्पती, ए पांचे थावर कहा ए ॥ करी  
 करसण आरंज, खेत्र जे खेनीया, कूआ तलाव खणाविया ए ॥१॥  
 धर आरंज अनेक, टांका जोयरां, मेमी माल चिणाविया ए ॥  
 लीपण गुपण काज, इण पर परपरे, पृथ्वीकाय विराधिया ए ॥  
 २ ॥ धोयण ताहण पाणी, जीलण अप्पकाय, जोती धोती कर दू  
 हव्याए ॥ जाठीगर कुंजार, लोह सोवनगरा, जामजूजा लिहालागरा  
 ए ॥३॥ तापण सेकण काजे, वख निखारण, रंगण राधण रसवती ए ॥ इ  
 णि परे कर्मादान, परिपरे केलवी, तेउ वाउ विराधियाए ॥४॥ चामी  
 वन आराम, चावी वनस्पती, पान फूल फल चूटीया ए ॥ पौदक  
 पापनि शाक, सेक्या सूकव्या, ठेद्या ठूंद्या आशिया ए ॥५॥ अल  
 शीने एरंरु, घाणी घालीने, घणा तिलादिक पीलीयाए ॥ घाली कोलू  
 माहि, पीली सेलनी, कंद मूल फल वेचीया ए ॥ ६ ॥ इम एकें-  
 डी जीव, हएया हणाविया, हणता जे अनुमोदीया ए ॥ आज्ञव  
 परज्ञव जेह, वलिय जवोजव, ते मुऊ मित्रामिउकरु ए ॥ ७ ॥  
 क्रमी सरमिया कीना, गारु गमोला, इयल पूरा अलशीआ ए ॥  
 वाला जलो चूमेल, विचलितरसतणा, वलि अथाणा प्रमुखना ए ॥  
 ८ ॥ इम बेइंडी जीव, जे में दूहव्या, ते मुऊ मि० ॥ उहेदी जूं  
 लीख, मांकरु मंकोना, चाकरु कीनी कंयुआ ए ॥ ए ॥ गहदिया  
 धीवेल, कानखजुरना, गीमोला धनेरीया ए ॥ इम तेइंडी जीव,

जे में दूहव्या, ते मुऊ मिछा० ॥ १० ॥ माखी मंहर नास, मसा  
 पतंगिया, कंसारी कोलिचावना ए ॥ ढीकण विठु तीरु, जमरा  
 जमरीय, कौंता वग खरुमांकनी ए ॥ ११ ॥ इम चोरेंद्री जीव,  
 जे में दूहव्या, ते मुऊ० ॥ जलमा नांखी जाल, जलचर दूहव्या,  
 चनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीरुया पंखी जीव, पानो पा-  
 समां, पोपट घाट्या पांजरे ए ॥ इम पंचेंडी जीव, जे में दू०, ते  
 मुऊ० ॥ १३ ॥ ( दास ३ ॥ प्राणी वाणी हितकरी जी ॥ ए  
 चाल ) क्रोध लोभ जय हासथी जी, बोला वचन असत्य ॥  
 कूरु करी धन पारका जी, लोधा जेह अदत्त रे ॥ जिनजी  
 मिछामि डुक्कर आज, तुम्ह साखे महाराज रे ॥ जिनजी मि० ॥  
 देई सारु काज रे ॥ जिनजी मि० ॥ १ ॥ देव मनुज तिर्यचना जी,  
 मैथुन सेव्या जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी, घणुं विटंब्यो देह  
 रे ॥ जि० २ ॥ परिग्रहनी भमता करी जी, जव२ मेली आधि ॥  
 जेह जिहां ते तिहां रही जी, कोश्य न आवै साथ रे ॥ जि० ३  
 ॥ रयणी जोजन जे कर्पा जी, कीया जह अजह ॥ रसना र  
 सनी लालचें जी, पाप कर्पा परतह रे ॥ जि० ४ ॥ व्रत लेई  
 वीसारीया जी, वलि जांग्या पञ्चकाण ॥ कपट हेतुं किरिया करी  
 जी, कीया आप वखाण रे ॥ जि० ५ ॥ त्रिण ढाले आठे दूहे जी,  
 आलोया अतीचार ॥ शिवगति आगधनतणो जी, ए पहिलो अ-  
 विकार रे ॥ जि० ६ ॥ ( ढाल ४ ॥ साहेलमीनी देशी ॥ ) पच  
 महाव्रत आदरो, साहेलमी रे ॥ अथवा द्यो व्रत बार तो ॥ यथा  
 शक्ति व्रत आदरो, सा० ॥ पालो निरतीचार तो ॥ १ ॥ व्रत लिया  
 संजारीये, सा० ॥ हीयमै धरिय विचार तो ॥ शिवगति आराधन-  
 तणो, सा० ॥ ए बीजो अधिकार तो ॥ २ ॥ जीव सवै खमाविषै  
 सा० ॥ योनि चोरासी ॥ मजगुदै करो खामणा, सा० ॥

फोईसुं रोप न राख तो ॥ ३ ॥ सर्व मित्र करी चितवो, सा० ॥  
 कोइय न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष इम परिहरो, सा० ॥ कीजै  
 जन्म पवित्र तो ॥ ४ ॥ साहमी सघ खमावियै, सा० ॥ जे उप  
 नी अप्रीत तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणा, सा० ॥ ए जिनशा  
 सन रीत तो ॥ ५ ॥ खमिये अने खमावियै, सा० ॥ एहीज धर्म  
 नो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो, सा० ॥ ए त्रीजो अधि  
 कार तो ॥ ६ ॥ मृषावाद हिंसा चोरी, सा० ॥ धन मुर्खा मैद्युत्र  
 तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा, सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥  
 निंदा कलह न कीजियै, सा० ॥ कूना न दीजै आल तो ॥ रती  
 अरती मिथ्या तजो, सा० ॥ माया मोस जंजाल तो ॥ ८ ॥ त्रि-  
 विधर वोसरावियै, सा० ॥ पाप स्थान अघर तो ॥ शिवगति आ  
 राधनतणो, सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥ ( दाल ए मी  
 ॥ हवै निसुणो इहा आवीया ए ॥ ए चाल ॥ ) जनम जरा मर-  
 णे करी ए, ए ससार असार तो ॥ कर्या कर्म सह अनुजवे ए,  
 कोइय न राखणहार तो ॥ १ ॥ उरण एक अरिहंतनुं ए, शरण  
 सिद्धगवंत तो ॥ शरण वर्म श्रोजैनने ए, साधु शरण गुणवंत  
 तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए ॥ चार उरण चित धार  
 तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए पाचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥  
 आज्ञव परज्ञव जे कर्या ए, पाप कर्म केइ लाख तो ॥ आत्म  
 साखे निंदिये ए, पन्किमिये गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामत  
 वर्त्तावित्रा ए, जे ज्ञाख्या उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वत्ते ए,  
 बलि उत्प्राप्या सूत्र तो ॥ ५ ॥ धर्या धर्याव्या जे घणा ए, घरटी  
 इल इधियार तो ॥ जवर मेली मूकीया ए, करता जीव संहार  
 तो ॥ ६ ॥ पाप करीने पोपीया ए, जनमर परिवार तो ॥ जन-  
 मातर पोइता पठी ए, कोइय न कीवी सार तो ॥ ७ ॥ आज्ञव

परंजव जै करघा ए, इम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविध२ वोर्ति  
 शविये ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ डुरुत निंदा इम  
 करी ए, पाप करघा परिहार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ए, ए  
 ठणे अधिकार तो ॥ ९ ॥ ( ढाल ठणे ॥ आदि तु जोइने आपणी  
 ॥ ए चाल ॥ ) धन२ ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान  
 शीयल तप आवरी, टाळपा डुष्कर्म ॥ ध० १ ॥ शेरुंजादिक तीर्थ  
 नी, जे कीवी यात्र ॥ युगते जिनवर पूजिया, बलि पोष्या पात्र ॥  
 ध० २ ॥ पुस्तक ज्ञान लिखाविया, जिणहर विन चैत्य ॥ संघ चतु  
 विध साचव्या, ए साते क्षेत्र ॥ ध० ३ ॥ पम्किमणा सुपैर करघा,  
 अनुकंपा दान ॥ साधू सूरि उवझायने, वीधा बहुमान ॥ ध० ४ ॥  
 धर्मकारज अनुमोदिये, इम वारोवार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
 सातमो अधिकार ॥ ध० ५ ॥ जाव जलो मन आणीयै, चित्त आ  
 णी वाम ॥ समता जावे जाविये, ए आत्मराम ॥ ध० ६ ॥ सुख  
 डुख कारण जीवने, कोइ अवर न होइ ॥ कर्म आप जे आचरघा,  
 जोगविये सौय ॥ ध० ७ ॥ समता विरा जे अनुसरे, प्राणी पुन्य  
 काम ॥ ठारि ऊपर ते लोपणू, जाखर चित्राम ॥ ध० ८ ॥ जाव  
 जली परे जावियै, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो,  
 आठमो अधिकार ॥ ध० ९ ॥ ( ढाल ७ मी ॥ शैवत गिरि ऊपर  
 ॥ ए चाल ) हवै अवसर जाणी करीय संलेखण सार, अणनण  
 आदरिये पञ्चस्की घ्यार आहार ॥ ललुता सवि मूकी मंकी ममतर  
 अंग, ए आत्म खेले समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति घ्यार कीचा  
 हार अनंत निःशंक, पण तृपति न पाम्यो जीव खालेचीन रंक ॥  
 ए वली२ अराशरणो परिणाम, एदुथी पाणीजे विनायक सर  
 ॥ १ ॥ धन धना शालिज्ज खंवो  
 जवनो पार ॥ शिवमंदिर जास्ये



ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमें अधिकारै महा मंत्र नवकार,  
 मनथी नवि मूँको शिवसुख फल सहकार ॥ ए जपतां जायै दुर्ग  
 ति दोष विकार, सुपरे ए समरो चन्द्र पूरवनो सार ॥ ४ ॥ ज-  
 न्मातरे जाता जो पामे नवकार, तो पातिक गाली पामे सुर श्रव-  
 तार ॥ ए नवपद सरखो मंत्र न कोई सार, इह जव ने परजव सुख  
 सपति दातार ॥ ५ ॥ जुठ जीव जीवणी राजा राणी थाय, नवपद म  
 हिमाथी राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहुँ पाम्या ठै सुर  
 जोग, इक जवथी लेस्ये सिद्धवधू सजोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए व  
 ली मंत्र फढ्यो ततकाल, फणधर फीटीने प्रगट थई फूलमाल ॥  
 शिवकुमरे योगी सोवनपुरतो कीय, इम एणे मंत्रे काज घणाना  
 सिद्ध ॥ ए दश अधिकारे वीर जिनेसर जाख्यो, आराधनकेरो विधि  
 जिणे चित्तमा राख्यो ॥ तिणे पाप पखाली जवजय दूरे नाख्यो,  
 जिन विनय करता सुमति श्रमृतरस चाख्यो ॥ ७ ॥ ( ढाल ७  
 मी ॥ नमो जवि जावसुं ए ॥ ए चाल ) सिद्धारथराय कुल तिलो  
 ए, त्रिशला मात मब्हार तो ॥ श्रवनी तलै तुमे श्रवतस्था ए,  
 करवा श्रम्ह उपगार ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ १ ॥ में  
 अपराध करथा घणा ए, कहता न लहुं पार तो ॥ तुम्ह चरणे आ  
 व्या जणी ए, जो तारे तो तार ॥ ज० २ ॥ आश करीने आवियो  
 ए, तुम चरणे महाराज तो ॥ आव्याने उवेखस्यो ए, तो किम  
 रहस्यै लाज ॥ ज० ३ ॥ करम अलूण आकरा ए, जनम मरण  
 जजाल तो ॥ हु वु एहथी उजग्यो ए, गेरुव देवदयाल ॥ ज०  
 ४ ॥ आज मनोरथ मुज फढ्या ए, नाग डख दंदोल तो, तुगे  
 जिन चोवीशमो ए ॥ प्रगट्या पुन्य कल्लोल ॥ ज० ५ ॥ जव  
 विनय तुम्हारमो ए, जाव जगत तुम्ह पाय तो ॥ देव दया करि  
 हीजीये ए, बोधवीज सुपसाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ (

तरण तारण सुगति कारण, दुःख निवारण जग जयो ॥ श्रीवीर  
 जिणवर चरण श्रुणता, अधिकमन वल्लट थयो ॥ १ ॥ श्रीविजयदेव  
 सूरिंद पटघर, तीरथ जंगम इण जगे ॥ तपगच्छपति श्रीविजयप्र  
 जसूरि, सूरि तेजे जगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वा  
 चक, कीर्तिविजय सुरगुरु शमो ॥ तश शिष्य वाचक विनय वि-  
 जये, श्रुणयो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सय सत्तर संवत उगणतीत्ते,  
 रही रानेर चोमाश ए ॥ विजयदशमी विजय कारण, कियो गुण  
 अच्यास ए ॥ ४ ॥ नरजव आराधन सिद्धिसाधन, सुकृत लील वि  
 लास ए ॥ निर्झरा हेते स्तवन रचियुं, नामे पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥  
 इति श्रीवीरजिन पुण्य प्रकाश आराधना स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ भरहेसरनी सिंहाय लिख्यते ॥

जरहेसर बाहुवली, अन्नयकुमारोत्र ढंढणकुमारो ॥ सिरिञ्च  
 अणियाञ्चो ॥ अयमचो नागदचोत्र ॥ १ ॥ मे अज्जथूलिञ्चदो, वरय  
 रिसि नंदिसेण सीदगिरी ॥ कयवन्नोत्र सुकोसल, पुंनरिओ केसि  
 करकंनू ॥ २ ॥ इल्ल विदल्ल सुदंसण, सालि महासालि सालिञ्च  
 दोत्र ॥ जदोत्र दसन्नदो, पसन्नचंदोत्र जसन्नदो ॥ ३ ॥ जंनूपडू  
 वंकचूलो, गयसुकमालो अवंतीसुकमालो ॥ घन्नो इलाइपुत्तो, चि-  
 लाइपुत्तोत्र बाहुमुणी ॥ ४ ॥ अज्जगिरि अज्जरुक्खिय, अज्जसुइत्थो  
 उदाय गोमणगो ॥ कालयसूरि संबो, पज्जन्तो मूलदेवोय ॥ ५ ॥  
 पन्नवो विन्हुकुमारो, अहकुमारो इदपहारोत्र ॥ सिज्जंन कूरगड्डुअ,  
 सिज्जंनव मेहकुमारोत्र ॥ ६ ॥ एमाइ महासत्ता, दिंतु सुइं गुण-  
 गणेहि संयुत्ता ॥ जेसिं नामग्गइणे, पावपबंधा विलयजंति ॥ ७ ॥  
 सुलसा चंदणवाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती ॥ नमयासुंदरि  
 सीया, नेदा जहा सुजहाय ॥ ८ ॥ राईमई रिसिदत्ता, पन्नमावई  
 अंजणा सिरीदेवी ॥ जिठ सुजिठ मिगावई, पन्नावई चिद्धणादेवी

॥ ए ॥ बंजी सुंदरी रुपिणी, रेवई कुंती शिवा जयंतीय ॥ देवीई  
दोवई धारणी, कलावई पुष्कबूलाय ॥ १० ॥ उपमावईय गोरी,  
गंधारी लखमणा सुसीमाय ॥ जंबुवई सञ्जामा, रुपिणी कन्हव  
महितीछ ॥ ११ ॥ जस्काय जस्कादिना, चूआतह चव चूय दि-  
घाय ॥ सेणा वेणारेणा, जअणीओ थूलजइस्त ॥ १२ ॥ इचाई महा-  
सईओ, जयंती अकलंक शोल कलिआछ ॥ अऊ विवऊई जासि,  
जस परुहो तिहुअणे समये ॥ १३ ॥ इति सत्तासतीछनो सिझाय  
॥ अथ मन्हजिणाणं सिझाय ॥

मन्हजिणाणआणां, मिच्चपरिहरदधरसम्मत्त ॥ ठच्चिदधाव-  
स्सयंमि, मुच्चुचोहोइपयदिवस ॥ १ ॥ पवेसुपोसहवय, दाणशालं  
सवोअजावोअ ॥ सझायनमुकारो, परोवयारोअजयणाअ ॥  
२ ॥ जिणपूआजिणयुणियां, गुरुयुअसाहम्मिआणावञ्चलं ॥  
ववदारस्सयसुद्धी, रइयत्तातिथ्यत्ताय ॥ ३ ॥ उवशामविवेकसंवर,  
प्तासासमिईवञ्जीवकरुणाय ॥ धम्मियजणसंसग्गो, करणदमोच  
णपरिणामो ॥ ४ ॥ संघोवरिवहुमाणो, पुत्थयलिदणपजावणा  
तित्थे ॥ सहाणकिच्चमेअं, निच्चंसुगुरुवएसेणं ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ सकल तीर्थवदना ॥

सकल तीर्थ वंदू करजोरु, जितवर नामे मंगल कोरु ॥ पदेले  
स्वर्गे लाख बत्तीत, जिनवर चैत्य नमु निशदीश ॥ १ ॥ बीजै लाख  
अघावीग कह्या, बीजै वार लाख सरदह्या ॥ चोथे स्वर्गे अरु लख  
धार, पाचमें वादू लाखज वयार ॥ २ ॥ ठेठे स्वर्गे सहस पचास,  
सातमें घालीस सहस प्राशाद ॥ आठमे स्वर्गे ठ हऊार, नव द-  
घामें वंदू शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार वारमें त्रणसे सार, नव त्रैवे  
अके त्रणसे अदार ॥ पांच अनुत्तर सवें मली, लाख चोरासी अधि  
का वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणु त्रैवीन सार, जिनवरचुवनतणो

अधिकार ॥ लांबा सो योजन विस्तार, पञ्चास उंचा बहोत्तर धार ॥ ११ ॥  
 एकमो श्रुती विंश परिमाण, सत्ता सद्धित इक चैत्ये जाण ॥ सो कोरु  
 वावन कोरु संज्ञाल, लाख चोराणुं सहस चोत्राल ॥ ६ ॥ सातसे उपर  
 साठ विस्तार, मत्री विंश प्रणमुं त्रिण काल ॥ सात कोरुने बहो-  
 त्तर लाख, चुवनपतीमां देवल चारव ॥ ७ ॥ एकशो अशी विंश  
 प्रमाण, इकर चैत्ये संख्या जाण ॥ तेरसे कोरु निव्याशी कोरु,  
 साठ लाख वंदू करजोरु ॥ ८ ॥ वत्रीशे ने श्रोगणसाठ, तिर्ग-  
 लोकमा चैत्यनी पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशे वीश ते  
 विंश जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर ज्योतपीमां वलि जेह, शाश्वता जिनवर  
 वंदू तेह ॥ रूपजा चंद्रानन वारिखेण, वर्द्धमान नामे गुण-  
 शेष ॥ १० ॥ समेतशिखर वंदू जिन वीश, अष्टापद वंदू चोवीश ॥  
 विमलाचल ने गढगिरनार, आवू ऊपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥  
 शंलेश्वर केशरियो सार, तारंगे श्रीअजित जुहार ॥ अंतरीक वर-  
 काणो पाश, जीरावलो ने धंजणपाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर  
 पाटण जेह, जिनवर चैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदू जिन  
 वीश, सिद्ध अनंत नमुं निशदीश ॥ १३ ॥ अढी छीपमां जे अण-  
 गार, अढार सहस शीलागना धार ॥ पंच महाव्रत सुमती सार,  
 पाले पलावै पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अर्च्यंतर तप उजमाल, ते  
 मुनि वंदू गुणमणि माल ॥ नितर ऊठी कीर्तिकरुं, जीव कहे जव-  
 सायर तरुं ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सकलार्हत स्तोत्र ॥

सकलार्हतप्रतिष्ठान, मधिष्ठानशिवश्रिय. ॥ चूर्तुव.स्वस्वयी-  
 ज्ञान, मर्हित्यंप्रणिदध्महे ॥ १ ॥ नामाकृतिद्रव्यज्ञावै, पुनत.स्त्रिज-  
 गज्जनं ॥ क्षेत्रेकालेचसर्वस्मिन्, नर्हतःसमुपास्महे ॥ २ ॥ आदि-  
 मंपृथ्वीनाम्, न . . . . . दिमतीर्थनायं,

मिनंस्तुम. ॥ ३ ॥ अर्हतमजितंविश्व, कमलाकरज्ञास्करं ॥ अम्लान-  
 केवलादर्श, संक्रातजगतंस्तुवे ॥ ४ ॥ विश्वन्नव्यजनाराम, कुब्ज्या-  
 तुब्ज्याजयंतुता ॥ देशनासमयेवाच, श्रीशंभवजगत्पतेः ॥ ५ ॥  
 अनेकांतमतांज्ञोधि, समुद्वाशनचंडमां. ॥ दद्यादमदमानंद, जगवान  
 जिनंदनः ॥ ६ ॥ द्युशत्कीरीटशाणाग्रो, तेजिताक्लिन्खावलिः ॥  
 जगवान्सुमतिस्वामी, तनोत्वज्जिमतानिवः ॥ ७ ॥ पद्मप्रजप्रज्ञोर्देह,  
 ज्ञास.पुष्पांतुव. श्रियं ॥ अंतरंगारिमग्रने, कोपाटोपादिवारुणाः॥८॥  
 श्रीसुपार्श्वजिनेज्ञाय, महेंद्रमहिताह्वये ॥ नमश्चतुर्वर्णसंध, गगना-  
 ज्ञोगज्ञास्वते ॥ ९ ॥ चंद्रप्रजप्रज्ञोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्वला ॥ मुर्त्ति-  
 मुर्त्ति सितध्यान, निर्मितेवश्रयेस्तुवः ॥ १० ॥ करामत्रकत्रद्विश्वं, कल-  
 यन्केवलश्रियां ॥ अर्चित्यमहात्म्यनिधि, सुविधिवोधयेस्तुव ॥ ११ ॥  
 सत्वानांपरमानंद, कंदोद्भेदनवाबुद ॥ स्याद्वादात्मृतनिस्यंदी, शीतलः  
 पातुवोजिन ॥ १२ ॥ ज्वरोगार्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शन. ॥ नि-  
 श्रेयसश्रीरमण, श्रेयांस. श्रेयसेस्तुव ॥ १३ ॥ विश्वोपकारकीञ्जुत,  
 तीर्थकृत्कर्मनिर्मिति. ॥ सुरासुरनरै. पूज्यो, वासुपूज्य.पुनातुव ॥ १४ ॥  
 विमलस्वामिनोवाच., कृतककोदसोदरा. ॥ जयंतित्रिजगच्चेनो,  
 जलनैर्मद्व्यदेतव ॥ १५ ॥ स्वयंनूरमणस्पर्धि, करुणारसवारिणां ॥  
 अनंतजिदनंताव, प्रयच्छतुसुखश्रिया ॥ १६ ॥ कल्पज्जुमसंधर्म्माण,  
 मिष्टप्राप्तौशरीरिणां ॥ चातुर्धर्मदेष्टारं, धर्मनाथंमुपास्महे ॥ १७ ॥  
 सुधासोदरवाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिग्मुख. ॥ मृगलहंम्यातम शात्यै,  
 शातिनाथजिनोस्तुव ॥ १८ ॥ श्रीकुंथुनाथोजगवान्, सनाथोतिशयर्धि-  
 ज्जि. ॥ सुरासुरनृनाथाना, मेरुनाथोऽस्तुवःश्रिये ॥ १९ ॥ अरनाथस्तुज  
 गवां, अतुर्थारनज्ञोरवि ॥ श्वतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासंवितनोतुवः ॥ २० ॥  
 सुरासुरनराधीश, मयूरनववारिदं ॥ कर्मद्रून्मूलनेहस्ति, मल्लंमद्विमज्जि  
 ॥ २१ ॥ जगन्मदामोदनिज्ञा, प्रत्युपममयोपमं ॥ मुनिसुव्रतनाथस्य,

देशनावचनंस्तुमः ॥२२॥ लुण्ठितो नमतांमूढि, निर्मलीकारकारिणं ॥  
 वारिष्ठवाइवनमे., पातुं पादनखाशव. ॥ २३ ॥ यद्ववंशसमुद्भूतः,  
 कर्मकक्षुद्रताशन. ॥ अरिष्टनेमिर्जगवान्, ज्ञयाक्षोऽरिष्टनाशनः ॥  
 ॥ २४ ॥ कमठेधरणेंद्रेच, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥ प्रभुस्तुल्यमनो  
 वृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तुवः ॥ २५ ॥ श्रीमतेवीरनाथाय, सनाथा  
 याद्भुतश्रिया ॥ महानंदसरोराज, मरालायाईतेनमः ॥ २६ ॥ कृता  
 पराधेपिजने, कृपामंथरत्तारयोः ॥ ईपद्वाप्पार्दयोर्जद्र, श्रीवीरजिनने  
 प्रयोः ॥ २७ ॥ जयतिविजितान्यतेजाः, सुरासुराधीशसेवितः श्री  
 मान् ॥ विमलस्त्रासविरहित, खिन्नवचनचूनामणिर्जगवान् ॥ २८ ॥  
 वीर. सर्वसुरासुरेण्महितो, वीरंबुधाः संभ्रिता ॥ वीरेणाजिहतः स्वक  
 र्भनिचयो, वीरायनित्यं नमः ॥ वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वी  
 रस्यघोरंतपो ॥ वीरे श्रीधृति कीर्ति कांतिनिचयः, श्रीवीरज्ञइंविशः ॥  
 ॥ २९ ॥ अवनितलगतानां कृत्रिमा कृत्रिमानां, वरभुवनगतानां दिव्य  
 चैमानिकानां ॥ इहमनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरभुवनानां  
 ज्ञावतोऽहं नमामि ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिकर स्तोत्र लिख्यते ॥

संतिकर संतिजिण, जगसरणं जयसिरीइदायारं ॥ समरामिन्नत्त-  
 पालग, निघाणीगरुमकयसेव ॥ १ ॥ उँसनमो विप्पोसहिपत्ताणं,  
 संतिसामि पायाणं ॥ ज्जौस्वाहा भंतेणं, सद्वाशिवडुरिअहरणाणं  
 ॥ २ ॥ उँसंतिनमुक्कारो, खेलोसहि माइलद्धिपत्ताणं ॥ सोँह्नीनमो  
 सधोसहि, पत्ताणंचदेइसिरि ॥ ३ ॥ वाणीतिहुअणसामिणी, सिरि-  
 देवीजस्करायगणिपिग्गा ॥ गहदिसिपालसुरिंदा, सयाविरस्कंनुजि-  
 णत्तत्ते ॥ ४ ॥ रस्कंतुममरोहिणी, पन्नत्तीवज्जसिंखलासया ॥ व-  
 ज्जकुत्तिचकेसरी, नरदत्ता काली महाकाली ॥ ५ ॥ गोरीतहगं-  
 धारी, माणवीश वइरुद्धा ॥ सिआ, माहा-

भाणसिंभ्रातृ देवीत ॥ ६ ॥ जस्कागोमुद्दमहाजस्का, तिमुद्दजस्के  
 सुतुंबरुकुसुमो ॥ मायंगविजयअजिन, वज्रोमाणुनेसुरकुमारो ॥ ७ ॥  
 उम्मुद्दपायालकिन्नर, गरुडोगंधवतद्वयजस्किदो ॥ कुधेरवरुणोत्तिष्ठनी  
 गोमेहोपासमायंगो ॥ ८ ॥ देवीतचकेसरी, अजिआडुरिआरि  
 कालीमहाकाली ॥ अञ्जुअसंतजावा, सुतारयासोअसिरिवञ्जा ॥ ९ ॥  
 चनाविजयंकुसिपन्नइत्ति, निवाणिअञ्जुआधरणी ॥ वरुडुवु-  
 ळगंधारी, अंबपन्नमावईतिध्वा ॥ १० ॥ इयतित्थरस्कणरया,  
 अत्तेविसुरासुरीचक्रहावि ॥ व्यंतरजोइसिपमुहा, कुणंतुरस्कसयाअ  
 म्हं ॥ ११ ॥ एवंसुदिदिसुरगण, सहिओसधस्तसंतिजिणचंदो ॥  
 मझविकेउरस्कं, मुणिसुंदरसूरिद्युअमहिमा ॥ १२ ॥ इअसंतिना  
 दसम्मदिठी, रस्कंसरइतिकालंजो ॥ संबोवद्वरहिओ, सलदइसुह  
 संपयंपरमं ॥ १३ ॥ तवगङ्गयणदिणयर, जुगवरसिरिसोमसुंदरगुरु  
 ण ॥ सुपसायलद्वगणहर, विज्जासिद्धिंजणइसीसो ॥ १४ ॥ इति ॥  
 ॥ अथ श्रीसीमंधरजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥

सीमंधर परमात्मा, शिवसुखना दाता ॥ पुस्कलवई विज  
 यें जयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंरुरीगणी, नयरी  
 यें सोहे ॥ श्रीश्रेयाश राजा तिहा, जवियणना मन मोहे ॥ ३ ॥  
 चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकीराणी मात ॥ कुंधु अर जिन  
 अंतरे, श्रीसीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमे प्रज्जु जनमियाह, वली  
 योवन पावै ॥ मात पिता हरखे करी, रुकमणी परणावै ॥ ४ ॥  
 जोगवी सुख संसारना, सजम मन लावै, मुनिसुव्रत नमी अंतरे,  
 दीक्षा प्रज्जु पावै ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाभ्या कैवल  
 नाण ॥ वृपज लंठने शोचता, सर्व ज्ञावना जाणा ॥ ६ ॥ चौराशी जस  
 गणधरा, मुनिवर एकसो कीमी ॥ त्रण ज्ञुवनमां जोअतां, नहि  
 कोई एहनी जोमी ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रज्जुजीने

परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणै सर्व विचारं ॥ ७ ॥  
 छंद्य पेढाल जिनांतरे ए, धाशै जिनवर सिद्ध ॥ जशविजय गुरु  
 प्रणमतां, शुभ्र वंठित फल लीध ॥ ए॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पुनः  
 ॥ आसामथर जगधरणी, आ ञरते आवो ॥ करुणावंत करुणां  
 करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल जक्त तुमे धरणी ए, जो होवें  
 अम नाथ ॥ जवोजव हूं तूं ताहरो, नहीं मेळूं हवे साथ ॥ २ ॥  
 सयल संग ठनी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेविने,  
 शिवरमणी वरिसुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुऊनें घणो ए, पूरो सोमं-  
 धरदेव ॥ इहाअको हूं वीनवूं, अवधारो मुऊ सेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धगिरो चैत्यवंदन लिख्यते ॥

विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिजुवन दिनकरं ॥  
 सुरराज संस्तुत चरण पंरुज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल  
 गिरिवर शृंग मंरुण, प्रवर गुणगण जूवरं ॥ सुर असुर किन्नर  
 कोमि सेवित, नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरीगण, गाय जि-  
 नगुण मनहरं ॥ निर्जरावलि नमैं अहनिशि, नमो० ॥ ३ ॥ पुंन-  
 रीकं गणपति सिद्धि साधी, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्रीविमल  
 गिरिवर शृंग सीधा, नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुरिंद  
 मुनिवर, कोमिनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्तिरमणी वस्था रंगै, नमो० ॥  
 ॥ ५ ॥ पातालनर सुरलोक माही, विमलगिरिवर ते परं ॥ नहि  
 अधिक तीरथ तीर्थपति कहे, नमो० ॥ ६ ॥ इम विमलगिरिवर  
 शिखर मंरुण, दुःख विहंरुण ध्याईयै ॥ निज शुभ सत्ता साध-  
 नार्थे, परम ज्योतिनेपाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विगोह निज्ञा,  
 परम पद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मवि-  
 जयसु हितकरं ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ ॥ श्रीशत्रुंजय  
 सिद्धक्षेत्र, दीवै दुर्गति वारै ॥ ज्ञाव धर ॥ तेने जव पां



ऊतारै ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीरथनो राय ॥  
 पूर्व नवाणू रूपनदेव, ज्या ठविया प्रभु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुरु  
 सोहामणो, कवरुयक अन्निराम ॥ नान्निराया कुलमंरुणो, जिन-  
 वर करुं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति द्वितिय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ श्रीपरमात्मा चैत्यवदन लिख्यते ॥

परमेसर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जगगुरु देवाधि  
 देव, नयणे में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अधिकार सार, करुणा  
 रश सिधु ॥ जगती जन आचार एरु, नि.कारण बंधु ॥ २ ॥ गुण  
 अनत प्रभु ताहरा ए, किमही कट्या न जाय ॥ राम प्रभु जिन  
 ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसोमवर जिन स्तवन ॥

सुणो चदाजी, सीमधर परमातम पासे जावजो ॥ मुज  
 वीनतरु, प्रेम धरीनें इण पर तुमे सज्जलावजो ॥ जे त्राय जुवन  
 ना नायक वै, जस चोसठ इदर पायक वै, नाण दरशण जेहना  
 हायक वै ॥ सुणो० ॥ १ ॥ जेनी कंचनवरणी काया वै, जश धोरी  
 खठन पाया वै, पुंरुरीगणी नारीनो राया वै ॥ सुणो० ॥ २ ॥  
 वार पर्यदा माहि विराजे वै, जश चोत्रीश अतिशय ठाजै वै,  
 गुण पेंत्रीस वाणीयै गाजै वै ॥ सुणो० ॥ ३ ॥ नविजनने ते पन्निबोहे  
 वै, तुम अधिक शीतलगुण सोहे वै, रूप देखी नविजन मोहे वै ॥  
 सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसियो वूं, पण जरतमां दूरै वसि  
 ओ वूं, महा मोहराय कर फसियो वूं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण  
 साहिव चित्तमा धरियो वै, तुम आणा खरुग कर ग्रहियो वै, तव  
 काइक.मुऊथी रुरियो वै ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पूठ हवे  
 पूरो, कहै पद्मविजय आऊ शूरो, तो बाधे मुऊ मन अति नूरो ॥  
 सु० ॥ ७ ॥ इति पद ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरी स्तवन लिख्यते ॥

आखमिये रे मे आज सेत्रुंजो दीगो रे, तवालाख टकानो  
दिहानो रे, लागे मुने मीगो रे ॥ सफल थयो म्हारा मननो ऊमा  
हो, वालामारा, जवनो सशय जाग्यो रे ॥ नरक तिर्यच गति दूर  
निवारो, चरणे प्रभुजीने लाग्यो रे ॥ शेत्रुं० १ ॥ मानवजवनो  
लाहो लोधो, वाला० देह्नी पावन कीधो रे ॥ सोना रूपाने फू-  
लने वधावी, प्रेम प्रदहणा दीरी रे ॥ शेत्रुं० २ ॥ दूयने पखालीने  
केशर घोली, वा० श्रीआदीश्वर पूज्या रे ॥ श्रीसिद्धाचल नयणे  
जोता, पापमेवासी ध्रुज्या रे ॥ शेत्रुं० ३ ॥ स्वयमुख सुधर्मा सु-  
रपति आगे, वा० वीरजिनद इम बोले रे ॥ त्रण जवनमा तीरथ  
मोटुं, नहिं कोइ सेत्रुंजा तोले रे ॥ शेत्रुं० ४ ॥ इइ सरीखा ए  
तीरथनी, वा० चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो कासल  
टाले, सूरजकुंरुमां नाहे रे ॥ शेत्रुं० ५ ॥ काकरे० श्रीसिद्धक्षेत्रे,  
वा० साधु अनता सीया रे ॥ ते माटे ए तीरथ मोटुं, उक्षर अ-  
नंता कीधा रे ॥ शेत्रुं० ६ ॥ नाजिराया सुत नयणे जोता, वा०  
मेह् अमीरश वूठ्या रे ॥ उदयरतन कहै आज म्हारे पोते, श्री  
आदीश्वर तूठ्या रे ॥ शेत्रुं० ७ ॥ इति ॥

पुन. ॥ विमलाचल नित वदिये, कीजे एहनी सेवा ॥ मानू  
हाथ ए धर्मनो, शिवतरु फल लेवा ॥ वि० १ ॥ उक्ताज जिन गृहमंरुली,  
तिहा दीपे उत्तंगा, मानु हिमगिरि चित्रमे ॥ आई अंवर गंगा ॥ वि०  
२ ॥ कोइ अनेरुं जग नही, ए तीरथ तोले ॥ इम श्रीमुख हरि  
आगलै, श्रीसीमंधर बोलै ॥ वि० ३ ॥ जे सगला तीरथ कर्या,  
जात्राफल लहियै, तेहथी ए गिरि जेटतां, शतगणुं फल लहियै ॥  
वि० ४ ॥ जनन सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजश  
विजय संपद लहे, ते नर चिरनंदे ॥ वि० ५ ॥ इति पद ॥

॥ अथ श्रीपंचतीर्थ स्तवन ॥

श्लोक ॥ श्रीशत्रुंजयमुख्यतीर्थतिलक श्रीनाञ्जिराजांगजं,  
 वैदेवैतशैलमोलिमुकुट श्रीनेमिनाथंयथा ॥ तारंगेयजितजिन ऋग्यु  
 पुरे श्रीसुव्रतंस्प्रंजने, श्रीपार्श्वप्रणमामिसत्यनगरे श्रीवर्धमानंत्रिधा  
 ॥ १ ॥ वंदेऽनुत्तरकल्पतल्प जुवनेग्रैवैयकेयंतरे, ज्योतिष्काभरमंदरा  
 द्विसतो स्तीर्थकरानादरात् ॥ जंबूपुष्करधातकीपुरुचके नंदीश्वरे  
 कुन्धले, येचान्येपिजिनानमामिसतत तान्ऋत्रिमाऽऋत्रिमान् ॥ २ ॥  
 श्रीमहीरजिनास्यपद्महृदतो निर्गम्यतेगौतम, गगावर्चनभेत्यथाप्रवि-  
 प्तवे मिथ्यात्ववैतादृशक ॥ उत्पत्ति स्थितिसंहति त्रिपथगा ज्ञानां  
 बुयावृद्धिगा, सामेकर्ममलहरत्व वरुल श्रीद्वादशागीनदी ॥ ३ ॥ शक्र  
 ध्वंद्वरविद्यदाश्वरण ब्रह्मद्रशात्यविका, दिग्पाला. सकपर्विगो मुख  
 गण भक्तेश्वरीजारती ॥ येन्येज्ञानतपक्रियाव्रतविवि श्रीतीर्थयात्रा  
 दिपु, श्रीसंघस्यतुराचतुर्विधसुरा स्तेसतुज्ज्वंकरा ॥ इति श्रीपंच  
 तीर्थ स्तवनं ॥

॥ अथ नेम राजुल सिंहाय ॥

( नदी यमुनाके तीर उभे दोय पखीया ॥ ए देशी ) पित्रजी  
 पित्रजी रे नाम जपुं दिन रातिया, पित्रजी चढया परदेश तपे मो  
 री वातिया, ॥ पगपग जोनी वाट वालेसर कव मिले, नीर विठो  
 ह्या मीन के ते जुं टलवलै ॥ १ ॥ सुंदर मंदिर सेज साहिव विण  
 नवि गमे, जिहा रे वालेसर नेम तिहा मारू मन जमें ॥ जो होव  
 सज्जन दूर तोही पास वतै, किहा सायर किहा चंद्र देखी मन उ  
 छसै ॥ २ ॥ निस्नेहीसुं प्रीत म करजो को सही, पतंग जलावै,  
 देह दीपक मनमें नहीं ॥ माणसतणो विजोग म होजो केहने,  
 ताजे रे साज समान हियामा तेहने ॥ ३ ॥ विरह व्यग्रानी पीन  
 जोवनवय अति दहै, जेहनो पित्र परदेश ते माणम उख सहे ॥

फुरीर पंजर कीव काया कमला जिसी, हजुप्र न आब्यो नेम मि  
 ली नयणें हसी ॥ ४ ॥ जेहने जेहमु रग टाढ्यो ते नवि टलै,  
 चकवा रयणी विजोग ते तो नयणे मिलै ॥ आवा केरो स्वाद निबू  
 ते नवि करै, जे नाह्या गगा नीर ते ठीलर किम तरे ॥५॥ जे रम्या  
 मालतीफुल घतुरे किम रमे, जेहने धीसु प्रेम ते तेले किम जमे ॥  
 जेहने चतुरसुं नेह ते अवरने सुं करै, नवजोवन तजी नेम वैरागी  
 थै फरै ॥ ६ ॥ राजुल रूपनिधान के पोहती सहसावने, जइ वां  
 द्या प्रभु नेम संजम लेई एक मनै ॥ पाम्या केवलज्ञान के पोहती  
 मनरली, रूपविजय प्रभु नेम चेटे आशा फलो ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ आउखा सिंजाय लिख्यते ॥

आउखो तूटाने सावो को नही रे, तिण कारण म करो  
 जीव प्रमाद रे ॥ जरा आब्याने शरणुं को नहीं रे, हिंसा ठोमाने  
 दया पाल रे ॥ आ० १ ॥ कुटुंब कबीला नारो कारणे रे, मूरख  
 संन्या बहुला पाप रे ॥ चोरतणी परे ठनी फूरसे रे, सहीसे इह  
 लोक परलोक संताप रे ॥ आ० २ ॥ उंवा चिणाब्या मंदिर मालि  
 या रे, दे दे वरतीमें ऊंकी नीव रे ॥ एक दिन अणजाण्यु ऊंकी  
 चालवूं रे, सुख डख सहसे आपणो जाव रे ॥ आ० ३ ॥ चक्र  
 वार्ति हर बल राणो केशवो रे, जोजो वलो इंद्र सुरानो नाथ रे ॥  
 ऊंकीशने उवेही आश्रम्या रे, जोजो कोइ अचरजवाली वात रे ॥  
 आ० ॥ ४ ॥ अश्रिर संसार तजी मुनि नीसरवा रे, करता मुनि  
 नवला तेह विहार रे ॥ ज्ञारंरुपंखीनी दीधी उपमा रे, न धरे मम-  
 ता नेह लगार रे ॥ आ० ५ ॥ चारित्र पावै रूमी रीतसुं रे, देवे  
 मुनि अपणो उपदेश रे, तिको मुनिवर सिधासी मोऊने रे, जश  
 लेई इहलोक परलोक रे ॥ आ० ६ ॥ शब्द रूप देखी समता  
 धरो रे, म करो मुनि ज्ञएरानुं अजिमान रे, रूपी चोधमल सूत्र

देखीने रे, जोरु करी जालोर मजार रे ॥ आत्र० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पचतोर्या चैत्यवदन लिख्यते ॥

आदिदेव अरिहंत नमू, समरू तारू नाम ॥ ज्या ज्या प्रति  
मा जिनतणी, त्या त्या करू प्रणाम ॥ १ ॥ जेजुंजय श्रीआदिदेव,  
नेम नमू गिरनार ॥ तारंगे श्रीअजितनाथ ॥ आत्रू रूपज्ञ जूहार  
॥ २ ॥ अष्टापदगिरि ऊपरै, जिन चोवीशी जोय ॥ मणिमय  
मूरति मानसुं, जरेते जरावो सोय ॥ ३ ॥ समेतडिखर तीरथ  
वमू, ज्या वीजे जिन पाय ॥ वैज्जारकगिरि ऊपरै, श्रीवीर जिने  
श्वरराय ॥ ४ ॥ मारुवगहनो राजियो, नामे देव सुपाश ॥ रूपज्ञ  
कहै जिन समरतां, पोहचै मननी आश ॥ ४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ दुज तिथीको चैत्यवदन ॥

७ विध धर्म जिन उपदिश्यो, चोआ अजिनंदन ॥ वीजै  
जन्म्या ते प्रजु, जवड ख निकंदन ॥ १ ॥ ७ विध ध्यान तुम्हे  
परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमतिजिन, ते चविया  
वीज दिन ॥ २ ॥ दोय बयन राग द्वेष, तेहने जवि तजिये ॥  
मुऊ परे शीतल जिन कहै, वीज दिन शिव जजिये ॥ ३ ॥ जो  
वाजीव पदार्थनु, करो नाण सुजाण ॥ वीज दिने वासुपूज्य परे,  
लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकात न  
अहिये ॥ अरजिन वीज दिने चवी, एम जिन आगलि कहिये ॥  
॥ ५ ॥ वर्तमान चोवीशीये, एम जिनकड्याण ॥ वीज दिने केइ  
पामिया, प्रजु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनत चोवीशीये, हुआ  
बहुत कड्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां दोय सुख  
खाण ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ ग्यानपचमीको चैत्यवदन ॥

त्रिगमै त्रैग वीरजिन, ज्ञाखै जविजन आगै ॥ त्रिकरणसुं त्रिहुं

लोक जन, निसुणो मनरगे ॥ १ ॥ आराहो जवि जावसैं, पांचम  
 अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, येहज तिलिखि निहाली ॥ ७ ॥  
 ज्ञान विना पशु साखिवा, जाणो इण संसार ॥ ज्ञान आराधनधी  
 लहुं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही,  
 काशकुशम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक प्न्धान  
 ॥ ४ ॥ ज्ञानी तासोसासमें, करै कर्मनो खेह ॥ पूर्व कामी वरसा  
 लगै, अज्ञाने करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व  
 आराधक ज्ञान ॥ ज्ञानतणो महिमा घणो, अंग पाचमे जगवान ॥ ६ ॥  
 पंच माश लघु पंचमी, जावजीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच  
 माज्ञानी, पचमी करो शुभ दृष्टी ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए,  
 काजसग लोगस केरो, कजमणूं करो जावशुं ए, टाले जव फेरो  
 ॥ ८ ॥ इण परे पंचम आराहिये ए, आणो जाव अपार ॥ वरदत्त  
 गुणमंजरी वरे, रगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति पंचमी चैत्य-  
 वदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ अष्टमी चैत्यवंदन लिख्यते ॥

महा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो, तेम फागुण  
 चदि आठमें, संजव चव आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमे,  
 जनम्या ऊपज्जिणंद ॥ दीक्षा पिण ए दिन लही, हुआ प्रथम  
 मुनिचद ॥ २ ॥ मावव सुदि आठम दिने, आठ कर्म करया दूर ॥  
 अजिनंदन चोथा प्रभू, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम  
 ऊजली, जनम्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशे करी, न्हव-  
 रावै सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रतस्वामी ॥  
 नेम आषाढ सुदि आठमें, पंचमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण  
 चदिनी आठमें, नमि जन्म्या ज  
 पातजीनो निर्वाण ॥ ६ ॥

स्वामी मुपास ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, सेव्यार्थी शिववास ॥७॥

॥ अथ एकादशीतु चैत्यवदन लिख्यते ॥

शासननायक वीरजी, प्रभुकेवल पायो, संघ चतुर्विधथापवा,  
महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माघव सित एकादशी, सोमलद्विज  
यज्ञ ॥ इन्द्रुति श्रोद मिट्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादशसे  
चतु गुणां, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अग्लो करै, मन अग्निमान  
अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संसय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरै  
थाप्या वदिये, जिनशासन जयकार ॥ ४ ॥ महि जन्म अर  
महि पास, वर चरण विलागी ॥ रुमज अजित सुमती नमी, महि  
घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रभु शिव वाश पास, नवप्रवना  
तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुदि सगली जोमी ॥ ६ ॥ दश  
क्षेत्रे त्रिहु कालना, देहसे कड्याण ॥ वरग अग्यार एकादशी, आराधो  
वर नाण ॥ ७ ॥ अग्यार अग लखाविधे, एकादश पाठा ॥ पूजणी  
गवणी विटणी ॥ मसी कागल काठा ॥८॥ अग्यार अत्रत ठरुवा ए,  
वहो परिमा अग्यार ॥ खिमाविजय जिनशासनें, सफल करो अव-  
तार ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमंधर जिन स्तुति लिख्यते ॥

॥ सीमधर जिनवर सुखकर नाहिव देव, अरिहत सकलेनी  
जाव धरो करूं सेव ॥ सकलागम पारग गणधर जाणित वाणी,  
जयवंतो आणा ज्ञानविमल गुणखाणी ॥ १ ॥ ( यह थुई च्यार  
वखते पण कहवाय ठे )

श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसाजी ॥ कुंथु  
अरजिन अंतर जनम्या, तिहुप्रण जश परससा जी ॥ सुव्रत नमि  
अतर वर दीक्षा, शिक्षा जगतनि रासें जी ॥ उदय पेढाल जिनात-  
रमा प्रभु, जासे शिवबहु पासे जी ॥ १ ॥ वत्रैस चत्रसधि

चन्द्रसङ्घि मलिया, इगसय सङ्घि उक्किष्ठा जी ॥ चन्द्र अरु अरु मिला  
 मध्यम काले, वीश जिनसर दिष्ठा जी ॥ दो चन्द्र च्यार जधन्य  
 दश जंघु, धायई पुस्कर मजारे जी ॥ पूजो प्रणमो आचारागे,  
 प्रवचनसार उद्वारेजी ॥ १ ॥ सीमंवर वर केवल पामी, जिनपद  
 खवण निमित्ते जी ॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत  
 विनीते जी ॥ द्वादश अंग पूरव शुभ रचिया, गणधर लब्धि विक-  
 सिया जी ॥ अपङ्कवसिय जिनागम वंदो, अक्षर पदना रसिया  
 जी ॥ ३ ॥ आणा रंगी समकित सगो, विविध जंग व्रतधारी जी  
 ॥ चन्द्रविह संघ तीरथ रखवाली, सद्गु उपड्व हरनारीजी ॥ पंचां-  
 शुली सुरी शासनदेवी, देती तस जश रुद्धो जी ॥ श्रोशुभ्र वीर  
 कहे शिवसाधन, कार्य सकलमा सिद्धी जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीजतिथीकी स्तुति ॥

दिन सकल मनोहर बीज दिवस सुविशेष, राय राणा प्र-  
 णमें चंद्रतणी जिहा रेख ॥ तिहा चड विमानें शाश्वत जिनवर  
 जेह, जे बीजतणे दिन प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनदन  
 चंदन शीतल शीतलनाथ, अरनाथ सुमतिजिन वासुपूज्य शिव  
 साथ ॥ इत्यादिक जिनवर जन्म ज्ञान निरवाण, हुं बीजतणें  
 दिन प्रणमु ते सुविहाण ॥ २ ॥ परकारयो बीजै द्विविध धर्म जग-  
 वंत, जेम विमला कमला विजल नयण विकसंत ॥ आगम अति  
 अनुपम जिहा निश्चय व्यवहार, बीजे सवि कीजै पातिकनो परि-  
 हार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी कमल सुकोमल चीर, चक्रे-  
 सरी केसरी सरस सुगंध सरीर ॥ करजोनीबीजे हुं प्रणमुं तस पाय,  
 इम लब्धिविजय कहे पूर मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति दूज शुई ॥

॥ अथ पंचमी स्तुति ॥

श्रावण सुदि दिन पंचमी ए, जनम्या नेमजिनंदतो ॥ स्यामबन्धुं



रण तनु शोभतो ए, मुख शारदको चंद्र तो ॥ सहस्र वरस प्रभु  
 आउखो ए, ब्रह्मचारी जगवत तो ॥ अष्ट करम हेले हणी ए,  
 पोहता मुक्ति मऊार तो ॥ १ ॥ अष्टापद आदिजन ए, पहोत्या  
 मुक्ति मऊार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्ति गिरनार  
 तो ॥ पावापुरी नगरीमा वली ए, श्रीवीरतणु निर्वाण तो ॥ समेत-  
 शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिरवहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥  
 नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, जाखे सार वचन तो ॥ जीवदया गुण  
 वेलनी ए, कीजै तास जतन तो ॥ मृषा न बोळो मानवी ए,  
 चोरी चित्त निवार तो ॥ अनत तीर्थकर इम कहे ए, परहरियै  
 परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामे यह जलो ए, देवी श्रीत्रिविका  
 नाम तो ॥ शाशन सानिद्ध जे करे ए, करै वलि धर्मना काम तो ॥  
 तपगञ्ज नायक गुण निलो ए, श्रीविजयशेन सूरिराय तो ॥ रिप-  
 जदास पाय सेवतां ए, सफल करे अवतार तो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टमी स्तुति ॥

मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरी सुरराजाजी ॥  
 आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावै जिनराजा जी ॥ वीरजिने  
 श्वर जन्म महोत्वस, करता शिवसुखसाधे जी ॥ आठमनु तप  
 करता अम घर, मंगलकमला वाधे जी ॥ १ ॥ अष्ट करम वयरी  
 गजगजन, अष्टापद परें वलीया जी ॥ आठमें आठसुरूप विचारी,  
 मद आठे तस गलिया जी ॥ अष्टमी गति परे पहुता जिनवर,  
 फरस आठ नहि अग जी ॥ आठमनु तप करता अम घर, नित्य  
 वाधै रंग जी ॥ २ ॥ प्रातीहारज आठ विराजै, समवेसरण  
 जिन राजै जी ॥ आठमे आठ सो आगम जाखी, जवि मन संशय  
 जाजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पावै निरतीचारो जी ॥  
 आठमने, दिने अष्ट प्रकारै, जीव दया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट

प्रकारी पूजा कराने, मानवज्ञव फल लीजे जी ॥ सिद्धाई देवी,  
जिनवर सेवी, अष्ट महासिद्धि दीजेजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजे,  
निर्मल केवलज्ञान जी ॥ धीरविमल कवि सेवक नय कहै, तपशी,  
कोम कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

एकादशी अति रूवनी, गोविंद पूठे नेम ॥ कोण कारण  
ए पर्व मोटु, कहो मुऊसुं तेम ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणक अति-  
घणा, एकशो ने पञ्चास ॥ तेणे कारणें ए पर्व मोटोदुं, करो मौन  
उपवाश ॥ १ ॥ अगिआर श्रावकृती प्रतिमा, कहै ते जिनवर  
देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वनगजा जिम रेव ॥ चौवीश  
जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मज  
नीर जेहवुं, करो जिनसुं रंग ॥ २ ॥ अगियार अंग लखाविये,  
अगियार पाठा सार ॥ अगियार कवलो विटणा, ठवशी पूंजशी  
सार ॥ चावखी चगी विविध रंगी, शास्त्रतणे अनुसार ॥ एकादशी  
इम ऊजमो, जेम पामिये जव पार ॥ ३ ॥ वर कमल नयणी  
कमल वयणी, कमल सुकोमल काय ॥ नुजनुं चंरु अखंरु  
जेहनें, तमरता सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि  
हृयं पन्ति शीश, शासनदेवो विघन निवारो, संघतया निश  
दीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ चवदशनी स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्यमेरुशिखरे, शय्याविभो शैशवै ॥ रूपा-  
लोकनविस्मया, हृतरसत्रांत्या त्रमञ्चरुपा ॥ उन्मृष्टनयनप्रज्ञा  
धवलितं, क्षीरोदकाशंकया ॥ वक्रंयस्यपुन.पुन.सजयति, श्रीवर्ध-  
मानोजिन. ॥ १ ॥ हस्तालाहतपद्मेणुकपिश, क्षीरार्णवांनोन्नृतैः ॥  
कुत्रैरप्सरसांपयोधरन्नर, प्रस्पर्धिजि. ॥ १ ॥ येषामंदररत्नशैल-

शिखरे जन्मान्निपकेःरुतः ॥ सर्वैः सर्वसुरासुरेश्वरगणैः स्तेषांनतोद्दं  
 क्रमान् ॥ २ ॥ अर्द्धद्वक्प्रसूतंगणधररचितं, द्वादशांगंविशाल ॥  
 चित्रवद्धर्षयुक्तंमुनिगणवृषज्ञैः, धारितद्युद्धिमन्निः ॥ मोक्षाग्रद्वारञ्च-  
 तंबलचरणफलं, ज्ञेयज्ञावप्रदीपं ॥ ऋक्तयानित्यंप्रपद्येश्रुतमहमखिल,  
 सर्वलोकैरुत्तरं ॥ ३ ॥ निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं, बालचं-  
 द्राजदंष्ट्रं ॥ मत्तघंटारवेशप्रसूतमदजलं, पूरयंतंसमंतात् ॥ आरूढो-  
 दिव्यनागविचरतिगगने, कामदःकामरूपी ॥ यद्गु सर्वान्भूतिर्विश-  
 त्तममसदा, सर्वकार्येषुसिद्धिः ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ कल्याणकद सर्वेद्विन् स्तुति ॥

कल्याणकंदं षष्ठमं जिणंदं, सतितञ्ज नेमजिणं मुणिदं ॥ पासं  
 पयास सुगणिकषण, ऋचीश्वदे सिरिवहमाणं ॥ १ ॥ अपार  
 संसार समुद्रपारं, पञ्चाशिव दितु सुशकसार ॥ सद्ये जिणंदा सुर-  
 विंद विंदा, कल्याणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥ निघ्वाणमग्ने वरजा  
 ण कप्प, पणासियासेस कुवाइदप्प ॥ मयंजिणाणं सरणं बुहाणं  
 ॥ नमामि निच्चतिजगप्पहाणं ॥ ३ ॥ कुंदींइ गोखीर तुसारवन्ना,  
 सरोज इत्ता कमलेनिसन्ना ॥ वाएसिरी पुठ्ठयवग्ग इत्ता ॥ सुहा  
 यसा अम्ह सयापसत्ता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ शत्रुंजय स्तुति ॥

॥ श्रीशत्रुंजयगिरि तीर्थ सार, गिरवरमाहे जिम मेरु उदार,  
 ठाकुर राम अपार ॥ मत्रमाहे नवकारज जाणूं, तारामाहे जिम  
 चंड वखाणूं, जलधर माहे जल जाणूं ॥ पंखीमाहे जिम उत्तम  
 दंश, कुलमाहे जिम रूपन्ननो वश, नाजितणो जे अंश ॥ कृमा  
 वंतमाहे जेम अरिहंता, तपसूरा मुनिवर महता, शत्रुंजयगिरि गु  
 णवंता ॥ १ ॥ रूपन्न अजित संजव अजिनंदा, सुमतिनाथ मुख  
 पूनमचदा, पद्मप्रन्न सखकंदा ॥ श्रीसुपार्थचंद्रप्रन्न सुविधी, श्रुतल

श्रेयास सेवो बहु वृद्धी, वासुपूज्य मति शुद्धी ॥ विमल अनंत  
 जिन धर्म ए शांती, कुंभु अर मद्धि नमु एकांती, मुनिसुव्रत सुद्ध  
 पंथी ॥ नमी पास ने वीर चौवीश, नेम विना ए जिन त्रेवीश,  
 सिद्धगिरि आख्या ईश ॥ ७ ॥ जरतराय जिन साथै बोलै, स्वामी  
 शत्रुंजयगिरि तोले, जिननुं वचन अमोले ॥ रूपन्न कहै सुणो जर  
 तराय, ठहरी पालंता जे नर जाय, पातिक नूको धाय ॥ पशु पं  
 खी जे इण गिरि आवै, जववीजे ते सिद्ध जे आवै, अजरामर  
 पद पावै ॥ जिनमतमें तेज्जो चखाएयो, ते में आगम दिलमाहे  
 आणयो, सुणता सुख उर आणयो ॥ ३ ॥ संघपति जरत नरेसर  
 आवै, सोवनतणा प्रासाद करावै, मणिमय मूरति ठावै, नाजिरा-  
 य मरुदेवी माता, ब्राह्मी सुंदरी वद्धिन विख्याता, मूर्ति नवाणुं  
 ब्राता ॥ गोमुख नें चकेसरीदेवी, शत्रुजय सार करै नित्यमेवी,  
 तपगठ ऊपर देवी ॥ श्रीविजयसेन सूरीश्वरराया, श्रीविजयदेव  
 सूरी प्रणमी पाया, रूपन्नदास गुण गाया ॥ ४ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तुति ॥

महाविदेह क्षेत्र सीमंधरस्वामी, सोनाना सिंहासण जी,  
 रूपाना कोशीसा विराजै रत्नना दीवा दीपै जी ॥ कुंकुमवर्णी  
 गहंली विराजै मोतीना अकृत सार जी, ल्या बैग सीमंधरस्वामी  
 बोलै मधुरी वाणी जी ॥ १ ॥ केसरचदन जररी रे कचोली क  
 स्तूरी वराश जी, पद्मली रे पूजा अमारी रे होजो ऊगमते परजात जी ॥

॥ अथ पचिदिय संवरणो ॥

॥ पंचेदिय संवरणो, तह नव विह बंजचेर गुत्तिधरो ॥ च  
 उद्धिह कसाय मुक्को, इय अवारस गुणेहि संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच म  
 हद्वय जुत्तो, पंच विहायारपालण समुत्थो ॥ पंच समर्शतिगुत्तो,  
 वत्तीस गुणेहि गुरुमज्ञ ॥ २ ॥

॥ अथ सामायक पारवानी गाथा ॥

॥ सामाश्यवयजुत्तो, जावमणेदीनियमसजुत्तो ॥ विन्नइथ  
सुहंकम्मं, सामाश्यजत्तियावारा ॥ १ ॥ सामाश्यंमिन्नए, समणो  
इवसावन्नहवइजह्मा ॥ एएणकारणेण, बहुसोसामाश्यंकुळा ॥ ७ ॥  
सामायक विधे लीधु विधे पारिउं विधि करतां जे अविधि हुओ  
होइ ते सवे हु मन वचन कायायें करी मिच्चामि उक्कम ॥ दश म  
नना दश वचनना वरै कायाना एवं वत्तीस दूपणामाहे जे कोइ  
दूपण लागो होय ते सहू मन वचन कायायें करी मिच्चामि उक्कम ॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

॥ सागरचंदोकामो, चदवनिंतोसुदसणोधन्नो ॥ जेसिपोसह  
पदिमा, अखंमिआजीविअंतेवि ॥ १ ॥ धन्नासजाहणिज्जा, सुजसा  
आणंदकामदेवाय ॥ जेसिपसंसइज्जयव, दढ्ढयतंमहावीरो ॥ २ ॥  
पोसह विधे लोधुं विधे पारियुं विधि करता जो कोइ अविधि हुउ  
होय ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिच्चामि उक्कम ॥

॥ अथ जगचितामणि चैत्यवदन ॥

॥ इच्छाकारेण सविस्सह जगवन् चैत्यवदन करु, इहं ॥ जग  
चितामणि जगनाह जगगुरु जगरक्कय ॥ जगबंधव जगसत्थवाह,  
जगजाव वियक्कण ॥ अठावय सठविअरुव, कम्मठ विणासण ॥  
चउवीस पि जिणवर जयंतु, अप्पमिहय शाशाण ॥ १ ॥ कम्मजू-  
मिहि२ पढम सघयण ॥ उक्कोसउ सत्तरिसउ, जिणवराण विहरै  
त लप्रई ॥ नवकोमिदिं केवल्लिण, कोमि सहस्स नव  
साहू गम्मई ॥ सपइ जिणवर वीस मुणि, विहुं कोमिदिं वरनाण  
॥ समणहकोर्नी सहस दोअ, थुणि जअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥  
जयउसामी२ रिसइसंतुंजि उक्कित पहू नेमजिण ॥ जयउ  
वीर सच्च उरमंण, नरुअउहि मुणिसुवय ॥ महुरिपसा

छह डुरिय खंरुण, अवर विदेहि तित्थयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि  
जंकेवि, तीआणागय संपइअं, वंडु जिण तवेवि ॥ ३ ॥ सत्ताणवइ  
सहस्सा, लस्का उपन्न अठ कोमीउ, वत्तीसय वासीआइ, तिय  
लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥ पन्नास कोमि सयाइं, कोमी वायाल लस्क  
अरुवन्ना ॥ उत्तीस सहस असियाइं, सासय विंवाइ पणमा-  
मि ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ अतीचारनी ८ गाथा ॥

नाणंमि वंसणमिअ, चरणंमि तवेअ तहय विरियंमि ॥  
आयरणं आयारो, इअ एतो पंचहा जणित्त ॥ १ ॥ काले विणए  
वहुमाणे, उवहाणे तहय निन्दवणे ॥ वंजण अत्थ तडुजय,  
अठविहो नाण मायारो ॥ २ ॥ निस्संकिअ निकंखिअ, निवि त्ति  
गिद्धा अमूढ दिठीअ ॥ उववूह थिरी करणे, वञ्जल पन्नावणे अठ  
॥ ३ ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचदिसमईहिं तिहिं गुत्तीहि ॥ एस  
चरित्ता यारो, अठविहो होइनायवो ॥ ४ ॥ वारसविहंमिवि तवे, अ  
प्रितर बाहिरे कुडाल विठे ॥ अगिलाइ अणाजीवी, नायघा सो त  
वायारो ॥ ५ ॥ अणसण सुणो यरिआ, वित्ती संखेवणं रसञ्चानं  
काय किलेसो संली ण याय, वड्डो तवो होइ ॥ ६ ॥ पायञ्चित्तं वि  
णत्तं, वेयावच्चं तहेव सञ्जानं ॥ जाणं उस्सग्गोविय, अप्रितर उ त  
वो होइ ॥ ७ ॥ अणगूहिअ बल विरिओ, परिकमइ जो जहुत्त मा  
ऊत्तो ॥ जुंजइअ जहाय्यामं, नायवो वीरियायारो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

॥ विशाललोचनदलं, प्रोद्यदंताशुकेशर ॥ प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य,  
मुखपद्मपुनातुव ॥ १ ॥ येषामन्निपेककर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात्  
सुखं सुरैः ॥ तृणमपि गणयन्ति नैव नाकं, प्रातः संतु शिवाय ते  
जिनर्षोः ॥ २ ॥ कलंकनिर्मुक्तमशुक्लपूर्णतं, कुतर्कराहुअसुनं सवोदयं ॥

अपूर्वचंद्र जिनचंद्रजापितं, दिनगने नोमिगुवैर्नमस्कृतं ॥३॥ इति॥

॥ अथ सुयदेवताना स्तुतिः ॥

सुअ देवयाए करेमि काउसगंगं० सुअ देवया जगवई, ना  
णावरणीअकम्म संघायं ॥ तेसि खवेउ सयय, जेसि सुअसायरे जत्ती ?

॥ अथ खेत्रदेवतानी स्तुति ॥

॥ जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहि चरण सइएदिं ॥ साई  
ति मुक्कमगंगं, सा देवी हरउ डरियाइं ॥ १ ॥ इति

॥ अथ सामायकलेवानो विधि ॥

॥ प्रथम उचे आसणे पुस्तक प्रमुखनी थापना मूकीने आ  
वक आविका कटासणं मुहपत्ती चरवलो लई शुद्ध वख पदरी ज  
ग्या पूजी कटासण ऊपर वैशी मुहपत्ती नावा हाथमा मुख पासे  
राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी एक नवफार गणी  
( पंचिदिअ ) कही इच्छामि खमासमण देई इरियावहिया तस्सुत्तरी  
अन्नउत्तसिएण कहै, १ लोगस्तको अथवा च्यार नवकारनो काउ  
सगंग करै ( पारी ) प्रगट लोगस्त कहै, खमासमण देई इच्छाका  
रेण सदिससह जगवन् सामायक मुंहपत्ती पन्डिलेहु इच्छ । एम कही  
मुंहपत्ती तथा अंगनी पन्डिलेहणना पचास वोल कही मुहपत्ती प  
न्डिलेहीए पठी खमासमण देई इच्छाकारेण सदिसह जगवन् सामा  
यक सदिससाउ इच्छ । वली खमासमण देई इच्छा० सामायकठाउं  
इच्छं । एम कही वे हाथ जोमी एक नवकार गणी इच्छाकार जग  
वन् पसाय करी सामायकदंभक उच्चरावोजी, पठी गुरु प्रमुख व  
नेल करेमिजते कहे, पठी खमासमण देई इच्छा० वैसणो सदिसा  
उं । खमा० इच्छा० वैसणोठाउ, खमा० इच्छा० सिझाय, संदिससाउं  
खमा० इच्छा० सिझाय कछ इच्छ, एम कही त्रणनवकार गणवा । पठी  
वे धनी सझाय धर्मध्यान करवुं ॥ इति सामायक लेवानो विधि ॥

॥ अथ सामायकपारवानो विधिः ॥

॥ खमासमण देई इरियावही पनिकम्थायी ( यावत् ) लो  
गस्त सूयी कही खमा० इच्छा० मुंहपत्ती पनिलेहुं एम कही मुंह  
पत्ती पनिलेही खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं यथाशक्ति,  
वली खमासमण देई इच्छा० सामायकपारुं तहत्ती कही पठी ज  
मणो हाथ चरवता ऊपर अथवा कटासणा ऊपर थापी एक नव  
कार गणी सामाश्यवयजुत्तो० कहिए, पठी जमणो हाथ थापना  
सामो सवलो राखीने एक नवकार गणिए ॥ इति सामायक पार  
वानो विधि ॥

॥ अथ दैवशिक प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम सामायक लीजे, पठी पाणी वावरुं होय तो मुहपत्ती  
पनिलेहवी अने आहार वावरुं होय तो वादणा वे देवा, तिहां  
वीजा वांदणामां आवस्तियाए ए पाठ नही कहिवो, पठी यथाशक्ति  
पञ्चस्क्राण करवु, पठी खमासमण देई इच्छा० कही वनेरायें अथवा  
पोते चैत्यवंदन कहवुं, पठी जंकिचि० नमोऽनुण० कही ऊजा थईने  
अरिहतचेइयाण० कही एक नवकारनो काउसगग करी नमोर्हत्० क  
हीनें प्रथम थुई कहवी, पठी लोगस्त० सवलोए अरिहतचेइयाणं  
कही एक नवकारनो काउसगग पारोनें वीजी थुई कहवी, पठी  
पुस्करवरदी० कही सुअस्तजगवत्त करेमिकाउसगगं वंदण० कही  
एक नवकारनो काउसगग पारी वीजा थुई कहवी पठी सिद्धाणंनुद्वानं  
कही वेयावच्चगराण० करेमि काउसगग अननु० कही एक नवका  
रनो काउसगग पारी नमोर्हत्कही चौथी थुई कहवी पठी वैसांनें  
नमोत्थुणं कही, पठी चार खमासमण देयापूर्वक जगवान् आचार्य  
उपाध्याय सर्वसाधुजन प्रते थोजवदन करीयै, पठी इच्छाका  
दैवशिक प्रतिक्रमणगत एम कही





सणा ऊपर थापीने इच्छं सद्यस्सवि देवसियं कहेवुं, पठी ऊजा अई  
 करेमिज्जंते इच्छामिगामिकाजसग्ग जोमेदेवसिज्जं तस्सज्जत्तरीं कहीने  
 अतीचारनी आठ गाथानो कानसग्ग करवो, आठ गाथा न आवणे  
 तो आठ नवकारनो कानसग्ग करवो. ते कानसग्ग पारीनें लोगस्स  
 कहेवुं, पठी बैसीने त्रीजा आवश्यकनी मुंहपत्ती पणिलेहीने वांदणा  
 वे देवा, पठी ऊजा अईने इच्छाकारेणं देवसियं आलोउ इच्छं आलो  
 एमि जोमेदेवसिज्जं कहीने सातलाख कहवा पठी अट्टार पाप  
 स्थानक आलोइये, सद्यस्सविदेवसिअ कहीने वेसवु, बैसीनें एऊ नव  
 कार गणी करेमिज्जंते इच्छामिगामिपणिकमिज्जं कहीने वंदित्तु कहेवु  
 पठी वादणा वे देवा, पठी अघुच्छिमिअघित्तर देवसिअं खामीनें  
 वादणा वे देवा, पठी ऊजा अई आयरियजवद्याए कहीने करेमि-  
 ज्जंते० इच्छामिगामि० जोमेदेवसिज्जं तस्सज्जत्तरीं कही वे  
 लोगस्स अथवा आठ नवकारनो कानसग्ग करवो, ते पारीने लोगस्स  
 कही सद्यलोए अरिद्धंतचेइयाण वंदणवत्तिं कही एक लोगस्स  
 अथवा च्यार नवकारनो कानसग्ग पारीने पुरकरवरदीं सुअस्सज्ज-  
 गवज्जं करेमिकानसग्गं वदणं कहीने एक लोगस्स अथवा च्यार  
 नवकारनो कानसग्ग करवो, ते पारीने सिद्धाणंबुद्धाणं कही सुय-  
 देवयाए करेमिकानसग्गं अनज्जुं कही एक नवकारनो कानसग्ग  
 करवो, ते पारी नमोऽर्हत्कही पुरुषे सुयदेवयानी पहली धुई कहवी  
 अने स्त्रिये कमलदलनी पहली धुई कहवी पठी खेत्रदेवतानी  
 धोजी धुई स्त्रिये तथा पुरुषे वज्जेए एकज कहवी पठी १ नवकार  
 प्रगट गुणी बैसीने उठा आवश्यकनी मुंहपत्ती पणिलेहीने वे  
 वादणा दीजै, पठी सामायक चत्तवीसठो वंदनक पणिकमणुं कान-  
 सग्ग अने पञ्चस्काण करुज्जुजी एम ए उए आवश्यक संचारवा. पठी  
 इच्छामो अणुसठि नमोखमासमणाणं कही नमोऽर्हत् कही पुरुष

नमोस्तुवर्द्धमानाय कहे अने स्त्रिया संगारदावानी त्रण शुई कहे पठो नमोस्त्युषं कही स्तवन कहवुं, पठो धरकनरु कही जगवान आदे वादवा, पठै जमणो दाथ उपधी ऊपर थापी अढाइजेसु कहेवुं, पठो देवसिअपायच्चित्तनो कान्तसग्ग च्यार लोगस्त अथवा शोलनवकारनो करवो, कान्तसग्ग पारी प्रगट लोगस्त कही वेसोने खमासमण देई इच्छा० सिधायसदिस्ताउं, वीजुं खमासमण देई इच्छा० सिधायजणूं एम सिधायनो आदेश मांगी एक नवकार गणी सिधाय कही, पठो एक नवकार गणी खमासमण देई उरुक्काक-उरुक्कम्मक्कउनो कान्तसग्ग च्यार लोगस्तनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो, ते एक वनेरे अथवा पोत पारीने नमोईत्कही लघुशांति कहीने प्रगट लोगस्त कहे, पठो इरियावही० तस्तउ-त्तरी० कही एक लोगस्त अथवा च्यार नवकारनो कान्तसग्ग करी प्रगट लोगस्त कहेवो, पठो चउकसाय० नमोत्तुणं० कही जावंति वे कहीने उवसग्गदरं० जयवीरराय कही मुहपत्ती पणिवेद्वो पठो इच्छामि० इच्छाका० सामायकरारुं यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाका० सामायकरारुं तद्वति कही पठो जमणो दाथ उपधी ऊपर थापी एक नवकार गणीने सामाश्यवयजुत्तो० कहेवुं, पठो थापेत्ती था-पना होयतो एक नवकार गणी उठे. ए देवसि प्रतिक्रमण विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि मोहटाप्री समजवो ॥ इति देवशी प्रति-क्रमण विधिः ॥

॥ अथ राई प्रतिक्रमण विधि ॥

प्रथम पूवली रीते सामायक लेवुं पठो इच्छामि० इच्छाका० कही कुसमिणनो उसमिणनो च्यार लोगस्तनो अथवा शोल नवकारनो कान्तसग्ग करी पारी प्रगटलोगस्त कहेवो, पठो खमास-मण देई जगचिंतामणीनुं चैत्यवदन जयवीरराय सूरी कहेवुं, पठो

च्यार खमासमणपूर्वक जगवान आचार्य उपाध्याय अने सर्वसावृ प्र-  
 त्येके वांदवा, पठी खमासमण वे देई सञ्जायनो आदेश मांगी एक  
 नवकार जणीने जरदेसरनी सव्याय कहीने फरी ? नवकार गण-  
 वो, पठी इच्छकारसुहराईनो पाठ कहुवां, पठी इच्छाका० राईपदि-  
 क्कमणोठाउं कहीने जमणो हाथ ऊपधी ऊपर आपोने पठी इच्छं  
 सवस्तविराईय डुच्चितिय० कही नमोत्युण तथा करेमिज्जंते कही  
 इच्छामिछामिऊसग्गं० तस्सउत्तरी० कही एक लोगस्स अथवा  
 च्यार नवकारनो काउसग्ग पारीने प्रगट लोगस्स कही सवलोएप्र-  
 रिहंत० कही एक लोगस्स अथवा च्यार नवकारनो काउसग्ग करवो,  
 पठी पुक्करवरदी० सुअस्स० वदणव० कही अतीचारनी आठ गा-  
 थानो अथवा न आवमे तो आठ नवकारनो काउसग्ग पारी नि-  
 ज्ञाणंनुद्धाणं कहीने त्रीजा आवश्यकनी मुंइपत्ती पणिलेही वांदणा  
 वे देवा तिहाथी लेनें अणुछिउमिखामी वादणा वे दीजै तिहां सूर्यी  
 देवशीनी रीते जाणवुं, पण जे ठिकाणे देवसियं आवै ते ठिकाणे  
 राईयं कहेवुं, पठी आयरियउवद्याए० करेमिज्जंते० इच्छामिछामि०  
 तस्सउत्तरी कही तपचितामणी करता न आवमे तो च्यार लोगस्स  
 अथवा शोल नवकारनो काउसग्ग करवो, ते पारी प्रगट लोगस्स  
 कही उछ आवश्यकनी मुंइपत्ती पणिलेही वादणा वे देवा, पठी स-  
 कल तीर्थवंदन करीने यथाशक्तिपें पञ्चस्काण करवुं, पठी इच्छा-  
 कारेण सदस्सइ जगवन् सामायकउवीसरथो वंदनक पणिक्कमण  
 काउसग्ग पञ्चस्काण करयु ठेजी, एम ठ आवश्यक सज्जारवा, पठी  
 पञ्चस्काण करवुं होयतो करवुं ठेजी अने धारवु होयतो धारवु ठेजी,  
 एम कहुवुं, पठी इच्छामोअणुसदि० नमोखमासमणाय० नमोईत्त०  
 कहीने विशाललोचन० नमोत्तुणं० अरिहंतचेइयाण० कही एक  
 नवकारनो काउसग्ग पारी नमोईत्तकही कदयाणकदनी प्रथम थोय

कहवी, पठी लोमस्स० पुस्करवरदी० सिद्धाणवुक्षणं कही अनुक्रमे च्यार थोयो कहवी, पठी नमोत्तुणं कही जगवान् आदि चारने च्यार खमासणे वांदवा, पठी जमणो हाथ ऊपधि ऊपर थापी अछाइजेसु कहेवु पठी सीमंधरस्वामीनुं चैत्यवंदन स्तवन० जयवीराय० कानुसगग० शोय पर्यंत कहीये तिहांसुधी करवुं, पठी खमासणपूर्वक श्रीसिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन स्तवन जयवीराय कानुसगग० अने थोय कहवी, पठी सामायक पारवानी विधिये सामायक पारवुं इति ॥

॥ अथ परकी प्रतिक्रमण विधिः ॥

प्रथम दैवसिक प्रतिक्रमणमा वदित्तु कही रहिये तिहांसुधी सर्व कहेवुं पण चैत्यवंदन सकलार्हतनुं कहेवुं अने थोयो स्नातस्थानी कहेवी, पठी खमासण देईने इच्छाकारेण संदिस्सह जगवान् देवसिय आलोइयपम्किंता इच्छा० पस्कियमुहपत्ती पम्किहेहुं एम कही मुंहपत्ती पम्किहेहीये, पठी वांदणा वे दीजै, पठी इच्छाकारेण० संबुद्धाखामणेणं अन्नुच्छिंत्तु अन्नितर पस्किपंखामेउं इच्छं खामेमिपस्किपं पन्नरसदिवसाण पन्नरसराइयाण जकिच्चिअप्पत्तियं० कही इच्छाकारेणसं० पस्किप्रंआलोएमि इच्छं आलोएमि जोमेपस्किउअइयारोकत्त कही इच्छा० परकी अतीचार आलोकं. एम कही वृद्ध अतीचार कहीये, पठी एवंकारे श्रावकतणें धर्मं श्रीसमकितमूलवारव्रत एकसो चोवीस अतीचारमाहे जे कोई अतीचार पक्कदिवसमाहे सूक्ष्म वादर जाणता अजाणतां हुत्त होय ते सबे हुं मनकर वचनकर कायार्थेकरी मिच्छामिउक्कमं ॥ सबस्मविपस्किअ उच्चिंत्तिय उच्चिसिय उच्चिदिय इच्छाकारेण संदिस्सह जगवन् तस्स मिच्छामिउक्कमं ॥ इच्छाकारिजगवन् पसात्त करी परकी तपप्रशाद करात्त जी, एम उच्चार करीने आवी रीते कहीये, चत्तथ्रेणं एकत्त-



शांति कहेवी ॥ इति परकी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ अथ चउमासी प्रतिक्रमण विधि ॥

ये ऊपरना कहेया प्रमाणे सर्व विधी करवी पण एटलो वि  
शेष, वार लोगस्सना काउसग्गने ठिकाणे वीस लोगस्सनो काउ  
सग्ग करवो अने परकीना आगारने ठिकाणे चउमाशीना कहेवा,  
यथातपने ठेकाणे ठेकेणं वे उपवास च्यार आंवल्ल ठनीवी आठ ए-  
काशणा शोल वेआसणा च्यारहज्जारसजाय, ए रीते कहीये ॥ इति ॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधिः ॥

ए पण ऊपर लख्या मुजव एटलो विशेष पण परकीना  
वार लोगस्सने ठिकाणे चालीश लोगस्सनो काउसग्ग अथवा एक  
शो शाठ नवकारनो काउसग्ग करवो, अने तपने ठिकाणे अठमज्जत  
एटले त्रणउपवाश ठआंवल्ल नचनीवी वारएकाशण चोवीश वेआ-  
सणा अने ठहज्जार सिजाय ए रीते कहेवुं अने परकीना आगारने  
ठिकाणे संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति पंचप्रतिक्रमण विधिः सं०

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधी ॥

नवकार पंचिदिय कही इरियावही पन्तिकमवी थापना हो-  
य तो नवकार पंचिदिय न कहेवुं, पठी उस्सउत्तरी कही एक लो  
गस्स अथवा चार नवकारनो काउसग्ग करी प्रगट लोगस्स कही  
उत्ते पगे बैसी मुंहपत्ती चरवलो कटासणुं उत्तरासण धोतीत्त कंदोरो  
आदिनुं पन्तिकेहण करवु, पठी काजो काढी जीव कलेवर सञ्चित  
आदि जोवुं, पठी काजो काढनार थापनाजी सन्मुख उत्तो रही  
इरियावही पन्तिकमे पठी काजो परठववा जग्धा सोधी त्रणवार  
अणुजाणहजस्सुग्गो कही काजो परठवे, पठी त्रण चार वोसिरे  
कहे ॥ इति पन्तिकेहण करवानो

राग ने छेप दूरे करे जी ॥ केवलपद लहि तास, वरे मुक्ति उल्लट  
धरे जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदा जी  
॥ पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ इति  
बीजतिथीनुं स्तवनं ॥

॥ अथ पंचमीनुं वृद्ध स्तवन ॥

( ॥ पुण्य प्रशस्तीये ॥ ए देशी ॥ ) सुत सिद्धारथ  
रूपनो रे, सिद्धारथ जगवान ॥ बारह परखदा आगले रे, ज्ञाखे  
श्रीवर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ जवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय  
अमायो रे, ज्ञान भक्ति करो ॥ एआकणी ॥ गुण अनंत आतमत-  
णारे, मुख्यपणे तिहा दोष ॥ तेमा पण ज्ञानज वसु रे, जिणथी  
दंसण होय रे ॥ ज० २ ॥ ज्ञाने चारित्र गुण वधे रे, ज्ञाने  
उद्योत सहाय ॥ ज्ञाने थिवरपणुं लहे रे, आचारज उवझाय रे  
॥ ज० ३ ॥ ज्ञानी श्वासोवासां रे, कठिण करम करे नाश ॥  
वह्नि जेम इंधन दहे रे, कणमा ज्योति प्रकाशो रे ॥ ज० ४ ॥  
प्रथम ज्ञान पढे दया रे, संवर मोह विमाश ॥ गुणठाणाग  
पगधालीये रे, जेम चढे मोह आवासोरे ॥ ज० ५ ॥ मइ सुअ  
उहि मणपळ्ळा रे, पचम केवलज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक  
वे रे, स्व पर प्रकाश निदान रे ॥ ज० ६ ॥ तेहना साधन जे  
कह्या रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावै साचवैरे, धर्मी धरी  
अप्रमादो रे, ॥ ज० ७ ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, ज्ञाता  
करे अंतराय ॥ अंधा बहेरा बोवना रे, मुंगा पांगुल पाय रे  
॥ ज० ८ ॥ ज्ञातां गुणता न आयमे रे, न मले वद्वज चीज ॥  
गुणमजरी वरदत्त परे रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ज० ९ ॥ प्रेम  
पूत्र परखदा रे, प्रणामी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे,  
करो अधिकार पत्तायो रे ॥ ज० १० ॥ इति ॥

( ॥ ढाल २ ॥ कपूर होये अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ )

जंबुद्वीपना नरतमा रे, नयर पदमपुर खास ॥ अजित-  
सेन राजा तिहा रे, राणी यशोमती तास रे ॥ १ ॥ प्राणी आ-  
राधो वर ज्ञान, एहिज मुक्ति निदान रे ॥ प्रा० आ० ॥ ए  
आकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनयादिक गुणवंत ॥ पितरे  
जणावा मूंकित्त रे, आठ वरस जब हुतरे ॥ प्रा० २ ॥ पंक्ति  
यत्न करे घणो रे, ठात्र जणावण हेत ॥ अकार एक न आवने रे,  
अंयतणी शी चेत रे ॥ प्रा० ३ ॥ कोढे व्यापी देहनी रे, राजा  
राणी सचित्त ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमा रे, सिंहदास धनवत रे  
॥ प्रा० ४ ॥ कपूरतिलका गेहनी रे, शीले शोजित अंग ॥ गुण  
मंजरी तस बेटनी रे, मुंगी रोगे व्यंग रे ॥ प्रा० ५ ॥ शोल  
वरसनी ता धई रे, पामी यौवनवेश ॥ दुर्जग पण परणे नही रे,  
मात पिता धरे खेद रे ॥ प्रा० ६ ॥ तेणे अवसरे उद्यानमां रे,  
विजयशेन गणधार ॥ ज्ञानरयण रयणायरू रे, चरण करण व्रत-  
धार रे ॥ प्रा० ७ ॥ वनपालक जूपाखने रे, दीध वधाइ जाम ॥  
चतुरंगी सेना सजी रे, वदन जावे ताम रे ॥ प्रा० ८ ॥ धर्म-  
देशना साजले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकशत नयन वदन  
मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ प्रा० ९ ॥ ज्ञान विराधन परजवे रे,  
मूरख पर आधीन ॥ रोगे पीछ्या टलवले रे, दीसै दुःखीया दीन  
रे ॥ प्रा० १० ॥ ज्ञान सार संसारमे रे, ज्ञान परम सुख हेत ॥  
ज्ञान विना जगजीवमा रे, न लहे तत्व संकेत रे ॥ प्रा० ११ ॥  
श्रेष्ठी पूठे मुण्डिदने रे, जाखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंग-  
जा रे, कवण कर्म चिरतंत रे ॥ प्रा० १२ ॥ इति ॥

( ढाल ३ ॥ सूरती महिनानी देशीमा )

मां, खेटक नयर सुगाम



जिनदेव वै, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ श्रंगज पांच, सोहामणा,  
 पुत्री चतुरा चार ॥ पंक्तिपासे सीखवा, तातें मुंक्या कुमार ॥२॥  
 बालस्वजावें रामतें, करतां ददाता जाय ॥ पंक्ति मारे जाहरे,  
 मा आगल कहे आय ॥ ३ ॥ सुंदरी सुखिणी सीखवै, नशवानुं  
 नही काम ॥ पांढ्यो आवे तेरुवा, तो तस दणजो ताम ॥ ४ ॥  
 पाटी खनिया लेखणा, बाली कीधा राख ॥ शठने विद्या नवि  
 रुचै, जेम करदाने डाख ॥ ५ ॥ पाप्मा परे मोहोटा, थया, कन्या  
 न दीये कोय ॥ सेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥  
 नटकी नाखे नामिनी, वेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी,  
 जाणे वै सहू कोय ॥ ७ ॥ रे रे पापणि सापणी, सामा बोल म  
 बोल ॥ रीसाली कहे तादरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें  
 मारी सुंदरी, काल करी ततखेव ॥ ए तुज बेटी उपनी, ज्ञान  
 विराधन देव ॥ ९ ॥ मुर्छांगत गुणमजरी, जातीसमरण पाभि ॥  
 ज्ञान दिवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥ १० ॥ शेठ कहे  
 सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग, गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो  
 वंशित योग ॥ ११ ॥ उज्वल पंचमी सेवो, पच वरस-पंच मास ॥  
 नमो नाणस्स गणणुं गुणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव  
 उत्तर सन्मुख, जपिये दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइये, धान्य  
 फळादि उदार ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवटतणो, साधियो मंगल गेह ॥  
 सोसहमान करी सके, तेण विधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा  
 सौभाग्यपंचमी, उज्वल कार्तिक मास ॥ जावळीव, लगे सेविये,  
 कृजमणा विधि खास ॥ १५ इति ॥

( ॥ ढाल चौथी ॥ एकवीसानी देशीमां ॥ )

पांच पोथी रे, ठवणी पाठा विटागणा ॥ चावखी दोरा रे,  
 पाटी-पाटला वर तणा ॥ मसी कागल रे, कावी खनिया लेखणी ॥

कवली भावली रे, चंद्रश्रा ऊरमा पूंजणी ॥ १ ॥ ( झूटक ) प्रा-  
 साद प्रतिभा तास झूपण, केसर चदन कावली ॥ वासकूंपी वाला  
 कूंची, श्रंगजूडणा ठावली ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरती नें  
 धूपणा ॥ चरवला मुंदपत्ती सादमी वञ्जल, नोकरवाली थापना ॥  
 ॥ २ ॥ ( ढाल ) ज्ञान दरिस्तर रे, चरणना साधन जे कह्या, तप  
 संयुत रे, गुणमंजरीयें सदह्या ॥ नृप पूंठै रे, वरदत्त कुंवरनें श्रंग  
 रे ॥ रीग उपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३ ॥ ( झूटक ) मु-  
 निराज ज्ञासै जंबुद्वीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु  
 तास नंदन, वसुसार वसुदेव नाम ए ॥ वन मांदि रमतं दोय  
 बांधव, पुण्य योगें गुरु मळया ॥ वैराग्य पामी जोग वामी, धर्म  
 धामी संवरया ॥ ४ ॥ ( ढाल ) लघु बांधव रे, गुणवंत गुरु पदवी  
 लहै, पणसय मुनिने रे, सारण वारण नितु दिये ॥ कर्म योगे रे,  
 अशुज्ज उदय थयो अन्यदा, संशारे रे, पोरसी जणी पोळ्यो यदा  
 ॥ ५ ॥ ( झूटक ) सर्वघाति निद व्यापी, साधु मागे वायणा ॥  
 ऊंघमां अंतराय थाता, सूरि हूया दूमणा ॥ ज्ञान ऊपर द्वेष जा-  
 ग्यो, लाग्यो मिळवा जूतनो ॥ पुण्य अमृत ढोली नांख्यो, जरयो  
 पापतणो घनो ॥ ६ (ढाल) मन चितवे रे, का मुज लायुं पाप रे ॥  
 श्रुत अज्ञयासो रे, तो एवको संताप रे ॥ मुज बाधव रे, जोषण  
 खायण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आव गुणो मुख वञ्चरे ॥ ७ ॥  
 ( झूटक ) वार वासर कोई मुनिने, वायणा दीधी नही ॥ अशुज्ज  
 ध्याने आयु प्री, जूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञान विराधन मूढ जरु  
 पणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्ध बांधव, मानसरवर, हंसगति पाम्यो  
 सही ॥ ८ (ढाल) वरदत्तने रे, जातिस्मरण ऊपनो ॥ जव दीठो रे,  
 गुरु प्रशमी कहे शुज्ज मनो ॥ धन्या गुरुजी रे, ज्ञान जगंत्रय दी  
 वनो ॥ गुण अवगुण रे, ज्ञासन जे जग परवनो ॥ ९ ॥ (झूटक)

ज्ञान पावन सिद्धि साधन, ज्ञान कहे किम श्रावने ॥ गुरु कं  
तपथी पाप नासै, टाढ जेम घन तावने ॥ जूप पन्नणें पूत्रने प्र  
तपनी शक्ति न एवमी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आराधा, संप  
ट्यो वेवमी ॥ १० ॥ इति ॥

( ढाल पांचमी ॥ मेंदी रग लागो ॥ ए देशी ॥ )

सजुरु वयण सुधारते रे, जेदीसाते घात ॥ तपसुं रग लागो,  
गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नाठो रोग मिथ्यात्व ॥ त० १ ॥ पंचमी तप  
महिमा घणो रे, पसरथो महियल मांही ॥ त० ॥ कन्या सहस  
सयंवरा रे, वरदत्त परणयो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ जूपें कीधो पाट  
वी रे, आप थयो मुनि जूप ॥ त० ॥ ज्ञीम कात गुणें करी रे, वर  
दत्त रवि शशिरूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणीतणा रे, जोगवै  
जोग अखंरु ॥ त० ॥ वरसेंश ऊजवे रे, पंचमी तेज प्रचंरु ॥ त०  
॥ ४ ॥ जुक्तजोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खटकाय ॥ त० ॥  
गुणमजरी जिनचद्रने रे, परणावै निज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख  
विलसी अई साधवी रे, वैजयंते द्योय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण  
ऊपनो रे, जिहां सीमधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अमरसेन राजा घरे  
रे, गुणवत नारी पेट ॥ तप० ॥ लक्ष्मण लक्षित रायने रे, पुण्यें  
कीधो जेट ॥ तप० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, सो कन्या ज  
रतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥  
त० ॥ ८ ॥ तिहा पण ते तप आदरथुं रे, लोक सहित जूपाल ॥  
त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पालै राज्य ऊदार ॥ त० ॥ ९ ॥  
चार महाव्रत चुंपसुं रे, श्रीजिनवरनी पास ॥ त० ॥ केवल धरि  
मुक्ते गयो रे, साविअनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणी विजय शु  
जापुरी रे, जंबुविदेह मजार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे,  
अमरावती धरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवो रे, गुणमं-

जरीनो जीव ॥ त० ॥ मानसतर जेम हंसलो रे, नाम धरधुं सु  
 श्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीसे वरसे राजवी रे, सहस चोरासी पूत्र ॥  
 त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवलज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥  
 पंचमी तप महिमा विपे रे, जापै निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणे  
 जेदधी शिवपद लह्युं रे, तेहनो तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

( ढाल छठो ॥ करकडुने करुं वंदना ॥ ए देशी )

चोवीश दंरुक वारवा, हूं वारी ॥ चोवीशमो जिनचंद रे,  
 हूं वारी लाल ॥ प्रगट्यो प्राणतस्वर्गधी, हुं० ॥ त्रिसला नर  
 सुखकंद रे ॥ हुं० १ ॥ माहावीरनें करुं वंदना, हुं० ॥ ए आं-  
 कणी ॥ पंचमी गतिनें साधवा, हुं० ॥ पंचम नाण विलाश रे,  
 हुं० ॥ माहामिशीश सिद्धातमां, हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे,  
 हुं० मा० २ ॥ अपराधी पण उधरयो, हुं० ॥ चंरुकोसियो साप रे,  
 हुं० ॥ यज्ञ करंता वांजणा, हुं० ॥ सरखा कीधा आपरे हुं० मा०  
 ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी, हुं० ॥ रिपजदत्त वली विप्रे, हुं० ॥  
 व्यासी दिवश संवधधी, हुं० ॥ कामित पूरयो क्षिप्र रे ॥ हुं०  
 मा० ४ ॥ कर्मरोगने टालवा, हुं० ॥ सवि औपधनो जाण रे,  
 हुं० ॥ आदरयो में आसा धरो, हुं० ॥ मुऊ ऊपर हित आपि रे,  
 ॥ हुं० मा ५ ॥ श्रीविजयलिंग सुरीसनो, हुं०, सत्यविजय पन्यास  
 रे, हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि, हुं० ॥ चंद किरण जस जास  
 रे, ॥ हुं० मा० ६ ॥ पास पचासरा सान्निद्धे, हुं० ॥ खिमाविजय  
 गुरु नाम रे, हुं० ॥ जिनविजय कहे मुऊ हजो, हुं० ॥ पंचमी  
 तप परिणाम रे ॥ हुं० मा० ७ ॥ ( कलश ) इय वीर लायक  
 विश्व नायक सिद्धिदायक संस्तव्यो, पंचमी तप संस्तवन टोरर  
 गुंथी निज कंठे ठव्यो ॥ पुन्य पाटण खेत्र मांहे सत्तरत्राणुं संवत्सरे,  
 श्रीपार्श्व जन्मकळप्राण दिवसें सकल जिवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति

॥ अथ अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हारे मारे गाम धरमना साढापचवीश देश जो, दोपे रे  
 त्या देस मगध सहुमा शिरे रे लो ॥ हारे मारे नगरी तेहमां राज-  
 गृही सुविशेष जो, राजे रे त्यां श्रेणिक गाजे गज परे रे लो ॥ १ ॥  
 हारे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो, विचरंता तिहां  
 आवी वीर समोसरथा रे लो ॥ हां० चन्द्रसहस्रमुनिवरना साथे साथ  
 जो, सूधा रे तप सयम शिथले अलकरथारे लो ॥ २ ॥ हां० फूट्या  
 रसज्जर फूट्या अंब कदंब जो, जाणुं रे गुण शीलवन हसि  
 रोमंचियो रे लो ॥ हां० वाया वाय सुवाय तिहां अर्विलंब जो,  
 वासे रे परिमल चिहुं पासे संचियो रे लो ॥ ३ ॥ हां० देव चतु-  
 र्विय आवै कोनाकोम जो, त्रिगुं रे मणि हेम रजतनु ते रवे रे  
 लो ॥ हां० चोसठ सुरपति सेवे दोनादोम जो, आगे रे रस लागे  
 इंझाणी नवे रे लो ॥ ४ ॥ हां० मणिमय हेम सिंहासण वेव  
 आप जो, ढाले रे सुर चामर मणिरतनें जम्या रे लो ॥ हां०  
 सुणतां डुंडुजि नाद टले सवि ताप जो, वरसे रे सुर फूल सरत्त  
 जानू अम्या रे लो ॥ ५ ॥ हां० ताजे तेजे गाजे धन जेम लूंव  
 जो, राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रे लो ॥ हां० निरखी  
 हरखी आवै जन मन लूंव जो, पोपे रे रस न पमे धोपे चर्ममां  
 रे लो ॥ ६ ॥ हां० आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो,  
 आव्यो रे परवरियो ह्य गय रथ पायगे रे लो ॥ हां० दइ प्रद-  
 क्षिणा वंदी वैगे गाय जो, सुणवा रे जिनवाणी मोटे ज्ञायगे रे  
 लो ॥ ७ ॥ हां० त्रिभूवननायक लायक तव जगवत जो, आणी  
 रेजन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० सहज विरोध विसारी  
 जगना जंत जो, सुणतां रे जिनवाणी मनमा गहगहे रे लो ॥ ८ ॥  
 इति ॥ (॥ ढाल पीजी ॥ बालम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥)

वीर जिनवर एम उपद्विसे, सांजलो चतुरसुजाण रे ॥  
 भौहनी नींदमां का पनो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ १ ॥ विरति  
 ए सुमति धरी आदरो, ( ए आंकणी ) परिहरो विषय कपाय रे ॥  
 वापमा पंच परमादधी, कां पनो कुगतमा धाय रे ॥ वि० २ ॥  
 करी सको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्व काले  
 करी नवि सको, तो करो पर्व मुविशेष रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जजूर्था  
 पर्व खटना कहा, फल घणा आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारे आ  
 राधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु  
 परजवतणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणी एह आराध  
 तां, प्राणिठ सद्गति जाय रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ तेहवे अष्टमी फल  
 तिहा, पूठै गौतमस्वामि रे ॥ जविक जीव जाणवा कारणे, कहे  
 वीरप्रभु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महासिद्धि होय एहधी, सं-  
 पदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहधी आठ गुण  
 सिद्धि रे ॥ वि० ७ ॥ लाज होय आठ परिहारनो, अठ पवयण  
 फल होय रे ॥ नाश अठ कर्मनो मूलधी, अष्टमीनुं फल जोय रे  
 ॥ वि० ॥ ८ ॥ आदि जिन जन्म दीक्षातणो, अजितनो जन्म क-  
 ट्याण रे ॥ व्यवन संजवतणो एह तिथे, अजिनंदन निर्वाण रे ॥  
 ॥ वि० ॥ ९ ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमोया, नेमनो मुक्ति दिन  
 जाण रे ॥ पासजिन एह तिथे सिद्धा, सातमा जिन व्यवन माण  
 रे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिठ, -दंरुवीरज लह्यो  
 मुक्ति रे ॥ कर्म हणवा जणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि०  
 ॥ ११ ॥ अतीत अनागत कालना, जिनतणा केइ केइ कट्याण  
 रे ॥ एह तिथे वलि घणा संजमी, पामले पद निर्वाण रे ॥ वि०  
 ॥ १२ ॥ धर्म वाशित पशु पंखिया, एह तिथे करे ऊपवास रे ॥  
 व्रतधारी जीव पोसो करै, जेहने धर्म अज्याम रे ॥ वि० ॥ १३ ॥

जांखियो वीरे आठमतणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन  
मुखें उच्चरी प्राणिया, पामसे जवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥  
एहथी संपदा सबि लहै, टले कष्टनी कोर रे ॥ सेवजो शिष्य बुध  
प्रेमनो, कहे कांति कर जोर रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ ( कलश ) एम  
त्रिजग ज्ञासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरू, बुध प्रेम गुरु सु-  
पसाय पामी संशुणयो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगे जणयो रंगे  
स्तवन ए आठमतणो, जे जविक जावे सुणो गावै कांति सुख पावे  
षणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोसरथा ॥  
जगपति वंदवा कृष्णनरिंद, जादव कोरिसुं परिवरथा ॥ १ ॥ जग-  
पति धीगुण फूल अमूल, जक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी  
पूठै कृष्ण, ह्यायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र  
धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति मुऊ आतम उद्धर,  
कारण तुम विन कोण कहै ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ  
नाथ, माथे गाजे गुणनिजो ॥ जगपति कोय उपाय वताय,  
जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर मास,  
आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने पञ्चाश, कढ्याणक तिथि  
ब्रह्मसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे म  
ली ॥ नरपति नेत्र जिनना कढ्याण, विवरी कहूं आगलि वली ॥  
॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्ली जन्म व्रत केवली ॥  
नरपती वर्तमान चोवीशी, माहे कढ्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरप  
ति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाळा गणो ॥ नरपति मन वच  
पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धा-  
न , पश्चिम दिशि इहुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

जिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ९ ॥ नरपति नारी चंशवती  
 तास, चड्मुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शुर विख्यात, शोयल  
 सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार जूपण  
 चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा  
 करै ॥ ११ ॥ नरपति पोषै पात्र सुपात्र, सामायक पोषव करै ॥  
 नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति  
 ( ढाल बीजी ) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ वि  
 नयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुज दिन  
 एक, थोमो पुण्य कियो री ॥ वाघे जिम वरुबीज, शुज अनुबंधी  
 थयो री ॥ २ ॥ मुनि जाषै महाजाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ ए  
 कादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी  
 सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शु  
 वगे री ॥ ४ ॥ साजलि सजु ६ वैण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥  
 तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर  
 आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांजल केशवराय, आगलि जेह असे  
 री ॥ ६ ॥ तोरीपुरमा सेठ, समृद्धत वसो री ॥ प्रीतिमती प्रिया  
 तास, पुण्यें जोग जळ्यो री ॥ ७ ॥ तत कूळें अवतार, सूचित  
 शुज स्वप्ने री ॥ जनम्यो पूत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥  
 नाल निक्षेप निधान, जूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्जें दोहद अनु  
 जाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ९ ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र  
 अनेक जण्यो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परणयो री ॥  
 १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पंचस्काण धरे री ॥ अगियार  
 कंचन कोरु, नायक पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणमार,  
 तिथि अधिकार कहे री ॥ साजलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे  
 री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, जकें तप उच्चरे री ॥ एका;



जांखियो वीरे आठमतणो, जविक हित एह अधिकार रे ॥ जिन  
 मुखें उच्चरी प्राणिया, पामसे जवतणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥  
 एहथी संपदा सवि लहै, टले कष्टनी कोरु रे ॥ सेवजो शिष्य बुध  
 प्रेमनो, कहे कांति कर जोरु रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ ( कलश ) एम  
 त्रिजग ज्ञासन अचल शासन वर्द्धमान जिनेश्वरु, बुध प्रेम गुरु सु-  
 पसाय पामी संशुणयो अलवेसरु ॥ जिन गुण प्रसंगे जणयो रगे  
 स्तवन ए आठमतणो, जे जविक ज्ञावे सुणे गावै कांति सुख पावे  
 षणो ॥ १ ॥ इति अष्टमी वृद्ध स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ एकादशी स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमजिनंद, द्वारिकानगरी समोत्तर्या ॥  
 जगपति वदवा रुष्णनरिंद, जादव कोरिसुं परिवर्या ॥ १ ॥ जग-  
 पति धीगुण फूल अमूल, जक्तिगुणें माला रची ॥ जगपति पूजी  
 पूठै रुष्ण, द्वायिक समकित शिव रुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र  
 धर्म अशक्त, रक्त आरंज परिग्रहे ॥ जगपति मुऊ आतम उद्धार,  
 कारण तुम विन कोण कहै ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुऊ  
 नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय बताय,  
 जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर मास,  
 आगधो एकादशी ॥ नरपति एकशो ने, पञ्चाश, कल्याणक तिथि  
 उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रे त्रिण काल, चोवीशी त्रीशे म  
 ली ॥ नरपति नेउ जिनना कल्याण, विवरी कहू आगलि बली ॥  
 ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मद्धी जन्म व्रत केवली ॥  
 नरपती वर्त्तमान चोवीशी, माहे कल्याणक आवली ॥ ७ ॥ नरप  
 ति मौनपणें उपवास, दोढसो जपमाला गणो ॥ नरपति मन वच  
 काय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रततणो ॥ ८ ॥ नरपति दाहिण धा-  
 तकीखरु, पश्चिम दिशि इहुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अ-

निधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंडावती  
 तास, चड्मुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शुर विख्यात, शोयल  
 सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार चूपण  
 चीवर धरी ॥ नरपति जाये नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा  
 करै ॥ ११ ॥ नरपति पौषे पात्र सुपात्र, सामायक पोषध करै ॥  
 नरपति देववंदन आवश्यक, काल बेलाये अणुसरे ॥ १२ ॥ इति  
 ( ढाल बीजी ) एक दिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधुतणा री ॥ वि  
 नयें वीनवे सेठ, मुनिवर करि करुणारी ॥ १ ॥ दाखो मुळ दिन  
 एक, घोमो पुण्य कियो री ॥ वाधे जिम वरुबीज, शुभ अनुबंधी  
 थयो री ॥ २ ॥ मुनि जापै महाजाग्य, पावन पर्व घणा री ॥ ए  
 कादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी  
 सेव, मास इग्यार लगे री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तप शु  
 वगे री ॥ ४ ॥ सांजलि सज्जु वैण, आनंद अति उल्लस्यो री ॥  
 तप सेवी उजवीय, आरणस्वर्ग वस्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर  
 आय, पाली पुन्यवसे री ॥ सांजलि केशवराय, आगलि जेह थसे  
 री ॥ ६ ॥ सोरीपुरमां सेठ, समृद्धत वमो री ॥ प्रीतिमती प्रिया  
 तास, पुण्ये जोग जळ्यो री ॥ ७ ॥ तस कूर्खे अवतार, सूचित  
 शुभ स्वप्ने री ॥ जनम्यो पूत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शुकने री ॥ ८ ॥  
 नाल निक्षेप निधान, जूमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्ज दोहद अनु  
 ज्ञाव, सुव्रत नाम उव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र  
 अनेक जणयो री ॥ योवन वय अगियार, रूपवती परणयो री ॥  
 ॥ १० ॥ जिनपूजन मुनिदान, सुव्रत पञ्चकाण धरे री ॥ अगियार  
 कंचन कोरु, नायक पुण्य जरे री ॥ ११ ॥ धर्मधोप अणगार,  
 तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रतसेठ, जाती स्मरण लहे  
 री ॥ १२ ॥ जिन प्रत्यय मुनि साख, जकें तप उच्चरे री ॥ एका-

दशी दिन आठ, पंहोरो पोसो घरे री ॥ १३ ॥ इति ॥ ( दाल त्री  
 जी ) पत्नी सयुते पोसह लीघो, सुव्रतशेठे अन्यदा जी ॥ श्रवसर  
 जाणी तस्कर आख्या, घरमा धन लूँटै तदा जी ॥ १ ॥ शासनञ्ज  
 के देवीशर्के, थंजाणा ते वापना जी ॥ कोलाहल मुणि कोटवाल  
 आख्यो, रूप आगल यरया राकना जी ॥ २ ॥ पोसहपारी देव जुहारी,  
 दयावंत लेइ जेटणा जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूँकावी, शेठे की  
 धा पारणा जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवशा विश्वानल लागो, सोरीपुरम  
 आकरो जी ॥ सेठजी पोसह समरस बैठा ॥ लोक कहे हठ कां  
 करो जी ॥ ४ ॥ पुण्ये हाट वखारो शेठनी, उगरी सहू प्रसंसा  
 करै जी ॥ हरखे सेठजी तप ऊजमणुं, प्रेमदा साथे आदरे जी ॥  
 ॥ ५ ॥ पूत्रनें घरनो जार जलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ च-  
 ठ नाणी विजयशेखर सूरी, पासे तपव्रत आदरे जी ॥ ६ ॥ एक  
 खटमासी च्यार चोमाशी, दोसय ठठ सो अछमकरे जी ॥ बीजा तप  
 पिण बहुश्रुत सुव्रत, मौनएकादशी व्रत घरें जी ॥ ७ ॥ एक अध-  
 म सुर मिष्यादृष्टि, देवतासुव्रतसायुने जी ॥ पूर्वोपार्जितकर्म उदेरी,  
 अगे वधारे व्याधिनें जी ॥ ८ ॥ कर्म नक्रियो पापे जक्रियो, सुर क-  
 ह्ये जाउं औपधजणी जी ॥ साधु न जाये रोप जराये, पाटु प्रहारें  
 हण्यो मुनि जी ॥ ९ ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगे, ध्यान अनल  
 दहे कर्मनें जी ॥ केवल पामी जितपदरामी, सुव्रत नेम कहे  
 हयामनें जी ॥ १० ॥ ( दाल चोथी ) कान पर्यपै नेमने ए, धन्य २  
 यादव वंश, जिहा प्रभु श्रवतरया ए ॥ मुऊ मन मानस हंस, ज  
 यो जित नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवादेवी मावनी ए, समुद्रविज  
 य धन्य तात, सुजात जगतगुरु ए ॥ रत्नत्रयी श्रवटात ॥  
 ज० २ ॥ चरण विराधी ऊपनो ए, हु नवमो वासुदेव ॥ जयो० ॥  
 तिणे मन नवि उद्वसे ए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥

हाथी जेम कादव गळ्यो ए, जाणु उपादेय हेघ ॥ ज० ॥ तोपण  
 हुं न करी सकुं ए, उठ कर्मना जेघ ॥ ज० ॥ ४ ॥ पण सरणो  
 वलियातणो ए, कीजे सीजे काज ॥ ज० ॥ एदवा वचनने सांज  
 ली ए, वाइ ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ५ ॥ नेम कहे एकादशी ए,  
 समकित युत आराध ॥ ज० ॥ थार्स जिनवर वारमो ए, चावी  
 चोवीशीये लाध ॥ जयो० ६ ॥ (कलश) इय नेम जिनवर नित्य  
 पुरंदर रेवताचल मंरुणो, वाण नंद मुनि चंद वरसे रा  
 जनगरे संशुण्यो ॥ सवगे रंग तरंग जलनिधि सत्यविजय  
 गुरु श्रनुसरी, कपूरविजय कवि क्रमाविजय गणि, जिनूविजय ज  
 यसिरी वरी ॥ १ इति ॥

अथ माहावीरस्वामीतुं हालरिजं प्रारंभ ॥

माता त्रिशला जुलावै पुत्र पाळणें, गावे हालो हालो हाल  
 रुवाना गीत, सोना रूपानें वली रत्नें जमियुं पाळणुं, रेतम दोरी  
 घूघरी वागे ठुमठुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने  
 ॥ १ ॥ जिनजी पार्श्वप्रज्जुषी वरस अहीशें अंतरे, दोसे चोवीशमो  
 ती ध्रिकर जिन परमाण ॥ केशीस्वामी मुखशी एची वाणी सांजली,  
 साची साची हुइ ते मारे श्रमृतवाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वप्ने  
 होवै चक्री के जिनराज, बीता वारे चक्री नहि हुवै चक्रीराज ॥  
 जिनजी पात प्रज्जुना श्रीकेशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चो-  
 वीशमा जिनराज ॥ मारी कूखे आव्या तारण तरण जिहाज,  
 मारी कूखें आव्या त्रण्य जुवन सिरताज ॥ मारी कूखें आव्या  
 संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्यपनोती इंद्राणी अई आज ॥ हा० ॥  
 ॥ ३ ॥ मुऊनें मोहलो उपन्यो, जे वेसुं गजअंधामीये, सिहासण-पर  
 वेसुं चामर ठत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुऊने नंदन ताहरा ते-  
 जना, ते दिन संजारुनें आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ कर-

तल पगतल लक्षण एक हजार नें आठ ठै, तेद्वी निश्चय जाण्या  
 जिनवर श्री जगदीश ॥ नदन जमणो जगें लंठन सिंह विराजतो,  
 में पहले सुपनें दीठो विसवावीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला  
 वंयव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन ज्ञोजाश्याना देवर ठो सुकमाल, ह  
 ससें ज्ञोजाश्या कही देवर माहरा लारुका, हसशे रमशे नें वली  
 चूंटी खणशे गाल ॥ हसशे रमशे नें वली वुंसा देसे गाल ॥ हा०  
 ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेकाराजाना ज्ञाणेज ठो, नंदन नवला पां-  
 चसें मामीना ज्ञाणेज ठो, नंदन मामलिआना ज्ञाणेजा सुकमाल ॥  
 हशशे हाथे उद्याली कहीने नाहना ज्ञाणेजा, आख्युं आंजीनें  
 वली टवकुं करसे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे  
 टोपी आगलां, रतने जनिया ऊलर मोती कशबीकोर ॥ नीला  
 पीला नें वलि राता सरवे जातिना, पहेरावशे मामी मारा नंदकि  
 शोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सुखनलो सहू लावशे  
 नंदन गजुवे जरसे लाडू मोतीचूर ॥ नंदन मुखना जोईने लेशे  
 मामी ज्ञामणा, नंदन मामी कदेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥  
 ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेना मामानी साते सती, मारी ज्ञत्रीजी ने  
 बैन तमारी नंद ॥ ते पण गुंजे जरवा लाखणसाई लावशे, तुमनें  
 जोइ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजे  
 लावशे लाखटकानो घूपरो, वली शूना मेंना पोपट नें गजराज ॥  
 सारस हंस कोयल तीतर नें वलि मोरजी, मामी लावशे रमवा  
 नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ वप्पन कुमरी अमरी जलकलशें  
 नवरावीआ, नंदन तुमनें अमनें केली घरनी मांदि ॥ फूलनी  
 वृष्टि कीधी योजन एकने मनले, बहु चिरंजीवो आशीय  
 वीधी तुमने त्याहि ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमनें भेरुगिरिवर सुरपतिये नव-  
 राविआ, निरखी हरखी सुरुत लाज कसाय ॥ मुखना ऊपर वारुं

कोटी कोटी चंद्रमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो समुदाय ॥  
 हा० १३ ॥ नंदन नवला ज्ञानवा नीशाले पण मूर्च्छुं, गज पर  
 श्रंवाही वेसाही मोहोटे साज ॥ पसलो ज्ञरशुं श्रीफल फोफल  
 नागरवेलशुं, सूखरुली लेशुं नीशालीअने काज ॥ हा० १४ ॥  
 नंदन नवला मोहोटा थाशोने परणावशुं, बहु वर सरखी जोनी  
 सावशुं राजकुमार ॥ सरखा वेवाई वेवाणूने पधरावशुं, वर वहु  
 पोखी लेशुं जोइ जोईने दीदार ॥ हा० १५ ॥ पीयर तातर मा-  
 रा वेतं पक्ष ऊजला, माहरी कूखे आव्या तात पनोता नंद, मा-  
 हरे आंगण वूठा अमृत डुधे मेऊला ॥ माहरे आंगण फलिया  
 सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० १६ ॥ इणिपरे गायुं माता त्रिशला  
 सुतनुं पालणुं, जे कोइ गाशे लेशे पूत्रतणा साम्राज ॥ विलीमोरा  
 नगरें वरणव्युं वीरनुं हालरुं, जयर मंगल होजो दीपविजय  
 कविराज ॥ हा० १७ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ निंदावारक सिंहाय ॥

निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदाना वोढ्या महा  
 पाप रे ॥ वयर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करता न गणे  
 मायवाप रे ॥ नि १ ॥ डुर बलंती कां देखो तुम्हे रे, पगमां व  
 लती देखो सहु कोय रे ॥ परना मेलामें धोया लूगमां रे, कही केम  
 ऊजला होय रे ॥ नि० ॥ २ ॥ आप संजालो सहुको आपणो रे,  
 नींदानी मूको परी टेव रे, ॥ थोमे घणे अवगुणे सहु ज्ञरथा रे, के-  
 हना नलिया चूए केहना नेव रे ॥ नि० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते  
 थाये नारकी रे, तप जप कीधु सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर-  
 जो आपणी रे, जेम वृटकवारो थाय रे ॥ नि० ॥ ४ ॥ गुण ग्रह-  
 जो सहुको तणो रे, देखो एक विचार रे ॥ कृष्ण परे सुख  
 पाशो रे, स ॥ ५ ॥ नि० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ देववांदवानो विधिः ॥

प्रथम इरियावही पम्किमवाथी मामीने यावत् लोगस्त  
कही पठी उत्तरासण करी चैत्यवंदन नमोत्पुणं कही अरुधुं जयवी  
राय आज्ञवमखना सूधी हाथ जोमी कहै, वली चैत्यवंदन कहीने  
नमोत्पुणं कही यावत् चार थोयो कहीये ठीये तिहा सूधी वधू 'क  
हेतुं, पठी नमोत्पुण कही वली च्यार थोयो कहीये त्यांसूधी वधू  
कहेवु, पठी नमोत्पुणं तथा वे जावती कही स्तवन कही अरुधुं ज  
यवीअराय आज्ञवमखना सूधी कही पठी चैत्यवदन कही नमोत्पुणं  
कही आखो जयवीअराय कहेवो इहां सवारे देववाटवा तेमा मन्ह  
जिणाएनी सझाय रुहेवी, अने मध्यान्हें तथा साजें देववादवामा  
सझाय न कहेवी ॥ इति देववादवानो विधि. ॥

॥ अथ ज्ञानविमलजो कृत चउमाशो देववंदन विधि. ॥

॥ प्रथम इरियावही पम्किमी काउसग करी लोगस्त० क  
ही एक खमासमण देइ इच्छाका० श्रीरुषज्जिन आरावनाथं चैत्य  
वंदन करुं, एम कही चैत्यवदन करै ॥ ( श्री आदिजिन चैत्यवंदन  
लिखते ) ॥ प्रथम जिनेसर रुपज्जदेव, सब्बयी चविया ॥ वदि  
चउथें आपाढनी, शक्रे सस्तविया ॥ अठमी चैत्रह वदितणी, दि  
वसे प्रचु जाया ॥ दीक्षा पिण तिणहिज दिनें, चउ नाणी थाया  
॥ फागुण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुज ध्यान ॥ महा वदि ते  
रउे शिव लहा, परमानद निवदन ॥ १ ॥ इहा नमोत्पुणं० अरिहंत  
चेइयाण० वंदणवत्तिया कही एक नवकारनेो काउसग पारी थुइ  
क्रमथी कहिये ते लखिये ठीये ॥ ( ॥ अथ थोय जोमो प्रारंज ॥ )  
रुपज्जजिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया, कनक वरण काया, मंगला  
जास जत्था ॥ वृपज्ज लछन पाया देव नर नारी गाया, पणसय  
धणु ठाया ते प्रचु ध्यान ध्याया ॥ २ ॥ ए तीरथ जाणी जिन

धैवीश उदार, एक नेम विना सवि समवसरधा निरधार ॥ गिरि  
 कर्मणो आया पोहता गढ गिरनार, चैत्रोपूनम दिने ते वंदू जयकार  
 ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे श्रंतगरु सूत्र मजार, सिद्धाचले सीधा  
 धोल्या बहु अणमार ॥ ते माटे ए गिरि सवि तीरथ तिरदार ।  
 जिन जेठे आवे सुख सपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्रेसरी शा  
 सननी रखवाल, ए तीरथ केरी सानिध करै संजाल ॥ गिरुओ  
 जस महिमा संप्रति कालै जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि नामें  
 लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥ इहां नमोऽस्तुषं जावंती वे कही  
 नमोऽर्हत्कही स्तवन कहेवुं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन प्रारंभ ॥ ललनानी देशी ॥

आदिकरन अरिहंत जी, उन्नगनी अवधार ललना ॥ प्रथम

जिनेसर प्रणामीयें, वठित फल दातार ललना ॥ आदि करण अ०

॥ १ ॥ उपगारी अवनितले, गुण अनंत जगवान ललना ॥ अवि-

नाशी अक्षय कला, वरते अतिशय वाम ललना ॥ आ० ॥ २ ॥

गृहवासे पण जेहने, अमृतफलनो आहार ललना ॥ ते अमृतफलनें

लहे, ए जुगहुं निरधार ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इहाग वै जे

हनो, चढतो रश सुविशेष ललना ॥ भरतादिक थया केवली, अ-

नुन्नव फल रस देख ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाजिराय कुजमंमणो,

मस्तेवी सर हंस ललना ॥ रुपन्नदेव नित वंदिये, ज्ञानविमल

अवतंस ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री रुपन्नजिन स्तवनं ॥

पठो जयवीरराय अर्थो कहेवुं, एक खमात्मण हेई इहा० श्री

अजितनाथजी आराधनार्थं चैत्यवंदत कहे ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

शुदि वैशाखनी चविया विजयंत ॥ माह ३

ठमें जनमिया, ४ ॥ माह शुदि नवमें ३



पोपी इग्यारस ॥ उज्वल उज्वल केवली, अया अक्षय कृपारस ॥  
 वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीर विमल  
 फविरायनो, नय प्रणमें धरी नेह ॥ १ ॥ इति ॥ पठी नमोत्थुणं  
 अरिहंतचे० ॥ कही एक नवकारको काउसग्न करके धुईनी गाथा  
 कहै इसी तरै सर्वत्र विधि करवी ॥ ॥ अथ धोय प्रारच्यते ॥  
 अजित जिनपतीनो, देह कचन जरीनो ॥ जविक जन  
 नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हु तुज पद लीनो, जेम जल मा-  
 ढे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्यान पीनो ॥ १ ॥ इति  
 अजित धोय ॥ ॥ अथ श्री शंभवनाथ चैत्यवदन ॥  
 सत्तम त्रैवेयक थकी, चविया श्री शंभव ॥ फागुण सुदि आठम  
 दिने, शुदि चवदशी अजिनव ॥ १ ॥ मृगशिरमासे जनमीया,  
 तणी पूनम संजम ॥ कार्तिक वदी पंचमी दिने, लहे केवल निरू-  
 पम ॥ १ ॥ पचमी चैत्रनी ऊजली ए, शिव पोहता जिनराज ॥  
 ज्ञानविमल प्रभु प्रणमता, सीजै सगला काज ॥ ३ ॥ इति चैत्य-  
 वंदन ॥ ॥ अथधोयप्रारच्यते ॥ जिन शंभव वारू, लं-  
 ठने अश्व धारू ॥ जवजलनिधि तारू, कामगद तीव्र वारू ॥ सुर  
 तरूपरी वारू, डसमाकाल मारू ॥ शिवसुखकिरतारू, तेहना  
 ध्यान सारू ॥ १ ॥ इति धोय समाप्त ॥ ॥ अथ श्री अजि-  
 नदन चैत्यवंदन ॥ जयंतविमानथकी चव्या, अजिनंदनराया  
 ॥ वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा शुदि बारो  
 अहिय दिस्क, पोप सुदि चउदश ॥ केवल शुदि वैशाखनी, आठमें  
 शिवसुख रश ॥ चउथा जिनवरनें नमी ए, चउगति भ्रमण निवार  
 ॥ ज्ञानविमल गणपति कहै, जिनगुणानो नही पार ॥ २ ॥  
 ॥ अथ स्तुति प्रारच्यते ॥ ॥ अजिनंदन वंदो, साम्यमाकंद  
 कंदो ॥ नृप सवरनदो, धर्पिताशेष हंदो ॥ तमतिमिरदिलंदो, लंठने

चानरिंदो ॥ जस आगल मदो, सौम्य गुण सारदिंदो ॥ १ ॥ इति  
 श्लोक ॥ ॥ अथ श्रीसुमतिनाथ चैत्यवदन ॥ श्रावण  
 सुदि वीजै चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमीगति दायक नमुं,  
 पंचम जिन सुमति ॥ शुदि वैशाखनी आठमें, जनम्या तिम सज्ज  
 म ॥ शुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शमदम ॥ चेत्र इग्या-  
 रश ऊजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणें नवमियें,  
 नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति चैत्यवदन ॥ ॥ अथ  
 श्लोक प्रारच्यते ॥ सुमति सुमति आपे, दु खनी कोमि कापै  
 ॥ सुमति सुजन आपे, बोधिनुं वीज आपै ॥ अविचलपद थापे,  
 जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदहो नावें, जो प्रजुध्यान व्यापे ॥  
 १ ॥ इति श्लोक ॥ ॥ अथ श्रीपद्मप्रजु चैत्यवदन ॥  
 नवम भेवेयकथी चव्या, माहा वदि ठठडिवसें ॥ काती  
 वदि वारसे जनम, सुरनर सवि हरखै ॥ वदि तेरस संज-  
 म ग्रहे, पद्मप्रजस्वामी ॥ चैत्रीपूनम केवली, वलि शिवगति पामी  
 ॥ मृगशिर वदि इग्यारसें, रक्तकमल सम वान ॥ नयविमल जिन  
 राजनुं, धरियै निरमल ध्यान ॥ १ ॥ ॥ अथ श्लोक प्रारच्य  
 ते ॥ पद्मप्रजु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ मुगति वधू म  
 नावे, रक्त तनु कांति फावे ॥ दु.ख निकट नावे, संतती सौख्य  
 पावे ॥ प्रजु गुणगण ध्यावे, श्रष्ट महासिद्धि थावे ॥ १ ॥ अथ श्री  
 सुपार्श्वजिन चैत्यवदन ॥ ठठा भेवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥  
 ज्ञादरवा वदि आठमें, अवनरिया खास ॥ जेठ शुक्र वारसो जण्या,  
 तस तेरसे संजम ॥ फागुण वदि ठठे केवली, शिव लहे तस स  
 त्तिमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते इति समंत ॥ ज्ञानविम  
 ल सूरि नि लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ ॥ अथ श्लोक  
 प्रारच्य फले कामित आशे, नामथी नाशे ॥ म

हिम महि प्रकाशे, सातमा श्रीसुपासे ॥ सुरनर जस दास, संप  
दानो निवाश ॥ गाय जवि गुणरास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥  
इति ॥ ॥ अथ श्रीचंद्रप्रज्ञजिनचैत्यवंदन ॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आ

ठमा, चंद्रप्रज्ञ शम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चै  
ब्रेह ॥ पोप वदि वारसें जनमिया, तस तेरसे साध ॥ फागुण व  
दिनी सातमें, केवल निरावाध ॥ ज्ञाद्रव सातम शिव लह्याए, पूरी  
पूरण ध्यान ॥ अठ महासिद्धि संपजै, नय कहै जिनअग्निधान ॥ २ ॥

॥ अथ शोय प्रारज्यते ॥ ॥ शुभ्र नरगति पामी, उद्यमें  
धर्म धामी ॥ जिन नमो शिरनामी, चंद्रप्रज्ञ नाम स्वामी ॥ मुऊ  
अंतरजामी, जेहमां नहिय खामी ॥ शिवगति दरगामी, रेहन  
पुण्ये पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ सुविधनाथचैत्यवंदन ॥

गोरा-सुविधि जिणद नाम, वीजुं पुष्पदंत ॥ फागुण वदि न  
वमें चव्या, महेली सुर आनंत ॥ मृगाशिर वदि पंचमे जणया, तस  
ठठे दिक्षा ॥ काती शुद्धि त्रीजे केवली, दिये बहु परे शिक्षा ॥ शु  
द्धि नवमी ज्ञाडवा तणी ए, अजर अमर पद दोय ॥ धीर विमल  
सेवेक कहे, ए नमता सुख होय ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शो

य प्रारज्यते ॥ सुविधि जिन जडंत, नाम वलि पुष्प-  
दंत ॥ सुमति तरुणि कंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म  
खुरंत, लछि लीला वरत ॥ जव जलधि तरंत, ते नमीजे  
अहंत ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीशीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

प्राणतकल्पअकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी ठ  
ठै, जाणि दाघ ज्वर प्रशम्या ॥ भाहा वदि वारस जनम दिख्या,  
तसे वारसें लीध ॥ वदि पोप चवडग दिने, केवली परसिद्ध ॥ व  
दि वीजे वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिन  
राजथी, सीजे सगला काज ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ शोय

प्रारज्यते ॥ ॥ सुण शीतल देवा, वातही तुझ सेवा ॥ जेम  
गज मन रेवा, तूही देवाधिदेवा ॥ पर आणव देवा, शम ठै नित्य  
मेवा ॥ सुख सुगति लदेवा, हेतु उःस्क खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांग जिनचैत्यवंदन ॥ ॥ अच्युतकल्पथकी  
चव्या, श्रेयांग जिनंद ॥ जेठ अंधारी दिवस ठेठे, करत बहु आ  
नंद ॥ फागुण वदि वारसे, जनम दीक्षा तस तेरस ॥ केवली मांढ  
अमावशि, देशान चंदनरस ॥ वदि श्रावण त्रीजै लह्या ए, शिवसु  
ख अक्षयअनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहै ए जगवंत ॥ १ ॥  
इति ॥ ॥ अथ श्रेय प्रारज्यते ॥ सवि जिन अवतंस,  
जास इकागवंत ॥ विजित मदन कंश, शुद्धचारित्र हश ॥ कृतज्ञय  
विध्वंश, तीर्थनाथ श्रेयांग ॥ वृषज ककुद अंश, ते नमुं पुन्य वंश  
॥ १ ॥ अथ श्रीवासुपूज्य चैत्यवंदन ॥ प्राणतश्री इहां आविया;  
ज्येष्ठ सुदी नवम ॥ जनम्या फागुण चौदशी, अमावशी संजम ॥  
माह शुदि बीजै केवली, चौदशि आपाढी ॥ शुदि शिव, पाम्या क  
र्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन वारमा ए, विद्रुमरंगे  
काय ॥ श्रीनयविमल कहे इंसुं, जिन नमता सुख थाय ॥ ३ ॥

॥ अथ श्रेय प्रारज्यते ॥ वासुदेव नृप तांत, श्रीज  
योदेवी मात ॥ अरुणकमल गात, महिष लंठन विरुयात ॥ जस  
गुण अवदात, गीत जाणें निवात ॥ होय नित सुख गात, ध्याव  
ता दिवस रात ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ विमलनाथ चैत्यवं  
दन ॥ ॥ अठम कल्पथकी चव्या, माघव सुदि वारस ॥ शु  
दि महा त्रीजें जणया, तस चोथें व्रत रस, शुदि पोप ठेठे लह्या,  
वर निर्मल केवल ॥ वदि आपाढनी, पाम्या पद अविचल  
॥ विमल जिणोसरः व  
वमल करी, चिन ॥  
जिन नितु दिये, ३  
प ॥ १ ॥ इति ॥

शोय प्रारच्यते ॥ विमलश् चावे, वंदतां दुख जावे ॥ नव  
 निधि घर आवै, विश्वमा मान पावै ॥ सुपर लंठन कावै, ज्योमि  
 न्नरस्वेदथावै ॥ मनु विनति जणावै, स्वामिनु ध्यान ध्यावे ॥ १ इति ॥  
 ॥ अथ श्रीअनंतनाथ चैत्यवंदन ॥ प्राणतथकी चविया इहां,  
 श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चवदसें व्रत ॥  
 वदि वैशाखे चवदसि, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र शुदि पंचमी  
 दिने, शिववनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चउदमाए, कीया उ  
 ष्मन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामथी, तेज प्रताप अनंत ॥ ११ ॥  
 ॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥ अनंत जिन नमीजै, कर्मनी कोटि ठीजै ॥  
 शिवसुख फल लीजै, सिद्धि लीला वरीजै ॥ वोयिवीज मोह दाजै,  
 एटनुं काज कीजै ॥ मुऊ मन अति रीजै, स्वामिनु कार्य सीऊ ॥  
 ॥ १ ॥ ॥ अथ यर्मनाथ जितचैत्यवंदन ॥ ॥ वैशाख सुदि  
 सातमें, चविया श्रीयर्म ॥ विजययकी माहमाज्ञानी, शुदि त्रीजें  
 जनम ॥ तेरसमाही ऊजली, लिये सजमजार ॥ पोपिपूनमें के  
 वली, गुणना जंमार ॥ लेठी पाचम ऊजलीए, शिवपद पाम्या  
 जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमता, वाधे यर्म सनेह ॥ १५ ॥  
 ॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥ धर्म जिनपतीनो, ध्यानरसमांइ  
 ज्ञीनो ॥ वररमण सचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिचुवन सुख  
 कीनो, लंठने वज्र दीनो, नवि होय ने दीनो, जेहने तूं वसीनो ॥  
 ॥ १ ॥ ॥ अथ श्री शातिनाथ चैत्यवंदन ॥ चाद्रवा  
 वदि सातम दिने, सब्बथी चविया ॥ वदि तेरस जेठे जएया, उ-  
 खदोहग शमीया ॥ जेठि चवदस वदि दिने, लीये संजम वेम ॥  
 केवल उऊळपोसनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवना ए  
 शोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरशें शिव लह्या, नय कहे सासे  
 काज ॥ १६ ॥ ॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥ जिनपति

जपकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिजुवन सुखकारी, रास जय इति  
वारी ॥ सहस्र चतसृषि नारी, चन्द्र रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति  
जीतारी, मोहे हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ्र केशर घोली, माहे क-  
र्पूर चोली ॥ पेहरी शीत पटोली, वासियें गध धूली ॥ जरी पुष्प  
पटोली, टालीयें दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीयें जाव  
खोली ॥ २ ॥ शुभ्र अंग इग्यार, तेम उपांग वार ॥ बलि मूल  
सूत्र चार, नंदी अनुयोगदार ॥ दश पयन्न उदार, वेद खट वृत्ति  
सार ॥ प्रवचन विस्तार, ज्ञाप्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय  
जय नंदा, जैन दृष्टी सुरिंदा ॥ करै परमानंदा, टालता दुःख धंदा ॥  
ज्ञानविमल सुरिंदा, साम्य माकंदकदा ॥ वर विमल गिरिंदा, ध्या  
नथी नित्य जहा ॥ ४ ॥ इति ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥  
मोतीमानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतस्कंदा, शांतिकरण  
श्री शांतिजिणदा ॥ साहिवा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज  
हमारा ॥ सा० ॥ त्रिकरण शुद्ध चरण तुळ विलगो, पलक मात्र  
न रहुं द्वि अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे,  
ठंढ्यो पण तुम्हें नवि ठंढाशे ॥ सा० ॥ प्रभु तुम्हे कोइशु नेह न  
लावो, चीतराग कही सवि समजावो ॥ सा० ॥ २ ॥ बीजा अवर  
कहो एम समजे, पण ठौरु दीघाथी रीजे ॥ सा० ॥ बालकना  
दृढथी नवि चालै, जे मागे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ ज्ञकि  
खाची मनमाहे आणयो, सहज स्वजावें पण में जाणयो ॥ सा० ॥  
माहरे एरु प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अके जाची ॥ सा० ॥  
॥ ४ ॥ कनजे आव्या तो वृटीजे, जेह मुंह मागे तेहिज दीजै ॥  
सा० ॥ अजेदपणे जो मनमां मलशो, कथजेथी प्रभु तो नीकल-  
शो ॥ सा० ॥ ५ ॥ निधी तुम पाहा, आपी दा-  
पूरो आश ॥ ज्ञानि प्रभुताई, दीधी साहज

माई ॥ सा० ॥ ६ ॥ इति पदं ॥ ॥ अथ श्रीकुंभुनाथ चैत्य-  
वंदनं ॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सद्यच्छी चविया ॥ वदि  
चवदश वैशाखनी, जिन कुंभु जणिया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी,  
लीये संजमजार ॥ शुदि त्राजे चैत्रहतणी, लहे केवल सार ॥ प  
रिवा दिन वैशाखनी ए, पाम्या अविचल गण ॥ ठठा चक्री जय  
करू, ज्ञानविमल सुखखाण ॥ १७ ॥ ॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥

जिन कुंभु दयाला, गग लगन सुहाला ॥ जश गुण शुभमाला,  
कंठे पेहरो विशाला ॥ नमति नवि त्रिकाला, मंगल श्रेणी माला  
॥ त्रिभुवन तेजाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति शोय ॥

॥ अथ श्रीअरनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ सरवारथी आविया,  
फागुण शुदि बीजे ॥ मृगशिर शुदि दशमी जणया, अरदेव नमी  
जे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, सजम आदरियो ॥ काती उज्ज्व  
वारसें, केवलगुण वरिठ ॥ शुदि दशमी मृगशिरतणी ए, शिवपद  
लहे जिननाथ ॥ सातमचकार्ने नमूं, नय कहे जोकी हाथ ॥ १८  
॥ ॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥ ॥ अरजिन ए जुहारूं, कं

र्मनो क्लेश वारूं ॥ अहनिश संजारूं, ताहरो नाम धारूं ॥ कृत ज  
यजयकारूं, प्राप्त संसार सारूं ॥ नवि होय ते सारूं, आपणो आप  
तारूं ॥ १८ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीमल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

चव्या जयंतविमानथी, फागुण शुदि चउथे ॥ मृगशिर सुदि श्या  
रसें, जनम्या नियंत्रे ॥ ज्ञान लह्या एरुण दिनें, कढ्याणक तीन ॥  
फागुण शुदि वारसें, लहे शिव सदन अदीन ॥ मल्लि जिनेसर  
नीलमा ए, उगणीशमा जिनराज ॥ अणपरण्या अणभूपपद, जव  
जल तरण जिहाज ॥ १९ ॥ ॥ अथ शोय प्रारच्यते ॥

जिन मल्ली महिला, वान वै जेह नीला, ए अचरज जे

पणें नाम पीला ॥ दुष्मन् सवि पीढ्या, स्वामि जे

अविचल मुखलीला, दीजिये सुण रगीला ॥ १९ ॥ इति मल्लि  
 स्तुति ॥ ॥ अथ मुनिसुव्रत जिनचैत्यवंदन ॥ अपरा  
 जितथी आविया, आवण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारनी,  
 थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि वारसें व्रत, वदि वारसें ज्ञान ॥  
 फागुणनी तेम जेठ नवमी, रुण्णो निर्वाण ॥ वर्षा श्याम गुण उ-  
 जला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमलजिनराजना, सुरनरन-  
 यक दास ॥ २ ॥ ॥ अथ थोय प्रारच्यते ॥ मुनिसुव्र  
 तस्वामी हुं नमूं शीश नामी, मुऊ अंतरजामी कामदाता अका-  
 मी ॥ डु.खदोद्दग वामी पुण्यथी शेव पामी, शम्या सर्वदारामी  
 राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रीनमिनाथचै  
 त्यवंदन ॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आया ॥ आ  
 वण वदि आठम दिने, नमीजिनवर जाया ॥ वदि नवमी आपाढ  
 नी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि श्यारसें, वर केवल  
 धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अस्कय अर्नता सुरक ॥ नय कहे  
 श्रीजिन नामथी, नाशे दोद्दग डु.स्क ॥ १ ॥ ॥ अथ थोय प्रा  
 रच्यते ॥ नमी जिनवर मानो, जेह नदी विश्वठानो ॥ सुत वप्रा मानो,  
 पुण्यकेरो खजानो ॥ कनकरुमल वानो, कुंज ठे जे रुपानो ॥ स  
 वि सुवन प्रमानो, तेहथुं एक तानो ॥ २ ॥ ॥ अथ श्रीने  
 मीनाथ चैत्यवंदन ॥ ॥ अपराजितथी आविया, काती वदि  
 वारस ॥ आवण शुदि पंचमी जणया, यादव अवतंस ॥ आवण  
 सुदि ठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ शुदि आपाढनी आ  
 ठमें, शिवसुख लहे प्रमाण ॥ अरिठनेमो अणपरणीया ए, राजी  
 मतीना कंत ॥ ज्ञानविमलगुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥ २२ ॥ इति  
 ॥ ॥ अथ थोय प्रारच्यते ॥ गथा शस्त्रागारे, शंख  
 निज दाथ धारे ॥ क्रियो गड प्रचारे, विश्व कंध्यो तिवारे ॥ हरि



संशय धारे, एहनी कोर सारे ॥ जयो नेमकुमारे, ब्रालथी ब्रह्मचा  
 रे ॥ १ ॥ चार जवुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंमे,  
 सुरनर सारे सेव ॥ अरु पुष्करअरधे, इणि परें वीश जिनेश ॥ सं  
 प्रति ए सोदे, पच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण शम, ज  
 वजलनिधिने तारे ॥ कोहादिक मोटा, मञ्जतणा जय वारे ॥ जिहां  
 जीव दयारस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ जवि जाव धरीने चित्त करीने  
 चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशाशन सानिध्य, कारी विघन विरारे ॥ ममकित  
 दृष्टी सुर, महिमा जास वधारे ॥ शेत्रुंजगिरि सेवो, जिम पामो ज  
 व पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ रहो रहो रे यादव दो घ  
 म्नीया, दो घम्नीया दो चार घम्नीयां ॥ रहो रहो० ॥ मोज महिरा  
 ण शिवादेवी जाया, तुमें गो आघार अरुवमिया ॥ रहो० १ ॥ ना  
 ह विवाह चाह करी आए, क्युं जावत फिर रथ चमिया ॥ रहो०  
 २ ॥ पशुय पुकार सुणीय कीय करुणा, ठोरुदीए पशुपंखो चिमिया  
 ॥ रहो० ३ ॥ गोद विठाजं में वली जाजं, करु वीनती चरणे प  
 मिया ॥ रहो० ४ ॥ पीयुं विन दीहा ते वरिस समोवरु, न गमे  
 स्वपनमें सेजमिया ॥ रहो० ५ ॥ विरह दिवानी विलपति जोवन  
 वानी वन घर सेरमियां ॥ रहो० ६ ॥ अष्ट जवातर नेह निजाव  
 त, नवमें जव ते वीठम्नीया ॥ रहो० ७ ॥ सहसावनमाहे स्वामी  
 सुणीने, राजुल रेवतगिर चमियां ॥ रहो० ८ ॥ पीयु करे निज  
 शिरें हाथे देवा, व्रत चाखे चारित्र सेलमिया ॥ रहो० ९ ॥ जादव  
 वरा विष्णुपण नेमजी, राजुल मीठी वेलमिया ॥ रहो० १० ॥ ज्ञान  
 विमल गुणे दपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखम्नीया ॥ रहो०  
 ११ इति पद ॥ ॥ अथ श्रीपार्श्वनाथ चैत्यवदन ॥

कृष्ण चौथ चैत्रहतणी, प्राणतथी आया ॥ पोप वदिदशमी ज-

नम, त्रिजुवन सुख पाया ॥ पोष वदि इग्यारसें, लहे मुनिवर पंथ ॥  
 कमठासुर उपसर्गनो, टाढ्यो पत्नीमंथ ॥ चैत्र कृष्ण चौधह दिनें  
 ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण शुदि आठमें लह्या, अविचल  
 सुख जसपूर ॥ २३ ॥ इति ॥ ॥ अथ श्रौच प्रारंभते ॥ जलधर  
 अनुकारे, पुण्यवल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघनने जे विमा  
 रे ॥ नवनिधि आगारे, कष्टनी कोमि वारे ॥ मुऊ प्राणाधारे, मात  
 वामा मद्धारे ॥ १ ॥ अर जनम मुहावे, वीर चारित्र पावै ॥ अ  
 नुभव जय लावै, केवलज्ञान पावै ॥ पट्ट जे कड्याण, सप्रति जे  
 प्रमाणे ॥ सवि जिनवर ज्ञाण, श्रीनिवासाहि ठाण ॥ २ ॥ दशवि  
 धि आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सप्त प्रकार, पञ्चका  
 णादि विचार ॥ मुनि दश गुणधार, जे जया जिहा उदार ॥ ते  
 प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशी दिशिपाला,  
 जे महा लोणपाला ॥ सुरनर महिमाला, शुद्धदृष्टी कृपाला, नयवि  
 मल विशाला, ज्ञान लक्ष्मी मयाला ॥ जय मंगलमाला, पास नामे  
 सुखाला ॥ ४ ॥ ॥ अथ स्तवन प्रारंभ ॥ ॥ अरे मा  
 थे पंचरंगी पाग सोनानो ठोगलो मारूजी ॥ प्रज्जु पास जिनेसर  
 जुवन दिनेसर संकरो, साहिवजी ॥ लीला अलवेसर धीरममंदिर  
 जूवरो ॥ साहिवजी ॥ तुं अगम अगोचर कृत शुचि सुंदर संवरो,  
 सा० ॥ पद नमित पुरंदर तनुठवि निरमल जलधरो ॥ सा० १ ॥  
 तू अक्षय अरूपी ब्रह्म सरूपी ध्यानमा, सा० ॥ ध्याये जे जोगी  
 तुम गुण जोगी ज्ञानमा ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी निश्चय वासी  
 निजमते, सा० ॥ जिन आतम दरसी अमल अजेसी नयमते ॥  
 सा० २ ॥ पट्ट दर्शन ज्ञासे युक्ति निरासे शासन, सा० ॥ स्याद्व-  
 वाद विशाले सद्दज समाजे जावने ॥ सा० ॥ तूं ज्ञानने ज्ञाने  
 आतमध्याने आतमा, सा० ॥ ॥ ॥ जेद अजेद नही त-

पर्वतायनम. ८ श्रीपर्वतेंद्रायनम. ९ श्रीमहातीर्थायनमः १० श्री  
शाश्वतायनम ११ श्रीदृढशक्तयेनम. १२ श्रीमुक्तिनिलायनम. १३  
श्रीपुष्पदंतायनम १४ श्रीमहापद्मायनम. १५ श्रीष्टुवीपीठाय  
नम. १६ श्रीसूरजगिरयेनम. १७ श्रीकेलाशगिरयेनमः १८ श्री  
पातालमूलायनम १९ श्रीअकर्मकत्रेयनमः २० श्रीसर्वकामपूरणा  
यनम २१ ॥ ए सिद्धगिरीना २१ नाम सर्वने मुखे प्रगट कहीने  
पठे पाचतीर्थना पाच स्तवन कहवा ते लखिये ठिये ॥

॥ प्रथम सिद्धगिरी स्तवन ॥ ॥ साहेलडीयानी देशी ॥

नीलनी रायणतरुतले, साहेलरुिया ॥ पीलरुा प्रभुजीना  
पाय, गुणमजरीया ॥ ऊजले ध्याने ध्याड्ये, सा० ॥ एहीज मुग  
ति उपाय ॥ गु० १ ॥ शीतनी गायथे बैसीये, सा० ॥ रातमो  
करी मनरंग ॥ गु० ॥ नाही धोई निर्मल थई, सा० ॥ पहेरी व  
स्त्रादिक चंग ॥ गु० ॥ २ ॥ पूजीये सोवन फूलने, सा० ॥ नेह  
धरीने एह ॥ गु० ॥ ते त्रीजे जवे शिवलहे, सा० ॥ धाये निर्म  
ल देह ॥ गु० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदरुणा, सा० ॥ दीए एहने जे  
सार ॥ गु० ॥ अजग प्रीति होए जेहने, सा० ॥ जवश् तुम आ  
धार ॥ गु० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मजरे, सा० ॥ शाखा थरु  
ने मूल ॥ गु० ॥ देवतणा वासाअठै, सा० ॥ तीरथने अनुकूल ॥  
॥ गु० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मने, सा० ॥ सेवो एहने उवाह  
॥ गु० ॥ ज्ञानविमल गुरु जाखियो, सा० ॥ शत्रुंजा महातम  
माहि ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति श्रीशत्रुंजा स्तवनं ॥

॥ अथ श्रीगिरिनारतीर्थ स्तवनं ॥

देखी कामनी दोय के कामे व्यापियो, होलाण कामें ॥ ए  
चाह ॥ नेम निरजन देव के सेव सदा करु, हो लाल के ॥ सेव ॥

अहनिश तादरु ध्यान के दिल माहे धरुं हो लाल, दि० ॥ शंख  
 लंठन गुणखाण के अजन वान ठै हो लाल के अं० ॥ राजिम-  
 तीना कंत के परण्या विणुअ ठै हो० प० ॥ १ ॥ तूहीज जीवन-  
 प्राण के आतमराम ठै हो० आ० ॥ माहरे परम आधार के तादरुं  
 नाम ठै हो० ता० ॥ समुद्विजयना नदन नितु नितु वदता हो०  
 नि० ॥ कीजाये करुणावंत के कर्मनिकंदना हो० क० ॥ २ ॥  
 जीत्या मनमय राज रही गढ ऊपरै हो० र० ॥ पहरी शील  
 सन्नाह उदास एसी थै हो० ऊडा० ॥ सवि जिनवरमा स्वामि  
 तुझे अतिकुं करयु हो० तु० ॥ कुमरपणे धरी धोर महाव्रत  
 उच्चरयुं हो० मा० ॥ ३ ॥ आठ जवातर नेह जे तेह नवेखीनें  
 हो० ते० ॥ करुणा कीधी केवल पशुवा देखीने हो० पशु० ॥  
 पूरण पाली प्रीत वली निज नाग्ने हो० व० ॥ आषी संजमजार  
 पहोचामी पारमें हो० पो० ॥ ४ ॥ जण जणगुं जे प्रीत करे ते  
 जन घणा हो० करे० ॥ निरवाहे धर। नेह के ते विरला सुण्या  
 हो० ते वि० ॥ राजमतीनो कंत वखाणे कविजना हो व० ॥  
 तुझे तो दीवा ठेह के तेहना थिर मना हो० ते० ॥ ५ ॥ जाद-  
 वनाघ सनाघ करो मुऊनें सदा हो० क० ॥ टिउ मुऊ शिर हाथ  
 होवे जेम सपदा हो० हो० ॥ जलि२ मरे पतंग दीवाने मन नहा  
 हो० दी० ॥ नाणे मन असवार घोमो दोमे सही हो० घो० ॥ ६ ॥  
 सबला साथै प्रीत निवतने नवि कही हो० नि० ॥ विण लागी  
 जे थोमी किहा जाये वही रो० कि० ॥ ले सज्जनमुं होय ते ज्जीन  
 न ज्जोये हो० ज्जी० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होए तो कर्मने  
 मज्जोये हो० क० ॥ ७ ॥ तो डुरमन होय दूर कोणे नवि  
 गज्जोये हो० को० ॥ प्राणाधार पवित्र के दरशन दीजीजे हो०  
 द० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर मखीनें कीजाये होला० म० ॥

॥ ८ ॥ इति पद ॥

॥ अथ श्रीआचूतीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालो न राज गिरधर रमवा जइयै ॥ ए चाल ॥

॥ आबो आबो नै राज श्रीअर्चुद गिरिवर जइये ॥ श्रीजिनवरनी  
 ञ्क्ति करीने, आतम निर्मल अइये ॥ आबो० ॥ विमलवस्तीना  
 प्रथम जिनेसर, मुख निरखे सुख पइये ॥ चपक केतकी प्रमुख  
 कुसमवर, कंठे टोमर ठविये ॥ आ० ॥ १ ॥ जिमणें - पासे लूणग  
 वसही, श्रीनेमीसर नमिये ॥ राजीमतीवर नयणे निरखो, दु.ख दो  
 दग सवि गमिये ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धचल श्रीरूपज्ञ जिनेसर, रैवत  
 नेम समरिये ॥ अरे दो वस्तीनी यात्रा करता, विहुं तीरथ चित्तधरिये ॥  
 आ० ३ ॥ मरुप मंरुप विविधि कोरणी, निरखो हियमै ठरिये ॥  
 श्रीजिनवरना विंन निहाली, नरञ्जव सफलो करिये ॥ आ० ४ ॥  
 अविचलगढ आदीश्वर प्रणमी, अशुञ्जकरम सब हरिये ॥ पाश शा  
 ति निरखी जव नयणें, मन मोह्यो रुगरायें ॥ आ० ५ ॥ पाजे  
 चढता उजम वाधै, जेम धोमै पाखरीयें ॥ सकल जिनेसर पूजी के  
 शर, पापपमल सवि हरियें ॥ आ० ६ ॥ एकण ध्यानें प्रचुनें ध्या  
 तां, मनमाहे नवि रुरिये, ज्ञानविमल कहै प्रचु सुपशायें, सकल  
 सघ सुख करियें ॥ आ० ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीअष्टापद गिरि स्तवनं ॥

॥ अष्टापदगिरि यात्रा करणकु, रावण प्रतिदरी आया ॥ पु  
 ष्यक नामें विमाने बैशी, मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्रीजिन पूजियें  
 लाल, समकित निर्मल कीजै ॥ नयणे निरखी दो लाल, नरञ्ज  
 सफलो कीजै ॥ हीयमै हरखी लाल, समता संग करीजै ॥ ( आं  
 ऋणी ) चउमुख चउगति हरण प्रशार्दे, चउवीशें जिन बैठा ॥ च  
 उदिशि सिद्धासन लम नाशा, पूरव दिशि द्रोय जिठा ॥ श्री० २

॥ संज्ञव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपाना ॥ धर्म आदि उ  
 चरदिशि जाणो, एव जिन चञ्चवीशा ॥ श्री० ३ ॥ वैठा सिद्धतणे  
 आकारै, जिनहर चरते कीवा ॥ रयणाविंश मूरत थापीनें, जग ज  
 शवाद प्रमिद्धा ॥ श्री० ४ ॥ करे मदोदरी राणो नाटक, रावण  
 तांत वजावै ॥ मादल बीणा ताल तबूरो, पगरव ठमठमकावै ॥  
 श्री० ५ ॥ ज्ञक्तिज्ञावें एम नाटक करता, तूट। तत विचालें ॥  
 सार्धी आप नसा निजकरनी, लघुकलासु ततकालें ॥ श्री० ६ ॥  
 द्रव्य ज्ञावशु ज्ञक्त न खमी, तो अरुणपद साध्यु ॥ समकित सुर-  
 तरु फल पामोनें, त र्थेकर पद लाध्यु ॥ श्री० ७ ॥ इणि परें ज्ञ  
 विजन जे जिन आगे, बहुपरे ज्ञावनाज्ञावें ॥ ज्ञानविमल गुण ते  
 हना अहनिश, सुरनर नायक गावै ॥ श्री० ८ ॥ इति पद ॥

॥ अथ श्रीसमेतसिखर स्तवनं ॥

॥ समेतसिखरगिरि जेटीये रे, मेटवा ज्वना पास ॥ आत  
 मसुख वरवा ज्ञणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ ज्ञवियां  
 सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ ज्ञवि० से० १ ॥ (आक  
 णी ) समेतसिखर कल्पें कह्यो रे, वीश टुकु अधिकार ॥ वीश ती  
 र्थेकर शिव वस्था रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ ज्ञ० से० २ ॥ सि  
 ङ्केत्र माहे वस्था रे, ज्ञाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरुप-  
 मारे रे, दोष नय प्रज्जुजीना साररे ॥ ज्ञ० से० ३ ॥ आगमवचन वि  
 चारता रे, अति दुर्गम नय वाद ॥ वस्तु तत्व जिणे जाणिये रे, ते  
 आगम स्याद्वाद रे ॥ ज्ञ० से० ४ ॥ जयरथरायनणी परे, जात्रा  
 करो मनरंग ॥ ज्ञवडु खने देइ अजली रे, आर्ये सिद्धवधूनो संग रे  
 ॥ ज्ञ० से० ५ ॥ समकितयुत यात्रा करे रे, तो शिव हेतु थाय  
 ॥ ज्ञवहेतु किरिया त्यागथ्री रे, आतमगुण प्रगटाय रे ॥ ज्ञ० से०  
 ६ ॥ जेह सभें समकित थयो रे, तेह समये होय नाण ॥ ज्ञान

विमल गुरु ज्ञाखियो रे, ग्रावश्यकज्ञाप्यनी वाण रे ॥ ज० से०  
॥ ७ ॥ इति चौमाशी देववदन विधि ॥

॥ अथ श्रीपर्युषणयर्व स्तुति ॥

॥ सत्तरजेदी जिन पूजा रचीनें, स्नात्र महोच्चव कीजै जी  
॥ होल दमामा जेरी नफेरी, ऊद्धरि नाद सुणीजैजी ॥ वीरजिन  
आगल ज्ञावना ज्ञावी, मानवज्जव फल लीजै जी ॥ परव पजूसण  
पूरव पुन्ये, आख्या इम जाणीजै जी ॥ १ ॥ मास पास वना द-  
शम डुवालश, चत्तारी अठ कीजै जी ॥ ऊपर वलि दश दोय क  
रोनें, जिन चौवीश पूजीजै जी ॥ वनाकढमनो ठठ करीनें, वीर-  
वखाण सुणीजे जी ॥ पम्बाने दिन जन्म महोच्चव, धवल मगल  
वरतीजे जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगे अमार पलावो, अठमनुं  
तप कीजै जी ॥ नागकेतुनी परै केवल लहिधै, जो शुज ज्ञावै  
इहेये जी ॥ तेलाधर दिन त्रण्य कट्याणक, गणधरवाद् वटीजै  
जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजै, रूपज चरित्र सुणीजैजी ॥ ३ ॥  
वारशें सूत्र नें समाचारी, सवत्सरी पम्किमिये जी ॥ चैत्यप्र-  
वानी विधिसु कीजै, मफल जंतुनें खामीजै जी ॥ पारणाने दिन  
सामीवहल, कीजै अधिक वमाई जी ॥ मान वेजय कहे सकल  
भनोरथ, पूरो देवी सिद्धाई जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमनाथजीको वारामासो ॥

॥ सीयाले खाटू जली रे लाल ॥ ए चाल ॥ ॥ तोर-  
णथी रथ फेरीयो रे लाल, नीठुर नेमकुमार ॥ प्रेम विलूधी पद-  
संणी रे लाल, वीनवै राजुलनार ॥ हो रगीला नेम सुण माहरी  
अरदाश ॥ १ ॥ सहीवासु राजुल कहे हो लाल, मगसिर नाथो  
पीठ ॥ प्रीतम विन हिव माहरो हो लाल, धीरज न वरै जीव ॥  
हो० २ ॥ पोत महीनो आवियो हो लाल, आयो मो डुव देण ॥

तो सूरतने सांवला हो लाल, देखण तरसै नैण ॥ हो० ३- ॥  
 माहमहीने सी पमे हो लाल, प्रीत सग पोढै नारी ॥ प्रीतम वि  
 ण हूं एकली रे लाल, केम रहू निरधार ॥ हो० ४ ॥ होली खेले  
 हेतसुं हो लाल, फागुणमें नर नारी ॥ हु कृणसु खेलू हिवे हो  
 लाल, पाश नही जरतार ॥ हो० ५ ॥ चेतमहाने चाढणी रे ला  
 ल, संजोगण सुख बैण ॥ विरहणमें वालम विना रे लाल, रोवत  
 जावै रैण ॥ हो० ६ ॥ वनहरिया वैशाखमे रे लाल, माजर रही  
 महकाय ॥ अरज सुणी अवला तणी हो लाल, तपत मिटावो  
 आय ॥ हो० ७ ॥ जेठ तपे लू आकरो हो लाल, दाजै कोम  
 लगात ॥ ससनेही साहिब विना हो लाल, कुण पूठै मुज्  
 वात ॥ हो० ॥ ८ ॥ आसाढे कालो घटा हो लाल, जनमि आयो  
 मेह ॥ कत मिट्या निज नारसु रे लाल, धरती मिलिया मेह ॥  
 हो० ॥ ए ॥ श्रावण चमके दामनी हो लाल, घन वरसे ऊरला-  
 इ ॥ इण रुत सूना एकली हो लाल, क्यू कर रैण विहाई ॥ हो०  
 ॥ १० ॥ काली कालाहण मिलो हो लाल, जाइवै वर खत ॥  
 अरज सुणीने साहिबा हो लाल, पूरो मो मन खत ॥ हो० ॥ ११ ॥  
 आसोजै आसू ऊरै हो लाल, नाह विना निसदीश ॥ सार न  
 पूठो साहिवे हो लाल, राखि रह्यो मन रीश ॥ हो० ॥ १२ ॥  
 काती दृढ ठाती करी हो लाल, जाय मिली गिरनार ॥ देखी मुख  
 निज नाहनो हो लाल, सफल गिणे अवतार ॥ हो० ॥ १३ ॥  
 संयम ले पिठ सेंद्रे हो लाल, पामे जवनो पार ॥ इण पर पाले  
 प्रीतनी हो लाल, घन २ ते नर नारि ॥ हो० ॥ १४ ॥ जे कीधी  
 पशु ऊपरे हो लाल, मो पर करज्यो देव ॥ चंद जणी द्यो करि  
 दया हो लाल, प्रजु चरणारी सेव ॥ हो० ॥ १५ ॥ इति श्रीनेम  
 राजुल चारेमासो सपूर्ण ॥



॥ अथ आदिजिन आरती ॥

अपठरा करती आरती जिन आगे, हारे जिन आगे रे जिन  
आगे, हारे ए तो अविचल सुखमा मागे, हारे नाञ्जीनंदन पाश ॥  
॥ अप० ॥ १ ॥ ताथेई नाटक नाचती पाय ठमकै, हारे दोय च-  
रणे जाऊर ऊमकै ॥ हारे सोवनना घूघरी घमके, हारे लेती फूद-  
नी बाल ॥ अप० ॥ २ ॥ ताल मृदग ने वांशल। रुफ वीणा, हारे  
रूमा गावती स्वर जीणा ॥ हारे मधुर सुरासुर नयणा, हारे जो-  
ती मुखहु निहाल ॥ अप० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवी मातनें प्रज्नु जा-  
या, हारे तोरी कंचनवरणी काया ॥ हारे मे तो पूरव पून्ये पाया,  
हारे तोरो देख्यो दीवार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रज्नु  
प्यारो, हारे प्रज्नु सेवक हू तु तारो, हारे ज्ञवोज्ञवना दुखमा  
वारो, हारे तुमे दीनदयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो  
चित्त धरजो, हारे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हारे मुनि मा-  
णक सुखिउं करजो, हारे जाणी पोतानु बाल ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ नेम राजोमती सिंहाय ॥ देशो उमादे भटीयाणोरी ॥

पहली तो समेरू हो सिद्ध बुद्धी दाता सारदा, लागु गुरां  
रे पाय ॥ प्रज्नुगुण गास्या हो नेमीसर साहिव जिनतणा, सुजमत  
आपो मोरी माय ॥ १ ॥ सोरोपुरहुती हो नेमीसर साहिव थे  
चढ्या, जान करी याडाय ॥ हसती तो सिणगार्या हो नेम सर  
साहिव थे जला, धोरुलारी गिणती न काय ॥ २ ॥ वाजा तो अ-  
विका हो नेमीसर साहिव वाजता, आया तोरण वार ॥ महिल  
चढीने हो राजुल जोवे हरखसु, मनमाहे हरख अपार ॥ ३ ॥  
आंख फरुके हो सहेली मारी जीमणी, फिरताइ देसे ठै जरता-  
र ॥ वामो तो जरीयो हो नेमीसर साहिव जीवनो, पशुवाणी  
पुणी रे पुकार ॥ ४ ॥ ऊजो तो रथनें हो नेमीसर साहिव राखी-

यो, ए पशु बांध्या वै किश काज ॥ गोरो तो होसी हो नेमीसर  
 साहिव तुमतणो, सारथी कहे वै महाराज ॥ ५ ॥ थोमा तो  
 सुखनें हो इण राजुल नारीरे कारणें, होसी हो जीवानो संहार ॥  
 जीव बंध्याने हो नेमीसर साहिव ठोमिया, जीव सवे तिण वार  
 ॥ ६ ॥ अणपरणो राजुल हो नेमीसर साहिव ठोरुने, जाय  
 चढ्या गिरनार ॥ याठे तो करम्मासुं हो नेमीसर साहिव जीतवा,  
 लीघो संजमजार ॥ ७ ॥ राजुल तो जूरे हो नेमीसर साहिव  
 एकली जल विन मठली जेम ॥ नव ज्वारो हो नेमीसर साहि-  
 व ठोरुने, नेम विन जीवुं केम ॥ ८ ॥ सहियां तो समजावै हो  
 राजुल डुख मत करो, एतो कालो वै जरतार ॥ पागे तो राजुल  
 जापै हो सहेली मारी थे सुणो, इण जव ए जरतार ॥ ९ ॥ रा-  
 जुल तो चाली हो नेमीसर साहिव वादवा, साधे तो घणु रे परि-  
 वार ॥ गिरनारे चढता हो सन आगे पाठै नीकड्या, एकली रही  
 वै राजुल नार ॥ १० ॥ मेहा तो वरस्या हो नेमीसर साहिव अ-  
 तिवणा, ज्ञाज्या वै सत्रि तिणगार ॥ गुफा तो देखी हो राजुल  
 नारी अति जली, चीर विचोवै राजुल नार ॥ ११ ॥ गहणा तो  
 बाज्या हो राजुलनारीरे अगना, घुवरना जणकार ॥ जणका तो  
 सुणिया हो रहनेनी वैठे ध्यानमें, खोलो वै पलक तिणवार ॥ १२ ॥  
 रूपे तो मोह्यो हो रहनेमी वैठो ध्यानमें, कहे सुदर करो मोसुं  
 प्यार ॥ बोली तो सुणकर हो राजुल अंग ढाकियो, मांनै ठोरु वै  
 नेमजरतार ॥ १३ ॥ जोजन तो जीम्यो हो रहनेमी खीरखाम गो,  
 उलटी करै नाखै नेम ॥ वेनें तो माणस हो रहनेम पागे नही  
 जखे, जखेली काग कुत्ता जेम ॥ १४ ॥ हू तो माता हो रहनेम  
 थारे सारखी. जाईनी नार ॥ पाय तो धरस्थो हो रहनेम  
 माहरे ठ १ ॥ थे नरक मजार ॥ १५ ॥ एहया तो व-

चने हो रहनेम राजुल पाए नम्यो, पाप खमावै वारंवार ॥ कपरा  
तो पहरया हो राजुलनारो आपणा, पुहती ठै प्रजु दरवार ॥ १६ ॥  
राजुल तो हरखे हो नेमीसर साहिव वादिया, वादीनें लीयो सं  
जमजार ॥ केवल तो पाली हो नेमीसर साहिव निरमलो, पुहतं  
ठै मुगति मजार ॥ १७ ॥ केवल पाली हो नेमीसर साहिव आग  
लै, मिलिया ठै मुगति मजार ॥ माणिक्य रंगे हो नेमीसर साहिः  
गाईयो, म्हारा आवागमण निवार ॥ १८ ॥ इति सिंज्ञाय संपूर्ण ॥

॥ अथ सिद्धपद वर्णन सिंज्ञाय ॥

श्रीगौतमस्वामी पूठा करे, विनय करी शीत नमाय प्रजुजी ॥  
अविचल थानक में सुणयो, रूपा करी मोय वताय प्रजुजी ॥ शिव-  
पुरनगर सोढामणु ॥ १ ॥ आठ करम अलगा करी, सारया  
आतम काज प्रजुजी ॥ ठूटा ससारना डुख थकी, रहवानो  
किहा ठाम प्रजुजी ॥ शि० ॥ २ ॥ वीर कहे उई लोकमा,  
सिद्धशिलातणो ठाम हो गोतम ॥ स्वरगपुरीने उपरे,  
तेहना वारे नाम हो गोतम ॥ शि० ३ ॥ लाख पिस्तालीस  
जोजना, लारी पोहलो जाण हो गोतम ॥ प्राठ जोजन जामी  
विचै, बेने माखीपख माण हो गोतम ॥ शि० ४ ॥ कुनला हार  
मोतीतणा, गोडुग्ध सख प्रमाण हो गोतम ॥ ते थकी कुजली  
अधिणी, नलटो ठत्र सगण हो गोतम ॥ शि० ५ ॥ अरजन-  
स्वर्ण शम दीपती, पठारी मठारी जाण हो गोतम, फटकरतन  
थकी निरमली, सुप्राली अत्यंत चखाण हो गोतम ॥ शि० ६ ॥  
सिद्धशिला नलधी गया, अग रह्या सिद्धगज हो गोतम ॥  
अलोकसुं जाई अरुया, सारया आतकाज हो गोतम ॥ शि०  
॥ ७ ॥ जनम नहीं मरणो नहीं, नहीं जरा नहीं रोग हो गोतम ॥  
बेरी नहीं मित्रो नहीं, नहीं सजोग विजोग हो गोतम ॥ शि०

॥ ८ ॥ जूख नहीं तिरखा नही, दरख नहीं नहीं सोक हो गौतम ॥  
 तम ॥ करम नहीं काया नही, विपयारस नहीं योग हो गौतम ॥  
 शि० ए ॥ शब्द रूप रस गंध नहीं, फरस नहीं नहीं वेद हो  
 गौतम ॥ बोले नहीं चाले नहीं, मोनपणूं नहीं खेद हो गौतम ॥  
 ॥ शि० १० ॥ गाम नगर ए को नहीं, वसती नहीं ऊजार हो गौतम ॥  
 काल तिहां वरते नहीं, नहीं रात दिवस तिथि वार हो गौतम ॥ शि०  
 ११ ॥ राजा नहीं परजा नहीं, नहीं वाकुर नहीं दास हो गौतम  
 ॥ मुक्तिमें गुरु चेलो नहीं, नहीं लघु वरुई वास हो गौतम ॥  
 शि० १२ ॥ अनंता सुखमें जिलरह्या, अरूपी ज्योत प्रकाश हो  
 गौतम ॥ सहुकोईने सुख नारिखा, सगलानें अविचल राज हो  
 गौतम ॥ शि० १३ ॥ अनंता सिद्ध मुगते गया, वली अनंता जाय  
 हो गौतम ॥ अवर जग्था रूंधे नही, जोतमा जोत समाय हो गो  
 तम ॥ शि० १४ ॥ केवलज्ञाने सहित वै, केवलदर्शम खास हो  
 गौतम, कायकसमकित दीपता, कदय न होवै ऊदाश हो गौतम ॥  
 शि० १५ ॥ सिद्धस्वरूप जे उजखे, आणी मन वैराग हो गौतम ॥  
 शिवरमणी वेगे वली, नवि कहे सुख अथाग हो गौतम ॥ शि०  
 १६ ॥ इति सिद्धिपद वर्णन सिद्धाय संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमनाथजीरो सिलोको ॥

समरुं सारदनें गुणपते राणी, विघन टालो धो अघिरल  
 वाणी ॥ कहु सिलोको नेमिनाथकेरो, जाधववंस मांहे वेभरो ॥ १ ॥  
 नगरी सोरीपुर पृथ्वीमे दीपे, रिद्धै समृद्धै अलकाने जीपे ॥ राजा समुद्र  
 विजै शिवादे राणी ॥ सीलै रूपै फर अधिकी चखाणी ॥ २ ॥  
 तेहनोजी अंगज ने नाथो, मुगतरमणसुं घाले वेवाथो ॥ आयांइ  
 घणें वसत आयो त्रैचीसै फाग जगायो ॥ ३ ॥ रमवाजो  
 सारु चलिया चंग वाजे रंभे गुलावो ॥

राणी राधा सतनामा, धीजाही गोपी मिलर रामा ॥ ४ ॥ नेम-  
 नाथजीरो व्याह ममायो, कुमरी राजुलनो सगपण कराधो ॥  
 राजाने परजा अति सुख पायो ॥ ५ ॥ उग्रसेनराजा घरे वधारै,  
 जादवरायरी जानज आई ॥ होलने वरघू सखरी सरणाई, नृगलने  
 जेरी सखरी सजाई ॥ ६ ॥ ताल कसाल कुहके करनाला, गोरी  
 जी गावै गीत रसाला ॥ रथ वहलै वाजे घूबरमाला, मदऊरता  
 मंगल जाकऊमाला ॥ ७ ॥ इण विधसुं कुवरी परणन आयो, ला-  
 नी राजीमती वेस वणायो ॥ मसतक मोती माग जराई ॥ तीस  
 फूलारी ज्योत सवाई ॥ ८ ॥ सुविसाले जालै टीकोजी सोहै, अ-  
 णियाली आप्यां काजल मोहै ॥ काने हंकोटा जमावकेरा, नकये-  
 सर मोती जलके जलेरा ॥ ९ ॥ दामिमकुलिया दात वत्तासे, वदनी  
 बोलै सार ठत्तीसै ॥ डुलनीतिलनी गल मोत्यांरी माला, कुच ऊपर  
 कसिया कुच रसाला ॥ १० ॥ चूमे नें गहणें जाइ न वखाणी, रू-  
 पैकर गोरी जीपे इंझणी ॥ जाऊरनें नेवर बूधर घमफती, हंसा तो जीपे  
 सुदर हालती ॥ ११ ॥ हाथेजी पगे पोथीजी दीधी, सुभ्रामे देही गर  
 काव कीधी ॥ फावते कपनै सखिया वणाई, राजूल राखी नार न  
 काई ॥ १२ ॥ मृगानेणी सोहै जोवनवालो, सारीखी सखिया ति-  
 ण विचालो ॥ इण विधसु पदमण परणन आयो मदसिरी रूपे  
 मदन हरायो ॥ १३ ॥ मदमाता राता करता गहगाटो, कोमेजी  
 र्यानें जादव आटो ॥ घणुं मठराला महा अजिमानी ॥ केसरिये वागै  
 मिलिषा ठै जानी ॥ १४ ॥ डुरदत कुंवर हरिवत्त केरा, बीजाही  
 जानी नृपति जलेरा ॥ धक्को मारे तो मेरु धूजामै, जातां कालनें  
 जाल पठ मे ॥ १५ ॥ तिहा माहे नेमजी महाबलवंतो ॥ अनता  
 सुरपतिमु उर अनतो ॥ ताराणमाहे शोजे जु चदो, तिण विध  
 माहे नेमजिणदो ॥ १६ ॥ तिण वेला देखी पमुअ पुन

परगया नेमजी पागजी आया ॥ विग्ग संसार मायाजंजालो,  
जामणने मरण महा विकरालो ॥ १४ ॥ इण अनुक्रम नेमजी  
चारत लीधो, आपरो नाम अविचल कीधो ॥ नेमजी राजुल वाव  
ब्रह्मचारी, जिणरो शिलोको गावै नरनारी ॥ १५ ॥ इति श्रीनेम  
नाथजीरो सिलोको सपूर्ण ॥

॥ अथ चोढालिया प्रारंभ ॥

॥ विजयसेठ विजयासेगणीका चोढालिया लिख्यते ॥  
प्रद् ऊठी रे पंच परमेष्टि सदा नमूं, मनसूधे रे तेहने चरणे नित  
नमू ॥ धुर तेहने रे अरिहंत सिद्ध वखाणियै, आचारज रे उपा-  
ध्याय मन आणियै ॥ ( उद्दालो ) आणियै निज मन जाव सुद्धै,  
उपाध्याय नमूं वली ॥ जे पनरह करमजूमिमांहे, साधु प्रणामु ते  
वली ॥ जिम कृष्णपद्म नै शुक्र पद्म वलि शील पाळ्यो ते  
सुणो, जरतारने छो विन्हे तेहनो चरित जावेसुं जणो ॥ १ ॥  
( ढाल ) जरतकेंत्रे रे समुद्र तीर दक्षिणदिसै, कण्ठदेसै रे विजय-  
सेठ आवक वसै, शीलव्रत रे अंधारापद्मनो लियो, बालागणे रे ए-  
हवो निश्चै मन कियो ॥ ( उद्दालो ) मन कियो एहवो तेण निश्चै  
पक्क अंधारे पालस्युं, हुं शील निश्चै एह विरुद्ध विषय शेवा टाल-  
स्युं ॥ इकअथै सुंदर रूप विजया नाम कन्या ते वली, पिण शुक्र  
पद्मनो शील लीधो सुगुरु जोगे मनरली ॥ २ ॥ ( ढाल ) कर्म-  
जोगे रे मांहीमाहे विहुतणो, शुक्र दिवसे रे हुठ विवाह सुहाम-  
णो ॥ तब विजया रे सोले जृगारजलाकरी, पिउमंदररे पोहती मन  
उल्लट धरी ॥ ( उद्दालो ) मन धरी उल्लट अधिक पहुतो पिया  
पासे सुंदरी, ते देखि हरखे सेठ बोळै शील निश्चो सजरी ॥ सुक  
शील निश्चो पखअंधारे-तेहना दिन तीन ठै, ते नेम पालो शुक्र  
पदे हु जोग जोगविस्थु पठै ॥ ३ ॥ ( चाल ) इ - माजल रे वि-

जया मन विलखी अई, पिउ पूठे रे किम चिता तुऊने जई ॥  
 तव विजया रे कहे शुक्लपद व्रतमें लियो, व्रत चौथे रे वालापण  
 निश्रो कियो ॥ ( उल्लाओ ) वालपणमें कियो निश्रो शुक्लपद व्रत  
 पालस्युं, तो उन्नय पद हिव शील पाली नियम दूषण टालस्युं ॥  
 तुझे अवर नारी परणने हिव शुक्लपद सुख जोगवो, कृष्णपद  
 निज निमय पाली अजिग्रह इम जोगवो ॥ ४ ॥ ( ढाल ) तव  
 बलतो रे तसु जरतार कहे इसो, विपचारस रे कालकुटविप  
 ह्वे तिसो ॥ ते ठनी रे शीलव्रत दोनुं पालस्या, एह वार्त्तारे माता  
 पिता न जणावस्या ॥ ( उल्लाओ ) मानपिता जब जाणस्ये तव  
 दिख्य जेस्या धर दया, इम अजिग्रह लेईने ते जावचारत्रिया  
 थया ॥ एकत्र सध्या सयन करता खरुगधारा व्रत धरे, मन वचन  
 काया करी सूधो शील वेनुं आचरै ॥ ५ ॥ ( ढाल २ ) विमल  
 केवली एक, चंपा नयरीए, ततखिण आवी समोसरया ए ॥  
 आणी अधिक विवेक, श्रावक जिणदास, कहे विनयगुण परि-  
 चरयो ए ॥ ६ ॥ सहस चोरासी साधु, मुऊ घर पारणो, करै मनो-  
 रथ तो फलै ए ॥ केवल ज्ञान अगाध, कहे श्रावक सुणो, एह  
 वात तो नवि मिले ए ॥ ७ ॥ किहा एतला अणगार, किहा वलि  
 सूऊतो, जातपाणी नहिं एतलो ए ॥ तो हिव तेह विचार, करो  
 तुम्हें जिम तिम, फल अम्ह हुवै तेतलो ए ॥ ८ ॥ अठे हिवे कञ्च-  
 देश, सेठ विजय वली, विजया जार्या तसु धरै ए ॥ जावयती  
 अहवास, तेहनें जोजन, बीधा फल हुवे तेतलो ए ॥ ९ ॥ जिण  
 दास कहे जगवंत, ते माहे एतला, कुण गुण कुण व्रत वै घणा  
 ए ॥ केवली कहे अनंत, गुण तसु शीलना, कृष्ण शुक्लपद व्रतत  
 णा ए ॥ १० ॥ ॥ ढाल ३ ॥ दान कहे जग हू वरुो ए ॥ देशी ॥  
 केवलीनें मुख साजली, श्रावक ते जिनदास रे ॥ कञ्चदेशें हिव

आश्रयो, पूरे निज मन आस रे ॥ ११ ॥ धन२ शील सुहामणो,  
 शील शमो नही कोय रे ॥ शीलै देव सानिध करै, शीलथो शिव  
 सुख होई रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ सेठ विजय विजयाज्ञाणो, जगतसुं ज्ञो-  
 जन देई रे ॥ सहस चोरासी साधुना, पारणानो फल लेई रे ॥  
 ॥ ध० ॥ १३ ॥ मातपिता पूठे तेहनें, एहनो शील वखाण रे ॥  
 केवलीने मुख जिम सुणयो, तिम कहै तेह गुणजाण रे ॥ ध० ॥  
 ॥ १४ ॥ सहस चोरासी साधुने, पारणो दीये कोइ जाय रे ॥  
 रुष्ण शुक्लपद्म दपती, ज्ञोजननो फल थाय रे ॥ ध० ॥ १५ ॥  
 मातपिता जव जाणियो, प्रगट हूँ तंबध रे ॥ सेठ विजय विज-  
 या लियो, चारित्र अप्रतिबंधो रे ॥ ध० ॥ १६ ॥ ॥ ढाल ४ ॥  
 केवलीनें पासे, चारित्र लेइ नदार ॥ मनममता मूँकी, पालै निर-  
 तीचार ॥ १७ ॥ आठ करम खपावी, पाम्यो केवल ज्ञान ॥ ते मु-  
 गते पहुंता, दंपती सुगुण सुजाण ॥ १८ ॥ तेहना गुण गावै,  
 जावै जे नर नार ॥ ते वंठित सुख लहै, पहचै जवनें पार ॥ १९ ॥  
 ॥ कलश ॥ इम रुष्णपद्म नें शुक्लपर्के शील पाटयो निरमलो,  
 ते दंपतीना जाव शुद्ध सदा शुजगुण साजलो ॥ जिम डुरिय दो-  
 हग दूर जायै सुख आयै बहु परै, वलि सफल मंगल मनह वंठत  
 कुशल नित घर अवतरै ॥ २० ॥ इति शील चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ इखुकारराजा भृगुप्रोहित चोढालिया लिख्यते ॥

महिलामे वैठो राणी कमलावती, जीणी तो उमै मारग  
 खेह ॥ जोवै तमासो इखुकार नगरमें, कौत्तक उपनो मनमें एह ॥  
 सांजल रे दासी आज नगरमें बहदो किम धणो ॥ १ ॥ कांतो  
 परधान सखी रुंभीया, कां केइ लुंढ्या राजा गाव ॥ कां कोइ गा-  
 न्यो धन नीसख्यो, गान्ना रह्या ठै ठामो ठाम ॥ सां० ॥ आ० ॥  
 ॥ २ ॥ नातो परधान बाईजी रुंभिया, ना कोई राजा लुंढ्या



सांजल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपखी ज्यु जोग जाणज्यो, ए काम  
 वधरै ससार ॥ साप ज्यु मोर थकी मरनो र्हे, ज्यु पापसुं सक  
 स्या इण वार ॥ सांजल रे प्रा० २५ ॥ शोक तजी संतोपसु, लेस्य  
 संयमजार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्यां उग्र विहार ॥ सांजल  
 रे प्रा० २६ ॥ तन धन जोवन कारमो, चंचल बीज समान ॥ खिणः  
 खूटै आउखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांजल रे प्रा० २७  
 हस्ती ज्यु बंधण तोरुनें, आपे वन सुखे जाय ॥ कर्मबंध तूटै संयम  
 लिया, सुणो कहु ठु महाराय ॥ सांजल हो रा० स० २८ ॥ इम  
 सुणनें इखुकारराजा चेतियो, गोमोनें मोटको राज ॥ कायरनें तो  
 ए तजता दोहिलो, विप्र सहित सास्या काज ॥ सांजल हो राणी  
 स० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह गोमूकै, पायो जिनध-  
 रम सुजाण ॥ तपस्या सगलाही आदरी, उल्लूखो पराक्रम आण ॥  
 ॥ सा० प्रा० स० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति गुपति  
 दयाल ॥ जमरानी परै करै गोचरी, रिपि टालै दोष बयाल ॥ सा०  
 प्रा० स० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज वै, ज्ञव्यजीवनें उत्तरै  
 पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सा० प्रा० सं०  
 ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समजनें, निरमल ज्ञावना ज्ञाव ॥  
 उए जणा थोमा कालमें, मुगति विराज्या जाय ॥ सा० प्रा० स० ॥  
 ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, जृगुपुरोहित जसा नार ॥  
 जृगुप्रोहितना दीव दीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सा० प्रा० स०  
 ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा जृगुप्रोहित अतिकार संपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चौढालियो लिख्यते ॥

॥ उहा ॥ प्रथम जिनेसर पाय नग्नी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान  
 शील तप ज्ञावना, बोलिस बहु सवाद ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोत्तरया  
 राजगृही उद्यान ॥ समवत्तरण देवें रुखो, वैठा-श्रीवर्धमान ॥ २ ॥

धैर्यी वरै परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रभु हुं वमो,  
 मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहुको तुमें, कुण वै मुऊ  
 समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥  
 प्रथम पदुर दातारनो, ले सहु कोइ नामं ॥ दीघांरी वेवल चढै,  
 सीधै वंजित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरनें पारणे, कुण करस्यै मुऊ  
 होरु ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीवारै कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग  
 सगलो वस करुं, मुऊ मोटी वै वात ॥ कुण२ दानथकी तिरथा,  
 ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ दाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥  
 घनसारथवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थकर पद में  
 दियो, तिणें मुऊनें अजिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहै जग हुं  
 वमो, मुऊ सरिखु नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा,  
 दाने दोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती,  
 पम्पिलाज्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुवाहू सुख लहै, ते तो मुऊ  
 उपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पम्पिलाज्यो  
 रुपिराय ललना ॥ शालिज्जइ सुख जोगवै, दानतणें सुपसाय ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पाचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरा आण  
 ललना ॥ जरत थयो चक्रवर्त्ति जलो, ते पण मुऊ फल जाण ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उरुदना वाकला, उत्तम पात्र विशेष  
 ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥  
 ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयाशकुमार ललना ॥ सेलमी-  
 रस्त बहरावियो, पाम्प्यो जवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चद-  
 नवाला बाकुला, पम्पिलाज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट  
 थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव  
 पारेवहुं, शरणें राख्यू सूर ललना ॥ तीर्थकर चक्रव-  
 र्त्तिपणें, ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजजय शिशलो

सांज्ञल रे प्रा० २४ ॥ गिरधपखी ज्यु जोग जाणज्यो, ए काम  
 वधरै ससार ॥ साप ज्यु मोर थकी मरतो र्हे, ज्यु पापसुं सक-  
 स्या इण वार ॥ सांज्ञल रे प्रा० २५ ॥ शोक तजी सतोपसु, लेस्यां  
 संयमज्जार ॥ ममता तजी समता ग्रहो, करस्या उग्र विहार ॥ सांज्ञल  
 रे प्रा० २६ ॥ तन्न धन जोवन कारमो, चंचल वीज समान ॥ खिण २  
 खूटै आउखो, मूरख करे रे गुमान ॥ सांज्ञल रे प्रा० २७ ॥  
 हस्ती ज्यु वधण तोरुनें, आपे वन सुखे जाय ॥ करमवय तूटै सयम  
 लिया, सुणो कहुं तु महाराय ॥ सांज्ञल हो रा० स० २८ ॥ इम  
 सुणनें इखुकारराजा चेतियो, ठोरीनें मोटको राज ॥ कायरनें तो  
 ए तजता दोहिलो, विप्र सहित सास्या काज ॥ सांज्ञल हो राणी  
 स० ॥ २९ ॥ मोह न राख्यो परिग्रह ठोरुके, पायो जिनध-  
 रम सुजाण ॥ तपस्या सगलाही आदरी, उल्कष्टो पराक्रम आण ॥  
 ॥ सा० प्रा० स० ॥ ३० ॥ सुध संयम पालै सदा, सुमति गुपति  
 दयाल ॥ जमरानी परै करै गोचरी, रिपि टालै दोष वयाल ॥ सा०  
 प्रा० सं० ॥ ३१ ॥ तारण तरण जिहाज ठै, ज्वयजीवनें उतरै  
 पार ॥ केवलज्ञान उपायनें, सुख पाम्या श्रीकार ॥ सा० प्रा० सं०  
 ॥ ३२ ॥ मोह निवारी प्राणी समज्जनें, निरमल ज्ञावना ज्ञाव ॥  
 ठएजणा थोमा कालमें, सुगति विराज्या जाय ॥ सा० प्रा० स० ॥  
 ॥ ३३ ॥ राजा सहित राणी कमलावती, जृगुपुरोहित जसा नार ॥  
 जृगुप्रोहितना दीव ढीकरा, शिवसुख पाम्यो सार ॥ सां० प्रा० स०  
 ॥ ३४ ॥ इति इखुकार राजा जृगुप्रोहित अधिकार सपूर्ण ॥

॥ अथ दान शील तप भाव चोढालियो लिख्यते ॥

॥ इहा ॥ प्रथम जिनेसर पाय नमी, पामी सुगुरु प्रशाद ॥ दान  
 शील तप ज्ञावना, बोलिस बहु सवाद ॥ १ ॥ वीरजिनद समोसरथा  
 राजगृही उद्यान ॥ समवसरण ठेवें रुच्यो, वैठा-श्रोवर्द्धमान ॥ २ ॥

बैठी वारै परखदा, सुणवा जिणवर वाण, दान कहे प्रभु हुं वनो,  
 मुऊने प्रथम वखाण ॥ ३ ॥ सांजलजो सहुको तुमें, कुण वै मुऊ  
 समान ॥ अरिहंत दीक्षा अवसरे, आपे पहिलुं दान ॥ ४ ॥  
 प्रथम पहुर दातारनो, ले सहु कोइ नाम ॥ दीघारी देवल चढै,  
 सीधै वंजित काम ॥ ५ ॥ तीर्थकरनें पारणे, कुण करस्यै मुऊ  
 होरु ॥ वृष्टि करुं सोनातणी, साढीवारै कोमि ॥ ६ ॥ हुं जग  
 सगलो वस करुं, मुऊ मोटी वै वात ॥ कुणरं दानथकी तिरथा,  
 ते सुणज्यो अवदात ॥ ७ ॥ ॥ ढाल ॥ १ ॥ ललनाकी देशी ॥  
 घनसारथवाह साधुनें, दीधुं घृतनो दान ललना ॥ तीर्थकर पद में  
 दियो, तिणें मुऊनें अजिमान ललना ॥ १ ॥ दान कहै जग हुं  
 वनो, मुऊ सरिखुं नहि कोय ललना ॥ ऋद्धि समृद्धि सुख संपदा,  
 दाने झोलत होय ललना ॥ दा० ॥ २ ॥ सुमुख नाम गाथापती,  
 पन्डिताज्यो अणगार ललना ॥ कुमर सुवाहुं सुख लहै, ते तो मुऊ  
 जपगार ललना ॥ दा० ॥ ३ ॥ मासखमणनें पारणे, पन्डिताज्यो  
 कृपिराय ललना ॥ शालिज्जइ सुख जोगवै, दानतणें सुपंसाय ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ४ ॥ पाचसें मुनिनें पारणो, देतो वोहरी आण  
 ललना ॥ जरत थयो चक्रवर्त्ति जलो, ते पण मुऊ फल जाण ल-  
 लना ॥ दा० ॥ ५ ॥ आप्या उरुदना बाकला, उत्तम पात्र विशेष  
 ललना ॥ मूलदेव राजा थयो, दानतणा फल देख ललना ॥ दा० ॥  
 ॥ ६ ॥ प्रथम जिनेश्वर पारणें, श्रीश्रेयांशकुमार ललना ॥ सेलनी-  
 रस वहरावियो, पाम्थो जवनो पार ललना ॥ दा० ॥ ७ ॥ चंद-  
 नवाला बाकुला, पन्डिताज्या महावीर ललना ॥ पंचदिव्य परगट  
 थया, सुंदर रूप शरीर ललना ॥ दा० ॥ ८ ॥ पूरव जव  
 पारेवहुं, शरणें राख्यूं सूर ललना ॥ तीर्थकर चक्रव-  
 र्त्तिपणें, प्रगटयो पुन्य पनूर ललना ॥ दा० ॥ ९ ॥ गजजव शिशलो

राखीयो, करुणा कीधी सार ललना ॥ श्रेणिकने घर अ  
 वतरयो, अंगज मेघकुमार ललना ॥ दा० १० ॥ इम अनेक में  
 ऊपरया, कहता नावे पार ललना ॥ समयसुदर प्रभु वीरजी, मुऊ  
 पहिलो अधिकार ललना ॥ ॥ दोहा ॥ शील कहे सुण दा-  
 न तु, किस्यो करै अहंकार ॥ आरुबर आठै पहुर, याचकसु विव-  
 हार ॥ १ ॥ अतराय वलि ताहरै, जोगकरम ससार ॥ जिनवर  
 कर नीचो करै, तुऊने पनो धिकार ॥ २ ॥ गर्व म कर रे दान  
 तू, मुऊ पूठै सऊ कोय ॥ चाकर चलै आगले, तो स्यु राजा  
 होय ॥ ३ ॥ जिनमदिर सोनातणो, नवो निपावे कोय ॥ सोवन कोटी  
 दानदिये, शील समो नहि कोय ॥ ४ ॥ शीले सफट सऊ टले,  
 शीले जश शोजाग ॥ शीलेसुर सानिध छरे, शील वनो वेराग ॥ ५ ॥  
 शीलै सर्प न आज्ञरै, शीले शीतल आग ॥ शीलै अरिकरी केसरी,  
 जय जावै सब जाग ॥ ६ ॥ जनम मरणना जय थकी, में गोरु  
 व्या अनेक ॥ नाम कहू हिव तेहना, साजलजो सुविवेक ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ ॥ पासजिनंद जुहारिये ॥ ए देशी ॥ शील कहे  
 जग हू वनो, मुऊ वात सुणो आत मीठी रे ॥ लालच लावै लो  
 कने, में दानतणी वात दीठी रे ॥ शी० १ ॥ कलह कारण जग  
 जाणीयें, वलि विरती नही पण काई रे ॥ ते मारद में सीऊव्या,  
 मुऊ जुठ ए अधिकार रे ॥ शी० २ ॥ वाहे पहिरया वैरखा, श  
 खराजा दूपण दीधो रे ॥ काप्यो हाथ कलावती, ते में नवपल्लव  
 कीधो रे ॥ शी० ३ ॥ रावणघर शीतां रही, तो रामचडै घर आणी  
 रे ॥ शीतानो कलक उतारीयो, में पावक कीधूं पाणी रे ॥ शी०  
 ४ ॥ चपावार उघानिया, वली चलणियें काढ्यु नीरो रे ॥ सतीय  
 सुजद्रा जस अयो, में तसु कीधी जरीरो रे ॥ शी० ५ ॥ राजा मा-  
 रण मानीयां, गणी अजयायें दूपण दाख्या रे ॥ गृही सिंहासन

में क्रियो, में श्रेष्ठ सुदर्शन राख्यो रे ॥ शी० ६ ॥ शील सत्राह  
 मंत्रीसरे, आवता अरिदल अंज्यो रे ॥ तिद्धा पिण सानिय में करो,  
 वली धर्म काज आरंभ्यो रे ॥ शी० ७ ॥ पहिरण चोर प्रगट  
 क्रिया, में अगत्तरतो चारो रे ॥ पान्धवनारी झोपडी, में राखी मा-  
 म उगरो रे ॥ शी० ८ ॥ ब्राह्मी चंदनवालिका, बलि शीलवती  
 दवदंती रे ॥ चेम्पानी साते सुत, राजोमती सुदर कुंती रे ॥ शी०  
 ९ ॥ इत्यादिक में ऊधरया, नर नारीना वृंदो रे ॥ समयसुदर प्र  
 ङ्गु वीरजी, पहिछे मुज आलंदो रे ॥ शी० १० ॥ ॥ दूहा ॥  
 तप बोळसो ब्रटकी करी, दानने तूं अवहील, पिण मुज आगल तुं  
 किसुं, साजल रे तूं शील ॥ १ ॥ सरसा जोजन तें तज्या, जगमें  
 मीग नाव ॥ देहतणी शोजा तजी, तुज्जमा किस्वो सवाट ॥ २ ॥  
 नारी थकी मरतो रहे, कायर किस्थुं वखाण, कूरु कपट बहु के  
 लवी, जिम तिज राखे प्राण ॥ ३ ॥ को विरलो तुज आदरै, वनी  
 सहु संसार ॥ आप एक तू जाजतो, वाजा जाजै चार ॥ ४ ॥ क  
 रम निकाचित तोरवा, जाजु जवजय जीम ॥ अरिहत मुजने  
 आदरै, वरस वम्मासी सीम ॥ ५ ॥ रुचक नदीसर ऊपरै, मुज  
 लवधै मुनि जाय ॥ चैत्य जुहारै शाश्वना, आनंद अग न माय ॥  
 ६ ॥ मोटा जोयण लाखना, लघु कुंश्रु आकार ॥ हय गय रथ पा  
 यरुतणा, रूप करै अणगार ॥ ७ ॥ मुज कर फरसै उपशमें, कु  
 ष्टादिकना रोग ॥ लडिय अठवीस ऊपजै, उत्तम तप सजोग ॥ ८ ॥  
 जे में तारया ते कहूं, सुणजो मन उज्जास ॥ चमत्कार चित पाम  
 सो, देशो मुज सावात ॥ ९ ॥ ॥ ढाल ३ ॥ नणदलरी दे  
 शी ॥ दृढप्रहार अति पापीयो, इत्या कोधी चार हो सुंदर ॥ ते  
 पिण तिण जव ऊधरयो, मूक्यो मुगति मजार हो सुंदर ॥ १ ॥  
 तप ११ ॥ जो नही, तप करै कर्मनूं सूदु हो सुंदर ॥ तप

करवूं अति दोहिलूं, तपमां नही को कून हो सुंदर ॥ त० २ ॥  
 सात माणस नित मारतो, करतो पाप अघोर हो सुंदर ॥ अर्जुन  
 माली में ऊधरयो, ठेया कर्म कठोर हो सुंदर ॥ त० ३ ॥ नदिपे  
 णनें में कियो, स्त्रीवल्लभ वसुदेव हो सुंदर ॥ बहुतर सदस अतेजरी,  
 सुख जोगवे नित्यमेव हो सुंदर ॥ त० ४ ॥ रूप कुरूप कालो घ  
 णो, हरिकेशी चंमाल हो सुंदर ॥ सुरनर कोमी सेवा करै, ते में  
 कीधी चाल हो सुंदर ॥ तप० ५ ॥ विष्णुकुमर लवधे कियुं, ला  
 ख योजननो रूप हो सुंदर ॥ श्रीसंघ केरे कारणे, ए मुऊ शक्ति  
 अनूप हो सुंदर ॥ त० ६ ॥ अष्टापद गौतम चढ्या, वाद्या जिन  
 चोवीस हो सुंदर ॥ तापस पिण प्रतिवूज्यो, तिण मुऊ अधिक  
 जगीस हो सुंदर ॥ त० ७ ॥ चौद सदस अणगारमा, श्रीधनो अ  
 णगार हो सुंदर ॥ वीर जिणंद बखाणीयो, ए पण मुऊ अधिकार  
 हो सुंदर ॥ त० ८ ॥ कृष्ण नरेसर आगलै, उकरकारक एह हो सुं  
 दर ॥ ढंढण नेम प्रसंसीयो, मुऊ महिमा सवि तेह हो सुंदर ॥ त०  
 ९ ॥ नदिपेण विहरण गयो, गणिका कीती हास हो सुंदर ॥ वृष्टिकरी सोव  
 नतणी, में तसु पूरी आस हो सुंदर ॥ त० १० ॥ इम वलज्जद्रप्रमुख  
 घहू, तारया तपसी जीव हो सुंदर ॥ समयसुंदर प्रजु वीरजी,  
 पहिलो मुऊ प्रस्ताव हो सुंदर ॥ त० ११ ॥ दूहा ॥ जाव कहै  
 तप तूं किंसुं, ठेरुंयुं करै कपाय ॥ पूर्वकोमी जो तप तपै, कणमां  
 खैरूं थाय ॥ १ ॥ खयक आचारज प्रतें, तें वाढ्यो सवि देश ॥  
 अशुज नियाणो तूं करै, कमा नही लवलेश ॥ २ ॥ द्वीपायन  
 ऋषि दूहव्या; सांव प्रद्युम्न सनाह ॥ तें तव क्रोध करी तिहा, किधो  
 चारिका दाह ॥ ३ ॥ दान शील तप सांजलो, म करो ऊठ गुमान ॥  
 लोक सहूको साख दे, धर्म जाव प्रधान ॥ ४ ॥ आप नपूसक ठो  
 त्रिण्दे, ये व्याकरणी साख ॥ काम सरै नदि कोइतुं, जाव जणे में

पाख ॥५॥ रस विन कनक न नीपजै, जल विन तस्त्रर वृद्ध ॥ रस-  
 वतिरस नही लवण विण, तिम मुज विण नही सिद्ध ॥६॥ मंत्र यंत्र  
 मणि औषधी, देवधर्मगुरु सेव ॥ जाव विना ते सवि वृथा, जाव फलै  
 नितमेव ॥७॥ दान शिल तप जे तुमें, विधरकह्या वृत्तांत ॥ तिहां जो  
 जाव न हुततो, कोई सिद्धी नव हुंत ॥ ८ ॥ जाव कहे में एकले,  
 तारथा बहु नर नार ॥ सावधान अइ सांजलो, नाम कहूं निरधार ॥९॥  
 ( दाल चौथी ॥ कपूर हुवै अति उजलो रे, एवेशी ) ॥ काननमें का  
 उसग रह्यो रे, प्रश्नचंद रुषिराय ॥ ते मे कीधो केवली रे, तत-  
 खिण करम खपाय ॥ १ ॥ सोजागी सुंदर, जाव वनो संसार ॥  
 एतो बीजो मुज परिवार, सौ० ॥ दानादिक विण एकलो रे,  
 पोहचाहुं जवपार ॥ सो० २ ॥ वंश ऊपर चढ खेलतो रे, एला-  
 पूत्र अपार ॥ केवलज्ञानी में कियो रे, प्रतिबोध्यो परिवार ॥ सो०  
 ३ ॥ झूख तृषा खमें अतिघणी रे, करतो कूर आहार ॥ केवल  
 महिमा सुर करै रे, कूरगडू अणगार ॥ सो० ४ ॥ लाजथी लोज  
 वाधे घणो रे, आयो मन वैराग ॥ कपिल अयो मुनि केवली रे,  
 ते मुजनें सोजाग ॥ सो० ५ ॥ अर्णिकासुत गच्चनो धणी रे,  
 खीणजंघा वलि जाण, कीधो अंतगरु केवली रे, गंगाजल गुण  
 खाण ॥ सो० ६ ॥ पनरेसे तापसजणी रे, दीधी गौतम दिस्क ॥  
 ततखिण कीधा केवली रे, जो मुज मांती सीख ॥ सो० ७ ॥  
 पालक पापीये पीलीया रे, खंधकसूरीना शिष ॥ जनममरणथी  
 ठोरुव्या रे, आपे मुज आशीष ॥ सो० ८ ॥ चंरुइने चालतारे,  
 दीधो दंरु प्रहार ॥ नवदीक्षित अयो केवली रे, ते गुरु पिण तेणी  
 वार ॥ सो० ९ ॥ धनरथकारक साधुनें रे, पनिलाच्यो उलास ॥  
 मृगलो जावना जावतो रे, पोहतो स्वर्ग आवास ॥ सो० १० ॥  
 निज अपराध खमावती रे, मूक्यो मनथी मान ॥ मृगावतीनें



मं दिव्युं रे, निर्मल केवलज्ञान ॥ सो० ११ ॥ मन्देवी गज ऊपर  
 रे, देखी पूत्रनी रुद्रि ॥ मुजने मनमाडे धरचोरे, ततखिण पामी  
 सिद्ध ॥ सो० १२ ॥ वीर वदन चाळ्यो मारगे रे, चाप्यो चपल  
 तुरग ॥ दर्डुर नामे देवता रे, तेह घयो मुज सग ॥ सो० ॥ १३ ॥  
 प्रजु पाय पूजन नीसरी रे, दुर्गला नामे नार ॥ कालधर्म विचमा  
 करी रे, पोहती स्वर्ग मजार ॥ सो० ॥ १४ ॥ फायानी शोजा  
 कारमी रे, रूप किसुं अजिमान ॥ जरत आरोसाजुवनमां रे ॥  
 पाम्यो केवलज्ञान ॥ सो० ॥ १५ ॥ आषाढजूति फलानिलो रे, प्र  
 गव्यो जरतसरूप ॥ नाटक करता पामिषो रे, केवल ज्ञान अनूप  
 ॥ सो० ॥ १६ ॥ दीक्षादिन छात्रसग रह्यो रे, गजसुकमाल म-  
 साण ॥ सोमल शीस प्रजालीयो रे, सिद्धि गयो शुज जाण ॥ सो०  
 ॥ १७ ॥ गुणसागर घयो केवली रे, साजल पृथ्वीचढ ॥ पोते  
 केवल पामियो रे, सेव करै सुर इद ॥ सो० ॥ १८ ॥ इम अनेक  
 में ऊधर्या रे, मूम्या शिवपुरवांस ॥ समयसुंदर प्रजु वीरजी रे,  
 मुजने प्रथम प्रकास ॥ सो० ॥ १९ ॥ ॥ दूहा ॥ वीर  
 कहै तुमें साजलो, दान शील तप जाव ॥ निदा ठे अति पापणी,  
 धर्म कर्म प्रस्ताव ॥ १ ॥ परनिंदा करता थका, पापे पिरु जरा-  
 य ॥ वेढारानु वाधै घणी, दुर्गति प्राणी जाव ॥ २ ॥ निदक स-  
 रिखो पापीयो, जूनो कोइय न दिव ॥ बलि चंमाल समो कह्यो,  
 निदक वदन अदिठ ॥ ३ ॥ आदि प्रशसा आपणी, करतो इंद  
 नरिंद ॥ लघुता पामे लोकमां, नासै निजगुण वृद्ध ॥ ४ ॥ को  
 केहनी म करो तुम्हे, निदाने अहकार ॥ आप आपणें ठामे रहो,  
 सहुको जलो संसार ॥ ५ ॥ तोपणें अधको जाव ठे, एकाकी  
 समरत्थ ॥ दान शील तप त्रिणें जला, पण जाव विना अकयष्ट  
 ॥ ६ ॥ अजन असै आंजता, अधिको आपो रेख ॥ रजमाडे

तज काढतां, अधिको ज्ञाव विशेष ॥ ७ ॥ जगवंत हठ जंजण  
 जणी, चारे सम्मान गणंत ॥ चार करी मुख आपणा, चउ विध  
 धर्म जणंत ॥ ८ ॥ ॥ ढाल ए मी ॥ वीर जिणेसर  
 इम जणे रे, वैठी परखदा वार, धर्म करो तुमें प्राणिया रे, जिम  
 पामो जव पार रे ॥ धर्म हीये धरो ॥ १ ॥ धर्मना चार प्रकारो रे,  
 जवियण सांजलो ॥ धर्म मुक्ति सुखकारो रे ॥ धर्म० ॥ धर्मथकी  
 धन संपजै रे, धर्मथकी सुख होय, धर्मथकी आरति टले रे, धर्म  
 समो नहि कोय रे ॥ ध० ॥ २ ॥ दुर्गति परुतां प्राणिया रे, राखै  
 श्रीजिनधर्म ॥ कुटंब सहुको कारमो रे, मति जूवो जवि जर्म रे ॥  
 ॥ ध० ॥ ३ ॥ जीव जिके सुखिआ हूआ रे, वलि होसे वै जेह ॥  
 ते जिनवरना धर्मथी रे, झत कोई करो संदेह रे ॥ धर्म० ॥ ४ ॥  
 सोलेसे वासठ समे रे, सांगावेर मजार, प्रद्यप्रजु सुपसाजले रे,  
 एह जणयो अधिकारो रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ सोहमसामी परंपरा रे,  
 खरतर गज कुलचंद ॥ युगप्रधान जग परगमो रे, श्रीजिनचंद मु-  
 नीद रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ तास शिष्य अति दीपतो रे, विनयवंत ज-  
 सवंत ॥ आचारज चढती कला रे, जिनसिंह सूरि महत रे ॥ ध० ॥  
 ॥ ७ ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूज्यना रे, सकलचद तस शीस ॥ स-  
 मयसुंदर वचक जणे रे, सध सदा सुजगीस रे ॥ ध० ॥ ८ ॥  
 दान शीयल तप ज्ञावना रे, सरस रच्यो संवाद ॥ जणतां गुणतां  
 ज्ञावसुं रे, ऊँच समृद्धि सुप्रसाद रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ इति दान शील  
 तप ज्ञाव चोढालिया संपूर्ण ॥

॥ अथ महावीरस्वामीको छंद लिख्यते ॥

सेवो वीरनें चित्तमा नित्य धारो, अरि क्रोधनें मन्त्रथी दूर  
 वारो ॥ सतोपवृत्ती धरो चित्तमाही, राग द्वेषथी दूर थाउं जडाही ॥  
 ॥ १ ॥ पड्या

जाणी ॥ मनुजन्म पामी वृथा कां गमो वां, जैनमार्ग ठमी जुलां  
 का जमो वो ॥ २ ॥ अलोत्ती अमानी निरागी तजो वो, सलोत्ती  
 समानी सरागी जजो वो ॥ हरि हरादि अन्यथी सुं रसो वो, नदीगंग  
 मुकी गलीमां पमो वो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि चक्रधारा, केइ  
 देव घाले गले रुंममाला ॥ केइ देव नत्सगे राखेठे वामां, केइ  
 देव साथे रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ  
 मास जकी माहा विकराला, केइ योगणी जोगिणी जोग मागे,  
 केइ रुद्रणी भागनो जोग मागे ॥ ५ ॥ इसा देव देवी तणी आश रां  
 खै, सदा मुक्तिने सुखने केम चाखे ॥ ६ ॥ जदा लोत्तना थोकनो पारं  
 नाव्यो, तदा मधनो विंडुठ मन जाव्यो ॥ ६ ॥ जे देवलां आपणीं  
 आस राखे, तेह पिंनने मन्नसुं लेअ चाखे ॥ ७ ॥ हीन हीननी जीन  
 ते केम जाजे, फूटो टोल होवे कहो केम वाजे ॥ ८ ॥ अरे मूढ  
 भ्राता जजो मोहदाता, अलोत्ती प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ ९ ॥  
 लचितामणी सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिरसुं मत  
 राचो ॥ १० ॥ मंदबुदि जेह प्राणी कहेठे, सवि धर्म एकत्व जूलो  
 जमेठे ॥ किहा सर्षवाने किहा मेरुधीर, किहा कायराने किहा शू-  
 रवीरं ॥ ११ ॥ किहा स्वर्णथाळं किहा कुंजखंमं ॥ किहा कोड्गान  
 किहा क्षीरमं ॥ किहा क्षीरसिधु किहा क्षारनीर, किहां कामधेनु  
 किहा गंगखीरं ॥ १२ ॥ किहा सत्यवाचा किहा कूमवाणी, किहां  
 रकनारी किहा रायराणी ॥ किहा नारकीने किहा देवजोगी, किहा  
 इंद्रदेही किहां कुष्ठरोगी ॥ १३ ॥ किहा कर्म घाती किहा कर्म  
 धारी, नमो वीरस्वामी जजो अन्य वारी ॥ जिती सेजमां स्वप्न-  
 थी राज्य पामी, राचे मंदबुदो धरी जेह स्वामी ॥ १४ ॥ अग्रि  
 सुं क तसारमां मन्न माचे, जना मूढमा श्रेष्ठसुं इष्ट वाजे ॥ तजो  
 मोह माया हरो दंज रोसो, सजो पुण्य पोस्ती जजो ते अरोसो

॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आख्या आस घारी प्रजु  
 पाय स्वामी ॥ तूहीर तुही प्रजु परमरागी, जवफेरनी शृंखला मोह  
 जागी ॥ १४ ॥ मानीये वीरजो ठै एक अर्ज मोरी, दीजै दासकूं  
 सेवना चरण तोरी ॥ पुन्य उदय हुआ गुरु आज मेरो, विवेकें  
 लह्यो में प्रजु दर्श तेरो ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारका छंद लिख्यते ॥

॥ दूहा ॥ बंघित पूरे विविधंपर, श्रीजिनसासन' सार ॥  
 निश्रे श्रीनवकार नित, जंपतां जैजकार ॥ १ ॥ अरुसठ अकर  
 अधिक फल, नवपद नवेनिधान ॥ वीतराग सैमुख वदे, पंच  
 परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अकर एक चित्त, संमरचा संपति  
 थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पुलाय ॥ ३ ॥ सक्र  
 मंत्र सिर मुकटमणि, संदगुरु ज्ञापित सार, साजविधां मन शुद्धमें,  
 नित्त जपिये नवकार ॥ ४ ॥ ( उंद हाटकी ) नवकार अर्ज  
 श्रीपाल नरेसर पाम्यो राज्य प्रसिद्ध, समसान विषे शिवे नाम कु  
 मरने सोवनपुरुषो सिद्ध ॥ नवलाख जपतां नरक निवारै, पामे ज  
 वनो पार ॥ सो जविधां जत्ते चोखे चित्ते नित्त जपिये नवकार ॥ ५ ॥  
 ॥ बाधी वरुसाखा ठीके बैसी हेठल कुंरुहुताश, तदहने वदि मं  
 त्र समर्प्यो श्रावक उच्चो तेह आकाश ॥ विधि रीते जेप्या विद  
 धर विष टालेढाले अमृतधार ॥ सो ० ६ ॥ वीजोरा काण्य गय मडा  
 बल व्यतर छुष्ट विरोध, जेणें नवकारें हत्या टांली पाम्यो यक्र  
 निबोध ॥ नवलाख जपता आयै जिनवर ऐह्यो ते अघिकार  
 सो ० ७ ॥ पल्लीपति सीखरो मुनिवर पासें मडामंत्र मन  
 परजव ते राजसिद्ध पृथ्वीपति पाम्यो परधव सिद्ध ॥ ए  
 अमरापुर पुहुतो चारुदत्त ॥ सो ० ८ ॥ संन्या  
 तप साधतो पंचाभि ५

ते टाले ॥ संज्ञलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख 'इञ्जुवन' अंतार ॥  
 सो० ए ॥ मनशुद्धे जपता मयणासुंदरि पामी प्रिय संजोग, इण  
 ध्याने कुष्ट टड्युं उवरनु रगतपित्तनो रोग ॥ निश्रेसुं जपतां नव-  
 निधि थायै वर्मतणो आधर ॥ सो० १० ॥ घटमाहे कृष्णजुगम  
 घाट्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रजावे हारफूलनो, वसुधा-  
 माहि विहात ॥ कमलावतिये पिगल कीधो पापतणो परिहार ॥  
 सो० ११ ॥ गयणागण जाती राखी गिहणी पामो वाण प्रहार,  
 पद पच सुपांता पामुपतघर ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख  
 महिमा मदिर जवडुख जजणहार ॥ सो० १२ ॥ कंबल ने संवल  
 कादव काट्या सकट पाचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके  
 विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रथकी संपति वसुधामा लही विलसे  
 जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वार  
 अनत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम ज्ञाखै जगवंत ॥  
 पूरवदिसि चारै आदि प्रपचे समरथा संपति सार ॥ सो० १४ ॥  
 परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुमरगिरि ऊपर  
 प्रत्यक्ष पेढ्यो मणिघर नें इक मोर ॥ सहगुरु सन्मुख विधियें  
 समरंता सफल जनम ससार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोंपण तस्कर  
 कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहा सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो अ-  
 मरनी रुद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहार  
 ॥ सो० १६ ॥ पच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पंच  
 सिझाय महाव्रत पचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तजो  
 पंचह पालो पंचाचार ॥ सो० १७ ॥ ( कलश ॥ वृष्य ) नित्य  
 जपिये नवकार सार सपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो  
 एम जपे जगनायक ॥ श्रीप्ररिहत सुसिद्ध सुह आचार्य जणीजै,  
 श्रीनवज्ञाय सुसाधु पंच परमेष्टि शुणीजै ॥ नवकार सार संसार

वै कुशल लाज वाचक कहै, एक चितै आराधता रुदिसिद्धि वंशिते  
लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नोसाणो लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥  
जाकी ठवि काति अनोपम उषित, दीपत जाण दिनंदा हे ॥ मुख-  
ज्योति जिगामिग जिगमग२ पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप मरूप  
वखाणाहि नूपत, तूंही त्रिज्जुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर  
लोक सबे मिल, जाका जस्त शुणदा है ॥ तेरी खिजमच करे  
इकचित्तसु तो सेवक धरणिदा हे ॥ ते जलता आगनिकाट्या नाग,  
किया वरुजाग सुरिदा हे ॥ तो चरणा आय रह्या लपटाय, कला  
अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पचाग्नि,  
ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी दुद्धाधारी, अद्वप अहार  
खियंदा हे ॥ सब ज्ञेप सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावदा  
हे ॥ दिसि च्यारा दिठी बले अगीठी, सूरज ताप तपंदा हे ॥ ३ ॥  
महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकूं आय नमंदा हे ॥ एसी सुण  
वत्तां धरिय उरुत्ता, पुत्ता पास जिनंदा हे ॥ वामादे अरुंके कुण तो  
परके, मेरा हुंस पूरंदा हे ॥ तिहा चालो पुत्ता जिहां अवयुत्ता, जो  
गारंज जगंदा हे ॥ ४ ॥ जननी मन आसा पूरण पासा, औरापति  
सऊदा हे ॥ गल घूग्घरमाला जाण हेमाला, दंताला नूपदा हे ॥  
वर वीर घटाला मद मतवाला, जोलाली जलकदा हे ॥ ५ ॥  
पंचरंगी परकर सजी सरकर, ढालासु ढलकंदा हे ॥ धतकारे धत्ता मत्ता  
अकुस, मावत शीस दियदा हे ॥ गंगातट आये खमे रहाए, प्रज्जु  
ज्ञानी आस्कदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अज्जिमानो तप अज्ञानी, पांवक  
जीव जलंदा हे ॥ तिहा फारु डुफारु दिखाले लक्कम, वरु फग्घर  
नागंदा हे ॥ नुक्कर मुणाया सुरपद पाया, तापस जम घटदा हे ॥

ते टाले ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयमुख इन्द्रुवन अंतार ॥  
 सो० ए ॥ मनशुद्धे जपतां मयणासुदरि पामी प्रिय सजोग, इण  
 ध्याने रुष्ट टड्यु उबरनु रगतपित्तनो रोग ॥ निश्चेसुं जपता नव-  
 निधि आयै धर्मतणो आधार ॥ सो० १० ॥ घटमाहे कृष्णजुजगम  
 घाल्यो घरणी करवा घात, परमेष्टि प्रजावे द्वारफूलनो, वसुधा  
 माहि विक्रात ॥ कमलावतिये पिगल कीधो पापतणो परिहार ॥  
 सो० ११ ॥ गयणागण जाती राखी गिहणी पामी वाण प्रहार,  
 पद पच सुणता पामुपतघर ते अइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमोलख  
 महिमा मंदिर जवडुख जंजणाहार ॥ सो० १२ ॥ कंवल ने तरु  
 कादव कादया सकट पाचसें माल, दीधे नवकारे गया देवलोके  
 विलसे अमरविमान ॥ ए मंत्रधकी संपत्ति वसुधामां लही विलसै  
 जैनविहार, सो० १३ ॥ आगे चोवीसी हुइ अनंती होसे वा  
 अनत, नवकारतणी कोई आद न जाणै, इम जाखै जगवंत ।  
 पुरवदिसि चारै आदि प्रपचे समरथा संपत्ति सार ॥ सो० १४ ।  
 परमेष्टी सुरपद ते पिण पामे जे कृत कर्म कठोर, पुंनरगिरि ऊप  
 प्रत्यक्ष पेख्यो मणिघर नें इक मोर ॥ सहगुरु सन्मुख विधि  
 समरंता सफल जनम ससार ॥ सो० १५ ॥ सूली आरोपण तस्क  
 कीधो लोहखरो परसिद्ध, तिहा सेठे नवकार सुणाव्यो पाम्यो उ  
 मरनी रुद्धि ॥ सेठने घर आवी विघ्न निवारयो सुरें करी मनुहा  
 ॥ सो० १६ ॥ पंच परमेष्टी ज्ञानज पंचह पंच दान चारित्र, पं  
 सिज्ञाय महाव्रत पचहुं पंचसमति समकित्त, पंच प्रमाद विषय तं  
 पंचह पाजो पचाचार ॥ सो० १७ ॥ ( कलश ॥ उप्पय ) नि  
 जपियै नवकार सार सपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्व  
 एम जपे जगनायक ॥ श्रीअरिहत सुसिद्ध सुठ आचार्य जणी  
 श्रीनवज्ञाय सुसाधु पंच परमेष्टि शुणीजे ॥ नवकार सार संस

वै कुशल लान्न वाचक कहै, एक चित्तै आराधता रुदिसिद्धिबंधिते  
लहै ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ घग्घर नीसाणो लिख्यते ॥

सुख संपति दायक सुरनरनायक, परतिख पासजिनंदा हे ॥  
जाकी ठवि काति अनोपम उपित, दीपत जाण दिनदा हे ॥ मुख-  
ज्योति जिगामिग जिगमग२ पूरण पूनमचंदा हे ॥ सब रूप सरूप  
वखाणाहि नूपत, तूंही त्रिभुवन नंदा हे ॥ १ ॥ करुणासागर  
लोक सबे मिल, जाका जस्त धुणदा है ॥ तेरी खिजमत्त करे  
इकचित्तसुं तो सेवक धरणिदा हे ॥ ते जलता आगनिकाढ्या नाग,  
किया वरुजाग सुरिदा हे ॥ तो चरणा आय रह्या लपटाय, कला  
अति केलि करंदा हे ॥ २ ॥ इक दिन्न महा रन वन पंचागनि,  
ताप सताप तपंदा हे ॥ फल फूल आहारी उद्धाधारी, अटप अहार  
लिपंदा हे ॥ सब ज्ञेय सन्यासी रहे उदासी, अविनासी ध्यावंदा  
हे ॥ दिसि च्यारा दिठी बले अगीठी, सूरज ताप तपदा हे ॥ ३ ॥  
महिमा वद्धारी सब नर नारी, जाकू आय नमंदा हे ॥ एसी सुण  
वत्तां धरिय उकत्तां, पुत्ता पास जिनंदा हे ॥ वामादे अस्कें कुण तो  
परके, मेरा हूंस पूरदा हे ॥ तिहा चालो पुत्ता जिहा अवधुत्ता, जो  
गारज्ज जगंदा हे ॥ ४ ॥ जननी मन आसा पूरण पासा, औरापत्ति  
सऊदा हे ॥ गल घूग्घरमाला जाण हेमाला, दत्ताला उपंदा हे ॥  
वर वीर घंटाळा मद मतवाला, जोलालो ऊजकदा हे ॥ ५ ॥  
पंचरंगी परकर सजी सरकर, ढालासुढलकंदा हे ॥ धतरारे धत्ता मत्ता  
अकुस्त, मावत शीस दियदा हे ॥ गगातट आये खंने रहाए, प्रभु  
ज्ञानी आस्कदा हे ॥ ६ ॥ रे रे अजिमानो तप अज्ञानी, पावक  
जीव जलंदा हे ॥ तिहा फामं उफाम दिखाले लकूम, वरु फग्घर  
नागंदा हे ॥ नवकार सुणाव्या सुरपद पाया, तापस जम घट्टा हे ॥





माना, पावां आय लगंदा हे ॥ १४ ॥ फलनाग हजारां कर विस  
 तारा उत्तर ज्यू ठावदा हे ॥ ले आपण खये प्रेम निबंधे, पूरव  
 प्रीत सुखंदा हे ॥ इंझाणीनारी सब सिणगारी, जोवन अंग जिल  
 कंदा हे ॥ १५ ॥ राकापति वयणी मिरगानयणा, सुंदर रूप सो  
 हंडा हे ॥ अणियात्ता कज्जात जलके विज्जात, खूब वणाव वणदा  
 हे ॥ नकवेसर नट्यां लात सुकट्या, विच मोती जलकंदा हे ॥ नटण  
 पाटंवर जीणी अंवर, आन्नूपण जलकंदा हे ॥ १६ ॥ उर कंचु क  
 लिया तन उल्लसिया, कामघटा गहरंदा हे ॥ पहिरण तन खूवा  
 हरिया दूवा, सोलेही सोहंदा हे ॥ कटिमेखल कनिया सोने जनि  
 या, हीरा बीच हलकंदा हे ॥ १७ ॥ घमके घूरियां पाए धरियां,  
 पग नेवर रणकदा हे ॥ ले जाऊर ताला ताल कसाला, पस्कावज  
 वाजंदा हे ॥ कुहके करनाला बीच रसाला, जगी टोल घुरंदा हे ॥  
 वाजे सरणाई सखरी घाई, नगारा रोमंदा हे ॥ १८ ॥ पउमा वै  
 रुष्टा आण बलष्टां, नाटिक मिल नाचंदा हे ॥ तत्ताथेइ२ तान त  
 रंदा, रस जेद र्मदा हे ॥ दिन तीन वितीता तोहि न वीता, पा  
 वस जल पमरंदा हे ॥ १९ ॥ धरणीधर जाण्या ग्यान पिठाण्या,  
 कमठासुर कोपंदा हे ॥ नागादी पत्तो आख्या रत्ती, किर्ती रीस  
 आवंदा हे ॥ रे मुठा धिठा चित्त विणठा, क्यू नाही समजंदा हे ॥  
 साहिव बलवता जोर अनता, तू तो नहि जाणदा हे ॥ २० ॥ ए  
 क्कमासागर गुणके आगर, तीनूं लोक नमदा हे ॥ असमान खमाई  
 रीस जराई, हिक्काऽ बजरदा हे ॥ किर्ती बहु गळ्या पनै दहळां,  
 धरुधरु देह धूजंदा हे ॥ धरणांद्र मराया तव ते आया, पावा आय  
 लगंदा हे ॥ २१ ॥ कर जोमि खमाया सीस नमाया, जगनायक  
 जिनचंदा हे ॥ तूं साहिव सच्चा तो गुण रच्चा, मेरा दिल खुलंदा  
 हे ॥ तें रीस न धरिया क्षिणही विरिया, तूंही अचल गिरंदा हे ॥

कमठासुर किन्ती बहु विनती, निज अपराध खमंदा हे ॥ ११ ॥  
 सुरपती सिधाये निजघर आये, प्रचुके गुण समरंदा हे ॥ सुध सं  
 जम पावे दोष निहाले, तव केवल उपजदा हे ॥ सम्भेतशिखर पर  
 चढकै ऊपर, सिद्धपुरी पोहचदा हे ॥ तेरी कीरती जग ऊपती, पार  
 न को पावदा हे ॥ १३ ॥ तूं सच्चा रस्के जेद परस्के, गुमानी मो  
 रुदा हे ॥ तूं अंतरजामी तूं बहुनामी, सुरनर सेव करंदा हे ॥ तूं  
 दीवाणा तूं खूमाणा, तूं मोजी मकरंदा हे ॥ तूं अछ्वा पीर फकीर  
 मुसाफर, तूं जोगी तूं जिंदा हे ॥ २४ ॥ तूं काजी मुह्लां मरद अ  
 टह्लां, तूंही शेष फरीदा हे ॥ तेंही ऊपाया धदे लाया, मयामें मु  
 लकंदा हे ॥ तूं वूढा बाला मद मतवाला, तूं पक्का वाजंदा हे ॥ तूं  
 कच्चा कवला सवतें सवला, सच्चा मऊ रहदा हे ॥ २५ ॥ बाबागो-  
 साई जेद न पाई, जीम पड्यां आवंदा हे ॥ तूं नारायण जोगपरा-  
 यण, माधव तूंही मुकदा हे ॥ तूं कवलाधारी तूं अवतारी, तूं देवा  
 देवंदा हे ॥ तूं एकां अण्णे एक उअण्णे, अिति निज सुध आपंदा हे  
 ॥ २६ ॥ तो देवल मझा लोकति सझा, स्तीरणिया वाटंदा  
 हो ॥ गुण गीत पयासे कीरत ज्ञासे, जीणे सुर गावंदा हे  
 ॥ कालागरु अग्रसुं मलयगर, धूपेना धुखदा हे ॥ कुकुम कसतूरी  
 केसर पूरी, चदनसु चरचदा हे ॥ २७ ॥ मरुआ मचकुदा फूला  
 हदा, टोमर कंठ ठवदा हे ॥ चपा गुलावां जरीया ठावां, परमल  
 तिहा वासंदा हे ॥ कसावोई चगी रचियै अगो, फूलां बीच फावं  
 दा हे ॥ आनूपण धरिया तन ऊपरिया, कुंमल कान जिगंदा हे ॥  
 २८ ॥ सूरत सोहंदा मूरत हदी, दीगां नैण ठरदा हे ॥ तेरी बलि  
 जाअं मोजा पाअं, वीनती तूहि सुणदा हे ॥ २९ ॥ क्या कत्थू ग  
 ह्ना हुकम अदह्ना, समकित मनउलसंदा हे ॥ सिद्धांदा वासा तिहा  
 रहासा, तुज्जेसेवरु विलसदा हे ॥ धग्घर नीसांणी पास बखाणी

गुण जिनहर्ष कहुंटा हे ॥ ३० ॥ इति श्रीधर नीसाणी संपूर्ण ॥

॥ अथ दादा गुरुदेव स्तवन प्रारंभ ॥

॥ विलशे रुद्रि समृद्धि मिली, शुभ्र योगै पुण्यदशा सफली  
 ॥ जिन कुशल सूरि गुरु अतुलवली, मनवंगित आपै दादो रंग  
 रली ॥ १ ॥ मंगल लील समें विपुला, नवनवा महोन्नव राजेला ॥ सुप-  
 सायै गुरु चढती कला, सुकलीणी पूत्रवती महिला ॥ २ ॥ सबही  
 दिन थायै सबला, सद वासकपूरतणा कुरला ॥ हय गय रथ  
 पायक बहुला, किछोळ करै मंदिर कमला ॥ ३ ॥ वीजै चमर नि  
 साण धुरै, नर वै दरवार खना पुहरै ॥ जय२ करजोनी उचरै, सा  
 निद्ध गुरु सब काज सरे ॥ ४ ॥ सरसा जोजन पान सदा, डुख  
 रोग डुकाल न होय कदा ॥ अविचल ऊलट अंग मुद्रा, गुरु कूरम  
 दृष्टि प्रशन्न सदा ॥ ५ ॥ धमधम मादल नाद धुमें, बचीसे नाटक  
 रङ्गरमै ॥ प्रगढ्यो पुण्य प्रताप हमें, सबला अरियण ते आय नमें  
 ॥ ६ ॥ तनसुख मनसुख चीरतणें, पहिरें वेलाउल होयरनें ॥ ध्या  
 वि कुशल गुरु एक मनें, जूञक सुर मंदिर जुरै धने ॥ ७ ॥ तत  
 खरा घरा खंच्यो आवे, करि स्वामघटा मेह वरसावै ॥ तिसीयां  
 तोय तुरत पावै, जलदाता त्रिजग सुजश गावै ॥ ८ ॥ लहिरया  
 जल कछोळ करै, प्रवहण जवमायर मझ मरै ॥ वूमंता वाहण जे  
 समरै, ते आपढ निश्वेसुं उचरै ॥ ९ ॥ खरुखरु खरुग प्रहार वहै,  
 सो दामनि जिम समसेल महै ॥ कुशल२ गुरु नाम कहै, ते खे-  
 मकुशल रिण मझ लहै ॥ १० ॥ शुभ्र सकल परचा पूरै, श्रीनाग  
 पुरे सकट चुरै ॥ भगलोर अधिके नूरै, देरावर जय टालै दूरै ॥ ११ ॥  
 वीरमपुर दाने सुधरै, खजायतपुर विक्रमनयरै ॥ जिणचढ सूर पा  
 टै पवरै, जसु कीरति महीमनन पसरै ॥ १२ ॥ पूरव पश्चिम द  
 कण आगै, उत्तर पश्चिम शोभागै ॥ दहदिशि जन सेवा मागे,

श्रीखरतरगञ्जनी महिमा जागै ॥ १३ ॥ पुर पट्टश जनमद गामे, गा  
ईजै कुशल नयर गामै ॥ पूजै जे नर हितकामे, ते चक्रवर्ति पद  
वी पामे ॥ १ ॥ श्रीजिनकुशल सूरि साखै, सेवकजनने सुखिया  
साखै ॥ समर्यां गुरु दरशण दाखै, श्रीसाधुकीरति पाठक जाखै ॥  
॥ १५ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ श्रीजिनदत्त सूरि सङ्गुरु उत्पत्ति स्तवन ॥

॥ वर लाठ विलाश सुवाश मिलै, गुरु नामें मनैरी आश  
फलै ॥ दोषी दुस्मन दूर टलै, सहसा बहु संपति आश फलै ॥ १ ॥  
॥ जय२ जिनदत्त सूरिद यती, श्रुतधार कृपालक शीलवती ॥ ज-  
सु नामे न रहै पाप रती, जेहनी महिमा जगमाहे अती ॥ २ ॥  
शुभ्र मंगल लोक विलाश सदा, दुख रोर दुकाल न होय कदा ॥  
आराध्या आवै सुगुरु मुदा, सुप्रशन हाजर होय जदा तदा ॥ ३ ॥  
जिण जीती चोसठ जोगणियां, वश वावन खेतलवीर कियां ॥  
जमु नामे न पने बीजलिया, जूत भेत न कर सके ठलवलियां  
॥ ४ ॥ जिण सिध सवालख दिन साधो, पच पीर नदी जिण  
पुल वाधी ॥ उपगार कीयां कीरत लाधी, वरसात लीयां गुरु  
सिद्ध वाधी ॥ ५ ॥ सुत मुगल कियो सरजीत बहु, पाये लागा  
नर नार सहू ॥ जिण साधी विद्या वेशलहू ॥ प्रतिवाधी श्रावक  
कीध सहू ॥ ६ ॥ वरुनगरे ब्राह्मण द्वेष धरो, मृत गाय लइ जिण  
चैत्य धरो ॥ गुरु मंत्रबलें जीवत उधरी, विप्रवेप सहू गुरु पाप  
परी ॥ ७ ॥ वज्रभय अन्नो दोय खंन कियो, पोथी परगट परजा  
व थियो ॥ विद्या सोवनवरणे सजियो, वर नयर उज्जैणी सुजश  
लियो ॥ ८ ॥ गुरु हुवरु वंसे जीवदया, मंत्रो वाठग परसिद्ध  
थया ॥ वाह्मदे कूखै जनम जणू, ते चवदे विद्या जाण धणू  
॥ ९ ॥ इग्यार वत्तीमै जनम जणू, इग्यार इगतालै दिरु शुणु ॥

युगवर्ग इग्यारै गुणदत्तैरे, स्वर्गे वारेते इग्यारै ॥ १० ॥ जिनवल्लभ  
 मूगी पटोवरण, परजाव उदेमर जयहरणं ॥ नवनिधि लवमी  
 संपति करगं, वलि विकट संकट आरती हरणं ॥ ११ ॥ शुंज  
 सकल श्रीअजमेरे, गढमनो वर वीकानेरे ॥ सुखदायक श्रीजेशल  
 मेरे, दीपे गुरु गाजीखान मेरे ॥ १२ ॥ सुलतान नगर महिमा  
 सांगे, जावठ दालिड द्वे जांगे ॥ मेरे असमालखानके सोजागे,  
 गुरु पुरमें कोरति जांगे ॥ १३ ॥ धन२ जे सहुरु ध्यान धरे,  
 तेरनवन पूजा जेद करे ॥ गढ खरतरनी महिमा पसरै, कवि  
 सूरि उदय जिनकीरति करे ॥ १४ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ सहुरु श्रोजिनकुशल सूरजी उत्पत्ती स्तवन ॥

रिसद जिनेसर सो जयो, मंगल केलि निवास ॥ वासुव  
 वदिय पायकमल, जग सहू पूरै आस ॥ १ ॥ ( चोपाई ) चंद  
 कुलावर पूनमचद, चंदो श्राजिनकुशल मुषिद ॥ नाम मंत्र जसु  
 महिम निवास, जो समरे तसु पूरै आस ॥ २ ॥ मरुमंजल सवि-  
 याणो गाम, धण कण कंवन अति अजिराम ॥ जिहा वसै जि-  
 ल्हागर मंत्र, जैततिरी जसु घरणी कलत्र ॥ ३ ॥ जसु तेरेसे  
 तीसे जम्म, सेताले सिरिसंजम रम्म ॥ पाटण सतदत्तरे जसु पाट,  
 निव्यासिये तसु सुरगे वाट ॥ ४ ॥ जूमंजल सरगे पायाल, अचि-  
 राचिर युग इश कलिकाल ॥ प्रनु प्रताप नवि माने सोय, में नवि  
 नयणें दीगे जोय ॥ ५ ॥ निरवन लहे धन धन्न सुवन्न, पुन्नहीण  
 पामें बहु पुन्न ॥ असुखी पामे सुख शंतान, एक मनां करता गुरु  
 ध्यान ॥ ६ ॥ गुरु समरण आपद सवि टलै, सयल संति सुख संप-  
 ति मिलै ॥ आधी व्यापी चिता संताप, ते ठंनि नवि मंमै व्याप ॥  
 ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि जागै तिहा, गुरु समरण उत्कंठा-जिहां ॥  
 सेवंता मुरतरुनी ०, अनिद मेटे बाहि ॥ ८ ॥

नितनरै विस नरनाह, जूत प्रेत ग्रह व्यंतर राह ॥ प्रजु नामें ते न  
 वै पीरु, जाजै जावठ जवजय जीरु ॥ ए ॥ रोग सोग सवि  
 नामें दूर, अंधकार जिम ऊगै सूर ॥ मूरख फीटी पंरित थाय,  
 प्रजु पसाय डुख डुरिय पुलाय ॥ १० ॥ दिन२ जिनसासन उ-  
 शोत, जिहांअठै जवसायर पोत ॥ सो सदगुरु में जेव्यो आज,  
 रलियरग सब सीधा काज ॥ ११ ॥ ॥ ढाल ॥ आज घरअ-  
 गण सुरतरु फलियो, चितामणि करकमलै मिलियो, उदयो पर-  
 मानंद घरै ॥ १२ ॥ आज दीह में धन्ने गणियो, जुगपवरागम जो  
 में शुणियो, चंद्रगच्छ महिमा निलो ए ॥ १३ ॥ कांइ करो पृथ्वी  
 पति सेवा, कांइ मनावो देवी देवा, चिंता आणो काइ मने ॥ १४ ॥  
 धार७ एक चित्त जणीजै, श्रीजिनकुशल सूरि समरीजै, सूरै काज  
 आयास विन ॥ १५ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसै, मुलक वाहण  
 पुरमें मन हरनै, अजिय जिणैसर पर जुवणें ॥ १६ ॥ कीयो क  
 वित्त ए मगल कारण, विघन हरण बहु पाप निवारण, कोइ मत  
 संसो वरो मनें ॥ १७ ॥ जिम७ सेवे सुरनरराया, श्रीजिनकुशल  
 मुनीसर पार्या, जयसागर उवझाय शुणे ॥ १८ ॥ इम जो सदगुरु  
 गुण अजिनदै, रुद्धि समृद्धै सो चिरनदै, मनवठित फल मुऊ दुवो  
 ए ॥ १९ ॥ इति पठं ॥ ॥ पुनः ॥ आयो सहु श्रीसंघ  
 आश धरे, गुरु मोन ग्रह्यां कहे केम सरे ॥ वरशन वहिलो सद  
 गुरु दाखो, निज सेवक जाण महिर राखो ॥ १ ॥ इय विखमी  
 विरियां आयवणी, केहवी करिये तुऊ अरज घणी ॥ हिव अलगा  
 जो तो वेगा आवो, हिव हील घनीजर म करावो ॥ २ ॥ तूं सद  
 गुरु खरंतर गच्छ सांचो, कोश्य न जाणे तुऊने काचो ॥ इण संक  
 टमें आलश म करो, वादा डसमनने दूर करो ॥ ३ ॥ कोइ चूक  
 षमी सदगुरु इमसुं, तो ज्यूं कइसो तिण पर खमसु ॥ हिवणा इह

थे मत ताणो, निश्रे पोतानो कर जाणो ॥ ४ ॥ आया मघ,  
 श्रीमघ अग लगे, पाठा किम जावा इणे पगे ॥ इण पर करिये  
 गुरु अरज इसी, हिव सगला भेलो करो खुसी ॥ ५ ॥ जिनकुश  
 ल सूरीसर जग चावो, अपणायत वेगा आवो ॥ अगला विरुद ले  
 वृजवालो, परघल निज ठोरू प्रतिपालो ॥ ६ ॥ गुण गाम गमाथे  
 ए गायो, सुणता सदगुरु वेगो आयो ॥ राजा हुय सगला रंगरली,  
 जिनचंदनी आस्या सकल फली ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 सदगुरुजी थे साजलो, श्रीजिनदत्त सूरीस हो ॥ सेवकने सानिध  
 करो, पूरो मनह जगीस हो ॥ १ ॥ दोलति दो हो दादाजी संप  
 ति दो ॥ आंकणी ॥ दोलत दो गुरु माहरा, थाहरा विरुद अने  
 क हो ॥ था समरथा संकट टलै, एहीज दादाजो ताहरी, टेक हो  
 ॥ दो० २ ॥ जीती चोसठ जोगणी, वस किया वावन वीर हो ॥  
 सिंधमाहे तें साधीया, पंचनदी पंच पीर हो ॥ दो० ॥ ३ ॥  
 पनिकमणामाहे वीजली, वलीर ऊबहाय हो ॥ थे मंत्री  
 राखी तिका, तूठी वर दे जाय हो ॥ दो० ॥ ४ ॥ उच्चव क  
 रता उच्चमे, मूँउ सुगलरो पूत हो ॥ जाप करीने जीवानियो, सघ  
 मांहे राख्यो दादै सूत हो ॥ दो० ५ ॥ वरुनगररे ब्राह्मणें, देहरे  
 धरी मृनगाय हो ॥ परप्रवेश विद्या बलै, पिशुन लगाया दादे पा  
 य हो ॥ दो० ६ ॥ विक्रमपुर व्यापी मरी, दूरकोया तें सहू दुःस्क  
 हो ॥ परवार पिण पोतें कीयो, सहुनें दियो दादे सुक हो ॥ दो०  
 ७ ॥ अंवरु हाथे अकरै, थे प्रगठ्या ततखेव हो ॥ जुगप्रधान जग  
 तूं जयो, आखै अत्रिकादेव हो ॥ दो० ॥ ८ ॥ आंजो वज्र विदारनें,  
 पोथी परगट कीध हो ॥ विद्या सोवनअकरे, उज्जेरीमाहि लीध  
 हो ॥ दो० ॥ ९ ॥ इम विरुद घशा ठै ताहरा, कहतां नखे पार  
 हो ॥ जगसंजोगे दादो जेटियो, अरुवनियां आधार हो ॥ दो० ॥



॥१०॥ हुं वूं सेवक ताहरो, थे आपो वन रुद्र हो ॥ कनककीरत  
 सुपसाउलै, लाजउदय सुख सिद्ध हो ॥ दा० ११ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ पुनः ॥ दादा चिरंजीवो, सेवकजन सुखदाई, दरशणसदा देवो ॥  
 दादो दीनदयाल सदा दाता, दादो समरथां आपे सुखशाता, दादो  
 जगबंधव जगगुरु ब्राता ॥ दा० ॥ १ ॥ दादो परचा जगसगले पूरे,  
 दादो सेवकनां संकट चूरे, दादो डुरित हरै सहूनी दूरे ॥ दा० ॥ २ ॥  
 दादो अलगांधी जात्री आवै, दादो देखीने त सुख पावै, म्हाारा  
 दादाजीनी जोरु कोइ नावै ॥ दा० ॥ ३ ॥ दादो राजनगरमाहे  
 राजै, जिहा सुजशनगारा नित वाजै, दादो भोगाला सेहर ठाजै,  
 दा० ॥ ४ ॥ दादा घस केसर सूरु घोली, हाथे लेइ सोवन क  
 चोली, पूजो दादाजीने मिलइ टोली ॥ दा० ॥ ५ ॥ दादो आरति-  
 था आरति टालै, दादो सेवगजनने प्रतिपालै, दादो जिन  
 सासन नित उजवाले ॥ दा० ॥ ६ ॥ दादो महिमावत  
 माहाराजा, दादो राजै खरतर गठ राजा, दादो समरथा सफल  
 करै काजा ॥ दा० ७ ॥ दादो कुशलसूरिंद बहु गुणधारी,  
 दादो परतिख सुरतरु अवतारी, जान दादाजीनी हूं बलिहारी ॥  
 दा० ॥ ८ ॥ दादो श्रीजिनचंदसूरिंद पाटै, दादो गाजै गुणियन ग  
 हगाटै, जसु थान सोहे जग धिरथाटै ॥ दा० ॥ ९ ॥ दादा महिर  
 निजर मुऊ पर करियै, दादा आरति पीना डुख हरियै, दादा जिम  
 जग जयकमला वरियै ॥ दा० १० ॥ दादा सेवगनें सानिव कर  
 ज्यो, दादा डुस्मणनें दूरे हरज्यो, जिनचंदना मनवडित फलज्यो ॥  
 दा० ॥ ११ ॥ इति पदं ॥ पुनः गाजै जिनकुशल गमालै,  
 सेवकनां संकट टाले हो ॥ गा० ॥ १ ॥ परतिख गुरु परचा पूरे,  
 सेवकनी चिंता चूरे हो ॥ गा० ॥ २ ॥ उतरीनितरी वधि ठाजै,  
 विचमें धिर धुन विराजै हो ॥ गा० ॥ ३ ॥ जूलरे यात्री मिल

श्रावै, दादोजी दीठां सुख पावे हो ॥ गा० ॥ ७ ॥ केशर घल  
 ज़रिय कचोली, मांहे वलि मृगमद घोली हो ॥ गा० ॥ ८ ॥ पूजो  
 पग नीर पखाली, गावो गुण गीत रसाली हो ॥ गा० ॥ ९ ॥  
 दादोजी दुखियां सुख देवै, निरधनियां नित धन देवे हो ॥ गा०  
 ॥ १० ॥ हय हाथी रथपति बहुला, गुरु नामे पामे कमला हो ॥  
 ॥ गा० ॥ ११ ॥ सकजा सुत सुंदर नारी, पामे परिकर सुखकारी  
 हो ॥ गा० ॥ १२ ॥ अलगांथी रोग गमावै, गुरु पूज्यां वंठित पावै  
 हो ॥ गा० ॥ १३ ॥ पावै गुरु तिसिया पाणी, तिल  
 वेला जलधर आणी हो ॥ गा० ॥ १४ ॥ ग्रह गोचर चोर  
 जंजालै, पीना हुवै आलेमालै हो ॥ गा० ॥ १५ ॥ बाजै  
 जग जशना बाजा, राजै खरतर गच्छ राजा हो ॥ गा० ॥ १६ ॥  
 जसु जैतसिरी वर माता, जिब्हा गरमंत्र विख्याता हो ॥  
 गा० ॥ १७ ॥ सवत सतरेसे डक्यासी, कातोपूनम परकासी हो ॥  
 गा० १८ ॥ सहु संघ सहित सुविलासै, अधिके हर हेत उल्लासै  
 हो ॥ गा० ॥ १९ ॥ इम यात्रा करी आणंदे, जिनजक्ति जतीसर  
 वंदे हो ॥ गा० ॥ २० ॥ इति पद ॥ पुन. सहाइ मेरे श्रीजि-  
 नकुशल गुरु ॥ कुशल करण कलिमाहे प्रगटयो, खरतर गच्छ वरु  
 ॥ स० ॥ वावनेचंदन मृगमद मेली, पूजो प्रेम जरु ॥ स० १ ॥  
 चिता चूरण विघ्न विदारण, ठालिइ दूरहरु ॥ स० २ ॥ दिनश  
 साहिव चढते वाने, ध्यावो ग्यानवरु ॥ स० ॥ बाजै जेहना  
 जशना बाजा, ठावी ठामे जरु ॥ स० ॥ ३ ॥ संवत अठारसमे  
 अरुसठै, मिगसरमाश थिरु ॥ स० ॥ सघ सहित श्रीसदगुरु जेठे,  
 श्रीजिनहर्य सरु ॥ स० ॥ ४ ॥ गाम गमालै चरण नमता, तूवो  
 कटपतरु ॥ स० ॥ पाठक श्रीविद्याहेम गणिते, उदयरत्न करु ॥  
 स० ॥ ५ ॥ इति . . . . . आयो आयो जी, समरंता दादोजी

आयो ॥ मंकट देख सेवककं सदगुरु, देराजरतें ध्यायोजी ॥ स०  
 ॥ १ ॥ दादा वरसे मेहनें रात अघेरी, वाय पिण सवलो वायो ॥  
 पंचनदी दम वैठे वेनी, दरंगे चित्त मरायो जी ॥ स० ॥ २ ॥  
 दादा ॥ उच्चजणी पोहचावण आयो, खरतर सव सवायो ॥  
 समयसुंदर कहे कुशल कुशलगुरु, परमानंद सुख पायो जी ॥ स०  
 ॥ ३ ॥ इति पदं ॥ राग लहुरी ॥ जाया जक्तिसुं पूर रहो रे,  
 झरिजन सब डर हरो रे ॥ जा० ॥ मेरे मनमें जक्ति बैरागी, चित्त  
 परणित लगनसुं लागी ॥ मेरी जाग्यदशा अब जागी, जीया हो  
 जा० ॥ १ ॥ सब सज्जन मिलकर आयो, गुरुचरणे चोक पूरावो ॥  
 वलि अकृत घाल वधावो, जीहा हो जा० ॥ २ ॥ गुरु महिमावंत  
 सवाई, गुरुनाम सदा सुखदाई ॥ गुरु सेव्यां पाप पुद्दाई, जीया  
 हो जा० ॥ ३ ॥ घस केसर जरके कचोली, माहे मृगमद कुंकुम  
 घोली ॥ गुरु पूज रचो जर जोली, जीया हो जा० ॥ ४ ॥ श्री  
 जिनदर्श सुरीतरराजा, वाजै जग जशना वाजा ॥ सत्यरत्न करै  
 सुज काजा, जीया हो जा० ॥ ५ ॥ इति पदं ॥ पुनः  
 ॥ राग कैरवो ॥ ॥ कुशल सूरिंद गुरु पूजो जवि हितसु, कु० ॥  
 कशर चदन कपूर अरगजा, जाव धरी करो पूजा चितसुं ॥ कु०  
 ॥ १ ॥ मोगरा लाल गुलाब मालती, मन सुय माल करै जवि रुच-  
 सुं ॥ कु० २ ॥ अशरण सरण परम गुरु सेवो, धरम ध्यान धरो  
 आतम रुचिसुं ॥ कु० ३ ॥ सेवक जन प्रतिपाल जगतगुरु, आसा  
 पूरे गुरु घणुं दत्तसुं ॥ कु० ४ ॥ ध्यान सुवारै ज्ञान वधारै, रूप रंग  
 देवै चित हित मतिसुं ॥ कु० ॥ ५ ॥ कुशल सूरिंद गुरु सानिधका  
 रा, परतिख प्ररचा पूरे सतसुं ॥ कु० ॥ ६ ॥ श्रीजिनदर्श सदा  
 सुविदाशी, सत्यरत्न सुख एही ठतसुं ॥ कु० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ राम देवभ्रमचलत ॥ आज करो रे उवाह, श्रीजिनकुशल

सूरिंद आगै ॥ आ० ॥ आ आग्री बेला नै उ आगो दाव, इण  
 आग्री बेला क्यू करो लाज ॥ आ० ॥ १ ॥ विविध प्रकार पूजो  
 मनरंग, हिलमिल गावो साजन संग ॥ आ० ॥ धूप दीप करो नै  
 वध सार, फुलबारीनो नही जिहां पार ॥ आ० ॥ २ ॥ अकृत  
 श्रीफल ढोवै जेह, पुत्र कलत्र पामे संपदा तेह ॥ आ० ॥ ३ ॥  
 सुर नर नारी कृत्ता करजोरु, कोण करै म्हारा दादाजोनी होरु  
 आ० ॥ ४ ॥ श्रीखरतर गच्छपति सिरदार, राजा राणा सेवै इकतार  
 ॥ आ० ॥ ५ ॥ महरि निजर करो श्रीगुरुराज, कुशलसूरिंद गुरु  
 गरीबनिवाज ॥ आ० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहर्ष करै उठरंग, सत्यरत्न मन  
 ग्यान उमंग ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति पदं ॥ ॥ राग बंगालोघाटो ॥ में  
 निरख्या गुरु साहाराज, उतिया हर्षजरी ॥ में ॥ अमल अनंत  
 गुण आगरु रे, समतारसनो धाम ॥ परम परम परमात्मा रे, वं  
 वित दायक स्वाम ॥ व० १ ॥ करुणानिध गुरु दोलती रे, सेवक जन  
 प्रतिपाल ॥ जविजन जके जावसुं रे, द्यावै जरु थाल ॥ व० २ ॥  
 केशरचंदन कुमकुमारे, जरिय कचोली हाथ ॥ पदमण आवै मलपती  
 रे, पूजै सहियर साथ ॥ व० ३ ॥ कुशल सूरिसर साहिवारे, श्रीजिन  
 चंड सूरि पाट ॥ बलिहारी जिनकुशलनी रे, गाजै घणुं गहगाट ॥  
 व० ४ ॥ अष्टसिद्ध सानिध करे रे, सुख संपूरण सार ॥ श्रीजिन  
 हर्ष सूरिसरु रे, सत्यरत्न सुखकार ॥ व० ५ ॥ इति पदं ॥  
 ॥ राग प्रजाती ॥ चरणकी चरणकी चरणकी, वारी जाठं गुरुरा  
 य चरणकी ॥ वा० ॥ श्रीजिनदत्त सूरिसर सदगुरु, सफल घनी  
 सेवा चरणकी ॥ वा० १ ॥ प्रथम भगत गुरुरायकी सेवा, अशुज  
 कर्म भव हरणकी ॥ वा० २ ॥ दालिझंजन अरि सब गंजण ॥ प-  
 ग२ सानिध करणकी ॥ वा० ३ ॥ मोह नही परवाह अनेरी, सर  
 ए अही इन चरणकी ॥ वा० ४ ॥ श्रीजिनहर्ष तुम चरणको दा

शा, आशा पूरो सुख करणकी ॥ वा० ए ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥  
 श्रव मोहि दरसण दीजै, कुशलगुरु अ० ॥ एसी ज्ञात क  
 रो मेरे सदगुरु, ज्युं मन मूढ पतीजै ॥ अ० १ ॥  
 जलदातार विरुद् अमृतरस, श्रवण अजलन्नर पीजै ॥ सुरतरु  
 शम दरिसण विन देख्यां, कहो नयण किम रीजै ॥ कु०  
 ॥ २ ॥ परमदयाल कृपाल कृपानिधि, इतनी अरज सुणीजै ॥  
 परमज्ञगत जिनराज तुमारो, अपणो कर जाणीजै ॥ कु० ॥ ३ ॥  
 इति पदं ॥ पुनः कुशलगुरु कुशल करो नरपूर, सेवकजन मन  
 वंछित पूरण, समरथां होत हजूर ॥ कु० ॥ १ ॥ परम दयाल प्रे  
 मरस पूरण, अशुभ हरण जये दूर ॥ संघ उदोकर सदगुरु मेरा,  
 वीनवै श्री जिनचद सूर ॥ कु० ॥ २ ॥ इति पदं ॥ ॥ चाल  
 लूवरकी ॥ सदगुरु पूजण जावस्या, भेतो कुशल सूरिंद गुण  
 गावस्या हे माय ॥ स० ॥ श्रोफल जेट चढावस्थां, भेतो चरणारी  
 पूज रचावस्या हे माय ॥ स० ॥ १ ॥ मारुदेशमें सोजता, नगरवी  
 काणे राजे हे माय ॥ गाम गरालै दीपता, ज्यांरी महियल - महि  
 मा ठाजे हे माय ॥ स० ॥ २ ॥ समरथां सकट चूरता, कुशल करण  
 श्रवतारो हे माय ॥ सुखदायक श्रीसघने, खरतर गड अधिकारी  
 हे माय ॥ सा० ३ ॥ दूर देशातरथो घणा, हिलमिल यात्री आवे हे  
 माय ॥ लुलश् गीत नमायता, संत सुजश मिल गावे हे माय ॥  
 स० ४ ॥ सज सिसणगर मनोहरू, ठमर पाय ठमकावे हे माय ॥  
 तन मन प्राण लोजावती, गोरी मंगल गावे हे माय ॥ स० ॥ ५ ॥  
 विठव्या साजन मेलवे, अनमी पाय नमावे हे माय ॥ मनरा मनो  
 रथ पूरवै; परघल लखमी दशावे हे माय ॥ स० ६ ॥ विपमी वे  
 ला वाटमें, समरथा सानिध आवे हे माय ॥ चूखां जोजन मेलवै,  
 तिसियां नीर पिलावे हे माय ॥ स० ७ ॥ यात्री आवे नित नवा,

ध्यान आगल धिरं थाट हे माय ॥ सीरणीयां नित सामर्गा, गावै  
 गुण गङ्गाट हे माय ॥ स० ॥ ७ ॥ कुशलसूरिंद गुरु आगलै,  
 जचि मिल ज्ञावना ज्ञावे हे माय ॥ चंद फते मुनि नित नमें, पर  
 मानंद मुख पावे हे माय ॥ स० ॥ ८ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥  
 श्रीतदगुरुजीमें वीनती रे, आयो सरण तुमारी ॥ दादासाहिव अ  
 रज गुणाज्यो मारी ॥ दीनदयाल विरुद सुण आयो, तन मन सु-  
 धर ध्यान लगायो ॥ मझिर निजर अब कीजाये जी, चरणक  
 मल बलिहारी ॥ दादा० ॥ १ ॥ आधि, व्याधि संकट डुख मेटो,  
 सोमवार पूनम दिन जेटो ॥ अन धन लक्ष्मी चोगुणी रे, बधती  
 संपद सारी ॥ दादा० ॥ २ ॥ नर नारी अपठर मिल आवै, अतर  
 गुलाब केचमो टवावे ॥ पूजै मृगमद पुष्पसे रे, खुल रही केसर  
 क्वारी ॥ दादा० ॥ ३ ॥ कलयुगमें परचा तूं पूरै, चिता दोखी ड  
 स्मन चूरै ॥ धनश सदगुरु जगजयो रे, सहस किरण अवतारी ॥  
 दा० ॥ ४ ॥ उगणीसे अठावन वरसै, कातीपूनम दिन जलसै ॥  
 गद्यपति कीर्ति सूरिसरू रे, वैद वार हजारि ॥ दा० ॥ ५ ॥ अरस  
 परस दरशण अब दीजै, अपणो दास मुजै समजीजै ॥ जगमें सु  
 रतरु सारखो रे, कीरति ठारही धारी ॥ दा० ॥ ६ ॥ प्रगटरणें व  
 रदाता देख्यो, आज सफल दिन में कर लेख्यो ॥ श्रीजिनकुशल  
 सूरिंद धणी रे, कहै रामरुदिसारी ॥ दा० ॥ ७ ॥ इति पद ॥  
 ॥ पुन ॥ ॥ चाल नरतरकी ॥ सदगुरु दीनदयाल, गद्यपति  
 दिनकर तुम धणी ॥ सेवकजन प्रतिपाल, डुखतमहारण दिनम  
 णी ॥ १ ॥ गढ सवियाणे जी देश, गजेन कुल उदयाचले ॥  
 जिह्वासाह पितेश, जैततिरी अंधर जलै ॥ २ ॥ गद्यपति चंदमु  
 णिंद, पाट तिलक किरणावली ॥ खरतर कमल आणद, तेज प्र  
 काशम मनरली ॥ ३ ॥ पुर पतन सब ~~वे~~ जिगमिग ज्योती जी

जिगमिगै, पूनमनें सोमवार ॥ नर नारी गुरु नंदगे ॥ ४ ॥ अरचे  
 अतर फूलेल, परिमल फूली जी मालती ॥ महके चपक वेद, मुं  
 दर आवत, मलपति ॥ ५ ॥ शुभ धिर शुभ वीरुण, बालूचर म  
 हिमा घणी ॥ कीरतवाग प्रथान, डुखनंजन चितामणी ॥ ६ ॥  
 पूरो वठित आश, ठाया तुम सुनिजरतणी ॥ दाता सुख कैलाश,  
 चरण शरण किकर जणी ॥ ७ ॥ पूजे पद गोविद, चडशिखर  
 जय राशमें ॥ कोटिक गण कुलचंद, कुशलसूरिंद परकाशमें ॥  
 ॥ ८ ॥ नगणीसे अरुताळ, भिगसर वदि दशमी करी ॥ दरशण  
 अतहि विशाल, कुशलनिदान हरख घरी ॥ ए ॥ गुग्गुण शरिता  
 नीर, मीन मगन हुलाशमें ॥ लखमी लील समीर, रुद्धितार जस  
 वासमें ॥ १० ॥ इति पदं ॥ ॥ पुनः ॥ ॥ राग, सो जोगी  
 गुरु मेरा ॥ यह चाल ॥ सुगुरु मेरी वेनिया पार उतारो, तू वण  
 अथवा माजी हमारो ॥ सु० ॥ सरिता जाड्व नीर जलधि ज्यु, यो  
 ससार अपारो ॥ ता तट पारंपार अमरपद, ताको वण दातारो ॥  
 सु० ॥ १ ॥ राग रंग इक जीरण नौका, तिररही जर मज धारो ॥  
 में वेठो परमारथ खातर, मोह मगरनें उगारो ॥ सु० ॥ २ ॥  
 नक्त उधारण श्रीसदगुरुजी, जलदी कष्ट निवारो ॥ जाण बाल ग  
 णपति करुणानिध, याविपतितसें वारो ॥ सु० ॥ ३ ॥ उडकापात  
 गमन ज्युं विपयरश, दीशै अतहि करारो ॥ विरह व्यथादिक  
 निशि अंधियारो, कोण करै निशतारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ ब्रह्मा विष्णु  
 शेटे कोइ ईसा, अह्ना उमया प्यारो ॥ में ध्याऊ जिनदेव  
 कुशलगुरु, अरिगण गंजणहारो ॥ सु० ॥ ४ ॥ मुण अरजी  
 आय गठ तमहर, तुरतही विघन विहारो ॥ रामवाग पुर गंज  
 अजीमें, कुशलनिदान जुहारो ॥ सु० ६ ॥ फेइयक गुरुते लखमी  
 पावत, हुकमु प्रै वसुधारो ॥ में इक सेवा चरणकमलही, मा

गुरु दातारो ॥ सु० ७ ॥ संवत जगशीते अरुतालोश, मेरुत्रयो-  
 दशी सारो ॥ नयणा सफल किये गुरु दरशण, हे ऋद्धसार ति  
 हारो ॥ सु० ८ ॥ इति पदं ॥ राग घाटो ॥ मेरो मन वस  
 कर लीनो ॥ ए चाल ॥ देख्या में दरश तिहारा, दे० ॥ श्रीसद  
 गुरु महाराज ॥ दे० ॥ सफली फली मेरी आशा, पाया सुरतरु  
 आज ॥ दे० १ ॥ तुमहो चिंतामणी जैसा, दायक सब सुख  
 साज ॥ दे० ॥ गंगा अंगणमें प्रगटी, मुज मन निरमल काज ॥ दे०  
 २ ॥ गुण रुद्धि संपत काजै, कामधेनु गुरुराज ॥ दे० ॥ सब  
 सिद्धि लीला प्रगटी, डुख दोहग गये जाज ॥ दे० ३ ॥ गुरु  
 तुज परजपगारी रे, प० ॥ सुरपद शिवपद पाज ॥ दे० ॥ सुज  
 थान पुर२ सोहे, मुलक वीकाणे राज ॥ दे० ४ ॥ वर गठ खरतर  
 राजा रे, ख० ॥ धर्मशील रहे गाज ॥ दे० ॥ तुम नाम रामरु०  
 सारी, रा० ॥ जपे पाठक सिरताज ॥ दे० ५ ॥ इति पदं ॥  
 ताल ठुमरी ॥ सदा सहाई कुशल सूरिदि गुरु, द्यो दोलत गुरु  
 रायजी ॥ सदा० ॥ खाई न खूटै खरची न तुटे, दिन२ वधे  
 सवायजी ॥ सदा० १ ॥ सकजा सुत अरु सुदर नारी, सुज  
 परिकर सुखदाय जी ॥ सदा० ॥ मित्र समागम सुजश वधा  
 रण, नितप्रति हरख उछाह जी ॥ स० २ ॥ राजा परजा पाय नमें सहू,  
 गुरु समरण सुपसायजी ॥ स० ॥ दोखी डुसमन नृप जय पनिया,  
 सदगुरु करय सहायजी ॥ स० ३ ॥ विखमो विरिया संकट पनिया,  
 समरथा आवै धायजी ॥ स० ॥ चूखा जोजन तिसिया पाणी,  
 निरवनिधा धन दायजी ॥ स० ४ ॥ संघ सकलने द्यो सुखसाता,  
 जिम कीरत जग थाय जी ॥ स० ॥ धानक थिरता परगल जोजन,  
 पग२ कुशल सहाय ॥ ५ ॥ अजय महा सुखदाई सदगुरु,  
 नवनिधि वंठित ॥ ॥ सुमति सवाई नित घर ॥



दान विशाल लहायजी ॥ स० ६ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ जिनकुश  
लसूरिंद गुरु सदा नमो, जी० ॥ सुख सपति रिद्धि सिद्धि सत्र  
होजरे, देश देशांतर काइ जमो ॥ जी० १ ॥ वाट घाट अरु  
विखमी विरिया, विघन बुराई दूर गमो ॥ जि० २ ॥ अहनिगि  
नाम मत्र उर धारो, सुगुरु चरण चित रमो रमो ॥ जि० ३ ॥  
इक मन ध्यावो वंछित पावो, विपत व्यथा सब दमोदमो  
॥ जि० ४ ॥ अन्नय महा सुख सपति पामो, सुधिर, धानक थित  
जमोजमो ॥ जि० ५ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ उत्रपती आरे पाय  
नमें जी, सुरनर सोरे सेव ॥ ज्योत आरी जग जागती जो, छुनि  
यामे परतिख देव ॥ १ ॥ हुतो मोहि रह्यो जी, ह्यारा राज वादेरे  
दरवार ॥ केसर अंबर केवमो जी कस्तूरी कपूर ॥ चंपो चंदन राय  
चपेली, जक्ति करु जरपूर ॥ हुं० १ ॥ पांगूलियानें पाव समावै,  
आधलियाने आख ॥ रूपहीणाने रूप देवे दादा, पाखहीणाने पाख  
॥ हुं० ३ ॥ चंद पाटोधर साहिवा जी, श्रीजिनकुशल सूरिंद ॥  
आठ पहर धाने उलगे जी, रंग घणे राजिंद ॥ हुं० ४ ॥ इति पदं ॥  
पुनः ॥ सदगुरुजी सुणो मोरी अरजी, स० ॥ पहती काम किये  
बहुतेरे, अपणा विरुद विचारी ॥ पल २ चूक परी सदगुरुजी, में  
मुतलबका गरजी ॥ स० १ ॥ ध्यान तुमारो कबहु न ध्यायो,  
पूजा करी नही तेरी ॥ तोही सेवक वंछित पूर्या, आही आरी  
मरजी ॥ स० २ ॥ निश्चैतेती तुमगुण गावै, तुरत कटत डख  
वेनी ॥ जक्त उधार कहावत जगमें, तादे करत हुं अरजी ॥  
स० ३ ॥ और देवकूं में नही ध्यान, शरण यही में तेरी, दूरथका  
में जेटण आयो, विपतदशा सब तरजी, ॥ स० ४ ॥ कुशल गुरुका  
में हुं सेवक, लोक जाणे सबकोई ॥ कुमारलकी वीनती  
सुणवै, दरशण दियो सदगुरुजी ॥ स० ५ ॥ इति पदं ॥

पुनः ॥ होरीकी चाल ॥ । सदगुरुके चरण चित्त  
 लाय, जिनदत्त सुरिंद गुरु करो रे पसाय ॥ सद० ॥ वा-  
 वन वीर अने वलि चौसठ, जोगण वस धीनी हर्ष लाय ॥ विद्या  
 पुस्तक सोवनअकर, धाजो वज्र विकार पाय ॥ सद० १ ॥  
 सुलतानमें पच पीर महावल, पंचनदी सावी चित्त लाय ॥  
 इत्यादिक बहु परचा पूरक, गुरु समरथा सब डुख जाय ॥स०२॥  
 गुरुके नामसें अरुसिद्ध नवनिह, गुरुगुण गावो सबही थाय ॥  
 श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु पर, महिर करो गुरु सुखदाय  
 ॥ सद० ॥ ३ ॥ इति पद ॥ पुनः ॥ होरी खेलो जविक सदगुरुके  
 संग, नित आनंद उच्चव होत रंग ॥ हो० ॥ मस्त महीना फागुण  
 आया, श्रीसंघसे हिलमिलके संग ॥ हो० ॥ कोयल सबद करत  
 स्वर जीणा, अली कलीके संग जग ॥ हो० ॥ १ ॥ रत वसत  
 आनंद पिया संग, गोरी गावत वजत चग ॥ हो० ॥ ऐसें साज  
 समाज जक्तिसें, गुण गुलाल लिये गुरुके अजंग ॥ हो० ॥ २ ॥  
 निरमल मन मकरंद सुधाकर, अतर पुष्पसें चरचो अंग ॥ हो० ॥  
 ध्यान पिचकारी अजब सुवारी, ठिरको महकत सुरजिगंग  
 ॥ हो० ॥ ३ ॥ करत चैन वरतणसे नैण, रामरुहीसार के चित्त  
 उमंग ॥ हो० ४ इति पद ॥ पुनः ॥ नेमस्यामसें कहियो मेरी ॥  
 इस चालमें ॥ गुरु पूज रचो रे सुज्ञानी, जली हिये जक्ति जराणी  
 ॥ गु० ॥ श्रीजिनकुसल सूरिसर साहिव, खरतरगठरा जानी ॥  
 देशदेशमें थानक गुरुका, सोजा जग पहिचानी, सदा रवि तेज  
 समानी ॥ गु० ॥ १ ॥ केशर चंदन भृगमद जेही, चरणारी पूज  
 रचानी ॥ धूप दीप वलि आगल होयी, बहु विध पुष्प चढानी,  
 जला फल जेट धरानी ॥ गु० ॥ २ ॥ वाट घाटमें परचा पूरक,  
 हाजर होत सहानी ॥ १ ॥ ५५ ॥ सूरिके साहिव, वं वत

काज करानी, सदा गुरु मंदिर लखानी ॥ गु० ॥ ३ ॥ इति पदं ॥  
 पुनः ॥ होरी ॥ सदगुरुजीके द्वार मची होरी ॥ स० ॥ आये  
 श्रीसंघ सब हिलमिलके, सग लिये वालाजोरी ॥ स० ॥ दीनद  
 यालकेसनमुख ठामै, पठत मधुरधुन गुण गोरी ॥ स० ॥ १ ॥ केशर  
 घोली नरी रे कचोली, पूजत हे वारीजोरी ॥ स० ॥ रंग गुलाल  
 मच्यो सदगुरुके, अवीर उभावत नरजोरी ॥ स० ॥ २ ॥ धनश्  
 न्नाग्य हमारे प्रगटे, सदगुरुनें पकनी मोरी ॥ स० ॥ अती मनरं  
 जण डुसमन गंजन, बलिहारी चरणा तोरी ॥ स० ॥ ३ ॥ कामि  
 तदाता जगके त्राता, अरजी हय सुनले मोरी ॥ स० ॥ कहत  
 रामरुदिसार सुपाठक, वदत हे डुय रुजोरी ॥ स० ॥ ४ ॥  
 इति पदं ॥ राग प्रजातो ॥ केसे२ अवतरमें गुरु रस्की लाज  
 हमारी ॥ के० ॥ मोकुं सबल नरोसा तेरा, चंद सूर  
 पटधारी ॥ के० १ ॥ तुम विन अवर न कोई मेरे, या  
 जगमें हितकारी ॥ मेरा जीवन हाथ तुमारे, देखो आप विचारी  
 ॥ के० २ ॥ आगे तो केई बेर हमारी, चिंता दूर निवारी ॥  
 अबकी विरिया नूल मत जावो, सदगुरु परनपगारी ॥ के० ३ ॥  
 अबके आप लाज गुजरकी, रखिये गुरु जशधारी ॥ मेरे कुशल  
 सूरिंद गुरु तेरा, वना नरोसा नारी ॥ के० ४ ॥ इति पद ॥  
 पुनः ॥ श्रीजिनकुशलसूरीसर साहिव, तुम हो परनपगारी ॥ श्री० ॥  
 खरतर गठ नायक गुणलायक, जिनबद सूरि पटवारी ॥ श्री०  
 १ ॥ सत उधारण सुजश वधारण, जीरुनंजण अति नारी ॥  
 नाम तुमारो कुशल करण जग, वारीजाउं वार हजारी ॥ श्री० ॥ २ ॥  
 जगवचल तुमही हो जगतगुरु, करुणानिय करतारी ॥ कहे जिन  
 चंद मेरे हो सदगुरु, हम हैं सरण तिहारी ॥ श्री० ३ ॥ इति  
 पद ॥ पुः ॥ श्रीगणपर गुरु कुशल सूरिंदके, चरणरुमल पर

वारी ॥ श्री० ॥ केशर चंदन अक्षत कुंकुम, जलजर कंचनजारी ॥  
 देवके आगे मंगलदीपक, फूल धरूं फूलवारी ॥ श्री० १ ॥ एशी  
 ज्ञाति कळं दित्र पूजा, आणके वित्त इकतारी ॥ राज कहत मेरे  
 परमगुरुकी, वेर२ वलिहारी ॥ श्री० २ ॥ इति पदं ॥ राग रेखता ॥  
 कुशलगुरु देखके दरशाण, मेरा दिख होत हे परशान ॥  
 जगतमें या शमो कोई, न देख्या नपण जर जोई ॥  
 १ ॥ विरुद जूमंमले गाजे, फरशातां पाप सब ज्ञाजे ॥  
 पूजता संपदा पावै, अचिंती लछ घर आवै ॥ २ ॥ इके मुख  
 गुण कहूं केता, मुझे हिये ग्यान नही एता ॥ लालचंदकी अरज  
 मुण लाजै, चरणकी सेव मोहि दीजे ॥ ३ ॥ इति पदं ॥  
 राग कहरवो ॥ कुशलगुरु दरशाण दीजै हो ॥ कु० ॥ खरतर  
 गठपति कुशल सुरिंद गुरु मुऊ पर महिर धरीजे हो ॥ कु० १ ॥  
 पतित उधारण विरुद तुह्यारो, इतनी अरज सुणीजै हो ॥ कु० २ ॥  
 आधि व्याधी अरु दोखा डुसमन, ए सत्र दूर हरीजै हो ॥ कु० ३ ॥  
 खेमरतन सेवगकं निशदिन, सदगुरु सानिध कीजै हो ॥ कु० ४ ॥  
 इति पद ॥ पुनः ॥ पूजो जजो रे जाई, गुरु महिमा  
 ज्योत सवाई ॥ पू० ॥ १ ॥ मृगमद केशर चंदन अरचो, सुंदर  
 पुष्प चढाई ॥ पू० ॥ २ ॥ जविक जीव मिल गुरुगुण गावै, वाके  
 सदगुरु होत सहाई ॥ ३ ॥ श्रीजिनसौजाग्य सूरि सुगुरु मेरे, नि  
 शदिन हर्ष वधाई ॥ पू० ॥ ४ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ हूंतो  
 अरज करूं करजोमने जी, म्हारी अरज सुणो गुरुराय ॥ सदगुरु ॥  
 विरुद घणा ठै राजरा जी काई, सूरि सकल सिरताज ॥ स० ॥  
 सुनिजर जोयजो स २१ ॥ थारे रावल राणा राजवी जी,  
 थारा पूनम पूजे पाय । ॥ थार अगर नें कुमकुमा जी,  
 काई मृगमद रही ॥ सु० २ ॥ थारै घुमलां रे

धूमरा जी, कांइ हूलत चमर गजढाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम  
नी जी, कांइ निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ थारी ठावी  
ठोमे थांपना जी, कांइ उदयापूर आवेर ॥ स० महिमा जली  
गुरु मेरुते जी, कांइ सालूमेवाली सागानेर ॥ स० सु० ४ ॥ थारी  
उद्योति घणी गुरु जिंगमिगे जी, कांइ त्रयती गढ वीकाण ॥ स० ॥  
आसा पूरण आवजो जी, थेतो देरावरसा दीवाण ॥ स० ५ ॥  
म्हारी वीनतनी जलै मानज्यो जी, कांइ दादाजी दीनदयाल ॥  
स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, कांइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स०  
सु० ॥ ६ ॥ इति पद ॥ पुन ॥ सागानेर विराजै, गुरु परतिख  
तिहा राजे रे ॥ म्हारा सदगुरुजीनी वलिदारी ॥ मनवंछित पूरो  
म्हारा, म्हेतो चरण पखाला थारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन जरिय  
कचोलो, माहे वलि मृगमद घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु  
पाया, पूज्या सब पाप पुलायारे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमने सोमवारा,  
थारे जात्री आवै अपारा रे ॥ म्हा० ॥ सुध मन पूजा कीजे, दुख  
दोहग दर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमा  
हे तारी, कीरत चिहु दिशिमाहे सारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम प्र  
वर न कोई दीठो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूमेवा  
ली सागानेरे, जिहा राज करै नितमेवरे ॥ म्हा० ॥ श्रीसध मिल  
तिहा आवै, जिहा लूणिया गेठ रचापे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान  
सार गुरुराज, ज्यारा वाजे सदाइना वाजारे ॥ म्हा० ॥ कमानंद-  
न गुण पावै, करजोनी शीम नमावै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पद ॥

॥ अथ दादाजीको लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, दरगण दीज्यो जी गठपति साहिवा ॥

॥ स० ॥ कुशल सूरि वंछितके दाता, देवो बुद्धि विरुवाता ॥ सद

गुरु मडर करीज्यो मऊपर, ज्य मित्रनकं माता हो ॥ स० ॥ १ ॥

खरतर राजचंद्र पटवारी, सेवकजन आधार ॥ विपमवाटमें सं  
 कट काटै, सब सरल सुखकार हो ॥ सं० ॥ २ ॥ जगमाहे परचा  
 अधिकारि, जाणे सब सत्तार ॥ जरदरियांमे ज्याज जगारी, जिन गु  
 रुकी बलिहार हो ॥ सं० ॥ ३ ॥ गुरु चरणावुज दरशासेती, पा  
 पतिमर दृष्ट जाय ॥ गुरु परमात्म सुगुण शोभागी, गुरुगुण केम  
 कदाय हो ॥ सं० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेत्र ठणकाती, लिये अली  
 घडु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अन्न विचक्षण, मृड समीर ऊणकार  
 हो ॥ सं० ॥ ५ ॥ मदमस्ती इस्ती वर राजत, श्रीसद्गुरु दरवा  
 र ॥ इंद्र नरिंद नमे पदपकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ सं० ॥  
 ॥ ६ ॥ ऊर्ध्व सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावै ॥ जात्री  
 आवै जात्र करणकू, केशर रंग मचावै हो ॥ सं० ॥ ७ ॥ पेम पीन  
 अर्चन सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन ऊ  
 ल्लर, करे सुविध सुविचार हो ॥ सं० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवत  
 सुखकर, नंद चंद्र शशि वार ॥ स्तैप माश प्रतिपत् दिन जेट्या,  
 शुक्र पक्र शुभ वार हो ॥ सं० ॥ ९ ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहे,  
 तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद्र जिम हंस सूरीतर, खरतर इंद्र उ  
 दार हो सं० ॥ १० ॥ सदगुरु धर्मशील परजावै, कुशल होत नित  
 साय ॥ रुद्रिसारपें महिर करीनें, अविचल लील वताय हो ॥ सं०  
 ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुन. ॥ मोरी सखी सहेद्व्या आज  
 चालोनी गुरु वदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद्र पाठ अधिकारी, श्रीजि  
 नकुशल सूरिंद ॥ परचा जगमें निरमलातरे, दीपत पूनमचंद्र हे  
 ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगछना राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥  
 उष्ट कष्ट जय दूर करीने, देवो सुख विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥  
 पूनमश् जक्ति धरीनें, आवै संघ अपार ॥ केशर चंदन मृगमद  
 घोली, पूजे विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु आगळे

धूमरा जी, काइ हूखत चमर गजदाल ॥ स० ॥ कारण सेवे काम  
नी जी, काई निरख करै जी निहाल ॥ स० सु० ३ ॥ धारी गवी  
गोरे आपना जी, काई नदवापूर आवेर ॥ स० महिमा जली  
गुरु मेरुते जी, काइ सालूमेवाली सागानेर ॥ स० सु० ४ ॥ धारी  
ज्योति घणी गुरु जिंगमिगे जी, काइ ववती गढ वीकाण ॥ स० ॥  
आंसा पूरण आवजो जी, धेतो देरावररा दीवाण ॥ स० ५ ॥  
म्हारी वीनतमी जलै मानज्यो जी, काई दादाजी दीनदयाल ॥  
स० ॥ कुशल सदा कविराजने जी, काइ पाटोधर प्रतिपाल ॥ स०  
सु० ॥ ६ ॥ इति पद ॥ पुन. ॥ सागानेर विराजै, गुरु परतिख  
तिहा राजे रे ॥ म्हारा सदगुरुजीनी वजिहारी ॥ मनवंठित पूरो  
म्हारा, म्हेतो चरण पखाला धारा रे ॥ म्हा० ॥ १ ॥ सोवन जरिय  
कचोली, माहे वलि मृगमठ घोली रे ॥ म्हा० ॥ पूजूं सदगुरु  
प्राया, पूज्या सब पाप पुत्रायारे ॥ म्हा० ॥ २ ॥ पूनमने सोमवारा,  
धारे जात्रो आवै अपारा रे ॥ म्हा० ॥ सुध मन पूजा कीजे, कुख  
दोहग दूर हरीजे रे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥ इण कलयुगमा  
हे तारी, कीरत चिहु दिशिमाहे तारी रे ॥ म्हा० ॥ तुम्ह सम अ  
धर न कोई दीगो में परतिख जोई रे ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ सालूमेवा  
ली सागानेरे, जिहा राज करै नितमेव रे ॥ म्हा० ॥ श्रीमंघ मिळ  
तिहा आवै, जिहा लूणिया गेठ रचापे रे ॥ म्हा० ॥ ५ ॥ ग्यान  
सार गुरुराजत, ज्यारा वाजे सदाइना वाजारे ॥ म्हा० ॥ कमानद-  
न गुण गावे, करजोमी शीम नमापै रे ॥ म्हा० ॥ ६ ॥ इति पद ॥

॥ अथ दादाजीकी लावणी संग्रह ॥

सदगुरुजी म्हारा, वरशाण दीज्यो जी गठपति साहिवा ॥  
॥ स० ॥ कुशल सूरि वंठितेके दाता, देवो बुद्धि विरुवाता ॥ सद

खरतर राजचंद्र पटवारी, सेवकजन आधार ॥ विपमवाटमें सं  
 कट काटै, सब सरल सुखकार हो ॥ स० ॥ २ ॥ जगमांहे परचा  
 अधिकारि, जाये सब सत्तार ॥ जरदरियांमे ज्याज उगारी, जिन गु  
 रुकी बलिहार हो ॥ स० ॥ ३ ॥ गुरु चरणबुज दरशणसेती, पा  
 पतिमर डट जाय ॥ गुरु परमात्म सुगुण शोभागी, 'गुरुगुण केम  
 कहाय हो ॥ स० ॥ ४ ॥ मृगनेणी नेउर ठणकाती, लिये अखी  
 धहु लार ॥ नृत्य जक्ति गुरु अग्र विचक्षण, मृड समीर ऊणकार  
 हो ॥ स० ॥ ५ ॥ मदमस्ती हस्ती वर राजत, श्रीसदगुरु दरवा  
 र ॥ इद नरिंद नमे पटपकज, हरखित चित्त उदार हो ॥ स० ॥  
 ॥ ६ ॥ रुद्र सिद्धके आगर सदगुरु, जो ध्यावे सो पावै ॥ जात्री  
 आवै जात्र करणकू, केशर रंग मचावै हो ॥ स० ॥ ७ ॥ पेम पीन  
 अर्चन सदगुरुको, पूनम पुन सोमवार ॥ वाद्यनि नाद तूर पुन ऊ  
 ल्लर, करे सुविध सुविचार हो ॥ स० ॥ ८ ॥ कर अग्नि वर संवन  
 सुखकर, नंद चंद्र शशि वार ॥ स्तैष माश प्रतिपत् दिन जेव्या,  
 शुक्र पठ शुभ वार हो ॥ स० ॥ ९ ॥ सुरगिरमें नंदनवन सोहै,  
 तारकमें दिनकार ॥ शरदचंद्र जिम हंस सूरीतर, खरतर इंद्र उ  
 दार हो स० ॥ १० ॥ सदगुरु धर्मशाल परजावै, कुशल होत नित  
 साय ॥ रुद्रिसारपे महिर करीने, अविचल लील वताय हो ॥ स०  
 ॥ ११ ॥ इति ॥ ॥ पुन ॥ मोरी सखी सहेव्यां आज  
 चालोनी गुरु बंदवा ॥ मो० ॥ श्रीजिनचंद्र पाठ अधिकारी, श्रीजि  
 नकुशल सूरिद ॥ परचा जगमें निरमलासरे, दीपत पूनमचंद्र हे  
 ॥ मो० ॥ १ ॥ खरतरगञ्जा राजवीसरे, सेवकजन प्रतिपाल ॥  
 डुष्ट कष्ट जय दूर करीने, देवो सुक विशाल हे ॥ मो० ॥ २ ॥  
 पूनमश् जक्ति धरीने, आवै सब अपार ॥ केशर चंदन मृगमद  
 घोली, पूजै विविध प्रकार हे ॥ मो० ॥ ३ ॥ सुंदर सदगुरु आगळे



सरे, सऊं शौखे सिंणगार ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेउर  
ऊणकार हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशग्री संघ चतुर्विध, आवे चित्त  
उलझाय ॥ श्रीसदगुरुना दरशणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥  
मो० ॥ ५ ॥ रसनं एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥  
बलिहारी गुरुनामनीसरे, बारीजाजं वार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥  
संवत्त उगण वत्तीसे कार्तिक, पूनम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गाम  
गंगालामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगठ  
सुखंकर सोजागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आगर दीपत शशि  
अग्निनव, हंससूरि गणंधार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील चरणावुज  
सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ रुस्तार गुरु गुणगण ऊपर, नितं  
प्रति हु बलिहार हे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ ॥ पुन. ॥  
कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह  
अकवर दीनी, युगप्रधान पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर  
भंमलं संम सूरी, दीपत वदनं ठवी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंल  
भाहे महिमां जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमां  
णिक्यं सूरी पाटं उदयगिरि, श्रीजिनचड रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पे  
खतही हरखित जयो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥  
इति पदं ॥ ॥ चाल पण्हारीकी ॥ श्रीसौजाग्य सूरीसरू,  
गुरु गवंपति हो, खरतर गठ सुखकार ॥ साहिवजी ॥ कोगरी  
कुल दीपता, गुरु गवंपति हो, तांत करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥  
करुणादेवी कूखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ सवत  
अठारे वासठै, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे  
मीतोत्तरे, गु० पच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाणमें,  
गु० पद प्रजाकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षात्यादिक गुण सोजता,  
गु० करता जग उपगार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-

हता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनदर्प षटोषरू, गु० द्वीपत्र  
 गुणमणो खाल ॥ सा० ॥ उगलीसे सतरे समें, गु० पायो देववि  
 मान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद बन्दि निधि उनुपती, गु० मायमाश  
 सुखदाय ॥ सा० ॥ श्वेत पद्म तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणे हरखाय  
 ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनहंस सूरिसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥  
 कुशल कला नित नेहसे, गु० प्रणमै इम रुद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥  
 इति सौजाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अय देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी त्रिये ठे देशना रे, त्रिजुवन जन हितकारज ॥ पर  
 खद धारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रजु  
 मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ जव्य मधु-  
 र तो ज्ञावथी रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज  
 रपणं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पत्ताय ॥ प्रजु वचनामृत पान  
 थी रे, अजर अमर पद थाय ॥ वी० ॥ ३ ॥ मधुरपणें मनमोहनी  
 रे, अनुपम वाणि उदार ॥ सांजले जव्य लहे सही रे, जिन पर  
 ज्ञाव विचार ॥ वी० ॥ ४ ॥ जिहां पट् द्रव्य विचारणारे, नय निक्षेप  
 अजंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतजंगी अति चंग ॥ वी० ॥ ५ ॥  
 शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलधरनी पर  
 वरसतारे, जवि चातिक हितकार ॥ वी० ॥ ६ ॥ श्रीजिनलाज पसा  
 यथी रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश  
 जणें कट्याण ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुण निधि  
 श्रीजिनचद मुणिदा, मुख सोहे पूनमचदा ॥ मोह्या सुख सुरनर  
 वृदा, सुगुरु म्हारा देशना हिव दीजे ॥  
 रीजे ॥ सु०  
 वायो ॥ ५

मन, ज्ञायो, सु०

सरे, सऊं शौले सिंहांगरे ॥ नाटक करती बहु गुणवंती, पग नेत्र  
 ऊर्णकारे हे ॥ मो० ॥ ४ ॥ दूर देशग्री संघ चतुर्विध, आवे चित्त  
 उलशाये ॥ श्रीसदगुरुनां दर्शणसेती, आनंद अंग न माय हे ॥  
 मो० ॥ ५ ॥ रसना एके किम कहवाये, गुरुगुण अधिक अपार ॥  
 बलिहारी गुरुनामनीसरे, बारीजानं बार हजार हे ॥ मो० ॥ ६ ॥  
 संवत् उगण वत्तीसे कार्तिक, पूनेम दिन सुखकार ॥ सदगुरु गामे  
 गमातामांहे, जात्र करी जयकार हे ॥ मो० ॥ ७ ॥ खरतरगठ  
 सुखेकर सोजागी, कीरत जग विस्तार ॥ गुण आंगर दीपत्त जशि  
 अजिनव, हंससूरि गणवार हे ॥ मो० ॥ ८ ॥ धर्मशील धरणांजुज  
 सेवक, कुशल सदा सुखकार ॥ रुस्तार गुरु गुणगण ऊपर, नितं  
 प्रति हुं बलिहार हे ॥ मो० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥ पुन. ॥  
 कामित कामगवी, सुगुरु मेरो कामित कामगवी ॥ मनसुध साह  
 अऊवर दीनी, युगप्रधाने पदवी ॥ सु० ॥ १ ॥ सकल निशाकर  
 भंमेल संम सूरि, दीपते वदन उर्वी ॥ सु० ॥ २ ॥ महिमंमल  
 भाहे महिमां जाकी, दिनप्रति नवी नवी ॥ सु० ॥ ३ ॥ जिनमा  
 णिक्य सूरि पाट उदयगिरि, श्रीजिनचड रवी ॥ सु० ॥ ४ ॥ पे  
 खतही हेरखित ज्यो मन मेरो, रत्ननिधान कवी ॥ सु० ॥ ५ ॥  
 इति पदं ॥ ॥ चाल पण्हारीकी ॥ श्रीसौजाग्य सूरिसरू,  
 गुरु गठपति हो, खरतर गठ सुखकार ॥ साहिवजी ॥ कोठारी  
 कुल दीपता, गुरु गंठपति हो, तात करमचंद सार ॥ सा० ॥ १ ॥  
 कस्यादेवी कृखमें, गु० गुणनिधि लियो अवतार ॥ सा० ॥ संवत्  
 अठारे वांसठै, गु० जन्म समय वर धार ॥ सा० ॥ २ ॥ अठारेसे  
 भीतोत्तरे, गु० पच महाव्रत जाण ॥ सा० ॥ वरस अठारे वाणमें,  
 गु० पद प्रजाकर जाण ॥ सा० ॥ ३ ॥ क्षांत्यादिक गुण सोजता,  
 गु० करता जग उपहार ॥ सा० ॥ परचा जगमें नवनवा, गु० क-

द्विता नावै पार ॥ सा० ॥ ४ ॥ श्रीजिनद्वय पटोधरू, गु० द्वीपत्र  
 गुणमणो खाण ॥ सा० ॥ उगणीसे सतरे समें, गु० पायो देववि  
 मान ॥ सा० ॥ ५ ॥ वेद बन्दि निधि उनुपती, गु० माघमाश  
 सुखदाय ॥ सा० ॥ स्वेत पक तूर्या तिथि, गु० प्रेम घणे दरखाय  
 ॥ सा० ॥ ६ ॥ श्रीजिनद्वय सूरिसरू, गु० वंदे वारंवार ॥ सा० ॥  
 कुशल कला नित नेदसें, गु० प्रणमै इम रुद्धसार ॥ सा० ॥ ७ ॥  
 इति सौजाग्यसूरी स्तवनं ॥

॥ अथ देशना वधावा संग्रह ॥

वीरजी द्विषे ठे देशना रे, त्रिजुवन जन हितकारज ॥ पर  
 खद पारने आगले रे, जगजीवन हित काज ॥ वी० ॥ १ ॥ प्रभु  
 मुख पद्म मनोहरू रे, जिहां वाणी मकरंद ॥ ज्ञय्य मधु-  
 र तो जावत्री रे, पान करै आनंद ॥ वी० ॥ २ ॥ अज  
 रपणं जग संपजे रे, अमृत ध्यान पसाय ॥ प्रभु वचनमृत पान  
 श्री रे, अजर अमर पद आय ॥ वी० ३ ॥ मधुरपणें मनमोहनी  
 रे, अनुपम वाणि उदार ॥ साजले ज्ञय्य लहे सही रे, जिन पर  
 जाव विचार ॥ वी० ४ ॥ जिहा पट द्रव्य विचारणारे, तय निक्षेप  
 अजंग ॥ चोविह धर्मपरूपणा रे, सतजंगी अति चंग ॥ वी० ५ ॥  
 शासननायक जिनवरू रे, अनुपम अमृतधार ॥ जलपारनी पर  
 वरसतारे, जवि चातिक हितकार ॥ वी० ६ ॥ श्रीजिनलाज पसा  
 यत्री रे, जिन आतम हित जाण ॥ वाचक अमृतधर्मनो रे, शीश  
 जणें कटवाण ॥ वी० ७ ॥ इति देशना ॥ पुनः गुणनिधि  
 श्रीजिनचद मुखिदा, मुख सोहे पूनमचंदा ॥ मोह्या सब सुरनर  
 वृदा, सुगुरु म्हारा देशना हिव दीजै ॥ आंरी देशना सुण मन  
 रीजै ॥ सु० ॥ १ ॥ दिनकर परकाश सवायो, जूमन्ल ऊपर  
 गायो ॥ कमलादि सकल मन, जायो, सु० ॥ २ ॥ वेलाजल देव-

गंधार, वलि जैरव राग मऊार ॥ गायन गावै सुखकार, सु० ॥३॥  
 पच सबद गहिर ध्वनि गाजे, जिनवर घर जालर वाजे ॥ सह  
 सऊ थया धर्म काजे, सु० ॥ ४ ॥ हिव वहिला पाट पधारो,  
 श्रीसधना कारज सारो ॥ मधुरै स्वर वचन उच्चारो, सु० ॥ ५ ॥  
 सुण विनती वचनविशेष, गुरु आपै धम उपदेश ॥ टालो ज्ञवि  
 कोरु कलेश, सु० ॥ ६ ॥ सदगुरुनी मीठी वाणी, उपदेश सुणो  
 ज्ञविप्राणी ॥ सुणता मन अतहि सुहाणी, सु० ॥ ७ ॥ गुरु प्रत  
 पो ज्युं शशि सूर, दिनप्रति वधते नूर ॥ हरो सध सकल दुख  
 दूर, सु० ८ ॥ गौरी मिल मंगल गावै, जर मोतिया आल वधावै ॥  
 लावण्यकमल सुख पावै, सु० ॥ ९ ॥ इति पदं ॥

॥ अथ वधावो ॥

मृगापूत्र गोखे रतन जनाव हो ॥ ए चाल ॥ श्रीजिनचंद  
 सूरीसरु, सुगुण म्हारा श्रीखरतर गञ्जराय हो ॥ श्रीजिनलाज पा  
 टोवरु, सुगुरु म्हारा दिनर सोजे सवाय हो ॥ म्हारा सहिज सो  
 ज्ञागी, म्हारा शुज गुण रागी, म्हारा हितधरु ॥ १ ॥ सुगुरु म्हारा  
 देशना यो मनरग हो ॥ संघ सहू उच्चक थयो, सु० सुणवा अमृ-  
 तवाण हो ॥ वहिला वंठित पूर हो ॥ सु० थे ठो अवसर जाण  
 हो ॥ म्हा० २ ॥ सूर किरण घर संचरया, सु० विकस्या कमल  
 कलाप हो ॥ राग विज्ञास प्रमुखतणा, सु० होय रह्या आलाप  
 हो ॥ म्हा० ३ ॥ पंचसवद जालरतणा, सु० मंगल नाद उच्चार  
 हो ॥ इम बहु विध जूमरुलै, सु० वरत्या जयरकार हो ॥ म्हा०  
 ४ ॥ संघ सकल जगते करी, सु० जोवै थारी वाट हो ॥ नीचे  
 पधारो गठपती, सु० यो दरिशाण गहगाट हो ॥ म्हा० ५ ॥ तिण  
 अवसर सिंघासणें, सु० पावधारै जलसंत हो ॥ जलघर ज्यु गह्रै  
 र्धरै, सु० वांचै सूत्र सिद्धंत हो ॥ म्हा० ६ ॥ बहु ज्ञवियण प्रति-

ब्रूजै, सु० वयण सुधारस योग हो ॥ उत्तम धरम प्रकाशना, सु०  
 टाले जवज्व जोग हो ॥ म्हा० ७ ॥ तेज तगणी जिम दिनमणी,  
 सु० गुण उतीस निवास हो ॥ मोहन मुद्रा तुमतणी, सु० निर  
 ख्या मन उद्धास हो ॥ म्हा० ८ ॥ थे चिरजीवो गवपती, सु०  
 राज करो इक आण हो, इम बोले मुनि सुध सदा, सु० वाणी  
 क्षमाकट्याण हो ॥ म्हा० ९ ॥ इति पदं ॥ पुनः ॥ यात्रा  
 निनाणूं करियै ॥ ए चाल ॥ एहवा सदगुरु वांदिथै, जविकजन  
 ॥ एहवा० ॥ आप तरै जरनकूं तारै, शरण तिहारी गहियै ॥  
 ज० १ ॥ जिम सारथपति साधीजनकूं, वंठित देशें वहियै ॥  
 ज० ॥ तिम सदगुरु अमृतउपदेशे, लहे जविक सुख कहियै ॥ ज०  
 २ ॥ गोप समा गुरु गुण नित धारे, राखै गोजन महियै ॥ ज० ॥  
 वलि निर्यामक उपमा धारै, जिम नाशिक नौ तरियै ॥ ज० ३ ॥  
 एक असंजम दोय विधि बंधन, त्रिविध दंन परिहरियै ॥ ज० ॥  
 चार कपाय निवारक तारक, पंच महाव्रत धरियै ॥ ज० ४ ॥ पट्ट  
 काय रक्षक महाजय जीपक, अशरण शरण कहीजियै ॥ ज० ॥  
 एहवा सदगुरुनी बलिहारी, शरण ग्रही निशतरियै ॥ ज० ५ ॥  
 गोतमस्वामि समा मुनि उत्तम, सर्व जीव शम धरियै ॥ ज० ॥  
 रिदयकमल नितप्रति राखोजै, आनंद शिवपद लहिय ॥ ज०  
 ६ ॥ इति पदं ॥ पुनः जवि तुह्न बंदे रे शीतल जिनपती रे ॥  
 ए चाल ॥ सुखकर स्वामी श्री तीर्थंकरू रे, वरधमान जिनरा  
 ज ॥ दरशण जेहनो रे दरपण ज्युं दिप रे, शोचत तेज समाज ॥  
 जविजन वदो रे जावै गजपती रे ॥ १ ॥ तसु पट राजे रे सुध-  
 रम गणधरू रे, ज्ञाता द्वादश अग ॥ जंबूस्वामी रे शिष्य सोदा  
 मणो रे, चवद पुरधर चग ॥ ज० २ ॥ प्रजव सज्यंजव जगमें  
 परगना रे, श्रीयज्ञोजइ मुण्डिद ॥ श्रीसन्नूतविजय जइव हुजी रे,

श्रीधूलज्जद दिपांड ॥ ज० ३ ॥ एम अनुक्रम दश पूरवधरू रे, हुव  
 वयर मुणीश ॥ श्रीजिनमत दीपायो जूनले रे, सुस्तर नामत शिस ॥  
 ज० ४ ॥ तास परपर चंद्रकुले जला रे, श्रीकोटिक गणधार ॥ श्री  
 लद्योतन सूरि सोदामणा रे, वयरी साख मऊर ॥ ज० ५ ॥ वरप्रमान  
 प्रसुख शिष्य जेहना रे, चार अशी परिमाण ॥ गच्छ चोराशी प्रगव्या  
 तिहायकी रे, जाणे चतुरसुजाण ॥ ज० ६ ॥ तास शीस जिने  
 श्वर सूरिजी रे, दुर्लजराय समरु ॥ खरतर विरुद् लह्यो ते रूवमो  
 रे, गच्छपति जीत प्रत्यरु ॥ ज० ७ ॥ नव अंग वृत्तिहारक दीपता  
 रे, श्रीअजयदेव सूरिराय ॥ श्रीजिनवल्लभ जिनदत्त गच्छपती रे,  
 श्रीजिनकुशल अमाय ॥ ज० ८ ॥ परम प्रजावक इण गच्छमें थ  
 या रे, आचारज गुणवत ॥ शु० सामाचारी जग तेहनी रे, सुणि  
 हरखंत होय संत ॥ ज० ९ ॥ शु० परंपरमां थया अनुक्रमे रे, श्री  
 जिनलाज सूरिश ॥ तास पटोथर जगमा परगना रे, श्रीजिनचद  
 मुणीश ॥ ज० १० ॥ तेज प्रतापे जीत्यो दिनमणी रे, सौम्यपणे  
 द्विजपति ॥ गज्जीरगुण सागरनें जीतियो रे, सुर सेवे दिन रत्ति ॥  
 ज० ११ ॥ स्याद्वाद जिनधर्म वखाणता रे, नय निक्षेप विचार ॥  
 जं० पदारथ अति विस्तारसें रे, जाखे जवि, हितकार ॥ ज० १२  
 ॥ ग्यान पूरव क्रिया साधे जली रे, जिनवाणो अनुभार ॥ एहने  
 सेवो रे, क्युं जूला जमो रे, थाय सफल अवतार ॥ ज० १३ ॥  
 सुरतरु वंकी वांवल आदरे रे, कोइ नर मूढ गिमार ॥ ए उखाणो  
 साचो मत करो रे, लहि एहवो गणधार ॥ ज०-१४ ॥ नाम धार-  
 क आचारज ठै वणा रे, पचम काल मऊर ॥ पिण इण सरिखो  
 जगमा को नही रे, स्व पर तारणहार ॥ ज० १५ ॥ वाचक लाव  
 एकमल पसायथी रे, कमलसुदरनी वाणि ॥ जे मानसी ते सुख  
 पामसः रे, प्रातिपत्नी करि हाण ॥ ज० १६ ॥ इति वराचा ॥

पुनः ॥ श्रावण पावस ऋतयो ॥ ए चाल ॥ मोतियमे मेहं  
 चरसीयो, सखि आज हुञ्ज आणद ॥ पूज पधारया विहरता, नामे  
 सौजाग्यसूरिंद रे ॥ जिनहर्ष सूरिंदनो नद रे, सदगुरु सुरतरुनो  
 कंद रे ॥ मुख सोहे पूनमचंद रे, सखी मोती० ॥ १ ॥ क्हांतिगुणे  
 करी शोजता, सखि पच महाव्रतधारं ॥ वर ळ्चीत्त गुणे सदा,  
 विचरे जे निरतीचार रे ॥ रसियां जे पर उपगार रे, उपशमरशना  
 न्मार रे ॥ पावे पंचाचार रे, सखी० २ ॥ मेघतणी पर गाजता,  
 सखि मीठी जेहनी वाण ॥ आप तरे पर तारता, गुण रतनारी  
 खाण रे ॥ सहु आगमना जे जाण रे, प्रतपै जिम न्जलहल जाण  
 रे ॥ जेहनो अतिशय विनाण रे, सखि० ॥ ३ ॥ परतिख सुरतरु  
 सारिखा, सखि इण पंचम काल ॥ साथै जेहनें शोजता, मुनिवर  
 जिम मोतीमाल रे ॥ कोई धिवर ने कोई बाल रे, बंदीजै तेह त्रि  
 काल रे, सखि० ४ ॥ सूरि सकल सिर सेहरो, सखि खरतर गञ्ज  
 सिणगार ॥ जैनधरम दीपावता, महिमा जेहनी अणपार रे ॥ स  
 हु संघतणा सिरदार रे, सखि सुमतितणा जरतार रे ॥ जेहनें प्र  
 णमें नरनार रे, सखि० ॥ ५ ॥ सूत्र अरथ विस्तारता, सखि दे  
 ता धमोपदेश ॥ दान शीघल तप जावना, वारे जावन सुविशेष  
 रे ॥ द्रव्यादिक अर्थ निशेष रे, गुण अरु पर्याय प्रदश र ॥ सखि०  
 ॥ ६ ॥ मुणता श्री. जनराजना, सखि अभृतवचन विदाश ॥ कृण  
 में कर्म समूहनो, सखि निश्रै होवे नाश रे ॥ आय निज ज्ञान प्र  
 काश रे ॥ कहे बाल सुगुरु सहवास रे, करता निज रूप सुजाप  
 रे ॥ सखि० ७ ॥ इति वधावो ॥

॥ अथ गुंहली लिख्यते ॥

॥ नणदल विंदली दे ॥ ए चाल ॥ जिनशासन जयकारी,  
 जगगुरु गोतम. गणेश्वारी रे ॥ सहिया गुंहली करो ॥ गुंहली करो



गुरु संगे, जगति तलै उठरंगे रे ॥ सही० ॥ विचरंता मुनिराया  
 राजग्रहनगरी आया रे ॥ सही० ॥ १ ॥ पंचैडी विषय निवारी,  
 नवविध ब्रह्मव्रतधारी रे ॥ सही० ॥ च्यार कपायकुं टालै,  
 पंच महाव्रत सूधा पाले रे ॥ सही० २ ॥ सेवे पंचाचार, धरै पंच  
 सुमति मनुहार रे ॥ सही० ॥ त्रिण गुप्ती वलि ठाजै, इम ठत्रीश  
 गुणै गुरु राजे रे ॥ सही० ॥ ३ ॥ चरण करण गुणसंगी, शुद्धातम  
 अनुभव रगी रे ॥ सही० ॥ उत्सर्गने अपवादी, बहु नयगम जंग  
 प्रवादी रे ॥ सही० ४ ॥ मोक्षमार्ग उपदेशी, धरे धरमध्यान शुद्ध  
 लेशी रे ॥ स० रत्नत्रय अज्यासी, जविजन चितकमल विकासी  
 रे ॥ स० ५ ॥ श्रेणिक नरपति आवै, गणधर वंदन शुद्ध जावे रे ॥  
 सही० ॥ चेलणा स्वस्तिक पूरै, मोह तिमिर जर्मने चूरे रे ॥ सही०  
 ॥ ६ ॥ निसुणी गुरुमुख वाणी, समकित निरमल करै शाणी रे ॥  
 स० ॥ श्रुत सेवा ज करस्यै, ते कीर्तिसागर पद वरस्यै रे ॥ स०  
 ॥ ७ ॥ इति पदं ॥

पुन देशना ॥ नणदलबाई चुमले जोवन जिल रह्यो ॥ ए  
 चाल ॥ सुणीये सदगुरु देशना ए सहिया, मथुर सुधारश वाण ॥  
 सदगुरु म्हारा, यो मनमोहन देशना ॥ १ ॥ वीरजिनंद जिम उप  
 दिस्या ए सहिया, नय निकेप सरूप ॥ स० ॥ तुम मुखवाणी नि  
 रमली ए सहिया, ज्यासे घट्टे चूंर ॥ सद० ॥ २ ॥ तखत विराजो  
 साजता ए सहिया, उदयाचल ज्यु दिणद ॥ स० ॥ तेज ऊलामल सुर  
 तरू ए सहिया, मुखठवि पूनमचद ॥ स० ३ ॥ जीवदया तरू सींच  
 वा ए सहिया, तुम वाणी जलधार ॥ सद० ॥ श्रुतसागर धीरजधरा  
 ए सहिया, जाखो नव तत्व सार ॥ सद० ॥ ४ ॥ संघ जगति  
 नित साचवै ए सहिया, पूरव पुन्यसुधान ॥ सद० ॥ तागण तरण  
 जिहाज ज्यु ए सहिया, मुध समकित मुध ज्ञान ॥ सद० ॥ ५ ॥

खरतरगठ महिमा निलो ए सहियां, सदगुरु कुशलनिधान ॥ सद० ॥  
 ऊद्वसारनी ज्ञावना, मंगल धवल प्रधान ॥ स० ॥ ६ ॥ इतिदे  
 शना ॥ पुनः ॥ सुगुरु म्हारा ज्याजनी पर तारो, गुरु म-  
 नसो धे मोह्यो म्हारो ॥ सवाईगुरु ज्याजनी० ॥ अमृत उ  
 पम जिनवाणी, स्याद्वाद सुधारश खाणी, अति नय निक्केप, प्रमा  
 णी ॥ सवाई० ॥ १ ॥ जगगुरु श्रीजिनवर ज्ञाखी, गणधर मुनि  
 सूत्रे साखी, आगमनिधि हृदयें राखी ॥ सवा० ॥ २ ॥ सदगुरु  
 ज्ञानी गुणवंता, ऋषि हृदयकमल बोधंता, गुरु सहस किरण ऊ  
 लकंता ॥ सवा० ॥ ३ ॥ ऋषिजीव श्रवण गुण रसिया, चात्रक  
 ज्युं जलधर हसिया, उपदेशे डुरित सब नसिया ॥ सु० ॥ ४ ॥  
 गुरु धर्म शील सौजागी, तसु चरणें श्रुतमति जागी, रुक्षार प  
 चन धुन लागी ॥ सवाई गु० ५ इति वधावो ॥



## ॥ अथ श्रीखरतर वृहद्गठकी सिद्धांत शुद्ध सामाचारी लिख्यते ॥

जो एकमतिथि १ कम होय तो प्रतिपदाका पञ्चस्काण व्रत  
पिठली अष्टावास्या ३० तिथिकों करे, ८ अष्टमी कम होय तो  
अष्टमीका व्रत सप्तमीकों करे, उर जो चण्डस कम होय तो १४  
का उपवास अमावस्य या पूनमको करे, इसका कारण यह हे की  
यह दोनों तिथि वराहर पर्व हे, चौदश पर्वदिन हैं तेमें अमावस्य  
पूनम ज़ी चिरतन पहलीका दिन हे, यह दोनों दिन धर्मकृत्य क  
रणोंके हैं, पारण उत्तरपारणे धर्मका उद्योत करे ॥ इस वखत  
जैनी पंचागकी प्रवर्ति नही, अन्य धर्मियोंके पंचाग परसे तिथियां  
गिणनेमें आती हे, जैन पंचांगमें संवत्सरी आदिक पर्वोंका क्रय  
वृद्धि नहि होता, जबूड़ीपपत्रजीमें पाच संवत्सर कहे हैं, उसमें  
से अग्नि वर्द्धन संवत्सर मिथ्यात्वियोने प्रचलित कर सका हे, लेकि  
न् सूर्यसंवत्सर तीनों सवापेंसठ दिनका होता हे, इस वास्ते जै  
नागमसे यह पत्रा यथार्थ नही एकात नयवाद हेतुसे इस वास्ते  
५० चौदश कम हो तो उपवास तथा पस्की प्रतिक्रमण निस्तवेह  
पूनम तथा अमावसके दिन करे, लेकिन् तेरस तथा चौदस क्रय  
तिथिके वितत्येको न करे, उर जो देखा करे तोहरीगोमेतो दोनों  
दिन त्यागपक्षमें ग्राह्य हे ॥ अब कोइ वखत संवत्सरीकी चोथ  
कम हो तो पाचमके दिन संवत्सरी प्रतिक्रमण करे, लेकिन् तीजके  
७ दिन कदापि काले ज़ी नहि करे, उर जो चोथ दो होय तो पहली  
चोथको संवत्सरी करे, ओर कोइ ज़ी तिथि दो होयतो पहली  
तिथि माननीय हे, दूसरी लौंरतिथि हे दुसरा यह प्रमाण हे,  
साठ घनीकी तिथि गोरुके दुसरी घनी अधघनीकी तिथि मानणा

बुद्धिमानोका काम नहीं, इस पर कोई एसा कहे की अपने तो  
 उदयतिथि मान्य है, सूर्य उदय होय जहां तक कोई ज्ञी तिथि  
 होयतो उस दिन वोही तिथि मानते है, इस वास्ते जो दुसरी  
 तिथि अथवही उदयके वखत होय तो माननेमें क्या दोष है?  
 इस प्रश्नका उत्तर—हे ज्ञव्य, जो पहले दिन तिज मानी है, उर ती  
 जके दिन चोथ बहुत घनी जुगतेगा, लेकिन वह तिथि तीजही  
 मानीजेगा, इनी तरे चोथके दिन सूर्य उदयकी वखत घनी अ  
 थघनी चोथ होणेंसे चोथ मानीजेगा, लेकिन जो तिथी दो होगी  
 उसमें पहली तिथि सूर्य उदय उर अस्त दोनोंमें रहेगी, तबतो  
 एसी संपूर्ण तिथिकों ठानके दुसरी थोमीसी तिथिकूं व्रत करणा  
 लाजम नही. कार्तिक मास बंद तो पहले कार्तिक चोमास्तो करे.  
 फाडगुण तो बढ़ताही नहीं, अगर बढ़तो दुसरे फाडगुणमें चोमा  
 सा करे. असाढ दो होयतो दुसरे असाढमें चोमासा करे असाढ,  
 चोमासेकी चौदससे पञ्चास गुणपञ्चासमे दिन चोथकूं संवत्सरी  
 करे, चोथ कम होयतो पाचमके दिन संवत्सरी करे, श्रावण ज्ञा  
 दवा आसोज बढ़तो पंचमासी चोमासा करे. श्रावणमास दो हो  
 यतो दुसरे सावण सुद ४ कूं संवत्सरी करे, चोमासेकी चौदससे  
 पञ्चास दिन लाघके संवत्सरी पर्व कदापिकाले न करे, यह श्रीक  
 ढसूत्रजीके पहिली समाचारीमें पाठ है, उर जो दो महीना  
 होय उसमें पहिले महीनेका वदिपक दुसरे बडे महानाका शुक्र  
 पक एसे कड्याणकतिथिका व्रत एक महीनेमें करणा, पहिलेका  
 सुदपक दुसरेका वदिपक एवं ३० दिन लूंर जानना, इन ३०  
 दिनोंमें कड्याणकतिथिका व्रत पञ्चक्राण नहि करे, यह तिथियो  
 का प्रमाण श्रीहरिऋसूरजी कृत तत्त्वतरंगणी अथमें प्रसिद्ध है,  
 सो निश्चितप्रमाण गाथ निश्चये है ॥ निहिपकपेपुवतिही, क यवा

जनभयम्नरुद्धेय ॥ चाण्डसीविलोवो, पुत्रमियपरिक्वपन्दिमणं ॥१॥  
 कवपोसद्विही, कायद्यासवगेहिसुद्धहेत ॥ नहुतेररीइकीरई, ज  
 न्दानाणाइखोदोसा ॥ २ ॥ सूरुदयपरियायावी, तेरसीहुतिनप  
 र्कियकुजा, चउम्मासियकरणे, एसविहीदेसिउतमणा ॥ ३ ॥ ति  
 हिवुहीएपुवा, गहियापरिपुन्नजोगसंयुता, इयराविमोणणिजा, परं  
 आवत्तित्तुद्धा ॥ ४ ॥ ( तेसेइ ज्योतिष्करु पयन्नेमें जी एसाही  
 लिखा हे ) ॥ ठठिसहियानअठमी, तेरसिसहियानपरिक्वाहोई ॥ प  
 निवसहियानकयावि, इइजणियावीयरागेण ॥ १ ॥ अठमिदिनंमि  
 पायं, कायद्याअठमीयपाएण ॥ कइयाविसत्तममि, नवमीठठीनका  
 यवा ॥ २ ॥ पनरसम्मियदिवसे कायद्वपरिक्वंतुपाएण ॥ चाण्डसे  
 विकइया, नहुतेरसिसोलसमेकइवि ॥३॥ तथा श्रावक सामायक करे  
 सब पहली सामायकदरुक ३ वीर उच्चरके पीठे इरियावही पन्दिममें,  
 कयोकी आत्मार्थी आचार्य श्रीजद्रवाहूस्वामी, श्रीहरिजद्रसूरजी,  
 तथा श्राद्धविधिके कर्ता तपागछी श्राद्धशेखरसूरजी, तथा कमला  
 अछी नवपद प्रकरण कर्ता श्री सूरि प्रमुख आचार्योके बनाये  
 ग्रन्थोंमें पहले करेभिजते सा० कहके फेर इरियावहीका पाठ हे ॥  
 तथा श्रीमहावीरस्वामीके उव कड्याणक मान्य हे, इस बातका  
 जडपसूत्रादिक अनेक ग्रंथोंमें पाठ हे, स्वस्तरगछ, तपगछ के आचा  
 र्योंने ग्रंथोंमें प्रगटपणे वर्णन किया हे, जो आश्चर्यकारी सबध जा  
 पकेठठा कड्याणक न मानते हे उनोको गिगंधरकी तरे मस्ति  
 नायस्वामीको नी स्त्रीपणें माणना नहि चाहिये, क्यूकी वो नी  
 गंधर्यकारी संबंध समानत्वही हे उत्तरा अपणे मनकटिरतपणेंसे  
 न माणनेसे अपणेही पूर्वाचार्य गुरुयोकी आज्ञा टोपन होती हे  
 तेहे सबे पोषध अठमी चतुर्दशा कड्याणकाठिक पर्वतिथिको करे,  
 कि जड गिगंधर सामान्य निधिमें पोसह फरणेकर कपन किय

सिद्धातमें ज्ञी नहीं है, पर्युसणमें कल्पसूत्रकी नव वाचनाही करणी एसा बंधाण नहीं, अधकी ज्ञी करे । तथा आश्लिमें एक अन्नद्रव्य पुमरा नृणाजलद्रव्य यह दो द्रव्यही ग्रहण करणेका कथन है इस वास्ते जीव्हाका लोलपीपणे करके अधिक द्रव्य ग्रहण करना नहि चाहिये । तथा तरुण स्त्रीकुं मूलनाचरुजीकी पूजा करणी प्रमाणीक आचार्योंने मना किया है, कारण इस कालमें प्रायें स्त्रियोंमें अविवेकपणा तथा अकस्मात् स्त्रीधर्म प्रगट होना दीखरहा है, तथा श्रावककुं पञ्चस्काणमें पाणस्तलेणवाका पाठ कहणा युक्त नहीं, यह पाठ साधूका है, तथा दिनप्रति एक उपवाश पञ्चस्कावे, जो अधिक तपकी इच्छा होय तो अपने दिलमें धारणा रखे, लेकिन पञ्चस्काण नित्य सूर्योदयकी वखतही करे । तथा जिस धान्यकी दो फारु होय सो सब विदलकी गिणतीमें है, इस द्विष्टाधान्यकू गोरस दही ठाठके साथ नक्षण नहि करे, तथा मरण जन्मका सतक जिस घरमें होय उस घरका आहार पाणी साधू वर्जन करे, लेकिन संपूर्ण कुल गोत्रका सूतक नहीं माने, इत्यादि इहा संक्षेप मात्र खरतरकी सामाचारी लिखी है. अनेक ग्रंथ खरतर सामाचारीके है जिसमें सरल शुद्धोपयोगी समयसुंदरोपाध्याय विरचित सामाचारीशतक पचासी प्रमाण सूत्रोके पाठ संयुक्त है सो अनेकाती बुद्धिवानोंने गुरुगमसें देखके धारणा ॥ यह खरतरगद्यमें चोरासी गद्य नया है, जिस वास्ते खरतरगद्यमें चोरासी नदि है, उद्योतनसूरजी, नेमचंद्रसूरजी के निजशिष्य थे, सो उद्योतनसूरजीने ८३ विद्यार्थी शिष्य उर ८४ में निजशिष्य श्रीवर्द्धमानसूरी एवं ८४ को आचार्यपद दिया, वर्द्धमानसूरीके शिष्य जिनेश्वरसूरजीने सं० १०८० का शालमें ग्रन्थलिखपुरे नैतवाशी उपेगी यणवात्रोके ज्ञान उर किया

करके जीता, तब डुर्लभराजाने खरतर विरुद्ध दिया, तबसे कोटिक  
 गद्य चंडकुल वज्रशाखावाले खरतरगद्य कहलाए लगे, लेकिन  
 अज्ञी स्वमताजिमानो खरतरगद्यकूं संवत् वारेते ४ की सालमें  
 जिनदत्तसूरजीसे जया एसा धर्मसागर निन्हवकी तरे स्वकल्पित  
 ग्रंथोमे लिखा हे, लेकिन अरणे पूर्वाचार्योके वणाये सभ्यकृतप्रति  
 आदि ग्रंथकूं तो देखे, इन जिनेश्वरसूरि.के दो शिष्य जने, बने  
 जिनचंडसूरि, जिनोने सवेगरगशालादि ग्रंथ वणाये उर श्रीमाल,  
 गोत्र थापा, डुसरे श्रीअजयदेवसूरि, जिनोने नवागकी वृत्ति शाश,  
 नदेवताकी वीनतीसे रची, जिनोके शिष्य श्रीजिनवल्लभसूरि, जि  
 नोने हजारों राजपूतोंको श्रावक वणाये, जिनोके शिष्य श्रीजिन  
 दत्तसूरजी एक लाख तीस हज़ार राजन्यवंसो माहेश्वरी तथा ब्रा  
 ह्मनोंको श्रावक वणाये, राखेचा लूणीया पारख, सावसुरा मालू  
 कोठारी, वोथरा नाहटा, बनेर गोलठा जावक चम्म डुगम सेठिया  
 ब्रह्मेचा, इत्यादिक तीनों गोत्र स्थापक जणशाली प्रमुखगोत्रोंकू  
 उत्सवशमें श्रावक वणाया, सब गोत्रोंके नाम लिखणसे ग्रंथ बढ  
 जायगा इस वास्ते इतने पर समऊ लेणा एक अठारे जाति रत्न  
 प्रज्ञसूरिजीने उत्सियामे उत्सवाल वणाये हे, वाकी प्रायें सर्व उत्स  
 वाल कुल श्रीवर्द्धमानसूरजीसे लेकर श्रीजिनदत्तसूरि माहाराज  
 तक खरतरगद्यके प्रतिबोधक हे, पीठे उत्सवालवशी दुये पीठे सं  
 वत १५ से से लेकर आज दिन तक उर २ गजियोने तथा मताव  
 लवियोने इनोपर अणणा सिद्धा जमाया हे, मूल वशावली देखा  
 गे तो सब व दोलत खरतर वृहज्जकी हे, यह वात हमने वहांतो  
 की वंशावली तपासले लिखी हे, जिनोके पट्ट परंपरामें दादा श्री  
 जिनकुशलमूजी जने, उनोके शिष्य उमाध्याय श्रीकैमकीर्तिने  
 काम रामशाखा तविनाणगदमे पाचमे राजन्यवशीयोकू दीक्षा देणे

से प्रसिद्ध जई, उस शाखामें जगत्पुज्य श्रीसाधूगुणसे विराजमान  
घर्मशीलगणिः परमगुरु ज्ञेये, जिनोके शिष्य पंडित श्रीकुशलनि  
धानमुनिः ज्ञेये, उन परमपुरपसाधूजी आहाराजका चरणान्नचं  
चरीक उ० श्रीरामलालगणि. ने शिष्यमंरुली पं । हेमचंद्रमुनिः चि ।  
पेमचंद्र अमरचंद्रादि शिष्योके तथा पाठशाला श्रीवीकानेर वास्तव्य  
अनेक विद्यार्थियोके लिये पंच प्रतिक्रमणादि नित्यकर्तव्य सर्व जी  
वोके उपगारार्थ उपायके प्रसिद्ध करा हे.

ठिकाणा पुस्तक मिलणे का वीकानेर बन्ना उपासरा विद्या-  
शाला उ । श्री । परमोपगारी युक्तिवारिधिः । रामलालजी गणि. ॥











